आल्ह-खण्ड

तेईस मैदान

बावन लड़ाई

लेखक

पँडरी कलाँ निवासी

पं० ललिताप्रसाद मिश्र
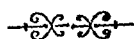
पन्नालाल भार्गव द्वारा

तेजकुमार-प्रेस, लखनऊ में मुद्रित तथा प्रकाशित

उत्तराधिकारी—नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ.

ग्यारहवीं बार

सन् १९५२ ई०

मूल्य ८)
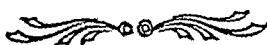
भूमिका

महाभारत के घोर युद्ध के बाद एक दिन राजसभा में बैठे हुए पाण्डवों ने भगवान् श्रीकृष्ण से प्रार्थना की कि हे महाराज, आपकी कृपा से इस महान् युद्ध में विजय तो हमने प्राप्त की, परन्तु अभी हमारी इच्छा तृप्त नहीं हुई। युद्ध करने की अभिलाषा अभी बाकी है। अन्तर्यामी वासुदेव ने उनका यह कथन सुन यह निश्चय कर कि इन्हें इस विजय से निश्चित अहंकार हो गया है, उन्हें कलियुग में पुनः जन्म लेकर महान् युद्ध में प्रवृत्त होने का आशीर्वाद दिया। उसी के फलस्वरूप युधिष्ठिर ने मण्डलीक आल्हा, भीमसेन ने ऊदल, सहदेव ने मलखान, अर्जुन ने चन्द्रवंशी महाराज परिमाल के पुत्र ब्रह्मा और नकुल ने कन्नौज में लाखन का अवतार लिया। उसी प्रकार कुरुराज दुर्योधन ने महाराज पृथ्वीराज, कर्ण ने ताहर, गुरु द्रोणाचार्य ने चौंड़ा, दुःशासन ने धाँधू और द्रौपदी ने पृथ्वीराज की कन्या वेला का अवतार लिया। अर्जुनपुत्र अभिमन्यु ने इन्दल का अवतार लिया।

यह वीर अवतारी होने के कारण अतुल पराक्रमी थे। यह प्रायः १२ वीं शताब्दी विक्रमीय में पैदा हुए और १३ वीं शताब्दी के पूर्वार्ध तक अमानुषी पराक्रम दिखलाते हुए वीरगति को प्राप्त हो गये। वह शताब्दी वीरों की सदी कही जा सकती है और उस समय की अलौकिक वीर-गाथाओं को तब से गाते हम लोग चले आते हैं। आज भी कायर तक उन्हें सुनकर जोश में भर अनेकों साहस के काम कर डालते हैं। योरपीय महायुद्ध में सैनिकों को रणमत्त करने के लिए ब्रिटिश गवर्नमेंट को भी इसका सहारा लेना पड़ा था।

हमारे भारतीय प्रायः अँगरेज़ी शिक्षित समुदाय का एक बड़ा अंग इस अमर इतिहास को गप्प और इसके वीर-गान को गँवारपन समझ इसका मखौल उड़ाता है, परन्तु वह वही अभागे हैं जिन्होंने अपनी प्राचीन सभ्यता की बची-खुची प्रत्येक वस्तु को झूँठ और लज्जास्पद समझने और विदेशियों की नकली बातों को भी महत्त्व देकर उनकी नकल करने को अपने फैशन में दाखिल कर लिया है।

भले ही कवियों ने देशप्रेम और वीरत्व के जोश में भरकर कहीं अत्युक्तिपूर्ण गान कर दिया हो अथवा भिन्न-भिन्न व्यक्तियों और स्थानों से

महोबे का इतिहास

राजा परिमाल (परिमर्द्देव)

बुन्देलखण्ड में चन्देली-नामक स्थान में चन्द्रवंशी राजाओं का सूर्य बहुत दिनों तपा है। इस राजवंश के प्रधान पुरुष महाप्रतापी व धर्मात्मा महाराज चन्द्रब्रह्म थे, जिन्होंने चन्द्रमा को प्रसन्न कर पारसमणि प्राप्त की थी। इस मणि के स्पर्श से लोहा सोना हो जाता था और यह इस राजवंश के अन्तिम प्रसिद्ध भूपाल परिमाल के समय तक इन लोगों के अधिकार में रही। उसके बाद वह महोवा के विनाश होने पर राजा परिमाल की पटरानी मल्हना द्वारा कीरतसागर में विसर्जन कर दी गई। चन्द्रब्रह्म के पुत्र वीरब्रह्म, वीरब्रह्म के रूपचन्द्र, रूपचन्द्र के वज्रब्रह्म, वज्रब्रह्म के वन्दन— इन्होंने पाँच महायज्ञ किये। वन्दन के जगद्ब्रह्म, जगद्ब्रह्म के सत्यब्रह्म, सत्यब्रह्म के सूर्यब्रह्म—जिन्होंने सूर्यकुण्ड बनवाया। सूर्यब्रम के मदनब्रह्म— जिनके नाम पर मदनताल प्रसिद्ध हुआ, मदनब्रह्म के कीर्तिब्रह्म हुये। इन्हीं कीर्तिब्रह्म ने कीरतसागर सरोवर को बनवाया और इन्हीं के पुत्र राजा परिमर्द्देव (परिमाल) हुये। राजा परिमाल ने भारतवर्ष के प्रायः सभी राजाओं को जीतकर अक्षय कीर्ति प्राप्त की और फिर गुरु अमरनाथ की आज्ञा से आपने अस्त्र-शस्त्र कीरतसागर में विसर्जन कर युद्ध करने से शपथ खाई।

इसी समय महोबा में पवित्र परिहार-वंश के राजा वासुदेव (मालवन्त) राज्य करते थे। इनके माहिल और भोपति, जिनका दूसरा नाम जागनि भी था, नाम के दो पुत्र थे और मल्हना-अगमा आदि कई कन्याएँ थीं। मल्हना परम सुन्दरी थी। उसके रूप में लुब्ध हो महाराज परिमाल ने महोबा पर चढ़ाई कर राजा वासुदेव को परास्त कर मल्हना से विवाह कर लिया।

महोवा उस समय के नगरों में अपनी शोभा के लिये अनोखा था। उसमें ५२ हाट लगा करते थे। राजदुलारी मल्हना का चित्त चन्देली में न लगता था। उसने महोबे में ही रहने के लिये महाराज परिमाल से हठ किया। विवश होकर परिमाल ने माहिल से महोवा छीन लिया। माहिल ने हार मानकर अपनी राजधानी उरई में बनाई और उनके भाई भोपति (जागनि) ने जगनेरी में डेरा जमाया। अपनी राजधानी महोबे के अधिकार से छिन जाने के समय से ही माहिल को राजा परिमाल से द्वेष हो गया था, और वह सदैव चन्देलों के विनाश की चेष्टा में लगा रहता

था। माहिल का एक बड़ा वीर पुत्र था, जिसका नाम अभई था। कीरत-सागर के युद्ध में उसने महोवे की रक्षा में पृथ्वीराज से युद्ध कर प्राण गँवाए थे।

दस्सराज-बच्छराज

महाराज चन्द्रब्रह्म के मन्त्री तोमरवंशी क्षत्रिय चिन्तामणि थे। इन्होंने एक बार तपस्या करते हुए शिवजी के चरणों में शिर काटकर अर्पण कर दिया था। शिवजी ने प्रसन्न होकर वरदान माँगने की आज्ञा दी। चिन्तामणि ने नम्रतापूर्वक प्रार्थना की कि हे महाराज, हमारे वंश में महान् शूर-वीर उत्पन्न होकर चन्देल राज्य ही को दृढ़ करते हुये यश प्राप्त करें। शिवजी यही आशीर्वाद देकर अन्तर्धान होगये। इन्हीं चिन्तामणि के पुत्र शशिपाल, शशिपाल के कृपाचन्द, कृपाचन्द के मकरन्द, मकरन्द के अक्रूर, अक्रूर के टोडर, टोडर के रहिमल, रहिमल के सोरठ और सोरठ के दो पुत्र सल्ल और वल्ल हुये। सल्ल और वल्ल में परस्पर अपार प्रेम था। वैराग्य उत्पन्न होने से दोनों ने वनगमन किया। वहाँ श्री गुरु गोरखनाथजी इन्हें अपना शिष्य कर योगविद्या की शिक्षा देने लगे।

एक दिन गुरु की आज्ञा से ये दोनों शिष्य अलग दूर जाकर समाधि का विचार कर रहे थे कि इन्हें एक सिंह का बच्चा और एक गाय का सुकुमार बछुरा परस्पर क्रीड़ा करते हुए दिखलाई पड़े। यह मनोरम दृश्य देखकर सल्ल को सिंह का बच्चा होने और वल्ल को बछुरा होने और फिर उसी प्रकार प्रेम-पूर्वक परस्पर क्रीड़ा करने की अभिलाषा हुई। यही चिंतन कर दोनों ने समाधि लगा ली, परन्तु फिर समाधि भंग न कर सके और तीसरे दिन उनके प्राण शरीर से निकल गये।

अन्तिम समय जो अभिलाषा थी उसी के अनुसार सल्ल ने सिंहिनी और वल्ल ने गाय के गर्भ से जन्म लिया। दोनों में अब भी अटूट प्रेम था। जब सल्ल (सिंह) शिकार को जाता तो वल्ल (बछड़ा) के गले में घंटा बाँध-कर कह जाता कि जब कोई विपत्ति हो घंटा बजा देना और मैं आकर उसका निवारण कर दूँगा। पश्चात् वल्ल ने अपने मित्र की परीक्षा लेने के विचार से एक दिवस अकारण ही घंटा बजा दिया, सिंह तुरंत अपना शिकार छोड़कर आ पहुँचा। इसी प्रकार एक दिन सिंह जब शिकार कर रहा था, कुछ बधिकों ने बछड़े को जाल में फाँस लिया। सिंह ने घंटे की आवाज सुनी, परन्तु कहीं पिछले दिन की हुई परीक्षा की ही तरह आज भी न हो, ऐसा सोच वह अपने शिकार को मारकर परन्तु जल्दी ही आ पहुँचा किन्तु उस समय तक बधिकों ने बछड़े के प्राण हर लिये थे।

सिंह ने भी मित्र के बिछोह में अपने प्राण दे दिये। जहाँ इन दोनों के शव पड़े थे हठात् उधर से शिव-पार्वती आ निकले। श्रीपार्वतीजी ने दया से द्रवित हो भगवान् शंकर से उन्हें पुनः जीवित कर देने की प्रार्थना की। महादेवजी ने पार्वतीजी के विशेष आग्रह से उन्हें मनुष्यरूप से जीवित कर आशीर्वाद दिया कि वह और उनके पुत्र महान् पराक्रमी और शूर होंगे। उन्होंने इनका नाम दस्सराज और बच्छराज रख दिया।

ये दोनों बालक वन में निर्भय घूमते थे। एक दिन महोवे के राजा परिमाल उधर से घूमते आ निकले। उसी समय दो मत्त भैंसे आपस में लड़ रहे थे जो किसी सैनिक के हटाये न हट रहे थे। अकस्मात् इन बालकों ने एक-एक को पकड़कर अलग कर दिया। राजा परिमाल इनके पराक्रम को देख अति प्रसन्न हो इन्हें अपने यहाँ ले गये। रानी मल्हना ने इन्हें बड़े प्यार से रखा और इनका दिवला और तिलका दो वीर राजकुमारियों से विवाह कर दिया। राजा परिमाल ने दस्सराज और बच्छराज को दशहरपुरवा और सिरसागढ़ रहने को दिया, परन्तु ये दोनों भाई प्रेम के कारण दशहरपुरवा में ही रहते थे। वन से आकर इस प्रकार इन्हें राज्य मिला—इसी कारण यह वंश बनाफर कहलाया।

आल्हा

जेठ दशहरा के पुण्य दिवस पर इन्हीं महाराज दस्सराज की रानी देवलकुअँरि के गर्भ से एक महातेजस्वी बालक उत्पन्न हुआ। महोवा राजवंश में अब तक कोई राजकुमार न था। पहलेपहल इस पुत्र के उत्पन्न होने से राजा परिमाल और रानी मल्हना ने भी बड़ा उत्सव मनाया। राजमंत्री व पुरोहित चिन्तामणि चौहान ने आकर बालक को देखकर कहा कि यह पुत्र सिंह लग्न में उत्पन्न हुआ है। यह सिंह के समान पराक्रमी होकर बड़े-बड़े राजाओं को परास्त करेगा और इसका नाम युगयुगान्तर तक चलेगा। इसका नाम आल्हा होगा।

आल्हा का विवाह १७ वर्ष की अवस्था में नैनागढ़ में नैपाली राजा की कन्या सोनवा के साथ हुआ। सोनवा का दूसरा नाम मछला भी था। यह जादू में अपनी जोड़ न रखती थी।

आल्हा ने भगवती का वर्षों घोर तप करने के पश्चात् अपना शिर काटकर चढ़ा दिया था, तब देवी ने अमृत छिड़ककर अमर वरदान दिया। आल्हा ने सभी युद्धों में विजय पाई और अन्त में बेला के सती होने के संग्राम में जब इनके सभी कुटुम्बी और वीर मारे गये तब इन्होंने देवी के दिये हुये खड्ग को निकाला जिसकी परछाहीं पड़ते ही पृथ्वीराज के सभी

सैनिक शूर सामंत नाश हो गये, केवल पृथ्वीराज और चन्द्रभाट एक वृक्ष की आड़ में होने के कारण बच गये। उसी समय गुरु गोरखनाथ ने आकर आल्हा का हाथ पकड़ लिया और पृथ्वीराज व कवि चन्द्र को जीवित छोड़कर दिल्ली भेजवा दिया और आल्हा को साथ ले वन को गमन किया।

आल्हा के एक वीर्यवान् पुत्र इंदल था जिसने अपनी माता सोनवा से जादू की भी पूरी शिक्षा ली थी। इसका विवाह बलखबुखारा के नृप अभिनन्दन की चन्द्रवदनी कन्या चित्ररेखा से हुआ था। इन्दल ने भी अनेक युद्धों में घोर पराक्रम दिखलाया है।

मलिखान

आल्हा के जन्म के साल-डेढ़-साल बाद राजा बच्छराज की रानी तिलका के गर्भ से सिंह लग्न और पुष्य नक्षत्र में एक महावीर पुत्र उत्पन्न हुआ। यही आगे चलकर मलिखान नाम से प्रसिद्ध हुआ और इसकी तलवार का मुकाबला करनेवाला महोवे से लेकर दूर-दूर तक न था। इसका शरीर वज्र के समान था और देवी का वरदान था कि इसकी मृत्यु किसी के हाथों न हो सकेगी। इसने किशोरावस्था ही में अपने पिता बच्छराज का सिरसागढ़, जो पृथ्वीराज ने उनके मरने के बाद दवा लिया था, लड़कर छीन लिया था। इसने अपने बाहुबल से २३ गढ़ विजय किये थे, अन्त में सिरसा की दूसरी लड़ाई में धोखे से इसकी मृत्यु हुई और इसकी रानी गजमोतिन, जो पथरीगढ़ के गजराजा की कन्या थी, इसके शव को लेकर सती हो गई।

ढेवा (देवकृष्ण)

मलिखान के जन्म के बाद महोवा के राजपुरोहित चिन्तामणि चौहान के भी एक वीर पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम ढेवा (देवा, देवकर्ण) था। यह परम वीर होने के अतिरिक्त ज्योतिषी भी था। यह अचूक मुहूर्त शोधता था और बाएँ हाथ से कठिन तलवार चलाता था। एक युद्ध में पृथ्वीराज के चचेरे भाई महापराक्रमी संयमराय का शिर इसने केवल गदा के एक प्रहार से उड़ा दिया था। ऊदन का यह लँगोटिया यार और परम मित्र था।

धाँधू (चन्द्रपुण्डीर)

कुछ दिनों बाद दिवलदेवी के एक दूसरा पुत्र अभुक्त मूलों में पैदा हुआ। ज्योतिषियों ने कहा कि यह महान् योद्धा होगा, परंतु यह अपने ही कुल से संग्राम करेगा और इसकी दृष्टिमात्र से ही पिता का देहांत हो जायगा।

ज्योतिषी का यह वचन सुनकर वह बालक एक बाँदी के पास लालन-पालन के लिये छोड़ दिया गया। बांदी एक अलग महल में उसे लेकर रहने लगी। बालक बहुत तेजस्वी, स्वरूपवान् और हृष्टपुष्ट था। उसका नाम चन्द्रपुण्डीर था।

एक दिन यह बाँदी जब विठूर गंगास्नान को गई थी, वहाँ महाराज पृथ्वीराज ने उसकी चंचलता और रूप पर मोहित हो उसका परिचय छिपे-छिपे प्राप्त किया और एक जादूगर द्वारा उसे हरण करवा लिया। पृथ्वीराज के चचा कन्हदेव ने अपने कोई पुत्र न होने के कारण उसे गोद ले लिया और यही बालक आगे चलकर महापराक्रमी धाँधू नाम से विख्यात हुआ। अपने ग्रहों के अनुसार महोबे के विरुद्ध घोर युद्ध कर, अन्त में लाखनराना के हाथों इसकी मृत्यु हुई। १० ही वर्ष की अवस्था में धाँधू समस्त अस्त्र-शस्त्र विद्या में पारंगत हो चुका था।

ब्रह्मा

इन्हीं दिनों रानी मल्हना के एक परम सुन्दर राजकुमार उत्पन्न हुआ। राजा परिमाल ने बुढ़ापे में युवराज का मुँह देखा था। घर-घर आनन्द मनाया गया। महोबा उस समय इन्द्रपुरी के सदृश हो रहा था। राज-ज्योतिषी ने बतलाया कि यह बालक मेष के सूर्य, वृष के चन्द्रमा, रोहिणी नक्षत्र में जन्मा है। यह सूर्य के समान तेजस्वी और स्वामिकार्तिक के समान बली व स्वरूपवान् होगा। यह ब्राह्मणों का परमभक्त होगा। उसका नाम ब्रह्मानन्द रक्खा गया। इनका विवाह दिल्ली में महाराज पृथ्वीराज की कन्या बेला से हुआ था। गौने में इन्होंने आल्हा ऊदल की सहायता लिये बिना ही पृथ्वीराज को परास्त किया था; परंतु फिर ताहर, चौंड़ा और धाँधू ने धोखे में ग़ाफ़िल करके इन्हें मार डाला था।

ब्रह्मानन्द का एक छोटा भाई रंजित भी था जो कीरतसागर के युद्ध में मारा गया। ब्रह्मा की छोटी बहिन चन्द्रावली बौरीगढ़ के राजकुमार इन्द्रसेन को विवाही थी।

ऊदन

महाराज दस्सराज और देवकुँअरि के तीसरा पुत्र ऊदन नाम का अद्भुत योधा हुआ। जिसके नाम ही से बड़े-बड़े सूरमा काँप उठते थे। चूँकि इनका जन्म महाराज दस्सराज के वध होने के ३ महीने बाद हुआ था, इसलिये माता दिवला ने पहले उस पर बड़ा रोष रखा और इस कारण रानी मल्हना ने स्वयं उसे पाला। इसी प्रकार राजा बच्छराज के

मरण के वाद रानी तिलका के वीर सुलिखान का जन्म हुआ। ऊदन ने भी भगवती शारदा की मढ़ी में घोर तप किया था और देवी ने वरदान दिया था कि चौंड़ा के अतिरिक्त तुम्हारी मृत्यु और किसी के हाथ न होगी। ऊदन के पराक्रम को कोई शूर नहीं पाता था। इन्होंने २२ गढ़ अपने वाहुवल से विजय किये थे। पृथ्वीराज-रासो में लिखा है कि ऊदन के शीश कटने पर उनके कवंध ने कई दिवस विना शीश के ही घोर युद्ध किया था। ऊदन का विवाह नरवरगढ़ में नरपति राजा की कन्या फुलवा से हुआ था।

माहिल, भोपांत (जागनि)

जिस समय राजा परिमाल ने राजा मालवन्त से महोवा जवरदस्ती छीन लिया था, उसी समय से उनके लड़के माहिल और भोपति चन्देले से वैर रखते थे। राजा वासुदेव (मालवन्त) के देहांत होने पर माहिल उरई के राजा हुए और इनके भाई भोपति ने, जिनका दूसरा नाम जागनि भी था, जगनेरी में अपनी वैठक जमाई। कुछ दिनों में भोपति के मरने पर राजा परिमाल ने अपने भाञ्जे जगनायक को जगनेरी का सूवा दिया। यह जगनायक भी वड़ा भारी सूरमा था।

माहिल ने उसी द्वेप के कारण सदैव महोवे का अशुभ चेता और पृथ्वीराज आदि तमाम राजाओं को परिमाल के और खासकर आल्हा, ऊदन, मलखान आदि के विरुद्ध भड़काते रहे; क्योंकि परिमाल इन्हीं प्रवल प्रयत्नों के सहारे राज्य करते थे। परिणाम यह हुआ कि महोवे का राजवंश और सारे शूरवीर नाश हो गये। अंत में परिमाल-रासो के अनुसार माहिल भी इन्हीं युद्धों में मारे गये।

कन्नौज का इतिहास

जिस समय का यह इतिहास है, उस समय कन्नौज में राठोर वंश का वैभव था। इस वंश में चक्रवर्ती महाराज अजयपाल ने 'वेनि चक्कवे' की उपाधि पाकर अखण्ड राज्य किया था। उनके जयचन्द और रतीभान दो ऐसे ही वली पुत्र थे। रतीभान ने संयोगिनिस्वयंवर में पृथ्वीराज से घोर युद्ध किया और उनके चाचा कान्हदेव को मारकर उन्हीं के हाथों स्वयं भी मारे गये।

लाखन

रतीभान के एक महावली पुत्र लाखन उत्पन्न हुआ। राजा जयचन्द के कोई पुत्र न था। दो भाइयों और वारह रानियों में एकलौता पुत्र था।

लाखन नकुल का अवतार, परमस्वरूपवान् और इन्द्र के समान वली था। जिस समय महोवे को पृथ्वीराज ने वीरों से शून्य समझ घेर लिया था और रानी मल्हना ने जगनिक को आल्हा-ऊदन को मनाने के लिये कन्नौज भेजा था, उस समय लाखन का वैसे ही गौना हुआ था। उस महावीर ने पद्मिनी के समान अपनी नवोढ़ा वधू को त्यागकर अपने मित्र ऊदन के साथ नदी वेतवा पर जाकर पृथ्वीराज के नौ लाख दल के साथ मोर्चा लिया और विजय प्राप्त की। भुरही नाम की इसकी एक माती हथिनी साँकल घुमाकर कोसों तक शत्रुओं का संहार करती थी। वेला के सती होने की लड़ाई में धाँधू ऐसे वीरों को मारकर शब्दवेधी चौहान का सामना किया। पृथ्वीराज ने अपने तरकस के जितने अचूक वाण थे, लाखन पर छोड़ दिये। वीर लाखन राना ने अपना सीना खोलकर उन अमोघ अस्त्रों को सहन कर लिया और पृथ्वीराज का हाथी भुरही की टक्कर से विचलित हो मोर्चे से हट गया। उसके वाद इस वीर का शरीर निश्चेष्ट हो पृथ्वी पर गिर पड़ा।

महाराज जयचंद और राजा परिमाल की सदैव से मित्रता थी और उसको लाखन ने अपने पराक्रम और वलिदान से अमर कर दिया।

उड़न बछेड़े

ऐसा कथन है कि एक वार देवराज इन्द्र परमसुन्दरी रानी मल्हना के स्वरूप पर मोहित हो गये। उन्होंने राजा परिमाल से मित्रता की और उन्हें खाँड़ा विजुलिया, वज्र, पपीहा घोड़ा, पचशावद हाथी, ये वस्तुएँ उपहार में दीं। अवसर पाकर एक वार इन्द्र राजा परिमाल के वेश में मल्हना के पास पहुँचे, परन्तु उस दिन एकादशी होने के कारण रानी मल्हना ने कुतूहलपूर्वक इन्द्र से पूछा कि महाराज, यह धर्म के विरुद्ध आचार कैसा? तव इन्द्र ने प्रकट होकर अपनी अभिलाषा जाहिर की। तव मल्हना ने हाथ जोड़कर कहा कि भगवन्, मैं पतिव्रता स्त्री हूँ। आप मुझ पर दयालु हों। आपका आशीर्वाद होगा तो मेरे आप ही के समान प्रवल प्रतापी पुत्र उत्पन्न होगा। इन्द्र उसके इस कथन पर लज्जित हो गये। जिस समय इन्द्र राजा परिमाल से मिलने आया करते थे, उस समय इन्द्र के श्यामकर्ण घोड़े और परिमाल की चितरंगी घोड़ी इन दोनों में संयोग होने से पाँच वड़ी राशि के घोड़े हुए। यही घोड़े आगे लिखे अनुसार नाम पाकर आल्हा ऊदन आदि को मल्हना ने दिये। करलिया जो आल्हा को और वाद में इन्दल को दे दिया गया, घोड़ी कवुतरी मलिखान को, हरनागर ब्रह्मा को, मनुरथा ढेवा को और रसवेंदुल ऊदन को दिये गये। एक और साधारण घोड़ी के संयोग से भी दो हिरौंजिन घोड़ी हुई थीं। उनमें एक सुलखान

नो और एक ब्रह्मा के छोटे भाई रंजित को दी गई। ये सातों बछेड़े हवा की तरह तेज चलते थे और बिजली के समान आकाश में उड़ जाते थे। जिस समय इनके स्वामी युद्ध में जाते थे, उस समय ये भी अपने दाँतों और टापों से सैकड़ों को घायल करते थे।

दिल्ली का इतिहास

जिस समय कन्नौज में वेनचक्रवै महाराज अजयपाल राज्य कर रहे थे, उसी समय पृथ्वीराज के पिता राजा सोमेश्वर अजमेर में चौहान राज्य के अधीश्वर थे। इन्हीं के समकालीन दिल्ली में तोमरवंशी महाराज अनङ्गपाल भी थे। महाराज अनङ्गपाल के दो कन्याएँ थीं। उनमें बड़ी कन्नौज में विवाही थी और इन्द्रवती नामक छोटी अजमेर में महाराज सोमेश्वर को विवाही गई।

पृथ्वीराज

कथन है कि जब इन्द्रवती गर्भवती थी तो महाराज अनङ्गपाल ने ज्योतिषियों को बुलाकर अपनी कन्या के गर्भ से उत्पन्न होनेवाली संतान के लक्षणों के जानने की अभिलाषा प्रकट की। ज्योतिषियों ने विचारकर निवेदन किया कि इस गर्भ से एक महातेजस्वी, अतुल पराक्रमी, संपूर्ण राजाओं को जीतनेवाला, आजानुबाहु, शब्दवेधी पुत्र होगा; परन्तु अपने नाना के वंश के लिये घातक होगा। यह आप सबको निकालकर दिल्ली पर अधिकार करेगा।

राजा अनङ्गपाल को यह सुनकर बड़ी चिन्ता हुई। उन्होंने अपनी कन्या को तीर्थयात्रा के बहाने बाहर भेजवाकर धोखे से एक अन्धकूप में डलवा दिया। इन्द्रवती वेदना से उस कूप में छटपटा रही थी कि द्वापर के अद्वितीय गुरु द्रोणाचार्य के पुत्र महापराक्रमी अश्वत्थामा उधर से आ निकले। उन्होंने इस विलाप को सुनकर इन्द्रवती को बाहर निकाला और उसकी इस दशा का कारण पूछा। इन्द्रवती ने कहा कि महाराज, मैं तीर्थयात्रा को जा रही थी, उसी बीच न जाने किन दुष्टों ने मेरी यह दशा की। सोमेश्वर ने विचारकर सारा रहस्य समझ लिया और पूछा कि क्या तुम्हारी पति के घर जाने की इच्छा है? राजकुमारी ने हाथ जोड़कर कहा—महाराज, अब आप ही मेरे पिता हैं, अब मैं आपको छोड़ कहीं न जाऊँगी। मुनिराज अश्वत्थामा ने उसे ले जाकर अपने आश्रम में रखा। वहीं इन्द्रवती के गर्भ से ज्योतिषियों के बतलाये हुए लक्षणों से पूर्ण युक्त महाराज पृथ्वीराज का जन्म हुआ। यह कुरुराज दुर्योधन के अवतार थे। पृथ्वीराज ने शस्त्र-

विद्या के एकमात्र अद्वितीय ज्ञाता अश्वत्थामा ही से पूरी वाणविद्या प्राप्त की। छोटी अवस्था ही मे सिंह आदिक वन्य पशुओं को पकड़ लाना उनके लिये साधारण बात थी।

एक दिन राजा सोमेश्वर भी आखेट करते हुए उसी ओर आ निकले। निर्जन वन में खेलते हुए उस तेजस्वी वीर बालक को देख अचानक उनका मन मुग्ध हो उठा। अपनी बिछुड़ी हुई स्त्री और उसके गर्भ की बात ध्यान में आ गई। वह आतुर हो पूछने लगे कि हे कुमार, तुम किस भाग्यवान् के पुत्र हो और इस अरण्य में अकेले कैसे घूम रहे हो? राजकुमार पृथ्वीराज ने कहा कि महाराज, मैं मुनिराज महावीर अश्वत्थामा का पुत्र हूँ। आप कृपा कर मेरे साथ आश्रम तक चलने का कष्ट करें।

राजा सोमदेव बालक के साथ हो लिये। आश्रम में पहुँचते ही अश्वत्थामा को उन्होंने दण्डवत् की। मुनि ने आसन दे उनसे परिचय पूछा। राजा ने अपना परिचय देकर कहा कि महाराज, मैं अपनी हरण की हुई परमसुन्दरी स्त्री के विरह में वन-वन भटक रहा हूँ और उस बेचारी का तो अब पता ही क्या होगा। ऐसा कह वह रोने लगे। अश्वत्थामा ने कहा कि राजन्, अधीर मत हो। ईश्वर बड़ा कृपालु है। तुम्हारी स्त्री आश्रम में ही सुरक्षित है और मुझसे सर्वविद्या-प्राप्त सर्वगुणसम्पन्न यह पुत्र तुम्हारा ही है। अनन्तर उन्होंने आदि से अन्त तक कथा कह सुनाई। उस समय इन तीनों के सम्मिलन का असीम आनन्द वर्णन नहीं किया जा सकता। कुछ समय बाद ऋषिवर से आज्ञा ले ये विदा हुए। चलते समय अश्वत्थामा ने एक अर्धचन्द्राकार बाण पृथ्वीराज को देकर आशीर्वाद दिया कि इस बाण से शत्रु कदापि बच नहीं सकता और उसका संहार कर यह पुनः तुम्हारे पास लौट आयेगा।

पृथ्वीराज का दिल्ली पर अधिकार

एक समय की बात है कि गजनी के बादशाह की चढ़ाई सुनकर राजा अनङ्गपाल ने अपना कटक ले उधर जाने का विचार किया, परन्तु दिल्ली को भी सूना छोड़ना उचित न समझकर अपने नाती पृथ्वीराज को अजमेर से बुलवाकर दिल्ली की रक्षा का भार सौंपा। चतुर पृथ्वीराज ने राजा से यह प्रतिज्ञा करवा ली थी कि उनकी अनुपस्थिति में सारी प्रजा, सेना व कुटुम्बी सब मेरी आज्ञा के अधीन रहें और बिना मेरी अनुमति के स्वयं आप भी नगर में न आ सकें। महाराज ने यह रक्षा के लिये उपयोगी समझकर आज्ञा दे दी थी। उधर वह ग़ज़नी की ओर बढ़े और इधर पृथ्वीराज ने राज्य के प्रधान-प्रधान अमात्यों को येन-केन-प्रकारेण प्रसन्न कर लिया और

जब राजा अनङ्गपाल शत्रु को परास्त करके दिल्ली लौटे तो पृथ्वीराज ने उन्हें वहीं रोक दिया। राजा पहले तो बड़े क्रुद्ध हुए, परन्तु फिर यह सोचकर कि वृद्धावस्था आ पहुँची है और मेरे कोई पुत्र भी नहीं है, इसके अतिरिक्त मेरा नाती पृथ्वीराज सब प्रकार से राज्य चलाने में समर्थ है, उन्होंने सहर्ष सब राजाओं को बुलाकर पृथ्वीराज का राज्याभिषेक कर दिया। इस प्रकार पृथ्वीराज अजमेर और दिल्ली दो राज्यों के अधिकारी हुए।

महाराज पृथ्वीराज ने कई विवाह किये और प्रायः उन सभी में घोर युद्ध हुए, जिसमें सैकड़ों बड़े-बड़े सूरमा मारे गये। आखिरी विवाह कन्नौजाधिपति महाराज जयचन्द की अति लावण्यवती कन्या संयोगिता के साथ हुआ। यह पहले लिखा जा चुका है कि राजा अनंगपालकी बड़ी कन्या कन्नौजमें विवाही थी। इस कारण जयचन्द दिल्ली पर अपना अधिकार समझते थे, परन्तु पृथ्वीराज को दिल्ली का राज्य मिलने से इन दोनों में मनोमालिन्य हो गया। इसी लिये संयोगिता के स्वयंवर में पृथ्वीराज को निमंत्रण नहीं दिया गया था। परन्तु उसने छद्मवेश में वहाँ जाकर वारा-जोरी संयोगिता का हरण किया था। इन दोनों विशाल राज्यों के वैर में यह पूर्ण आहुति थी।

इधर ग़ज़नी के बादशाह शहाबुद्दीन ग़ोरी ने भारत पर अनेकों चढ़ाई कीं, परन्तु वीर पृथ्वीराज ने उसे सदैव मार भगाया। परन्तु अंतिम हमले में पृथ्वीराज की हार हुई और उसी में वह मारा गया। तभी से भारतवर्ष की स्वतंत्रता नष्ट हो गई। इस हार का प्रधान कारण यह था कि महोबा, कन्नौज आदि के घोर युद्धों में अनेकों वीर सामन्त काम आ गये थे। इन राजाओं में परस्पर मनमोटाव भी था। किंवदन्ती है कि गोरी की अन्तिम चढ़ाई के लिये बुलानेवाले जयचन्द ही थे। पृथ्वीराज भी अन्तिम समय में विलासी और राजकाज से विमुख हो गये थे।

पृथ्वीराज के ताहर (कर्ण का अवतार) आदि दस लड़के थे और बेला नाम की एक कन्या थी, जो महोबे के राजकुमार ब्रह्मा को विवाही गई और उसी के गौने और सती होने तक सब संहार हो गया।

चन्द्रबरदाई

चन्द्रबरदाई पृथ्वीराज के पुरोहित-वंश में उत्पन्न हुआ था। यह कवि होने के साथ-साथ बड़ा वीर और पृथ्वीराज का मंत्री तथा परम मित्र था। 'पृथ्वीराजरासो' नाम का विशाल ग्रंथ इसी की रचना है। ग़ोरी के साथ अन्तिम युद्ध में पृथ्वीराज के साथ वह भी क़ैद होकर ग़ज़नी गया था और वहीं उसका अन्त हुआ। इसके भी १० पुत्र थे, उनमें जल्ह का नाम प्रसिद्ध है।

चौंड़ा (चामुण्ड)

चौंड़ा ब्राह्मण का नाम चामुण्ड था। यह द्रोणाचार्य का अवतार कहा जाता है। यह बड़ा वीर और पृथ्वीराज के तमाम लश्कर का सिपहसालार था। इसको किसी भी अस्त्र से न मरने का भगवती का वरदान था। इसी कारण आल्हा ने इसे मींज-मसलकर मारा था। एकदन्ता नाम का प्रसिद्ध हाथी इसकी सवारी में रहता था।

राजा परिमाल और पृथ्वीराज में मनोमालिन्य

'पृथ्वीराजरासो' के अनुसार पृथ्वीराज और राजा परिमाल में अनबन होने का कारण एक और भी था। एक बार किसी युद्ध से लौटते समय पृथ्वीराज के कुछ घायल सिपाही राह भूलकर महोबे आ निकले और परिमाल के बग़ीचे में डेरा जमाना चाहा। माली के आपत्ति करने पर उन्होंने उसे मार डाला। राजा परिमाल ने यह समाचार सुन ऊदन को उन्हें बाँध लाने की आज्ञा दी। ऊदन ने घायलों से युद्ध करना अनुचित समझकर आपत्ति की। इस पर अनिष्ट-चेता माहिल ने कहा कि ऊदन युद्ध से भयभीत हैं। परिमाल ने उसकी बातों में आकर ऊदन को फिर ललकारा। परिणामस्वरूप ऊदन ने उन सबको युद्ध में मार डाला। यह कारण इन दो राज्यों में वैर का बीज बन गया।

शूरता की मर्यादा

उस समय १०० मनुष्यों पर हावी होकर उन्हें परास्त करनेवाला योधा कहलाता था। ऐसे ही १०० योधाओं पर विजयी होनेवाला शूर, १०० शूरों का हनन करनेवाला सामंत, १०० सामन्तों पर धवल और १०० धवलों पर गर्जने और सफल होनेवाले को सबल कहते थे। योधा में पाँच, शूर में दस, सामंत में बीस, धवल में चालीस और सबल में अस्सी हाथियों का बल होता था। महाराज पृथ्वीराज में सबल के सभी गुण मौजूद थे। आल्हा भी सबलों की कोटि में थे। महावीर मलिखान, ऊदन, लाखन, ब्रह्मा, ढेबा, धाँधू, चौड़ा यह सब धवलों की कोटि में थे।

इस प्रकार इस वीर पँवारे में आये हुए व्यक्तियों का यत्किञ्चित् इतिहास है। ये सब एक-से-एक पराक्रमी थे। इनकी हुङ्कार से धरा काँपती थी। इनके वीरत्व की आधुनिक संसार में कहीं छाया भी नहीं मिलती। परन्तु हमारे देश के दुर्भाग्य से ये रणकेसरी परस्पर ही लड़कर विलीन हो गये। भारत गुलाम हो गया। केवल उनकी वीरगाथा रह गई है; उसे गा-गाकर हम अपने पुराने ज़माने का ध्यान करते हैं। संभव है कि एक दिन फिर वही समय हमारे आगे आ जावे।

आल्हखंड ५२ लड़ाइयों की सूची

आल्हखंड

संयोगिनिस्वयंवर

(पृथ्वीराज और जयचन्द-युद्ध)

सिंहावलोकन सवैया

बन्दत तोहिं सदा गननायक जासु कृपा दुख दारिद नासै ।
नासै सु दारिद दोष सबै उर अन्तर आतमज्ञान प्रकासै ॥
प्रकासै सु आतमज्ञान जबै तब दुःख सबै जग को सुख भासै ।
भासै जबै सुख को दुख सत्य तबै ललिते यमराज न फाँसै ॥

सुमिरन

कौरव पाण्डव दोउ दल जूझे ❀ करिकै कुरुक्षेत्र मैदान।
सोई जनमे सब दुनियाँ में ❀ आल्हा ऊदन आदि महान॥
जिनकी कीरति घर घर फैली ❀ फैलिकै लीन जगतको छाय।
को जस बरनैतिन छत्रिन कै ❀ हमरे बूत कही ना जाय॥

ग्रंथकार का परिचय

छं०—जिला जौन उन्नाव तासु पूरबदिसि माहीं।
पाँच कोस है ग्राम नाम पड़री तिहि काहीं॥
किरपाशंकर मिश्र वृत्ति पण्डित की जाहीं।
तिन सुत ललिते नाम ग्रन्थ निर्मापक आहीं॥

ते जस बरनैं अब जयचँद का ❀ लैकै रामचन्द्र का नाम।
प्रथम स्वयंवर संयोगिनि का ❀ पाछे बरनों युद्ध ललाम॥
सबकनवजियात्यहिकनउजमाँ❀ बीच म बसै तहाँ नरपाल।
छूटि सुमिरनी गै ह्याँते अब ❀ सुनिये कनउज केर हवाल॥

कथाप्रसंग

जयचँद राजा कनउज वाला ❀ आला सकल जगत सिरनाम।
को गति बरनै त्यहि मंदिरकै ❀ सोहै सोन सरिस त्यहि धाम॥
केसरि पोतो सब मंदिर है ❀ औ छति लागि बनातन केर।
सुवा पहाड़ी तामें बैठे ❀ चक्कस गड़े बुलबुलन केर॥
लाल औ मैननकै गिनती ना ❀ तीतर घूमि रहे सब ओर।
पले कबूतर कहुँ घुटकत हैं ❀ कहुँ कहुँ नाचि रहे हैं मोर॥
लागि कचहरी है जयचँद कै ❀ बैठे बड़े बड़े नरपाल।
बना सिंहासन है सोने का ❀ तामें जड़े जवाहिर लाल॥
तामें बैठे महराजा हैं ❀ दहिने धरे ढाल तरवार।

जामा पहिरे रेसमवाला ❀ आला कनउज का सरदार ॥
पाग बैंजनी सिर पर सोहै ❀ ता पर कलँगी करै बहार ।
कवि औ पण्डित बहु बैठे हैं ❀ भारी लाग राजदरबार ॥
नचै पतुरिया सन्मुख ठाढ़ी ❀ ओढ़े कासमीर कै सारि ।
जूरा झलकै त्यहि सारी बिच ❀ काली नागिन के अनुहारि ॥
फूल चमेलिन के जूरा में ❀ नखतन सरिस करैं उजियारि ।
हरवा सोहि रहा बेला का ❀ छैला ताको रहे निहारि ॥
बाला हालै त्यहि कानन में ❀ गालन छुवैं और टरि जाँय ।
अद्भुत बेसरि परी नाक में ❀ सोभा तासु कही ना जाय ॥
दुलरी तिलरी और सतलरी ❀ गरे परी दै रही बहार ।
बाजू सोहैं दोउ बाहुन में ❀ जोसन सोभा अमित अपार ॥
सोहैं कलाइन में ककना भल ❀ तामें चुरियाँ नई बहार ।
छल्ला सोहैं त्यहि अँगुरिन में ❀ ताको छत्री रहे निहार ॥
सोने करगता तीन लरन को ❀ सो कम्मर में करै बिहार ।
कड़ा के ऊपर छड़ा बिराजैं ❀ ता पर पायजेब झनकार ॥
पैर जमावै कमर झुकावै ❀ अँगुरिन भाव बतावति जाय ।
जौनि रागिनी जब बाजिबहै ❀ ताको तबै देय दर्साय ॥
पास जाय जब वह राजा के ❀ पावै द्रव्य जाय हर्षाय ।
माफी पाये है कनउज में ❀ लरिका तीनि साखि लौं खाँय ॥
लाग अखाड़ा रजपूतन का ❀ सोभा कही बूत ना जाय ।
खाये गोला हैं अफीम के ❀ पलकैं मूँदैं औ रहि जाँय ॥
उड़ै तमाखू बुटवल वाली ❀ धुवना सरग रहा मड़राय ।
भाँग जमाये बहु बैठे हैं ❀ मन माँ रहे रामजस गाय ॥
त्यही समइया त्यहि अवसर माँ ❀ राजै गयो सोच मन छाय ।

वर के लायक संयोगिनि है ❀ काके संग बियाही जाय॥
यहै सोचिकै मन राजा ने ❀ तुरतै पण्डित लीन बुलाय।
साइति सोधौ अब जल्दी सों ❀ जामें रचा स्वयंवर जाय॥
सुनिकै बातैं महराजा की ❀ पण्डित साइति दीन बताय।
मन्त्री बैठ रहै पासै माँ ❀ राजै हुकुम दीन फर्माय॥
न्यवत पठायो सब राजन को ❀ कनउज साजि करो तय्यार।
हुकुम पायकै महराजा को ❀ मन्त्री तुरत भयो हुसियार॥
उठि सिंहासन सों ठाढ़ो भो ❀ राजा कनउज का सरदार।
करी पैलगी सब बिप्रन को ❀ छत्रिन कीन्ह्यो राम जुहार॥
ब्राह्मन छत्री गे अपने घर ❀ महलन गयो चँदेलाराय।
आवत देख्यो जब राजा को ❀ बाँदी चली तड़ाका धाय॥
खबरि सुनाई महरानी को ❀ महलन आवत कन्त तुम्हार।
सुनिकै बातैं ये बाँदी की ❀ रानी तुरत भई हुसियार॥
आगे ठाढ़ी भइ द्वारे पर ❀ राजा अटे बराबरि आय।
पहिले राजा गे मन्दिर को ❀ पाछे चली आप हू जाय॥
पौढ़्यो पलँगा पर महराजा ❀ आपौ बैठि चरन ढिग जाय।
हरुये हरुये दोउ हाथन सों ❀ दोऊ लीन्ह्यो चरन उठाय॥
सो धरिराख्यो निज गोदीमें ❀ औ छाती में लिह्यो लगाय।
चापन लागी धीरे धीरे ❀ सोवन लाग चँदेलोराय॥
आपो सोई महराजा सँग ❀ मन में रामचन्द्र को ध्याय।
भोर भ्वरहरे पह फाटत खन ❀ पंछी रहे सबै चिल्लाय॥
मन्त्री जागा महराजा का ❀ लीन्ह्यो द्वारपाल को टेर।
जल्दी लावो कोतवाल को ❀ यामें करो कछू ना देर॥
सुनिकै बातैं ये मन्त्री की ❀ चलि भो द्वारपाल सिर नाय।

जायकैपहुँच्योकोतवाल ढिग ❁ औ सब खबरि सुनाई जाय ॥
पाय इत्तिला द्वारपाल सों ❁ तुरतै आटा भवन में आय ।
सावधान ह्वै हाथ जोरिकै ❁ मन्त्रिहि सीस नवायोजाय ॥
ठाढ़े देख्यो कोतवाल को ❁ मन्त्री हुकुम दीन फर्माय ।
मंच गड़ावो दिसि पूरब में ❁ मारग साफ करावो जाय ॥
हुई स्वयंवर संयोगिनि का ❁ पुर में डौंड़ी देव पिटाय ।
झण्डा गाड़ो राजमहल में ❁ बन्दनवार देव बँधवाय ॥
सुनिकै बातैं ये मन्त्री की ❁ तुरतै कोतवाल चलि जाय ।
कलम दवाइत कागज लैकै ❁ सीताराम चरन मन ध्याय ॥
चिट्ठी लिखिकै सब राजन को ❁ मन्त्री धावन लीन बुलाय ।
दै दै चिट्ठी हरकारन को ❁ राजन न्यवत दीन पहुँचाय ॥
साजि साँड़िया को जल्दी सों ❁ धावन तुरत भये असवार ।
चिट्ठी लैकै महराजा कै ❁ पहुँचे राजन के दर्बार ॥
चिट्ठी पावत महराजा कै ❁ राजा सबै भये हुसियार ।
अपनी अपनी फौजनकोमब ❁ राजन तुरत कीन तय्यार ॥
बाजे डंका अहतंका के ❁ बंका चलत भये नरपाल ।
मारु मारु करि मौहरि बाजीं ❁ बाजीं हाव हाव करनाल ॥
ढाढ़ी करखा बोलन लागे ❁ बन्दिन कीन समरपद गान ।
दान मान दै सब बिप्रन को ❁ राजन कीन तुरत प्रस्थान ॥
खर खर खर खर कै रथ दौरैं ❁ चह चह रहीं धुरी चिल्लाय ।
दावति आवैं सब कनउज का ❁ भारी अंधकार गा छाय ॥
मस्ता हाथी घूमत आवैं ❁ छैला घोड़ नचावत जाँय ।
रातौ दिन का धावा करिकै ❁ कनउज धुरा दबायनि आय ॥
कोगति बरनै तेहि समया कै ❁ हमरे बूत कही ना जाय ।

तम्बू गड़िगे सब राजन के ❀ झण्डा आसमान फहरायँ ॥
भोर भ्वरहरे मुरगा बोलत ❀ जागा कनउज का नरपाल ।
दिसा फ़रागत सों छुट्टी करि ❀ मज्जन करत भयो तिहि काल ॥
पहिरिकै धोती रेसमवाली ❀ आसन बैठ चँदेलाराय ।
संध्याकरिकै त्यहि अवसरकी ❀ औ जपमाला लीन उठाय ॥
गायत्री को मन्त्र जप्यो फिरि ❀ तर्पन करन लाग महराज ।
अच्छत चन्दन धूप दीप औ ❀ लै पकवान सम्भु के काज ॥
भोग लगायो सिवसङ्कर को ❀ ध्यायो रामचन्द्र को नाम ।
फिर बुलवायो तिन विप्रन को ❀ जिनके जपै तपै का काम ॥
गऊ मँगायो पैंतालिस फिर ❀ ब्याई एक बेर की जौन ।
बछरा नीचे हैं जिनके औ ❀ सोने सींग मढ़ी हैं तौन ॥
खुरौ मढ़े हैं जिन चाँदी से ❀ पीठ म परीं बनातन झूल ।
पूँछ पकरिकै तिन गौवन की ❀ राजा दान देत मन फूल ॥
भूसा दाना एक मास को ❀ विप्रन घरै दीन पहुँचाय ।
जायकै पहुँच्यो फिरि मंदिर में ❀ यकइस विप्रन लीन बुलाय ॥
दही दूध औ पेरा बरफी ❀ चटनी भाँति भाँति तय्यार ।
भोजन दीन्ह्योतिन विप्रन को ❀ राजा कनउज का सरदार ॥
सीध मँगायो पैंतालिस फिर ❀ औरे विप्रन लीन बुलाय ।
सहित दच्छिना के दीन्ह्योसो ❀ राजा बड़ा प्रेम मन लाय ॥
ऐसो दान नित्यप्रति देवै ❀ राजा विप्रन घरै बुलाय ।
पाछे भोजन आपौ करिकै ❀ तब दरबार पहूँचै जाय ॥
ऐसो दानी महराजा यहु ❀ राजा कनउज का सरदार ।
जायकैपहुँच्यो तिहि मंदिरमाँ ❀ जहँ पर भरी लाग दरबार ॥
आवत देख्यो जब राजा को ❀ ठाढ़े भये सूर सरदार ।

बैठि सिंहासन पर राजा गे ❀ दहिने लिये ढाल तरवार ॥
बैठे छत्री निज निज आसन ❀ मन में रामचन्द्र को ध्याय ।
हाथ जोरिकै मन्त्री बोल्यो ❀ ओ महराज कनउजी राय ॥
देस देस के राजा आये ❀ एक न आयो पिथौराराय ।
सुनिकै बातैं ये मन्त्री की ❀ जल्दी हुकुम दीन फ़र्माय ॥
मुरति बनावो तुम कपड़ा की ❀ भीतर पैरा देव भराय ।
जहाँ उतारे जूता जावैं ❀ तहँ पर खड़ा देव करवाय ॥
हुकुम पायकै महराजा को ❀ मन्त्री कीन तैसही जाय ।
मुरति पिथौरा की बनवायो ❀ तहँ पर खड़ा दीन करवाय ॥
बैठक बैठे सब राजा तहँ ❀ आपौ गयो चँदेलाराय ।
बाजन बाजे चौगिर्दा ते ❀ हाहाकार सब्द गा छाय ॥
सजिगा कनउज त्यहि औसरमाँ ❀ सोभा हमसे बरनि ना जाय ।
बन्दनवारे घर घर बाँधे ❀ घर घर रहे पताका छाय ॥
सजीं सुहगिलैं चौगिर्दा ते ❀ गावैं गीत मंगलाचार ।
त्यही समइया त्यहि औसरमाँ ❀ बोल्यो कनउज का सरदार ॥
जल्दी लावो संयोगिनि को ❀ साइति आय गई नगच्याय ।
हुकुम पायकै महराजा का ❀ चकरन खबरि जनाई जाय ॥
खबरि पायकै संयोगिनि फिरि ❀ महलन तुरत भई हुसियार ।
औ बुलवायो फिरि बाँदिन को ❀ सोरह करन लागि सिंगार ॥

सवैया

मज्जन[1] चीर[2] औ कुण्डल[3] अंजन[4] नाक में मौक्तिक[5] बेस[6] सँवारी ।
कंचुकि[7] औ छुद्रावलि[8] कंकन[9] कुसुमित[10] अम्बर[11] चन्दन धारी ॥
खायकै पान[12] औ धारि मनीन[13] को हार[14] औ नूपुर[15] की झनकारी ।
सिंदुर[16] भाल बिसाल लसे ललिते मन लज्जित मन्मथनारी ॥

सजि संयोगिनि गै इकपलमाँ ❀ बाँदिन हुकुम दीन फरमाय।
डोला लावो अब जल्दी सों ❀ बाँदी चलीं हुकुम को पाय॥
लाई डोला सो जल्दी सों ❀ औ त्यहि खबरि सुनाई जाय।
सुनिकै बातैं सो बाँदी की ❀ मन में श्रीगनेस को ध्याय॥
सुमिरि भवानी सिवसंकर को ❀ औ सुरजन को माथ नवाय।
बैठी डोला में संयोगिनि ❀ सीतारामचरन मन लाय॥
चारि कहरवा मिलि डोला लै ❀ तुरतै चले पुरुब दिसि धाय।
आगे डोला संयोगिनि को ❀ पाछे चलीं सहेली जाँय॥
दौरति जावैं पुरबासी सब ❀ दासिन भीर भई अधिकाय।
चढ़िगे मंचन नर नारी सब ❀ राजा देखि देखि हर्षाय॥
बड़ी भीर भइ तब कनउज में ❀ औ तिल डरे भुइँ ना जाय।
सोभा गावैं जो कनउज की ❀ तौ फिरि एकसाल लगि जाय॥
डोला लैकै संयोगिनि का ❀ महरन तहाँ उतारा जाय।
जहँना बैठे सब राजा हैं ❀ एकते एक रूप अधिकाय॥
उतरिकै डोलासों संयोगिनि ❀ माला दहिन हाथ लै लीन्ह।
सुमिरि भवानी सुत गनेस को ❀ महिफिलबीचगौनतबकीन्ह॥
बैठे राजा सब महिफिल में ❀ एक ते एक सूर-सरदार।
कोउ कोउ राजा तीस बरस का ❀ कोउ कोउ बर्स अठारहक्यार॥
काले नीले पीले लाले ❀ उजले सोभा के अधिकाय।
जामा पहिरे रेसमवाले ❀ चम्चम् चमकि २ रहि जाँय॥
ओढ़ें दुपटा तिन जामन पर ❀ गरे परे मोतियन के हार।
रंगबिरंगी पगड़ी सिर पर ❀ तिन पर कलँगी करें बहार॥
हाथ लगाये हैं मुच्छन पर ❀ दहिने परी ढाल तलवार।
पीठ दिखावें नहिं बैरी को ❀ ऐसे सबै सूर-सरदार॥

लैकै माला संयोगिनि तहँ ❀ घूमत फिरै सखिन के साथ।
मननहिंभावैकोउ राजा त्यहि ❀ जाको करै आपनो नाथ॥
देखैं राजा संयोगिनि तहँ ❀ औ सिर नीचे लेयँ नवाय।
माला डारै नहिं काहू के ❀ छत्री गये सबै सर्माय॥
सोतो देखै पृथीराज को ❀ नहिं तहँ देखि परैं महराज।
चकृत ह्वैकै चौगिर्दा ते ❀ देखन लागि छाँड़िकै लाज॥
जबनहिं देख्योदिल्लीपति को ❀ तबमनसोचिसोचि रहिजाय।
काह बिधाता कै मर्जी है ❀ जो नहिं आयो पिरथीराय॥
काँरी रहिबे हम दुनिया में ❀ या फिरि ब्याहकरबतिन साथ।
त्यहिते तुमका हम ध्याइत है ❀ सुनिल्यो दीनबन्धु रघुनाथ॥
जइस मनोरथ तुम सीता को ❀ पुरयो आप चराचर नाथ।
तइस मनोरथ अब हमरो है ❀ ब्याही जायँ पिथौरा साथ॥
त्वही गोसइयाँ दीनबन्धु है ❀ औ दसरथ के राजकुमार।
बेगि मिलावो दिल्लीपति को ❀ तब सब होवैं काज हमार॥
चरन तुम्हारे जो मन लावै ❀ गावै राम राम श्री राम।
सो फल पावै मनभावै जो ❀ पूरन होयँ तासु के काम॥
यह सुनि राखा हम बिप्रन ते ❀ ताको सत्य करो भगवान।
मूरतिदीख्योफिरि कपड़ा की ❀ तामें करन लागि अनुमान॥
है यह मूरति पृथीराज की ❀ मनमाँ ठीक लीन ठहराय।
लैकै माला संयोगिनि सो ❀ मूरति गरे दीन पहिराय॥
देखि तमासा सब राजा यह ❀ आसा छाँड़ि हृदयते दीन।
बिदा माँगिकै महराजाते ❀ राजन गौन तहाँते कीन॥
कूचके डंका बाजन लागे ❀ घूमन लागे लाल निसान।
चलिभेराजानिजनिज घरका ❀ करिकै सम्भुचरन को ध्यान॥

चढ़िकै डोला में संयोगिनि ❀ सोऊ चली महल को जाय।
उठिमहराजाफिरिमहिफिलते ❀ औ दरबार पहूँचे आय॥
मंत्री बैठत भो बाँयें पर ❀ दहिने बैठि विप्र सब जाय।
त्यही समइया त्यहि औसर में ❀ राजा बोल्यो भुजा उठाय॥
कौन पिथौरा को जानत है ❀ सरमुख ठाढ़ होय सो आय।
सुनिकै बातैं महराजा की ❀ बूढ़ो विप्र उठा हर्षाय॥
हमसों परचौ पृथीराज सों ❀ ओ महराज कनौजीराय।
पाँच बरस हम दिल्ली रहिकै ❀ पूजा कीन तासु घर जाय॥
भोजन पाये त्यहि महलन में ❀ बैठ्यन संग तासु महराज।
पूँछन चाहो का महराजा ❀ सोतुम कहौ आपनो काज॥
सुनिकै बातैं त्यहि ब्राह्मन की ❀ बोला तुरत कनौजीराय।
कस रजधानी है दिल्ली की ❀ कैसो बीर पिथौराराय॥
सुनिकै बातैं ये जयचँद की ❀ बोला विप्र बहुत सुख पाय।
नाम हस्तिनापुर दिल्ली का ❀ जानो आपु कनौजीराय॥
आगे राजा सन्तनु ह्वैगे ❀ गंगा भई जासु की नारि।
तिनसुत भीषम फिरि पैदा भे ❀ कीन्ह्यो परसुराम सों रारि॥
दिन सत्ताइस का संगर भा ❀ दूनों तरफ चले तहँ तीर।
मूर्च्छित ह्वैगे परसुराम जब ❀ गंगा आय छिनीक्यो नीर॥
सनमुख ह्वैगे फिरि दोऊ मिलि ❀ जुद्ध को होन लाग सासान।
तब समुझायो बहु गंगा ने ❀ अब नहिं करो जुद्ध को ठान॥
तुम्हरो चेला यहु भीषम है ❀ ओ जमदग्नितनय बलवान।
नाम तुम्हारो जग में ह्वैहै ❀ मानो सत्य बचन भगवान॥
चेला जिनको अस बलवन्ता ❀ है भगवन्ता के अनुमान।
धन्य बखानों तिन गुरु केरो ❀ रहिहै सदा जगत में मान॥

कहि ये बातैं परसुराम सों ❀ फिरि बहु पुत्र सिखावन दीन।
सुनिकै बातैं निज माता की ❀ भीषम कहा बचन छलहीन ॥
विजयपत्र जो म्वहिंलिखिदेवैं ❀ तौ मैं लौटि धाम को जावँ।
नाहिं तो टरिहौं ना संगर ते ❀ चहुतन धजीधजी उड़िजाव ॥
सुनिकै बातैं ये भीषम की ❀ औ हठ दीख टरै को नाहिं।
तब तो गंगा परसुराम सों ❀ बोलीं हाथजोरि त्यहिठाहिं ॥
लरिकाअरुभो विजयपत्र को ❀ ओ जमदग्नितनय महराज।
विजयपत्र अब याको दीजै ❀ कीजै आप सिष्य को काज ॥
सुनिकै बिनती बहु गंगाकी ❀ तबतिनविजयपत्रलिखिदीन।
विजयपत्र लै तहँ भीषम ने ❀ औ पैलगी गुरू को कीन ॥
माथ नायकै फिरि गंगा को ❀ भीषम दीन्ह्यो संख बजाय।
परसुराम निज आश्रम गवने ❀ भीषम घरै पहूँचे आय ॥
चित्र विचित्रबीर्य्य रहैं राजा ❀ भीषम केर छोट दोउ भाय।
तेऊ मरिगे विना पूत के ❀ तिन घर ब्यास पहूँचे आय ॥
आँधरपांडुविदुर तिन लरिका ❀ जिनका रहा जगत जसछाय।
अँधरे केरे दुरजोधन भे ❀ पांडु के भये जुधिष्ठिरराय ॥
दोऊ मिलिकै संगर ठान्यो ❀ तहँ सब छत्री गये बिलाय।
भयोपरीछितफिरिदिल्लीपति ❀ ज्यहि भागवत सुन्यो हर्षाय॥
कलिजुगआयोत्यही राज में ❀ ओ महराज कनौजीराय।
कोगतिबरनैत्यहिकलिजुगकै ❀ हमरे बूत कही ना जाय ॥
ऐसी दिल्ली की रजधानी ❀ जामें बसै पिथौराराय।
रूपउजागर सब गुन आगर ❀ सोभा कही तासु ना जाय ॥
नित प्रति पूजै सिवसंकर का ❀ नाहर दिल्ली का सरदार।
गदका बाना पटा बनेठी ❀ इनमाँ बहुतभांति हुसियार ॥

चढ़ी जवानी पृथीराज की ❀ कुस्ती लड़ै अखाड़े जाय।
खनखनठन२भन२ मनमन ❀ कैसो सब्द कान में जाय॥
बान चलावैं जहाँ तानिकै ❀ ताको तुरतै देयँ नसाय।
ऐसे राजा पृथीराज हैं ❀ औ महराज कनौजीराय॥
सुनिकै बातैं त्यहि बाम्हन की ❀ फिरि ना बोल्यो चँदेलाराय।
सभाबिसर्जन करि जल्दी सों ❀ महल में तुरत पहूँच्यो जाय॥
कियो बियारी फिरि मंदिर में ❀ सोयो रामचन्द्र को ध्याय।
खेत छूटिगा दिननायक सों ❀ झंडा गड़ा निसा को आय॥
तारागन सब चमकन लागे ❀ पंछिन चुप्प साधि तब लीन।
चलेआलसीखटियातकितकि ❀ नाहक जन्म बिधातै दीन॥
आगे लड़िहैं पृथीराज अब ❀ करिहैं घोर सोर घमसान।
बैठो यारो अब थकि आयन ❀ मानो सत्य वचन परमान॥

सवैया

भो सरनागतपाल कृपाल उदार अपार सबै गुन तेरे।
जाँचि भयों सरनागत मैं न लह्यों अजहूँ तुमको कहुँ हेरे॥
गावत संत महंत सबै कि हृदै बिच राम रहैं सब केरे।
सो नहिं टेरे सुनें ललिते फलिते न भये हैं मनोरथ मेरे॥

सुमिरन

चलेस्वरी पँड़री की गइये ❀ जिनका विदित जगत परताप।
मन औ बानी सों जो ध्यावै ❀ ताके छूटि जायँ सब ताप॥
निन प्रति पाठ होयँ दुर्गा के ❀ औ तहँ करैं जती नितबास।
विधिसों पूजनजोकोउकीन्ह्यो ❀ पूरन भई तासु की आस॥
आगे दरसत है नीबी का ❀ बायें पीलू का अधिकार।
बरगद पीपर गूलर दहिने ❀ जिनकी सोभा अमितअपार॥

प्रातःकाल नारि सब जावैं ❀ ध्यावैं देवी चरन मनाय।
सायंकाल पुरुष सब जावैं ❀ गावैं वेद ऋचन को जाय॥
पिता हमारे किरपाशङ्कर ❀ तहँ पर पाठ कीन बहुकाल।
फिरिम्बहिंसौंप्योतिनदेबीका ❀ मानो सत्य सत्य सब हाल॥
तेरह बरसैं हमका गुजरीं ❀ चाकर भये नवल दरबार।
छुट्टी लैकै नवरात्रन में ❀ जावैं अवसि महीना क्वाँर॥
पाठ सुनावैं श्री दुर्गा की ❀ बालेश्वरी शरन में जाय।
जो कुछ मन में हमरे होवैं ❀ सो अभिलाष पूरि ह्वै जाय॥
प्रथम भागवत तहँ पर बाँची ❀ साँची कथा कहौं सब गाय।
रुक्यों न काहू पद में तहँ पर ❀ देवी कृपा भई अधिकाय॥
छूटि सुमिरनी गै देवी कै ❀ सुनिये जयचँद क्यार हवाल।
चन्द भाट दिल्ली को जाई ❀ आई दिल्ली का नरपाल॥

अथ कथा प्रसंग

भोर भ्वरहरे पहु फाटत खन ❀ सोयकै उठा कनौजीराय।
प्रातक्रिया करि सब जलदी सों ❀ फिरि दरबार पहूँचा आय॥
बैठ्यो राजा सिंहासन पर ❀ भारी लागि गयो दरबार।
किह्यो पैलगी सब बिप्रनको ❀ छत्रिन कीन्ह्यो राम जुहार॥
बूढ़ बिप्र सों फिरि बोलत भा ❀ दिल्ली कौन पठावा जाय।
सुनिकै बातैं चन्देले की ❀ बोल्यो बिप्र बचन हर्षाय॥
चन्दभाटको तुम पठवो अब ❀ सो पिरथी का लावै बुलाय।
देखन केरी अभिलाषा जो ❀ ओ महराज कनौजीराय॥
बूढ़े बाम्हन की बातैं सुनि ❀ लीन्ह्यो चन्दभाट बुलवाय।
औसमुझायोफिरित्यहिकोसब ❀ यहु रनवाघु चँदेलोराय॥
सुनिकै बातैं चंदेले की ❀ चलिभो चन्दभाट सिर नाय।

चढ़िकै घोड़ा की पीठी माँ ❀ दिल्ली शहर पहूँचा जाय ॥
जायकैपहुँच्योत्यहिफाटक माँ ❀ जहँ दरबार पिथौरा क्यार ।
दीख पौंरिया चन्दभाट को ❀ गरुई हाँक दीन ललकार ॥
हुकुम दर्रो हुकुम दर्रो ❀ साहेबजादे बात ओनाव ।
कहाँ ते आयो औ कहँ जैहौ ❀ जल्दी आपन नाम बताव ॥
सुनिकै बातैं दरबानी की ❀ बोल्यो चन्दभाट ततकाल ।
देश हमारो कनउज जानो ❀ जावैं जहाँ बैठ नरपाल ॥
मोहिं पठायो जयचँद राजा ❀ हमरो चन्दभाट है नाँउ ।
खबरि जनावो पृथीराज को ❀ ओ दरबानी बात ओनाउ ॥
सुनिकै बातैं चन्दभाट की ❀ सो दर्बार पहूँचा जाय ।
हाथ जोरिकै दोउ बोलत भा ❀ औ चरनन में सीस नवाय ॥
चन्दभाट कनउज ते आयो ❀ ओ महराज पिथौराराय ।
हुकुम जो पावों महराजा को ❀ तो मैं लावों साथ लिवाय ॥
सुनिकै बातैं दरबानी की ❀ बोले पृथीराज महराज ।
लावो लावो त्यहि जल्दी सों ❀ आयो चन्द भाट क्यहि काज ॥
सुनिकै बातैं महराजा की ❀ दौरत चला पौंरिया जाय ।
सँग माँ लैकै चन्दभाट को ❀ औ दर्बार पहूँचा आय ॥
चन्दभाट तब लखि पिरथी का ❀ दोऊ हाथ जोरि सिरनाय ।
कह्यो सँदेसा चन्देला जो ❀ सो पिरथी का दियो सुनाय ॥
सुनि सँदेसा चन्देले का ❀ भा मन खुसी पिथौराराय ।
साल दुसाला दियो भाट को ❀ गरे म हार दीन पहिराय ॥
आगे पठयो चन्द भाट को ❀ पाछे हिरसिंह लियो बुलाय ।
चन्द कवीस्वर को बुलवायो ❀ तासों कह्यो हाल समुझाय ॥
थाना बदल्यो पृथीराज ने ❀ मन माँ श्रीगनेश को ध्याय ।

सुमिरि भवानी सिवसङ्कर को ❀ औ सुरजन को माथ नवाय ॥
तीनों चलिभे फिरि दिल्ली सों ❀ सीतारामचरन मन लाय ।
आठ रोज को धावा करिकै ❀ कनउज धुरा दवाइनि आय ॥
त्यही समइया त्यहि अवसरमाँ ❀ राजा कनउज का सरदार ।
मन्त्री बैठ रहै बायें माँ ❀ तासों बोल्यो बचन उदार ॥
एक मना सोना को लैकै ❀ औ कारीगर लेव बुलाय ।
मूरति रचि कै दरबानी की ❀ सो द्वारे पर देव धराय ॥
सुनिकै बातैं महराजा की ❀ मन्त्री तुरत उठा सिरनाय ।
मुरति पौंरिया की बनवायो ❀ औ द्वारे पर दियो रखाय ॥
त्यही समइया त्यहि अवसरमाँ ❀ पहुँचा चन्दभाट फिरि आय ।
खबरि सुनायो सब दिल्ली की ❀ औ चरनन में सीस नवाय ॥
हिरसिंह ठाकुर चन्द कबीस्वर ❀ तिनके साथ पिथौराराय ।
तीनों मिलिकै त्यहि पाछे सों ❀ औ दरबार पहूँचे आय ॥
दीख सिंहासनपर जयचँदको ❀ भारी तहाँ दीख दरबार ।
बैठे छत्री अरभ्भवारा सों ❀ एक से एक सूर सरदार ॥
दयर मुकदिमा बहु खूनी हैं ❀ बहुतक ठाढ़े तहाँ वकील ।
कउ जेहल को पहुँचायेगे ❀ काहु कि दीन हथकड़ी ढील ॥
त्यहीसमइया त्यहि अवसर माँ ❀ आगे चन्दकबीस्वर जाय ।
बहु पद गायो सभा मध्य में ❀ आपन दीन्ह्यो नाम बताय ॥
कह्यो सँदेसा पृथीराज ने ❀ ओ महराज कनौजीराय ।
बहुत काम हैं यहि समया में ❀ ताते सक्यों नहीं मैं आय ॥
सुनि संदेसा दिल्लीपति का ❀ बोला तुरत कनौजीराय ।
सरबरि हमरी का नाहीं हैं ❀ ह्याँ मुहँ कौन दिखावैं आय ॥
सुनिकै बातैं चन्देले की ❀ हिरसिंह ठाकुर उठा रिसाय ।

ऐसी तुमको पै चहिये ना ❀ जैसी कहौ कनौजीराय ॥
आज पिथौरा सब लायक है ❀ ठाकुर समरधनी चौहान ।
सनमुख लरि है जो संगर में ❀ रहिहै नहीं तासु को मान ॥
हम तो नौकर पृथीराज के ❀ तैसे नौकर अहिन तुम्हार ।
कच्ची बातैं पै कहिये ना ❀ राजा कनउज के सरदार ॥
हमैं बतइये अब टिकने को ❀ ओ महराज कनौजीराय ।
थके थकाये हम आये हैं ❀ दोऊ नैन रहे अलसाय ॥
पाछे ठाढ़े पृथीराज हैं ❀ तिनको दीख चँदेलाराय ।
मनअनुमान्योतबबहुविधिसों ❀ औ मन्त्री को लियो बुलाय ॥
मुखिया बाँदी को बुलवाओ ❀ तासों पान दिवाओ आय ।
वह पहिचानै भल पिरथी को ❀ सनमुख जातै गई लजाय ॥
सुनिकै बातैं महराजा की ❀ मन्त्री चाकर लीन बुलाय ।
तिनसों मंत्री यह ब्वालत भा ❀ मुखिया बाँदी लाओ बुलाय ॥
पाहुन आये हैं दिल्ली सों ❀ तिनको पान खवावै आय ।
एक के कहतै तब दुइ दौरे ❀ चाकर तीन पहूँचे जाय ॥
मुखिया मुखिया कै गोहरावा ❀ मुखिया बाँदी बात ओनाउ ।
तुम्हैं बुलावा महराजा है ❀ जल्दी निकरि महल ते आउ ॥
सुनिकै हल्ला तिन चकरन को ❀ मुखिया चली तड़ाका धाय ।
द्वारे आई दरवाजे के ❀ पूछनि लागि हालसबआय ॥
हाल पायकै सब चकरन ते ❀ मन माँ गई सनाका खाय ।
लज्जा करिहौं यहि समया में ❀ मारा जाय पिथौराराय ॥
यहै सोचिकै मन अपने माँ ❀ महलन तुरतै पहुँची आय ।
लैकै डिब्बा सोनेवालो ❀ तामें बीरा धरे लगाय ॥
लैकै डिब्बा फिरि महलन सों ❀ चाकर साथ चली हर्षाय ।

जायकै पहुँची त्यहि मन्दिरमें ❀ जहँ पर बैठ कनौजीराय ॥
औ रुख देख्यो महराजा को ❀ सब को दीन्हो पान गहाय ।
रंचक लज्जा जब देखी ना ❀ सोचे तबै कनौजीराय ॥
नहीं पिथौरा इन तीनों माँ ❀ नाहक गयो हृदय भ्रम छाय ।
यहै सोचिकै मन अपने माँ ❀ फिरि मंत्रीको लियो बुलाय ॥
इन्हें टिकाओ लै बगिया माँ ❀ खीमा तहाँ देव गड़वाय ।
हुकुम पायकै महराजा का ❀ तीनों गये द्वार पर आय ॥
मूरति देख्यो फिरि द्वारे पर ❀ जो अनुहारि पिथौरा केरि ।
वार वार तहँ तीनों मिलिकै ❀ सब अँग रहे तासु के हेरि ॥
मूरति देख्यो निज सूरतिकै ❀ तब जरि मरा पिथौराराय ।
जायकैपहुँच्यो फिरि बगियामें ❀ तम्बू गड़ा तहाँ पर आय ॥
बिछेउ पलँगरा तहँ निवारिको ❀ मखमल गद्दा दियो डराय ।
धरेउ उसीसे में गिरदा को ❀ तामें लेट्यो पिरथीराय ॥
त्यही समइया त्यहि औसर माँ ❀ अब पदमिनि का सुनोहवाल ।
त्यहिसुनिपावानिजमहलनमाँ ❀ बगियाटिक्योआयनरपाल ॥
तब ललकारा निजबाँदिन का ❀ अबहीं पलकी लाओ लिवाय ।
सुनिकै बातै संयोगिनि की ❀ ते सब पलकी लाईं सजाय ॥
सुमिरि भवानी सिवसंकरको ❀ मन में श्रीगनेस को ध्याय ।
बैठि पालकी में संयोगिनि ❀ मनमें सियामातु पदलाय ॥
जायकै पहुँची त्यहिबगियामें ❀ जहँ पर टिका पिथौराराय ।
उतरिकै पलकी सों जल्दीसों ❀ माला गले दीन पहराय ॥
बिरा खवायो पृथीराज को ❀ आपन नाम दीन बतलाय ।
हाथ जोरिकै संयोगिनिफिरि ❀ बोली आरतबचन सुनाय ॥
देबी देवता हम सब ध्याये ❀ औ महराज पिथौराराय ।

दर्सन तुम्हरे तब हम पाये ❁ अपने मनकी देउ बतलाय ॥
बातैं सुनिकै संयोगिनि की ❁ बोल्यो पृथीराज महराज ।
लड़ब चँदेले सों सँभराभरि ❁ पदमिनि अवसितुम्हारेकाज॥
मानभंग करि चन्देले को ❁ डोला लै दिल्ली तब जाउँ ।
जो असकनउजमाँ करिहौंना ❁ तौ नहिं कह्यो पिथौरा नाउँ ॥
धीरज राखो अपने मनमाँ ❁ अबतुम लौटि महलको जाउ ।
पन्द्रह सोरह दिन के भीतर ❁ हम तुम होब एकही ठाउँ ॥
बातैं सुनिकै महराजा की ❁ तब चरनन में सीस नवाय ।
बैठि पालकी में संयोगिनि ❁ सीता-रामचरन पद ध्याय ॥
चारि कहरवा मिलि डोला लै ❁ महलन तुरत दीन पहुँचाय ।
गैसंयोगिनि जब महलनको ❁ पौढ़ी तुरत पलँग पर जाय ॥
सेत छूटिगो दिननायक सों ❁ झंडा गड़ो राति को आय ।
तारागन सब चमकन लागे ❁ सन्सन् सनासन्न गा छाय ॥
सोय पिथौरा गे तम्बू में ❁ सोये महल चँदेलाराय ।
पंछी बोले चौंगिर्दा ते ❁ मुरगन बाँग दीन हर्षाय ॥
जगा चँदेला तब महलन में ❁ तम्बू जगा पिथौराराय ।
प्रातक्रिया करि तब दोनों नृप ❁ आपन आपन इष्ट मनाय ॥
बैठ्यो महलन में चन्देला ❁ तम्बू बैठ पिथौराराय ।
अपने मन्त्री को बुलवायो ❁ यहु महराज कनौजीराय ॥
साल दुसाला मोतिन माला ❁ हीरा पन्ना लीन मँगाय ।
चन्दकर्नाजुर के मिलिबे को ❁ तुरतै चला चँदेलाराय ॥
जायकै पहुँच्यो त्यहि तम्बू में ❁ जहँ पर बैठ वीर चौहान ।
चन्दकर्नाजुर के आगे धरि ❁ कीन्ह्यो बहुत भाँति सनमान ॥
उठा पिथौरा तब आसन ते ❁ आयो जहाँ चँदेलाराय ।

हाथ पकरिकै चन्देले को ❀ अपने हाथे दिह्यो चपाय ॥
देखि बीरता पृथीराज की ❀ तब पहिचाना कनौजीराय ।
चन्दकबीसुर को दैकै सब ❀ फिरि दरबार पहूँचा आय ॥
हुकुम लगायो निजमन्त्रीको ❀ बहुतक मल्ल लेउ बुलवाय ।
जाय न पावैं दिल्लीवाले ❀ इनका कटा देउ करवाय ॥
त्यही समइया त्यहि अवसरमाँ ❀ पिरथी कूच दीन करवाय ।
कनउज तेरी उत्तर दिसि माँ ❀ पहुँचे पाँच कोस पर जाय ॥
ठाकुर हीरासिंह तहाँ ते ❀ तुरतै दिल्ली दीन पठाय ।
साजिकैफौजैं चतुरंगिनिको ❀ हमको यहाँ मिलौ तुम आय ॥
सुनिकै बातैं पृथीराज की ❀ हीरासिंह चला सिरनाय ।
जायकैपहुँच्यो फिरि दिल्लीमें ❀ औसब खबरि सुनाई जाय ॥
सुनिकै बातैं सब हीरा की ❀ मनमाँ कान्हकुँवर मुसुकाय ।
हुकुम लगायो निज मंत्री को ❀ पुर में डौंड़ी द्यौ बजवाय ॥
हुकुम पायकै कान्हकुँवर को ❀ पुर में बजन नगारा लाग ।
धम् धम् धम् धम् बाजनलाग्यो ❀ मानों मेघ गरज्जन लाग ॥
सब्द नगारा का सुनतै खन ❀ छत्री सबै भये हुसियार ।
अपने अपने तब चकरन को ❀ छत्रिन गरू दीन ललकार ॥

सवैया

कोऊ कहैं दल हाथिन लाउ सजाउ बछेड़न को गोहरावैं ।
कोऊ कहैं रथ बैल सँवारु गँवारु अरे कित देर लगावैं ॥
कोऊ तहाँ नलकी पलकी सजि सुन्दर तापर सेज लगावैं ।
गावैं कहाँलों कबीललिते फलिते रघुनाथ के जे गुनगावैं ॥

बन्दन करिकै श्रीगनेस को ❀ दसरथनन्दन हृदय मनाय ।
तब हम गावैं फिरि आल्हाको ❀ जामें काज सिद्ध ह्वै जाय ॥

सजा रिसाला घोड़नवाला ❁ लगभग तीसलाख अनुमान ।
पन्द्रहलाख सजे हाथी तहँ ❁ पैंतिसलाख सिपाही ज्वान ॥
सजि सजि तोपैं अष्टधातु की ❁ सोऊ होन लगीं तय्यार ।
बैल नहायेगे तोपन में ❁ गाड़िन गोला भरे अपार ॥
हथी महावत हाथी लैकै ❁ औ धरती माँ देयँ बिठाय ।
धरिकै सीढ़ी साखूवाली ❁ हौदा तिनपर देयँ चढ़ाय ॥
बारह कलसा सोनेवाले ❁ ते हौदा पर देयँ धराय ।
परी अँबारी जिन हाथिन के ❁ तिनकी सोभा कही न जाय ॥
को गति बरनै तिन हाथिनकै ❁ घण्टा गरे रहे घहराय ।
छाय अँधेरिया गै दिल्ली में ❁ हाथी हाथी परैं दिखाय ॥
अंगद पंगद मकुना भौंरा ❁ सोहैं सेत बरन गजराज ।
मैनकुंज मलया धौरागिरि ❁ कहुँ दुइदन्ता रहे बिराज ॥

सवैया

हाथिन के दल बादलसों नभ छाय गयो रज भानु लुकाने ।
मेरु समान महान सबै जिनके पदभार अहीस सकाने ॥
नाद करें तिन ऊपर बीर अधीर भये सुरराज छिपाने ।
सो ललिते गजराज लखे महराज तबै मन में हरखाने ॥

सजिगे हाथी जब सबियाँ तहँ ❁ घोड़ासजनलागित्यहिकाल ।
कोउ कोउ घोड़ा हंस चालपर ❁ कोउकोउ जातमोरकी चाल ॥
रन की मोहरि बाजन लागीं ❁ रन का होन लाग व्यवहार ।
ठाढ़ी करखा बोलन लागे ❁ बिप्रन कीन बेद उचार ॥
कूच के डंका बाजन लागे ❁ घूमन लागे लाल निशान ।
को गति बरनै त्यहि समया कै ❁ एकते एक सुघर सबज्वान ॥
हुकुम पाय के कान्ह कुँवरको ❁ डंका कूच दीन करवाय ।

आगे हलका भा हाथिन का ❀ पाछे चला रिसाला जाय ॥
चले सिपाही त्यहि पाछे सों ❀ एक सों एक दई के लाल ।
खर खर खर खर कै रथ दौरैं ❀ रब्बा चलैं हवा की चाल ॥
जैसे नदिया चलैं समुंदर ❀ तैसे चली फौज त्यहि काल ।
डगमग डगमग पृथ्वी हाली ❀ मारगबासी भये बिहाल ॥
सूर सिपाही ईजतिवाले ❀ धरैं मूछ दहिनी पर हाथ ।
मनै मनावैं रामचन्द्र को ❀ बारम्बार नाय कै माथ ॥
कायर सोचैं यह मनमाँ सब ❀ लैकै बड़ी बड़ी तहँ साँस ।
हम मरिजैबे समरभूमि में ❀ होई बंस हमारो नास ॥
हम भगि जावैं जो रस्ताते ❀ तौहू नहीं जियै की आस ।
लौटि पिथौरा जब घर जैहै ❀ करि है अवसि हमारो नास ॥

कुंडलिया

यारो सायर दस भले कायर नहीं पचास ।
सायर रनसरमुख लड़ैं कायर प्रान कि आस ॥
कायर प्रान कि आस भागि रनते वै आवैं ।
आपु हँसावहिं और कुटुँब को नाम धरावैं ॥
कहि गिरिधर कबिराय बात चारहु जुग जाहिर ।
सायर भले हैं पाँच संग सौ भले न कायर ॥

ऐसे कायर सब सोचत भे ❀ जिनकी कथा कही ना जाय ।
परैं नगारन में चोटैं जब ❀ उनके होयँ करेजे घाय ॥
सूर सिपाही बाजा सुनि सुनि ❀ मनमाँअधिकअधिकहरषायँ ।
मारु मारु कै कोउ बोलत भे ❀ कोऊ दाँतन ओठ चबायँ ॥
या बिधि फौजैं सब दिल्ली की ❀ दाबति चली कनौजै जायँ ।
आठ दिनौना के अर्सा में ❀ पहुँचीं जहाँ पिथौराराय ॥

देखिकै फौजैं दिल्लीवालो ❀ ठाकुर समरधनी चौहान।
गले लगायो तब हीरा को ❀ कीन्ह्यो बहुतभाँति सनमान॥
गोविंद राजै कान्ह कुँवर को ❀ भेंटत भयो पिथौराराय।
कुँजधर ठाकुर और मुकुन्दा ❀ येऊ मिले सीस को नाय॥
तम्बू गड़िगे महराजन के ❀ डेरा गड़े सिपाहिन केर।
बीचमाँ तम्बू पृथीराज को ❀ चारो ओर रहे सब घेर॥
गड़िगे झण्डा सबतम्बुन ढिग ❀ ते सब आसमान फहरायँ।
को गति बरनै तिन झण्डन कै ❀ हमरे बूत कहीना जाय॥
तंग बछेड़न के छूटत भे ❀ छत्रिन छोरि धरे हथियार।
ह्याँ महराजा कनउजवाला ❀ आला सूरबीर सरदार॥
बहु ढुँढ़वावा त्यहि पिरथी का ❀ पावा कहूँ न पता निसान।
तब बुलवावा फिरि मंत्री को ❀ करिकै बहुत भाँति सनमान॥
हम सुनि पावा हरकारा सों ❀ मंत्री सुनो बचन धरि ध्यान।
चढ़िकै आवा दिल्लीवाला ❀ ठाकुर समर धनीचौहान॥
कालिह सबेरे संगर ह्वैहै ❀ सीताराम लगइहैं पार।
पुर में डौंड़ी को बजवावो ❀ सबियाँ होय फौज तय्यार॥
सुनिकै बातैं महराजा की ❀ मंत्री चला सीस को नाय।
जाय नगर्ची को बुलवायो ❀ ताको दीन्ह्यो हुकुम सुनाय॥
त्यारी करिकै फिरि संध्याको ❀ सोयें तुरत पलँग पर जाय।
यहु महराजा कनउजवाला ❀ सोऊ महलन पहुँचा जाय॥
चौकी परिगै तहँ सोने की ❀ तापर बैठ राम को ध्याय।
मधुर मिठाई औ मेवा कछु ❀ भोजन कीन बहुत सुखपाय॥
नारि सुनाई सब रानी को ❀ जो चढ़ि आवा पिरथीराय।
सुनिकै बातैं महराजा की ❀ रानी बोली सीस नवाय॥

तुम ना भाग्यो समरभूमि ते ❀ चहुतन धजीधजी उड़िजाय ।
कोउ अमरौती ना खावा है ❀ ना कोउ आवा पीठि मढ़ाय ॥
कालके हाथ कमान चढ़ी है ❀ ना कोउ बची बूढ़ ना ज्वान ।
यकदिन मरना है सबही को ❀ स्वामी करो बचन परमान ॥
जो तुम भगिहौ समरभूमिते ❀ बूड़ी तीनि साखि को नाम ।
लड़ि कै मरिहौ जो सरमुख में ❀ जैहौ तुरत राम के धाम ॥
बचिकै ऐहौ जो कनउज में ❀ पैहौ सदा नृपन में मान ।
जीवन ताही को भलजानो ❀ जाकी रहै जगत में सान ॥
ऐसी बातैं रानी कहिकै ❀ पलँगा परै गई अलसाय ।
राजौ सोये फिरि महलन में ❀ औअति बिकट नींदकोपाय ॥
खेत छूटिगो दिननायक सों ❀ झंडागड़ा राति को आय ।
तारागन सब चमकन लागे ❀ चोरन खुसी भई अधिकाय ॥
होई लड़ाई अब आगे जस ❀ तब तस देबे गाय सुनाय ।
बैठो यारो अब दम लेवो ❀ सीताराम चरन को ध्याय ॥

संयोगिनिस्वयंवर--उत्तरार्द्ध
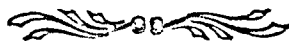
सवैया

हे मम मातु विदेहकुमारि खरारि कि नारि पियारि पिता की।
जो हैं भये सरनागत सो सुखी और भये बसुधा में पताकी॥
अन्तसमय स्वइ ऐसे भये जिनकी सरनागति इन्द्रहु ताकी।
दीन पुकारकरैं ललिते बलि तेऊ हौं जाऊँ विदेह-सुता की॥

सुमिरन

काली ध्यावों कलकत्ते की ❁ सारद मैहर की सरनाम।
विन्ध्यवासिनी के पद ध्यावों ❁ ज्वालामुखी करों परनाम॥
देवि चण्डिका बकसरवाली ❁ तिनके दोऊ चरन मनाय।
देवी कुसेहिरि औ दुर्गा को ❁ ध्यावों बारबार सिर नाय॥
महाकाल शिव उज्जैनी के ❁ जिनका जाहिर जगत प्रताप।
तिनके दर्सन के कीन्हे ते ❁ छूटत नरन केर सब ताप॥
मैं पद ध्यावों सिवसंकर के ❁ कासी विस्वनाथ महराज।
जिनके दर्सन के कीन्हे ते ❁ अबहूँ रहत जगत में लाज॥
फेरि मनावों रामेस्वर को ❁ पसुपतिनाथ केर करि ध्यान।
बैजनाथ लोधेस्वर गावों ❁ पावों बुद्धि और बल ज्ञान॥
छूटि सुमिरनी गै देवन कै ❁ साका सुनो सूरमन केर।
[illegible] चन्देलन की ❁ कनउज लई पिथौरा घेर॥

[illegible]

[illegible] आगमन जब [illegible] ❁ [illegible] नव मौर।
[illegible] ❁ [illegible] नव मौर॥
[illegible] ❁ [illegible] ध्यान।

धरा नगाड़ा फिरि साँड़ियापर ❀ बाजन लाग घोर घमसान ॥
सब्द नगाड़ा का सुनतैखन ❀ छत्री सबै भये हुसियार ।
पहिर सिपाही झिलमैंलीन्ह्यो ❀ हाथ म लई ढाल तलवार ॥
कच्छी मच्छी नकुला सब्जा ❀ हरियल मुस्की घोड़ अपार ।
साजन लागे सब जल्दी सों ❀ जिनको तनक न लागै बार ॥
डारि हैकलैं तिनके गरवा ❀ मुँहमाँ दीन लगाम लगाय ।
गंगाजमुनी छोंड़ि रकाबैं ❀ पूँजी पटा दीन पहिराय ॥
नाल ठोकाई तिनके सुम्मन ❀ रेसम तंग दीन कसवाय ।
को गति बरनै तिन घोड़न कै ❀ हमरे बूत कही ना जाय ॥
हथी महावत हाथी लैकै ❀ तिनका दीन तुरत बैठाय ।
चुम्बक पत्थर का हौदा धरि ❀ जिनमें सेल बरौंछा खाय ॥
साजि साँड़िया सब जल्दी सों ❀ छकरन लीन बरूद भराय ।
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातु की ❀ गोला एक मना को खायँ ॥
बैल नहाये तिन तोपन में ❀ औ डाँड़े को दीन हँकाय ।
जागा राजा कनउज वाला ❀ मन माँ श्रीगनेस को ध्याय ॥
उठिकै महलन सों जल्दी सों ❀ औ दरबार पहूँचा आय ।
हमाँ जमाँ औ रायलंगरी ❀ इनका लीन्ह्यों तुरत बुलाय ॥
सुद्धृत-ठाकुर रतीभान औ ❀ दोऊ आय गये दरबार ।
माथ नवायो महराजा को ❀ दोऊ बड़े सूरसरदार ॥
हाथ जोरिकै मंत्री बोल्यो ❀ राजन मानो बचन हमार ।
हाथी घोड़ा सजे सिपाही ❀ छकड़ा नहे ठाढ़ तय्यार ॥
धावन पठयो पृथीराज ने ❀ सो दरबार पहूँचा आय ।
हाथ जोरि कै धावन बोल्यो ❀ ओ महराज कनौजीराय ॥
मोहिं पठायो पृथीराज ने ❀ औ यह कही बात समुझाय ।

डोला देदें संयोगिनि का ❀ तौ हम लौटि नगर को जायँ ॥
नाहिं तौ बचिहैं नाकनउजमाँ ❀ जो विधि आपु बचावैं आय ।
हवै भलाई डोला दीन्हे ❀ नहिं सिर काल रहा मन्नाय ॥
सुनिकै बातैं ये धावन की ❀ बोला तुरत कनौजीराय ।
खबरि सुनावो तुम पिरथी को ❀ डाँड़ ते कूच देयँ करवाय ॥
जितनी रौंड़ लै आये हैं ❀ सो बिन घाव एक ना जायँ ।
खेदिकै मारों मैं दिल्ली लौं ❀ नेंय का टका लेउँ निकराय ॥
दही के धोखे कहुँ भूलैना ❀ जो वै जायँ कपास चबाय ।
सूर सिपाही हैं कनउज के ❀ जिनका देखे काल डेराय ॥
सुनिकै बातैं महराजा की ❀ धावन चला सीस को नाय ।
खबरि सुनाई सब जयचँद की ❀ सुनि जरि मरा पिथौराराय ॥
हुकुम लगाय दियो क्षत्रिन को ❀ छत्री कमरबन्द तय्यार ।
लहुरे बड़ेन के सब लायक ❀ एक ते एक सूर सरदार ॥
मारू बाजा बाजन लागे ❀ घूमन लागे लाल निसान ।
भयो सवार तुरत हाथी पर ❀ ठाकुर समर धनी चौहान ॥
तीर कमान लई हाथे माँ ❀ कम्मर बँधी ढाल तलवार ।
को गति बरनै तब पिरथी कै ❀ नाहर दिल्ली का सरदार ॥
घूमन लाग्यो सब सूरन माँ ❀ तोपन गोला दीन भराय ।
[illegible] समझ्यो त्यहि औसरमाँ ❀ चढ़ु रन चालु कनौजीराय ॥
हुकुम लगायो रजपूतन को ❀ जल्दी कूच देव करवाय ।
आपौ चढ़िकै फिरि हाथी पर ❀ मनमाँ आँगनेस को ध्याय ॥
[illegible] ❀ सो सूनी मैं पहुँचा आय ।
सूरन मैं डोला [illegible] लागो ❀ हाहाकार शब्द गा छाय ॥
[illegible] ❀ [illegible] मरा [illegible] ।

गोला लागैं जिन हाथिन के ❀ मानों गिरैं धौरहर आय ॥
गोला लागैं जिन ऊँटन के ❀ ते मुहँभरा गिरैं अललाय ।
जौन बैलके गोला लागै ❀ मानों मगर कुल्याँचै खाय ॥
जौन बछेड़ा के गोला लागै ❀ आधे सरग लिहे मड़राय ।
गोला लागै ज्यहि छत्री के ❀ साथै उड़ा चील्ह अस जाय ॥
बड़ी दुर्दसा भै तोपन में ❀ हाहाकारी सब्द सुनाय ।
दोनों दल आगे को बढ़िगे ❀ तोपन मारु बन्द ह्वै जाय ॥
गोला ओला सम बरसत भे ❀ सन सन सन्नकार गा छाय ।
चलैं बँदूखैं बादलपुर की ❀ जो नब्बे की एक बिकाय ॥
मघा नखत सम गोली बरसैं ❀ डोलिन घहिया जायँ उठाय ।
को गति बरनै बन्दूखन की ❀ हमरे बूत कही ना जाय ॥
दूनों दल आगे को बढ़िगे ❀ संगम भये सूर सरदार ।
सूँढ़ि लपटा हाथी भिड़िगे ❀ अंकुस भिड़े महौतन क्यार ॥
हौदा हौदा यकमिल ह्वैगे ❀ छत्रिन खैंचि लीन तलवार ।
भाला बरछिन सों कोउ मारैं ❀ कोऊ लेयँ ढाल की वार ॥
सूँढ़ि लपेटे जंजीरन को ❀ हाथी रन मा रहे घुमाय ।
लागि जँजीरैं जिनके जावैं ❀ तिनके अंग भंग ह्वै जायँ ॥
मस्तक मस्तक गज के मारैं ❀ अद्भुत समर कहा ना जाय ।
भाला छूटे असवारन के ❀ खन खन ठन्न ठन्न गा छाय ॥
चम चम चमकैं तरवारैं तहँ ❀ मर मर रगड़ ढाल की होय ।
घम् घम् घम् घम् बजैं नगारा ❀ बोलैं मारु मारु सब कोय ॥
खट खट खट खट तेगा बोलैं ❀ बोलैं छपा छप्प तरवार ।
झलझलझलझलछूरीझलकैं ❀ तिनसों होय तहाँ उजियार ॥
ज्यहिकी वारन जो चढ़िजावै ❀ सो हनि देय ताहि तरवार ।

अपन परावा कछु सूझै ना ❀ दोनों हाथ होय तहँ मार ॥

सवैया

तीर छुटैं पृथिराज कमान सों ते बहु सूरन के सिर काटैं ।
भूमि अकास न देखि परै सिर औभुजसों सबही दिसि पाटैं ॥
मत्त गयन्द गिरैं हहराय बजायक ताल सबै नर डाटैं ।
सूरन की ललकार सुने ललिते सब कायर के हिय फाटैं ॥

भये सनाका कायर मन माँ ❀ सूरन रहा मोद अतिछाय ।
बड़ी लड़ाई भै कनउज माँ ❀ कोउ रजपूत न रोकै पायँ ॥
रुकन किनदियातहँबहिनिकरी ❀ जूझे बड़े बड़े सरदार ।
हाथी गिरिगे आस पास माँ ❀ सोहैं मानो नदी कगार ॥
मूड़ी मछरी सम सोहत भइँ ❀ ढालैं कछुवा सम उतरायँ ।
भुजा औ जाँघैं रनसूरन की ❀ गोहैं सरिस बही तहँ जायँ ॥
जैसे सिवार जल नदिया माँ ❀ तैसे तहाँ बार उतरायँ ।
बहैं लहासैं जो सूरन की ❀ तिनमाँ चढ़े गिद्ध खग जायँ ॥
जैसे डोंगिया माँ चढ़िकै नर ❀ खेलैं नदी नेवारा जायँ ।
तैसे लहासैं रन सूरन की ❀ तिनपर चील्ह कागउतरायँ ॥
तीनदिनौना या बिधि गुजरै ❀ तहँ पर खूब चली तरवार ।
ना ई हारे दिल्लीवाले ❀ ना उइ कनउज के सरदार ॥
आगे बढ़िकै पृथीराज ने ❀ गर्दै हाँक दीन ललकार ।
बात हमारी [illegible] सुनि लेवो ❀ राजा कनउज के सरदार ॥
डोला हमारो संयोगिनि को ❀ सो रन खेतन देउ धराय ।
[illegible] सिपाही मारो दैहैं ❀ सो डोला को लेह उठाय ॥
[illegible] मेरी कछु चली ना ❀ सो [illegible] कनौजीराय ।
[illegible] लड़ाई [illegible] सेना माँ ❀ [illegible]॥

दुखी जो बाम्हन ह्यांपर होइहैं ❀ तौ सब छत्री धर्म नशाय ।
सुनिकै बातैं पृथीराज की ❀ भा मन खुसी चँदेलाराय ॥
डोला मँगायो संयोगिनि को ❀ सो रन खेतन दीन धराय ।
देखिकै डोला संयोगिन को ❀ बोला तुरत पिथौराराय ॥
लड़ो सिपाही दिल्लीवाले ❀ डोला तुरत लेउ उठवाय ।
जीतिकैचलिहौजोकनउज ते ❀ चौगुन तलब देब घर जाय ॥
दै दै पानी रजपूतन को ❀ पिरथीसब को दीन जुझाय ।
फिरि मुकुन्द औ रतीभानको ❀ मुर्चा परो बरोबरि आय ॥
दोऊ बराबरि के छत्री हैं ❀ दोऊ समरधनी बलवान ।
खैंचि सिरोही ली मुकुन्द ने ❀ करिकै रामचन्द्र को ध्यान ॥
हनिकै मारा रतीभान को ❀ ठाकुर कीन्ह्यों वार बचाव ।
औ ललकारा फिरि मुकुन्द को ❀ अब तुम खबरदार ह्वै जाव ॥
वार हमारी सों बचिहौ ना ❀ तुमका लावा काल बुलाय ।
यह कहि मारा तरवारी को ❀ सो फिर परी ढाल पर जाय ॥
बचिगा ठाकुर दिल्लीवाला ❀ ज्यहिकाराखिलीन भगवान ।
सो फिरि बोला रतीभान सों ❀ करिकै मनै बड़ा अभिमान ॥
किह्यो लड़ाई है लरिकन सों ❀ कबहुँ न परा ज्वान ते काम ।
सँभरि कै बैठो अब घोड़ा पर ❀ तुमको पठै देउँ यमधाम ॥
खैंचि कै मारा रतीभान को ❀ सोऊ लीन ढाल की वार ।
मुठिया रहिगै कर मुकुन्द के ❀ रन मा टूटि गिरी तरवार ॥
गद्दी कटिगै मखमलवाली ❀ औ फटि गई गैंड़ की ढाल ।
रिसहा ह्वैगा रतीभान तहँ ❀ दोऊ नैन भये तब लाल ॥
ऐंचि सिरोही को कम्मर सों ❀ मारा रतीभान बलवान ।
गिरा तड़ाका सिर धरती माँ ❀ मरिगा तुरत मुकुन्दा ज्वान ॥

गये मुकुन्दा रन खेतन में ❁ मुक्कुत ठाकुर चला रिसाय ।
तब ललकारा त्यहि हीरा ने ❁ ठाकुर खबरदार ह्वै जाय ॥
जयो नगीचे ना डोला के ❁ नहिं सिर धरती देउँ गिराय ।
सुनिकै बातैं ये हिरसिंह की ❁ मुक्कुत भाला लीन उठाय ॥
ताकिकै मारा सो हिरसिंह के ❁ ठाकुर लैगा वार बचाय ।
खाली वार परी मुक्कुत की ❁ तब मन गयो सनाका खाय ॥
खैंचि सिरोही फिरि कम्मर सों ❁ मारा हरीसिंह को जाय ।
बचिगा ठाकुर फिरि दिल्लीका ❁ तब मन कोप कीन अधिकाय ॥
खैंचि कै मारी तरवारी तब ❁ मुक्कुत गिरा भूमि भहराय ।
मरिगा ठाकुर जब कनउज का ❁ आयो हमाँ जमाँ तब धाय ॥
हमाँ जमाँ के तब मुर्चा में ❁ गोविंद नृपति पहूँचा आय ।
औ ललकारा फिर सूरन को ❁ तुरतै डोला लेउ उठाय ॥
डोला उठायो रन सूरन ने ❁ औ दिल्ली को चले दबाय ।
हमाँ जमाँ तब निज सूरन ते ❁ बोले दोऊ भुजा उठाय ॥
जान न पावैं दिल्लीवाले ❁ मारो इनका खेत खेलाय ।
सुनिकै बातैं हमाँ जमाँ की ❁ क्रोधित चले सिपाही धाय ॥
चलीं तुपकैं औ गुजराती ❁ ऊना चलें विलाइति क्यार ।
भाला बरछिन की मारैं भइँ ❁ कोता खानी चलें कटार ॥
कटि कटि मुड़ा गिरैं खेतन मा ❁ लागिन लागे ऊँच पहार ।
छिन छिन मा मारैं भइँ ❁ औ खनकार मची खनकार ॥
[illegible] लड़ाई क्षत्रिन कीन्यो ❁ देखा काँपि उठे असमान ।
सूर सिपाही [illegible] ❁ जिन नाहिं दीन आपन प्रान ॥
[illegible] ❁ मन के ढहि गये अभिमान ।
[illegible] ❁ [illegible] दीन [illegible] ठान ॥

हमाँ जमाँ औ गोबिंद राजा ❀ दोऊ समरधनी बलवान।
फिरि फिरि मारैं औ ललकारैं ❀ दोऊ एक बैस के ज्वान॥
गदा बनेठी केर खिलारी ❀ करि पैंतरा लड़ैं मैदान।
वारु बराबरि आनन जानैं ❀ एकते एक बढ़े अभिमान॥
हमाँ जमाँ जब भाला मारैं ❀ गोबिंद राजा लेयँ बचाय।
मारैं गोविंद तरवारी सों ❀ सोऊ लेयँ ढाल पर आय॥
बड़ी लड़ाई भै गोबिंद कै ❀ हमरे बूत कही ना जाय।
जो हम गावैं बिस्तारित करि ❀ तौ फिरि एकसाललगिजाय॥
खैंचि सिरोही हमाँ जमाँ ने ❀ मार्‍यो बीच गरे को ताकि।
तबहीं सिर धरती माँ गिरिगा ❀ बोल्यो मारु मारु मुह हाँकि॥
बिन सिर धड़ रन माँ तब दौरा ❀ हाथ में लिये ढाल तरवार।
ज्यहि दिसि जावै रन मंडल में ❀ त्यहि दिसि जूझैं सूर अपार॥
ब्याकुल छत्री चौगिर्दा ते ❀ बिन सिर लड़ै बीरबलवान।
संका ब्यापी रन सूरन के ❀ कायर भागे छाँड़ि परान॥
नील कि झंडी ताहि छुवायो ❀ छुवतै गिरा तुरत भहराय।
तौलौं डोला संयोगिनि का ❀ लैगे ग्यारह कोस नँघाय॥
तब महराजा कनउजवाला ❀ बोला सब सों बचन रिसाय।
नालति ऐसी रजपूती का ❀ औ धिरकाल जिंदगी भाय॥
डोला जाई जो दिल्ली माँ ❀ तौ जस जाई सबै नसाय।
मानुष देही फिरि मिलि है ना ❀ ताते खेलौ लोह अघाय॥
बीर बखानों दुरजोधन को ❀ ज्यहि जस आपन लीनबचाय।
जो कछु भाखा सो सब राखा ❀ औ तजि दीन पुत्र धन भाय॥
धन्य बखानों त्यहि रावन को ❀ ज्यहि हरि लीन रामकीनारि।
सरमुख जूझीत्यहि रय्यतिसब ❀ करिकै रामचन्द्र सों रारि॥

समय समय की सब बातैं हैं ❀ समया परै न बारम्बार।
समया परिगा राजा नलपर ❀ खूँटी हरा नौलखाहार ॥
रांज न मुर्चा कनउज ह्वैहै ❀ रांज न चढ़ी पिथौरा ज्वान।
मारो मारो औ रजपूतौ ❀ सुनिकै बात हमारी कान ॥
इतनी सुनिकै सब क्षत्रिन ने ❀ अपनो मरन कीन अखत्यार।
भाला बरछी दोउ दल छूटे ❀ औफिरिचलनलागितरवार॥
धरि धरि धमकैं कढ़ा बीन कोउ ❀ कोऊ मारैं खैंचि कटार।
बड़ी लड़ाई क्षत्रिन कीन्हीं ❀ नदिया बही रकत की धार॥
जैसे फागुन फगुई खेलैं ❀ तैसे लड़ैं बीर चौहान।
मुँह नहिं फेरैं समर भूमि ते ❀ एकते एक बीर बलवान ॥
तबलौं डोला संयोगिनि को ❀ पहुँचा तीस कोस पर जाय।
जिसहा राजा कनउज वाला ❀ बहु तक क्षत्री दीन नसाय ॥
तबलौं डोला संयोगिनि को ❀ आड़्यो रतीभान तहँ जाय।
बहुतक क्षत्री घायल कैकै ❀ सो धरती माँ दीन सुवाय॥
को गति बरनै रतीभान कै ❀ हमरे बूत कही ना जाय।
सिरि सिरि मारै औ ललकारै ❀ रन माँ घोड़ा रहा नचाय ॥
रतीभान के तब मुर्चा में ❀ कोउ रजपूत न रोंकै पायँ।
सम्मुख आवै जो नाहर के ❀ ताको मारै सेन बिलाय ॥
देखि लड़ाई रतीभान की ❀ छिगिंह ठाकुर उठा रिसाय।
औ ललकारा रतीभान को ❀ ठाकुर खबरदार ह्वै जाय ॥
तबलौं डोला संयोगिनि को ❀ दिल्ली सहर पहुँचा जाय।
[illegible] ❀ [illegible] ॥
[illegible] ❀ [illegible] नवाय।
[illegible] ❀ [illegible] सियाराम॥

दिल्ली केरे तब फाटक पर ❀ भारी भीर भई तहँ आय ।
रतीभान औ कान्ह कुँवर तहँ ❀ दोऊ रंहिगे पाँव जमाय ॥
दोऊ मारैं दोउ ललकारैं ❀ मानैं कोऊ नहीं तहँ हारि ।
वसरिन वसरिन याविधि खेलैं ❀ जैसे कुवाँ भरैं पनिहारि ॥
वैस बराबरि है दोऊ कै ❀ दोऊ बड़े लड़ैया ज्वान ।
पृथीराज औ जयचँद राजा ❀ येऊ करैं घोर घमसान ॥
रायलंगरी हिरसिंह ठाकुर ❀ येऊ खूब करैं तरवारि ।
अपने अपने सब मुर्चन में ❀ मानैं कोउ न नेकौ हारि ॥
मारौ मारौ भुजा उखारौ ❀ सब दिसि यहै रहे चिल्लाय ।
भरि भरि खप्पर नचैं जोगिनी ❀ मज्जन करैं भूत तहँ आय ॥
स्यार औ कुत्तनकी बनि आई ❀ कागन लागी कारि बजार ।
चील्ह गीध ये सउदा लैकै ❀ अपने घर का भये तयार ॥
रतीभान औ कान्ह कुँवर तहँ ❀ दोऊ बीर करैं मैदान ।
हनि हनि भाला दोऊ मारैं ❀ नहिं भय करैं नेकहू ज्वान ॥
लाखन जूझे दिल्ली वाले ❀ लाखन कनउज के सरदार ।
रतीभान ने त्यहि समया माँ ❀ हाथ म लीन खैंचि तरवार ॥

सवैया

जूझि गये बहु सूर अपार बही तहँ सोनित की अतिधारा ।
गावत चामुँड नाचत जोगिनि प्रेत बजावत हैं करतारा ॥
जोर बढ्यो रतिभानकी खड्ग सो घोर मच्यो तहँ पै हहकारा ।
जात चढ़े सब ऊपर गृद्ध मनों ललिते ज़ल खेलैं निवारा ॥

को गति बरनै त्यहि समया कै ❀ हमरे बूत कही ना जाय ।
फिरि फिरि मारै औ ललकारै ❀ यहु महराज कनौजीराय ॥
कान्ह कुँवरहू अतिकोपित भा ❀ यहु रजपूत बीर चौहान ।

समय समय की सब बातैं हैं ❀ समया परै न बारम्बार।
समया परिगा राजा नलपर ❀ खूँटी हरा नौलखाहार॥
रोज न मुर्चा कनउज ह्वैहै ❀ रोज न चढ़ी पिथौरा ज्वान।
मारो मारो ओ रजपूतौ ❀ सुनिकै बात हमारी कान॥
इतनी सुनिकै सब छत्रिन ने ❀ अपनो मरन कीन अखत्यार।
भाला बरछी दोउ दल छूटे ❀ औफिरिचलनलागितरवार॥
धरि धरि धमकैं कड़ाबीन कोउ ❀ कोऊ मारैं खैंचि कटार।
बड़ी लड़ाई छत्रिन कीन्ह्यो ❀ नदिया बही रकत की धार॥
जैसे फागुन फगुई खेलैं ❀ तैसे लड़ैं बीर चौहान।
मुँह नहिं फेरैं समर भूमि ते ❀ एकते एक बीर बलवान॥
तबलौं डोला संयोगिनि को ❀ पहुँचा तीस कोस पर जाय।
रिसहा राजा कनउज वाला ❀ बहु तक छत्री दीन नसाय॥
तबलौं डोला संयोगिनि को ❀ आड़्यो रतीभान तहँ जाय।
बहुतक छत्री घायल कैकै ❀ सो धरती माँ दीन स्वबाय॥
को गति बरनै रतीभान कै ❀ हमरे बूत कही ना जाय।
फिरि फिरि मारै औ ललकारै ❀ रन माँ घोड़ा रहा नचाय॥
रतीभान के तब मुर्चा में ❀ कोउ रजपूत न रोंकै पायँ।
सम्मुख आवै जो लड़िबे को ❀ ताको मारै खेत खेलाय॥
देखि लड़ाई रतीभान की ❀ हिरसिंह ठाकुर उठा रिसाय।
औ ललकारा रतीभान को ❀ ठाकुर खबरदार ह्वै जाय॥
तबलौं डोला संयोगिनि को ❀ दिल्ली सहर पहूँचा जाय।
पाछे मारै औ ललकारै ❀ यहु महराज कनौजीराय॥
तीर अनेकन पिरथी मारे ❀ लाखन डारे सूर नसाय।
बड़ा लड़ैया यहु तीरन में ❀ ज्यहि का कही पिथौराराय॥

दिल्ली केरे तब फाटक पर ❀ भारी भीर भई तहँ आय।
रतीभान औ कान्ह कुँवर तहँ ❀ दोऊ रंहिगे पाँव जमाय॥
दोऊ मारैं दोउ ललकारैं ❀ मानैं कोऊ नहीं तहँ हारि।
वसरिन वसरिन याविधि खेलैं ❀ जैसे कुवाँ भरै पनिहारि॥
वैस बराबरि है दोऊ कै ❀ दोऊ बड़े लड़ैया ज्वान।
पृथीराज औ जयचँद राजा ❀ येऊ करैं घोर घमसान॥
रायलंगरी हिरसिंह ठाकुर ❀ येऊ खूब करैं तरवारि।
अपने अपने सब मुर्चन में ❀ मानैं कोउ न नेकौ हारि॥
मारौ मारौ भुजा उखारौ ❀ सब दिसि यहै रहे चिल्लाय।
भरि भरि खप्पर नचैं जोगिनी ❀ मज्जन करैं भूत तहँ आय॥
स्यार औ कुत्तनकी वनि आई ❀ कागन लागी कारि बजार।
चील्ह गीध ये सउदा लैकै ❀ अपने घर का भये तयार॥
रतीभान औ कान्ह कुँवर तहँ ❀ दोऊ बीर करैं मैदान।
हनि हनि भाला दोऊ मारैं ❀ नहिं भय करैं नेकहू ज्वान॥
लाखन जूझे दिल्ली वाले ❀ लाखन कनउज के सरदार।
रतीभान ने त्यहि समया माँ ❀ हाथ म लीन खैंचि तरवार॥

सवैया

जूझि गये बहु सूर अपार बही तहँ सोनित की अतिधारा।
गावत चामुँड नाचत जोगिनि प्रेत बजावत हैं करतारा॥
जोर बढ्यो रतिभानकी खड्ग सो घोर मच्यो तहँ पै हहकारा।
जात चढ़े सब ऊपर गृद्ध मनों ललिते ज़ल खेलैं निवारा॥

को गति बरनै त्यहि समया कै ❀ हमरे बूत कही ना जाय।
फिरि फिरि मारै औ ललकारै ❀ यहु महराज कनौजीराय॥
कान्ह कुँवरहू अतिकोपित भा ❀ यहु रजपूत बीर चौहान।

लीन्हे भाला नागदवनि का ❀ छत्रिन मारिकीन खरिहान॥
औ ललकारा रतीभान का ❀ ठाकुर खबरदार ह्वै जाय।
यह कहि मारा तरवारी का ❀ सोपै लैगा वार बचाय॥
आपौ मारा तरवारी को ❀ परिगै कान्ह कुँवर सिर जाय।
ककरी ऐसी खपरी फाटी ❀ पै सिर बाँधि तहाँ रहि जाय॥
खैंचि सिरोही को कम्मर सों ❀ मारा रतीभान को धाय।
रतीभान फाटक पर गिरिगे ❀ गिरिगो कान्ह कुँवर महराय॥
दोऊ जूझे जब फाटक में ❀ डोला अटा महल में जाय।
उतरिकै डोला सों संयोगिनि ❀ बैठी रङ्ग महल में आय॥
चंद कबीसुर फिरि जल्दी सों ❀ पहुँचा जहाँ चँदेलाराय।
औ फिरि बोला हाथ जोरिकै ❀ ओ महराज कनौजीराय॥
लाखन जूझे दिल्लीवाले ❀ लाखन कनउज के सरदार।
बड़ी लड़ाई दोउदल कीन्ह्यो ❀ ज्यहि का रहा न वारापार॥
बचा पिथौरा अब इकलो है ❀ ज्यहिका राखि लीन भगवान।
त्यहि नहिं मारो महराजा तुम ❀ मानो सत्य बचन परमान॥
लौटि कनौजै जो चलि जैहो ❀ कीरति बनी रही संसार।
हारि तुम्हारी कोउ गाई ना ❀ राजा कनउज के सरदार॥
कनउज तेनी औ दिल्ली लों ❀ कीन्ह्यो घोर सोर घमसान।
अस कोउ छत्री मैं देखों ना ❀ जोफिरि करै समरअभिमान॥
चंद कबीसुर की बातैं सुनि ❀ बोला कनउज का महराज।
कहा तुम्हारो हम टारब ना ❀ मानो सत्य बचन कबिराज॥
बड़ो भरोसो तुम हमरो करि ❀ आयो मिलन हमारे पास।
कहा तुम्हारो जो मानें ना ❀ तौ फिरि जावो आप निरास॥
करन निरासा नहिं चाहत हैं ❀ मानो सत्य बचन कबिराज।

तुमहूँ जावो निज मन्दिर को ❀ हमहूँ जात आपनी राज ॥
यह सुनि गवने चन्द कबीसुर ❀ जयचँद कूच दीन करवाय ।
राति दिनौनन के धावाकरि ❀ पहुँचे कनउज में फिरि आय ॥
पृथीराज निज महलन पहुँचे ❀ पद्मिनि मिली तहाँ पर आय ।
करि गन्धर्व ब्याह ताके सँग ❀ औसुख करनलागिअधिकाय॥
पूर स्वयंवर संयोगिनि का ❀ गायों सत्य सत्य सब हाल ।
माथ नवावों सिवसङ्कर का ❀ अम्बुजसरिस नयन त्रयलाल ॥
किहे कोपिनी हैं सर्प्पन की ❀ धारे जटाजूट हैं सीस ।
सकल जगत के सो स्वामी हैं ❀ किरपा करैं ललित पर ईस ॥
साथ नवावों पितु अपने को ❀ जिन म्वहिं विद्या दीन पढ़ाय ।
आसिर्बाद देंव मुंशीसुत ❀ जीवहु प्रागनरायण भाय ॥
रहै समुन्दर में जब लों जल ❀ जब लों रहैं चन्द औ सूर ।
मालिक ललितेके तबलौंतुम ❀ जस सों रहौ सदा भरपूर ॥

आल्हखंड

महोबे का प्रथम युद्ध

सवैया

काको मैं ध्यावौं मनावौं सदा तुमको तजिकै सुनिये रघुनाथा ।
मेरे तो एक तुम्हीं प्रभुजी अब काह बनाय लिखौं बहुगाथा ॥
स्वारथ साथ सबै नर देत न देत कोऊ परमारथ साथा ।
दीन पुकार करै ललिते प्रभु बेगि करौ जन जानि सनाथा ॥

सुमिरन

कण्ठ में बैठो तुम कण्ठेस्वरि ❀ भुजबल बैठि जाउ हनुमान ।
बैठु सारदा मोरि जीभ माँ ❀ जासों करौं आल्ह को गान ॥

नहीं आसरा निज भुजबल को ❀ है यहु आल्हा सिंधु अपार।
डगमग डगमग नैया होवै ❀ माता तुही लगावै पार॥
रह्यों प्रतापी मैं सतजुग माँ ❀ त्रेता रह्यों बहुत बरियार।
बड़ी बड़ाई भै द्वापर माँ ❀ जब लग रहे परीछित यार॥
अब बृद्धाई अति छाई है ❀ गाई जाय नहीं सो यार।
कलिजुग बाबा की रजधानी ❀ माता तुही लगावै पार॥
जप तप भाग्यो मेरि देही ते ❀ अब मैं भयों बहुत सुकुमार।
ताते नैया डगमग होवै ❀ बेड़ा कौन लगावै पार॥
तुही खेवैया सारद मैया ❀ माता खेय लगावै पार।
नाहिं तो बूड़ौं मँझधारा में ❀ माता होवै हँसी तुम्हार॥
छूटि सुमिरनी गै सारद कै ❀ साका सुनौ सूरमन क्यार।
करिया आई अब मोहबे का ❀ जो जम्बै का राजकुमार॥

अथ कथाप्रसंग

एक समइया की बातैं हैं ❀ यारो सुनि ल्यो कान लगाय।
परब दसहरा की बुड़की रहै ❀ गंगा न्हान सबै कोउ जाय॥
बड़ा महातम श्रीगंगा को ❀ गायो बालमीकि महराज।
ब्यास बनायो महभारत जो ❀ तामें कह्यो जगत के काज॥
सो सब जानै माड़ौवाला ❀ यहु जम्बै का राजकुमार।
हाथ जोरिकै फिरि बोलत भा ❀ ददुवा सुनिल्यो बचन हमार॥
भारी मेला श्रीगंगा को ❀ ददुवा जाजमऊ के घाट।
पुर के बाहर हम देखा है ❀ जावैं राव रङ्क सब बाट॥
हुकुम जो पावैं हम ददुवा को ❀ तौ गंगा को अवैं अन्हाय।
पाप नसावैं सब देही के ❀ गंगा चरन सरन में जाय॥
सुनिकै बातैं ये करिया की ❀ जम्बै गोद लीन बैठाय।

चूम्यो चाट्यो गरे लगायो ❀ बोल्यो बचन तुरत मुसुकाय ॥
बारह बरसन का अरसा भो ❀ पैसा दीन न कनउज केर ।
नायब मन्त्री चन्देले के ❀ तुमको लेयँ तहाँ जो हेर ॥
बाँधिकै मुसकै मोरे बचुवा ❀ तुरतै जेल देयँ पहुँचाय ।
पैसा देवौं तो बचि जाओ ❀ नाहिं तो जाय प्रान पर आय ॥
त्यहि ते तुम का समुझावत हौं ❀ बचुआ मानौ कहा हमार ।
राह कनौजी कै तहँते है ❀ ठाकुर समरधनी तरवार ॥
हाथ जोरिकै करिया बोल्यो ❀ दोऊ चरनन सीस नवाय ।
मने न करिये म्वहिं गंगा को ❀ ददुवा बार बार बलि जायँ ॥
पार लगै हैं श्रीगंगाजी ❀ मेरो बार न बाँको जाय ।
पकरो जैहौं जो मेला में ❀ पैसा माफ लेउँ करवाय ॥
हुकुम जो पावौं मैं ददुवा को ❀ तौ फिरि गंगा आवौं न्हाय ।
बिनती सुनिकै बहु करिया की ❀ जम्बै हुकुम दीन फरमाय ॥
हुकुम पायकै सो जम्बै को ❀ कही सिपाहिन अपने बात ।
करौ तयारी जाजमऊ की ❀ गंग नहैबे को हम जात ॥
हुकुम पायकै सो करिया का ❀ तुरतै होन लाग तय्यार ।
झीलमबखतरपहिरिसिपाहिन ❀ हाथ म लीन ढाल तरवार ॥
यक यक भाला दुइ दुइ बरछी ❀ लीन्हेनिकड़ाबीन सबज्वान ।
बजे नगारा त्यहि समया माँ ❀ भारी होन लाग घमसान ॥
करिया चलिभात्यहि समयामाँ ❀ माता भवन पहूँचा जाय ।
हाथ जोरिकै करिया बोल्यो ❀ माता चरनन सीस नवाय ॥
मोहिं आज्ञा है ददुवा की ❀ गंग नहैबे को हम जायँ ।
आज्ञा पावौं जो माता की ❀ तौ सब काज सिद्ध ह्वै जायँ ॥
बातैं सुनिकै ये करिया की ❀ माता हुकुम दीन फरमाय ।

चूम्यो चाट्यो हृदय लगायो ❀ आसिरबाद दीन हरषाय ॥
बहिनिबिजैसिनितबबोलतभै ❀ भैया बार बार बलि जाउँ ।
मोहिं निसानी कछु लै आयो ❀ जासों यादि करौं तव नाउँ ॥
इतनी सुनिकै करिया बोला ❀ बहिनी मानौ कहा हमार ।
लाओं निसानी मैं मेला ते ❀ बहिनी कहा न टारौं त्वार ॥
इतनीकहिकैकरियाचलिभयो ❀ फौजन फेरि पहूँचा आय ।
तुरत नगड़ची को ललकास्यो ❀ मारू डंका देव बजाय ॥
बजा नगाड़ा तब माड़ौ माँ ❀ छत्रिन धरा रकाबन पायँ ।
आपौ चढ़िकै फिरि घोड़ा पर ❀ मन में रामचन्द्र को ध्याय ॥
कूच कराय दियो माड़ौ सों ❀ पहुँचो जाजमऊ में जाय ।
तम्बू गड़िगे तहँ करिया के ❀ पलँग चाकरन दीन बिछाय ॥
उतस्यो करिया तब तम्बू में ❀ मनमाँ सुमिरि सारदा माय ।
लैकै धोती रेसमवाली ❀ गंगा तट पर पहुँचा जाय ॥
तब असनान कीन गंगा में ❀ आसन तहाँ लीन बिछवाय ।
संध्या तरपन कियो सबेरे ❀ बिप्रन तुरत लीन बुलवाय ॥
दान दच्छिना दै बिप्रन को ❀ तम्बू फेरि पहूँचा आय ।
पहिरि के कपड़ा अलबेला सो ❀ मेला फेरि पहूँचा जाय ॥
जाय दुकानन माँ देखत भा ❀ कतहुँ न मिला नीकत्यहि हार ।
तबलों माहिल उरईवाला ❀ तासों ह्वैगै रामजुहार ॥
माहिल बोल्यो तब करिया ते ❀ ओ जम्बै के राजकुमार ।
काह खरीदन को आयो है ❀ जो तुम घूमौ सकल बजार ॥
सुनिकै बातैं ये माहिल की ❀ करिया बोला बचन उदार ।
हार लखौटा नीको ढूँढ़ैं ❀ सो नहिं पावा कतौं बजार ॥
बहिनिबिजैसिनि ने माँगा है ❀ ताते खोज करौं अधिकाय ।

तुम्हरो जानो जो कतहूँ है ❀ मोको बेगि देव बतलाय ॥
सुनिकै बातैं ये करिया की ❀ माहिल कहा बचन मुसुकाय।
हार नौलखा है महोबे माँ ❀ तुरतै चला तहाँ को जाय ॥
बहिनि हमारी मल्हना जानों ❀ औ बहनोई रजा परिमाल।
कोऊ लड़ैया तिन घर नाहीं ❀ मानौ सत्य सत्य सब हाल ॥
सुनिकै बातैं ये माहिल की ❀ करिया चरनन सीस नवाय।
बिदा माँगिकै फिरिमाहिलसों ❀ तम्बू तुरत पहूँचा आय ॥
हुकुम लगायो सब छत्रिन को ❀ ह्याँ ते कूच देव करवाय।
करौ तयारी अब महोबे की ❀ सीताराम चरन को ध्याय ॥
सुनिकै बातैं ये करिया की ❀ छत्री सबै भये हुसियार।
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❀ बाँके घोड़न भे असवार ॥
कूच के डंका बाजन लागे ❀ घूमन लागे लाल निसान।
चलिभोकरियाफिरि महोबेको ❀ मन में किहे गंग को ध्यान ॥
त्यही समइया की बातैं हैं ❀ यारो सुनिलेव कान लगाय।
चारौ भाई हैं बकसर के ❀ जिनका कही बनाफरराय ॥
रहिमल टोड़र बच्छराज औ ❀ चौथे देसराज महराज।
मीरताल्हन हैं बनरस के ❀ जिनके नौ लरिका सिरताज॥
अली अलामत औ दरियाखाँ ❀ बेटा जानबेग सुल्तान।
मियाँ बिसारत औ दरियाई ❀ नाहर कारे औ कल्यान ॥
कारे बाना करे निसाना ❀ कारे घोड़न पर असवार।
चीरा सिर पर है सुलतानी ❀ मीरताल्हन केर कुमार ॥
ये सब मिलिकै यकठौरी है ❀ डाँड़ पै किहेनि बखेड़ा जाय।
जयचँद केरो तहाँ राज है ❀ जिनका कही कनोजीराय ॥
सब फिरियादी गे कनउज को ❀ पहुँचे नगर महोबा जाय।

नगर महोबा सों कनउज को ❀ रस्ता सीध निकरिगै भाय ॥
यक हरकारा सों पूछत भे ❀ चारौ भाय बनाफरराय ।
जावा चाहैं हम कनउज को ❀ जहँ पै रहै चँदेलोराय ॥
सुनिकै बातैं इन चारौ की ❀ सोऊ कहा बचन हरषाय ।
जात कहौ कौने मतलब को ❀ हमते साँच देव बतलाय ॥
सुनिकै बातैं हरकारा की ❀ बोला तब ताल्हन सरदार ।
भयो बखेड़ा है धूरे पर ❀ हुँवना चली बिषम तरवार ॥
हम फिरियादी कनउज जावैं ❀ राजा जयचँद के दरबार ।
सुनिकै बातैं ये ताल्हनि की ❀ सोऊ बोला बचन उदार ॥
उन घर नायब चंदेलो है ❀ जो परिमाल महोबे क्यार ।
एक महीना की छुट्टी लै ❀ आयो घरै आपने यार ॥
तुमचलिजावोपरिमालिकढिग ❀ तौ सब काम सिद्ध ह्वै जाय ।
नाहिं तो बरसैं तुमका लगिहैं ❀ मानौ साँच साँच सब भाय ॥
सुनिकै बातैं हरिकारा की ❀ ये चलि गये जहाँ परिमाल ।
तुरतै मिलिकै परिमालिक सों ❀ अपनो गाय गये सब हाल ॥
बड़ी प्रीतिसों परिमालिक तब ❀ इनको द्वारे दीन टिकाय ।
सीधा दीन्ह्यो सब छत्रिन को ❀ ताल्हनि खाना दीन मँगाय ॥
बनी रसोइयाँ रजपूतन की ❀ छत्रिन जेइँ लीन ज्यवनार ।
अब यहु लड़िका जम्बैवाला ❀ ठाकुर माड़ौ का सरदार ॥
दावति आवै सो महोबे को ❀ करिया करिया के अनुमान ।
बजैं नगाड़ा त्यहि फौजन माँ ❀ भारी होय घोर घमसान ॥
सुन्यो नगाड़ा के सब्दन को ❀ चकृत भयो रजा परिमाल ।
तब हरकारा दुइ आवत भे ❀ ते सब कह्यो वहाँ पर हाल ॥
सुनिकै बातैं हरकारा की ❀ फाटक बन्द लीन करवाय ।

तबलौं करिया फौजै लैकै ❀ फाटक ऊपर पहुँचा आय ॥
हुकुम लगायो रजपूतन को ❀ कुल्हड़न फाटक देव गिराय ।
मर्दिगर्दि करि सब महोबे को ❀ नयँ क टका लेउँ निकराय ॥
तौतौ लरिका मैं जम्बै का ❀ नहिं ई डारों मुच्छ मुड़ाय ।
नीके गहना ये देहैं ना ❀ कायर बंस चँदेलाराय ॥
सुनिकै बातैं ये करिया की ❀ छत्रिन लियो कुल्हाड़ा हाथ ।
चलैं कुल्हाड़ा फिरि फाटक में ❀ नायकै रामचन्द्र को माथ ॥
यह गति चारो भाइन देखी ❀ ताल्हन बनरस को सरदार ।
पाँचों मिलिकै सम्मत करिकै ❀ गरुई हाँक दीन ललकार ॥
जल्दी खोलो अब फाटक को ❀ सूरति चखों करिंगा केरि ।
जान न पाई माड़ौवाला ❀ मारों एक एक को हेरि ॥
यह कहि फाटक को खुलवायो ❀ औ फौजन माँ परे दबाय ।
मारन लागे चारौ भाई ❀ जिनका कही बनाफरराय ॥
जौनी दिसि को ताल्हन जावैं ❀ कोउ न पाँव अड़ावै ज्वान ।
जौनी दिसि को बच्छराज गे ❀ त्यहिदिसिमारिकीनखरिहान॥
को गति बरनै देसराज कै ❀ सरबरि करै कौन सरदार ।
बड़ा लड़ैया रहिमल टोड़र ❀ दोऊ हाथ करै तरवार ॥
मूड़न केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुंडन के लाग पहार ।
रकतकि नदियातहँबहिनिकरी ❀ जूझे बड़े बड़े सरदार ॥
बड़ा लड़ैया माड़ौवाला ❀ यहु जम्बै को राजकुमार ।
ताल्हन केरे यहु मुरचा पर ❀ कीन्हेसि पाँच घरी तरवार ॥
जीति न दीख्यो जब ताल्हनसों ❀ तब फिरि भागा लिहे परान ।
बचे खुचे जे माड़ौवाले ❀ तेऊ भागि गये सब ज्वान ॥
यहसुनि पावा रनि मल्हना ने ❀ चारिउ कुँवर लीन बुलवाय ।

बड़ी बड़ाई करि चारौ की ❀ औ परिमालसों कहा बुझाय॥
इन्हैं टिकावो तुम महोबे माँ ❀ इनके ब्याह देव करवाय।
ईजति हमरी इन राखी है ❀ औ गाढ़े माँ भये सहाय॥
बातैं सुनिकै रनि मल्हना की ❀ फिरि दरबार पहूँचे आय।
देसराज औ बच्छराज को ❀ दोउन लीन्ह्यो हृदय लगाय॥
तिनसोंबोल्योपरिमालिकफिरि ❀ हमरी बात सुनौ दोउ भाय।
दूध पूत औ धन दौलत के ❀ मालिक तुम्हीं बनाफरराय॥
मीरा ताल्हन बनरस वाले ❀ तिनसों बोल्यो रजापरिमाल।
फौजन केरे तुम मालिक हौ ❀ हमरे बचन करौ प्रतिपाल॥
नाई बारी को बुलवायो ❀ तिनसों कह्यो बचनसमुझाय।
जाति बिरादर जहँ हमरे हैं ❀ तिनकाखबरिसुनावो जाय॥
लरिका क्वाँरे परिमालिक घर ❀ ब्याहन जोग भये हैं आय।
क्वाँरी कन्या जिन घर होवैं ❀ टीका तुरत देयँ पठवाय॥
सुनिकै बातैं परिमालिक की ❀ नाउन पता लगायो जाय।
दलपति राजा ग्वालीयर का ❀ त्यहिफिरिटीका दीनपठाय॥
देसराज औ बच्छराज को ❀ लैकै पहुँचि गयो परिमाल।
द्यावलि बिरमाँ दूनौ कन्या ❀ इनका ब्याहिदीन नरपाल॥
देसराज का द्यावलि सँग में ❀ बिरमाँ बच्छराज के साथ।
ब्याहिकैचलिभेपरिमालिकफिरि ❀ मनमें सुमिरि भवानीनाथ॥
दोनों बहुवन को सँग में लै ❀ महोबे आय गये परिमाल।
खबरि जनायो यह सखियन ने ❀ मल्हना बहुतभई खुसियाल॥
दौरति आई फिरि द्वारे पर ❀ औ आरती उतारी आय।
बाँह पकरि लइ दोउ बहुवन की ❀ राखी रंगमहल में जाय॥
हार नौलखा के लेबे को ❀ आयो रहै करिंगा राय।

सोई हार लै रानी मल्हना ❀ द्यावलि को दीनो पहिराय ॥
दूसर हार और तैसै लै ❀ त्रिरमाँ गरे दीन फिर डार ।
अनँद-बधैया बाजन लागी ❀ घर घर होयँ मंगलाचार ॥
को गति बरनै त्यहि समया कै ❀ हमरे बूत कही ना जाय ।
सुखसों सोयोपरिमालिकफिरि ❀ मल्हना संग महल हर्षाय ॥

महोबे का दूसरा युद्ध

सवैया

सोय उठी परिमाल कि नारि तबै मन में यह सोचन लागी ।
मंदिर एक कसामसि होय नई दुलही सुलही बड़ भागी ॥
दुःख मिलै इन नारिन को मन में यह सोचि उरै अनुरागी ।
सोय उठे ललिते परिमाल तबै यह नारि सुनावन लागी ॥
सुनिकै परिमाल कह्यो हँसिकै इनको हम आनहि ठौर टिकावैं ।
उठिकै पुर दूर कछू यक जाय तहाँ पुरवा करि नेव डरावैं ॥
नाम धस्यो दसहरिपुर ताहि यहाँ द्वउ कुँवरन फेरि बुलावैं ।
ललिते द्वउबन्धु टिके तहँ जाय न गाय सकौं जो महासुख पावैं ॥

को गति बरनै त्यहि पुरवा कै ❀ हमरे बूत कही ना जाय ।
तहँही द्यावलि के आल्हा भे ❀ प्याट म रहे उदयसिंहराय ॥
बिरमा केरे मलखाने भे ❀ सुलखे गये गर्भ में आय ।
तबहीं करिया माड़ोवाला ❀ आधी रात पहूँचा आय ॥
सोवत मास्यो बच्छराज को ❀ काट्यो देसराज सिर जाय ।
आगि लगायो फिरि पुरवा में ❀ सबियाँ जेवर लीन मँगाय ॥
लीन्ह्यो हाथी देसराज का ❀ घोड़ा पपिहा लिह्यो खुलाय ।

लखा पतुरिया देसराज की ❀ सोऊ करिंया लीन बुलाय ॥
माल खजाना परिमालिक का ❀ सबियाँ बेगि लीन लुटवाय ।
हार नौलखा को लैकै फिरि ❀ महोबे ते कूच दीन करवाय ॥
आठ रोज की मंजिल करिकै ❀ माड़ौ गयो करिंगाराय ।
खबरि सुनाईती माहिल ने ❀ सोऊ गयो तहाँ फिरि आय ॥
बड़ी बड़ाई भै माहिल कै ❀ राजा जम्बै के दरबार ।
अनँद-बधैया माड़ौ बाजी ❀ घर घर भये मंगलाचार ॥
ब्रह्मा रंजित भे मल्हना के ❀ औंघावलिके उदयसिंहराय ।
सुलखे पैदा भे बिरमा के ❀ ताकी खुसी कही ना जाय ॥
देबा पैदा भा भीषम के ❀ ठाकुर मैनपुरी चौहान ।
सो भा साथी बघऊदन का ❀ ज्वानौ सुनौ चित्त दै कान ॥
या बिधि लरिका इकठौरी ह्वै ❀ बाँधे छोटि छोटि तरवार ।
छोटी ढालैं परी पीठि में ❀ सिर पर पगिया करैं बहार ॥
छोटी कलँगी तिन पर सोहैं ❀ छोटी बैसन के सरदार ।
छोटे घोड़न के चढ़वैया ❀ बड़ बड़ ठकुरन केर कुमार ॥
रोज सिकारन को जावैं ते ❀ बाँधे गूरा और गुलेल ।
जुलफैं सोहैं तिन कुँवरन के ❀ जिनमाँ महकै अतर फुलेल ॥
आगे घोड़ा है आल्हा को ❀ पाछे जायँ बीर मलखान ।
तिनके पीछे ब्रह्मा सोहैं ❀ पीछे उदयसिंह बलवान ॥
सुलखे भाई मलखाने का ❀ सोऊ लीन्हे हाथ गुल्याल ।
हिरना ढूँढ़ै सब जंगल माँ ❀ एक ते एक दई के लाल ॥
हिरना पायो नहिं जंगल में ❀ लौटे फेरि महोबे वाल ।
एक न लौट्यो उदयसिंह तहँ ❀ नाहर देसराज का लाल ॥
सो यह सोचैं मन अपने माँ ❀ औ मन ही माँ करै विचार ।

हम कहि आये हैं माता सों ❀ माता लावैं आज सिकार ॥
हिरना मारे बिन जावें ना ❀ हमरो याही ठीक बिचार ।
यहै सोचि कै मन अपने माँ ❀ ढूँढ़न लाग्यो तहाँ सिकार ॥
हिरना दीख्यो इक झाबर में ❀ मारन चल्यो बनाफरराय ।
हिरना भाग्यो तहँ उरई को ❀ माहिल बाग पहूँचा जाय ॥
घोड़ बेंदुला को रपटाये ❀ पाछे चला बनाफर जाय ।
खाँई ऊँची त्यहि बगिया की ❀ ऊदन घोड़ा दीन फँदाय ॥
मारि बेंदुला की टापन सों ❀ सबियाँ बगिया दीन खुदाय ।
छोट दरक्खत बहु टूटत भे ❀ रौंसैं पटरी दई गिराय ॥
यह गति दीख्यो जब मालिन ने ❀ बोल्यो उदयसिंह ते आय ।
कौने राजा के लरिका हौ ❀ सबियाँ डार्यो बाग नसाय ॥
काह नाम है सो बतलावो ❀ आपन देस देव बतलाय ।
सुनिकै बातैं त्यहि माली की ❀ बोल्यो तुरत बनाफरराय ॥
देस हमारो नगर महोबा ❀ हमरो उदयसिंह है नाम ।
फिरिकै माली अब बोलै ना ❀ नाहिं तो पठै देवँ जमधाम ॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ माली चुप्प साधि तब लीन ।
सुमिरि भवानी सिवसंकर को ❀ ह्याँ ते कलम बन्द कै दीन ॥
आसिर्वाद देवँ मुंसीसुत ❀ जीवहु प्रागनरायण भाय ।
कीरति तुम्हरी जो सब गावैं ❀ तौ फिरि कथा बहुत बढ़ि जाय ॥
माथ नवावों पितु अपने को ❀ जिन म्वहिं बिद्या दीन पढ़ाय ।
सो सुख पावैं देवलोक में ❀ गावैं ललित चरित नित ध्याय ॥
अब मैं ध्यावों रामचन्द्र को ❀ जो मम इष्टदेव महराज ।
इजति हमरी जग में राखैं ❀ पुरवैं सकल हमारे काज ॥

महोबे का युद्ध समाप्त

आल्हखंड

माड़ौ का युद्ध

सवैया

स्वेतस्वरूप अनूपम नूप नहीं कोउ रूप कहौं ज्यहि गाई।
आप समान हौ आपहि रूप स्वरूप के भूप गिरीस जमाई॥
बैल बुढ़ान कि सूल हिरान भयो कछु आन कि आनहि भाई।
पापी लख्यो ललिते सरनागत लूटत हैं त्यहि चोर सदाई॥
काम औ क्रोध औ लोभहु मोहहु लूटत हैं नितही दुखदाई।
राव न रंक कि संक करैं निरसंक फिरैं सबके उर जाई॥
चार में मार अपार बली जो छली छलि देस गयो सब खाई।
पापी लख्यो ललिते सरनागत लूटत हैं त्यहि चोर सदाई॥

सुमिरन

नित प्रति ध्यावै जो सुरजन को ❀ होवै जौन बिसूरै काज।
सुर्ज महातम जो कउ गावै ❀ ताकी बनी रहै जग लाज॥
प्रातःकाल उदय पूरब दिसि ❀ पच्छिम अस्त साँझ को जान।
देय अंजली जल सुरजन को ❀ तापर खुसी होयँ भगवान॥
जो इतवार नोन नहिं खावै ❀ एक बार दिन करै अहार।
बंधन छूटैं त्यहि दुनिया के ❀ नाँघै मायासिंधु अपार॥
सोय के जागै जब कोऊ नर ❀ लेवै रोज सुर्ज के नाम।
जब मरिजावै वहु दुनिया में ❀ पावै तुरत सुर्ज को धाम॥
छूटि सुमिरनी गै सुर्जन कै ❀ अब ऊदन का सुनो हवाल।
ऊदन जैहैं गढ़माड़ौ को ❀ लड़िहैं तहाँ केर नरपाल॥

अथ कथाप्रसंग

बरस बारहीं का ऊदन है ❀ बाँधे सबै ज्वान हथियार।
माहिल ठाकुर उरईवाला ❀ खेलै ताकी बाग सिकार॥
घोड़ बेंदुला तहँ थिरकत भा ❀ बिषधर उरई के मैदान।
भारी पनिघट रहै उरई का ❀ नारिन दीख सजीला ज्वान॥
धीरज छूट्यो तब नारिन के ❀ बोलीं एक एक के कान।
काहू राजा को बालक है ❀ याको रूप दीन भगवान॥
नारी बोलैं अस आपस में ❀ तब लग गयो बनाफर आय।
ऊदन बोल्यो पनिहारिन सों ❀ घोड़ै पानी देउ पियाय॥
सुनिकै बातैं वघ ऊदन की ❀ बोली एक नारि रिसिआय।
कौन देस के रहवैया हौ ❀ आपन नाम देव बतलाय॥
लौंड़ी तुम्हरी हम आहिन ना ❀ घोड़ै पानी देयँ पियाय।
माहिल राजा जो सुनि पैहैं ❀ लैहैं घोड़ा तुरत छिनाय॥

देस हमारो नगर महोबा ❀ आल्हा केर लहुरवा भाय।
बेटा आहिन देसराज के ❀ हमरो नाम उदयसिंह राय॥
यह कहि लीन्हों कर गुलेल को ❀ गुल्लन गगरी दीन गिराय।
जितनी गगरी रहैं पनिघट माँ ❀ सबियाँ गुल्लन दीन नसाय॥
एँड़ा मसक्यो रसबेंदुल के ❀ घोड़ा उड़ा हवा सम जाय।
सवा पहर के फिरि अर्सा माँ ❀ ऊदन गयो महोबे आय॥
ह्याँ पनिहारी चलि पनिघट सों ❀ माहिल द्वारे पहुँची आय॥
कही हकीकति सब माहिलसों ❀ आँखिन आँसू रहीं वहाय।
ईजति हमरी वहि लै डारी ❀ बेटा देसराज के लाल।
गगरी सबियाँ चूरन कैकै ❀ औ चलि गयो जहाँ परिमाल॥
सुनिकै बातैं पनिहारिन की ❀ माहिलजराआगिनिकीज्वाल।
कागद लीन्ह्यो कलपीवाला ❀ लीन्ह्यो कलमदवाइत हाल॥
सिरीसरबऊ को पहिले लिखि ❀ पाछे लिखन लाग सब हाल।
चिट्ठी तुमका हम भेजित है ❀ सो पढ़िलेउ रजापरिमाल॥
तुम्हरे घरका जो चाकर है ❀ जाको उदयसिंह है नाम।
सो चलि आयो म्वरि उरई माँ ❀ सबियाँ बाग कीन बेकाम॥
उधुम मचायो सो पनिघट में ❀ सिगरी गगरी दीन नसाय।
कबसे ऊदन भे तरवरिहा ❀ सो तुम उन्हैं देव समुझाय॥
टँगीं खुपरियाँ देसराज की ❀ राजा जम्बै केर दुवार।
बड़ी बीरता जो आई हो ❀ माड़ौ करैं जाय तरवार॥
लिखिकै चिट्ठी सो माहिल ने ❀ धावन हाथ दीन पकराय।
साजि साँड़िनी को जल्दी सों ❀ धावन चला महोबे जाय॥
तीन पहर का अरसा करके ❀ फाटक ऊपर पहुँचा जाय।
बैठि साँड़िनी गै फाटक पर ❀ धावन उतरिपरा तहँ आय॥

चलिभयो धावन फाटक भीतर ❀ जहँ पै बैठ रजा परिमाल।
कीन बन्दगी महराजा को ❀ पत्री देत भयो ततकाल॥
फारि लिफाफा को जल्दी सों ❀ पत्री पढ़त भयो परिमाल।
लिखी हकीकत जो माहिल है ❀ सोसब बाँचि लीन त्यहिकाल॥
कलम दवाइत कागद लैकै ❀ उत्तर लिखन लाग परिमाल।
धोखे माड़ौ की चरचा ना ❀ कीन्ह्यो उरई के नरपाल॥
फोरी गगरी है माटी की ❀ ताँबे घड़ा देउँ बनवाय।
विषधर लड़िका देसराज का ❀ ज्यहि का कही उदयसिंहराय॥
जैसे लरिका देसराज का ❀ तैसे पूत आपनो जान।
अनख न मानब यहि बातन का ❀ माहिल बचन हमारे मान॥
लिखिकै चिट्ठी को जल्दी सों ❀ धावन हाथ दीन पकराय।
माथ नायकै परिमालिक को ❀ धावन बैठ ऊँट पर जाय॥
जल्दी चलिकै फिरि महोबे सों ❀ उरई तुरत पहूँचा आय।
किह्यो बन्दगी सो माहिल को ❀ पत्री दीन हाथ में जाय॥
पढ़िकै पत्री परिमालिक की ❀ माहिल ठाकुर उठा रिसाय।
नोचि फोंचिकै त्यहि चिट्ठी को ❀ माहिल तहँ पर दीन चलाय॥
एक महीना के अरसा में ❀ ऊदन खेलन चल्यो सिकार।
जाय कै पहुँच्यो फिरि उरई में ❀ माहिल बाग गयो सरदार॥
जोड़ी मार्‍यो करसायल की ❀ औ फुलबगिया दीन नसाय।
माली दौरे सब बगिया के ❀ देखनि सबै तमासा आय॥
जल्दी चलिभे ते उरई को ❀ अभई पास पहूँचे जाय।
कही हकीकत सब माली ने ❀ अभई तुरतै चला रिसाय॥
जायकै पहुँच्यो फिरि बगिया में ❀ अभई गरु दीन ललकार।
अवगुन कीन्ह्यो भल उरई में ❀ ओ धावलि के राजकुमार॥

जान न पैहो अब उरई ते ❀ ऊदन खबरदार ह्वै जाय।
सुनिकै बातैं ये अभई की ❀ घोड़ ते कुदा बनाफरराय॥
पकरिकै बाहैं द्वउ अभई की ❀ औ बगिया माँ दीन चलाय।
हाँकि कै घोड़ा ऊदन चलिभे ❀ पहुँचे नगर महोबा आय॥
माली दौरे फिरि बगिया ते ❀ माहिल पास पहूँचे आय।
सुनिकै बातैं तिन मालिन की ❀ माहिल ठाकुर उठा रिसाय॥
लिल्ली घोड़ी को मँगवायो ❀ तापर माहिल भयो सवार।
जायकै पहुँच्यो फुलबगिया में ❀ ठाकुर उरई को सरदार॥
गोद उठायो फिरि अभई को ❀ तुरतै नलकी लीन मँगाय।
त्यहि पौढ़ायो सो अभई को ❀ महलन तुरत दीन पहुँचाय॥
अपनाचलिभा फिरि महोबेको ❀ लिल्ली घोड़ी पर असवार।
तिक्तिक्तिक्तिक् हाँकतिआवै ❀ पहुँचा फेरि महोबे द्वार॥
उतरिकै घोड़ी सों जल्दी सों ❀ चलिभो जहाँ रजा परिमाल।
राम जुहार कीन राजा को ❀ औ फिरि कहनलाग सबहाल॥
तुमने ऊदन को पालो है ❀ राजा महोबे के सरदार।
दाख छुहारेन कीबगिया को ❀ ऊदन जाय कीन संहार॥
भुजा उखारी तिन अभई की ❀ मारो हिरन बाग में जाय।
दूजी कीन्हीं यह मोरे सँग ❀ औ महराजा बात ओनाय॥
ऐस बहादुर जो पैदा भे ❀ काहे न लेयँ बाप को दाँय।
जम्बै राजा माड़ौवाला ❀ दसहरिपुरवा लीन लुटाय॥
बाँधि कै मुस्कै देसराज की ❀ कोल्हू माँ डार्यो पिरवाय।
लखा पतुरिया देसराज की ❀ सो लै गयो करिंगाराय॥
घोड़ा पपिहा औ हाथी को ❀ लीन्ह्यो हार नौलखा आय।
सोवत मार्यो बच्छराज को ❀ दसहरिपुरवा दीन फुँकाय॥

चलिभयो धावन फाटक भीतर ❀ जहँ पै बैठ रजा परिमाल ।
कीन बन्दगी महराजा को ❀ पत्री देत भयो ततकाल ॥
फारि लिफाफा को जल्दी सों ❀ पत्री पढ़त भयो परिमाल ।
लिखी हकीकत जो माहिल है ❀ सोसब बाँचि लीन त्यहिकाल ॥
कलम दवाइत कागद लैकै ❀ उत्तर लिखन लाग परिमाल ।
धोखे भाड़ों की चरचा ना ❀ कीन्ह्यो उरई के नरपाल ॥
फोरी गगरी है माटी की ❀ ताँबे घड़ा देउँ बनवाय ।
विषधर लड़िका देसराज का ❀ ज्यहि का कही उदयसिंहराय ॥
जैसे लरिका देसराज का ❀ तैसे पूत आपनो जान ।
अनख न मानब यहि बातन का ❀ माहिल बचन हमारे मान ॥
लिखिकै चिट्ठी को जल्दी सों ❀ धावन हाथ दीन पकराय ।
साथ नायकै परिमालिक को ❀ धावन बैठ ऊँट पर जाय ॥
जल्दी चलिकै फिरि महोबे सों ❀ उरई तुरत पहूँचा आय ।
किह्यो बन्दगी सो माहिल को ❀ पत्री दीन हाथ में जाय ॥
पढ़िकै पत्री परिमालिक की ❀ माहिल ठाकुर उठा रिसाय ।
नोचिफोंचिकै त्यहि चिट्ठी को ❀ माहिल तहँ पर दीन चलाय ॥
एक महीना के अरसा में ❀ ऊदन खेलन चल्यो शिकार ।
जाय कै पहुँच्यो फिरि उरई में ❀ माहिल बाग गयो सरदार ॥
जोड़ी मार्यो करसायल की ❀ औ फुलबगिया दीन नसाय ।
माली दौरे सब बगिया के ❀ देखेनि सबै तमासा आय ॥
जल्दी चलिभे ते उरई को ❀ अभई पास पहूँचे जाय ।
कही हकीकत सब माली ने ❀ अभई तुरतै चला रिसाय ॥
जायकै पहुँच्यो फिरि बगिया में ❀ अभई गरु दीन ललकार ।
अवगुन कीन्ह्यो भल उरई में ❀ ओ दावलि के राजकुमार ॥

जान न पैहो अब उरई ते ❀ ऊदन खबरदार ह्वै जाय।
सुनिकै बातैं ये अभई की ❀ घोड़ ते कुदा बनाफरराय॥
पकरिकै बाहैं द्वउ अभई की ❀ औ बगिया माँ दीन चलाय।
हाँकि कै घोड़ा ऊदन चलिभे ❀ पहुँचे नगर महोबा आय॥
माली दौरे फिरि बगिया ते ❀ माहिल पास पहूँचे आय।
सुनिकै बातैं तिन मालिन की ❀ माहिल ठाकुर उठा रिसाय॥
लिल्ली घोड़ी को मँगवायो ❀ तापर माहिल भयो सवार।
जायकै पहुँच्यो फुलबगिया में ❀ ठाकुर उरई को सरदार॥
गोद उठायो फिरि अभई को ❀ तुरतै नलकी लीन मँगाय।
त्यहि पौढ़ायो सो अभई को ❀ महलन तुरत दीन पहुँचाय॥
अपना चलिभा फिरि महोबेको ❀ लिल्ली घोड़ी पर असवार।
तिक्तिक्तिक्तिक्हाँकतिआवै ❀ पहुँचा फेरि महोबे द्वार॥
उतरिकै घोड़ी सों जल्दी सों ❀ चलिभो जहाँ रजा परिमाल।
राम जुहार कीन राजा को ❀ औ फिरि कहन लाग सब हाल॥
तुमने ऊदन को पालो है ❀ राजा महोबे के सरदार।
दाख छुहारेन की बगिया को ❀ ऊदन जाय कीन संहार॥
भुजा उखारी तिन अभई की ❀ मारो हिरन बाग में जाय।
दूजी कीन्हीं यह मोरे सँग ❀ औ महराजा बात अोनाय॥
ऐस बहादुर जो पैदा भे ❀ काहे न लेयँ बाप को दाँय।
जम्बै राजा माड़ौवाला ❀ दसहरिपुरवा लीन लुटाय॥
बाँधि कै मुस्कैं देसराज की ❀ कोल्हू माँ डास्यो पिरवाय।
लखा पतुरिया देसराज की ❀ सो लै गयो करिंगाराय॥
घोड़ा पपिहा औ हाथी को ❀ लीन्ह्यो हार नौलखा आय।
सोवत मास्यो बच्छराज को ❀ दसहरिपुरवा दीन फुँकाय॥

चलिभयो धावन फाटक भीतर ❀ जहँ पै बैठ रजा परिमाल।
कीन बन्दगी महराजा को ❀ पत्री देत भयो ततकाल॥
फारि लिफाफा को जल्दी सों ❀ पत्री पढ़त भयो परिमाल।
लिखी हकीकत जो माहिल है ❀ सोसब बाँचि लीन त्यहिकाल॥
कलम दवाइत कागद लैकै ❀ उत्तर लिखन लाग परिमाल।
धोखे माड़ौ की चरचा ना ❀ कीन्ह्यो उरई के नरपाल॥
फोरी गगरी है माटी की ❀ ताँबे घड़ा देउँ बनवाय।
विषधर लड़िका देसराज का ❀ ज्यहि का कही उदयसिंहराय॥
जैसे लरिका देसराज का ❀ तैसे पूत आपनो जान।
अनख न मानब यहि बातन का ❀ माहिल बचन हमारे मान॥
लिखिकै चिट्ठी को जल्दी सों ❀ धावन हाथ दीन पकराय।
साथ नायकै परिमालिक को ❀ धावन बैठ ऊँट पर जाय॥
जल्दी चलिकै फिरि महोबे सों ❀ उरई तुरत पहूँचा आय।
किह्यो बन्दगी सो माहिल को ❀ पत्री दीन हाथ में जाय॥
पढ़िकै पत्री परिमालिक की ❀ माहिल ठाकुर उठा रिसाय।
नोचिफोंचिकै त्यहि चिट्ठी को ❀ माहिल तहँ पर दीन चलाय॥
एक महीना के अरसा में ❀ ऊदन खेलन चल्यो शिकार।
जाय कै पहुँच्यो फिरि उरई में ❀ माहिल बाग गयो सरदार॥
जोड़ी मार्यो करसायल की ❀ औ फुलबगिया दीन नसाय।
माली दौरे सब बगिया के ❀ देखैनि सबै तमासा आय॥
जल्दी चलिभे ते उरई को ❀ अभई पास पहूँचे जाय।
कही हकीकत सब माली ने ❀ अभई तुरतै चला रिसाय॥
जायकै पहुँच्यो फिरि बगिया में ❀ अभई गरू दीन ललकार।
अवगुन कीन्ह्यो भल उरई में ❀ ओ द्यावलि के राजकुमार॥

लखा पतुरिया हाथी घोड़ा ❀ औ लै गयो नौलखा हार।
टँगी खुपरिया मोरे बाप की ❀ माता क्यहिके अजौं दुवार॥
साँच बतावै मोहिं माता तू ❀ नाहीं मरौं कटारी मारि।
इतनी कहि कै बघऊदन ने ❀ औ छाती में धरी कटारि॥
देखि तमासा यहु ऊदन को ❀ द्यावलि मन माँ कीन बिचार।
माहिल आवा है उरई ते ❀ त्यहि भरकावा पूत हमार॥
सोचन लागी मन अपने माँ ❀ अब मैं काह करौं भगवान।
झूठ बतावों जो लरिका ते ❀ तो यहु छाँड़ै अबै परान॥
साँच बतावौं यहि लरिका ते ❀ तो यहु अबहीं करै पयान।
मोहिं पियारो बघऊदन है ❀ प्यारो नहीं आपनो प्रान॥
साँच बतावौं मैं ऊदन ते ❀ यह मन ठीक लीन ठहराय।
जौन बिधाता की मर्जी है ❀ ह्वैहै वहै भागबस आय॥
यहै सोचि कै मन अपने माँ ❀ द्यावलि कहन लागि सबगाय।
जम्बै राजा माड़ौवाला ❀ त्यहिका पूत करिंगाराय॥
सो चढ़ि आयो अधीरात को ❀ मार्‌यो बाप तुम्हारो आय।
चचा तुम्हारे का सो मारा ❀ दसहरिपुरवा दीन फुँकाय॥
लै पचसब्दा गा हाथी को ❀ पपिहा घोड़ा लिहेसि छुड़ाय।
लखा पतुरिया हार नौलखा ❀ सब लैगयो करिंगा आय॥
मालखजाना परिमालिक का ❀ सोऊ सबै लीन लदवाय।
बिदति मचायो बड़ि पुरवा माँ ❀ वहु दहिजार करिंगाराय॥
चुरी उतार्‌यों ना तब सों मैं ❀ मन माँ यहै लीन ठहराय।
पूत सपूते जो कोउ ह्वैहैं ❀ लैहैं दाउँ बाप को जाय॥
चुरी उतारौं तब सागर में ❀ यह मोरे मन गई समाय।
जलम तुम्हारो भयो न तबहीं ❀ पेट में रहौ बनाफरराय॥

इतना कहतै ऊदन आयो ❀ राजा गयो सनाका खाय ।
कलहा लड़िका देसराज को ❀ जो मरिबे को नहीं डेराय ॥
सुनिकै बातैं सो माहिल की ❀ ठाढ़ो भयो सीस को नाय ।
को है राजा माड़ौवाला ❀ साँची हमैं देउ बतलाय ॥
को है मारा मेरे बाप को ❀ पुरवा कौन दीन फुँकवाय ।
लखा पतुरिया को लैगा को ❀ घोड़ा कौन लीन छुड़वाय ॥
हार नौलखा को लैगा को ❀ मार्यो बच्छराज को आय ।
हाल बतावो सब जल्दी सों ❀ हमरे धीर धरा ना जाय ॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ बोला तुरत रजापरिमाल ।
तीस बरस की ई बातैं हैं ❀ माहिल कहैं आज सो हाल ॥
कठिन लड़ाई भै सिलहट में ❀ तहँ पर जूझो बाप तुम्हार ।
दसहरिपुरवा कहुँ अनते है ❀ फूँक्यो माड़ौ के सरदार ॥
कियो बहाना परिमालिक ने ❀ मान्यो नहीं बनाफरराय ।
माहिल ते वह फिरि पूछत भे ❀ साँचो हाल देउ बतलाय ॥
को है राजा माड़ौवाला ❀ ज्यहि ने मारा बाप हमार ।
चरचा कीन्हीं है तुमहीं ने ❀ ठाकुर उरई के सरदार ॥
त्यहिते तुमते हम पूछत हैं ❀ सो तुम हमैं देउ बतलाय ।
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ माहिल कहा बचन मुसुकाय ॥
जौन बतावा परिमालिक ने ❀ सोई साँच बनाफरराय ।
बाप तुम्हारो सिलहट जूझ्यो ❀ चरचा कीन सोई हम आय ॥
सुनिकै बातैं ये माहिल की ❀ चलिभा तुरत बनाफरराय ।
जाय के पहुँच्यो त्यहि मन्दिर में ❀ जहँ पै रहे दिवलदे माय ॥
हाथ जोरिकै तहँ पूछत भा ❀ माता चरनन सीस नवाय ॥
कौने मारो म्वरे बाप को ❀ माता मोहिं देउ बतलाय ॥

लखा पतुरिया हाथी घोड़ा ❀ औ लै गयो नौलखा हार।
टँगी खुपरिया मोरे बाप की ❀ माता स्यहिके अजौं दुवार॥
साँच बतावै मोहिं माता तू ❀ नाहीं मरौं कटारी मारि।
इतनी कहि कै बघऊदन ने ❀ औ छाती में धरी कटारि॥
देखि तमासा यहु ऊदन को ❀ द्यावलि मन माँ कीन बिचार।
माहिल आवा है उरई ते ❀ त्यहि भरकावा पूत हमार॥
सोचन लागी मन अपने माँ ❀ अब मैं काह करौं भगवान।
झूठ बतावों जो लरिका ते ❀ तो यहु छाँड़ै अबै परान॥
साँच बतावौं यहि लरिका ते ❀ तो यहु अबहीं करै पयान।
मोहिं पियारो बघऊदन है ❀ प्यारो नहीं आपनो प्रान॥
साँच बतावौं मैं ऊदन ते ❀ यह मन ठीक लीन ठहराय।
जौन बिधाता की मर्जी है ❀ ह्वैहै वहै भागबस आय॥
यहै सोचि कै मन अपने माँ ❀ द्यावलि कहन लागि सबगाय।
जम्बै राजा माड़ौवाला ❀ त्यहिका पूत करिंगाराय॥
सो चढ़ि आयो अधीरात को ❀ मार्‌यो बाप तुम्हारो आय।
चचा तुम्हारे का सो मारा ❀ दसहरिपुर्वा दीन फुँकाय॥
लै पचसब्दा गा हाथी को ❀ पपिहा घोड़ा लिहेसि छुड़ाय।
लखा पतुरिया हार नौलखा ❀ सब लैगयो करिंगा आय॥
मालखजाना परिमालिक का ❀ सोऊ सबै लीन लदवाय।
बिदति मचायो बड़ि पुरवा माँ ❀ वहु दहिजार करिंगाराय॥
चुरी उतार्‌यों ना तब सों मैं ❀ मन माँ यहै लीन ठहराय।
पूत सपूते जो कोउ ह्वैहैं ❀ लैहैं दाउँ बाप को जाय॥
चुरी उतारौं तब सागर में ❀ यह मोरे मन गई समाय।
जलम तुम्हारो भयो न तबहीं ❀ पेट में रहौ बनाफरराय॥

वारह वर्स के तुम वालक हौ ❀ त्यहि ते मोर प्रान घवरायँ।
वाढ़ो वोंड़ो कछु दिन वीते ❀ बदला लिह्यो बाप को जाय॥

सवैया

वात सुनी यह मातु मुखै तवहीं वघऊदन ने ललकारा।
जाय हनौं गढ़ माड़व में अबै जम्बै नरेस को दुष्ट कुमारा॥
नाहिं छुवउँ तरवारि मैं हाथ न मातु कहावहुँ पूत तुम्हारा।
ठाकुर सोइ कहैं ललिते जो मरै रन खेतन में असिधारा॥

इतनी कहिकै ऊदन बिगरे ❀ औ माता सों लगे बतान।
अब हम जैहैं गढ़ माड़ौ को ❀ हमरो भला करैं भगवान॥
कहा न मनिहैं हम काहू को ❀ हमरो सत्य बचन करु कान।
घर माँ माता अब तुम बैठो ❀ मन माँ धरे राम को ध्यान॥
बारा वरस का छत्रिय लरिका ❀ ज्यहिकै ऐंचीं आवै कमान।
त्यहि का वैरी सुख ते सोवै ❀ जिन्दा मुरदा के अनुमान॥
बातैं सुनिकै ये ऊदन की ❀ द्यावलि हाथ पकरि तब लीन।
पकरि कै बाहैं वघऊदन की ❀ आल्हानिकटगवनफिरिकीन॥
मलखे सुलखे देवा आल्हा ❀ ताल्हन वनरस का सरदार।
आवत देख्यो जब माता को ❀ सबहिन कीन्ह्यो रामजुहार॥
द्यावलि बोली तब ताल्हन ते ❀ छोटे देवर लगो हमार।
माहिल आये हैं उरई ते ❀ तिनते सुनेसि छुटकवा म्वार॥
करिया मार्‌यो म्वरे बाप को ❀ सो यहु बदला लेवे जाय।
जालिम राजा है माड़ो का ❀ त्यहिते मोर प्रान घवरायँ॥
तुमका सौंपति हौं ऊदन को ❀ इनका माड़ो लावो दिखाय।
इतनी सुनि कै आल्हा बोले ❀ घर माँ वैठु लहुरवा भाय॥
धुआँ न देखे तुइ तोपन का ❀ ना रन नाँगि दीख तरवार।

अड़बड़ छत्री है माड़ौ का ❀ ऊदन मानै कहा हमार ॥
इतनी सुनिकै ऊदन बोले ❀ दादा कहाँ ज्ञान गा त्वार ।
टँगी खुपरिया म्वरे बाप की ❀ राजा जम्बै केर दुवार ॥
नालति ऐसी रजपूती का ❀ दादा जीबे को धिरकार ।
छत्री ह्वैकै समर सकानो ❀ ताको खायँ गिद्ध नहिं स्यार॥
की खोपरी खोपरिन मिलि जैहैं ❀ की पै मिली बाप का दाउँ ।
जो नहिं जावौं गढ़माड़ौ को ❀ ऊदन नाहिं कहावों नाउँ ॥
मलखे बोले तब देबा ते ❀ हमको सगुन देउ बतलाय ।
हारि हमारी माड़ौ ह्वैहै ❀ की हम जितब करिंगाराय ॥
लैकै पोथी समरसार की ❀ देबा सगुन विचारन लाग ।
जजुर्वेद ऋगुवेद अथर्वन ❀ जानै सामवेद बड़भाग ॥
सगुन हमारो यों बोलत है ❀ माड़ौ काम सिद्ध ह्वै जाय ।
मूड़ मुड़ावौ जोगी ह्वैकै ❀ माड़ौ चलौ सबै जन भाय ॥
सुनिकै बातैं ये देबा की ❀ मलखे थान लीन मँगवाय ।
रंग रँगायो ते गेरू के ❀ गुदरी तुरत लीन सिलवाय ॥
बाइसपर्त की सिली गुदरियाँ ❀ जिनमें छिपैं ढाल तरवार ।
आल्हा ऊदन मलखे देबा ❀ सय्यद बनरस का सरदार ॥
पाँचौ मिलिकै सम्मत कैकै ❀ जोगी भेष लिह्यनि फिरिधार ।
कड़ा सूबरन के हाथे मा ❀ कानन कुंडल करैं बहार ॥
हाथ सुमिरनी तुलसीवाली ❀ तनमा लीन्ह्यो भस्म रमाय ।
मलखे लीन्ह्यो इकतारा को ❀ आल्हा डमरू लियो उठाय ॥
लीन सरंगी मीरा ताल्हन ❀ देबा खँजरी रहा बजाय ।
बजै बँसुरिया बघऊदन की ❀ सोभा कही बूत ना जाय ॥
राग छतीसौ गावन लागे ❀ एक ते एक सूर सरदार ।

सुरति विहागर जयजयवन्ती ❀ ठुमरी टप्पा और मलार ॥
धुरपद गावैं औ तिल्लाना ❀ तोरैं ग़ज़ल पर्ज पर तान ।
झूमि झूमि कै सारँग गावैं ❀ करिकै रामचन्द्र को ध्यान ॥
मलखे बोले तब ऊदन ते ❀ तुम सुनि लेउ बनाफरराय ।
पहिले माता द्वारे चलिये ❀ तहँपर अलख जगावैं जाय ॥
पाछे चलिये गढ़माड़ौ को ❀ जामें काम सिद्ध ह्वै जाय ।
सम्मत कैकै पाँचौ जोगी ❀ ड्योढ़ी ऊपर पहुँचे आय ॥
रानी द्यावलि के द्वारे पर ❀ जोगिन अलख जगाई जाय ।
बाँदी दौरीं तब महलन ते ❀ द्वारे तुरत पहूँचीं आय ॥
देखि तमासा यहु द्वारे पर ❀ महलन अटीं तड़ाका धाय ।
हाल बतायो सब जोगिन का ❀ सोऊ गई द्वार पर आय ॥
रूप देखिकै सब जोगिन को ❀ द्यावलि खुसी भई अधिकाय ।
पूछन लागी फिरि जोगिन ते ❀ जोगी साँच देव बतलाय ॥
कौन देस ते तुम आयो है ❀ जावौ कौन देस महराज ।
जो कछु माँगौ मोरे महलन ❀ पुरवौं तौन तुम्हारो काज ॥
इतनी सुनिकै ऊदन बोले ❀ माता वचन करो मम कान ।
धोखे जोगी के भूलो ना ❀ अपनो पुत्र मोहिं तू जान ॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❀ द्यावलि बड़ी खुसी ह्वै जाय ।
हृदयलगायो सब लरिकनको ❀ आसिर्वाद दीन हर्पाय ॥
ऊदन बोले फिरि माता ते ❀ हमरे वचन करो परमान ।
ड्योढ़ी मँगिहौं रनिकुसलाकी ❀ ना पहिचनी करिंगा ज्वान ॥
धरि दे पंजा ग्वारि पीठी मा ❀ माड़ौं लेउँ बाप का दाँय ।
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❀ द्यावलि गोद लीन बैठाय ॥
भुजबल पूज्यो सब लरिकन के ❀ द्यावलि बार बार बलि जाय ।

जितिहौ राजा माड़ौवाला ❀ तुम्हरो बारु न बाँका जाय ॥
सुनिकै बातैं सब द्यावलि की ❀ चारो धस्यो चरन पर माथ ।
बड़ी अनन्दित द्यावलि ह्वैकै ❀ फेरा सबन पीठि पर हाथ ॥
बिदा माँगिकै सब माता सों ❀ मनिया देवन गे हर्षाय ।
बड़ा प्रतापी जो महोबे माँ ❀ अस्तुति पढ़न लाग सिरनाय ॥

सवैया

जय जय देव मनावत तोहिं औ ध्यावति हौंमैं गरीबनिवाजा ।
बदलापितु को ज्यहिभाँतिमिलै सोकरो बिभुदेव न होयअकाजा ॥
भक्त तुम्हार उदयसिंह ठाढ़ सो आयसु काह मिलय महराजा ।
यहि भाँति अनेकन बार कह्यो सिरनायरह्यो ललितेनिजकाजा ॥

अस्तुति कीन्ह्यो मलखाने ने ❀ देबा जोरि खड़ा दोउ हाथ ।
पूजा कीन्ह्यो भल आल्हा ने ❀ पाछे धरा चरन पर माथ ॥
मन्दिर बाहर सैयद ठाढ़ो ❀ सोऊ ध्याय रहा मनमाँझ ॥
चरि चरि गौवैं घर का डगरीं ❀ औ ह्वै गई तहाँ पर साँझ ।
उड़ि उड़ि पच्छी गये बसेरन ❀ नखतन कीन तहाँ उजियार ।
पूजा करिकै सब बिधिवत सों ❀ तहँ ते चलत भये सरदार ॥
जायकै पहुँचे निज महलन में ❀ नयनन गई नींद अतिछाय ।
मलखे देबा आल्हा ऊदन ❀ सोये रामचन्द्र को ध्याय ॥
सैयद सुमिस्यो बिसमिल्ला को ❀ नाहर बनरस का सरदार ।
बिकट निसा की ये बातैं हैं ❀ ज्वानो मानो कही हमार ।
जोगी जागैं सब आनँद सों ❀ चोरन बड़ी खुसी भै आय ।
माथ नवावौं श्रीगनेस को ❀ औ रट राम राम मन लाय ॥
दोउ पद बन्दौं पितु अपने के ❀ जिनमोहिंबिद्यादीन पढ़ाय ।
स्वर्ग में बैठे सो सुख भोगैं ❀ सेवक कहै नित्त जस गाय ॥

सब अभिलाषा पूरी ह्वैगै ❁ आसा रही राम के पाँय।
आगे फौजैं महोबे सजिहैं ❁ माड़ौ जाय बनाफरराय॥

सवैया

तव पद प्रेम बढ़ायों नितै अब जावों कहाँ मोहिं देहु बताई।
सूझत और न ठौर कहूँ तजिकै तव चरनन की सेवकाई॥
भाई औ बन्धु सहाई कोऊ नहिं देखि परो तुमहीं रघुराई।
ललिते अब आस निरास करै क्यों भूलिगयों प्रभु की प्रभुताई॥

सुमिरन

रामको ध्यावौं औ लछिमनको ❁ बेटा अंजनि को हनुमान।
बालि के अंगद तुमका ध्यावौं ❁ लंका किह्यो घोर घमसान॥
मानन राख्यो क्यहु निसचर को ❁ रोप्यो पाँव सभा में जाय।
मेघनाद सम कोटिन जोधा ❁ तुम्हरो पाँव न सके हिलाय॥
दानिन ध्यावौं बलि हरिचन्दै ❁ कुंतीपुत्र करन सरदार।
इन्द्रहु आये ज्यहि द्वारे में ❁ औ जस सुनिकै परम उदार॥
अब मैं ध्यावौं सुत गंगा को ❁ भीषम जौन सूर सरदार।
टारि प्रतिज्ञा दीन कृष्ण की ❁ करिके बड़ी भयंकर मार॥
कहौं सपूती सिरीकृष्ण की ❁ जिन गोवर्द्धन लीन उठाय।
सात दिना लौं मेघा बरसे ❁ झम २ हहरि २ हहराय॥
बड़ अँगुनियाँ पर गिरि धारे ❁ ठाढ़े रहे कृष्ण महराज।
लाज रखैया मोड़ स्वामी हैं ❁ हम पर कृपा करैं ब्रजराज॥
छूटि सुमिरनी गय देवन कै ❁ साका सुनो सूरमन क्यार।
ऊदन जैहैं गढ़ माड़ौ को ❁ ह्वैहैं फौज सबै तय्यार॥

कथाप्रसंग

मुर्गा बोलें सब गाँवन में ❁ पंछी जागि परे त्यहि काल।

सब्द चहचहा बोलन लागे ❀ जागा महोबे का नरपाल ॥
आल्हा ऊदन मलखे देबा ❀ जागा बनरस का सरदार।
सय्यद सुमिस्यो बिसमिल्ला को ❀ मलखे सुमिस्यो नन्दकुमार ॥
बिंध्यवासिनी आल्हा सुमिस्यो ❀ देबा रह्यो रामपद ध्याय।
देवी सारदा मइहरवाली ❀ सुमिरन लाग लहुरवा भाय॥
चरन सरन में हम तुम्हरी हैं ❀ दाया करौ सारदा माय।
जीति कै ऐहौं जो माड़ौ ते ❀ सोने छत्र चढ़ैहौं आय ॥
लज्जा राख्यो ओ महरानी ❀ मैं हौं सदा तुम्हारो दास।
नहीं भरोसा निज भुजबल का ❀ केवल एक तुम्हारी आस ॥
ध्याय सारदा को ऊदन फिरि ❀ दोऊ हाथ जोरि सिर नाय।
किह्यो दण्डवत महरानी की ❀ जो गाढ़े मा होयँ सहाय ॥
ऊदन बोल्यो फिरि आल्हा सों ❀ दादा मानौ कही हमार।
छन छन बीतै जो महोबे मा ❀ सो हम जानैं बरस हजार ॥
जल्दी चलिये राजभवन में ❀ जहँ पै बैठ रजा परिमाल।
बिदा माँगिकै महराजा सों ❀ दादा चलन चही ततकाल ॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ आल्हा लीन ढाल तरवार।
उठिकै ठाढ़े भे जल्दी सों ❀ सँग में बनरस का सरदार ॥
सभा में पहुँचे परिमालिक की ❀ पाँचौ ठाढ़ भये सिरनाय।
बोले आल्हा सों परिमालिक ❀ काहे ठाढ़ बनाफरराय ॥
सुनिकै बातैं परिमालिक की ❀ आल्हा कही हकीकत गाय।
भई लहुरवा यहु बिगरा है ❀ माड़ौ लेई बाप का दाँय ॥
सुनिकै बातैं ये आल्हा की ❀ राजा गयो सनाका खाय।
बोलि न आवा परिमालिक से ❀ मुँहका बिरा गयोकुम्हिलाय॥
बड़ी उदासी मुख पर छाई ❀ सिरसों गिरा छत्र महराय।

सोचनलाग्योपरिमालिकफिरि ❀ मन ना कछू ठीक ठहराय ॥
बहुतसोचिकैपरिमालिकफिरि ❀ बोल्यो सुनौ उदयसिंहराय ।
उमरि तुम्हारी थोरी ही है ❀ ताते धरा धीर ना जाय ॥
जालिम राजा माड़ौवाला ❀ ऊदन मानौ कही हमार ।
धुआँ न देख्यो तुम तोपन का ❀ नहिं रन नाँगि दीख तरवार ॥
पटा बनेठी बाना गदका ❀ सीखौ रोज बनाफरराय ।
जो जी चाहै सो तुम खावो ❀ कुस्ती लड़ो अखाड़े जाय ॥
पै नहिं जावौ तुम माड़ौ को ❀ बेटा मेरे उदयसिंहराय ।
सुनिकै बातैं परिमालिक की ❀ बोला तुरत बनाफरराय ॥
बारा बरस का छत्री लरिका ❀ रन माँ गहै नहीं तरवार ।
नालति त्यहिके फिरि जीवे का ❀ पैदा होवे का धिरकार ॥
बारह बरस के कृष्णचन्द्र रहैं ❀ मथुरा कंस पछार्यो जाय ।
कालजवन औ जरासन्ध फिरि ❀ तिन पर कीन चढ़ाई आय ॥
मोहरा मारा तिन दुष्टन का ❀ यह नित कहैं विप्र सब गाय ।
मोहिं भरोसा सिरीकृष्ण का ❀ तिन बल लेउँ बाप का दाँय ॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❀ तब मन जानि लीन परिमाल ।
कहा हमारो यहु मानी ना ❀ नाहर देसराज का लाल ॥
यह सोचिकै परिमालिक ने ❀ घोड़ा पाँच लीन मँगवाय ।
लीन कबुतरी को मलखाने ❀ बेंदुल लीन उदयसिंहराय ॥
घोड़ करिलिया आल्हा लीन्ह्यो ❀ सिरगा बनरस का सरदार ।
लीन मनोहर फिर घोड़े को ❀ यहु भीपम का राजकुमार ॥
जूझ का कङ्कन सवालाख का ❀ ऊदन हाथ दीन पहिराय ।
आसिष दीन्ह्यो परिमालिक ने ❀ माड़ौ लेउ बाप का दाँय ॥
जितनी फौजैं मेरे महोबे मा ❀ सबियाँ बेगि लेउ सजवाय ।

जावौ माड़ौ में पाँचौ मिलि ❀ मारौ जाय करिंगाराय ॥
सुनिकै बातैं परिमालिक की ❀ पाँचौ चलत भये सिरनाय ।
मल्हना रानी के महलन में ❀ तुरतै गये बनाफरराय ॥
हाथ जोरि औ बिनती कैकै ❀ बोला बचन उदयसिंहराय ।
जावैं माता हम माड़ौ को ❀ आयसु आपु देउ फरमाय ॥
मोहिं आज्ञा महराजा की ❀ माया आपु देउ बिसराय ।
दाया करिकै मेरे बालक पर ❀ माता हुकुम देउ फरमाय ॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❀ रानी गईं सनाका खाय ।
काह बिधाता की मरजी है ❀ ऐसो कहै लहुरवा भाय ॥
यहै सोचिकै मन अपने मा ❀ औ सुरजन को सीस नवाय ।
मल्हना बोली बघऊदल ते ❀ हमरे सुनो बनाफरराय ॥
बिटिया बनिया की आहिनना ❀ जो रन सुनिकै जायँ डेराय ।
जौनि आज्ञा महराजा की ❀ आयसु सोई बनाफरराय ॥

सवैया

जावहुपूत लड़ौ गढ़ माड़व आवहु जीति यहै हम चाहैं ।
सिंहिनि मातु नहीं मन सोच सदा यह वेद पुरानहु काहैं ॥
धर्म कि मारग जेई चलैं सुख तेई सदा जग में निरबाहैं ।
बाप तुम्हार हन्यो करिया ललिते त्यहि मारो तबै सुखलाहैं ॥

बातैं सुनिकै ये मल्हना की ❀ बोले तुरत बनाफरराय ।
आठ महीना की मुहलत दे ❀ नवयें चरन पूजिहौं आय ॥
वादा सुनिकै बघऊदन का ❀ मल्हना बिदा कीन हर्षाय ।
पाँचो चलिभे फिरि महलन ते ❀ औ लस्कर में पहुँचे आय ॥
तुरत नगड़ची को बुलवायो ❀ सय्यद बनरस का सरदार ।
बजे नगारा अब महोबे मा ❀ सबियाँ फौज होय तय्यार ॥

हुकुम पायकै सो ताल्हन को ❁ दौड़त चला नगरची जाय।
धस्यो नगाड़ा फिरिसँड़िया पर ❁ भादौं मेघ जैस हहराय॥
बोलि दरोगा घोड़े वाला ❁ चाँदी कड़ा दीन डरवाय।
हुकुम लगायो बघऊदन ने ❁ सबियाँ घोड़ सँवारो जाय॥
बूढ़ो दुर्बल रोगी घोड़ा ❁ एकौ नहीं किह्यो तय्यार।
कच्छी मच्छी ताजी तुरकी ❁ हरियल मुस्की घोड़ अपार॥
लक्खा गर्रा पँचकल्यानी ❁ सुर्खा सुरँगा रंग बिरङ्ग।
देर लगावो अब तनकौ ना ❁ घोड़ेन जाय कसो सब तङ्ग॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❁ दौरत चला दरोगा जाय।
जितने घोड़ा घोड़सारे माँ ❁ सबियाँ बेगि लीन कसवाय॥
हथी महावत हाथी लैकै ❁ तिनका करन लाग तैयार।
अंगद पंगद मकुना भौंरा ❁ छोटे पर्बत के अनुहार॥
मैनकुंज मलिया धौंरागिरि ❁ औ भौंरागिरि दीन बिठाय।
धरिकै सीढ़ी साँखो वाली ❁ हाथी सजैं महावत धाय॥
डारि बिछौना मखमल वाले ❁ ऊपर हौदा दीन धराय।
हीरा विराजैं अम्बारिन में ❁ सोभा बूत कही ना जाय॥
बारह कलसा सोनेवाले ❁ हौदा ऊपर करैं बहार।
यक यक हाथी के हौदा पर ❁ दुइ दुइ सूर भये असवार॥
बोलि दरोगा तोपनवाला ❁ रुपिया मुहरैं दई इनाम।
बड़ि बड़ि तोपैं जल्दी साजौ ❁ जासों होय हमारो काम॥
सुनिकै बातैं मलखाने की ❁ दौरत चला दरोगा जाय।
कुवाँ सुखावनि गर्भ गिरावनि ❁ चर्खी उपर दीन चढ़वाय॥
सूर्यलपकनि चन्दझपकनि ❁ बिजुली तड़पनि लीन मँगाय।
मेघगरज्जनि अष्टधातु की ❁ गोला एक मना को खाय॥

तोप संकटा औ लछिमिनियाँ ❀ भैरों तोप लीन मँगवाय।
पहिया ढुरकैं तिन तोपन के ❀ धसकतिचली रसातलजायँ॥
को गति वरनै तिन तोपन कै ❀ कायर देखि देखि सकुचायँ।
सूर सिपाही ईजति वाले ❀ मनमाँ बड़े खुसी ह्वैजायँ॥
ऊदन बोले तब लस्कर माँ ❀ हमरी सुनौ सिपाही भाय।
जिन्हैं पियारी हैं घर तिरिया ❀ दोहरी तलब लेयँ घर जायँ॥
जिन्हैं पियारा है रन लोहा ❀ जूझै चलैं हमारे साथ।
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ छत्री नाय राम को माथ॥
हाथ जोरिकै सब बोलत भे ❀ मानो कही बनाफरराय।
पाँउँ पछारी को डारैं ना ❀ चहुतनधजीधजी उड़िजाय॥
सुनिकै बातैं रजपूतन की ❀ बोला द्यावलि क्यार कुमार।
स्याबसिस्याबसि औ रजपूतौ ❀ कलिजुग रखिहौ धर्म हमार॥
झीलम बखतरपहिरिसिपाहिन ❀ हाथ माँ लीन ढाल तरवार।
रन की मौहरि बाजन लागी ❀ रन का होन लाग व्यवहार॥
ढाढ़ी करखा बोलन लागे ❀ बिप्रन कीन बेद उच्चार।
चढ़ा कबुतरी पर मलखाने ❀ ऊदन बेंदुल पर असवार॥
घोड़ करिलिया आल्हा बैठे ❀ सिरगा बनरस का सरदार।
बैठ मनोहरा की पीठी पर ❀ देबा भीषम केर कुमार॥
पहिल नगाड़ा में जिनबन्दी ❀ दुसरे फाँदि भये असवार।
तिसर नगाड़ा के बाजत खन ❀ लस्कर चलिभा साठि हजार॥
आगे आगे तोपैं चलिभइँ ❀ पाछे चले मस्त गजराज।
घंटा बाजैं गर हाथिन के ❀ मानो कोप कीन सुरराज॥
खर खर खर खर कै रथ दौरैं ❀ चह चह धुरी रहीं चिल्लाय।
चला रिसाला घोड़नवाला ❀ ताकी स्वभा कही ना जाय॥

सत्रह दिन की मैंजलि करिकै ❀ माड़ो धुरा दबायनि जाय।
जायकै पहुँचे बबुरीबनमाँ ❀ तहँ पर तम्बू दीन गड़ाय॥
तंग बछेड़न की छोरीगइँ ❀ हाथिन हौदा धरे उतार।
बैठक साजी गइ आल्हा कै ❀ लागीं छोटी बड़ी बजार॥
लै लै सीधा चले सिपाही ❀ भोजन करिबे को तैयार।
बनी रसोइयाँ रजपूतन की ❀ ज्वानन खूब कीन ज्यवनार॥
दिन दस बीते बबुरीबन माँ ❀ ग्यरहें बोले उदयसिंहराय।
कहिकीनिंदियाआल्हासोये ❀ औ कब लैहैं बाप का दायँ॥
तुरत बुलायो फिर ढ्यबवा का ❀ बोल्यो बचन बनाफरराय।
सगुन बिचारो अब जल्दी सों ❀ माड़ौ काम सिद्ध ह्वै जाय॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ देबा पोथी लीन उठाय।
सोचि समुझिकै देबा बोल्यो ❀ हमरी सुनो बनाफरराय॥
जल्दी चलिये अब माड़ौ को ❀ साइति बहुत गई नगिच्याय।
सुनिकै बातैं ये देबा की ❀ बोला बचन बनाफरराय॥
उठिये दादा सावधान हो ❀ नहिं सब जैहैं काम नसाय।
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ आल्हा उठे राम को ध्याय॥
पाँचौ मिलिकै तम्बू चलि भे ❀ जहँ पै रहैं द्यवलदे माय।
देखिबालकनकोद्यावलिफिरि ❀ सबको छाती लीन लगाय॥
बड़ी प्रीति करि मलखाने सों ❀ बोली जियौ बनाफरराय।
मस्तक सूँघ्यो सब लरिकन को ❀ पीठिमाँ दीन्ह्यो हाथ फिराय॥
द्यावलि बोली फिरिसय्यदसों ❀ राजा बनरस के सरदार।
जैसे लरिका ई हमरे हैं ❀ तैसे लरिका लगें तुम्हार॥
रच्छा कीन्ह्यो सब लरिकन कै ❀ द्यावर बड़ा भरोसा त्वार।
सुनिकै बातैं ये द्यावलि की ❀ बोला बनरस का सरदार॥

बार न बाँका इनका जाई ❀ ढ्यावलि मानौ कही हमार।
रच्छा करिहैं इनकी अल्ला ❀ करिहैं खुदा खैर यहि बार॥
पायँ लागिकै महतारी के ❀ जोगी बने उदयसिंहराय।
छोंड़ि आसरा जिंदगानीको ❀ माया मोह सबै बिसराय॥
पहिरिकैगुदरीआपनिआपनि ❀ चारौ भाय बनाफरराय।
पहिरिकै गुदरी बनरसवाला ❀ खँजरी आपनि लीन उठाय॥
पाँचौ चलिभे गढ़ माड़ौ को ❀ गावत पर्ज औ धुनि ख्याल।
भाइ लहुरवा थिरकति जावै ❀ बेटा देसराज को लाल॥
को गति बरनै तिन जोगिन कै ❀ हमरे बूत कही ना जाय।
बबुरीबन के बाहर ह्वैकै ❀ माड़ौ तरे पहूँचे आय॥
बजै सरंगी भल देबा कै ❀ सय्यद खँजरी रहा बजाय।
कर इकतारा मलखाने के ❀ आल्हा डमरू रहे घुमाय॥
धुनिमुनि डमरू कै खँजरीतहँ ❀ तामें मिलै तुरत ही आय।
डमरू धुनि में इकतारा मिलि ❀ औ सारँगि को रहा बुलाय॥
चारो मिलिकै इकमिल ह्वैकै ❀ पाँचौ सब्द पहूँचै जाय।
सब्द मिलावै ढ्यावलिवालो ❀ जो आल्हा को छोटा भाय॥
को गति बरनै बघऊदन कै ❀ गावै गीत छतीसौ राग।
बड़ी भक्तिमय कृष्णचंद्र में ❀ पूरो भयो तहाँ अनुराग॥
बाहैं दोऊ फरकन लागीं ❀ नैना अगिनि बरन होजायँ।
ध्यान सारदा को करि ऊदन ❀ सिगरे देवी देव मनाय।
आइं सारदा उर ऊदन के ❀ औ सब हाल दीन बतलाय।
बड़ी खुसाली भइ ऊदन के ❀ जाना मिला बाप का दाँय॥
तब तो थिरकै भल गलियन में ❀ फाटक तरे पहूँचा जाय।
अलख जगावैं सब्द सुनावैं ❀ जोगिन धूनी दीन रमाय॥

तब दरवानी बोलन लागे ❀ बाबा मतलब देउ बताय।
कहाँ ते आयो औ कहँ जैहौ ❀ आपन भेद देउ बतलाय॥
सुनिकै बातैं दरवानी की ❀ बोला तुरत बनाफरराय।
हमतो आवैं बङ्गाले ते ❀ आगे हिंगलाज को जायँ॥
करब जाँचना हम महलन में ❀ फाटक हमैं देउ खुलवाय।
सुनिकै बातैं ये जोगिन की ❀ बोला द्वारपाल हर्षाय॥
खबरि सुनावैं महराजा को ❀ तुमसे कहैं फेरि हम आय।
यह कहि हरकारा दौरत भा ❀ ड्योढ़ी तरे पहूँचा जाय॥
बेटा अनूपी का जम्बा नृप ❀ ताको खबरि सुनाई जाय।
आये जोगी हैं द्वारे पर ❀ सोभा कही बूत ना जाय॥

सवैया

देखै माँ पाँच लखइ माँ साँच सुनो नृप याँचि यही हम चाहैं।
पाँच के साथ मिले हम साँच पवैं बर याँचि अवैं अवगाहैं॥
देस बिदेस लखे नहिं पाँच जो रूप में साँच सचे सच आहैं।
साँच कभी ललिते नहिं याँच चहै दसपाँच मनै अरसाहैं॥

सुनिकै बातैं हरकारा की ❀ बोला माड़ौ का सरदार।
जल्दी लावौ तुम जोगिन को ❀ सोभा लखौ तासु की द्वार॥
सुनिकै बातैं महराजा की ❀ धावन चला तड़ाका धाय।
खबरि सुनाई सब जोगिन को ❀ लै दरबार पहूँचा जाय॥
बाइस पर्त की गुदरी लीन्हे ❀ ज्यहि माँ परी ढाल तरवार।
कुंडल सोहैं भल कानन में ❀ सिरपर टोपी करै बहार॥
सोहै सुमिरनी कर दहिने में ❀ आल्हा डमरू रहे बजाय।
बजै सरंगी भल देवा कै ❀ मय्यद खँजरी रहा उड़ाय॥
कर इकतारा मलखे लीन्हें ❀ ऊदन बंसी रहे बजाय।

को गति वरनै तहँ जोगिन कै ❀ सोभा कही बूत ना जाय ॥
लिहे बाँसुरी सबसों आगे ❀ सनमुख गयो उदयसिंहराय ।
बायें हाथ सों कीन बन्दगी ❀ मन में ध्याय सारदा माय ॥
देखिकै तुरतै राहुट ह्वैगा ❀ जम्बै माड़ौ का सरदार ।
सनमुख ठाढ़े त्यहि जोगी को ❀ गरुई हाँक दीन ललकार ॥
कौन गँवारे के चेला हौ ❀ जोगिउ किह्यो सत्रुकाकाम ।
जौन हाथ सों जपैं सुमिरनी ❀ जौने लेयँ राम को नाम ॥
करैं बन्दगी हम त्यहि सों ना ❀ यह फिरि कह्यो बनाफरराय ।
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ राजा मनै गयो सरमाय ॥
मात अनूपी नृप जम्बा की ❀ तहँ पर गई रहै तब आय ।
सोभालखिलखि सो जोगिनकै ❀ मन माँ बड़ी खुसी ह्वै जाय ॥
सो फिर बोली यह जोगिनसों ❀ तुम्हरो जोग सिद्ध ह्वै जाय ।
चलिकै नाचौ म्वरे महलन में ❀ जोगेसुरै कृष्ण को ध्याय ॥
सुनिकै बातैं ये रानी की ❀ महलन तुरत पहूँचे जाय ।
मलखे लीन्हे इकतारा को ❀ सय्यद खँजरी रहे बजाय ॥
बजै सरंगी भल देबा कै ❀ आल्हा डमरू रहे घुमाय ।
बजै बाँसुरी बघऊदन कै ❀ थिरकन लाग लहुरवा भाय ॥
टप्पा ठुमरी भजन रेखता ❀ धुरपद औ बिहाग कल्यान ।
जयजयवन्ती औ तिल्लाना ❀ तोरैं गजल पर्ज पर तान ॥
भाव बतावै सब अँगुरिन सों ❀ यहु द्यावलि को राजकुमार ।
ता ता थे ई ता ता थे ई ❀ कबहूँ निकरै शब्द अपार ॥
रानी कुसला की बाँदी तहँ ❀ देखै सबै काम बिसराय ।
एक पहरते दुइ लग बीते ❀ तीसर पहरुगयो नगिच्याय ॥
बाँदी गवनी तब महलन को ❀ देखत रानी उठी रिसाय ।

बड़ी देर भइ हत्यारी तोहिं ❀ का तोरिअकिल गई हिराय॥
क्यहिके महलन में अटकी रहि ❀ साँची साँचु देइ बतलाय।
सुनिकै बातैं महरानी की ❀ बाँदी हाथ जोरि सिर नाय॥
कही हकीकति सब जोगिनकै ❀ सोभा बार बार गइ गाय।
की तो आये इन्द्रलोक ते ❀ की वै गये स्वर्ग ते आय॥
सोभा बरनै को जोगिन कै ❀ रानी कही बूत ना जाय।
सुनिकै बातैं ये बाँदी की ❀ तुरतै हुकुम दीन फरमाय॥
जल्दी लावो तुम जोगिन को ❀ दर्सन मोहिं देउ करवाय।
मोरि लालसा यह डोलति है ❀ जोगी जायँ महल में आय॥
सुनिकै बातैं ये रानी की ❀ बाँदी चली हवा के साथ।
मात अनूपी के महलन माँ ❀ जोगिन जाय नवायो माथ॥
कही हकीकति सब रानी की ❀ बाँदी बार बार सिर नाय।
मात अनूपी तब बोलत भै ❀ जोगी चरनन सीस नवाय॥
घर घर माँगे कछु बनिहै ना ❀ कुसलामहल चलो तुम जाउ।
बहु धन पैहौ त्यहि महलन में ❀ बैठे चहौ जनम भरि खाउ॥
जैसी औषधि रोगी चाहैं ❀ बैदन तैसी दई बताय।
बड़ी खुसाली भै ऊदन के ❀ जनु मिलि गयो बापका दायँ॥
चले पछाड़ी सब जोगी फिरि ❀ बाँदी चली अगाड़ी जाय।
को गति बरनै तिन जोगिन कै ❀ जनु गे देवलोक ते आय॥

सवैया

देखत जोगिन रूप अनूप चले नर नारि सबै पुर केरे।
आये मनो मघवापुरते यह बात करैं वै सबै मिलिकेरे॥
हेरे तेई नहिं फेरे फिरैं बड़भाग कही जे रहे कोउ नेरे।
जोगिन जोगिन भेष लखैं ललिते ते कहैं बड़भागहैं मेरे॥

रय्यत मोही गढ़ माड़ौ की ❀ काहू धरा धीर ना जाय।
पहिलीड्यौढ़ी जोगी पहुँचे ❀ बाँदी बोली सीस नवाय॥
त्रिलमि जाउ कुछतुम ड्यौढ़ीपर ❀ भीतर खबरि सुनावौं जाय।
सुनिकै बातैं ये बाँदी की ❀ जोगी ठाढ़ भये हरि ध्याय॥
घोड़ पपीहा तहँ बाँधो थो ❀ हाथी खड़ा महोबे क्यार।
देखिकै दोऊ रोवनलागे ❀ आल्हा छाँड़ि दीन डिड़कार॥
देखि तमासा ऊदन बोले ❀ आल्है बार बार सिर नाय।
काहे रोये तुम ददुवा हौ ❀ साँचो हाल देउ बतलाय॥
सुनिकै आल्हा बोलन लागे ❀ हमरे सुनौ लहुरवा भाय।
हाथी घोड़ा दोउ महोबे के ❀ इनका देखि मोह गा आय॥
सुनिकै बातैं ऊदन बोले ❀ दादा हुकुम देउ फरमाय।
हाथी घोड़ा दोउ लैजावैं ❀ औ फौजन में पहुँचैं जाय॥
सुनिकै बातैं मलखे बोले ❀ ऊदन अकिल गई हेराय।
चोरीचोरा ते लै जैहौ ❀ कलिजुग चोर कहैहौ जाय॥
दाग लगैहौ रजपूती माँ ❀ औ सब छत्रीधर्म नसाय।
वा दिन लीन्ह्यो हाथी घोड़ा ❀ जा दिन लिह्यो बाप कादायँ॥
तब लौं बाँदी दौरत आई ❀ जोगिन माथ नवायो आय।
आगे बाँदी पाछे जोगी ❀ दुसरे फाटक पहुँचे जाय॥
तहँवाँ बिरवा रह बरगदका ❀ छाया घनी रही तहँ छाय।
जोगी बैठे त्यहि छाया में ❀ मनमें श्रीगनेस को ध्याय॥
देसराज औ बच्छराज ये ❀ दोऊ भाय बनाफरराय।
पत्थर कोल्हुन में पिरवायो ❀ जम्बै पूत करिङ्गाराय॥
खुपड़ी टाँगी त्यहि बरगद में ❀ औ रन बोलि बोलि रहिजायँ।
लड़िका ह्वैगे बैरागी हैं ❀ को धौं लेय हमारो दायँ॥

पूत सपूते जो घर होते ❀ हमरी गया देत करवाय।
सुनि सुनि बातैं ये रन केरी ❀ ऊदन गये सनाका खाय॥
आल्हा मलखे रोवन लागे ❀ सय्यद नैन नीर गा छाय।
बाँदी बोली तब जोगिन ते ❀ जोगी कहा गयो बौराय॥
कौने राजा के लरिका हौ ❀ साँचो हाल देउ बतलाय।
देखि खुपड़ियनको रोवत कस ❀ हमरे धरा धीर ना जाय॥
सुनिकै बातैं ये बाँदी की ❀ मलखे बोले बचन बनाय।
छोटो जोगी यहु बालक है ❀ जो रन सुनि कै गयो डेराय॥
तासों रोवैं हम जोगी सब ❀ बाँदी काह गई बौराय।
भूत चुरैलैं हैं कोल्हुन में ❀ आभा बोलि बोलि रहि जायँ॥
छोटो जोगी यहु लरिका है ❀ हियना चौंकिपरो सो आय।
तासों रोवैं हम सब जोगी ❀ बाँदी सत्य दीन बतलाय॥
सुनिकै बातैं ये जोगिन की ❀ बाँदी गई हृदय हर्षाय।
रानी कुसला की ड्योढ़ी पर ❀ जोगी सबै पहूँचे जाय॥
बाँदी बोली फिरि जोगिन ते ❀ भीतर चलो सबै जन भाय।
इतनी सुनिकै मलखे बोले ❀ बाँदी काह गई बौराय॥
हम ना जैहैं रङ्गमहल को ❀ जो सुनि लेय बघेलाराय।
गये जनाने में जोगी हैं ❀ हमैं डारिहै तौ मरवाय॥
सुनिकै बातें ये जोगिन की ❀ बाँदी गिरी चरन पर धाय।
तुम्हैं बुलायो महरानी है ❀ तब हम फेरि जुहारा आय॥
साधु सन्त को सब कोउ मानैं ❀ छत्री बाम्हन हैं अधिकाय।
यह नहिं लङ्का है रावन की ❀ ना हिय बसैं निसाचर भाय॥
निर्भय चलिये तुम भीतर को ❀ जोगी भरम देउ बिसराय।
सुनिकै बातें ये बाँदी की ❀ जोगी सबै चले हरषाय॥

सीढ़िन सीढ़िन सों ऊपर गे ❀ पहुँचे रंग महल में जाय।
खिरकी लागीं मलयागिरि की ❀ सोभा कही बूत ना जाय॥
बैठि कबूतर हैं छज्जा पर ❀ कहुँ कहुँ नाचि रहे हैं मोर।
सुवा पहाड़ी कहुँ पिंजरन माँ ❀ मैना बोलि रहे अति जोर॥
राजा जम्बा की महरानी ❀ खिरकिन परदा दीन डराय।
पतरे कपड़ा के परदा हैं ❀ जोगी तासों परैं दिखाय॥
चढ़ाउतारू भुजदण्डैं हैं ❀ जिनका सिंहबरन करिहाँय।
छाती चौड़ी है जोगिन कै ❀ नैनन रही लालरी छाय॥
रूप देखिकै तिन जोगिन का ❀ रानी गई सनाका खाय।
डाटन लागी तब बाँदी को ❀ बाँदी काह गई बौराय॥
ऐसे जोगी हम देखे ना ❀ ये कोउ राजन केर कुमार।
तुइ छल कीन्हे म्वरे साथ माँ ❀ बाँदी पेट फरैहौं त्वार॥
जोगी बोले तब रानी ते ❀ रानी भर्म देउ सब छाँड़।
बाप हमारे बारे मरिगे ❀ माता बारी बैस मैं राँड़॥
देस हमारे सूखा परिगा ❀ माता बेंचा जोगिन हाथ।
रूप विधाता हमका दीन्ह्यो ❀ पै हम भजैं सदा रघुनाथ॥
इतनी सुनिकै रानी बोली ❀ ओ जोगिन के राजकुमार।
कहँ ते आयो औ कहँ जैहौ ❀ कहँ है देस रावरे क्यार॥
कड़ा सुबरन के क्यहि दीन्हे ❀ गुदरी कौन दीन बनवाय।
सुनिकै बातैं ये रानी की ❀ मलखे बोले बचन बनाय॥
देस हमारो बंगालो है ❀ औ हम हिंगलाज को जायँ।
राजा जयचँद कनउजवाला ❀ ड्यौढ़ी मँगी तासु की माय॥
मोहित ह्वैगा सो जोगिन पर ❀ गुदरी तुरत दीन बनवाय।
कड़ा सुबरन के अपने कर ❀ जोगिन सोइ दीन पहिराय॥

महल तुम्हारे जो कछु पावैं ❀ लैकै हरद्वार को जायँ।
संका लावो कछु मन में ना ❀ साँचे हाल दीन बतलाय॥
सुनिकै बातैं ये जोगिन की ❀ रानी कुर्सी लीन मँगाय।
बैठे कुर्सिन माँ जोगी तब ❀ मन में श्रीगनेस पद ध्याय॥
रानी बोली तब जोगिन ते ❀ हमको भजन सुनावौ गाय।
सुनिकै बातैं ये रानी की ❀ सय्यद खँभरी लीन उठाय॥
लै इकतारा मलखे ठाढ़े ❀ आल्हा डमरू रहे घुमाय।
बजै सरंगी भल देबा कै ❀ भुकिभुकिनचैंउदयसिंहराय॥
ता ता थेई ता ता थे ई ❀ मलखे हाथन रहे बताय।
भाव बतावैं कमर भुकावैं ❀ थिरकति फिरै लहुरवाभाय॥
कबौं बँसुरिया धरि ओठन माँ ❀ ऊदन बहुत निकारै राग।
देखि तमासा सब जोगिन का ❀ रानी बड़ा कीन अनुराग॥
मोती मँगायो फिरि थारभरि ❀ औ जोगिन का दीन दिवाय।
भरिकै मूठी तिन मोतिन का ❀ सूँघन लाग लहुरवा भाय॥
कौन रूख माँ ई उपजत हैं ❀ रानी हमैं देउ बतलाय।
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❀ रानी मनै रही पछिताय॥
कौन तपस्या खंडित ह्वैगै ❀ बारे डास्यो मूड़ मुड़ाय।
मोती समुंदर में पैदा हैं ❀ केहू रूख न लागैं भाय॥
सुनिकै बातैं ये रानी की ❀ ऊदन मोती दीन फैलाय।
हीरा मोती जो हम बाँधैं ❀ मारग लेवैं चोर छिनाय॥
रानी मल्हना महोबेवाली ❀ त्यहि दै डस्यो नौलखाहार।
तैसि निसानी जो ह्याँ पावैं ❀ जोगी खुसी होयँ तव द्वार॥
सुनिकै बातैं ये जोगिन की ❀ रानी कहा वचन हर्षाय।
करो तमासा तुम महलन में ❀ तुमको हार देउँ मँगवाय॥

बेटी बिजैसिनि है अंटा पर ❀ रूपा बाँदी लाउ बुलाय।
देखि तमासा ले जोगिन का ❀ जामें जलम सुफल ह्वै जाय॥
सुनिकै बातैं महरानी की ❀ बाँदी चढ़ी अटा पर धाय।
सोवत जगायो सतखंडा पर ❀ बाँदी बार बार सिरनाय॥
तुमहिं बुलायो कुसला रानी ❀ जल्दी चलौ हमारे साथ।
सुनिकै बातैं ये बाँदी की ❀ नायो रामचन्द्र को माथ॥
लैकै डिब्बा पाननवाला ❀ कइ इक बीरा लीन लगाय।
दुइ इक खाये मुख अपने माँ ❀ दुइ इक लीन्हे हाथ चपाय॥
चलिभै बेटी फिरि अंटा ते ❀ सीढ़िन उतरि तरे गै आय।
रानी कुसला के महलन में ❀ बेटी तुरत पहूँची जाय॥
बीरा दीन्ह्यो बैरागिन को ❀ सो ऊदन ने डरा चबाय।
रूप देखिकै बघऊदन का ❀ मूर्च्छित गिरी धरनि भहराय॥
नैन बान ऊदन के लागे ❀ सोऊ गिरे मूरछा खाय।
देखि तमासा रानी कुसला ❀ तुरतै गई सनाका खाय॥
जोगी नाहीं तुम भोगी हौ ❀ औ छल किह्यो यहाँ पर आय।
जल्दी बाँदी जा ड्योढ़ी पर ❀ औ करिया का लाउ बुलाय॥
बाँधिकै मुसकैं सबजोगिनकी ❀ औ कोल्हू माँ डारो पिराय।
देखिबिजैसिनिजोगीगिरिगा ❀ यहिका पेट डरौं चिरवाय॥
भुसा भरावों यहि पेटे माँ ❀ अपने महल देउँ टँगवाय।
इतना सुनिकै मलखाने फिरि ❀ बोले तुरतै बचन बनाय॥
छोटो जोगी जो मरिजैहै ❀ महलन आगि देउँ लगवाय।
डारि तमाखू बीरा लाई ❀ सो जोगी का दिह्यो खवाय॥
पीक लीलिगा बारो जोगी ❀ मुर्च्छा खाय गिरा भहराय।
लै जल छिनकन मलखे लागे ❀ तब जगि परा लहुरवा भाय॥

बेटी बिजैसिनि उठि ठाढ़ी भै ❀ रानी गोद बैठिगै जाय।
पूछन लागी तब बेटी ते ❀ काहे बदन गयो कुँभिलाय॥
रूप देखिकै इन जोगिन का ❀ उर में गई दया फिरि आय।
मात पिता बारे ते मरिगे ❀ तब इन डारे मूड़ मुड़ाय॥
ठाढ़े सोचौं मैं मन में यह ❀ तबलौं पाँव रपटिगा माय।
डारि तमाखू बीरा लायूँ ❀ ताते जोगी गिरा भहराय॥
पाप न लावो कछु मन अपने ❀ माता सत्य दीन बतलाय।
सुनिकै बातैं ये बिटिया की ❀ मनमा सत्य समझिगै माय॥
रानी बोली फिरि जोगिन ते ❀ अब तुम करौ तमासा भाय।
सुनिकै बातैं ये रानी की ❀ नाचन लाग लहुरवा भाय॥
गावन लागे मलखाने तब ❀ धुरपद सांगीत औ ख्याल।
धनिधनि माता इनकी कहिये ❀ ऐसा कहन लगीं सब बाल॥
एकते दुसरी बोलन लागी ❀ हमरी सुनौ सखी तुम बात।
बालम हमरे जो ये होवैं ❀ ऐसो बिधी बनावै नात॥
बैठि बिजनिया इनके ढारैं ❀ मुख में सखी खवावैं पान।
सुफल जलम आपन हम मानैं ❀ मानौ सखी बचन परमान॥
तीसरि बोली फिरि आली सों ❀ आली करौ बचन मम कान।
रूप उजागर सब गुनआगर ❀ जोगी सकल गुननकी खान॥
हमहूँ मोहिन इन जोगिन पर ❀ मानौ सखी बचन तुम साँच।
धड़कै आली म्वरि छाती अब ❀ औजरि रहिन बिरह की आँच॥
चौथी बोली का तुम बोलौ ❀ हमरे लगे करेजे बान।
तीखे नैना हैं जोगिन के ❀ मानौ अबै उतारे सान॥
पँचई बोली का तुम बोलौ ❀ सखियो सबै गइउ बौराय।
कबहुँक पावैं हम पलँगा पर ❀ तौ बैकुण्ठ धाम को जायँ॥

छठईं बोलीफिरि सखियनसों ❀ हम निज जियकी देयँ बताय।
हम सुखपावैं इन जोगिन सँग ❀ चाहौ भीख माँगि कै खायँ॥
सतईं बोली का तुम बोलौ ❀ जो यह लिखा होत कर्त्तार।
हमहूँ होइत क्यहुँ जोगी घर ❀ तब ये होते मोर भतार॥
अठईं बोली का तुम बोलौ ❀ याही लिखा रहै कर्त्तार।
नैनन देखै मन सों मोहै ❀ ताको जानो पूर भतार॥
नवईं बोली का तुम बोलौ ❀ तुम्हरे खाउँ पूत औ भाय।
तुम्हरे सबके ई पति होवैं ❀ हमका कौन दई लै जाय॥
दसईं बोली तब रिस करिकै ❀ राँड़ौ अब ना करौ चवाउ।
देखो तमासा तुम जोगिन का ❀ बातन काह घरै लै जाउ॥
सुनिकै बातै त्यहि दसईं की ❀ सखियाँ सबै गईं सरमाय।
जितनी नारी गढ़माड़ौ की ❀ सो जोगिन पर गईं लुभाय॥
दिह्योरुपैया केहु जोगिन का ❀ केहू दीन मोतिन का हार।
रानी कुसला बैरागिन को ❀ तुरतै दीन नौलखा हार॥
चलिभे जोगी तब महलन ते ❀ फाटक उपर पहूँचे जाय।
बेटी बिजैसिनि तहँ जल्दी सों ❀ ऊदन पास पहूँची आय॥
पकरिकै बाहैं दोउ ऊदन की ❀ औ यह बोली बचन सुनाय।
मैं पहिचानति त्वहिं ऊदन है ❀ नाहक डार्‌यो मूड़ मुड़ाय॥
जोगीके बालक तुम आहिवना ❀ आहिव देसराज के लाल।
जल्दी चलिदे मोरे महलन में ❀ नाहीं तोर पहूँचा काल॥
सुनी बिजैसिनि की ई बातैं ❀ बोला तुरत लहुरवा भाय।
कहँना दीख्यो तुम ऊदन का ❀ साँचे हाल देउ बतलाय॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ बोली तुरत बिजैसिनि बैन।
अभई लड़िका जो माहिल का ❀ देखा तासु ब्याह में नैन॥

हमहूँ न्योते गइँ सिरउँज माँ ❀ तहँ तुम गये बराती भाय।
पाग बैंजनी सिर पर बाँधे ❀ ठाढ़े रहौ बनाफरराय॥
धक्का मारयो मोरि छाती मा ❀ चोली मसकि गई त्यहिठाँय।
तबहम चितईं दिसि तुम्हरी का ❀ औ यह मनै लीन ठहराय॥
ब्याही जैबे की ऊदन सँग ❀ की मरिजाब जहर को खाय।
इतना सुनिकै ऊदन चलिभे ❀ अंटा उपर पहूँचे जाय॥
सेज बिछायो सो जल्दी सों ❀ तब यह कह्यो बनाफरराय।
क्वाँरी कन्या की सेजिया पर ❀ ऊदन कबौं धरै ना पाँय॥
मूड़ मुड़ावा तुम्हरे कारन ❀ घर घर अलख जगावा आय।
पहिले अरुझे को सुरझावौ ❀ पाछे सेज बिछावौ जाय॥
हाल बतावौ सब माड़व का ❀ जासों लेयँ बाप का दायँ।
चोरी चोरा लै जैबे ना ❀ साँचे हाल दीन बतलाय॥
तेहा राखी रजपूती का ❀ गुदरी अबौं परी तरवार।
हमका चाहौ हाल बतावौ ❀ नाहीं तजौ प्रीति का तार॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ बोली तुरत बिजैसिनि नारि।
किरिया करि ल्यो श्रीगंगा की ❀ याही लगे मोरि है आरि॥
सुनिकै बातैं ये कन्या की ❀ तुरतै खैंचि लीन तरवार।
बिना बियाहे तुमका छाँड़ौं ❀ तो मोहिं लागै पाप अपार॥
सुनिकै बातैं उदयसिंह की ❀ कन्या कह्यो बचन सिरनाय।
किला कठिन है लोहागढ़ का ❀ तहँ ना जयो बनाफरराय॥
पनिहासांते लौं खंदक हैं ❀ जम्बा करै तहाँ को राज।
गर्भ-गिरावनि तहँ तोपैं हैं ❀ तहँ नहिं सरै तुम्हारो काज॥
किलाकठिनहै फिरि झाँसी का ❀ तहँ पर रहै करिंगा भाय।
किला तीसरे सूरज भैया ❀ तहाँ न जयो बनाफरराय॥

तोप लगावो बबुरी बन माँ ❀ तौ मिलिजाय बाप का दायँ।
बात हमारी पै भूल्यो ना ❀ साँची किह्यो उदयसिंह राय॥
बिना बियाहे तुमका जावैं ❀ हमका लौटि भगौती खायँ।
आल्हा देखैं ह्याँ गलियन माँ ❀ कहूँ न दीख लहुरवा भाय॥
ठाढ़े सोचन आल्हा लागे ❀ मन माँ बार बार पछिताय।
मुखदिखलैहौं कस मल्हना को ❀ राजै काह सुनैहौं जाय॥
द्यावलि माता जो सुनि पैहैं ❀ तौ मरि जायँ पुत्र के घाय।
सिढ़ियन सिढ़ियन ते नीचे ह्वै ❀ ऊदन तुरत पहूँचे आय॥
देखिकै ऊदन को आल्हा ने ❀ तुरतै छाती लीन लगाय।
देर लगाई कहँ भाई तुम ❀ सो मोहिं हाल देउ बतलाय॥
सुनिकै बातैं ये आल्हा की ❀ बोले उदयसिंह बलवान।
बेटी बिजैसिनि रनि कुसला की ❀ सो वह हमैं गई पहिचान॥
ब्याह हमारे सँगमा कीन्ह्यो ❀ हमते कसम लीन करवाय।
हाल बतायो सब माड़ौ का ❀ दादा साँच दीन बतलाय॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❀ आल्हा बोले बचन रिसाय।
ब्याह न करिहैं हम बैरी घर ❀ मानो कही उदयसिंहराय॥
जब सुधि करिहै निजघर केरी ❀ सोवत हनै तोरि तरवारि।
मरे केकई सों दसरथ हैं ❀ अजहूँ करैं दुर्दसा नारि॥
इतनी सुनिकै मलखे बोले ❀ दादा मानौ कही हमार।
पहिले बदला लेउ बाप को ❀ पाछे फेरि किह्यो तकरार॥
इतनी सुनिकै पाँचौ चलि भे ❀ लोहागढ़ै पहूँचे आय।
देखिकै फाटक लोहागढ़ को ❀ आल्हा सोचि सोचि रहिजायँ॥
कठिन मवासी गढ़ माड़ौ है ❀ कैसे मिलै बाप का दाँय।
बातैं सुनिकै ये आल्हा की ❀ बोले तुरत बनाफरराय॥

कृपा जो होई नारायन की ❀ तौ मिलि जाय बाप का दाँय।
कायर सोचैं इन बातन का ❀ दादा तुम्हरी स्वचै बलाय॥
राजा जम्बै की ड्योढ़ी माँ ❀ जोगी सबै पहूँचे जाय।
सलखे बोले दरवानी सों ❀ हमरी खबरि जनावो जाय॥
जोगी आये बंगाले ते ❀ आगे हरद्वार को जाँय।
सुनिकै बातैं ये जोगिन की ❀ बोला द्वारपाल मुसुकाय॥
जैसे पहिले ह्वै आये ते ❀ तैसे फेरि पहूँचो जाय।
राजा जम्बै की ड्योढ़ी माँ ❀ जोगिन अलख जगायो आय॥
लागि कचहरी है जम्बै की ❀ भारी लाग राजदरबार।
बैठक बैठे सब छत्री हैं ❀ एक ते एक सूरसरदार॥
करिया बैठो तहँ दहिने है ❀ टिहुनन धरे नाँगि तरवार।
बायें हाथे किह्यो बन्दगी ❀ यहु द्यावलि का राजकुमार॥
देखिकै करिया राहुट ह्वैगा ❀ नैना अग्नि बरन ह्वै जाँय।
करिया देख्यो दिसि जोगिन के ❀ कारे नाग ऐस मन्नाय॥
बयें हाथ ते किह्यो बन्दगी ❀ जोगी काह गयो बौराय।
सम्मुख हमरे अब आवो ना ❀ नाहीं सबै देउँ पिटवाय॥
सुनिकै बातैं ये करिया की ❀ बोला उदयसिंह ज्यहि नाम।
दहिने कर सों जपैं सुमिरनी ❀ दहिने लेयँ राम का नाम॥
तौने कर सों करैं बन्दगी ❀ हमरो जोग भंग ह्वै जाय।
सुनिकै बातैं ये जोगी की ❀ बोला तुरत करिंगा राय॥
सच्चे गुरु के तुम चेला हौ ❀ जोगी सच्चा ज्ञान तुम्हार।
तान सुनावो म्वरे महलन में ❀ जोगी मानो कही हमार॥
लीन सरंगी को देवा तब ❀ सय्यद खँझरी लीन उठाय।
लै इकतारा मलखे ठाढ़े ❀ आल्हा डमरू रहे घुमाय॥

जैसे जङ्गल नचै मुरैला ❀ तैसे नचै लहुरवा भाय।
जैसि रागिनी मलखे गावैं ❀ देवा तैसे देय बजाय॥
बजै बँसुरिया भल ऊदन की ❀ थेई थेई रहे मचाय।
ताता थेई मुख सों बोलैं ❀ अँगुरिन भाव बतावतजायँ॥

सवैया

मोहि गयो माड़व सिरताज सो राज के काज सबै बिसराये।
तान के बान नथा करिया अरि ऊपर चित्त को सोउ लुभाये॥
होनी चहै सो होन भलीविधि ज्ञान औ बुद्धि न होत सहाये।
तान के बान लगैं मलखान के ज्वान गिरैं ललिते मुरझाये॥

रय्यति मोही सब माड़ो की ❀ मोहे बाल बृद्ध औ ज्वान।
राजा बोला तब माड़व का ❀ योगिउ वचन करो परमान॥
लाखा पातुरि मोरे महलन में ❀ ताकी तान सुनी हम भाय।
की हम मोहे त्वरि तानन में ❀ योगी सत्य दीन बतलाय॥
सुनिकै बातैं महराजा की ❀ तुरतै ब्वला लहुरवा भाय।
तुम बुलवावो त्यहि पातुरि को ❀ हमको तान सुनावै आय॥
हुकुम लगायो महराजा ने ❀ लाखा तुरत पहूँची आय।
तबला गमके अजबासिनि के ❀ औ ध्वनि गई मँजीरन छाय॥
लिह्यो सरंगी को भँडुवा तब ❀ लाखा नचन लागि त्यहिठाँय।
को गति बरनै तब लाखा कै ❀ हमरे बूत कही ना जाय॥
जब दिसि आई वह योगिनके ❀ तब फिरि बोला लहुरवाभाय।
हुकुम जो पावैं हम दादा को ❀ याको हार देयँ पहिराय॥
आल्हा बोले तब ऊदन ते ❀ भैया मानो कही हमार।
पहिरे देखी जम्बै राजा ❀ लाखा गले नौलखाहार॥
मूड़ कटाई सब योगिन के ❀ भैया काह गयो बौराय।

कही न मानी सो आल्हा की ❀ ताको हार दीन पहिराय ॥
हरवा देखत लाखा पातुरि ❀ तुरतै हाल गई सब जानि ।
ई तो लड़िका हैं द्यावलि के ❀ अपनो बदन छिपायो आनि॥
किह्यो इशारा अस योगिन को ❀ ज्यहि माँ चले बेगि ही जायँ।
जो कहुँ जानी जम्बै राजा ❀ तुरतै डारी इन्हैं मराय ॥
जानि इशारा को योगी गे ❀ तुरतै ब्वला लहुरवा भाय।
बारह बरसैं तुमका ह्वइगैं ❀ अब हम मोहबा देब दिखाय॥
बिदा माँगिकै महराजा सों ❀ योगी चले तुरत ही धाय।
योगी पहुँचे पचपेड़न तर ❀ लाखा लीन्ह्यो हार छिपाय॥
उड़ा डुपट्टा जब बायू सों ❀ चमकन लाग नौलखाहार।
चमकत दीख्यो त्यहि हरवा को ❀ राजा माड़ो का सरदार ॥
जम्बै बोलै तब लाखा ते ❀ साँचे हाल देव बतलाय।
हरवा दीन्ह्यो को तुमको है ❀ हमरे धीर धरा ना जाय ॥
हाथ जोरिकै लाखा बोली ❀ यह तकसीर माफ़ ह्वै जाय।
राह चलन्ते योगी आये ❀ हमको हार गये पहिराय ॥
इतना सुनिकै राजा जम्बा ❀ तुरतै गयो सनाका खाय।
करिया बेटा ते बोलत भा ❀ अब तुम रंगमहल को जाय॥
हार नौलखा मोहबेवाला ❀ सो मोहिं बेगि दिखावै आय।
इतना सुनिकै करिया चलिभा ❀ पहुँचा रंगमहल में जाय ॥
आवत देख्यो जब करिया को ❀ कुसला मिली तुरतही आय।
कौन काम को तुम आये हौ ❀ करिया हमैं देउ बतलाय॥
हार मँगाय देउ मोहबे का ❀ राजै तुरत दिखावैं जाय।
लरी टूटि गय त्यहि हरवा कै ❀ सो पटवा घर दीन पठाय ॥
टूटो टाटो जस कछु होवै ❀ तस तुम हमैं देव मँगवाय।

थर थर कांपी महरानी तब ❀ बोली कछू कही ना जाय ॥
योगी आये म्वरे महलन में ❀ तिनका हार दीन पहिराय।
सुनिकै बातैं ये माता की ❀ राजै खबरि जनायो आय ॥
धोखे योगिन के भूल्यो ना ❀ वै राजन के राजकुमार।
घर घर लूटा तिन माड़ो भल ❀ वै लै गये नौलखाहार ॥
सुनिकै बातैं ये करिया की ❀ जम्बै हुकुम दीन फरमाय।
पकरि लै आवो तुम योगिनको ❀ हमरी नजर गुजारो आय ॥
उनहीं पाँयन करिया चलिभो ❀ अपनी लिहे ढाल तलवार।
जायकै पहुँचा पचपेड़ा तर ❀ गरुई हांक दीन ललकार ॥
तुम्हैं बुलावत महराजा हैं ❀ योगिउ चलो हमारे साथ।
लौटे केरी म्वहिं आज्ञा ना ❀ हमरे सत्य सुमिरनी हाथ ॥
सुनिकै बातैं ये योगिन की ❀ करिया खैंचिलई तलवारि।
पाँव अगाड़ी को डास्यो जो ❀ खण्डा करों तुरतही चारि ॥
बातैं सुनिकै ये करिया की ❀ ऊदन खैंचि लीन तलवारि।
धोखे योगी के भूले ना ❀ नहिं सिरकाटि देउँ भुइँ डारि ॥
आल्हा मलखे देबा सय्यद ❀ इनहुन खैंचि लई तलवार।
दौरे करिया के ऊपर सब ❀ गरुई हांक देत ललकार ॥
करिया सोच्यो अपने मनमाँ ❀ ये नहिं योगिन केर कुमार।
ये हैं लड़िका मोहबेवाले ❀ एक ते एक सूरसरदार ॥
जो हम बोलैं इन योगिन ते ❀ तौ फिरि जाय प्राणपर आय।
यहै सोचिकै करिया लौटो ❀ जम्बा ढिगै पहूँचा जाय ॥
हाथ जोरिकै करिया बोलो ❀ दादा मानो कही हमार।
धोखे भूल्यो ना योगिन के ❀ वै द्यावलि के राजकुमार ॥
सुनिकै बातैं ये करिया की ❀ बोला माड़ो का सरदार।

तुरत नगड़ची को बुलवावो ❀ फौजैं सबै होयँ तय्यार॥
योगी पहुँचे त्यहि तम्बू में ❀ जहँ पर रहै देवलदे माय।
जितनी गाथा रहे माड़ो की ❀ ऊदन सबै गये तहँ गाय॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ माता बड़ी खुशी ह्वै जाय।
नदी नर्मदा के ऊपर माँ ❀ तम्बू बैठि बनाफरराय॥
ऊदन बोले तहँ आल्हा ते ❀ दादा मानो कही हमार।
बरह कोस को है बबुरीबन ❀ ह्याँ पर रहै सदा अँधियार॥
गम्य सिपाहिन कै नाहीं है ❀ ह्याँ पर काह करैं असवार।
हुकुम जो पावैं हम दादा को ❀ तौ कटवाय करैं उजियार॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❀ आल्हा हुकुम दीन फर्माय।
चला कुल्हाड़ा तब बबुरीबन ❀ लागे गिरन वृक्ष अरराय॥
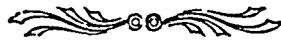
अनूपी व टोंडरमल की लड़ाई

ऊदन की विजय

गा हरकारा तब टोंडरपुर ❀ टोंडरमलै जुहारो जाय।
राजा आये हैं मोहबे के ❀ ते बबुरीबन रहे कटाय॥
सुनिकै बातैं बेटा अनूपी ❀ धावन तुरत लीन बुलवाय।
जाय नगड़ची ते बोलौ तुम ❀ पुर में डौंड़ी देय बजाय॥
खबर नगड़ची सो पावत खन ❀ तुरतै डौंड़ी दीन बजाय।
चला दरोगा हाथिनवाला ❀ तिनकी साँकरि दीन छुराय॥
हथी महावत हाथी लैकै ❀ तिनका जमीं दीन बैठाय।
डरी अँबारी तिन हाथिन पर ❀ ऊपर हौदा दीन धराय॥
चांदी हौदा स्यहु हाथी पर ❀ सोने कलस धरे सजवाय।

डारिकै रस्सा रेशमवाले ❀ तिनको तुरत दीन कसवाय ॥
सजिगे हाथी जब टोंडरपुर ❀ घोड़ा होन लागि तय्यार ।
हरियल मुश्की ताजी तुरकी ❀ नकुला सब्ज़ा घोड़ अपार ॥
घोड़ा सजिगे सब जल्दी सों ❀ तिन पर होन लाग असवार ।
लाँग चढ़ाये सब धोतिन की ❀ हाथ म लिहे ढाल तलवार ॥
कउ कउ घोड़ा हिरन चाल पर ❀ कउ कउ मोरचाल पर जायँ ।
कावा घूमैं कउ कउ घोड़ा ❀ कउ कउ सर्पट रहा चलाय ॥
सजा रिसाला घोड़नवाला ❀ पैदर होन लागि तय्यार ।
झीलम बखतर पहिरि सिपाही ❀ हाथ म लीन ढाल तरवार ॥
मेघागर्जनि बिजुली तड़पनि ❀ तोपैं सबै भईं तय्यार ।
मारू डंका बाजन लागे ❀ बिप्रन कीन बेद उच्चार ॥
रणकी मोहरि बाजन लागी ❀ घूमन लागे लाल निशान ।
गर्द उड़ानी है पृथ्वी में ❀ छाई रई तुरत असमान ॥
औरं बयरिया डोलन लागीं ❀ औरै होन लाग व्यवहार ।
सजा दुलरुवा यहु अनुपी का ❀ ज्यहि का नेकु न लागी बार ॥
लाँग चढ़ाई त्यहि रेशम की ❀ कम्मर दुइ बांधी तलवार ।
अगल बगल पर दुइ पिस्तौलैं ❀ दहिने हाथे लीन कटार ॥
बाँयें भाला नागदवनि का ❀ दहिने परी गैंड़ की ढाल ।
सुरखा घोड़ा को मँगवायो ❀ मनमें सुमिस्यो अवधभुवाल ॥
माथ नवायो श्रीगणेश को ❀ औ सुर्यन को कीन प्रणाम ।
सुमिरि भवानी शिवशंकर को ❀ लीन्ह्यो कृष्णचन्द्र को नाम ॥
टोंडरमल दहिने पर आये ❀ सब्जा घोड़े पर असवार ।
कूच के डंका बाजन लागे ❀ सबदल तुरत भयो हुशियार ॥
कूच करायो टोंडरपुर ते ❀ बबुरी बनै पहूँचे आय ।

सुनि सुनि डंका के शब्दन को ❁ चौंका तुरत लहुरवाभाय ॥
हुकुम लगायो निज फौजन में ❁ क्षत्री तुरत भये हुशियार।
झीलमबखतर पहिरिसिपाहिन ❁ हाथ म लई ढाल तलवार ॥
घोड़ा मनोहरा की पीठी पर ❁ देबा तुरत भयो असवार।
चढ़ा बेंदुला की पीठी पर ❁ यहु द्यावलि को राजकुमार ॥
बेटा अनूपी आगे ह्वैकै ❁ आयो जहाँ. उदयसिंहराय।
कहाँ से आयो औ कहँ जैहौ ❁ आपन हाल देउ बतलाय ॥
कौन बहादुर अस दुनियाँमाँ ❁ जो बबुरीबन रहा कटाय।
बेटा अनूपी की बातैं सुनि ❁ तुरतै ब्वला बनाफरराय ॥
फौज हमारी माड़ो जैहै ❁ यहु बन बड़ा घना है भाय।
हैं परिमालिक जो मोहबे के ❁ जिनका कही चँदेलाराय ॥
हमतो नौकर तिन घर केरे ❁ हमरो नाम उदयसिंहराय।
बेटा अनूपी तब समझायो ❁ ऊदन लौटि मोहोबे जाय ॥
इतनी सुनिकै ऊदन बोले ❁ क्षत्री मानो कही हमार।
घोड़ा पपीहा लाखा पातुरि ❁ औ मँगवाउ नौलखा हार ॥
दै पचशब्दा हाथी देवो ❁ बिजमा ब्याह देउ करवाय।
मूड़ काटिकै नृपजम्बा का ❁ हमरी नजरि गुजारो आय ॥
बेटा अनूपी सुनि रिसहा भा ❁ औ क्षत्रिन ते कहा सुनाय।
जान न पावैं मोहबेवाले ❁ टटुवा टायर लेउ छिनाय ॥
बेटा अनूपी की बातैं सुनि ❁ रिसहा भयो बनाफरराय।
तुरत दरोगा को ललकार्यो ❁ चरखिन तोपैं देउ चढ़ाय ॥
बत्ती देद्यो मोरि तोपन माँ ❁ इन पाजिन को देउ उड़ाय।
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❁ गोलंदाज पहूँचे आय ॥
गोला डारे तिन तोपन माँ ❁ सुम्मा मारैं फेरि चलाय।

धरिकै रंजक फिरि प्यालन में ❀ ऊपर बत्ती दई लगाय ॥

सवैया

गोला चले तब ओला समान मनो घन सावन को चढ़िआयो ।
भूमि अकाश न सूझिपरै धुँवना दोउफौजन में अतिछायो ॥
घाव परै बहुहाथिन बाजिन ऊँटन के दल को बिचलायो ।
कौन कहै गति क्षत्रिन की ललिते पर जात कछू नहिं गायो ॥

पहिले मारुइ भईं तोपन की ❀ पाछे चलन लागि तलवार ।
पैदरि पैदरि का झुरमुट भा ❀ औ असवार साथ असवार ॥
चारि घरीभरि चली सिरोही ❀ बीरन रहे बीर ललकार ।
भाला बरछिन की मारुइ भई ❀ कोताखानी चलीं कटार ॥
बड़ी मारु भइ बबुरीबन माँ ❀ जूझन लागि सुघरुवा ज्वान ।
कटिकटि सिर धरतीपर गिरिगे ❀ सबका छूटिगयो अभिमान ॥
खट खट खट खट तेगा बोलै ❀ रण माँ छपक छपक तलवार ।
सन सन सन सन गोली बरसैं ❀ खन खन कड़ाबीन की मार ॥
मर मर मर मर ढालैं बोलैं ❀ ठन ठन भालन की झनकार ।
झलझलझलझलछूरी झलकैं ❀ बोलैं मारु मारु सब मार ॥
मूड़न केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुंडन के लाग पहार ।
कटि भुजदंडै गईं क्षत्रिन की ❀ कल्ला कटे बछेरन क्यार ॥
रकतकिनदिया तहँबहिनिकरीं ❀ जूझे बड़े बड़े सरदार ।
बहे बार तहँ जायँ क्षत्रिन के ❀ जैसे नदिया बहै सिवार ॥
गोहैं ऐसी भुजदण्डैं तहँ ❀ ढालैं कछुवा सम उतरायँ ।
छुरी कटारी मछली मानो ❀ औ धड़ नैया सम बहिजायँ ॥
काककंक तिन ऊपर बैठे ❀ मानो नदिया खेलैं नेवार ।
बेटा अनूपी आगे आयो ❀ सुरखा घोड़े पर असवार ॥

औ ललकाखो बघऊदन को ❀ ओ द्यावलि के राजकुमार।
मरे सिपाहिन के का पइहौ ❀ ऊदन तोरि मोरि तलवार॥
बेटा अनूपी की बातैं सुनि ❀ भा मन खुशी लहुरवाभाय।
ऊदन बोले त्यहि चत्री ते ❀ तुम्हरी अवधि पहूँची आय॥
पहिली कैले समरभूमि में ❀ नाहर टोंडर के सरदार।
पहिले लोहे तुम्हरी द्याखैं ❀ फिरि कचलोहिया देखुहमार॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❀ अनुपी भाला लीन उठाय।
दूनौं अँगुरिन भाला तौलै ❀ कालीनाग ऐस मन्नाय॥
छुटिगा भाला जो हाथे ते ❀ कम्मर मचा ठनाका जाय।
घोड़ा बेंदुला बायें ह्वैगा ❀ औ बचिगयो लहुरवा भाय॥
हँसिकै बोल्यो तब अनुपी ते ❀ यहु रणबाघु उदयसिंहराय।
दूध लरिकई माँ पायो ना ❀ तुम्हरे मरे चढ़ै ना घाय॥
अब तुम सुमिरौ यहि समया माँ ❀ जो गाढ़े माँ होय सहाय।
वार हमारी ते बचि जायो ❀ घरमाँ छठी धरायो जाय॥
अब ना बचिहौ रणखेतन में ❀ अनुपीसम्हरि होउहुशियार।
इतना कहिकै बघऊदन ने ❀ नंगी खैंचि लीन तलवार॥
मरी सिरोही तब अनुपी के ❀ धरती गिखो भरहरा खाय।
मरिगा अनुपी रणखेतन माँ ❀ टोंडरमलौ पहूँचा आय॥
औ ललकारा बघऊदन का ❀ अब तुम खबरदार ह्वै जाय।
धोखे अनुपी के भूल्यो ना ❀ अबहीं सरग देउँ पहुँचाय॥
खैंचि सिरोही लइ कम्मर से ❀ औ ऊदन पर दई चलाय।
वार ढाल पर ऊदन लीन्ह्यो ❀ टोंडर हाथ मूठि रहि जाय॥
टूटि सिरोही गै टोंडर कै ❀ तब मन सोच भयोअधिकाय।
पँड़ लगायो फिरि बेंदुल के ❀ टोंडरपास पहूँच्यो आय॥

ढाल की ओभड़ हनिकै मारयो ❀ औ घोड़ा ते दियो गिराय।
बांधिकै मुश्कैं फिरि टोंडर की ❀ लश्कर तुरत दीन पहुँचाय॥
मारु बन्द मैं तब हुँवना पर ❀ सायंकाल पहूँचा आय।
तारागण सब चमकन लागे ❀ संतन धुनी दीन परचाय॥
परे आलसी निज निज शय्या ❀ घों घों कण्ठ रहा घर्राय।
माथ नवावों पितु अपने का ❀ जिन मोहिं विद्यादीन पढ़ाय॥
करों तरंग यहाँ सों पूरण ❀ तव पद सुमिरि भवानी कन्त।
राम रमा मिलि दर्शन देवो ❀ इच्छा यही मोरि भगवन्त॥
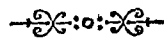
कवित्त

चन्द्रभाल मुण्डमाल लोचनविसाल लाल ओढ़े तन बाघखाल पोढ़ेभक्तपाल है।
मोहमार कामजार बैल के सवार यार मोर रखवार होहु नाम जक्तपाल है॥
सोहैं शीशगंगा फिरै भंग के उमंगा नंगा संग अर्द्धंगा गौरि दीननको ढाल है।
ध्यावैं औ मनावैं गावैं ललितहमेश शेश पावैं नहिं पार शिवकालहू को काल है॥

सुमिरन

दुर्गा माता तुमका ध्यावों ❀ नितप्रति दुर्गापाठ सुनाय।
तुम असि माता को त्रिभुवनमाँ ❀ ड्योढ़ी जासु जुहारों जाय॥
भयू यशोदा के पेटे सों ❀ त्रिभुवन जान तुम्हारी गाथ।
तुम्हरे भाई कृष्णचन्द्र भे ❀ त्रिभुवनपती चराचरनाथ॥
जिनकी कीरति महभारत में ❀ पर्बै रची अठारह व्यास।
मथा समुन्दर गा सतयुग में ❀ पूरी तबै सबै की आस॥
भारत मथिकै मच्छोदरसुत ❀ गीता ताते कीन प्रकास।
गीता धीता जो कोउ कीन्ह्यो ❀ लीन्ह्योजीति जगत की फांस॥
छूटि सुमिरनी गै देवन कै ❀ शाका सुनो बनाफर क्यार।
जम्बै राजा जो माड़ो का ❀ सूरज लड़िहै तासु कुमार॥

अथ कथाप्रसंग

गा हरकारा फिरि माड़ो को ❀ बारहदरी पहूँचा जाय।
बेटा जम्बै को सूरजमल ❀ तहँ पर रहा राम को ध्याय॥
खबरि सुनाई हरकारा ने ❀ अनुपी मरण गयो सब गाय।
सुनिकै बातैं हरकारा की ❀ मन जरि मस्यो बघेलाराय॥
तुरत नगड़ची को बुलवायो ❀ डंका तुरत दीन बजवाय।
हाथी घोड़ा औ तोपन को ❀ बबुरीबन का दीन हँकाय॥
हरियल घोड़ा की पीठी पर ❀ आपो फांदि भयो असवार।
माथ नायकै श्रीगणेश को ❀ औ मन सुमिस्यो नन्दकुमार॥
सुमिरि भवानी जगदम्बा को ❀ औ शिव रामचन्द्र को ध्याय।
सूरज चलिभा बबुरीबन को ❀ औ रणखेत पहूँचा आय॥
आगे लश्कर के सूरजमल ❀ गरुई हांक दीन ललकार।
काकी माता नाहर जायो ❀ काके जमे करेजे बार॥
को कटवावत है बबुरीबन ❀ औ को मोहबे का सरदार।
कौन कहावत उदयसिंह है ❀ किसने डरा अनूपी मार॥
घोड़ा वेंदुला पर टहलत रहे ❀ यहु रणबाघु लहुरवा भाय।
सुनिकै बातैं सूरजमल की ❀ तुरतै ब्वला बनाफर राय॥
हमरी माता नाहर जायो ❀ हमरे जमे करेजे बार।
हम कटवावत हैं बबुरीबन ❀ हमहीं डरा अनूपी मार॥
कही सुना भा जब दूनों माँ ❀ दूनों कुँवर गये अलगाय।
सूँड़ि लपेटा हाथी भिड़िगे ❀ अंकुश भिड़े महौतन भाय॥
बम्ब के गोला छूटन लागे ❀ धुँवना रहा सरग में छाय।
गोली ओलासम बरसत भइँ ❀ भन भन भन्न भन्न भन्नाय॥
छाय अँध्यरिया गै दिनहीं में ❀ औ तिल डरा भुइँ ना जाय।

कउँधालपकनिबिंजुलीचमकनि ❀ रणमाँचमकिचमकिरहिजाय
ऐसि सिरोही मलखाने कै ❀ ठाकुर समरधनी मलखान।
काटि गिरायो रजपूतन को ❀ हाथिन मारि कीन खरिहान॥
जैसे भेड़िन भेड़हा पैठै ❀ जैसे अहिर बिडारै गाय।
जैसे भाई आसमान में ❀ चन्दै राहु गरासै जाय॥
जैसे अर्ज्जुन के देखत में ❀ कौरव फौज जाय थर्राय।
जैसे पूजे शिवशंकर के ❀ दारिद तुरतै जाय नशाय॥
तैसे मलखे ज्यहिदिशि जावैं ❀ सो गलियार परै दिखलाय।
मलखे केरे भइ मुर्चा में ❀ कउ रजपूत न रोकै पाँय॥
सूरजमल औ उदन बाँकुड़ा ❀ दोऊ करैं बराबर मार।
बैस बराबर है दोऊ कै ❀ दोऊ समरधनी सरदार॥
गदा बनेठी दोऊ खेलें ❀ कसरत करैं नटन के साथ।
भाला बलछी दोनों बाँधे ❀ लीन्हे कड़ाबीन दोउ हाथ॥
करैं पैतड़ा रणखेतन में ❀ दोऊ रहे दुहुँन ललकार।
हनि हनि मारैं एक एक को ❀ दोऊ लेयँ ढाल पर वार॥
बड़ी लड़ाई दोऊ कीन्ह्यो ❀ मानो छुटे जँगल के बाघ।
हारि न मानैं कोउ कोऊ ते ❀ दोऊ बड़े लड़ैया घाघ॥
खैंचि सिरोही सूरज लीन्ह्यो ❀ करिकै रामचन्द्र को ध्यान।
ऐंचि कै मारा बघऊदन के ❀ दोऊ हाथ सँभरिकै ज्वान॥
टूटि सिरोही गै सूरज कै ❀ खाली मूठि हाथ रहि जाय।
सूरज सोच्यो अपने मन माँ ❀ हमरी मृत्यु गई नगच्याय॥
ऊदन बोल्यो तब सूरज सों ❀ मानो कही बघेलाराय।
कोदो दैकै बाढ़ि धरायो ❀ तुम्हरे मरे चढ़ै ना घाय॥
सँभरिकै बैठो अब घोड़ापर ❀ क्षत्री खबरदार ह्वै जाय।

वार हमारी ते बचि जाये ❀ घर माँ छठी धराये जाय॥
यह कहि मारा तलवारी को ❀ शिर पर परी सूर्य के जाय।
फटिकै खुपरी दुइ टूका भे ❀ सूरज गिरा भरहरा खाय॥
सूरज गिरतै परलय ह्वैगै ❀ लशकरतितिरबितिर ह्वैजाय।
भागि सिपाही गढ़माड़ो को ❀ जम्बै शरण पहूँचे आय॥
सुनी सिपाहिन की बातैं जब ❀ राजा जम्बै उठा रिसाय।
हुक्म लगायो फिरि करिया को ❀ बबुरीबनै पहूँचो जाय॥

करिया और ऊदन की लड़ाई

करिया बोल्यो त्यहि समया में ❀ हमरे सुनो शूर सरदार।
तुरत नगड़ची को बुलवावो ❀ सबियाँ फौज होय तय्यार॥
बजो नगाड़ा तब माड़ो में ❀ भादों मेघ सरिस हहराय।
हथी महावत हाथी लैकै ❀ तुरतै भूमि दीन बैठाय॥
चुम्बक पत्थर के हौदा धरि ❀ जिनमाँ सेल बरौंचा खाय।
धरी अँबारी तिन हाथिन पर ❀ हौदन कलश दीन धरवाय॥
घंटा बाँधे गलहाथिन के ❀ भारी देत चलत झनकार।
यक यक हाथी के हौदा पर ❀ दुइ दुइ बीर भये असवार॥
तुरत दरोगा घोड़नवाला ❀ ताजी तुरकी कीन तयार।
नकुला सब्जा पँचकल्यानी ❀ सुर्खा सुरँगा रङ्ग अपार॥
गंगा यमुनी डरी रकावैं ❀ मुहँ माँ दीन लगाम लगाय।
डरी हयकलैं तिन घोड़न के ❀ रेशम तंग दीन कसवाय॥
पुट्ठन बुट्टा रचि मेहँदी के ❀ सुम्मन नालैं दीन बँधाय।
पूँजी पट्टा करि घोड़न के ❀ तिन पर काठी दीन धराय॥
नवल बछेड़ा घोड़शारे में ❀ ते सब बेगि भये तय्यार।

यक यक भाला दुइ दुइ बलछी ❀ कम्मर कसी तीन तलवार ॥
अगल बगल में दुइ पिस्तौलैं ❀ दहिने हाथे लीन कटार ।
बड़े सजीला जे क्षत्री थे ❀ घोड़न उपर भये असवार ॥
धरे नगाड़ा गे ऊँटन पर ❀ तोपैं होन लगीं तय्यार ।
गर्भगिरावनि कुँवासुखावनि ❀ लछिमिन तोप बड़ी हहकार॥
ते सब तोपैं रणखेतन को ❀ करिया तुरत दीन हँकवाय ।
बजे नगाड़ा फिरि ऊँटन पर ❀ हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
औरि बयरिया डोलन लागीं ❀ औरै होन लगे व्यवहार ।
ढाढ़ी करखा बोलन लागे ❀ बिप्रन कीन वेद उच्चार ॥
घोड़ पपीहा पचशब्दा गज ❀ कोतल कीन गये तय्यार ।
बैठिग हाथी करिया वाला ❀ तापर होनलाग असवार ॥
छींक तड़ाका भै सनमुख माँ ❀ पंडित बोला शकुन बिचार ।
तुम ना जावो रणखेतन को ❀ करिया माड़ो के सरदार ॥
राहु बारहें अठयें बेप्फै ❀ तुम्हरे दृष्टि शनीचर भाय ।
घात चन्द्रमा दशयें आयो ❀ तुम ना धरो अगाड़ी पाँय ॥
सुनिकै बातैं ये पण्डित की ❀ तुरतै बोला करिंगाराय ।
शकुन बिचारै रय्यत रेजा ❀ जो धरि मौर बियाहन जाय॥
शकुन बिचारैं कछु क्षत्री ना ❀ जो रण चढ़िकै लोह चबायँ ।
कूच के डंका बाजन लागे ❀ मारू शब्द रहे हहराय ॥
रंगा बंगा शहाबाद के ❀ दोऊ घोड़न चढ़े पठान ।
रण की मौहरि बाजन लागी ❀ घूमन लागे लाल निशान ॥
करिया चलिभो समरभूमि को ❀ मन में श्रीगणेश को ध्याय ।
सुमिरि भवानी शिवशङ्कर को ❀ औ सुर्यन को माथ नवाय ॥
किह्यो कीर्त्तन कृष्णचन्द्र को ❀ जिन अर्जुन की करी सहाय ।

दोउ पद वन्द्यो रामचन्द्र के ❀ लङ्का फते करी जिन जाय॥
पूत अंजनी को हनुमत जो ❀ ताको बार बार शिरनाय।
सुमिरिकै अंगद बाली वालो ❀ करिया चला समर को जाय॥
आगे हलका है हाथिन का ❀ बलका जिनके नाहिं ठिकान।
पहिया ढुरकैं उन तोपन के ❀ तड़कति अवैं सिंदुरियाबान॥
पछे रिसाला घोड़न वाला ❀ आला चला समर को जाय।
खर खर खर खर कै रथ दौरैं ❀ चह चह रहीं धुरी चिल्लाय॥
छाय अँधेरिया गै मारग में ❀ बंजर खेत भुहा ह्वै जायँ।
लक्ष पताका यकमिल ह्वैगे ❀ नभ माँ गई लालरी छाय॥
ऐसी फौजैं मलखाने की ❀ वैसी माड़ो का सरदार।
सूँड़ि लपेटा हाथी भिड़िगे ❀ अंकुश भिड़े महौतन क्यार॥
हौदा हौदा यकमिल ह्वैगे ❀ ऊँटन भिड़िगे ऊँट कतार।
भाला छूटे असवारन के ❀ पैदर चलन लागि तलवार॥
सूँड़ि लपेटे जंजीरन को ❀ हाथी रणमाँ रहे घुमाय।
मस्तक गजके गज हनिमारैं ❀ अद्भुत समर कहा ना जाय॥
क्षत्री गर्जैं गज हौदन ते ❀ जो सुनि गर्भपात ह्वै जायँ।
कवँधालपकनिबिजुलीचमकानि ❀ कहुँ कहुँ परैं खड्ग के घाय॥
मर मर मर मर ढालैं ब्वालैं ❀ गोली सन्न सन्न सन्नायँ।
खट खट खट खट तेगा ब्वालैं ❀ लपलपलपकिलपकिरहिजायँ॥
झम्झम्झम्झम् झीलमबोलैं ❀ नीलम रंग परैं दिखराय।
धम् धम् धम् धम् बजैं नगारा ❀ मारा मारा परै सुनाय॥
झल्झल्झल्झल् छूरी झलकैं ❀ चम्चम्चमकिचमकिरहिजायँ।
बल् बल् बल् बल् क्षत्री बलकैं ❀ हब् हब् हबकिहबकि कै खायँ॥
धर् धर् धर् धर् क्षत्री दौरैं ❀ सर् सर् तीर चलावत जायँ।

फर् फर् फर् फर् घोड़ा दौड़ैं ❀ हिन् हिन् हिन्न हिन्न हिन्नायँ॥
टिट् टिट् टिट् टिट् टिटुई हाँकैं ❀ टिल् टिल् टिल्ल टिल्ल चलिजायँ।
चम् चम् चम् चम् खड्गचमकैं ❀ खट् पट् खट् पट् रहीं मचाय॥
रन् रन् रन् रन् फिरैं योगिनी ❀ बम् बम् बम्ब बम्ब को गाय।
सन् सन् सन् सन् बायू सनकैं ❀ मन् मन् मन्न मन्न मन्नायँ॥
मारु मारु करि तुरही ब्वालै ❀ ब्वालै हाव हाव करनाल।
सुनि सुनि बँबकैं बहु क्षत्रीगण ❀ बहुतक जूझिगये नरपाल॥
बहु तक करहैं रणसरिता में ❀ नदिया बही रक्त के धार।
मुंडन केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार॥
परीं लहाशैं जो हाथिन की ❀ तिनका नदी किनारा मान।
परे बछेड़ा उँटनी तिन पर ❀ तिनसों नदी कगारा जान॥
जैसे नदिया डोंगिया सोहैं ❀ तैसे स्वहैं नरन की देह।
जैसे नदिया सावन बाढ़ैं ❀ बर्सैं बहुत गरजि कै मेह॥
तैसे डोंगिया नर देही में ❀ नेही जौन सनेही जीय।
काक कंक तिन ऊपर बैठे ❀ फारैं जियत नरन के हीय॥
छूरी जानो तुम मछलिनको ❀ कछुवा मनो ढाल दिखरायँ।
नचीं योगनी त्यहि सरिता में ❀ तारी भूतन दीन बजाय॥
बड़ी लड़ाई भै बबुरीबन ❀ हमरे बूत कही ना जाय।
जो हम बाँधैं ह्याँ रूपक सब ❀ गाये उमर पार ह्वै जाय॥
करिया ऊदन के मुर्चा माँ ❀ औ परि रहा राम ते काम।
बड़ा लड़ैया माड़ो वाला ❀ ठाकुर जबर्दस्त सरनाम॥
करिया बोला वहि समया में ❀ गरुई हांक करत ललकार।
तुम टरिजावो म्वरे सम्मुख ते ❀ ठाकुर उदयसिंह सरदार॥
बाप तुम्हारे को हमहीं ने ❀ कोल्हू डारा रहे पिराय।

तैसे मारों तलवारी सों ❀ मानो कही बनाफरराय ॥
सुनिकै बातैं ये करिया की ❀ करिया भये उदयसिंहराय ।
डाटिकैबोल्यो फिरिकरियासों ❀ ठाकुर खबरदार ह्वै जाय ॥
सोवत मारे देशराज को ❀ औ फिरि बच्छराज को जाय ।
जागत मारों जो करिया ना ❀ तौ ना कहे उदयसिंहराय ॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❀ करिया खैंचि लीन तलवार ।
ऐंचिकै मारा उदयसिंह को ❀ रोंका तुरत ढाल पर वार ॥
बचा दुलरुवा द्यावलिवाला ❀ आला उदयसिंह सरदार ।
करिया बोला फिरि ऊदन ते ❀ ठाकुर बेंदुल के असवार ॥
अबती आवै जो हौदा पर ❀ तौ यमपुरी देउँ दिखराय ।
सुनिकै बातैं ये करिया की ❀ करिया जौन उदयसिंहराय ॥
एँड़ा मसका रस बेंदुल का ❀ हौदा उपर पहूंचा जाय ।
खैंचि सिरोही को कम्मर ते ❀ मारा तुरत बनाफरराय ॥
परी सिरोही गज शुण्डा में ❀ खण्डा तुरत भई त्यहि घाय ।
खण्डा शुण्डा हाथी दीख्यो ❀ करिया गयो सनाका खाय ॥
कोतल हाथी पचशब्दा था ❀ तापर तुरत भयो असवार ।
औ यह बोल्यो फिरि हाथी ते ❀ हाथी साथी अहिव हमार ॥
निमक हमारो वहु खायो है ❀ बांधे रहे हमारे द्वार ।
हम जो बांधैं बघऊदन को ❀ हमरे नमक होउ उद्धार ॥
कहिकै बातें ये हाथी सों ❀ गरुई हांक कीन ललकार ।
बार तीसरी जो तू आवै ❀ ठाकुर बेंदुल के असवार ॥
कुशल न जावै तू हौदा ते ❀ खुपड़ी टँगै बरगदे डार ।
सुनिकै बातें ये करिया की ❀ ठाकुर मोहबे का सरदार ॥
डाटिकैबोला फिरि करियासों ❀ का तू बकै बकै जस बाल ।

कोल्हू पिरावों मैं जम्बा को ❀ माड़ो खोदि करावों ताल ॥
मूड़ काटिकै करिया तेरो ❀ मल्हना महल देउँ पहुँचाय ।
तौ तौ लरिका देशराज का ❀ साँचो नाम उदयसिंहराय ॥

सवैया

या कहिकै ऊदन त्यहि बार सो बेंदुल को लय ऊपर धाये ।
शुण्ड सों दाबि लियो पचशब्दा बापके बाहन बंधन आये ॥
कर बांधि लियो तबहीं करिया तहँ लै हौदा पै कूच कराये ।
ललिते मलखान तहां बलखान गुमानभरे रणखेतन आये ॥

करिया और मलखे की लड़ाई

जैसे भेड़िन भेड़हा पैठै ❀ जैसे सिंह बिडारै गाय ।
तैसे मारै औ ललकारै ❀ यहु रणबाघु बनाफरराय ॥
मलखे ठाकुर के मुर्चा पर ❀ कउ रजपूत न रोकै पायँ ।
मारति मारति मलखाने जी ❀ पहुँचे जहां करिंगाराय ॥
देखिकै करिया राहुट ह्वैगा ❀ औ मलखे से लगा बतान ।
जो गति कीन्ह्यों बच्छराजकी ❀ सोई जानु अपनि मलखान ॥
त्यहिते तुमका समुझाइत है ❀ सम्मुख अवो न हमरे ज्वान ।
सुनिकै बातैं ये करिया की ❀ रिसहा भयो बीर मलखान ॥
एँड़ा मसके जब घोड़ी के ❀ हौदा उपर पहूँची जाय ।
पैर पकरिकै तब करिया के ❀ औ हौदा ते दीन गिराय ॥
उतरिकै घोड़ा ते देवा तब ❀ औ हाथी पर भयो सवार ।
छोरी मुशकै बघऊदन की ❀ यहु भीषम को राजकुमार ॥
रुपना बारी बेंदुल लीन्हे ❀ तापर बैठ लहुरवा भाय ।

घोड़ा पपीहा की पीठी माँ ❀ तुरतै बैठ करिंगाराय ॥
मलखे ठाकुर ने ललकारा ❀ करिया खबरदार ह्वै जाय ।
जियत न जैहौ तुम माड़ो को ❀ तुम्हरो काल रहा नगच्याय ॥
सुनिकै बातैं मलखाने की ❀ तब जरिमरा करिंगाराय ।
खैंचि सिरोही ली कम्मर से ❀ औ मलखे पर दई चलाय ॥
वार बचायो मलखाने ने ❀ करिया निकट पहूँच्योजाय ।
ढाल कि औझरि मलखे मारा ❀ तब गिर परा करिंगाराय ॥
घोड़ा पपीहा मलखे लीन्ह्यो ❀ औ क्षत्रिन ते कह्योसुनाय ।
मारो मारो ओ रजपूतो ❀ तौ मिलि जाय बाप का दायँ ॥
सुनिकै बातैं मलखाने की ❀ ज्वानन खूब कीन घमसान ।
रङ्गा बङ्गा शहाबाद के ❀ साथ म आये जौन पठान ॥
ते द्वउ मारैं दिशि करिया के ❀ रणमाँ बड़े लड़ैया ज्वान ।
तिनके मुर्चा पर देवा रहे ❀ ठाकुर मैनपुरी चौहान ॥
सो ललकारै तहँ रंगा को ❀ औ बंगा को दियो हटाय ।
को गति बरणै तहँ देवा कै ❀ हमरे बूत कही ना जाय ॥
बड़ा लड़ैया रंगा रंगी ❀ जंगी खैंचिलीन तलवार ।
ऐंचि कै मारा सो देवा को ❀ देवा लीन ढाल पर वार ॥
औ ललकारा फिरि रंगा को ❀ रंगा खबरदार ह्वै जाय ।
खैंचि सिरोही देवा मारा ❀ रंगा गिरा अरहराखाय ॥
रंगा मरिगा जब मुर्चा पर ❀ बंगा चला तड़ाका धाय ।
नंगी लीन्हें तलवारी को ❀ देवा पास पहूँचा आय ॥
सँभरिकै बैठो अब घोड़ा पर ❀ तुम्हरो काल गयो नियराय ।
यह कहि मारा तलवारी को ❀ बखतर काटि पार ह्वै जाय ॥
चन्दा दुलरुवा भीषमवाला ❀ ज्यहिका राखिलीन भगवान ।

खैंचि सिरोही ली कम्मर ते ❀ औ हनि दियो बंग पर ज्वान ॥
बंगा जूझा रणखेतन में ❀ तब जरिमरा करिंगाराय ।
औ ललकारा रजपूतन को ❀ हमरे सुनो सिपाहिउ भाय ॥
जाय न पावैं मुहबे वाले ❀ इनको कटा लेउ करवाय ।
पिंशन देबे सब शूरन को ❀ दुहरी तलब देब करवाय ॥
सुनिकै बातैं ये करिया की ❀ ठाकुर मोहबे का सरदार ।
रिसहा ह्वैकै मलखाने तब ❀ गरुई हांक दीन ललकार ॥
जान न पावैं माड़ो वाले ❀ औ रजपूतो बात बनाउ ।
देब जगीरैं हम मुहबे माँ ❀ बैठे तीन शाखि लों खाउ ॥
सुनि सुनि बातैं सरदारन की ❀ खुब लरिमरे सिपाही ज्वान ।
लालचलाग्योअतिरुपिया का ❀ सम्मुख लोहा लगे चबान ॥

सवैया

सूमन को धन प्यार भली बिधि शूरन को धन नेक न भावै ।
शूर शिरोमणि भक्तन को धन मान द्वऊन को मोह न आवै ॥
सांच बिभीषण की कहिये रहिये नहिं मौन यही मन भावै ।
प्रान धनौपर आनपरी ललिते तजि शान स्वई ढिग आवै ॥
कौन गुमान करी अपने मन मान अमान लिये दुख पावै ।
मान वही रघुनाथ मिलैं नतु है अपमान यही कहि आवै ॥
❀ चार के साथ बचै नहिं एक बिवेक से नेक यही मन भावै ।
गावै अमान न मान चहै ललिते रघुनाथ स्वई जन पावै ॥
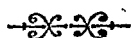
शूर सिपाही ईजतिवाले ❀ बोले द्वऊ दिशा के ज्वान ।

❀ काम १ क्रोध २ लोभ ३ मोह ४ इन चारों की प्रबलता में एक देह नहीं बच सक्ती ॥

काह बखानत महराजा हो ❀ यहनहिंसुना चहैं हम कान ॥
देही नेही नरगेही के ❀ पाल्यो सदा द्रव्यसों प्रान ।
अब भय आई नृपदेही में ❀ नेही नहीं हमारे प्रान ॥
लालतित्यहिकी रजपूती का ❀ पैदा होवे का धिक्कार ।
सनमुख वैरी जो मारै ना ❀ रणमाँ लागैं प्राण पियार ॥
सुनिकै बातैं रजपूतन की ❀ दोऊ लड़न लाग सरदार ।
मलखे करिया का मुर्चा है ❀ दोऊ विषधर बड़े जुझार ॥
करिया ठाकुर माड़ोवाला ❀ गरुई हांक देय ललकार ।
सँभरिकै वैठो अब घोड़े पर ❀ ठाकुर मोहबे के सरदार ॥
इतना कहिकै करिया ठाकुर ❀ तुरतै खैंचि लीन तलवार ।
खैंचि कै मारा मलखाने को ❀ मलखे लीन ढाल पर वार ॥
ढाल छूटिगै मलखाने कै ❀ दूनां हाथ गही तलवार ।
ताकि कैमारा फिरि करिया को ❀ काटिकैगला निकलिगै पार॥
जूझिगा करिया माड़ोवाला ❀ फौजैं रोईं छाँड़ि डिडकार ।
घोड़ वेंदुला की पीठी सों ❀ फाँदा उदयसिंह सरदार ॥
मूड़ पकरिकै सो करिया को ❀ धड़ते डारा तुरत उखार ।
आल्हा ऊदन मलखे देवा ❀ सय्यद वनरस का सरदार ॥
पांचो मिलिकै गे तम्बू में ❀ जहँपर रहै दिवलदे माय ।
हाल बतायो सब धावलि को ❀ करियाशीश दीन दिखलाय ॥
शीशदेखिकै त्यहि करियाको ❀ भइ मन खुशी देवलदे माय ।
बड़ी बड़ाई की सय्यद की ❀ तुम्हरी दया जीति भै आय ॥
बड़ी सहाई की लरिकन की ❀ धर्मसों देवर लगो हमार ।
राजा तुम्हारे की नारी हन ❀ सय्यद वनरस के सरदार ॥
कियो सहाई जस हमरी है ❀ तैसे भला करी कर्त्तार ।

सय्यद बोले तब घावलिते ❀ साँची मानो कही हमार ॥
खुदा सहाई सब दुनियाँ का ❀ बिसमिल भलाकरैं सब क्यार।
बार न बांका इनका जाई ❀ अल्ला धर्म निबाहनहार ॥
सुनिकै बातैं ये सय्यद की ❀ बोला उदयसिंह सरदार।
आठ महीना कहि आये त्यन ❀ त्यहिते ह्वैगै बहुत अबार ॥
यहु शिर पठवो तुम मोहबे को ❀ दादा मानो कही हमार।
हार लय आयो यहु मल्हना को ❀ जामें मिलै जाय इउ हार ॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❀ रूपन बारी लीन बुलाय।
करिया ठाकुर को शिर लैकै ❀ आल्हा मोहबे दीन पठाय ॥
पूरि तरंग यहाँ सों ह्वैगै ❀ शारद तुही लगावै पार।
डगमग नैया भवसागर में ❀ माता तुही निबाहनहार ॥
पार को पावै यहु आल्हाकहि ❀ थाल्हा जौन शूरमन क्यार।
शारद माता ज्यहि जिह्वा में ❀ ताको खेय लगावैं पार ॥
बन्दन करिकै तिन शारद को ❀ ह्याँते करों तरँग को अन्त।
सुनैं सुनावैं हरिगुण गावैं ❀ ललिते ख्वई जगतमें सन्त ॥
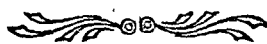
सवैया

कूप तड़ाग औ मंदिर सुन्दर वृक्ष चिलौलहु के बहु राजैं।
मंदिर में शिवमूरति थापित देखतही दुख दारिद भाजैं ॥
जानतहौं नहिं कौनेहिंथाप्यो भूरिदिनोंसे तहां सो बिराजैं।
ग्रामक नाम बड़ी पड़री तहँ मंदिर में सगरेश्वर गाजैं ॥

सुमिरन

बेनु बाँसुरी अब बाजै ना ❀ नाकहुँ फिरैं गलिनमें श्याम।
रहिगै ठकुरी ना दशरथ की ❀ ना रहिगयो धनुर्धर राम ॥

पैदा होई सो मरजाई ❀ आई कछू नहीं फिर काम।
भलो बुरो जो जग में करि है ❀ सोई बना रही नितनाम॥
परमसनेही रघुनन्दन बिन ❀ नेही और जगत में कौन।
तिनहित देही नरगेही तज ❀ जावै राम भौन को तौन॥
आलस देही नरगेही तज ❀ सो यमपुरी पहूँचै जाय।
पार न जावै वैतरणी के ❀ धरि धरि चीलहगीध सबखायँ॥
छूटि सुमिरनी गै देवन कै ❀ शाका सुनो शूरमन क्यार।
कल्हू पिराथी नृप जम्मै को ❀ ठाकुर उदयसिंह सरदार॥

अथ कथाप्रसंग

माहिल चलिभे ह्याँ उरई ते ❀ लिल्ली घोड़ी पर असवार।
तिक तिक हाँकैं त्यहि घोड़ी का ❀ एँड़ी करैं भड़ाभड़ मार॥
थोड़ी देरी के अरसा माँ ❀ माहिल अटे मोहोबे आय।
पहिलेमिलिकैपरिमालिकको ❀ मल्हना भवन पहूँचे जाय॥
दीख्योमल्हनाजबमाहिलको ❀ उठिकै बड़ा कीन सतकार।
पूँछन लागी फिरि भैया सों ❀ राजा उरई के सरदार॥
आल्हा ऊदन मलखे सुलखे ❀ बारे से रहये चारिहू भाय।
आठ महीना का कहिकै गे ❀ आयो एक साल नगच्याय॥
खबरि जो पाई कहुँ भाई हो ❀ हमको वेगि देउ बतलाय।
सुनिकै बातैं ये मल्हना की ❀ माहिल बोले वचन बनाय॥
मरे बनाफर गे माड़ो में ❀ खुपरी टँगी बरगदे डार।
सुनिकै बातैं ये माहिल की ❀ मल्हना रोई छाँड़ि डिडकार॥
स्वनेकै लंका स्वरि जरिबरिगै ❀ अबयों कोन लगाई पार।
माहिल बोला फिरि बहिनीसों ❀ कीन्हें चुगुलिन का व्योपार॥
अब बुलवावो तुम पंडित को ❀ सूतक साइति करैं बिचार।

करो तिलाञ्जलि तिनपुत्रनको ❀ तुम्हरे हाथ होयँ उद्धार ॥
इतना कहतै भइ माहिल के ❀ रुपना अटा बराबरि आय ।
मूड़ देखिकै त्यहि करिया का ❀ राजा गिरा पछाराखाय ॥
हाथ जोरिकै रुपना बोला ❀ ओ महरजा रजापरिमाल ।
मूड़ लयआये हम करिया को ❀ माड़ो कुशल तुम्हारे बाल ॥
जैसे पियासा जलको पावै ❀ सूखत परै धान में बारि ।
रुपना बारी की बातैं सुनि ❀ तैसे खुशी भये नर नारि ॥
हल्ला सुनिकै नरनारिन सों ❀ मल्हना रुपना लीन बुलाय ।
बिदा मांगिकै माहिल चलिभे ❀ उरई तुरत पहूँचे जाय ॥
मल्हना पूँछै तब रुपना ते ❀ बेटन हाल देउ बतलाय ।
बदी सुनायो सब लड़िकनकै ❀ माहिल जौन हमारो भाय ॥
सुनिकै बातैं ये मल्हना की ❀ रुपना बोला शीश नवाय ।
बेटा अनूपी टोंडर सूरज ❀ करिया सहित चारिहू भाय ॥
चारो लड़िका नृप जम्बा के ❀ बबुरीबन माँ गये नशाय ।
खबरि तुम्हारी म्वहिं लेबे को ❀ पठयो बेगि उदयसिंहराय ॥
हम चलि जावैं अब बबुरीबन ❀ हमको हुकुमदेव फर्माय ।
कुशल तुम्हारी बिन पाये ते ❀ ब्याकुल रहैं चारिहू भाय ॥
सुनिकै बातैं ये रुपना की ❀ मल्हना हुकुम दीन फर्माय ।
करो बियारी तुम महलन में ❀ माड़ो फेरि पहूँचो जाय ॥
सुनिकै बातैं ये मल्हना की ❀ रुपना जेयँ लीन ज्यँवनार ।
सजा बछेड़ा तहँ ठाढ़ो थो ❀ रुपना फाँदि भयो असवार ॥
सत्रहदिन कै मँजिल करिकै ❀ माड़ो फेरि पहूँचा जाय ।
कही खबरिया सब मोहबे की ❀ जहँ पर बैठ बनाफरराय ॥
पाँचो मिलिकै सम्मत कीन्ह्यो ❀ यह फिरि ठीक लीन ठहराय ।

किला गरेरैं अब लोहागढ़ ❀ लश्कर कूच देयँ करवाय ॥
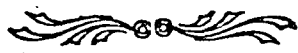
राजा जम्बै की लड़ाई

पांचो मिलिकै सम्मत करिकै ❀ डंका तुरत दीन बजवाय ।
घोड़ बेंदुला ऊदन बैठे ❀ मलखे चढ़े कबुतरी जाय ॥
घोड़ मनोहर पर देवा है ❀ सय्यद सिरगा पर असवार ।
आल्हा बैठे पचशब्दा पर ❀ सुमिरिकैदेव मोहोबे क्यार ॥
कूच करायो बबुरीबनते ❀ लोहागढ़ै पहूंचे जाय ।
तोप लगायो तहँ फाटक पर ❀ बत्ती तुरत दीन करवाय ॥
फाटक गाँसा जम्बै दीख्यो ❀ रानी महल पहूंचा जाय ।
चारो पुत्रन कै सुधि करिकै ❀ रोवनलाग तहाँ पर आय ॥
वंश बूड़िगा म्वर पापी का ❀ मेरो काल रहा नगच्याय ।
बड़ो लड़ैया सब शूरन में ❀ आल्हा केर लहुरवाभाय ॥
म्वहिं भय आई त्यहि ऊदनते ❀ ताते प्राण मोर घबड़ायँ ।
सुनिकै बातें ये राजा की ❀ बिजमा बोली वचन सुनाय ॥
करिकै जादू मैं ऊदन को ❀ राखों भारखंड में जाय ।
इतना कहिकै चली बिजैसिनि ❀ लश्कर तुरत पहूँची आय ॥
डारो गुटका मुखभीतर माँ ❀ जासों नजर बंदह्वै जाय ।
गायब ह्वकै तहँ पर पहुँची ❀ जहँ पर रहे लहुरवाभाय ॥
नारसिंह औ भैरों वाली ❀ तीसर जौन महमदा वीर ।
पुरिया डारी तहँ जादू की ❀ लंगे सबै बीर आधीर ॥
डारि मशान दयो लश्कर में ❀ नाहीं मना तलक मन्नाय ।
जादू मारी बंगाले की ❀ ऊदन भेड़ा लयो बनाय ॥

लैकै मेढ़ा बिजमाँ चलिभै ❀ पहुँची झारखण्ड में आय।
गुरु झिलमिला की मढ़ियामाँ ❀ मेढ़ा बँधा बिजैसिनि जाय॥
हाथ जोरिकै गुरुबाबा के ❀ औ सब हाल दीन समुझाय।
चली बिजैसिनि झारखण्ड ते ❀ पहुँची रङ्गमहल में आय॥
जितने जादू बिजमाँ डारे ❀ सो लश्कर ते लये उतार।
उतरी जादू जब लश्कर ते ❀ चेते सबै शूर सरदार॥
आल्हा बोले तब मलखे ते ❀ नहिं लखि परै लहुरवा भाय।
सुनिकै बातैं मलखे बोले ❀ देवा शकुन देव बतलाय॥
लैकै पोथी ज्योतिषवाली ❀ देवा हाल गयो सब गाय।
गुरु झिलमिलाकी मढ़ियामाँ ❀ बांधा तहां लहुरवा भाय॥
सुनिकै बातैं ये देवा की ❀ आल्हा बहुत गयो घबड़ाय।
देवा बोला फिर मलखे ते ❀ मानो कही बनाफरराय॥
बाना छोड़ो रजपूती का ❀ अँग माँ लेवो भस्म लगाय।
योगी बनिकै हम तुम जावैं ❀ तौ सब काम सिद्ध ह्वै जायँ॥
बातैं सुनिकै ये देवा की ❀ योगी बने बीर मलखान।
तुरतै चलिभे झारखण्ड को ❀ पहुँचे तहाँ दूनहू ज्वान॥
गुरु झिलमिलाकी मढ़िया ढिग ❀ गावैं तान बीर मलखान।
बाजै डमरू भल देवा कै ❀ सो परिगई भनक त्यहि कान॥
गुरु झिलमिला बाहर आयो ❀ योगी लखा तहाँ दुइ ज्वान।
हाथ पकरिकै लै मढ़िया में ❀ बाबा बड़ा कीन सनमान॥
बारे योगी हम दोउ भाई ❀ ऐसा कह्यो बीर मलखान।
अब हम जावैं हरद्वार को ❀ चाहैं कछू नहीं सनमान॥
रमता योगी बहता पानी ❀ ये नहिं करैं कतों विश्राम।
नहिं अभिलाषा क्यहू बातकी ❀ केवल जपैं राम को नाम॥

सुनिकै बातैं ये योगी की ❀ बोलातुरतझिलमिलाज्वान।
जो कछु मांगो सो कछु पावो ❀ हमरे वचन करो परमान॥
सुनिकै बातैं ये बाबा की ❀ बोले तुरत बनाफरराय।
मेढ़ा पावैं यहु बाबा जो ❀ तौ हम हरद्वार को जायँ॥
यहु तो कैदी है बिजमा का ❀ मांगो और वस्तु कछु भाय।
जो हम पावैं यहु मेढ़ा ना ❀ तुम्हरो योग अकारथ जाय॥
सुनिकै बातैं ये योगिन की ❀ झिलमिल मेढ़ा दीन गहाय।
योगी बोले तब झिलमिल ते ❀ याको मानुष देव बनाय॥
तबजलछिनक्योझिलमिलतापर ❀ मानुष भयो लहुरवाभाय।
चलिकै बाहर भे मढ़िया ते ❀ बोल्यो तुरत उदयसिंहराय॥
मारो दादा यहि योगी को ❀ तौ सब काम सिद्ध ह्वैजायँ।
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❀ लौटा तुरत बनाफरराय॥
मूड़ काटिकै फिरि बाबा को ❀ औ मढ़िया माँ दीन चलाय।
तीनों चलिभे फिरि तहँना ते ❀ औ लश्कर में पहुँचे आय॥
खबरि सुनाई सब आल्हा को ❀ डंका तुरत दीन बजवाय।
बाजे डंका अहतंका के ❀ मारू शब्द रहे हहराय॥
लैकै फौजै राजा जम्बा ❀ पहुँचा समरभूमि माँ आय।
बम्ब के गोला छूटन लागे ❀ धुँवना रहा सरग में छाय॥
जौने हाथी के गोला लागै ❀ मानो गिरा धौरहर आय।
जौने बछेड़ा के गोला लागै ❀ मानो गिरह कबूतर खाय॥
जौने क्षत्री के गोला लागै ❀ यमपुर तुरत देय दिखलाय।
गोला लागै ज्यहि सँड़िया के ❀ सो मुँहभरा तुरत गिरिजाय॥
जौने तम्बू गोला लागै ❀ त्यहिको लिये सरग मड़राय।
गोली ओली सम बर्षत भईं ❀ मानो मघा दीन झरिलाय॥

भाला बलछी खट खट बोलैं ❀ डोलैं तीनों तहाँ बयारि।
कउँधालपकनिबिजुलीचमकनि ❀ कहुँकहुँ देखिपरै तलवारि॥
तेगा चटकैं बर्दवान के ❀ कोता खानी चलैं कटार।
चहला उठिरहि तहँ चरबिनकी ❀ औ बहि चली रक्तकी धार॥
शूर सिपाही माड़ोवाले ❀ नंगी हाथ लिये तलवार।
चलै सिरोही तहँ सँभरा भरि ❀ ऊना चलै बिलाइति क्यार॥
दूनों फौजै यकमिल ह्वै गईं ❀ बीरन रहे बीर ललकार।
दुइ दुइ तुर्रन के बँधवैया ❀ ई सब डारि भागि तलवार॥
जितने कायर रहैं फौजन में ❀ तर लोथिन के रहे लुकाय।
हेला आवै जब हाथिन का ❀ तब बिन मरे मौत ह्वै जाय॥
देबा बोलै तब ऊदन ते ❀ हमरे सुनो बनाफरराय।
भागे क्षत्रिन को मार्यो ना ❀ नहिं सब क्षत्रीधर्म्म नशाय॥
फूल केतकी का सूँघ्यो ना ❀ जबलग फुलवा मिलै गुलाब।
दाया राख्यो द्विज देवन में ❀ ऊदन यही धर्म की आब॥
घोड़ी कबुतरी का चढ़वैया ❀ मलखे बड़ा लड़ैया ज्वान।
बहुतन मारै तलवारी सों ❀ बहुतन लेय ढाल सों प्रान॥
को गति बरणै तहँ सय्यद की ❀ नाहर सिरगापर असवार।
गुर्ज उठाये रण माँ झटकै ❀ पटकै बड़े बड़े सरदार॥
अली अली कहि सय्यद धावै ❀ रण माँ गली गली ह्वै जाय।
भली भली कहि आल्हा बोलै ❀ रण माँ थली थली थर्राय॥
चली चली तहँ धरती डोलै ❀ बोलैं हली हली सब गाय।
कली कली जस सारँग सम्पुट ❀ तैसे डली डली मिलिजायँ॥
को गति बरणै समरभूमि कै ❀ हमरे बूत कही ना जाय।
राजा जम्बा के मुर्चा पर ❀ कोउ रजपूत न रोकै पायँ॥

चीरिकै धोती मारि लँगोटी ❀ कोउ कोउ अंग बिभूति रमाय।
लोहुभरी माटी फिरि लैकै ❀ रामानन्दी तिलक लगाय॥
हमैं न मारो ओ रजपूतो ❀ हम तो जगन्नाथ को जायँ।
कोउकोउढालनकोबचुकाकरि ❀ पीठिम डारिलीन भय खाय॥
हम सौदागर हैं जयपुर के ❀ आये राजमहल में भाय।
पहिले फाटक के ऊपर माँ ❀ मुर्चा परा बरोबरि आय॥
जिन्हैं पियारी रहैं घर तिरिया ❀ तिन रण डारि दीन तलवारि।
हमैं न मारो हमैं न मारो ❀ दादा बापू करैं गुहारि॥
त्यही समैया त्यहि अवसर माँ ❀ बोला तहाँ वीर मलखान।
राजा जम्बा के मुर्चा पर ❀ ठहरे नहीं एकहू ज्वान॥
सुनिकै बातैं ये मलखे की ❀ आल्हा हाथी दीन बढ़ाय।
जम्बा केरे तहँ मुर्चा माँ ❀ पहुँचे तुरत बनाफरराय॥
हाथी जानै भल आल्हा को ❀ यहु है देशराज को लाल।
देशराज औ बच्छराज दोउ ❀ मेरो भलो कीन प्रतिपाल॥
ज्ञान जानवर में जैसो है ❀ मानुष नहीं दशो में पाँच।
गर्भवती नारी के ऊपर ❀ फिरिनहिंचढ़ै जानवर साँच॥

(रागानुरागोपदेशोपकारक सवैया)

साँच रह्यो मन ज्ञान बिराग में याँच रह्यो कर्त्ता कर्त्तारे।
आनि बिपत्ति परी शिर ऊपर राखु हरी भर्त्ता भर्त्तारे॥
जीव गुहार पुकार करी जब आय हरी कर्त्ता कर्त्तारे।
साँच न याँच करै ललिते तब नाहिं हरी भर्त्ता भर्त्तारे॥

तैसो हाथी तहँ आल्हा को ❀ साँचो जाति पाँति में साँच।
सूँड़ि लपेटे जंजीरन को ❀ मारै हेरि हेरि दश पाँच॥
बिकट लड़ाई हाथी कीन्ह्यो ❀ करणी रही समर में नाच।

जम्बा बोला तब आल्हा ते ❀ मानो बचन हमारे साँच ॥
तुम फिरिजावो म्वरे मुहरा ते ❀ हमरे बचन करो परमान ।
अबै न आल्हा कछु बिगरा है ❀ नाकछु बहुत भयो नुकसान ॥
पुत्र हमारे मरि चारो गे ❀ हमरे बरै करेजे आग ।
जोभगिजावो अब मोहबे को ❀ होवै बड़ी तुम्हारी भाग ॥
उठि कै हौदा ते आल्हारण ❀ बोले दूनों भुजा उठाय ।
रहे अधर्मी ना कौनो युग ❀ रावण कौरव के समुदाय ॥
काह हकीकत त्वरि जम्बा है ❀ कोल्हू डारे बाप पिराय ।
लरिका बिगरे अब ऊदन हैं ❀ जियतै कोल्हू डरैं पिसाय ॥
सँभरिकै बैठै अब हौदा पर ❀ जम्बा खबरदार ह्वै जाय ।
मारु सिरोही म्वरि छाती माँ ❀ कैसी लाये शान धराय ॥
हमरो बाना मरदाना है ❀ यह हम ठीक दीन बतलाय ।
उठै सिरोही जो रण हमरी ❀ तौ फिरि कौन परै दिखराय ॥
इतना सुनिकै नृप जम्बा ने ❀ कम्मर खैंचि लीन तलवार ।
ऐंचि तड़ाका फिरि मारा शिर ❀ आल्हा लीन ढाल पर वार ॥
आल्हा बोल्यो फिरि जम्बा ते ❀ दूसरि वार करो सरदार ।
खैंचि सिरोही जम्बा मारी ❀ आल्हा लीन ढाल पर वार ॥
कब्रों सिरोही जब बांधी ना ❀ मुर्चा खाय गई तब धार ।
वार तीसरी अब तुम मारौ ❀ राजा माड़ो के सरदार ॥
साँकरि दीन्ही पचशब्दा को ❀ आल्हा बोले बचन सुनाय ।
हौदा गिरावै तुम जम्बा का ❀ हमरे निमक अदा ह्वै जाय ॥
खैंचि सिरोही दोउ हाथन सों ❀ जम्बा कीन तीसरी वार ।
ढाल फाटिगै गैंड़ावाली ❀ बचिगा आल्हा परम जुझार ॥
साँकरि फेरी पचशब्दा ने ❀ हौदा तुरतै दीन गिराय ।

आल्हा कूदे फिरि हौदा ते ❀ पकस्यो नृपै तुरत ही आय॥
मलखे देबा सय्यद ऊदन ❀ चारो गये तहां पर आय।
बाँधिकै मुशकै नृप जम्बा की ❀ कूदन लागि चारिहू भाय॥
रूपन बारी को बुलवायो ❀ ताही समय उदयसिंहराय।
तुम चलि जावो बबुरी बन का ❀ द्यावलि मातै लाउ बुलाय॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❀ रूपन तुरत पहूंचा जाय।
चढ़े पालकी द्यावलि आई ❀ जहँ पर रहैं बनाफरराय॥
आगि लगाय दई महलन में ❀ करिया पाखदये करवाय।
लैकै कुंजी खोलि खजाना ❀ सो छकड़न में लीन लदाय॥
महल लूटिकै महरानिन के ❀ बबुरीबन का दीन पठाय।
तुरतै बांदी को बुलवायो ❀ औ यह कह्यो उदयसिंहराय॥
खबरि जनावो यह कुशलाको ❀ तुमको आल्हा रहे बुलाय।
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ बाँदी तुरत पहूँची जाय॥
खबरि सुनाई सब कुशलाको ❀ आई स्वऊ बेगि ही धाय।
रानी बोली तहँ आल्हा ते ❀ हमरे सुनो बनाफरराय॥
हाथ औरतन पर छाँड़्यो ना ❀ नहिं सब क्षत्रीधर्म नशाय।
सुनिकै बातैं ये कुशला की ❀ तुरतै ब्वला उदयसिंहराय॥
नहीं जनाना म्वर बाना है ❀ जो हम डरैं औरतैं मार।
चीरा कलँगी म्वरे बाप के ❀ औ दै देव नौलखाहार॥
डोलाबिजैसिनि को मँगवावो ❀ हमरे साथ देउ करवाय।
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❀ रानी गई सनाका खाय॥
कहा न मानैं इन लरिकनका ❀ तो को बैठ पूत औ भाय।
यहै सोचिकै मन अपने माँ ❀ डोला तुरत दीन मँगवाय॥
चीरा कलँगी को मँगवायो ❀ औ दै डस्यो नौलखाहार।

ऊदन बरगद के नीचे गे ❀ खपरी छुरी बाप की डार ॥
ऊदन देबा दोऊ मिलिकै ❀ कोल्हुन पास पहूँचे जाय ।
ठाढ़ पिरायो नृप जम्बा को ❀ पाछे मूड़ लीन कटवाय ॥
जहँ रहैं खुपड़ी देशराज की ❀ तहँ पर तुरत दीन टँगवाय ।
तब रनबोले वहि समयामें ❀ स्याबसितुम्हैंउदयसिंहराय ॥
पूत सुपूते तुम अस होवैं ❀ नाहीं भलोगर्भ गिरि जाय ।
पूत कुपूते ज्यहि घर होवैं ❀ जरिजरि मरैं बाप औ माय ॥
पुरिखा रोवैं परे नरक में ❀ नारी मरै जहर को खाय ।
गली गली में भाई रोवैं ❀ करहत ज्ञाति परोसी जायँ ॥
पूत सुपूतिनि सिंहिनि माता ❀ निर्भय होय पूत को पाय ।
गदही केरे दश बालक भे ❀ लादीअधिकअधिकसोजाय॥
पूत सुपूता एक बंश में ❀ पालै जातिपांति को भाय ।
जैसे बिरवा यक चन्दन को ❀ बन माँ देय गंध फैलाय ॥
डाहु बुझान्यो अब जियरे को ❀ बैरी डास्यो कल्हू पिराय ।
लैकै खुपरी भ्वरि काशी में ❀ किरिया कर्म करो सब जाय ॥
इतना कहिकै रन चुप्पे भे ❀ आल्हा तुरत पहूँचे आय ।
आल्हा बोले तहँ ऊदन ते ❀ लश्कर कूच देउ करवाय ॥
सुनिकै बातें ये आल्हा की ❀ रहिगे उदयसिंह शिरनाय ।
खम्भ गड़ायो मलयागिरिको ❀ पंडित तुरत लीन बुलवाय ॥
भाँवरि घूमी तहँ ऊदन ने ❀ आल्हा बोले बचन रिसाय ।
नहिं लै जैहैं यहि मोहबे हम ❀ मानो कही उदयसिंहराय ॥
जबसुधि करिहै पितु अपने की ❀ मारी स्ववत लहुरवाभाय ।
कन्या बैरी की ज्यहि के घर ❀ नाचै मृत्यु शीश पर आय ॥
त्यहिते मारो तुम ऊदन यहि ❀ तौ सब काम सिद्धि ह्वैजायँ ।

ऊदन बोले तब आल्हा ते ❀ दादा साँची देयँ बताय ॥
हम जो मारैं यहि तिरिया को ❀ तौ रजपूती जाय नशाय ।
बचन हमारे पर आई है ❀ मारैं कौन पाप पर भाय ॥
आल्हा बोले तब मलखे ते ❀ तुम सुनिलेउ हमारी ज्वान ।
खैंचि सिरोही को कम्मर से ❀ तुम यहि मरो बीरमलखान ॥
सुनिकै बातैं ये आल्हा की ❀ मलखे रामचन्द्र को ध्याय ।
खैंचिकै मारा रनि बिजमा को ❀ सो तहँ परी पछारा खाय ॥
ऊदन दौरे त्यहि समया में ❀ गोदी तुरत लीन बैठाय ।
आँसुन भिजयो रनि बिजमा को ❀ धीरजदीन लहुरवा भाय ॥
यह नहिं जानत हम प्यारी थे ❀ तुमका मरैं बीर मलखान ।
जेठे भाई मेरे मलखे हैं ❀ तिनसों काह करों मैदान ॥
और जो मारत कोउ क्षत्री त्वहिं ❀ तौ मैं कटा देत करवाय ।
अब बस मेरो कछु प्यारी नहिं ❀ है यहु पितासरिस बड़भाय ॥
धर्म पतिव्रत त्वर साँचो है ❀ हमरे मोह गयो मन छाय ।
अबकी बिछुरी फिरि कब मिलिहौ ❀ साँचे हाल देउ बतलाय ॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❀ बिजमा बोली बचन सुनाय ।
भोग बिलासै के कारण से ❀ संगिनि भइँनि पिया तव आय ॥
जेठ हमारे मलखे लागैं ❀ तिनम्वहिं भुइँमा दीन स्ववाय ।
मारे मलखे तहँ तुम जावो ❀ जहाँ न होय लहुरवा भाय ॥
शापित करिकै मलखाने को ❀ बिजमा बोली बचन उदार ।
बेटी ह्वैबे हम नरपति की ❀ फुलवा होई नाम हमार ॥
घोड़ खरीदन काबुल जैहौ ❀ तबहम मिलब तुम्हैं सरदार ।
यह तो देही हियनै रहिहै ❀ नरवर लेब और अवतार ॥
इतना कहिकै रानी बिजमा ❀ औमरि गई तड़ाका भाय ।

लाश उठाई बघऊदन ने ❀ औ नर्मदा बहाई जाय ॥
कूच के डंका बाजन लागे ❀ घूमन लागे लाल निशान ।
लाखापातुर देशराज की ❀ सो बुलवई बीर मलखान ॥
संगै देवलि के पलकी त्यहि ❀ तहँ ते कूच दीन करवाय ।
जौन सिपाही रहैं मुहबे के ❀ आल्हा तुरत लीन बुलवाय ॥
साल दुसाला काहू दीन्ह्यो ❀ काहू कड़ा दीन डरवाय ।
चीरा कलँगी दी काहू को ❀ काहू मोहर दीन छिदाय ॥
कूच कराये लोहागढ़ते ❀ बबुरीबनै पहूँचे आय ।
जितनी सामा रहै माड़ो की ❀ ताको ठीक ठाक करवाय ॥
जितनो करिया लै आवा ता ❀ तातें दशगुन अधिक बढ़ाय ।
आल्हा लैकै हुशियारी सों ❀ बोले मातै शीश नवाय ॥
हुकुम जो पावैं महतारी को ❀ मलखे साथ बनारस जायँ ।
चाचा दादा की किरिया करि ❀ पारैं पिण्ड गया में माय ॥
डरैं खुपड़ियाँ हम फलगू में ❀ तुमहू कूच देव करवाय ।
सुनिकै बातैं ये आल्हा की ❀ माता बारबार बलिजाय ॥
स्याबसिस्याबसिसबदलबोल्यो ❀ भे मन बड़े खुशी मलखान ।
पाँय लागि कै फिरि माता के ❀ तहँते चले दूनहू ज्वान ॥
ईतो पहुँचे ह्याँ काशी में ❀ ह्याँ उन कूच दीन करवाय ।
सत्रह दिनकी मैंजलि करिकै ❀ सबदल अटा मोहोबे आय ॥
बाजैं डंका अहतंका के ❀ बङ्का शङ्का को बिसराय ।
कम्मर छोरैं कोउ कोउ क्षत्री ❀ कोऊ रहे राम को ध्याय ॥
सय्यद देबा ऊदन मिलिकै ❀ तीनों चले जहाँ परिमाल ।
चरणन गिरिकै महराजा के ❀ औ सब कह्यो आपनो हाल ॥
तहँते उठिकै ऊदन चलिभे ❀ मल्हना महल पहूँचे जाय ।

चरणन गिरिकै महरानी के ❀ अपना हाल गये सब गाय ॥
बड़ी खुशाली भै मल्हना के ❀ बरणी कौन भाँति सो जाय ।
दान दच्छिणा बाँटन लागी ❀ तुरतै महलन बिप्र बुलाय ॥
जितनी माया रहै माड़ो की ❀ सो सब ऊदन तुरत मँगाय ।
जहाँ खजाना परिमालिक को ❀ तामें दीन सबै भरवाय ॥
बड़ी खुशाली भै मोहबेमाँ ❀ घर घर होयँ मङ्गलाचार ।
उजरिगोमाड़ोत्यहिसमयामाँ ❀ जहँ तहँ घूमैं श्वानसियार ॥
मैं पदबन्दौं पितु अपने के ❀ फिरि फिरि बारबार शिरनाय ।
करी सहायी यहि समया में ❀ तातें गयों कथा सब गाय ॥
आशिर्बाद देउँ मुंशी सुत ❀ जीवो प्रागनरायण भाय ।
हुकुम तुम्हारो जो होतो ना ❀ ललितेकहत कथाकसगाय ॥
रहै समुन्दर में जबलों जल ❀ जबलों रहैं चन्द्र औ सूर ।
मालिक ललिते के तबलों तुम ❀ यशसों रहौ सदा भरपूर ॥
माथ नवावों रामचन्द्र को ❀ करिकै कृष्णचन्द्र को ध्यान ।
दोउपद बन्दों शिवशंकर के ❀ गणपतिगणाधीशबलवान ॥
दोउपद ध्यावों महरानी के ❀ जिनअभिमानीडरे नशाय ।
पूरि तरंग यहाँ सों ह्वैगै ❀ तव पद सुमिरि दुर्गामाय ॥

माड़ोका युद्ध समाप्त ॥

चरणन गिरिकै महरानी के ❀ अपना हाल गये सब गाय ॥
बड़ी खुशाली भै मलहना के ❀ बरणी कौन भाँति सो जाय ।
दान दच्छिणा बाँटन लागी ❀ तुरतै महलन बिप्र बुलाय ॥
जितनी माया रहै माड़ो की ❀ सो सब ऊदन तुरत मँगाय ।
जहाँ खजाना परिमालिक को ❀ तामें दीन सबै भरवाय ॥
बड़ी खुशाली भै मोहबेमाँ ❀ घर घर होयँ मङ्गलाचार ।
उजरिगोमाड़ोत्यहिसमयामाँ ❀ जहँ तहँ घूमैं श्वानसियार ॥
मैं पदबन्दौं पितु अपने के ❀ फिरि फिरि बारबार शिरनाय ।
करी सहायी यहि समया में ❀ तातें गयों कथा सब गाय ॥
आशिर्बाद देउँ मुंशी सुत ❀ जीवो प्रागनरायण भाय ।
हुकुम तुम्हारो जो होतो ना ❀ ललितेकहत कथाकसगाय ॥
रहै समुन्दर में जबलों जल ❀ जबलों रहैं चन्द्र औ सूर ।
मालिक ललिते के तबलों तुम ❀ यशसों रहो सदा भरपूर ॥
माथ नवावों रामचन्द्र को ❀ करिकै कृष्णचन्द्र को ध्यान ।
दोउपद बन्दों शिवशंकर के ❀ गणपतिगणाधीशबलवान ॥
दोउपद ध्यावों महरानी के ❀ जिनअभिमानीडरे नशाय ।
पूरि तरंग यहाँ सों हैगै ❀ तव पद सुमिरि दुर्गामाय ॥

माड़ोका युद्ध समाप्त ॥

आल्हा का विवाह

आल्हखण्ड

नैनागढ़ की लड़ाई

अथवा

आल्हा का विवाह

सवैया ॥

दीनसहायक नाम तुम्हार सुना बहु ग्रन्थन में महराजा।
है शबरी गजगीध अजामिल ते अजहूँ जिहिको यशबाजा ॥
जो करणी सुमिरों इनकी तबहीं मन धैर्य्य लहै रघुराजा।
दीन पुकार करै ललिते प्रभु वेगि द्रवो हे गरीबनेवाजा ॥

सुमिरन ॥

गयानकीन्हीजिनकलियुगमाँ❀ काशिम घोड़ दान नहिंदीन।

जन्मत बैरी जिन मारा ना ❀ नाहक जन्म जगत में लीन ॥
पूजा कीन्ही नहिं शम्भू की ❀ अक्षत चन्दन फूल चढ़ाय ।
फिरि गलमँदरीजिनबाजीना ❀ मुख ना बम्ब बम्ब गा छाय ॥
भसमरमायो नहिं देही माँ ❀ कबहुँन लीन सुमिरनी हाथ ।
सोचन लायक ते आरय हैं ❀ जिन नहिं कबों नवायो माथ ॥
को अस देवता रहै शम्भू सम ❀ जिनको पूज्यो रामउदार ।
वेद उपनिषद के ज्ञाता रहैं ❀ जिनबल भयो रावणाछार ॥
छूटि सुमिरनी गै देवन कै ❀ शाका सुनो शूरमनक्यार ।
ब्याह बखानों मैं आल्हाका ❀ होई तहाँ भयानक मार ॥

अथ कथाप्रसंग

नैनागढ़ का जो महराजा ❀ साजा सबै भाँति कर्त्तार ।
राजा इन्दर का बरदानी ❀ औ नैपाली नाम उदार ॥
तिन घर कन्या इक पैदा भै ❀ सबबिधि रूप शीलगुणखान ।
पढ़िकै बिद्या सब जादूकी ❀ कछुदिनबादभई फिरिज्वान ॥
संगसहेलिन के खेलति भय ❀ सुनवाँ कही तासुका नाम ।
खेल लरिकई को जाहिर है ❀ लरिका ख्यलैं चारिहू याम ॥
खेलत खेलत फुलबगिया गईं ❀ सब मिलि करैं फुलनकी मार ।
कटहर बड़हर त्यहि बगिया में ❀ कहुँ कहुँ फूलिरही कचनार ॥
उठैं सुगन्धैं कहुँ चन्दन की ❀ कतहूँ कदलिन खड़ी कतार ।
गुम्मज सोहैं मोमशिरिन के ❀ कहुँ कहुँ फुलीं चमेलीडार ॥
बेला फूले अलबेला कहुँ ❀ खिन्निन लता गई बहुछाय ।
हर्र बहेरा साँखो बिरवा ❀ सीधे चले उपर को जायँ ॥
बरगद छैले हैं नीचे को ❀ फैले भूमि रहे नियराय ।
जैसे सम्पति सज्जन पावैं ❀ नीचे शीश झुकावत जायँ ॥

शीशम जानो तुमनीचनको ❀ आधे सरग फरहरा खायँ।
चलै कुल्हाड़ा जब नीचे ते ❀ गिरिकै टूक टूक ह्वै जायँ॥
को गति बरणै तहँ अधमन कै ❀ सोहैं करिल रूपते भाय।
ताल तमालन कै गिनती ना ❀ कदमन गई सघनता छाय॥
फूली नेवारी अब अगस्त्य हैं ❀ आमनडार कैलिया बोल।
सोहैं अशोकन के बिरवा भल ❀ तीनों तहाँ बयारी डोल॥
गूलर जामुन पाकर पीपर ❀ कोनन खड़े बृक्ष सरदार।
तार अपारन के बिरवा बहु ❀ कहुँ कहुँ खड़े बृक्ष कल्हार॥
टेसू फूले कहुँ सोहत हैं ❀ जैसे सोहैं लड़ैता ज्वान।
रूप गुलाबन को देखत खन ❀ फूलन छाँड़िदीन अभिमान॥
कौन कनैरन को बर्णन कर ❀ चाँदनि चाँद सरिस गै छाय।
फूल दुपहरी के भल सोहैं ❀ मोहैं मुनिन मनै अधिकाय॥
गेंदन केरे बहु बिरवा हैं ❀ अर्जुन बृक्ष परैं दिखराय।
मेला लाग्यो नौरङ्गिन का ❀ हेला निंबुन का दर्शाय॥
ठेला भरि भरि अमरूतन का ❀ माली राजभवन को जाय।
केवँड़ा केरी उठैं सुगन्धैं ❀ कहुँ कहुँ नागबेलिगै छाय॥
ताही बगिया सुनवाँ खेलै ❀ मेलै गले सखिन के हाथ।
सखियाँ बोलीं तहँ सुनवाँते ❀ तुम नितख्यलो हमारे साथ॥
पैर महावर पै तुम्हरे ना ❀ टिकुली नहीं बिराजै भाल।
द्रव्य तुम्हारे का घर नाहीं ❀ जो नहिं ब्याह करैं नरपाल॥
इतना कहिकै सब आलिनने ❀ औ करताली दीन बजाय।
समय दुपहरी को जान्यो जब ❀ तब फिरि खेलबन्द ह्वैजाय॥
कीरति गावैं सब आल्हा की ❀ माड़ो लिहेनि बाप का दायँ।
धन्य बनाफर उदयसिंह हैं ❀ आल्हा केर लहुरवा भाय॥

ऐसी बातें सखियाँ करतै ❀ अपने भवन पहूँची आय ।
ताही क्षणमें सुनवाँ मन में ❀ अपने ठीक लीन ठहराय ॥
ब्याही जैबे आल्हा सँग में ❀ की मरिजाब जहर को खाय ।
छाय उदासी गै चिहरा में ❀ पूंछै बार बार तब माय ॥
कौन रोगहै त्वरि देहीमाँ ❀ बेटी हाल देउ बतलाय ।
पीली ह्वैगै सब देही है ❀ औतनकाँपिकाँपिरहिजाय ॥
को हितकारी है मातासम ❀ नाता बड़ा जगत केहिभाय ।
अब तो बाबा कलियुग आये ❀ माता सहैं लात के घाय ॥
सुनिकै बातें ये माता की ❀ सुनवाँ चरणन शीश नवाय ।
जो कछु भाषा रहै सखियनने ❀ सुनवाँ मातैं गईं सुनाय ॥
सुनिकै बातैं सब कन्या की ❀ माता रही समय को देखि ।
यकदिन ऐसा आनपहूँचा ❀ राजा रहा कन्यका पेखि ॥
रानी बोली तब राजा ते ❀ हमरे बचन करो परमान ।
ब्याहन लायक यह कन्या भै ❀ सो तुम जानोनृपतिसुजान ॥
सुनिकै बातें ये रानी की ❀ बिजिया बेटा लीन बुलाय ।
नाई बारी को बुलवायो ❀ तिनते कह्योहाल समुझाय ॥
जयो मोहोबे ना टीका लै ❀ सब कहुँ जाउ तुरतही धाय ।
नाई बारी तुरतै चलिभे ❀ पहुँचे नगर नगर में जाय ॥
काहू टीका को लीन्ह्यो ना ❀ नैनागढ़ै पहूँचे आय ।
खबरि सुनाई सब राजा को ❀ नेगिन चरणन शीश नवाय ॥
जालिम राजा नैनागढ़ का ❀ राजन यही बिचारा जीय ।
मारे डरके छाती धड़कै ❀ कैसे होयँ तहां पर पीय ॥
थोरी थोरी फौजैं लैकै ❀ नैनागढ़ै पहूँचे आय ।
नजरी दीन्ह्यो नैपाली को ❀ राजा चरणन शीश नवाय ॥

सरबरि तुम्हरी का नाहीं हैं ❁ टीका लेयँ कहौ कस भाय।
कुमक तुम्हारी को आयन है ❁ राजन सत्य दीन बतलाय॥
त्यही समैया त्यहि औसरमाँ ❁ औ सुनवाँ को सुनो हवाल।
हीरामणि सुवना को लैकै ❁ सुनवाँ भई रोवासिनि बाल॥
चूम्यो चाट्यो त्यहि सुवना को ❁ औ फिरि कह्यो बचन यह गाय।
मेवा खायो भल पिंजरन में ❁ अब गाढ़े में होउ सहाय॥
लैकै पाती जाउ मोहोबे ❁ देवो उदयसिंह को जाय।
लिखी हकीकत सब आल्हा को ❁ सुनवाँ बारबार समुझाय॥
नामी ठाकुर तुम मोहबे में ❁ हमरो ब्याह करो अब आय।
नहिं मरिजायो जहर खाय कै ❁ दूनों भाइ बनाफरराय॥
लिखि कै पाती गल सुवना के ❁ सुनवाँ तुरत दीन लटकाय।
मूठी दीन्ह्यो फिरि कोठे ते ❁ सुवना चला मोहोबे जाय॥
चन्दन बगिया सुवना पहुँच्यो ❁ तहँ पर रहैं उदयसिंहराय।
चन्दन ऊपर सुवना बैठो ❁ परिगा दृष्टि तुरतही आय॥
भल चुचकार्‍यो उदयसिंहने ❁ आपन नाम दीन बतलाय।
सुवना बैठ्यो तब हाथेपर ❁ पाती छोरि लीन हर्षाय॥
बांचिकै पाती तब ऊदन ने ❁ औ सय्यद को दीन सुनाय।
सय्यद आल्हासों बतलायो ❁ मलखे देबै दीन बताय॥
लैकै पाती औ सुवना को ❁ गे परिमाल कचहरी धाय।
कही हकीकति सब राजा सों ❁ पाती दीन उदयसिंहराय॥
पढ़िकै पाती को परिमालिक ❁ मनमाँ गये सनाकाखाय।
होश उड़ान्यो परिमालिकका ❁ मुहँकाविरागयो कुम्हिलाय॥
बोलि न आवा परिमालिकसों ❁ औ ढाढ़ालों लार सुखाय।
थर थर थर थर देही काँपी ❁ शिरसों मुकुट गिरा महराय॥

ऐसी बातैं सखियाँ करतै ❀ अपने भवन पहूँची आय।
ताही क्षणमें सुनवाँ मन में ❀ अपने ठीक लीन ठहराय॥
ब्याही जैबे आल्हा सँग में ❀ की मरिजाब जहर को खाय।
छाय उदासी गै चिहरा में ❀ पूंछै बार बार तब माय॥
कौन रोगहै त्वरि देहीमाँ ❀ बेटी हाल देउ बतलाय।
पीली ह्वैगै सब देही है ❀ औतनकाँपिकाँपिरहिजाय॥
को हितकारी है मातासम ❀ नाता बड़ा जगत केहिभाय।
अब तो बाबा कलियुग आये ❀ माता सहैं लात के घाय॥
सुनिकै बातैं ये माता की ❀ सुनवाँ चरणन शीश नवाय।
जो कछु भाषा रहै सखियनने ❀ सुनवाँ मातैं गई सुनाय॥
सुनिकै बातैं सब कन्या की ❀ माता रही समय को देखि।
यकदिन ऐसा आनपहूँचा ❀ राजा रहा कन्यका पेखि॥
रानी बोली तब राजा ते ❀ हमरे बचन करो परमान।
ब्याहन लायक यह कन्या भै ❀ सो तुम जानो नृपतिसुजान॥
सुनिकै बातैं ये रानी की ❀ बिजिया बेटा लीन बुलाय।
नाई बारी को बुलवायो ❀ तिनते कह्यो हाल समुझाय॥
जयो मोहोबे ना टीका लै ❀ सब कहुँ जाउ तुरतही धाय।
नाई बारी तुरतै चलिभे ❀ पहुँचे नगर नगर में जाय॥
काहू टीका को लीन्ह्यो ना ❀ नैनागढ़ै पहूँचे आय।
खबरि सुनाई सब राजा को ❀ नेगिन चरणन शीश नवाय॥
जालिम राजा नैनागढ़ का ❀ राजन यही बिचारा जीय।
मारे डरके छाती धड़कै ❀ कैसे होयँ तहां पर पीय॥
थोरी थोरी फौजैं लैकै ❀ नैनागढ़ै पहूँचे आय।
नजरी दीन्ह्यो नेपाली को ❀ राजा चरणन शीश नवाय॥

सरबरि तुम्हरी का नाहीं हैं ❀ टीका लेयँ कहौ कस भाय ।
कुमक तुम्हारी को आयन है ❀ राजन सत्य दीन बतलाय ॥
त्यही समैया त्यहि औसरमाँ ❀ औ सुनवाँ को सुनो हवाल ।
हीरामणि सुवना को लैकै ❀ सुनवाँ भई रोवासिनि बाल ॥
चूम्यो चाट्यो त्यहि सुवना को ❀ औ फिरि कह्यो बचन यह गाय ।
मेवा खायो भल पिंजरन में ❀ अब गाढ़े में होउ सहाय ॥
लैकै पाती जाउ मोहोबे ❀ देवो उदयसिंह को जाय ।
लिखी हकीकत सब आल्हाको ❀ सुनवाँ बारबार समुझाय ॥
नामी ठाकुर तुम मोहबे में ❀ हमरो ब्याह करो अब आय ।
नहिं मरिजायो जहर खाय कै ❀ दूनों भाइ बनाफरराय ॥
लिखि कै पाती गल सुवना के ❀ सुनवाँ तुरत दीन लटकाय ।
मूठी दीन्ह्यो फिरि कोठे ते ❀ सुवना चला मोहोबे जाय ॥
चन्दन बगिया सुवना पहुँच्यो ❀ तहँ पर रहैं उदयसिंहराय ।
चन्दन ऊपर सुवना बैठो ❀ परिगा दृष्टि तुरतही आय ॥
भल चुचकार्यो उदयसिंहने ❀ आपन नाम दीन बतलाय ।
सुवना बैठ्यो तब हाथेपर ❀ पाती छोरि लीन हर्षाय ॥
बांचिकै पाती तब ऊदन ने ❀ औ सय्यद को दीन सुनाय ।
सय्यद आल्हासों बतलायो ❀ मलखे देबै दीन बताय ॥
लैकै पाती औ सुवना को ❀ गे परिमाल कचहरी धाय ।
कही हकीकति सब राजा सों ❀ पाती दीन उदयसिंहराय ॥
पढ़िकै पाती को परिमालिक ❀ मनमाँ गये सनाकाखाय ।
होश उड़ान्यो परिमालिकका ❀ मुहँका बिरागयो कुम्हिलाय ॥
बोलि न आवा परिमालिकसों ❀ औ ढ्वाढ़ालों लार सुखाय ।
थर थर थर थर देही काँपी ❀ शिरसों मुकुट गिरा महराय ॥

रोम रोम सब ठाढ़े ह्वैगे ❀ नैनन बही आँसु की धार।
धीरजधरिकैपरिमालिक फिरि ❀ औ मलखे तन रहे निहार॥
मलखे बोले तब राजा ते ❀ साँचे बचन सुनो नरपाल।
टीका पठयो है बेटी ने ❀ सोनहिंलौटिसकैक्यहुकाल॥
सुनिकै बातैं मलखाने की ❀ बोले तुरत रजापरिमाल।
ब्याधि नशायो गढ़माड़ो की ❀ दूसरि ब्याधिभयोफिरिहाल॥
टीका फेरो नयनागढ़ को ❀ मलखे मानो कही हमार।
जालिम राजा नयपाली है ❀ ज्यहिघर अमरढोल सरदार॥
कौन बियाहन त्यहि घर जैहै ❀ ऐहै लौटि कौन बलवान।
टीका फेरो सब राजन ने ❀ मानो कही बीर मलखान॥

सवैया॥

शान चढ़ी मलखान के ऊपर आन नहीं कछुहू नृप राखी।
मोहिं पियार न प्राण भुवार कहौं मैं सत्य सदाशिव साखी॥
कीरतिही प्रिय बीरन को हम शान कि आन सदा मनमाखी।
आन रहै नहिं शान कि जो मरिजान भलो ललिते हम भाखी॥

आल्हा के ब्याह की पहली लड़ाई

इतना कहिकै मलखाने ने ❀ डंका तुरत दीन बजवाय।
लिखिकै उत्तर उदयसिंहने ❀ सुवना गरे दीन लटकाय॥
उड़िकै सुवना फिरि मोहबे ते ❀ सुनवाँ पास पहूँचा आय।
रानी मल्हना के महलन में ❀ राजा तुरत पहूँचे जाय॥
हाल बतायो सब मल्हना को ❀ सुनतै गई सनाका खाय।
मलखे देबा को बुलवायो ❀ सुनतै गये महल में आय॥
मल्हना बोली तब मलखे ते ❀ बेटा हाल देउ बतलाय।

काहे डंका तुम्हरे बाजे ❀ कहँ चढ़ि जाउ बनाफरराय ॥
हाथ जोरिकै मलखे बोले ❀ मल्हना चरणन शीश नवाय ।
पाती आई नैनागढ़ की ❀ आल्हा तहाँ बियाहन जाँय ॥
सुनिकै बातैं मलखाने की ❀ मल्हना देवै कहा सुनाय ।
शकुन तुम्हारे सों मलखाने ❀ माड़ो लीन बाप का दाँग ॥
कैसी गुजरी नैनागढ़ में ❀ सो सब हाल देव बतलाय ।
सुनिकै बातैं ये मल्हना की ❀ देवा पोथी लीन मँगाय ॥
लैकै पोथी ज्योतिषवाली ❀ औ सब हाल दीन बतलाय ।
जीति तुम्हारी अबहूँ ह्वैहै ❀ साँची बात कहैं हम माय ॥
इतना कहिकै दूनों चलि भे ❀ महलन भये मंगलाचार ।
बांदी आंगन लीपन लागी ❀ पंडित साइत रहे बिचार ॥
एक कुमारी तेल चढ़ावै ❀ गावनलगीं सखी त्यहिकाल ।
माय मंतरा भे पाछे सों ❀ नेगिन नेग दीन परिमाल ॥
लैकै महाउर नाइनि आई ❀ नहखुर होन लाग त्यहि बार ।
नाइनि मांग्यो तहँ पुरवा को ❀ दीन्ह्यो मल्हना परम उदार ॥
उबटन करि कै तन केसर सों ❀ निर्मलजलसोंफिरिअन्हवाय ।
कंकण बांधा गा आल्हा के ❀ दूलह बने बनाफरराय ॥
सजी पालकी तहँ ठाढ़ी थी ❀ तापर बैठि शम्भु को ध्याय ।
कुँवा बियाहन आल्हा पहुंचे ❀ मल्हना पैर दीन लटकाय ॥
पहिली भाँवरि के फिरतै खन ❀ आल्हा गहा चरण को धाय ।
बाग लगावों तेरे नाम को ❀ माता लेवो चरण उठाय ॥
ऐसो कहिकै सातों भाँवरि ❀ घूमा तुरत बनाफरराय ।
मल्हनाबोली फिरि आल्हासों ❀ सेयों तुमको दूध पियाय ॥
तासों धावलि सों अधिकी मैं ❀ तासों पैर दीन लटकाय ।

पंजा फरवो फिरि पीठी माँ ❀ तुम्हरो बार न बाँको जाय ॥
पाँय लागिकै फिरिग्यावलिके ❀ पलकी चढ़े बनाफरराय ।
हुकुम लगायो बघऊदन ने ❀ डंका बजन लाग घहराय ॥
घोड़ करिलिया आल्हावाला ❀ कोतल चला पालकी साथ ।
मलखे पपिहा पर बैठत भे ❀ नायकै रामचन्द्र को माथ ॥
घोड़ा मनोहरा की पीठी माँ ❀ देवा तुरत भयो असवार ।
सय्यद सिरगा पर बैठत भे ❀ नाहर बनरस के सरदार ॥
अली अलामत औ दरियाखाँ ❀ बेटा जानबेग सुल्तान ।
तेगबहादुर अलीबहादुर ❀ बैठे घोड़ आपने ज्वान ॥
मीरताल्हन के लरिका ये ❀ नाहर समरधनी तलवार ।
मन्ना गूजर मोहबेवालो ❀ सोऊ बेगि भयो असवार ॥
सातलाख लग फौजैं सजिकै ❀ नैनागढ़ को भई तयार ।
डंका बाजैं अहतंका के ❀ ऊदन बेंदुल पर असवार ॥
सजे बराती सब मोहबे के ❀ जल्दी कूच दीन करवाय ।
सात रोज की मैजलि करिकै ❀ फौजैं आटीं धुरा पर आय ॥
आठ कोस नैनागढ़ रहिगा ❀ तहँ पर डेरा दीन डराय ।
तम्बू गड़िगा तहँ आल्हा का ❀ बैठे सबै शूरमा आय ॥
ऊँचे ऊँचे तम्बू गड़िगे ❀ नीचे लागीं खूब बजार ।
कम्मर छोरे रजपूतन ने ❀ हाथिन हौदा धरे उतार ॥
तंग बछेड़न की छोरी गइँ ❀ क्षत्रिन धरा ढाल तलवार ।
बनी रसोईं रजपूतन की ❀ सबहिन जेंयलीन ज्यँवनार ॥
गा हरकारा तब तहँना ते ❀ जहँना भरी लाग दरबार ।
बैठक बैठे सब क्षत्री हैं ❀ एक ते एक शूर सरदार ॥
गम् गम् गम् गम् तबला गमकैं ❀ किन् किन् परी मँजीरन मार ।

को गति बरणै सारंगी कै ❀ होवै नाच पतुरियन क्यार ॥
खये अफीमन के गोला कोउ ❀ पलकैं मूंदैं औ रहि जायँ।
कोऊ जमाये हैं भांगन को ❀ मन माँ रहे रामयश गाय ॥
उड़ै तमाखू बुटवलवाली ❀ धुँवना रहा तहाँ पर छाय।
हाथ जोरि औ बिनती करिकै ❀ धावन बोल्यो शीश नवाय ॥
अईं बरातैं क्यहु राजा की ❀ धूरे परीं आज ही आय।
आठ कोस के हैं दूरी पर ❀ सांची खबरि दीन बतलाय ॥
सुनिकै बातैं नयपाली ने ❀ तीनों लड़िका लये बुलाय।
जोगा भोगा औ बिजिया ते ❀ राजा बोल्यो बचन सुनाय ॥
जावो जल्दी तुम धूरे पर ❀ हमको खबरि सुनावो आय।
सुनिकै बातैं तीनों चलिभे ❀ धूरे तुरत पहूंचे जाय ॥
ऊंचे टिकुरी तीनों चढ़िकै ❀ दूरि ते देखैं तमाशा भाय।
देखिकै फौजैं मलखाने की ❀ तीनों गये तहाँ सन्नाय ॥
तीनों लौटे त्यहि टिकुरी ते ❀ अपने महल पहूंचे आय।
भोजन केरी फिरि बिरिया माँ ❀ राजै खबरि दीन बतलाय ॥
लगी कचहरी ह्वाँ आल्हा की ❀ भारी लाग तहाँ दरबार।
बैठक बैठे सब चत्री हैं ❀ एक ते एक शूर सरदार ॥
मीरताल्हन बनरसवाले ❀ आली खानदान के ज्वान।
बड़े पियारे ते चत्रिन के ❀ अपने धर्म कर्म अनुमान ॥
सच्चे साथी रहैं चारों के ❀ यारो मानो कही हमार।
ऐसे होते जो सय्यद ना ❀ कैसे बने रहत सरदार ॥
अली अलामत औ दरियाखाँ ❀ बेटा जानबेग सुल्तान।
औरो लड़िका रहैं सय्यद के ❀ एक ते एक रूप गुणखान ॥
मन्ना गूजर मोहबेवाला ❀ बैठा बड़ा सजीला ज्वान।

रुपना बारी ते त्यहि समया ❀ बोले तहाँ वीर मलखान ॥
ऐपनवारी बारी लैकै ❀ राजद्वार पहूंचो जाय ।
सुनिकै बातैं मलखाने की ❀ रुपना बोला शीश नवाय ॥
औरो नेगी मोहबेवाले ❀ आये साथ बनाफरराय ।
ऐपनवारी बारी लैकै ❀ द्वारे मूड़ कटावै जाय ॥
सुनिकै बातैं ये रुपना की ❀ बोले तुरत उदयसिंहराय ।
तुमको नेगी हम मानैं ना ❀ जानैं सदा आपनो भाय ॥
ददा बियाहन को रहि हैं ना ❀ बतियाँ कहिबे को रहि जायँ ।
यश नहिं जावै नर मरि जावै ❀ परहित देवै मूड़ कटाय ॥
स्वारथ देही तब नरकेही ❀ नेही मरे न पावै चाम ।
सन्मुख जूझै समरभूमि में ❀ जावै तुरत हरी के धाम ॥
बड़े प्रतापी जग में जाहिर ❀ मनियाँदेव मोहोबे केर ।
तिनके सेवक तेई रक्षक ❀ रूपन काह लगावो देर ॥
रूपन बोला तब मलखे ते ❀ दादा मानो कही हमार ।
घोड़ करिलिया आल्हावाला ❀ अपने हाथ देउ तलवार ॥
सुनिकै बातैं ये रुपना की ❀ मलखे घोड़ दीन सजवाय ।
ढाल खड्ग रुपना को दैकै ❀ बैठे तुरत बनाफरराय ॥
बैठिकै रुपना फिरि घोड़े पर ❀ ऐपनवारी लीन उठाय ।
चारि घरी को अरसा गुजरो ❀ नैनागढ़ै पहूँचो जाय ॥
देखिकै बारी दरवानी ने ❀ भारी हाँक दीन ललकार ।
कहां ते आयो औ कहँ जैहो ❀ बोलो घोड़े के असवार ॥
सुनिकै बातैं द्वारपाल की ❀ रूपन बोला वचन उदार ।
आल्हा व्याहन को हम आये ❀ नामी मोहबे के सरदार ॥
खबरि सुनावो नैपाली को ❀ फिरि तुम हमैं सुनावो आय ।

ऐपनवारी बारी लायो ❀ ताको नेग देव पठवाय ॥
सुनिकै बोलो द्वारपाल फिरि ❀ तुम्हरो नेग काह है भाय ।
सोऊ सुनावों महराजा को ❀ लादे लिहे घोड़ पर जाय ॥
सुनिकै बातैं द्वारपाल की ❀ रूपन बोला वचन उदार ।
चारि घरी भर चलै सिरोही ❀ द्वारे बहै रक्त की धार ॥
नेग हमारो यहु प्यारो है ❀ देवो पठै स्वई सरदार ।
जाहि पियारो तन होवै ना ❀ आवै स्वई शूर अब द्वार ॥
सुनिकै बातैं ये बारी की ❀ आरी द्वारपाल ह्वै जाय ।
मन में सोचै मनै बिचारै ❀ मन में बार बार पछिताय ॥
कैसो बारी यहु आयो है ❀ नाहर घोड़े का असवार ।
जालिम राजा नैपाली है ❀ तासों कौन चहै तलवार ॥
यहै सोचिकै द्वारपाल ने ❀ औ रूपन ते कहा सुनाय ।
गरमी तुम्हरी जो उतरी हो ❀ बोलो ठीक ठीक तुम भाय ॥
सुनिकै बातैं दरवानी की ❀ रूपन गरू दीन ललकार ।
नगर मोहोबा जग में जाहिर ❀ नामी मोहबे के सरदार ॥
तिनको नेगी मैं द्वारे पर ❀ लीन्हे खड़ा ढाल तलवार ।
जौन शूरमा हो नैनागढ़ ❀ आवै देय नेग सो द्वार ॥
इतनी सुनिकै दरवानी ने ❀ राजै खबरि सुनाई जाय ।
ऐपनवारी बारी लावा ❀ भारी बात कहै सो गाय ॥
चारि घरी भर चलै सिरोही ❀ द्वारे बहै रक्त की धार ।
जौन शूरमा हो राजा घर ❀ आवै देय नेग सो द्वार ॥
इतना सुनतै महराजा के ❀ नैना अग्नि बरण ह्वै जायँ ।
पूरण राजा पटनावाला ❀ बोला राजै बचन सुनाय ॥
हम चलि जावैं अब द्वारे पर ❀ बारी नेग देयँ चुकवाय ।

इतना कहिकै चलि ठाढ़ो भो ❀ साथै औरो चले रिसाय ॥

सवैया

द्वार चले तलवार लिये रट मारहि मार कुमारन पेखा।
लाल गुपाल गहे करबाल ख्यलैं जस फाग भयउ तस भेखा॥
मार अपार जुझार किये औ गिरे रणखेत रहे नहिं शेखा।
बारी करै कब रारी नृपै ललिते मलखान कि है यह लेखा॥

पूरण राजा पटनावाला ❀ लीन्हे नांगि हाथ तलवार।
सो धरि धमका त्यहि रूपन के ❀ रूपन लीन ढाल पर वार॥
सांगि उठाई फिर रूपन ने ❀ राजै बार बार ललकार।
लटुवा लाग्यो पूरन शिर में ❀ औ बहि चली रक्त की धार॥
अगल बगल के फिरि मारत भा ❀ दाँयें बाँयें दीन हटाय।
एँड़ा मसके फिरि घोड़ा के ❀ फाटक तुरत पार ह्वै जाय॥
गली गली में फिरि मारत भो ❀ औ बहि चली रक्त की धार।
घरी चार के फिरि अरसा में ❀ लश्कर आय गयो असवार॥
लाले रँग सों भीजे दीख्यो ❀ फागुन टेसू के अनुराग।
पूँछी हकीकति तब मलखे ने ❀ नाहर मोहबे के सरदार॥
कैसी गुजरी नैनागढ़ में ❀ रूपन हाल देउ बतलाय।
सुनिकै बातैं मलखाने की ❀ रूपन यथातथ्य गा गाय॥
हल्ला ह्वैगा नैनागढ़ माँ ❀ जहँतहँकहनलागि सबकोय।
ऐस बहादुर जहँ के परजा ❀ तहँ के नृपति कहौ कसहोयँ॥
देखि तमाशा यहु बारी का ❀ राजा बार बार पछिताय।
बड़ी हीनता हमरी ह्वैगै ❀ बारी जियत निकरिगा हाय॥
जोगा भोगा दोऊ लरिका ❀ बोले हाथ जोरि शिरनाय।
हुकुम जो पावैं महराजा का ❀ सबकी कटा देयँ करवाय॥

जितनी राँड़ैं चढ़ि आई हैं ❀ सो बिन घाव एक ना जायँ।
खेदिकै मारैं हम मोहबे लग ❀ टेटुवा टायर लेयँ छिनाय॥
सुनिकै बातैं ये लरिकन की ❀ राजै हुकुम दीन फरमाय।
तुरत नगड़ची को बुलवायो ❀ तासों बोल्यो हुकुम सुनाय॥
बजै नगाड़ा नैनागढ़ में ❀ सबियाँ फौज होय तय्यार।
भोर भुरहरे पहफाटत खन ❀ मारों मुहबे के सरदार॥
इतना कहिकै दूनों चलिभे ❀ अपने महल पहूँचे जाय।
खेत छूटिगा दिननायक सों ❀ झण्डा गड़ा निशा को आय॥
तारागण सब चमकन लागे ❀ सन्तन धुनी दीन परचाय।
परेआलसी निजनिज खटिया ❀ घों घों कंठ रहे घर्राय॥
माथ नवावों पितु अपने को ❀ जो नित मेरी करैं सहाय।
करों तरंग यहाँ सों पूरण ❀ पूरण ब्रह्म राम को ध्याय॥
आगे फौजै दूनों सजि हैं ❀ मचि हैं घोर शोर घमसान।
जोगा भोगा के मुर्चा पर ❀ लड़ि हैं खूब बीर मलखान॥
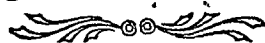
कवित्त

अंजली दिहेते रोग देहसों हटाय देत ध्यान के धरेते दुख दारिद दिखातना।
ज्ञानसों बिचारे मान राजैसों कराय देत नाम के उचारे मुक्ति पदवी बिलातना॥
धारे उर व्रत काम क्रोधहू नशाय देत दीनह्वै पुकार करे खीन कुम्हिलातना।
बोरि देत विघ्नन्न मिरोरि देत शत्रुमुख ललित करजोरे पाप रंचहू लखातना॥

सुमिरन

मारतण्ड मैं तुमको सुमिरों ❀ धरिकै चरणकमल में माथ।
सूर्य्य भास्कर सविता रवि औ ❀ औरो नाम बहुत दिननाथ॥
कथा पुराणन में पढ़िकै मैं ❀ जानों काश्यपेय महराज।
जो कोउ आयो तव शरणागत ❀ गई न तासु कबों जगलाज॥

तुम्हरे कुल माँ रघुनन्दन भे ❀ बन्दन करैं ललित तिनक्यार।
अच्छत चन्दन औ फूलन सों ❀ मानस पूजन सदा हमार॥
तुम्ही सहाई हौ दीनन के ❀ गाई सबै पुराणन गाथ।
स्वई भरोसा धरि जियरे माँ ❀ जावा चहौं नांघि भवपाथ॥
छूटि सुमिरनी गै देवन कै ❀ शाका सुनो शूरमन क्यार।
जोगा भोगा दोऊ लड़ि हैं ❀ लड़ि हैं उदयसिंह सरदार॥

अथ कथाप्रसंग

उदय दिवाकर भे पूरब माँ ❀ किरणनकीनजगतउजियार।
डंका बाज्यो नैनागढ़ माँ ❀ सबियाँ फौज भई तय्यार॥
बसैं बघेले औ चन्देले ❀ पाँवर सूरबंश सरदार।
माड़वाड़ के क्षत्री साजे ❀ औ परिहार गुटैयाचार॥
हाड़ा वाले बूँदी वाले ❀ औ रइठाउर लीन सजाय।
तुरत निकुम्भन को सजवायो ❀ औ गौरन को लीन बुलाय॥
सजि गुहलौता औ कछवाये ❀ बहुतक चन्द्रबंश के ज्वान।
तोमर ठाकुर तुमरवार के ❀ सजिगे मैनपुरी चवहान॥
सजे भदावर वाले क्षत्री ❀ सजिगे गहिलवार सरदार।
बैस डौंड़ियाखेरे वाले ❀ जिनके बांट परी तलवार॥
हबशी साजे औ दुर्रानी ❀ जे मनइन के करैं अहार।
कुरी छतीसों सब सजवाई ❀ ठाकुर सबै भये तय्यार॥
पूरन राजा पटनावाला ❀ सोऊ लीन ढाल तलवार।
जोगा भोगा दोनों ठाकुर ❀ अपने घोड़न भे असवार॥
रण की मौहरि वाजन लागी ❀ रण का होन लाग व्यवहार।
ढाढ़ी करखा बोलन लागे ❀ विप्रन कीन वेद उच्चार॥
मारु मारु कै मौहरि वाजी ❀ वाजी हाव हाव करनाल।

को गति बरणै तहँ क्षत्रिन कै ❀ एक ते एक दई के लाल ॥
हनु हंकारनि तोपैं सजि गईं ❀ जिनसों होय घोर घमसान ।
मारू डंका बाजन लागे ❀ घूमन लागे लाल निशान ॥
खर खर खर खर कै रथ दौरे ❀ रब्बा चले पवन की चाल ।
खट पट खट पट तेगा बोलैं ❀ मर मर होयँ गैंड़की ढाल ॥
धक धक धक धक करैं महावत ❀ हाथी धकापेल चलिजायँ ।
कोउ कोउ घोड़ा मोरचालपर ❀ कोउ कोउ सरपट रहे भगाय ॥
कोउ कोउ घोडा हंस चालपर ❀ कोउ कोउ चले कदमपर जायँ ।
कोउ कोउ घोड़ा ऐसे जावैं ❀ जिनकै टाप न परै सुनाय ॥
कोउ कोउ घोड़ा कावा देवैं ❀ कोउ कोउ गर्जि रहे असवार ।
कउँधालपकनि बिजुलीचमकनि ❀ चमचम चमाचम्म तलवार ॥
घन घन घन घन घंटा बाजैं ❀ घूमत चलैं मत्त गजराज ।
बल बल बल बल करैं साँड़िया ❀ भागत चलैं समर के काज ॥
हिन हिन हिन हिन घोड़ा हींसैं ❀ खीसैं कायर देखि परान ।
छाय अँधेरिया गै पृथ्वी में ❀ गर्दा छाय गई असमान ॥
देवता सकुचे आसमान में ❀ जंगल जीव गये थर्राय ।
घरी चार के फिरि अर्सा में ❀ सेना अटी समर में आय ॥
धूली दीख्यो आसमान में ❀ मलखे बोल्यो बचन सुनाय ।
सजो बेंदुला के चढ़वैया ❀ फौजैं गईं उपर अब आय ॥
सुनिकै बातैं मलखाने की ❀ ऊदन गरू दीन ललकार ।
सजो सिपाही मोहबे वाले ❀ सत्रियाँ फौज होय तैयार ॥
झीलमबखतरपहिरिसिपाहिन ❀ हाथ म लीन ढाल तलवार ।
सिरगा घोड़े की पीठीमाँ ❀ सय्यद तुरत भये असवार ॥
चढ़ो कबुतरी में मलखाने ❀ अपनी लिये ढाल तलवार ।

घोड़ मनोहर की पीठी माँ ❀ देबा चढ़त न लागी बार॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातु की ❀ सो चरखिन में दीन चढ़ाय।
लै लै थैली बारूदन की ❀ सो तोपन में दई चलाय॥
बत्ती दइ दइ फिर तोपन में ❀ रंजक तुरत दीन धरवाय।
बम्ब के गोला छूटन लागे ❀ परलय जनो गई नगच्याय॥
गोली ओला सम बर्षत भईं ❀ भनभन भन्न भन्न भन्नाय।
सर सर सर सर कै शर छूटैं ❀ मन मन मन्न मन्न मन्नाय॥
खट खट खट खट तेगा बोलैं ❀ हट हट करैं लड़ैता ज्वान।
बड़ी लड़ाई भै नैनागढ़ ❀ जोगा भोगा के मैदान॥
सूँड़ि लपेटा हाथी भिड़िगे ❀ अंकुश भिड़े महौतन केर।
हौदा हौदा यकमिल ह्वैगे ❀ मारैं एक एकको हेर॥
सात लाख दल मलखे लीन्हे ❀ भोगा पांच लाख परमान।
मीरा ताल्हन औ जोगा का ❀ परिगा समर बरोबरि आन॥
भोगा बोला तब ऊदन ते ❀ ओ परदेशी बात बनाय।
कहाँ ते आयो औ का करिहौ ❀ आपन हाल देव बतलाय॥
ऊदन बोले तब भोगाते ❀ तुमते सत्य देयँ बतलाय।
देश हमारो नगर मोहोबा ❀ जहँ पर बसै चँदेलाराय॥
छोटे भैया हम आल्हा के ❀ औ ऊदन है नाम हमार।
सुनवाँ व्याहन आल्हा आये ❀ मानों सत्य बचन सरदार॥
बाँधिकै मुशकै त्वरे बप्पा की ❀ भँवरी फिरी बड़कवा भाय।
नीके व्याहौ घर फिरिजावो ❀ अपने बाप देउ समुझाय॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❀ भोगा कालरूप ह्वैजाय।
धोखे माड़ो के भूल्यो ना ❀ जहँ लै लियो बापका दायँ॥
जाति बनाफर की ओछी है ❀ औ सब क्षत्रिन केर उतार।

कठिन बिसाने जग में जाहिर ❀ मोहबे लौटि जाउ सरदार ॥
बातैं सुनिकै ये भोगा की ❀ बोला बिहँसि लहुरवा भाय ।
नदिया भागें तौ गंगाजायँ ❀ गंगा भागि समुन्दर जायँ ॥
महादेव अघाते भागें ❀ धरती लौटि रसातल जाय ।
ऊदन भागें समरभूमि ते ❀ तौ फिरि भागि कहांको जायँ ॥
इतना कहिकै बघऊदन ने ❀ सुमिरी हृदय शारदा माय ।
देवी शारदा मइहरवाली ❀ मानों गई भुजापर आय ॥
बाहू फरके बघऊदन के ❀ फौजन घुसा बनाफरराय ।
जैसे भेड़िन भेड़हा पैठै ❀ जैसे अहिर बिडारै गाय ॥
तैसे क्षत्री ऊदन देखैं ❀ भागैं तुरतै पीठि दिखाय ।
बड़ी लड़ाई मलखे कीन्हों ❀ अद्भुतसमर कहा ना जाय ॥
घोड़ मनोहर की पीठीपर ❀ देबा गरू करै ललकार ।
हनि हनि मारै रजपूतन को ❀ बहुतक जूझिगये सरदार ॥
अली अलामत औ दरियाखाँ ❀ बेटा जानबेग सुल्तान ।
ये सब लड़िका सय्यदवाले ❀ तहँपर करैं घोर घमसान ॥
मन्ना गूजर मोहबेवाला ❀ दोऊ हाथ करै तलवार ।
जोगा भोगा पूरन राजा ❀ येऊ करैं तहां पर मार ॥
जुझे सिपाही नैनागढ़ के ❀ लगभग एक लाख के ज्वान ।
पांच सहस मोहबे के जूझे ❀ करिकै समर भूमि मैदान ॥
जोगा बोला तब भोगा ते ❀ मानो कही हमारी बात ।
खबरि सुनावो महराजा को ❀ जैसी देखि परै कुशलात ॥
सुनिकै बातैं भोगा चलिभा ❀ नैनागढ़ै पहूँचा जाय ।
हाथ जोरिकै महराजा के ❀ भोगा यथातथ्य गा गाय ॥
सुनिकै बातैं महराजा ने ❀ लायो अमरढोल को जाय ।

सो दै दीन्ह्यो कर भोगा के ❀ भोगा चलिभा शीशनवाय ॥
आयकै पहुँच्यो समर भूमि में ❀ भोगा दीन्ह्यो ढोल बजाय ।
मुर्दा उठिकै जिन्दा ह्वैगे ❀ घैहा उठे तुरत हरषाय ॥
उठे सिपाही नैनागढ़ के ❀ मारैं खैंचि खैंचि तलवार ।
मारे मारे तलवारिन के ❀ नदिया बही रक्त की धार ॥
डारे मुर्दा हैं लोहुन में ❀ मानों कच्छ मच्छ उतरायँ ।
पगड़ी गिरिगइँ त्यहि लोहू में ❀ फूले कमल सरिस दर्शायँ ॥
परीं बँदूखैं कहुँ लोहू में ❀ काली नागिनसी मन्नायँ ।
पांच कोसलों चली सिरोही ❀ लोथिन उपरलोथिदिखिरायँ॥
बड़ी लड़ाई भै नैनागढ़ ❀ मारा मारा परै सुनाय ।
कोऊ हारा नहिं काहू सों ❀ दोउरण परा बरोबरि आय ॥
जोगा ठाकुर नैनागढ़ का ❀ सय्यद बनरस का सरदार ।
भोगा देवा के मुर्चा माँ ❀ दोउ दिशिहोय बरोबरि मार ॥
मन्ना गूजर पूरन राजा ❀ दोऊ करैं खूब तलवार ।
बड़े लड़ैया रण माँ रहिगे ❀ कायर छांड़ि भागि हथियार ॥
अमरढोल कहुँ रणमाँ बाजै ❀ गिरि उठि लड़ैं लड़ैताज्वान ।
देखि तमाशा ऊदन बोले ❀ दादा सुनो बीर मलखान ॥
मरिमरि जीवैं नैनागढ़ के ❀ मैं ना दीख कवों असभाय ।
कावा दैकै ऊदन चलिभे ❀ नैनागढ़ै पहूँचे आय ॥
संध्या ह्वैगै ह्याँ लश्कर में ❀ तब फिरि मारु बंद ह्वै जाय ।
ऊदन पहुँचे ह्याँ मालिन घर ❀ तुरतै मोहर दीन थँभाय ॥
खबरि सुनावो न्वरि भौजी का ❀ आयो मिलन उदयसिंहराय ।
सुनिकै बातैं मालिनि चलिभै ❀ सुनवैं खबरि सुनाई जाय ॥
सुनवाँ चलिभै तब महलन ते ❀ आई जहाँ लहुरवा भाय ।

पाग बैंजनी शिरपर बाँधे ❀ ऊदन कह्यो बचन मुसुकाय ॥
याही कारण चिठिया पठई ❀ जल्दी अवो लहुरवा भाय ।
जियत मोहोबे कोउ जाई ना ❀ डरिहौ बंश नाश करवाय ॥
मरे सिपाही क्यों जीवत हैं ❀ भौजी हाल देउ बतलाय ।
सुनिकै बातैं सुनवाँ बोली ❀ तुम सुनिलेउ लहुरवा भाय ॥
बरा बर्षलों मेरे बापने ❀ कीन्ह्यो कठिन तपस्या जाय ।
मांगु मांगु तब इन्दर बोले ❀ बप्पा बोले माथ नवाय ॥
अमर ढोल जो हमको देवो ❀ तौ सब काम सिद्ध है जाय ।
एवमस्तु तब इन्दर बोले ❀ बप्पा भवन पहूँचे आय ॥
जबहीं चत्री गिरैं खेतमें ❀ अम्मरढोल देयँ बजवाय ।
कान भनक चत्रिन के परतै ❀ जीवैं तुरत बनाफरराय ॥
धोखे माड़ोके रहियो ना ❀ जहँ लैलियो बापका दायँ ।
लड़े न जितिहौ मेरे बापसों ❀ तुमको भेद देउँ बतलाय ॥
देवी पूजन कल मैं जैहौं ❀ लैहौं अमरढोल मँगवाय ।
माली बनिकै तहँ तुम आयो ❀ लीन्ह्यो अम्मर ढोल चुराय ॥
इतना कहिकै सुनवाँ चलिभै ❀ अपने महल पहूँची आय ।
ऊदन आये फिरि तम्बूको ❀ बैठे जहाँ बनाफरराय ॥
हाल बतायो मलखाने ते ❀ सोयो सबै रातिको पाय ।
भोर भुरहरे मुर्गा बोलत ❀ माली बने उदयसिंहराय ॥
जायकै पहुँचे तेहि मठियामाँ ❀ जहँपर सुनवाँ गई बताय ।
घोड़ बेंदुला तहँ बाँधा है ❀ मालिन बीच बनाफरराय ॥
फूल डिलैया माँ सोहैं भल ❀ सुन्दर हरवा रहे बनाय ।
सुनवाँ जागी ह्याँ महलन में ❀ बोली मातै बचन सुनाय ॥
राति सुपनवाँ यक मैं देखा ❀ माता तुम्हैं देउँ बतलाय ।

संग सहेलिन देवी पूजैं ❀ तहँ पर अमरढोल अरराय ॥
त्यहिते मनमाँ यह आई है ❀ पूजन करों भवानी जाय ।
तुमसों माता यह बिनवतिहौं ❀ देवो अमरढोल मँगवाय ॥
सुनिकै बातैं रानी चलिभै ❀ पहुँची तुरत सेजपर जाय ।
हाल बतायो महराजा को ❀ लीन्ह्यो अमरढोल मँगवाय ॥
सो दै दीन्ह्यो लै बेटी को ❀ बेटी सखियन लीन बुलाय ।
चली भवानी फिरि पूजनको ❀ सुन्दरि गीतरहीं सब गाय ॥
जायकै पहुँचीं त्यहि मंदिरमाँ ❀ ज्यहिमाँ बसैं दूर्गा माय ।
अक्षत चन्दन सों पूजन करि ❀ लौंगनहार दीन पहिराय ॥
शीश नवायो जगदम्बाको ❀ सुनवाँ फूलनहार चढ़ाय ।
भोग लगायो फिरि मेवा का ❀ सेवा अधिक कीन हरषाय ॥
किह्यो इशारा फिरि ऊदनको ❀ तुरतै लीन्ह्यो ढोल उठाय ।
कूदि बेंदुलापर चढ़ि बैठ्यो ❀ लशकर तुरत पहूँच्यो आय ॥
कहाँ कहाँ कहि माली दौरे ❀ रहिगे जहाँ तहाँ शिरनाय ।
खबरि सुनाई नयपाली को ❀ सुनतै गयो सनाका खाय ॥
जायकै पहुँच्यो तेहि मंदिर में ❀ जेहि में रहैं दूर्गा माय ।
तुरत पंडितन को बुलवायो ❀ जानैं तंत्रशास्त्र अधिकाय ॥
इन्द्र यज्ञ नृपने तहँ ठानी ❀ स्वाहा स्वाहा परै सुनाय ।
एकसहसमन होम करायो ❀ गायो वेदमंत्र तहँ भाय ॥
हाथ जोरिकै विनय सुनायो ❀ मानो सत्यवचन सुरराज ।
बारह बरसै जब तप कीन्ह्यों ❀ तबमोहिंढोलदियोमहराज ॥
जाति बनाफर की ओछी है ❀ तिनने चोरी लई कराय ।
सुनिकै बातैं ये राजा की ❀ भइ नभवाणि समयसुखदाय ॥
तुम्हरे उनके नहिं काहूघर ❀ रहि है ढोल सुनो नृपराय ।

इन्दर बोले फिरि देवन ते ❀ मानो बचन हमारे भाय ॥
आल्हा अम्मर हैं दुनिया में ❀ ते कस मरैं यहांपर आय।
देवी शारदा का बरदानी ❀ आल्हा केर लहुरवा भाय ॥
लैकै ढोलक तुम तम्बू ते ❀ पटको तुरत डांड़पर जाय।
सुनिकै बातैं ये इन्दर की ❀ देवता तुरत चले शिरनाय ॥
लैकै ढोलक ते पटकत भे ❀ अपने धाम पहूँचे आय।
गा नैपाली निज मंदिर को ❀ लश्कर खुशी बनाफरराय ॥
ऊदन बोले फिर मलखे ते ❀ दादा मोहबे के सरदार।
कूच करावो अब लश्कर को ❀ चलिकै लड़ैं तासु के द्वार ॥
यह मन भाई मलखाने के ❀ तुरतै कूच दीन करवाय।
कोउ कोउ घोड़ा हंसचाल पर ❀ कोउ कोउ मोरचालपरजायँ ॥
चित्रचालपर चतुरचालपर ❀ कोइ कोइ चलैंतितुरकी चाल।
मारु मारु कै मौहरि बाजैं ❀ बाजैं हाव हाव करनाल ॥
बाजैं डंका अहतंका के ❀ घूमत जावैं लाल निशान।
छाय अँधेरिया गै दशहू दिशि ❀ छिपिगे अंधकार में भान ॥
मारु मारु करि चत्री बोलैं ❀ रणमें बड़े लड़ैता ज्वान।
घोड़ी कबुतरी के ऊपर माँ ❀ आगे चला बीर मलखान ॥
तीनकोस जब फाटक रहिगा ❀ तब पुरबासी उठे डेराय।
यक हरिकारा दौरति आवै ❀ राजै खबरि सुनाई आय ॥
सुनिकै बातैं हरिकारा की ❀ राजा मनै उठा अकुलाय।
जोगा भोगा तहँ बैठे थे ❀ बोले राजै शीश नवाय ॥
हुकुम जो पावैं महराजा को ❀ डंका अबै देयँ बजवाय।
जाय न पावैं मोहबे वाले ❀ सबकी कटा लेयँ करवाय ॥
सुनिकै बातैं ये लरिकन की ❀ राजै हुकुम दीन फर्माय।

जोगा भोगा दोऊ चलिभे ❀ लश्कर तुरत पहूँचे आय ॥
बाजे डंका अहतंका के ❀ शङ्का करै कोऊ नहिं काल ।
घोड़ आपनेपर चढ़ि बैठ्यो ❀ पूरन पटना को नरपाल ॥
जोगा भोगा घोड़े बैठे ❀ लश्कर कूच दीन करवाय ।
बाजे डंका अहतंका के ❀ पहुँचे समरभूमि में आय ॥
आगे घोड़ा है जोगा का ❀ पाछे सकल शूर सरदार ।
घोड़ बेंदुला पर ऊदन हैं ❀ लीन्हे हाथ ढाल तलवार ॥
जोगा बोला तब घोड़े ते ❀ कौने डांड़ दबायो आय ।
जितने आये हैं मोहबे के ❀ सबके मूड़ लेउँ कटवाय ॥
बातैं सुनिकै ये जोगा की ❀ ऊदन तहाँ पहूँचे आय ।
हमहैं क्षत्री मुहबे वाले ❀ हमरो मूड़ लेउ कटवाय ॥
सुनिकै बातैं जोगा ठाकुर ❀ तुरतै खैंचिलीन तलवार ।
ऐंचिकै मारा वघऊदन को ❀ सोऊ लीन ढालपर वार ॥
भोगा चलिभा तब ऊदनपर ❀ मलखे तुरत पहूँचे आय ।
मलखे ठाकुर के मुर्चा में ❀ कोउ रजपूत न रोकै पायँ ॥
मन्ना गूजर मोहबेवाला ❀ पूरन पटना का सरदार ।
लड़ैं बहादुर दोउ रणखेतन ❀ दोऊ हाथ करैं तलवार ॥
घोड़ पपीहा की पीठीपर ❀ रूपन गरू देय ललकार ।
भाला छूटे असवारन के ❀ पैदर चलन लागि तलवार ॥
गजके हौदा ते शर वरषैं ❀ नीचे करैं महावत मार ।
कक्षा भिड़िगे तहँ घोड़न के ❀ अंकुश भिड़े महौतन क्यार ॥
पैदर के सँग पैदर भिड़िगे ❀ घोड़न साथ घोड़ असवार ।
सूँड़ि लपेटा हाथी भिड़िगे ❀ हौदन होय तीर की मार ॥
चलैं कटारी कोताखानी ❀ ऊना चलैं विलाइति केर ।

लीन्हे भाला नागदवनि को ❀ मारैं एक एक को हेर ॥
झुके सिपाही नैनागढ़ के ❀ एँड़ा बेंड़ हनैं तलवार ।
जोगा भोगा दोनों ठाकुर ❀ गरुई हाँक दीन ललकार ॥
सदा न फूलै यह बन तोरई ❀ यारो सदा न सावन होय ।
अम्मर देही नहिं मानुष कै ❀ मरिहै एक दिना सबकोय ॥
है मरदाना ज्यहि को बाना ❀ सो लड़ि मरै समर मैदान ।
जीवत बचिहै जो मुर्चा ते ❀ पाई खान पान सनमान ॥
जो भगिजाई अब मुर्चा ते ❀ तेहिको हनों कठिन तलवार ।
जोगा भोगा की बातैं सुनि ❀ जूझन लागि शूर सरदार ॥
कटि कटि कल्ला गिरैं बछेड़ा ❀ मरि मरि होन लाग खरिहान ।
धरि धरि धमकैं रण खेतन में ❀ क्षत्री बड़े लड़ैता ज्वान ॥
मूड़न केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार ।
मारे मारे तलवारिन के ❀ नदिया बही रक्त की धार ॥

सवैया

कौन शुमार करै ललिते अतिमार भई सो कहाँलग गाई ।
खून कि धार बहे नदि नार किनार परैं गज ऊंट दिखाई ॥
नाच पिशाच करैं तहँ साँच लिये कर खप्पर योगिनि आई ।
गावत भूत बजावत ताल तहाँ करतालन की धुनि छाई ॥

ऊदन बोले मलखाने ते ❀ दादा मोहबे के सरदार ।
कठिन मवासी है नैनागढ़ ❀ ह्याँपर बहुत रहौ हुशियार ॥
मन्नागूजर मोहबे वाले ❀ जावो एक तरफ यहिवार ।
चाचा मालिक सब तुमहीं हौ ❀ राजा बनरस के सरदार ॥
तुम चलिजावो एक तरफ को ❀ मारो ढूंढ़ि ढूंढ़ि कै ज्वान ।
हाथिन केरे तुम हौदापर ❀ दादा हनो बीर मलखान ॥

इतना कहिकै बघऊदन ने ❀ हौदा उपर नचावा घोड़।
काहू मारा तलवारी सों ❀ काहू हना तड़ाका गोड़॥
बाइस हौदा खाली ह्वैगे ❀ अकसर ऊदन के मैदान।
घोड़ी कबुतरी के ऊपर ते ❀ बहुतन हना बीरमलखान॥
जैसी जावै बनरसवाला ❀ आला समर धनी तलवार।
भगैं सिपाही चौगिर्दा ते ❀ भारी होत चलै गलियार॥
मन्नागूजर ऊजर कीन्ह्यों ❀ देबै कठिन कीन तलवार।
को गति बरणै तहँ रुपना की ❀ रणमाँ भली मचाई मार॥
पूरण राजा पटनावाला ❀ भाला लिये हनै दश पांच।
को गति बरणै तहँ भोगाकै ❀ घोड़ा उपर रहा सो नाच॥
हनि हनि मारै चौगिर्दा ते ❀ गरुई हाँक देय ललकार।
इतना सुनिकै मलखे ठाकुर ❀ तुरतै खैंचिलीन तलवार॥
ऊदन बोले तब मलखे ते ❀ दादा मोहबे के सरदार।
सुनवाँ भौजी का भैया है ❀ आई मड़ये के त्यवहार॥
इतना सुनिकै मलखे ठाकुर ❀ फौजन तरफ पहूँचाजाय।
बहुतन मास्यो तलवारी सों ❀ बहुतन हन्यो ढाल के घाय॥
इतना कहिकै ऊदन चलिभे ❀ जोगा पास पहूँचे जाय।
जोगा बोला तब ऊदन ते ❀ मानो कही बनाफरराय॥
बड़ी दूरिते चलिआयो है ❀ आपनि लोह दिखावो आय।
सुनिकै बातें ऊदन बोले ❀ ठाकुर सत्य देयँ बतलाय॥
मोरे मोहबे में किरिया भै ❀ जो करि डरी चँदेलोराय।
कोऊ आवै समरभूमि में ❀ आपनि लोह दिखावै आय॥
पहिले त्वाहें बहिकी देखो ❀ पाछे आपनि देव दिखाय।
मारो मारो समर भूमि में ❀ नहिंशक करो मनैकछुभाय॥

इतना सुनिकै जोगाठाकुर ❀ तुरतै लीन्ह्यो साँग उठाय।
मनाएक के सो अंदाजन ❀ ऊदन ऊपर दयो चलाय॥
घोड़बेंदुला ऊपर उड़िगा ❀ नीचे सांग गिरी अरराय।
बचा बेंदुला का चढ़वैया ❀ आल्हा केर लहुरवा भाय॥
ऊदन बोले फिरि जोगा ते ❀ दूसरि वार करो सरदार।
सुनिकै बातें ये ऊदन की ❀ तुरतै खैंचिलीन तलवार॥
ऐंचिकै मारा वघऊदन को ❀ ऊदन लीन ढाल पर वार।
ऊदन बोल्यो फिरि जोगाते ❀ तीसरि वार करो सरदार॥
खैंचि तड़ाका धनुही लीन्ह्यो ❀ तामें दीन्ह्यो तीर लगाय।
ऐंचिकै मारा सो ऊदन के ❀ ऊदन लीन्ह्यो वार बचाय॥
खैंचि झड़ाका तलवारी को ❀ तुरतै हना उदयसिंहराय।
मूड़ बिसानी सो घोड़े के ❀ बिनशिर परै रुंड दिखराय॥
कोतल घोड़ा जोगा बैठे ❀ सायंकाल पहूँचा आय।
मारुबन्दभै दोनों दलमाँ ❀ फौजैं चलीं थलनको धाय॥
चरि चरि गौवैं घरका डगरीं ❀ उड़ि उड़ि पच्छिन लीनबसेर।
तारागण सब चमकनलागे ❀ संतन रमा रामको टेर॥
करों तरंग यहाँ सों पूरण ❀ तव पद सुमिरिभवानीकन्त।
रामरमा मिलि दर्शन देवो ❀ इच्छा यही मोरि भगवन्त॥
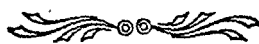
सवैया

शेश महेश गणेश मनाय, सदा बरदान यही हम पावैं।
हाथ गहे धनुबान सुजान, महान सदा ज्यहि वेद बतावैं॥
कोटिन जन्म जहां उपजैं, रघुनन्दन के ढिगही तहँ आवैं।
वरदान यही ललितेकर जान, सुजान सदा रघुनन्दन भावैं॥

सुमिरन

गोपी घूमैं नहिं गलियन में ❀ नहिंकहुँनचतफिरतहैं श्याम ।
मानुष देही यह रहिहै ना ❀ इकलो रही जगत में नाम ॥
नहीं भरोसा नर देही को ❀ कैसे करै झूठ अभिमान ।
सदा इकेलो तर बिरवा के ❀ मनमें करै रामको ध्यान ॥
यहै सहाई है दुनिया में ❀ गाई बेद पुराणन गाथ ।
ताते ज्वानो खुब यह समझो ❀ गुजरो फेरि न आवै हाथ ॥
समय जो पावो कछु दुनिया में ❀ ध्यावो सदा राम रघुराज ।
बिगरी सुधरै तुरतै तुम्हरी ❀ पूरण होयँ तुम्हारे काज ॥
छूटि सुमिरिनी गै देवन कै ❀ शाका सुनो शूरमन क्यार ।
सुन्दरबन को चिट्ठी जाई ❀ लड़ि हैं बड़े बड़े सरदार ॥

अथ कथाप्रसंग

उदय दिवाकर भे पूरब में ❀ किरणनकीनजगतउजियार ।
जोगा भोगा त्यहि समया में ❀ आये तुरत राज दरबार ॥
हाथ जोरिकै जोगा बोले ❀ बप्पा बचन करो परमान ।
पाँचलाख फौजै हम लैगे ❀ रहिगे तीनिलाख सब ज्वान ॥
सुनिकै बातैं ये जोगा की ❀ राजै कागज लीन उठाय ।
चिट्ठी लिखिकैअरिनन्दन को ❀ सुन्दरबन को दीन पठाय ॥
पाती लैकै हरिकारा गो ❀ सुन्दर बनै पहूँचा जाय ।
पढ़िकै पाती अरिनन्दन ने ❀ गौरीनन्दन चरण मनाय ॥
तुरत बुलायो सेनापति को ❀ तासों कह्यो हाल समुझाय ।
जितनी सेना सुन्दरबन की ❀ सबियाँ कूच देव करवाय ॥
सुनिकै बातैं महराजा की ❀ कूच क डङ्का दीन बजाय ।
कूच कराये सुन्दरबन ते ❀ नदी निकट पहूँचे आय ॥

तम्बू गड़िगे महराजन के ❀ डेरा गड़े सिपाहिन केर।
आल्हा ऊदन के डेरे ते ❀ योजन एक कोस के नेर॥
किश्ती नावै तिहि नदिया में ❀ तामें नचैं कंचनी नाच।
आल्हा पकरै के कारण में ❀ ज्ञानिन युक्ति कीन यह साँच॥
दिखैं तमाशा तहँ नदिया में ❀ इत उत दोऊ दिशा के ज्वान।
आल्हा ठाकुर त्यहि समया में ❀ तहँ पर करै गये असनान॥
होनी होवै सो सच होवै ❀ ज्ञानी ध्यानी को दिखलाय।
कौन गुमानी अरमानी अस ❀ जानी मौत नहीं ज्यहि भाय॥
फिरि अभिमानी नर देहीं के ❀ नेही चरणशरण नहिं जायँ।
बिना पियारे रघुनन्दन के ❀ चन्दन कौन परै दिखराय॥
बन्दन करिकै रघुनन्दन को ❀ आल्हा नदी अन्हाने जाय।
चन्दन अक्षत सों पूजन करि ❀ प्रातःकृत्य कीन हर्षाय॥
मेला दीख्यो फिरि नदिया में ❀ दोउदिशि रहे नारि नर हेर।
नावैं किश्तिन के ऊपर में ❀ होवै नाच पतुरियन केर॥
दिखैं तमाशा तहँ ठाढ़े भे ❀ ठाकुर मोहबे के सरदार।
नावैं आई अरिनन्दन की ❀ तिन माँ होवै अधिक बहार॥
तहँ हरिकारा नैनागढ़ को ❀ बोला अरिनन्दन सों बात।
नामी ठाकुर मोहबे वाले ❀ आये आल्हा क्यरी बरात॥
सुनिकै बातैं हरिकारा की ❀ बोल्योअरिनन्दनत्यहिकाल।
रहे सगाई देशराज सों ❀ आल्हा बड़े पियारे बाल॥
अयो बरातै का तिनके हौ ❀ पैदल नाच दिखौ महिपाल।
सुनिकै बातैं अरिनन्दन की ❀ बोले देशराज के लाल॥
कौनि सगाई देशराज सों ❀ साँचे हाल देव बतलाय।
सुनिकै बातैं ये आल्हा की ❀ कहअरिनन्दन बचनसुनाय॥

तुम चढ़िआवो अब नावन में ❀ देखो नाच यहाँ पर आय ।
कहैं सगाई हम साँची फिरि ❀ तुम सों हाल देयँ बतलाय ॥
सुनिकै बातैं आल्हा ठाकुर ❀ नावन उपर पहूँचे जाय ।
कियो इशारा अरिनन्दन ने ❀ खेवट दीन्ह्यो नाव चलाय ॥
डाटिकै बोल्यो आल्हाठाकुर ❀ खेई नाव अबै ना जाय ।
सुनिकैबोल्योअरिनन्दनफिरि ❀ आल्है बार बार समुझाय ॥
सोला मिनटन के अर्सा में ❀ आवो फेरि यहां पर भाय ।
लहरा नदिया के तानन में ❀ बानन सरिस पहूँचैं जायँ ॥
सो मन भावैं महराजन के ❀ जे शिरताजन के समुदाय ।
लहरा नदिया के तानन सों ❀ बानन सरिस परैं दिखराय ॥
इतना कहतै अरिनन्दन के ❀ पहुँची नाव किनारे आय ।
उतरी उतरा भा नावन ते ❀ आल्हा उतरि परे हर्षाय ॥
तम्बूलेगे अरिनन्दन तव ❀ बन्दन कैकै शीश नवाय ।
द्यावलि नन्दन तहँ बैठत भे ❀ चन्दन सरिस परैं दिखराय ॥
कही हकीकति अरिनन्दन तब ❀ तुमको कैद कीन हम आय ।
देखैं हम सों वुद्धिमान कोउ ❀ मोहबे और परै दिखराय ॥
इतना कहिकै अरिनन्दन ने ❀ तुरतै कूच दीन करवाय ।
चढ़िकै हाथी आल्हाठाकुर ❀ सुन्दर बनै पहूँचे जाय ॥
गा हरिकारा नैनागढ़ का ❀ राजै खबरि सुनाई जाय ।
ऊदन ढूँढ़ैं ह्याँ आल्हा को ❀ दादा नहीं परैं दिखराय ॥
आज्ञा लैकै मलखाने की ❀ सोनवाँ पास पहूँचे जाय ।
भेद बतायो सब सोनवाँ ने ❀ फौजन फेरि पहूँचे आय ॥
घोड़ा लैकै बयपारी बनि ❀ सुन्दरबनै पहूँचे जाय ।
द्वारे पहुँचे अरिनन्दन के ❀ ऊदन बेंदुल दीन नचाय ॥

देखि तमाशा द्वारपाल तहँ ❁ ऊदन निकट पहूँचे आय।
साथ तुम्हारे द्वै घोड़ा हैं ❁ औ असवार एक तुम भाय॥
रूप तुम्हारो बयपारी को ❁ आयो कौन देश ते भाय।
घोड़ा लायेते काबुलते ❁ बेचे सबै कनौजै जाय॥
एक इकेलो यह बाकी है ❁ राजै खबरि सुनावै जाय।
इतना सुनिकै द्वारपाल फिरि ❁ राजै दीन्ह्यो खबरि बताय॥
खबरि पायकै अरिनन्दन फिरि ❁ द्वारे पौंरि पहूँचे आय।
घोड़ पपीहा मोहबेवाला ❁ राजा देखिगये हरषाय॥
राजा बोले बघऊदन ते ❁ याकी कीमति देव बताय।
ऊदन बोले अरिनन्दन ते ❁ साँचे बचन देयँ बतलाय॥
पहिले चढ़िकै यहि घोड़े पर ❁ कोऊ ज्वान नचावै आय।
हाल देखिल्यो यहि घोड़े का ❁ तब मैं कीमति देउँ बताय॥
सुनिकै बातैं सौदागर की ❁ राजै हुकुम दीन फर्माय।
बैठै क्षत्री जो कोउ जावैं ❁ घोड़ा टापन देय हटाय॥
होय मोहबिया कोउ मोहबे का ❁ घोड़ा देखि सीध ह्वैजाय।
टेढ़े घोड़े के चढ़वैया ❁ मोहबे बसैं बनाफरराय॥
सुनिकै बातैं सौदागर की ❁ तुरतै आल्है लीन बुलाय।
हुकुम लगायो अरिनन्दन ने ❁ घोड़ा बैठि नचावो भाय॥
हुकुम पायकै अरिनन्दन को ❁ घोड़ा चढ़े बनाफरराय।
घोड़ नचायो भल आल्हा ने ❁ ऊदन बोल्यो बचन सुनाय॥
जल्दी चलिये अब लश्कर को ❁ दादा काह रह्यो पछिताय।
नाम हमारो उदयसिंह है ❁ औ अरिनन्दन बात बनाय॥
इतना कहिकै बघऊदन ने ❁ आपन घोड़ दीन दौड़ाय।
आल्हो चलिभे फिरि जल्दी सों ❁ लश्कर दोऊ पहूँचे भाय॥

मलखे बोले फिरि आल्हा ते ❀ लश्कर कूच देव करवाय।
यह मन भाई तव आल्हा के ❀ डङ्का तुरत दीन वजवाय॥
हाथी सजिगा पचशब्दा तव ❀ आल्हा तुरत भयो असवार।
हरनागर घोड़े के ऊपर ❀ भैने चढ़ा चँदेले क्यार॥
घोड़ मनोहर देवा वैठा ❀ सिरगा वनरसका सरदार।
सोहैं कवुतरी पर मलखे भल ❀ ऊदन वेंदुल पर असवार॥
मन्नागूजर रूपन वारी ❀ दोऊ वेगि भये तय्यार।
भीलमवखतरपहिरिसिपाहिन ❀ हाथ म लई ढाल तलवार॥
कूच के डङ्का वाजन लागे ❀ घूमन लागे लाल निशान।
घोड़ी कवुतरी के ऊपरमाँ ❀ आगे फिरैं वीर मलखान॥
खर खर खर खर कै रथ दौरैं ❀ रब्बा चलैं पवन की चाल।
मारु मारु कै मोहरि वाजैं ❀ वाजैं हाव हाव करनाल॥
इतते लश्कर गा आल्हा का ❀ जोगा उतै पहूँचा आय।
बम्ब के गोला छूटन लागे ❀ हाहाकारी शब्द सुनाय॥
जौने हाथी के गोला लागै ❀ मानों गिरा महल अरराय।
जौने चत्री के गोला लागै ❀ साथै उड़ा चील्ह असजाय॥
जौने बछेड़ा के गोला लागै ❀ धुनकत रुईसरिस उड़िजाय।
गोला लागै ज्यहि सँड़िया के ❀ सो मुँहभरा गिरै अललाय॥
जौने बैल के गोला लागै ❀ तरवर पात ऐस गिरिजाय।
दुनो गोल आगे को वढ़िगे ❀ तोपन मारु बन्द ह्वैजाय॥
मारु बँदूखै औ भाला की ❀ वलछी कड़ावीन की मार।
चलैं कटारी बूंदीवाली ❀ ऊना चलै बिलाइत क्यार॥
कटि कटि चत्री गिरैं खेतमें ❀ उठि उठि रुण्ड करैं तलवार।
मूड़न केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार॥

सूँढ़ि लपेटा हाथी भिड़िगे ❀ ऊपर करैं महावत मार।
पैदर पैदर कै बरनी भै ❀ औ असवार साथ असवार॥
जौने हौदा ऊदन ताकैं ❀ बेंदुल तहाँ पहुँचै जाय।
हनिकै मारैं असवारे को ❀ औ हौदा ते देयँ गिराय॥
अकसर ऊदन के मारुन में ❀ काहू धरा धीर ना जाय।
पूरन राजा औ जगनाका ❀ परिगा समर बरोबरि आय॥
मलखे जोगा का संगरहै ❀ भोगा बेंदुल का असवार।
बिजिया ठाकुर देवा ठाकुर ❀ दूनों खूब करैं तलवार॥
अपने अपने सब मुर्चन में ❀ क्षत्री नेक न मानैं हार।
मलखे जोगा के मुर्चा में ❀ होवै कड़ाबीन की मार॥
ऊदन भोगा के मुर्चा में ❀ कोताखानी चलै कटार।
बिजिया देवा के मुर्चा में ❀ दोऊ हाथ चलै तलवार॥
को गति बरणै जगनायक की ❀ पूरन पटना को सरदार।
मारु बरोबरि दोऊ करिकै ❀ गरुई हाँक देयँ ललकार॥
बड़ी लड़ाई भै नैनागढ़ ❀ नदिया बही रक्त की धार।
बहीं लहासैं तहँ क्षत्रिन की ❀ पच्छी मानों ख्यलैं नेवार॥
जाँघ औ बाहू रजपूतन की ❀ तामें गोह सरिस उतरायँ।
छुरी कटारी मछली मानों ❀ ढालैं कछुवा सम दिखरायँ॥
घोड़ा हींसैं हाथी चिघरैं ❀ ठाढ़े ऊँट तहाँ अललायँ।
बड़ बड़ राजा उमरायन को ❀ रणमा स्यार काग मिलिखायँ॥
जोगा ठाकुर के मुर्चा पर ❀ गरुई हांक दीन मलखान।
सँभरिकै बैठो अब घोड़ापर ❀ की अब लौटि जाव घर ज्वान॥
सुनिकै बातैं मलखाने की ❀ तुरतै खैंचि लीन तलवार।
ऐंचिकै मारा मलखाने को ❀ मलखे लीन ढाल पर वार॥

ढाल फाटिगै गैंड़ावाली ❀ रणमाँ टूटि गिरी तलवार।
उतरि कबुतरी ते मलखाने ❀ तुरतै बाँधि लीन सरदार॥
बंधन ह्वैगा जब जोगाका ❀ भोगा लीन्ह्यो सांग उठाय।
ताकिकै मारा बघऊदन का ❀ ऊदन लीन्ह्यो वार बचाय॥
ऊदन बोले फिरि भोगाते ❀ ओ बिसिआने बात बनाय।
वार दूसरी अब तुम मारौ ❀ ठाकुर तोरि आहिरहिजाय॥
बातैं सुनिकै बघऊदन की ❀ भोगा भालालीन उठाय।
दूनों अँगुरिन भाला तौलै ❀ कालीनाग ऐस मन्नाय॥
तारा टूटै आसमानते ❀ तौ हिरगास भुइं ना जाय।
छूटिगा भाला जो अँगुरिन ते ❀ कम्मर मचा ठनाका आय॥
बचा दुलरुवा द्यावलिवाला ❀ आला देशराज को लाल।
ढालकि औझड़ ऊदनमारा ❀ भोगा गिरा तहाँ ततकाल॥
भोगा बँधिगा रणखेतन में ❀ बिजिया बड़ा लड़ैया ज्वान।
अपने मुर्चा में सो हास्यो ❀ बांध्यो मैनपुरी चवहान॥
पूरनराजा जगनायक का ❀ मुर्चापरा बरोबरि आय।
गुर्ज चलायो पूरन राजा ❀ जगना लीन्ह्यो वार बचाय॥
एँड़ा मसक्यो हरनागर के ❀ हाथी उपर पहूँचा जाय।
खैंचिकै मारा तलवारी को ❀ हाथी सूँढ़िगिरी अरराय॥
गिरा महावत तब मस्तकते ❀ हाथी बैठिगयो त्यहि ठायँ।
बंधन कीन्ह्यो फिरि पूरन को ❀ जीति क डंका दिह्यो बजाय॥
भगे सिपाही नैनागढ़ के ❀ काहू धरा धीर ना जाय।
बंधन ह्वैगे चारिउ योधा ❀ एकते एक बली अधिकाय॥
जहँना तम्बू रहै आल्हा का ❀ तहँना गये सकल सरदार।
माहिल बन्धन सबको दीख्यो ❀ घोड़ी तुरत भये असवार॥

जहाँ कचहरी नयपाली की ❀ माहिल पहुँचिगये त्यहिवार ।
दीख्यो माहिलको नयपाली ❀ राजै बड़ाकीन सतकार ॥
माहिल बोले तब राजाते ❀ तुम सुनिलेउ बिसेनेराय ।
तीनों लड़िका तुम्हरे बँधिगे ❀ चौथो पूरन लये बँधाय ॥
सुनवाँ ब्याहीगय आल्हा को ❀ तौ रजपूती जाय नशाय ।
पानी पीहै कोउ चत्री ना ❀ तुमको सत्य दीन बतलाय ॥
राजा बोले तब माहिल ते ❀ ठाकुर उरई के सरदार ।
काह कलङ्की देशराज मे ❀ सो तुम कथा कहौ यहिबार ॥
माहिल बोले नयपाली ते ❀ सुनिल्यो बचन मोर महराज ।
चले शिकारै देशराज बन ❀ दूसर बच्छराज शिरताज ॥
देवलि बिरमा दूनों बहिनी ❀ बेंचन दही जायँ त्यहिराह ।
मार्ग सँकोचो त्यहि बनजानो ❀ अरनालड़ैं तहाँ नरनाह ॥
पकरिकै सींगैं इक भैंसाकी ❀ देवलि दीन्ह्यो दूरि हटाय ।
दूसर बिरमाने पकरा तहँ ❀ पाछे सोऊ पछेलति जाय ॥
दूनों अरना मारग हटिगे ❀ दूनों जोड़ भये इकठोर ।
देशराज कह बच्छराज सों ❀ दूनों बड़ी बली इकजोर ॥
इनको लैकै घरको चलिये ❀ होवैं पूत सुपूते भाय ।
तिनहिन अहिरिन के पेटे ते ❀ चारो भये बनाफरराय ॥
बाप छत्तिरी माता अहिरिन ❀ बेटा कैसे होयँ कुलीन ।
ब्याह नकीन्ह्यो तुमसुनवाँ का ❀ जानों जातिपांति अकुलीन ॥
पूजन कीन्ह्यो तब माहिल का ❀ राजै फेरि कीन सतकार ।
बड़े पियारे तुम माहिल हौ ❀ ठाकुर उरई के सरदार ॥
बहिन बियाही चंदेले घर ❀ जिनको कहीं रजा परिमाल ।
किह्योमुलहिजानहिंतिनकोतुम ❀ हमसों सत्य कह्यो सबहाल ॥

युक्ति बतावो अब तुमहीं म्वहिं ❀ जासों धर्म रहै यहिकाल
सुनवाँ ब्याही फिरि जावैना ❀ औ मरिजायँ दुष्ट ततकाल ॥
सुनिकै बातैं नयपाली की ❀ माहिल बोले वचन उदार।
बाना तजिकै रजपूती का ❀ अब धरि देव ढाल तलवार ॥
नाई बारी सँग में लैकै ❀ पायँन परोजाय ततकाल।
जो कछु बोलैं सो कछु मान्यो ❀ मड़ये तरे लैआवो हाल ॥
घरमें लैकै चारो भाई ❀ मारो नृपति आय ततकाल।
इतना कहिकै माहिल चलिभे ❀ आदरकीन बहुत नरपाल ॥
भुजा उखारी गइँ अभई की ❀ माहिल हृदय परी सो शाल।
लड़ै भिड़ैकी सरवरि नाहीं ❀ निन्दाकरत फिरैं सबकाल ॥
जैसे राजै भानुप्रतापी ❀ मार्‌यो रहै तपस्वी ज्वान।
यह है गाथा बालकाण्ड में ❀ तुलसी राम समर मैदान ॥
तैसे ऊदन के मरिबे में ❀ माहिल चुगुल बने सवद्धार।
धर्मसे निन्दा नहिं माहिल की ❀ यामें दिहे शास्त्र अधिकार ॥
औरो गाथा कहु पुराणकी ❀ यामें आनि घटावों ज्वान।
पै नहिं समया यहि समया में ❀ ऐसी परीं व्यवस्था आन ॥
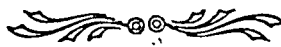
मड़ए के नीचे की लड़ाई तथा बिदा की लड़ाई

माहिल पहुँचे फिरि तम्बुन में ❀ राजै नेगी लीन बुलाय।
जहँना तम्बू रहै आल्हाका ❀ राजा तहाँ पहूँचे जाय ॥
बड़े प्यार सों राजै लीन्ह्यो ❀ आल्हा बैठिगये हर्षाय।
मलखे बोले तब राजा ते ❀ आपन हाल देउ बतलाय ॥
कौने मतलब को आयो है ❀ सो हम करैं चारिहू भाय।

सुनिकै बातैं मलखाने की ❀ राजा बोले बचन बनाय ॥
हँसी खुशी सों सुनवाँ ब्याहैं ❀ हमरे मनै गई यह आय ।
सिंहन घर में कन्या ब्याही ❀ स्यारन हँसी किये का भाय ॥
धन्य बखानों द्वउ रानिनको ❀ जिनके पूत सुपूते चार ।
धन्य बखानों मलखाने को ❀ माड़ो भली कीन तलवार ॥
भुजा उखास्यो ज्यहि अभई के ❀ आल्हाकेर लहुरवा भाय ।
तीनों चलिये अब मड़ये को ❀ भौंरी तुरत देयँ करवाय ॥
इतना सुनिकै मलखे बोले ❀ फौजन डंका देउ बजाय ।
कह नयपाली सुन मलखाने ❀ इकलो दूलह देउ पठाय ॥
कह मलखाने सुन नैपाली ❀ तुमसों सत्य देयँ बतलाय ।
किरिया करलो श्रीगंगाकी ❀ ब्याहन तबै तुम्हारे जायँ ॥
यह मनभाई नयपाली के ❀ किरिया तुरत कीन सरदार ।
तीनों लड़िका मलखे छोड़े ❀ आपौ फाँदि भये असवार ॥
देबा ऊदन मन्नागूजर ❀ सय्यद बनरस का सरदार ।
सजि जगनायक मोहबेवाला ❀ रूपन बारी भयो तयार ॥
आल्हा बैठे फिरि पलकी में ❀ मनमें श्रीगणेशपद ध्याय ।
सबियाँ चलिभे नैनागढ़ को ❀ महलन तुरत पहूँचे जाय ॥
खम्भा गड़िगा तहँ चन्दन का ❀ मालिन माड़ो कीन तयार ।
सखियाँ आईं नयपाली घर ❀ गावन लगीं मंगलाचार ॥
चढ़ो चढ़उवा जब सुनवाँ का ❀ फाटक बन्द लीन करवाय ।
क्षत्री आये जे लड़ने को ❀ ते कोठेपर रखे छिपाय ॥
भोगठिबन्धन जबआल्हाको ❀ थाल्हा गड़ा शूरमन क्यार ।
प्रथमै पूज्यो श्रीगणेश को ❀ गौरीनन्दन शम्भुकुमार ॥
भाँवरि पहिली के परतैखन ❀ पण्डित कीन वेद उच्चार ।

जोगा मास्यो तलवारी को ❀ ऊदन लीन ढालपर वार ॥
भाँवरि दूसरिके परतैखन ❀ भोगा हनी तुरत तलवार।
मलखे ठाढ़े रहैं दहिने पर ❀ सो लै लई ढालपर वार॥
भाँवरि तीसरि के परतैखन ❀ विजिया मारी गुर्ज उठाय।
वार बचाई त्यहि देवा ने ❀ राजा रंगमहल को जाय॥
भाँवरि चौथी के परतैखन ❀ राजा जादू दीन चलाय।
जवाँ बन्द भे सब कुँवरन कै ❀ सबकी नजरबन्द ह्वैजाय॥
सुनवाँ सोची अपने मनमाँ ❀ वैरी ह्वैगा बाप हमार।
बीर महम्मद की पुरिया को ❀ सुनवाँ छोंड़ि दीन त्यहिबार॥
भई लड़ाई तहँ जादुनकी ❀ सातों भाँवरि लई कराय।
आल्हा वाली फिरि पलकी में ❀ तुरतै सुनवाँ लीन बिठाय॥

सवैया

भूप दुवार चली तलवार अपार बही तहँ शोणित धारा।
बीर बली मलखान सुजान तहाँ बहु क्षत्रिन को हनि डारा॥
पूत जुझार महाहुशियार लड़ै तहँ भीषम केर कुमारा।
कौन कहै बघऊदन को रिपुसूदनसों ललिते त्यहि बारा॥

सुन्दरबन को अरिनन्दन जो ❀ सोऊ आयगयो त्यहि द्वार।
आठकोसलों चलै सिरोही ❀ नदिया बही रक्त की धार॥
आगे डोलाहै सुनवाँ को ❀ पाछे होय भड़ाभड़ मार।
ऊदनमलखे की मारुन में ❀ जूझे बड़े बड़े सरदार॥
आल्हा बँधुवाभे नैनागढ ❀ जोगा भ्वगा बँधे मलखान।
कूच करायो बघऊदन ने ❀ लश्कर प्रागराज नियरान॥
ऊदन बोले तब सुनवाँ ते ❀ भौजी मानों कही हमार।
दादा बाँधेगे नैनागढ़ ❀ कैसी युक्ति करी यहिबार॥

सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ सुनवाँ युक्ति कही समुझाय।
सम्मत करिकै दूनों चलिभे ❀ नैनागढ़ै पहूँचे आय॥
पुहपा मालिनि के घर बैठे ❀ सुनवाँ सहित लहुरवा भाय।
सुनवाँ पूछ्यो जो मालिनि ते ❀ मालिनि खबरिदीनबतलाय॥
रूप गुजरियाको सुनवाँ करि ❀ पहुँची नाह निकट सो जाय।
रूप देखिकै त्यहि गूजरिको ❀ मोहित भयो बनाफरराय॥
जस बतलान्यो ये गूजरिसों ❀ गूजरि तैस दीन समुझाय।
मुंदरी दीन्ह्यो फिरि गूजरिको ❀ मालिनि घरै पहूँची आय॥
सब समुझायो फिरि ऊदन को ❀ साँचे हाल दीन बतलाय।
घोड़ करिलिया औ रसबेंदुल ❀ लैकै गयो लहुरवाभाय॥
खबरि पायकै बयपारी कै ❀ द्वारे नृपति पहूँचा आय।
बनो कबुलिहा बघऊदन है ❀ साँचो आगा परै दिखाय॥
राजा पूछ्यो बयपारी सों ❀ साँची कीमत देव बताय।
ऊदन बोल्यो नयपाली सों ❀ चढ़िकै देखि लेयकोउआय॥
चाल देखिल्यो इन घोड़नकी ❀ पाछे कीमत देयँ बताय।
सुनिकै बातैं ब्योपारी की ❀ राजै हुकुमदीन फर्माय॥
जावैं चत्री जो घोड़न ढिग ❀ ताको टापन देयँ हटाय।
मुखसों काटैं ऊपर उलरैं ❀ कोउ रजपूत पास ना जाय॥
देखि तमाशा यहु महराजा ❀ तुरतै आल्हा लीन बुलाय।
घोड़ा फेरो तुम फाटक में ❀ इनकी चाल देव दिखराय॥
किह्यो इशारा बघऊदन ने ❀ घोड़ा चढ़े बनाफरराय।
बैठ बेंदुलापर बघऊदन ❀ आपन नाम दीन बतलाय॥
बाग उठायो द्वउ घोड़न की ❀ फाटक पार पहूँचे आय।
मालिनि घरते सुनवाँ चलिभै ❀ तुरतै पलकी लीन मँगाय॥

तीनों पहुँचे फिरि लश्कर में ❀ डंका बजन लाग घहराय।
चलि भैं फौजैं मलखाने की ❀ पहुँचीं प्रागराज में आय॥
जितने क्षत्री रहैं लश्कर में ❀ सबियाँ करनगये असनान।
हनवन करिके तिरबेनी को ❀ दीन्ह्योद्विजनदानसबज्वान॥
बृक्ष अक्षयबटको पूजन करि ❀ पहुँचे भरद्वाज अस्थान।
बेनीमाधो के दर्शन करि ❀ दीन्ह्यो द्विजन सूवरणदान॥
हाथी घोड़ा रथ कपड़ा औ ❀ गहना दीन द्विजन बुलवाय।
भये अयाचक सब याचकगण ❀ जय जय रहे बनाफरराय॥
बैठिके गंगा के तट ऊपर ❀ क्षत्रिन हवन कीन हरषाय।
स्वाहा स्वाहा बहुद्विज बोलैं ❀ कहुँ२ स्वधा स्वधा गा छाय॥
स्वधा औ स्वाहा ते छुट्टीकरि ❀ बिप्रन भोजन दीन कराय।
भोजन करिकै सब द्विज तहँते ❀ अपने घरन गये सुखपाय॥
कूच करायो फिरि मलखाने ❀ डंका बजत फौज में जाय।
देवलि बिरमा द्वारे ठाढ़ीं ❀ देखैं बाट बनाफरराय॥
राह निहारैं नित पुत्रन की ❀ कबधों ऐहैं पुत्र हमार।
जौन मुसाफिर आवत देखैं ❀ ताको करैं बड़ा सतकार॥
हाल न पावैं जब पुत्रन को ❀ तब फिरि जावैं घरै निराश।
रानी मल्हना महलन ऊपर ❀नितप्रतिकरैमिलनकीआश॥
तबलों रुपना आगे आयो ❀ पाछे फौज पहूँची आय।
बड़ी खुशाली भै मोहबे माँ ❀ दौरे सबै नारिनर धाय॥
मल्हना देवलि बिरमातीनों ❀ पलकी पास पहूँचीं जाय।
मनियादेवन को पलकी गै ❀ पूजन कीन बहुरिया आय॥
आल्हा मलखे देबा ऊदन ❀ अक्षत चन्दन फूल चढ़ाय।
मनियादेवन की परिकरमा ❀ क्षत्रिन सबन कीन हर्षाय॥

तहँते आये फिरि द्वारे को ❀ तुरतै पण्डित लीन बुलाय ।
आरति लैकै फिरि सोने की ❀ तामें चौमुख दिया बराय ॥
बर परछौनी मल्हना कीन्ह्यो ❀ भीतर गये बनाफरराय ।
उतरिकै पलकी ते सुनवाँ फिरि ❀ महलन तुरत पहूँची जाय ॥
मुहँ दिखलाई रानी मल्हना ❀ गलको दीन नौलखाहार ।
पायँ लागिकै सुनवाँ तहँपर ❀ कर को कंकण दीन उतार ॥
बाजन बाजे चौगिर्दा ते ❀ घर घर भये मंगलाचार ।
फिरिपरिमालिककीड्योढ़ीमाँ ❀ पहुँचे सबै शूर सरदार ॥
राजा पूछैं मलखाने ते ❀ ओ बिरमा के राजकुमार ।
अमरढोल रहै नयपाली के ❀ कैसे किह्यो तहाँ पर मार ॥
इतना सुनिकै मलखे बोले ❀ तुम सुनिलेउ रजापरिमाल ।
दया तुम्हारी जापर होवै ❀ ताकी बिजय होय सबकाल ॥
हृदय लगायो सब कुँवरन को ❀ सबको कीन बड़ा सतकार ।
जीतिके डंका बाजन लागे ❀ नौबति झरै रजा के द्वार ॥
सौ सौ तोपैं दगीं सलामी ❀ चकरन पाई खूब इनाम ।
पिता हमारे किरपाशंकर ❀ कीन्हेनि सबै द्विजन के काम ॥
माथ नवावों पितु अपने को ❀ जिनबल पूरि कीन यह गाथ ।
मोर सहायी जग एकै हैं ❀ स्वामी अवधनाथ रघुनाथ ॥
आशिर्बाद देउँ मुंशीसुत ❀ जीवो प्रागनरायण भाय ।
सुखसों जीवो तुम दुनिया में ❀ दिनदिन होउ धनीअधिकाय॥
रहै समुन्दर में जबलौं जल ❀ जबलौं रहैं चन्द औ सूर ।
मालिक ललिते के तबलौंतुम ❀ यशसों रहौ सदा भरपूर ॥

नैनागढ़ आल्हा बिवाह सम्पूर्ण

राघौ गति अद्भुत दर्शानी २ ॥
निशि दिन पापकर्मरत प्राणी सत्यासत्य भुलानी ॥
हत्यालाख धरत शिर ऊपर मोह वेदना टानी ॥ १ ॥
नाती पूत शोच वश परकर आतमज्ञान हिरानी ॥
अहं अहं डहकत दरवाजे देखत नारि विरानी ॥ २ ॥
अभिमानी नित देखत आंखिन मरत जात वहुप्रानी ॥
तवहूँ तनक चेत मन नाहीं रटै रामगुणखानी ॥ ३ ॥
हटै अकाल सुकाल वढ़ै जग नाशय रोग निशानी ॥
सो नहिं होनहार हम देखत होयँ वहुत नरज्ञानी ॥ ४ ॥
अभिमानी लाखन हम देखत ज्ञानी दशहु न जानी ॥
होत प्रपंच साधु सन्तन में पंचन नाहिं ठिकानी ॥ ५ ॥
तजि दुर्गा अर्चन नर पामर गति मुर्गाकी आनी ॥
लेहँड़िपुत्र पौत्र उपजावत अनशिक्षित अभिमानी ॥ ६ ॥
तेइ मर्य्याद धर्म की नाशत भाषत झूंठ गुमानी ॥
मात पिता को मूरख कहिकै देवत कष्ट महानी ॥ ७ ॥
यह कलियुग की देखि वड़ाई कहत ललित यह भानी ॥
राघौ राम और रघुनन्दन इन बन्दन दुखहानी ॥ ८ ॥
चलो मन जहाँ बसैं रघुराज । चलो मन जहाँ वसैं रघुराज ॥
यहि दुनिया में कौन हमारो हम क्यहिके क्यहि काज ॥
देखत जो कछु रहत न सो कछु ढहत काल शिरताज ॥ १ ॥
गहत कौनके रहत कौन नर सोइ कहत हम आज ॥
रघुनन्दन जगबन्दन ज्यहि सुत त्यहि शिरपर दुखआज ॥ २ ॥
सेयो यशोदा नन्द कृष्ण को सोऊ न आये काज ॥
बैरिनि बिपति सबहिं शिर ऊपर देखिलेहु महराज ॥ ३ ॥
जो मन फँसे जगत के अन्दर बन्दरसम बिन लाज ॥
द्वारद्वार नट तिन्हैं नचावत ललित पेट के काज ॥ ४ ॥

आल्हखण्ड

मलखान का बिवाह

अथवा

पथरीगढ़ की लड़ाई

सवैया

ध्यावत तोहिं सदा हनुमान यही बरदान मिलै मोहिं स्वामी।
हाथ लिये धनुबान कृपान मिलैं भगवान जे अन्तरयामी॥
टारे टरैं न कबों उरते तिन राम नमामि नमामि नमामी।
जान यही ललिते बरदान सुनो हनुमान सदा सुखधामी॥

सुमिरन

तुलसी हुलसी अब दुनिया में ❁ श्रुतसीसकलनरनकीकावि।

घर घर पोथी रामायण की ❀ दर दर फिरैं बगल में दाबि ॥
गिरिगिरिचन्दननहिंहोवैंकहुँ ❀ वन वन नहीं रहैं गजराज ।
नारि पतिव्रत नहिं घर घर हैं ❀ थल थल नहीं होयँ कविराज ॥
ग्राहक होवैं नहिं दुनिया में ❀ तब गुण जावैं सबै हिराय ।
भोजन खावैं हरिको ध्यावैं ❀ साँचो ग्राहक दीन बताय ॥
नाहक जग में कोउ पछतावै ❀ भावैं नहीं दूसरो काज ।
देही आपनि गलि गलि जावै ❀ आवै फेरि जगत में लाज ॥
छूटि सुमिरनी गै ह्याँते अब ❀ शाका सुनो शूरमन क्यार ।
ब्याह बखानों मलखाने का ❀ लड़िहैं बड़े बड़े सरदार ॥

अथ कथाप्रसंग

यहु गजराजा पथरीगढ़ को ❀ ज्यहिको भरी लाग दरबार ।
बैठक बैठे सब क्षत्री हैं ❀ एकते एक शूर सरदार ॥
सुवा पहाड़ी कहुँ पिंजरन में ❀ महलन नाचि रहे कहुँ मोर ।
बैठि कबूतर कहुँ घुटकत हैं ❀ तीतर बोलि रहे कहुँ जोर ॥
घोड़ अगिनिया त्यहि राजाके ❀ साजा सबै बिधाता काज ।
है गजमोतिनि त्यहिकी बेटी ❀ विद्या रूप शील शिरताज ॥
सो नित खेलै सँग सखियन में ❀ मेलै सदा गले में हाथ ।
सेमा भगतिनि की चेली है ❀ गुटवा ख्यलै सखिन के साथ ॥
खेलत खेलत कछु सखियों ने ❀ कीन्ही तहाँ ब्याह की बात ।
कोउकोउसखियाँतहँब्याहीथीं ❀ जानैं भलो श्वशुरपुर नात ॥
ब्याही बोलैं अनब्याहिन सों ❀ सखियो सुनो हमारी बात ।
सुरपुर हरपुर हरिपुर नाहीं ❀ जो सुख मिलै श्वशुरपुररात ॥
सुनि सुनि बातैं ये ब्याहिन की ❀ तहँ अनब्यहीमनैं अकुलायँ ।
फिरिफिरिपूंछैंतिनसखियनसों ❀ कासुखश्वशुर पुरै अधिकाय ॥

बतियाँ घतियाँ जे बालम की ❀ छतियाँ छुवैं और अठिलायँ ।
रतियाँ केरी सब बतियाँ को ❀ सखियाँ कहैं और हरषायँ ॥
सुरपुर हरपुर हरिपुर नाहीं ❀ जो सुखश्वशुरपुरै अधिकाय ।
सुनि सुनि बातैं ये ब्याहिन की ❀ मनमाँ गईं बात ये छाय ॥
सब अनब्याही ब्याकुल ह्वैकै ❀ घरका चलीं मनैं पछिताय ।
गैगजमोतिनि निजमहलनमें ❀ सोईं समय रातिको पाय ॥
जागे रोवन शय्या लागी ❀ माता लीन्ह्यो हृदय लगाय ।
काहे रोवत तुम बेटीहौ ❀ हमको हाल देउ बतलाय ॥
दीख्यों सुपना मैं माता है ❀ ब्याहे लिये कोऊ घर जाय ।
मैं सुधि कीन्ह्यों तहँ बप्पाकी ❀ माता रोय उठिउँ अकुलाय ॥
सुनिकै बातैं ये बेटी की ❀ चंपा गोद लीन बैठाय ।
चूम्यो चाट्यो गले लगायो ❀ बातनदिह्यो ताहि बहलाय ॥
अवसर पायो जब रानी ने ❀ राजा पास पहूँची जाय ।
बेटी लायक है ब्याहन के ❀ टीका देउ आप पठवाय ॥
समया आयो अब कलियुग का ❀ औ युगधर्म रहा दर्शाय ।
बातैं सुनिकै ये रानी की ❀ राजा नेगी लीन बुलाय ॥
सूरज बेटा को बुलवायो ❀ तासों हाल कह्यो समुझाय ।
दिल्ली कनउज चहु तहँ जायो ❀ जायो जहँ न चँदेलोराय ॥
तीन लाख को टीका लैकै ❀ सूरज कूच दीन करवाय ।
आठ रोज की मैंजलि करिकै ❀ पहुँच्यो जहाँ पिथौराराय ॥
को गति बरणै तहँ दिल्ली कै ❀ जहँपर रहे कौरवनराज ।
जहँपर गर्जंत दुर्योधन रहै ❀ जहँपर अये कृष्ण महराज ॥
भीषम ऐसे जहँ योधा थे ❀ द्रोणाचार्य ऐस द्विजराज ।
तहँपर गरजे शिरीकृष्णजी ❀ जयजयनमोनमो व्रजराज ॥

जब सुधि आवत है दिल्ली कै ❀ तब मन आय जात ब्रजराज।
सदा पियारे हैं बिप्रन के ❀ अवहूं देत खानको नाज॥
तहँपर पहुँचे सूरज ठाकुर ❀ चिट्ठी तुरत दीन पकराय।
आँक आँक सब पृथ्वी बांचा ❀ जोकुछ लिखा बिसेनेराय॥
ब्याह बिसेने के करिबे ना ❀ टीका तुरत दीन लौटाय।
सूरज चलिभे तहँ दिल्ली ते ❀ कनउज फेरि पहूँचे आय॥
हैं कनवजिया जहँ बाम्हन बहु ❀ बड़ बड़ महल परैं दिखराय।
बेद पुराणन की चर्चा तहँ ❀ घरघर अधिक २ अधिकाय॥
सूरज पहुँचे जब ड्योढ़ी में ❀ बोला द्वारपाल शिरनाय।
कौने राजा के लड़िका हौ ❀ राजै खबरि देयँ पहुँचाय॥
बातैं सुनिकै द्वारपाल की ❀ सूरज हाल दीन समुझाय।
द्वारपाल सुनि गा राजा ढिग ❀ तुरतै खबरि सुनाई जाय॥
सुनिकै बातैं दरवानी की ❀ राजै हुकुम दीन फरमाय।
द्वारपाल सूरज ढिग आयो ❀ लैकै सभा पहूँचा जाय॥
चिट्ठी दीन्ह्यो तहँ सूरज ने ❀ जयचँद पढ़ा बहुत मनलाय।
क्यहिका लड़िका घरभारू है ❀ पथरीगढ़ै बियाहन जाय॥
घोड़ अगिनियाँ जिनके घरमाँ ❀ ज्यहिके मारे फौज बिलाय।
तुरतै टीका को लौटास्यो ❀ यहु महराज कनौजीराय॥
चलिभे सूरज तहँ कनउज ते ❀ उरई फेरि पहूँचे आय।
पांचकोस मोहबे के आगे ❀ मारै हिरन उदयसिंहराय॥
सूरज ऊदन यकमिल ह्वैगे ❀ दूनों कीन्ह्यो रामजुहार।
ऊदन पूछैं तहँ सूरज ते ❀ ठाकुर पथरी के सरदार॥
टीको ऐसो का लै गमन्यो ❀ नेगी संग तुम्हारे चार।
सूरज बोलो तब ऊदन ते ❀ ठाकुर बेंदुल के असवार॥

निकरे हनवन हम गंगा के ❀ साँचे हाल दीन बतलाय।
काह शिकारै तुम आयो है ❀ अकसर बनै उदयसिंहराय॥
सुनिकै बातैं ये सूरज की ❀ बोला तुरत बनाफरराय।
किह्यो बहाना तुम सूरज है ❀ नेगी संग लिये हौ भाय॥
हनवन केरी यह सामा ना ❀ झूँठी बात रह्यो बतलाय।
सूरज बोले फिरि ऊदन ते ❀ साँची सुनो बनाफरराय॥
टीका लाये हम बहिनी का ❀ दिल्ली कनउज अये मँझाय।
टीका लीन्ह्यो क्यहु चत्री ना ❀ जावैं लौटि बनाफरराय॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ हमपर शारद भई सहाय।
दादा क्वारे मलखाने हैं ❀ टीका लिहे चलो तुम भाय॥
सुफल तुम्हारी मेहनत होई ❀ हमरो काज सिद्ध ह्वै जाय।
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❀ सूरज बोला बचन रिसाय॥
नहीं आज्ञा महराजा की ❀ टीका नगर मोहोबे जाय।
जाति बनाफर की हीनी है ❀ कीरति रही जगत में छाय॥
सुनिकै बातैं ये सूरज की ❀ बोला उदयसिंह सरदार।
नीके जैहौ तौ लैजैहौं ❀ नहिं यह देखिलेउ तलवार॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❀ नाई बारी उठे डेराय।
ते समुझावैं भल सूरज को ❀ मानो कही बिसेनेराय॥
रारि न करियो तुम ऊदन ते ❀ नामी देशराज को लाल।
पाँच कोस मोहबा है बाकी ❀ जहँ पर बसैं रजापरिमाल॥
सुनि सुनि बातैं सबनेगिनकी ❀ सूरज मनै गयो तस आय।
नेगिन लैकै सूरज ऊदन ❀ पहुँचे जहाँ चँदेलोराय॥
सजी कचहरी परिमालिककी ❀ भारी लाग राज दरबार।
ब्रह्मा आल्हा मलखे देबा ❀ सय्यद बनरसका सरदार॥

देखिकै सूरज को परिमालिक ❀ बोले मधुर बचन मुसुकाय।
कहाँते आयो औ कहँ जैहौ ❀ आपन हाल देउ बतलाय॥
सुनिकै बातैं परिमालिक की ❀ सूरज यथातथ्य गे गाय।
हाल जानिकै सब चंदेलो ❀ बोला सुनो बनाफरराय॥
टीका आयो पथरीगढ़ का ❀ ताको तुरत देउ लौटाय।
ब्याह बिसेने घर करिबे ना ❀ मानों कही उदयसिंहराय॥
घोड़ अगिनियाँ तिनके घरमाँ ❀ ज्यहिके मारे फौज बिलाय।
सुनिकै बातैं परिमालिक की ❀ बोले तुरंत बनाफरराय॥
दतिया मारि उरैछो मारो ❀ पहुँचे सेतुबंध लों जाय।
पेशावर मुल्तान कमायूँ ❀ बूँदी थहर थहर थहराय॥
अटक पारलों झंडा गड़िगो ❀ औ मेवात लीन लुटवाय।
गर्ब न राखा क्यहु क्षत्री का ❀ मानो कही चँदेलोराय॥
गिनतीकिनमेंबिसियाननकी ❀ ठाढ़े तखत देउँ उलटाय।
हीनी मुखसों तुम भाषत हौ ❀ मेरो रजपूती धर्म नशाय॥
मलखे ब्याहन को रैहैं ना ❀ यहु दिन कहिबे को रहिजाय।
टीका लौटी ना मोहबे ते ❀ राजा सत्य दीन बतलाय॥
बोला चँदेला तब देबा ते ❀ अबतुम शकुन बिचारो भाय।
कैसी गुजरी पथरीगढ़ में ❀ सो सब हाल देउ बतलाय॥
सुनिकै बातैं परिमालिक की ❀ देबा पोथी लीन उठाय।
शकुन सोचिकै देबा बोला ❀ साँची कहौं चँदेलोराय॥
जीति तुम्हारी है पथरीगढ़ ❀ काहू बार न बाँको जाय।
आजु कि साइति भल नीकी है ❀ टीका अबै देउ चढ़वाय॥
सुनिकै बातैं ये देबा की ❀ महलन खबरिदीन पहुँचाय।
गा हरिकारा दशहरिपुरवा ❀ ल्यावलि बिरमा लवालिवाय॥

आँगन लीपा गा गोबर सों ❀ मोतिन चौक दीन पुरवाय।
चूड़ामणि पण्डित फिरि आये ❀ तुरतै सूरज लये बुलाय॥
चारो नेगी सँग में लैकै ❀ सूरज महल पहूँचे आय।
चरण लागिकै मलखाने के ❀ बीरा मुख में दीन खवाय॥
सखियाँ गावन मंगल लागीं ❀ नेगिन झगर मचावा आय।
सोने चाँदी के गहना को ❀ सूरज सबै दीन पहिराय॥
ऊदन पहुँचे निज कमरा में ❀ डिब्बा लाये तुरत उठाय।
खुब पहिरावा सब नेगिन को ❀ चारों खुशीभये अधिकाय॥
बचा बचावा जो गहना रहै ❀ नेगिन स्वऊ दीन पकराय।
औरो नेगी जो पथरीगढ़ ❀ तिनकोयहौंदिह्योपहिराय॥
ऊदन बोले फिरि नेगिन से ❀ तुमगजराजदिह्योसमुझाय।
माघ शुक्ल तेरसि की साइति ❀ होई ब्याह तहां पर आय॥
हाथ जोरिकै सूरज बोले ❀ आज्ञा देउ चँदेलोराय।
हम चलि जावैं पथरीगढ़ को ❀ राजै खबरि सुनावैं जाय॥
बातैं सुनिकै ये सूरज की ❀ राजै हुकुम दीन फर्माय।
राम जुहार तुरत फिरि करिकै ❀ सूरज कूच कीन करवाय॥
सौ सौ तोपैं दगीं सलामी ❀ पठवन चले लहुरवाभाय।
बिदा माँगिकै फिरि ऊदन सों ❀ अपने नेगी संग लिवाय॥
सूरज चलिभे पथरीगढ़ को ❀ माहिल कथा कहौं अब गाय।
कहुँ सुधि पाई माहिल ठाकुर ❀ टीका चढ़ा मोहोबे जाय॥
लिल्ली घोड़ी को मँगवायो ❀ ता पर तुरत भयो असवार।
सूरज तेनी आगे पहुँचा ❀ ठाकुर उरई का सरदार॥
सजी कचहरी गजराजा की ❀ भारी लाग राज दरबार।
झारि बिसेने सब बैठे हैं ❀ टिहुनन धरे नाँगि तलवार॥

माहिल पहुँचे त्यहि समया में ❀ राजै कीन्ह्यो राम जुहार।
बड़ी खातिरी राजै कीन्ह्यो ❀ बैठा उरई का सरदार॥
राजा बोले फिरि माहिल ते ❀ नीके रहे खूब तुम भाय।
माहिल बोले फिरि राजा ते ❀ भइ अनहोनी कही ना जाय॥
बेटी तुम्हरी गजमोतिनि का ❀ टीका चढ़ा मोहोबे जाय।
जाति बनाफर की हीनी है ❀ जानों भली भाँति तुम भाय॥
पानी पीहै को घर तुम्हरे ❀ आपन धर्म गँवैहै आय।
अबै न बिगरा कछु राजा है ❀ साँचे हाल दीन बतलाय॥
सुनिकै बातैं ये माहिल की ❀ राजा गयो सनाका खाय।
तबलौं सूरज आटा कचहरी ❀ राजै शीश नवायो आय॥
राजा बोल्यो फिरि सूरज ते ❀ टीका कहाँ चढ़ायो जाय।
दोउ कर जोरे सूरज बोले ❀ दादा सत्य देउँ बतलाय॥
दिल्लीकनउज हम फिरिआयन ❀ टीका क्यहु न लीन महिपाल।
मोहबे उरई के अन्दर में ❀ मिलिगे देशराज के लाल॥
लै बरजोरी गे मोहबे को ❀ टीका चढ़ा बीर मलखान।
जो कछु रारि करत मोहबे में ❀ दादा जात प्रान पर आन॥
माघ शुक्ल तेरसि को अइहैं ❀ यह सच साइति का परमान।
मारब ब्याहब जो कछु कहिहौ ❀ उतनै धनै भई है हान॥
जितना टीका में दै आये ❀ लाये आपन प्रान बचाय।
साम दाम अरु दण्ड भेद सों ❀ कीन्हे काज तहां पर जाय॥
सुनिकै बातैं ये सूरज की ❀ राजै पास लीन बैठाय।
फिरि शिर सूँघ्यो गजराजा ने ❀ लीन्ह्यो तुरतै गले लगाय॥
राजा बोल्यो फिरि माहिल ते ❀ ठाकुर उरई के सरदार।
ब्याहन अइहैं जब हमरे घर ❀ तबहीं चली तुरत तलवार॥

ब्याह न होई गजमोतिनि का ❀ तुमते साँच दीन बतलाय ।
बिदा मांगिकै फिरि राजा सों ❀ माहिल चले बड़ा सुखपाय ॥
माघ महीना आवन लाग्यो ❀ धावन लगे मोहोबे दूत ।
लिखिलिखिचिट्ठीपरिमालिकने ❀ न्यवतन हेत पठावा दूत ॥
दिल्ली कनउज औ नैनागढ़ ❀ उरई न्यवत दीन पठवाय ।
सिरउज पनउज औ बौरी में ❀ न्यवता भेजा चँदेलोगय ॥
पायकै चिट्ठी परिमालिक कै ❀ इनको मानि बड़ो व्यवहार ।
नगर मोहोबे के जाने को ❀ राजा होन लागि तय्यार ॥
बाजे डंका अहतंका के ❀ राजन कूच दीन करवाय ।
तेरस केरो शुभ मुहूर्त पढ़ ❀ मोहवे गये सबै नृप आय ॥
तम्बू गड़िगे महराजन के ❀ खातिर कीन उदयसिंहराय ।
पढ़े पढ़ाये सब क्षत्री रहैं ❀ अपने धर्म कर्म समुदाय ॥
उचित औ अनुचितके ज्ञातारहैं ❀ जानैं राजनीति सब भाय ।
देश आरिया यह बाजत है ❀ आरय कहे बसिंदा जायँ ॥
आरय ऊदन त्यहि समया में ❀ सबको खुशी कीन अधिकाय।
तुरत नगड़ची को बुलवायो ❀ तासों कह्यो हाल समुझाय ॥
बाजै डंका अब मोहबे माँ ❀ सबियाँ फौज होय तय्यार ।
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❀ डंका बजन लाग त्यहि बार ॥
मलखे आये फिरि महलन में ❀ होवन लाग तेल त्यवहार ।
एक कुमारी तेल चढ़ावै ❀ गावैं सबै मंगलाचार ॥
माय मन्तरा भे दुसरे दिन ❀ नहखुर समयगयो फिरिआय।
लैकै महाउर नाइनि आई ❀ नहखुर करन लागि हर्षाय ॥
जो कछु माँग्योज्यहि नेगी ने ❀ मल्हना दीन ताहिसमुझाय ।
मन के भाये जब सब पाये ❀ नेगिन खुशी कही ना जाय ॥

कुँवाँ बियाहन के समया में ❀ मलखे चढ़े पालकी धाय।
बिटिया मल्हना की चन्द्रावलि ❀ राई नोन उतारति जाय॥
जायके पहुँचे फिरि कुँवनापर ❀ बिरमा पैर दीन लटकाय।
भाँवरि घूम्यो मलखाने ने ❀ लीन्ह्यो माता पैर उठाय॥
बहू लय आवों त्वरि सेवा को ❀ माता बाग दिह्यों लगवाय।
ऐसा कहिकै मलखाने ने ❀ भाँवरि घुमी सातहू धाय॥
पाँय लागिकै फिरि मल्हना के ❀ द्यावलि चरणन शीशनवाय।
चरणन लाग्यो जब बिरमा के ❀ माता लीन्ह्यो हृदय लगाय॥
पंजा फेर्यो फिरि मल्हना ने ❀ तुम्हरो बार न बाँका जाय।
बैठि पालकी मलखाने गे ❀ मन में श्रीगणेश को ध्याय॥
बाजन बाजे फिरि मोहबे माँ ❀ हाहाकारी शब्द सुनाय।
हाथी सजिगा पचशब्दा तहँ ❀ आल्हा चढ़े राम को ध्याय॥
हरनागर की फिरि पीठी माँ ❀ ब्रह्मा फाँदि भये असवार।
बीरशाह बौरी का राजा ❀ रूपन सिरउज का सरदार॥
देवकुँवरि रानी के बालक ❀ पनउज केरे मदन गुपाल।
ये सब क्षत्री चढ़ि घोड़न पर ❀ औरौ सजे बहुत नरपाल॥
घोड़ मनोहर देबा बैठे ❀ सय्यद सिर्गा पर असवार।
सजा बेंदुला का चढ़वैया ❀ जो दिनरात करै तलवार॥
घोड़ी कबुतरी मलखाने की ❀ कोतल तुरत भई तय्यार।
लक्खा गर्रा पँचकल्यानी ❀ हरियल मुश्की घोड़ अपार॥
सुर्खा सब्जा सिर्गा सुरँगा ❀ ताजी तुरकी रंग बिरंग।
कच्छी मच्छी काबुल वाले ❀ तिनकी कसी गई फिरि तंग॥
डारि रकाबैं गंगा यमुनी ❀ मुख में दीन लगाम लगाय।
परीं हयकलैं सब घोड़न के ❀ मेंहदी बूटा रहे बनाय॥

नवल बछेड़ा सब साजे गे ❀ एकते एक रूप अधिकाय।
हथी महावत हाथी लैकै ❀ तिन पर हौदा दये धराय॥
हाथी सजिगे जब मोहबे में ❀ तोपैं सबै भईं तय्यार।
पहिल नगाड़ा में जिनबन्दी ❀ दुसरे फाँदि भये असवार॥
तिसर नगाड़ा के बाजत खन ❀ चत्रिन कूच दीन करवाय।
बाजे डंका अहतंका के ❀ बंका चले शूर समुदाय॥
मारु मारु कै मौहरि बाजैं ❀ बाजैं हाव हाव करनाल।
खर खर खर खर कै रथ दौरे ❀ रब्बा चले पवन की चाल॥
लच्च पताका यक मिल ह्वैगे ❀ नभ माँ गई लालरी छाय।
धूरि उड़ानी हय टापन सों ❀ बाबा सूरज गये छिपाय॥
ब्याकुल ह्वैकै पच्छी भागे ❀ जंगल जीव गये थर्राय।
चलीं बरातैं मलखाने की ❀ हमरे बूत कही ना जाय॥
सात रोज की मैंजलि करिकै ❀ पहुँचे तुरत धुरे पर आय।
तम्बू गड़िगे महराजन के ❀ झंडा सरग फरहरा खायँ॥
सजिगा तम्बू तहँ आल्हा का ❀ भारी लाग खूब दरबार।
चूड़ामणि पण्डित तहँ आयो ❀ साइति लाग्यो करन बिचार॥
साइति नीकी अब आई है ❀ ऐंपनवारी देउ पठाय।
हाथ जोरिकै रूपन बोला ❀ नेगी कौन तहाँ को जाय॥
हम नहिं जैहैं पथरीगढ़ को ❀ सांची सुनो बनाफरराय।
बातैं सुनिकै ये रूपन की ❀ बोला तुरत लहुरवा भाय॥
घोड़ी कबुतरी दादावाली ❀ रूपन चढ़ो ताहि पर जाय।
बाना राखे रजपूती का ❀ कैसे बने जनाना भाय॥

सवैया

प्राण न प्यार करैं रणशूर कहैं ललिते हम सत्य बिचारी।

सोन को धारि झमा झमकारि सो जातसदा पियसेजमें नारी ॥
पाय निशा चमकै तहँ नारि सो रारि किये चमकै तलवारी ।
रारि किये यश शूरन होत सो कूरन की अपकीरति भारी ॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❀ रूपन बहुत गयो शर्माय ।
घोड़ी कबुतरी पर चढ़ि बैठ्यो ❀ ऐपनवारी लीन उठाय ॥
माथ नायकै सब क्षत्रिन को ❀ मनियादेव हृदय सों ध्याय ।
चारि घरी के फिरि अरसा माँ ❀ फाटक उपर पहूँचा आय ॥
हुकुम दर्रै हुकुम दर्रै ❀ साहेबजादे बात बनाय ।
कहाँ ते आये औ कहँ जैहै ❀ आपन काम देय बतलाय ॥
सुनिकै बातैं दरवानी की ❀ बोला घोड़ी का असवार ।
नगर मोहोबा जग में जाहिर ❀ नामी मोहबे के सरदार ॥
ब्याहन मलखे को आयन है ❀ मानो साँची कही हमार ।
ऐपनवारी बारी लायो ❀ बोलो ठाढ़ो राज दुवार ॥
नेग आपने को झगरत है ❀ भारी नेग चहै कछु द्वार ।
नेग आपनो का तुम चाहौ ❀ बोलो घोड़ी के असवार ॥
घोड़ी जोड़ी लैकै जाई ❀ डाँड़े परे तासु भर्त्तार ।
बोलु गवाँरे अब ऐसे ना ❀ द्वारे चहौं चलै तलवार ॥
सुनिकै बातैं ये रूपन की ❀ चकृत द्वारपाल भा द्वार ।
फिरि २ देखै दिशि रूपन के ❀ फिरि २ लावै शोच बिचार ॥
ऐसो बारी हम देखा ना ❀ जैसो आयो आज दुवार ।
सोचिसमुझिकैफिरिसो बोला ❀ बोलो घोड़े के असवार ॥
गरमी तुम्हरी अब कछु उतरी ❀ बोलो नेग काह तुम द्वार ।
चार घरी भर चलै सिरोही ❀ द्वारे बहै रक्त की धार ॥
नेग हमारो यह साँचा है ❀ याँचा द्वार तुम्हारे आय ।

जौन शूरमा हो पथरीगढ़ ❀ हमरो नेग देय चुकवाय ॥
ऐसे वैसे हम वारी ना ❀ मारी सदा शूर दश पाँच।
खबरि सुनावै तू राजा का ❀ तेरी निकरि परै कस काँच ॥
सुनिकै बातैं ये रूपन की ❀ पहुँचा द्वारपाल दरबार।
झारि बिसेने सब बैठे हैं ❀ एक ते एक शूर सरदार ॥
हाथ जोरि औ बिनती करिकै ❀ बोला द्वारपाल शिर नाय।
ऐपनवारी वारी लायो ❀ भारी नेग चहै ह्याँ आय ॥
चार पहर भर चलै सिरोही ❀ द्वारे बहै रक्त की धार।
नेग आपनो बारी बोलै ❀ लीन्हे हाथ ढाल तलवार ॥
सुनिकै बातैं द्वारपाल की ❀ तब गजराजा उठा रिसाय।
बाँधिकै मुशकै त्यहि बारी की ❀ सूरज मोहिं दिखावै आय ॥
इतना सुनिकै मानसिंह तहँ ❀ द्वारे तुरत पहूँचा आय।
सेल चलायो त्यहि रुपना पर ❀ रुपना लीन्ह्यो वार बचाय ॥
मार्यो लटुवा फिरि भालाको ❀ शिर ते चली खून की धार।
एँड़ा मसक्यो फिरि घोड़ी के ❀ फाटक निकरि गयोवहिपार ॥
बहुतक दौरे फिरि पाछे सों ❀ धरु धरु मारु करैं ललकार।
घोड़ी कबुतरी मलखेवाली ❀ नामी मोहबे का सरदार ॥
त्यहिके बल सों रूपन बारी ❀ बहुतन मारि मिलायो छार।
जायकै पहुँचा फिरि तम्बुन में ❀ भारी लाग जहाँ दरबार ॥
दीख्यो ऊदन तहँ रूपन का ❀ मानों फगुई का त्यवहार।
कैसी गुजरी रहै द्वारे पर ❀ बोले उदयसिंह सरदार ॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❀ रूपन यथातथ्य गा गाय।
खेत छूटिगा दिननायक सों ❀ झंडा गड़ा निशा को आय ॥
तारागण सब चमकन लागे ❀ संतन धुनी दीन परचाय।

परे आलसी खटिया तकितकि ❀ घों घों कण्ठ रहा घर्राय ॥
करों बन्दना गणनायक की ❀ दोनों चरणकमल शिरनाय ।
शीश नवावों पितु अपने को ❀ मन में सदा रामपद ध्याय ॥
करों तरंग यहाँ सों पूरण ❀ तव पद सुमिरि भवानीकन्त ।
को यश गावै शिवशंकर को ❀ जिनको वेद न पावैं अन्त ॥
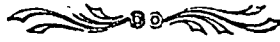
सवैया

दीनन के मन भीनन को मेघवा ह्वै बरषत हौ नित वारी ।
होय भिखारि चहौ नरनारि किये प्रभुआश सदा सुखकारी ॥
दीन पुकारि बिभीषण की सुनि आप हस्यो बिपदा सब भारी ।
कौन सो दीन रहा शरणागत जो न भयो ललिते हितकारी ॥

सुमिरन

धन्य बखानों मैं नारद को ❀ कीन्ह्यो बड़ा जगत उपकार ।
शिक्षा देते नहिं दुष्टन को ❀ तौ कस धरत राम अवतार ॥
जो रघुनन्दन जग होते ना ❀ तौ यह चरित करत को भाय ।
काहबखानततुलसी कलियुग ❀ कैसे जात जगत यश छाय ॥
कृष्ण न होते जो द्वापर में ❀ कैसे सूर जात भवपार ।
कोधों भारत शिशुपालै को ❀ कोधों करत कंस सों रार ॥
कैसे अर्जुन भारत जीतत ❀ कैसे करत युधिष्ठिर राज ।
कौन सो दुनिया में ऐसो भो ❀ जैसे भये कृष्ण महराज ॥
छूटि सुमिरनी गै देवन कै ❀ शाका सुनो शूरमन क्यार ।
माहिल अइहैं उरईवाले ❀ जहँ गजराज केर दरबार ॥

अथ कथाप्रसंग

गा जब रूपन बचि द्वारे पर ❀ माहिल आयगयो ततकाल ।

आदर करिकै बड़ माहिल का ❀ बोले मधुर बचन नरपाल ॥
ऐपनवारी बारी लायो ❀ कीन्ह्यो कठिन द्वार तलवार।
कैसे मरिहैं मोहबेवाले ❀ बोलो उरई के सरदार ॥
सुनिकै बातैं ये राजा की ❀ माहिल बोले बचन उदार।
ज्यहि की नीकी बेटी ब्याहैं ❀ ऊदन गाँसैं तासु दुवार ॥
मिर्चवान ब्याहे की पठवो ❀ तामें जहर देव मिलवाय।
बिना बयारी जूना टूटै ❀ औ बिन औषध हटै बलाय ॥
बातैं सुनिकै ये माहिल की ❀ राजा मनै फूलिगा भाय।
जहर घुरायो त्यहि शर्वत माँ ❀ सूरज पुत्र दीन पठवाय ॥
दिय जनवासा फिरि पथरीगढ़ ❀ पाछे शर्वत दीन पठाय।
आदर करिकै सूरज ठाकुर ❀ चाँदी आबखोर मँगवाय ॥
लै अबखोरा भरि त्यहि शर्वत ❀ आल्हा पास पहूँचा जाय।
जब अबखोरा आल्हा लीन्ह्यो ❀ सम्मुख भई छींक तब आय ॥
ऊदन बोले तब देबा ते ❀ अब तुम शकुन बताओ भाय।
देबा बोला तब ऊदन ते ❀ साँची सुनो लहुरवा भाय ॥
कालरूप यहु शर्वत आयो ❀ सबकी मृत्यु गई नगच्याय।
धारि जनेऊ तब कान्हे में ❀ सूरज उठा तड़ाका भाय ॥
ऊदन बोले तब आल्हा ते ❀ कुत्तै देवो आप पियाय।
जो मरि जावै पी कुत्ता यह ❀ तौ सब जहर देव फिकवाय ॥
इतना सुनिकै नेगी चलिभे ❀ मारन लागि लहुरवा भाय।
बड़े दयालू आल्हा बोले ❀ ऊदन छाँड़ि देव यहि ठायँ ॥
प्रजा हमारी सम परजा हैं ❀ ठाकुर भागि गयो भय खाय।
नामी ठाकुर तुम मोहबे के ❀ इन पर दया करो यहि ठायँ ॥
माथै राजा के नौकर हो ❀ तुम्हरो करै काह उपकार।

संग न देवे जो राजा का ❀ तौ हनि मरै काढ़ि तलवार ॥
ऐसे दीनन के मारे ते ❀ ऊदन जावै धर्म नशाय ।
बड़ी कठिनता नर परि जावे ❀ औ परि जाय जान पर आय ॥
ललिते दशरथ त्यहि समयामाँ ❀ प्राणै दीन धर्म पर आय ।
तैसे ऊदन कहा मानिकै ❀ धर्मै राखु दया पर आय ॥
दया राखिकै इन नेगिन को ❀ सुख सों देव घरै पहुँचाय ।
बड़ी दीनता इन नेगिन की ❀ सबकर गये प्राण घट आय ॥
ऊदन ऐसे केहरि सम्मुख ❀ लरिकै कौन शूरमाँ जाय ।
किह्यो बड़ाई बड़ भाई की ❀ आल्हा धर्म दीन समुझाय ॥
ऊदन छाँड़्यो तब नेगिन को ❀ नेगी घरै पहूँचे आय ।
हाल बतायो गजराजा को ❀ सुनतै गयो सनाका खाय ॥
लिल्ली घोड़ी पर चढ़ बैठ्यो ❀ माहिल उरई को सरदार ।
जायकै पहुँच्यो झुन्नागढ़ माँ ❀ जहँ पर भरी लाग दर्बार ॥
बड़ी खातिरी भै माहिल कै ❀ राजा पास लीन बैठाय ।
माहिल बोले वहि समया में ❀ ओ महराजा बात बनाय ॥
शर्बत खन्दक में डारा गा ❀ सबकै कुशल भई यहि ठायँ ।
लड़े बनाफर ते जितिहौ ना ❀ तुमते सत्य दीन बतलाय ॥
अब चलि जावो यहि समया में ❀ आल्हा निकट तुरत महराज ।
हाथ जोरिकै पाँयन परिकै ❀ कीन्ह्योअवशिआपनोकाज ॥
बली भयेपर छल करिये ना ❀ निर्बल भये छलै सों काज ।
होय हँसौवा कन्या बेहे ❀ औ नहिं रहे जगत में लाज ॥
ऐसे समया में महराजा ❀ करिये कौन दूसरो साज ।
छली न बाजैं हम दुनियाँ में ❀ औ रहि जाय हमारी लाज ॥
छल बल राजा का कर्मै है ❀ कर्म न होय भजन कर भाय ।

धर्म व्यवस्था जहँ परि जावै ❀ तहँ सब करैं कहैं हम गाय ॥
बातैं सुनिकै ये माहिल की ❀ राजा बड़ा कीन सतकार ।
हमरे नीके के साथी हो ❀ राजा उरई के सरदार ॥
माहिलचलिभे फिरितम्बुनको ❀ राजै नेगी लीन बुलाय ।
लैकै तोड़ा दो रुपियन के ❀ औ नौ हीरा लीन उठाय ॥
चलिभे राजा भुन्नागढ़ सों ❀ पथरीगढ़ै पहूँचे आय ।
तहँ पर पहुँचे त्यहि तम्बुन में ❀ जहँ पर रहैं बनाफरराय ॥
जो कछु सामा लैकै गे ते ❀ आल्है नजरि दीन सो जाय ।
देखिकै सामा महराजा की ❀ हर्षित भये बनाफरराय ॥
ऊदन बोले फ़िरि राजा सों ❀ काहे किह्यो परिश्रम आय ।
तब गजराजा बोलन लागो ❀ मानो कही लहुरवा भाय ॥
देश हमारे की रीती यह ❀ परचब लेयँ प्रथम ही आय ।
जहर पठावैं ते शर्बत में ❀ देखे बिना पियैं जे भाय ॥
बिना बुद्धि के ते नर कहिये ❀ उनके निकट कबौं ना जायँ ।
पास परीक्षा तुमको जान्यो ❀ लरिका भागिगयो भयखाय ॥
पै जो पीवत आल्हा शर्बत ❀ सूरज तुरत देत बतलाय ।
कछु छल नाहीं हम कीन्ह्यो रहे ❀ लरिका भाग गयो भयखाय ॥
इकलो लड़िका यहि समया में ❀ माड़ो तरे चलै हर्षाय ।
भाँवरि होवैं त्यहि लड़िका की ❀ हाथ न छुवै लोह कछु भाय ॥
सुनिकै बातैं ये राजा की ❀ मलखे कहा बचन मुसुकाय ।
छल की सानी सब बातैं हैं ❀ घातैं सबै परैं दिखलाय ॥
इतना सुनिकै आल्हा बोले ❀ मानो कही बिसेनेराय ।
किरिया करि ल्यो श्रीगङ्गा की ❀ तौ बर तुरत देयँ पठवाय ॥
गङ्गा कीन्ही गजराजा ने ❀ औ यह कहा बचन परमान ।

छल जो राखैं तुम्हरे सँग में ❀ तौम्वहिं सजादेयँ भगवान ॥
बातैं सुनिकै ये राजा की ❀ आल्हा कहा सुनो मलखान ।
बैठि पालकी में अब जावो ❀ तुम्हरो भलो करैं भगवान ॥
सुनिकै बातैं ये आल्हा की ❀ मलखे सुमिरि दुर्गा माय ।
तुरत पालकी में चढ़ि बैठे ❀ महरन पलकी लीन उठाय ॥
चारि घरी के फिरि अर्सा में ❀ महलन तुरत पहूँचे आय ।
उतरि पालकी ते मलखाने ❀ मड़ये तरे पहूँचे जाय ॥
फाटकबन्दी गजराजा करि ❀ क्षत्री सबै लीन बुलवाय ।
रीति बिवाहे की जस चाही ❀ तैसे खंभ गड़ा तहँ भाय ॥
गाफिल दीख्यो मलखाने को ❀ बन्धन तुरत लीन करवाय ।
बाँधिकै खंभा में मलखे को ❀ हरियर बांस लीन कटवाय ॥
मारन लागे मलखाने को ❀ जामा टूक टूक ह्वै जाय ।
देखि तमाशा फुलियामालिनि ❀ महलन गई तड़ाका धाय ॥
खबरि सुनाई गजमोतिनि को ❀ जो कुछ कियो बिसेनेराय ।
सुनि गजमोतिनि तहँ ते धाई ❀ कोठे उपर पहूँची आय ॥
नीचे दीख्यो त्यहि दुलहा को ❀ कङ्कण रहा हाथ दर्शाय ।
तब गजराजा सो गजमोतिनि ❀ बोली आरत बचन सुनाय ॥
कहाँ को बँधुवा यहु आयो है ❀ जो अति सहै बांस के घाय ।
तुरतै छाँड़ो यहि बँधुवा को ❀ मोसों बिपति दीखिनाजाय ॥
तब गजराजा कह बेटी सों ❀ खेलोसखिन साथ तुम जाय ।
पैसा मास्यो यहि ठाकुर ने ❀ तासों सहै बाँस के घाय ॥
मलखे दीख्यो तब कोठे को ❀ चारों नैन एक ह्वै जायँ ।
धरिकै हुमस्यो मलखाने ने ❀ खंभा उखरि गयो त्यहिठायँ ॥
बन्धन ढीले भे मलखे के ❀ खंभा लीन हाथ तब भाय ।

लाग घुमावन तब खंभा को ❀ क्षत्री गये सनाका खाय ॥
लात मारिकै इक क्षत्री को ❀ ताकी लीन ढाल तलवार ।
मलखे ठाकुर के मारुन में ❀ आँगन बही रक्त की धार ॥
सिंह गरज्जनि मलखे गर्जै ❀ इत उत हनैं बीर दस पांच ।
जितने कायर रहैं आँगन में ❀ देखत ढीलिहोइ तिन कांच ॥
फिरि फिरि मारै औ ललकारै ❀ नाहर समरधनी मलखान ।
लरिलरिगिरिगेकितन्योक्षत्री ❀ भारी लाग तहाँ खरिहान ॥
जैसे भेड़िन भेड़हा पैठै ❀ जैसे अहिर बिडारै गाय ।
तैसे मलखे के मुर्चा में ❀ कोउ रजपूत न रोंके पायँ ॥
सूरज ठाकुर तहँ पाछे सों ❀ कम्मरपकरिलीन फिरिआय ।
बहुतक क्षत्री यकमिल ह्वैकै ❀ बन्धन फेरि लीन करवाय ॥
त्यलिया खंदक में गजराजा ❀ फिरि मलखे को दीन डराय ।
हाल पायकै फुलिया मालिनि ❀ बेटी पास पहूँची जाय ॥
कही हकीकत सब मलखे की ❀ मालिनि बार बार तहँ गाय ।
सुनिसुनिबातैं तहँमालिनिकी ❀ बेटी बार बार पछिताय ॥
तुम्हैं बिधाता अस चहिये ना ❀ जैसी कीन हमारे साथ ।
बड़े दयालू औ बरदाता ❀ हम पर कृपा करो रघुनाथ ॥
फिरिफिरि बिनवै रघुनन्दन को ❀ धरिकै भूमि आपनो माथ ।
कैसे देखैं हम बालम को ❀ मालिनि फेरि कहौ यहगाथ ॥
सुनिकै बातैं गजमोतिनि की ❀ मालिनि कही कथासमुझाय ।
दिवस बीतिगा इन बातन में ❀ संध्याकाल पहूँचा आय ॥
थार मँगायो तब चाँदी का ❀ भोजन सबै लीन धरवाय ।
चाँदी केरे फिरि लोटा में ❀ निर्मल पानी लीन भराय ॥
पाँच पान को बीरा लैकै ❀ रेशम रस्सी लीन मँगाय ।

कौन तयारी त्यहि खंदक को ❀ जहँ पर परा बनाफरराय ॥
अधी राति के फिरि अमला में ❀ बेटी अटी तहाँ पर जाय ।
रेशम रस्सी को लटकायो ❀ औ यह बोली बचन सुनाय ॥
बप्पा हमरे बैरी ह्वैगे ❀ तुमका खंदक दीन डराय ।
अब चढ़िआवो गहि रस्सी को ❀ बालम बार बार बलि जायँ ॥
सुनिकै बातैं गजमोतिनि की ❀ बोला मोहबे का सरदार ।
घटिहा राजा की बेटी हौ ❀ तुम्हरो कौन करै इतबार ॥
किरिया करिकै म्वहिं लै आयो ❀ औ खंदक में दियो डराय ।
बातैं सुनिकै मलखाने की ❀ बेटी बोली शीश नवाय ॥
मोहिं शपथ है रघुनन्दन की ❀ मानो सत्य बचन तुम नाथ ।
क्वारी रहिहौं मैं दुनिया में ❀ कीफिरिब्याहहोय तुमसाथ ॥
सुनिकै बातैं गजमोतिनि की ❀ मलखे बोले बचन उदार ।
धर्म क्षत्तिरिन को मिटि जावै ❀ जो हम बचैं नारि उपकार ॥
चोरी चोरा हम निकरैं ना ❀ ओ गजमोतिनि बातबनाय ।
हमको चाहो जो ठकुराइनि ❀ लश्कर खबरि देउ पहुँचाय ॥
तुमचलिजावोनिजमहलनको ❀ बीती अर्द्धरात अब आय ।
इतना सुनिकै बेटी चलिभै ❀ महलनसोयगई फिरिजाय ॥
भोर भ्वरहरे मुर्गा बोलत ❀ फिरिमालिनिकोलीनबुलाय ।
लिखिकै चिट्ठी बघऊदन को ❀ मालिनि हाथदीनपकराय ॥
मालिनि बोली गजमोतिनिसों ❀ बेटी बार बार बलि जायँ ।
जो सुधि पाई गजराजा कहुँ ❀ हमरे जाय प्राण पर आय ॥
बेटी बोली तब फुलिया ते ❀ मालिनि सत्य देयँ बतलाय ।
पर उपकारी जो मरि जावै ❀ पहुँचै रामधाम में जाय ॥
इक दिन मरनो है आखिर को ❀ ताको कौन सोच है माय ।

डोला जाई जब मोहबे को ❀ तुमको द्रव्य देउँ अधिकाय ॥
इतना सुनिकै मालिनि चलिभै ❀ फाटक उपर पहूँची आय ।
सूरज बेटा गजराजा को ❀ द्वारे ठाढ़ रहै सो भाय ॥
सो हँसि बोला तहँ मालिनिसों ❀ मालिनि कहाँ चली तू धाय ।
मालिनि बोली तहँ सूरज सों ❀ बेटा फूल लेन को जायँ ॥
मोहिं पठायो गजमोतिनि है ❀ तुम सों सत्य दीन बतलाय ।
सूरज बोला दरवानिन सों ❀ याकी लेउ तलाशी भाय ॥
सुनिकै बातें ये सूरज की ❀ नंगाझोरी लीन कराय ।
चिट्ठी खोंसे सो जूरा में ❀ ताको पता मिला नहिं भाय ॥
मालिनि चलिभै फिरि आगे को ❀ फौजन पास पहूँची जाय ।
जहँ जनवासा था आल्हा का ❀ मालिनि अटी तहां पर आय ॥
मालिनि पूछ्यो तहँ माहिलसों ❀ कहँ पर बैठ उदयसिंहराय ।
माहिल पूछ्यो तहँ मालिनिसों ❀ आपन हाल देय बतलाय ॥
नाम हमारो उदयसिंह है ❀ आई कौन काज तू धाय ।
सुनिकै बातैं ये माहिल की ❀ मालिनि कथा गई सब गाय ॥
सुनिकै बातैं सब मालिनि की ❀ माहिल चाबुक लीन उठाय ।
पीटन लाग्यो सो मालिनि को ❀ औ यह कह्यो बचन समुझाय ॥
जल्दी जावै घर अपने को ❀ अब ना कहे कथा अस गाय ।
बड़े जोर सों मालिनि रोई ❀ पहुँचा उदयसिंह तब आय ॥
पुछी हकीकति उदयसिंह तब ❀ मालिनि कथा गई फिरि गाय ।
मोहिं पठायो गजमोतिनि है ❀ चिट्ठी हाथ दीन पकराय ॥
पढ़तै चिट्ठी बघऊदन के ❀ आँखन बही आँसु की धार ।
डाटन लाग्यो फिरि माहिल को ❀ का तुम कीन चहो अपकार ॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ बोला उरई का सरदार ।

हाल बिसेने जो सुनि पावैं ❀ तौ यहि डरैं जान सों मार ॥
हल्ला करिकै यह बोलतभै ❀ तबहम कहा याहि समुझाय ।
धीरे बोलै जनवासे में ❀ नहिं कहुँ सुनी बिसेनोराय ॥
इतना सुनतै मुहँ मटकायो ❀ गारी दियो बनाफरराय ।
ढोलक नारिन औ शूदन की ❀ तुमसों कथा कहौं मैं गाय ॥
जैसे पीटे ढोलक बाजै ❀ नारी दशा स्वई है भाय ।
गगरीदाना शूद उताना ❀ यहहू मिला खूब ह्याँ आय ॥
भला तुम्हारो हम नित चाहैं ❀ साँची सुनो बनाफरराय ।
जैसे भैने म्वर ब्रह्मा हैं ❀ तैसे तुहूँ लहुरवा भाय ॥
घाटि न जानैं हम ब्रह्मा ते ❀ कैसी कहौ उदयसिंहराय ।
इतना सुनिकै ऊदन चलिभे ❀ सँगमें मालिनिलीन लिवाय ॥
जहँ पर बैठे थे आल्हाजी ❀ ऊदन तहाँ पहूँचे जाय ।
कहीहकीकति तहँ मालिनिने ❀ ऊदन पाती दीन सुनाय ॥
बड़ा शोचभा सुनि आल्हा के ❀ मन में बार बार पछितायँ ।
हमहीं पठवा था मलखे को ❀ तब चलि गयो लहुरवाभाय ॥
दिह्यो अशर्फीबहुमालिनिको ❀ कीन्ह्यो बिदा बनाफरराय ।
मालिनि चलिभै जनवासे ते ❀ पहुँची फेरि महल में जाय ॥
कह्योहकीकतिगजमोतिनिते ❀ ऊदन बोले शीश नवाय ।
हुकुम जो पावैं हम दादा को ❀ तौ मलखे को लवैं छुड़ाय ॥
बातैं सुनिकै ये ऊदन की ❀ आल्हा हुकुम दीन फर्माय ।
हुकुम लगायो फिरि ऊदन ने ❀ डङ्का तुरत दीन बजवाय ॥
बाजे डङ्का अहतङ्का के ❀ सजियाँ फौज भई तय्यार ।
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❀ बाँके घोड़न भे असवार ॥
पहिल नगाड़ा में जिनबंदी ❀ दुसरे बांधि लीन हथियार ।

तिसर नगाड़ा के बाजत खन ❀ चलिभे सबै शूर सरदार ॥
कूच करायो पथरीगढ़ ते ❀ झुन्नागढ़ै पहूँचे जाय ।
गा हरिकारा पथरीगढ़ ते ❀ राजै खबरि दीन बतलाय ॥
सुनिकै बातैं हरिकारा की ❀ सूरज बेटा लीन बुलाय ।
काँतामल औ मानसिंह सों ❀ राजा कह्यो खूब समुझाय ॥
जितने आये हैं मोहबे ते ❀ सो बिन घाव एक ना जायँ ।
बिदा माँगिकै सो राजा सों ❀ डङ्का तुरत दीन बजवाय ॥
झीलमबखतरपहिरिसिपाहिन ❀ हाथ म लीन ढाल तलवार ।
रणकी मौहरि बाजन लागी ❀ रण का होन लाग व्यवहार ॥
कूच करायो झुन्नागढ़ सों ❀ पहुँचे समरभूमि मैदान ।
ढोल औ तुरही बाजन लागीं ❀ घूमन लागे लाल निशान ॥
इतसों आगे सूरज ठाकुर ❀ उतसों बेंदुल को असवार ।
सूरज ठाकुर के देखत खन ❀ ऊदन गरू दीन ललकार ॥
छलिकै लैकै मलखाने को ❀ औ खन्दक में दीन डराय ।
बिना बिहाये हम जैहैं ना ❀ चहु तन धजी २ उड़ि जाय ॥
इतना सुनिकै सूरज जरिगे ❀ अपनो घोड़ा दीन बढ़ाय ।
औ ललकारा उदयसिंह को ❀ अब तुम खबरदार ह्वै जाय ॥
वार हमारी सों बचिहै ना ❀ ऊदन मोहबे के सरदार ।
इतना कहिकै सूरज ठाकुर ❀ जल्दी खैंचि लीन तलवार ॥
ऐंचिकै मारा बघऊदन को ❀ ऊदन लीन्ह्यो वार बचाय ।
मानसिंह औ फिरि देवा का ❀ परिगा समर बरोबरि आय ॥
सूँड़ि लपेटा हाथी भिड़िगे ❀ अंकुश भिड़े महौतन केर ।
हौदा हौदा यकमिल ह्वैगे ❀ मारैं एक एक को हेर ॥
गोली ओलासम बर्षत भईं ❀ कहुँ कहुँ कड़ाबीन की मार ।

तेगा धमकैं बर्दवान के ❀ कोताखानी चलैं कटार ॥
बड़ी लड़ाई भै झुन्नागढ़ ❀ ऊदन सूरज के मैदान ।
फिरि फिरि मारैं औ ललकारैं ❀ नाहर एक एक को ज्वान ॥
मानसिंह जगनिक को राजा ❀ देबा मैनपुरी चौहान ।
काँतामल औ बनरसवाला ❀ भारी कीन घोर घमसान ॥
तीनि सिरोही सूरज मारी ❀ ऊदन लीन्ही वार बचाय ।
साँग उठाई बघऊदन ने ❀ औ सूरज पर दई चलाय ॥
भागा घोड़ा तब सूरज को ❀ लश्कर भागि गयो भयखाय ।
जहां कचहरी गजराजा की ❀ सूरज तहां पहूँचा जाय ॥
हाथ जोरि औ पायन परिकै ❀ राजै बहुत कहा समुझाय ।
बड़े लड़ैया मोहबे वाले ❀ तिनकी मारु सही ना जाय ॥
सुनिकै बातैं थे सूरज की ❀ सेमा भगतिनि लीन बुलाय ।
कही हकीकति सब सेमा ते ❀ राजा बार बार समुझाय ॥
सेमा भगतिनि सूरज लैकै ❀ तुरतै कूच दीन करवाय ।
कूच कराये झुन्नागढ़ ते ❀ पथरीगढ़ै पहूँची आय ॥
दीख्यो ऊदन जब सूरज को ❀ धावा तुरत दीन करवाय ।
सेमा बरसी तब जादू को ❀ पत्थर सबै फौज ह्वै जाय ॥
इकलो देवा बचि लश्करगा ❀ आल्हा पास पहूँचा आय ।
कही हकीकति सब सेमा की ❀ आल्हा गये सनाका खाय ॥
धीरज धरिकै आल्हा बोले ❀ देबा नगर मोहोबे जाय ।
जल्दी लावो तुम इन्दल को ❀ तासों कह्यो कथा समुझाय ॥
इतना सुनिकै देवा ठाकुर ❀ अपने घोड़ भयो असवार ।
सातरोज को धावा करिकै ❀ पहुँचा नगर मोहोवा द्वार ॥
आल्हा केरे फिरि मंदिर में ❀ देबा अटा तुरत ही जाय ।

कही हकीकति सब सुनवाँ सों ❀ इन्दल फेरि पहूँचा आय ॥
इन्दल बोल्यो तहँ देबा ते ❀ चाचा हाल देउ समुझाय ।
कैसी गुजरी पथरीगढ़ में ❀ कस तुम गयो इकेले आय ॥
सुनिकै बातें ये इन्दल की ❀ देबा लीन दुःख की श्वास ।
सेमा भगतिनि पथरीगढ़ की ❀ त्यहि करिडरा बंशकी नाश ॥
तुम्है बुलैबे को आये हैं ❀ बेटा चलौ हमारे साथ ।
इतना सुनिकै इन्दल चलिभे ❀ देबी जाय नवायो माथ ॥
बड़ी अस्तुती की देबी की ❀ इन्दल तंत्रशास्त्र अनुसार ।
अमृतसानी भइ मठबानी ❀ इन्दल आल्हा केर कुमार ॥

सवैया

बैठु मठी कछु देर कुमार अबार नहीं करिहउँ मैं काजा ।
या कहिकै गय देबि तहाँ जहँ बैठ सुराधिप सोहत राजा ॥
जायबिनै बहुभाँति कियो सुरराज लख्यो तहँ देबि अकाजा ।
लैकर अमृत देत जबै ललिते मठि में फिरि होत अवाजा ॥

छिपिकै चलिबे त्यरे साथ में ❀ इन्दल करो तयारी जाय ।
इतना सुनिकै इन्दल चलिभे ❀ देबी बार बार शिर नाय ॥
माता केरे फिरि मंदिर में ❀ इन्दल बिनय सुनाई आय ।
आज्ञा पावैं महतारी कै ❀ दादा पास पहूँचैं जाय ॥
सुनवाँ बोली फिरि इन्दल ते ❀ बेटा बार बार बलि जाय ।
सेमा भगतिनि के देखै को ❀ हमहूँ चलब पूत तहँ धाय ॥
बिस्मय कीन्ह्यो कछु मनमें ना ❀ पक्षीरूप धरी तब माय ।
चूम्यो चाट्यो बदन लगायो ❀ पाछे हुकुम दियो फर्माय ॥
आज्ञापितुकी सबकोउ कीन्ह्यो ❀ राम औ परशुराम लों जानु ।
जल्दी जावो पितु दर्शन को ❀ बेटा कही हमारी मानु ॥

इतना सुनिकै इन्दल चलिभे ❀ देबै तुरत जुहारयो जाय।
जल्दी चलिये अब दादा ढिग ❀ मातै हुकुम दीन फर्माय॥
इतना सुनिकै देबा ठाकुर ❀ अपने घोड़ भयो असवार।
घोड़ करिलिया इन्दल बैठे ❀ नाहर आल्हा केर कुमार॥
चील्ह रूप ह्वै सुनवाँ उड़िगै ❀ आधे सरग रही मड़राय।
देबी चलिकै फिरि मंदिर ते ❀ पथरीगढ़ै पहूँची जाय॥
देबा इन्दल दोऊ नाहर ❀ आल्हा निकट पहूँचे जाय।
आल्हा दीख्यो जब इन्दल को ❀ तब छाती सों लियो लगाय॥
आल्हा बोले फिरि इन्दल ते ❀ बेटा कही कथा ना जाय।
सेमा भगतिनि के कर्तब ते ❀ पत्थर भई फौज सब आय॥
इन्दल बोले फिरि आल्हा ते ❀ अब नहिं देर करो महराज।
जल्दी चलिये अब झुन्नागढ़ ❀ चलिकै करिय आपनो काज॥
इतना सुनिकै आल्हा ठाकुर ❀ हाथी उपर भये असवार।
घोड़ मनोहर की पीठी पर ❀ ठाकुर मैनपुरी सरदार॥
चढ़े करिलिया की पीठी पर ❀ इन्दल कूचदीन करवाय।
घड़ी अढ़ाई के अरसा माँ ❀ पहुँचे समरभूमि में आय॥
देखिकै फौजै तहँ पत्थर की ❀ इन्दल गयो सनाका खाय।
उतरिकै घोड़ा ते भुइँ आयो ❀ बोल्यो देबी शीश नवाय॥
हेअविनाशिनिसबसुखराशिनि ❀ नाशिनिबिपतिकेरिसमुदाय।
चरण शरण में हम तुम्हरी हैं ❀ फौजै देवो मातु जियाय॥
तब तो देबी पथरीगढ़ में ❀ अमृत बूँद दीन बरसाय।
अमृत बूँदी के परतेखन ❀ फौजैं उठीं तुरत हरषाय॥
उदन बेंदुला का चढ़वैया ❀ इन्दल निकट पहूँचा आय।
चूम्यो चाट्यो गरे लगायो ❀ पूँछन लाग बनाफरराय॥

कैसे आयो तुम पथरीगढ़ ❀ हम को हाल देउ बतलाय।
बातैं सुनकै ये ऊदन की ❀ इन्दल यथातथ्य गा गाय॥
गा हरिकारा पथरीगढ़ ते ❀ भुन्नागढ़ै पहूँचा जाय।
दीख तमाशा जो फौजन का ❀ राजै हाल दीन बतलाय॥
सुनिकै बातैं हरिकारा की ❀ सूरजमल का लीन बुलाय।
कही हकीकति सब सूरज ते ❀ जल्दी हुकुम दीन फरमाय॥
हुकुम पायकै महराजा को ❀ डंका तुरत दीन बजवाय।
हाथी घोड़ा औ रथ सजिगे ❀ पैदर सजे शूर समुदाय॥
जितनी फौजैं रहैं भुन्नागढ़ ❀ सबियाँ बेगि भईं तय्यार।
हथी चढ़ैया हाथी चढ़िगे ❀ बांके घोड़न मे असवार॥
रण की मोहरि बाजन लागी ❀ रण का होन लाग ब्यवहार।
ढाढ़ी करखा बोलन लागे ❀ बिप्रन कीन वेद उच्चार॥
कूचको डंका बाजन लाग्यो ❀ घूमन लाग्यो लाल निशान।
फौजैं चलिकै भुन्नागढ़ ते ❀ पहुँचीं समरभूमि मैदान॥
धूलि देखिकै आसमान में ❀ भारी देखि गर्द गुब्बार।
बोल्यो फौजन में त्यहि समया ❀ ठाकुर बेंदुल को असवार॥
फौजैं आईं गजराजा की ❀ भारी अंधकार गा छाय।
जल्दी सजि कै औ रणबाघो ❀ तुमहूँ कूच देव करवाय॥
बातैं सुनिकै बघऊदन की ❀ सबियाँ फौज भई तय्यार।
झीलमबखतरपहिरिसिपाहिन ❀ हाथ म लई ढाल तलवार॥
पहिल नगाड़ा में जिनबंदी ❀ दुसरे फांदि भये असवार।
तिसर नगाड़ा के बाजत खन ❀ चलिभे सबै शूर सरदार॥
पहिले मारुइ भईं तोपन की ❀ दूसरि भई तीर की मार।
तीसरि मारुइ बंदूखन की ❀ चौथे चलन लागि तलवार॥

पांच कदम पर बरछी छूटैं ❀ भालन तीन कदम पर मार।
कदम कदम पर चलैं कटारी ❀ ऊनाचलै बिलाइति क्यार॥
तेगा धमकैं बर्दवान के ❀ कटि कटि गिरैं शूर सरदार।
बड़ी लड़ाई दोउ दल कीन्ह्यो ❀ नदिया बही रक्त की धार॥
सूरज ऊदन फिरि दोऊ का ❀ परिगा समर बरोबरि आय।
दोऊ मारैं दोउ ललकारैं ❀ दोऊ लेवैं वार बचाय॥
को गति बरणै तहँ दोऊ कै ❀ दोऊ समर धनी सरदार।
बैस बरोबरि है दोऊ कै ❀ दोऊ खूब करैं तलवार॥
यहु रणरंगी लै असि नंगी ❀ जंगी मैनपुरी चौहान।
धरि धरि धमकै रजपूतन को ❀ देबा बड़ा लड़ैया ज्वान॥
को गति बरणै काँतामल की ❀ हंता चत्रिन को सरदार।
फिरि फिरि मारै औ ललकारै ❀ दोऊ हाथ करै तलवार॥
सिर्गा घोड़ा की पीठी पर ❀ सय्यद बनरस का सरदार।
अली अली कहि जैसी दौरै ❀ भागैं गली गली सबयार॥
भली भली कहि ऊदन बोलैं ❀ काँपैं थली थली सरदार।
हली हली तहँ पृथ्वी डोलै ❀ काँपैं डली डली लखिमार॥
को गति बरणै तहँ सूरज की ❀ यहु गजराजा केर कुमार।
खैंचि सिरोही ली कम्मर सों ❀ ऊदन उपर हनी तलवार॥
वार बचाई मघऊदन ने ❀ आपो दियो तड़ाका मार।
परी सिरोही सो घोड़ा के ❀ औशिरगिस्योतुरतत्यहिबार॥
उतरि बेंदुलाते सूरज को ❀ पकस्यो उदयसिंह सरदार।
बांधिकै मुशकै सूरजमल की ❀ बेंदुल उपर भयो असवार॥
औ ललकास्यो कंतामल को ❀ चत्री खबरदार ह्वै जाय।
घाटि बिसेनेने जस कीन्हों ❀ तैसी सजा लेउ अब आय॥

इतना कहतै बघऊदन ने ❀ ओभड़ हना ढाल की जाय।
काँतामल घोड़ा ते गिरिगा ❀ पकरा तुरत बनाफरराय॥
बांधिकै मुशकै काँतामल की ❀ तम्बू तुरत दीन पहुँचाय।
गा हरिकारा तब भुन्नागढ़ ❀ राजै खबरि सुनायो जाय॥
खेत छूटिगा दिननायक सों ❀ झंडा गड़ा निशा को आय।
तारागण सब चमकन लाग्यो ❀ संतन धुनी दीन परचाय॥
माथ नवावों पितु अपने को ❀ ध्यावों तुम्हैं भवानीकन्त।
राम रमा मिलि दर्शन देवो ❀ इच्छा यही मोरि भगवन्त॥

गजराजा की लड़ाई

सवैया

होत नहीं जपहू तपहू अपने मन में यहही पछतावैं।
काम औ क्रोध बढ़ैं नितही दुखही दुखसों हम देह वितावैं॥
शान्ति औ शील दया अरु धर्म बिना इन कौन कहाँ सुखपावैं।
गावैं सदा रघुनन्दन को गुण बन्दन कै ललिते बर पावैं॥

सुमिरन

हम पद ध्यावैं पुरुषोत्तम के ❀ नरनारायण शीश नवाय।
नर तो जानो तुम अर्जुन को ❀ गीतासुना सकल ज्यहिभाय॥
हैं नारायण कृष्णचन्द्र तहँ ❀ जिनकासुयश रहा जगछाज।
को गति बरणै पुरुषोत्तम कै ❀ जिनको नाम राम महराज॥
कोधों पैदा फिरि दुनियां भा ❀ कोधों बैठि करै असराज।
धर्म चत्तिरी के सब पाले ❀ कीन्ह्यो रामचन्द्र जस काज॥

काव्य पुरानी बालमीकि की ❀ यह ही ठीक ठीक परमान।
याको देखै जब कोउ मानुष ❀ होवैं रामचन्द्र तब भान॥
भानै होतै त्यहि प्रानी के ❀ आनी मनो पुरबले भाग।
भागे ह्वैकै सो जागै उर ❀ भागै सबै बिपति की आग॥
छूटि सुमिरनी गै ह्यांते अब ❀ शाका सुनो शूरमन केर।
फौजैं सजि हैं गजराजा की ❀ लड़ि हैं द्वऊ शूरमा फेर॥

अथ कथाप्रसंग

खबरि पायकै गजराजा ने ❀ सेमा भगतिनि लीन बुलाय।
सेमा भगतिनि ते गजराजा ❀ सबियाँ कथा कह्यो समुझाय॥
सुनिअकुलानी सेमाभगतिनि ❀ राजै बार बार शिर नाय।
आज्ञा देवो मोहिं जाने को ❀ मानो कही बिसेनेराय॥
राजा बोले फिरि सेमा ते ❀ आइव यही काज बुलवाय।
अब तुम जावो पथरीगढ़ को ❀ मारो सबै मोहबिया जाय॥
आज्ञा पावत महराजा की ❀ सेमा आटी भवन में जाय।
लैकै पुरिया सब जादू की ❀ तुरतै कूच दीन करवाय॥
तुरत पौंरिया को बुलवायो ❀ राजै हुकुम दीन फर्माय।
तुरत नगड़ची को बुलवाओ ❀ डंका तुरत देव बजवाय॥
हुकुम पायकै महराजा को ❀ धावन आटा तुरतही जाय।
बाजे डंका अहतंका के ❀ हाहाकारी शब्द सुनाय॥
जितनी फौजैं गजराजा की ❀ सबियाँ बेगि भईं तय्यार।
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❀ बाँके घोड़न भे असवार॥
घोड़ अगिनिया गजराजा को ❀ सोऊ सजा खड़ा तय्यार।
सुमिरि भवानी जगदम्बा को ❀ राजा फाँदि भयो असवार॥
दाढ़ी करखा बोलन लागे ❀ बिप्रन कीन बेद उच्चार।

रण की मोहरि बाजन लागी ❀ रणका होन लाग ब्यवहार ॥
खर खर खर खर के रथ दौरे ❀ रब्बा चले पवन की चाल ।
मारु मारु करि मोहरि बाजी ❀ बाजी हाव हाव करनाल ॥
आगे हलका है हाथिन का ❀ पाछे चले जायँ असवार ।
पैदल क्षत्री त्यहि पाछे सों ❀ हाथम लिये नाँगि तलवार ॥
सुनि सुनि चौबे तहँ डङ्का की ❀ बोला तुरत बनाफरराय ।
चढ़िके आवत गजराजा है ❀ मानो कही शूर समुदाय ॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ सँभले सबै शूर सरदार ।
घड़ी न बीती ना दिन गुजरा ❀ फौजें सबै भई तय्यार ॥
दोऊ ओर ते तोपैं छूटीं ❀ मानो प्रलय मेघ घहरान ।
मारत मारत फिरि तोपन के ❀ संगम भये समर मैदान ॥
ऊदन राजा सम्मुख ह्वैगे ❀ राजा गरू दीन ललकार ।
मुशकै छोड़ो द्वउ पुत्रन की ❀ ऊदन मानो कही हमार ॥
लड़िकै बेटी तुम पैहौ ना ❀ मरिकै आन धरो अवतार ।
सुनिकै बातैं ये राजा की ❀ बोला उदयसिंह सरदार ॥
घाटि बिसेने तुम कीन्ही है ❀ मलखे खन्दक दिये डराय ।
बेटी ब्याहो औ फिरि जावो ❀ नाहीं गई प्राण पर आय ॥
काम बिटेवन ते परिगा है ❀ कबहुँ न परा मर्द ते काम ।
सम्मुख लड़िकै उदयसिंह ते ❀ अबही जान चहत यमधाम ॥
इतना सुनिकै गजराजा ने ❀ आपनि ऐंचि लीन तलवार ।
हनिकै मारा बघऊदन को ❀ ऊदन लीन ढाल पर वार ॥
फिरि ललकारा गजराजा को ❀ ठाकुर खबरदार ह्वै जाय ।
पहिली कीन्हे दूसरि कैले ❀ क्षत्री तोरि आहि रहिजाय ॥
दूध लरिकई मा पाये ना ❀ तेरे मारे चढ़ै ना घाव ।

इतना सुनिकै गजराजा ने ❀ जल्दी हना दूसरा दाँव ॥
वार बचाई लघऊदन ने ❀ राजा बहुत गयो शर्माय ।
उसरिन उसरिन द्वउ मारत भे ❀ शोभा कही बूत ना जाय ॥
चिल्हियाबनिकैसेमाभगतिनि ❀ सुनवाँ पास पहूँची जाय ।
दोनों चिल्हिया संगम ह्वैकै ❀ पंजन परन लड़ैं नभ धाय ॥
इन्दल दीख्यो घोड़ा पर सों ❀ ऊपर आसमान की ओर ।
दोनों चिल्हिया आसमान में ❀ भारी करैं युद्ध अतिघोर ॥
लड़िकै सटिकै संगम ह्वैकै ❀ दोऊ गिरीं धरणि में आय ।
सुनवाँ बोली तब इन्दल ते ❀ मारो पूत याहि असि घाय ॥
इन्दल बोले तब सुनवाँ ते ❀ माता सत्य कहौं समुझाय ।
हाथ सिहिरिया पर डारैं जो ❀ तौ रजपूती धर्म नशाय ॥
सुनवाँ बोली फिरि इन्दल ते ❀ बेटा बार बार बलि जायँ ।
जूरा काटो इह भगतिनि को ❀ तौ सब काम सिद्धि ह्वै जायँ ॥
सुनिकै बातैं ये माता की ❀ जूरा काटि लीन त्यहिकाल ।
जादू झूठी भईं सेमा की ❀ सेमा परी बिपति के जाल ॥
ज्यों त्यों करिकै झुन्नागढ़ को ❀ सेमा चली गई पछताय ।
मनै सराहै भल सुनवाँ को ❀ आपन लिह्यो बदल ह्याँ आय ॥
हवा चलाई जब पहिले मैं ❀ सुनवाँ बन्द कीन तब आय ।
अपने हाथे मैं बिष बोयों ❀ बनिकै चील्ह लड़िउँ जो जाय ॥
ह्याँ गजराजा हल्ला करिकै ❀ अति खलभल्ला दीन मचाय ।
लड़ै हकल्ला सो घोड़ा पर ❀ कल्ला दीन भूमि बिथराय ॥
पल्ला दैकै सय्यद ठाढ़े ❀ अल्लाऔबिसमिल्लागयेहिराय ।
जैसे होरी दल्ला छूटैं ❀ गल्ला यथा उसावा जाय ॥
मारे मारे तलवारिन के ❀ तस गजराजा दीन बिछाय ।

फिरि फिरि मारै औ ललकारै ❁ अद्भुतसमर कहा ना जाय॥
सुनवाँ बोली फिरि इन्दल ते ❁ बेटा कहा मानि ले मोर।
पूँछ काटि ले इह घोड़ा की ❁ तौ नहिं रहै फेरि अस जोर॥
इतना सुनिकै इन्दल तुरतै ❁ घोड़ा पास पहूँचे जाय।
पूँछ काटिकै वहि घोड़ा की ❁ औ धरती माँ दीन गिराय॥
सेमाभगतिनिघोड़अगिनियाँ ❁ दोऊ बिना जोर भे भाय।
राजा सोच्यो अपने मन माँ ❁ हमरो काल पहूँचा आय॥
छोड़ि आसरा जिंदगानी का ❁ अपनो मया मोह बिसराय।
प्राण गदोरी पर धरि लीन्ह्यो ❁ आल्हा पास पहूँचा जाय॥
औ ललकारा फिरि आल्हाको ❁ ठाकुर खबरदार ह्वै जाय।
धोखे भूले ना माड़ो के ❁ जहँ लै लिये बाप का दायँ॥
मैं गजराजा झुन्नागढ़ को ❁ सम्मुख लड़ो आजु सरदार।
एँड़ा मसके फिरि घोड़ा के ❁ आल्हा उपर हनी तलवार॥
टूटि सिरोही गै राजाकै ❁ कबुजा रहा इकेलो हाथ।
साँकरि लैकै फिरि हाथी को ❁ आल्हा दीनसुमिरिरघुनाथ॥
साँकरि फेरी पचशब्दा ने ❁ औ घोड़ा ते दीन गिराय।
बाँधिकै मुशकै फिरि राजा की ❁ आल्हा कूच दीन करवाय॥
ऊदन बोले गजराजा सों ❁ म्वहिं मलखे को देउ बताय।
राजा बोलो तब ऊदन सों ❁ मानो कही बनाफरराय॥
संग हमारे अब तुम चलिये ❁ औ मलखे को लवैं लिवाय।
इतना सुनिकै दूनों चलिभे ❁ खंदक पास पहूँचे जाय॥
वज्रशिला को फिरि टारत भे ❁ रस्सा तुरत दीन लटकाय।
बाहर निकरे मलखे ठाकुर ❁ रोवा बहुत लहुरवा भाय॥
पकरिकै बाहू द्वउ ऊदन की ❁ मलखे छाती लीन लगाय।

तीनों चलिभे फिरि खन्दक सों ❀ आल्हा निकट पहूँचे आय ॥
राजा बोल्यो फिरि आल्हा सों ❀ मानो कही बनाफरराय ।
कैदी छोड़ो द्वउ पुत्रन को ❀ अबहीं ब्याह लेउ करवाय ॥
ऊदन बोले फिरि राजा ते ❀ तुम्हरी कौन करै परतीति ।
गंगा करिकै दादै लैकै ❀ घरमाँकिह्योजायअनरीति ॥
दया आय गै फिरि आल्हा के ❀ गंगा फेरि लीन करवाय ।
कैद छुड़ायो द्वउ पुत्रन को ❀ पण्डित तुरतै लीन बुलाय ॥
देखि पत्तरा पण्डित बोल्यो ❀ भाँवरि आजु लेउ करवाय ।
इतना सुनिकै राजा चलिभा ❀ दोऊ पुत्रन साथ लिवाय ॥
आल्हा पहुँचे जनवासे में ❀ राजा महल पहूँचा जाय ।
लिल्ली घोड़ी माहिल चढ़िकै ❀ राजा घरै गये फिरि धाय ॥
बड़ी खातिरी राजा कीन्ह्यो ❀ माहिल बैठि महल में जाय ।
माहिल बोले फिरि राजा ते ❀ मानो कही बिसेनेराय ॥
जितने ठाकुर आल्हा घर के ❀ मड़ये तरे लेउ बुलवाय ।
शूर कुठरियन में बैठारो ❀ सबके मूड़ लेउ कटवाय ॥
इतना कहिकै माहिल चलिभे ❀ पथरीगढ़ै पहूँचे आय ।
किह्यो तयारी ह्याँ मड़ये की ❀ यहु गजराजा खंभ गड़ाय ॥
सूरज बेटा को बुलवायो ❀ तासों कह्यो हाल समुझाय ।
सुनिकै बातैं सब राजा की ❀ सूरजचलिभाशीशनवाय ॥
जायकै पहुँच्यो जनवासे में ❀ जहँ पर बैठि बनाफरराय ।
कह्यो हकीकति सब आल्हा सों ❀ सूरज बार बार शिरनाय ॥
सुनिकै बातैं सब सूरज की ❀ आल्हा हुकुम दीन फर्माय ।
अवैं घरैया सब मड़ये को ❀ यह कहिदियो बिसेनेराय ॥
इतना सुनिकै ऊदन देवा ❀ जोगा भोगा भये तयार ।

मलखे सुलखे ब्रह्मा लाखनि ❀ इनहुन बांध लीन हथियार ॥
चन्दन बेटा पृथीराज को ❀ जगनिक भैने चँदेलो क्यार ।
मोहन बेटा बीरशाह को ❀ बौरीगढ़ को जो सरदार ॥
हाथी सजिगा पचशब्दा फिरि ❀ आल्हा तापर भये सवार ।
बारहु ठाकुर अपने अपने ❀ सबहिन बाँधिलिये हथियार ॥
कूच करायो जनवासे ते ❀ मड़ये तरे पहूँचे जाय ।
चन्दन चौकी मलखे बैठे ❀ पण्डित साइति दियो बताय ॥
वर औ कन्या इकठौरी भे ❀ भाँवरिसमय गयो नगच्याय ।
पहिली भाँवरि के परतैखन ❀ सूरज ठाकुर उठा रिसाय ॥
वार चलाई सो मलखे पर ❀ ऊदन लीन्ह्यो वार बचाय ।
दूसरि भाँवरि के परतैखन ❀ काँतामलहू गयो रिसाय ॥
खैंचिकै मारा सो मलखे पर ❀ रोंका तुरत लहुरवा भाय ।
तीसरि भाँवर के परतैखन ❀ सबियाँ शूर पहूँचे आय ॥
बड़ी लड़ाई भै आँगन में ❀ तुरतै बही रकत की धार ।
मूड़न केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लाग पहार ॥
आधे आँगन भौंरी होवैं ❀ आधे खूब चलै तलवार ।
नाई बारी जी लै भागे ❀ जूझे बड़े बड़े सरदार ॥
को गति बरणै रजपूतन कै ❀ भारी हाँक देयँ ललकार ।
चलै कटारी बूँदी वाली ❀ आँगन चमकि रही तलवार ॥
चन्दन मोहन लाखनि ऊदन ❀ दोऊ हाथ करैं तलवार ।
को गति बरणै जगनायक कै ❀ भैने जौन चँदेले क्यार ॥
जोगा भोगा सुलखे देवा ❀ इनहुन खूब मचाई मार ।
इतने क्षत्रिन के मारुन में ❀ कोउ न खड़ा होय सरदार ॥
ब्रह्मा सूरज दोऊ ठाकुर ❀ रण माँ घोर कीन घमसान ।

बड़ा लड़ैया गजराजा यहु ❀ नाहर समर धनी मैदान ॥
काँतामलहू आँगन लड़िकै ❀ अपने तजी प्राण की आश ।
सातसै क्षत्री आँगन लड़िकै ❀ तुरतै भये तहाँ पर नाश ॥
काँतामल औ फिरि सूरज की ❀ आल्हा मुशकै लीन बँधाय ।
कठिन लड़ाई मै माड़ोतर ❀ सातों भाँवरि लीन डराय ॥
तब गजराजा पाँयन परिकै ❀ सब को बार बार शिरनाय ।
हारि देखिकै अपने दिशि की ❀ कन्या दान दीन फिरि आय ॥
ऊदन बोले फिरि राजा ते ❀ मानों कही बिसेनेराय ।
आल्हा गर्जी हैं दायज के ❀ मलखेदुलहिनको ललचायँ ॥
भात के गर्जी हम सब ठाकुर ❀ सो अब बेगि होय तय्यार ।
छोरिकै मुशकै दोउ पुत्रन की ❀ चलिभे मोहबे के सरदार ॥
ई सब पहुँचे जनवासे में ❀ माहिल तुरत भयो तैयार ।
आयके पहुँच्यो झुन्नागढ़ माँ ❀ राजै कीन्ह्यो राम जुहार ॥
राजा बोले तब माहिल ते ❀ ठाकुर उरई के सरदार ।
बड़े लड़ैया मुहबे वाले ❀ नाहर कठिन करैं तलवार ॥
माहिल बोले तब राजा ते ❀ मानों कही बिसेनेराय ।
भातखान को अब बुलवावो ❀ चौका मूड़ लेउ कटवाय ॥
यह मन भाई महराजा के ❀ लाग्यो भात होन तय्यार ।
बिदा माँगिकै महराजा ते ❀ चलिभा उरई का सरदार ॥
राजा चलिभे जनवासे में ❀ आल्हा पास पहूँचे जाय ।
त्यार भात है मोरे महलन में ❀ जल्दी चलो बनाफरराय ॥
कहा मानिकै हम लुच्चन को ❀ लुच्चन सरिस कीन सब काम ।
तुम सों दूजी अब राखें ना ❀ सोऊ जान रहे श्रीराम ॥
धन्य सराही त्यहि ठाकुर को ❀ तुम सों मिलैं नात समरस्त ।

क्यहु अभिलाषा कछु वाकीना ❀ ह्वैगे सबै ज्वान अब पस्त ॥
बातैं सुनिकै ये राजा की ❀ आल्हा हुकुम दीन फर्माय ।
बारह ठाकुर गे भौंरिन में ❀ तेई फेरि सजे सब आय ॥
भाला बरछी औ ढालै लै ❀ हाथ म लई सबन तलवार ॥
नाई बारी गडुवा लीन्हेनि ❀ चलिभे सबै शूर सरदार ॥
मलखे बैठे फिरि पलकी में ❀ बाजन सबै रहे हहराय ।
एक पहर के फिरि असों में ❀ राजा भवन पहूँचे जाय ॥
नाई आवा फिरि भीतर सों ❀ आल्है शीश नवावा आय ।
जल्दी चलिये अब भोजन को ❀ करिये न देर बनाफरराय ॥
इतना सुनिकै सब क्षत्रिन ने ❀ अपने कपड़ा धरे उतार ।
ढालै धरिकै गैंड़ावाली ❀ हाथ म लई नाँगि तलवार ॥
तब गजराजा कह आल्हा सों ❀ ठाकुर मोहबे के सरदार ।
हमरे कुलकी यह रीती ना ❀ भोजन करत गहै हथियार ॥
एक रीति नहिं सब देशन में ❀ अपने कुला कुला व्यवहार ।
बातैं सुनिकै ये राजा की ❀ सबहिन धरा फेरि हथियार ॥
चलिकै ठाकुर गे चौका में ❀ पीढ़न उपर बैठिगे जाय ।
षटरस व्यंजन सब परसेगे ❀ उत्तम भात गयो फिरि आय ॥
लक्ष्मी बोलत परलै ह्वैगै ❀ आये सबै शूर समुदाय ।
जान न पावैं मोहबेवाले ❀ सबकी कटा देव करवाय ॥
बातैं सुनिकै गजराजा की ❀ आल्हा गये सनाका खाय ।
गडुवा लैकै ऊदन ठाढ़े ❀ मलखे पाटा लीन उठाय ॥
बड़ी मारु भै फिरि चौका में ❀ अद्भुत समर कहा ना जाय ।
पाटा लागै ज्यहि ठाकुर के ❀ घुमित गिरै मूर्च्छा खाय ॥
को गति बर्णै तहँ ऊदन की ❀ गडुवन मारि कीन खरिहान ।

लाखनि ब्रह्मा के मुर्चा में ❀ सम्मुख लड़ै न एको ज्वान ॥
काँतासल औ सूरज ठाकुर ❀ दोऊ हाथ करैं तलवार ।
बड़े लड़ैया मोहबे वाले ❀ ठाकुर समरधनी सरदार ॥
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार ।
मारे मारे तलवारिन के ❀ चौका बही रक्त की धार ॥
जैसे भेड़िन भेड़हा पैठै ❀ जैसे अहिर बिडारै गाय ।
तैसे ठाकुर मोहबे वाले ❀ मारिकै दीन्ह्यो समर सोवाय ॥
बहुतक जूझे झुन्नागढ़ के ❀ रानी राजै लीन बुलाय ।
रानी बोली फिरि राजा सों ❀ मानों कही बिसेनेराय ॥
बड़े लड़ैया मोहबे वाले ❀ औ महराजा बात बनाव ।
लड़िकै जितिहौ नहिं आल्हा सों ❀ तुम करि थाके सबै उपाव ॥
कहा न मानो तुम माहिल को ❀ नहिं सब जैहैं काम नशाय ।
हँसी खुशी सों बेटी पठवो ❀ याहि में भला परै दिखराय ॥
बातैं सुनिकै ये रानी की ❀ राजा समर पहूँचा आय ।
भुजा उठाये फिरि बोलत भा ❀ अबहीं मारु बन्द ह्वैजाय ॥
मारु बन्द भै दोऊ दिशि सों ❀ राजा बोला बचन सुनाय ।
बिदा करावो अब बेटी को ❀ नहिं कछु देर बनाफरराय ॥
बातैं सुनिकै गजराजा की ❀ द्वारे गये बराती आय ।
कपड़ा पहिरे अपने अपने ❀ सीताराम चरण मन ध्याय ॥
हुकुम लगायो ह्याँ गजराजा ❀ बेटी बेगि होय तय्यार ।
हुकुम पायकै महराजा को ❀ सोलह करनलागि शृंगार ॥

सवैया

मज्जंन चीरं औ कुण्डंल अंजंन नाक में मौक्तिक्क वेशं सवाँरी ।
कंचुकिं औ त्तुद्रावलि कंकणं कुसुमित अंम्बर चन्दंन धारी ॥

खायकै पान औ धारि मैं णीनको हार औ नूपुर की झनकारी।
सेंदुर भाल बिशाल लखे ललिते मन लज्जित मन्मथनारी ॥
खरिखरिबहियाँहरिहरिचुरियाँ ❀ सोमनिहारिनि दी पहिराय।
पहिरि मुँदरियाँ अठो अँगुरियाँ ❀ ऊपर छल्ला लये दबाय ॥
पहिरि आरसी ली अँगुठा में ❀ सीसा उपर तासु के भाय।
अगे अगेला पिछे पछेला ❀ बीच में छन्न रही दर्शाय ॥
टाड़ैं पहिरी सोने वाली ❀ जोसन पट्टी करैं बहार।
दुलरी तिलरी पंचलरी लों ❀ तापर परा मोतियन हार ॥
नथुनी लटकन की शोभा अति ❀ कानन करनफूल शृङ्गार।
दारैं गुज्झी द्वउ कानन में ❀ बँदियाँ मस्तक करैं बहार ॥
बिछिया पहिरी पद अँगुरिन में ❀ अनवट सखी दीन पहिराय।
कड़ा के ऊपर छड़ा बिराजै ❀ तापर पायजेब हहराय ॥
लहँगा पहिरयो कीनखाब को ❀ चादर ओढ़िलीन फिरिभाय।
जैसे बादल बिजुली चमकै ❀ तसगजमोतिनिपरैंदिखाय॥
तहिले राजा फिरि आवत भे ❀ औ रानी सों कह्यो सुनाय।
बिदा कि बिरिया अब आई है ❀ जल्दी बेटी देउ पठाय ॥
सुनिकै बातैं ये राजा की ❀ रानी बेटी लीन बुलाय।
सीतामाता अनुसूया की ❀ सखियाँ कथा कही समुझाय ॥
कहा न मानै जो पुरुष को ❀ नारी घोर नर्क को जाय।
चोर कुकर्मी जो पति होवै ❀ सेवा किहे नारि तरि जाय ॥
बिनापराधै नारी त्यागै ❀ सो पति मरै भूँख के घाय।
ऐसे कहिकै गजमोतिनि सों ❀ माता रोई हृदय लगाय ॥
मिला भेट करि सब काहू सों ❀ फुलियामालिनिलीनबुलाय।
बहुधनदीन्ह्योफिरिफुलियाको ❀ रोवत चढ़ी पालकी जाय ॥

बड़ी खुशाली आल्हा कीन्ह्यो ❀ बहुधन द्वारे दीन लुटाय।
बिदा मांगिकै गजराजा सों ❀ लश्कर कूच दीन करवाय॥
सात रोज को धावा करिकै ❀ पहुँचे नगर मोहोबा जाय।
सखियाँ मंगल गावन लागीं ❀ परछन भई द्वार पर आय॥
बिदा मांगिकै न्यवतहरी सब ❀ निज निज देशगये हर्षाय।
चील्ह रूप धरि सुनवाँ आई ❀ मल्हना खुशी भई अधिकाय॥
देवलि बिरमा त्यहि औसर में ❀ फूली अंग न सकैं समाय।
को गति बर्णै परिमालिक की ❀ मानों इन्द्रलोक गे पाय॥
पिता आपने की दाया सों ❀ मलखे ब्याह गयों सब गाय।
नहीं भरोसा निज भुजबल का ❀ किरपाशंकर करैं सहाय॥
आशिर्वाद देउँ मुंशीसुत ❀ जीवो प्रागनरायण भाय।
हुकुम तुम्हारो जो होतो ना ❀ ललिते कहतकौनबिधिगाय॥
रहै समुन्दर में जब लों जल ❀ जब लों रहैं चन्द औ सूर।
मालिक ललिते के तबलों तुम ❀ यश मों रहौ सदा भरपूर॥
इष्ट देवता मम एकै हैं ❀ पूरण ब्रह्म राम भगवन्त।
चरणकमल तिन धरि हिरदे में ❀ ह्याँ सों करों तरँग को अन्त॥

मलखे का विवाह समाप्त।

आल्हखण्ड

ब्रह्मा का बिवाह

अथवा

दिल्ली की लड़ाई

सवैया

ह्वैकर दीन गह्यों तुमको रघुनाथ करो अब तो रखवारी।
पायके शाप पषाण भई मुनिनारि दयालु दियो तुम तारी॥
हा राम कह्यो यवनो यकबार गयो तव धामहि बेगि खरारी।
दीन पुकार करै ललिते प्रभु चूक छमोरघुनाथ हमारी॥

सुमिरन

पहिले सुमिरों पद गणेश के ❀ गौरा पारबती के बाल।

हाथी आनन सम आनन है ❀ सेंदुर सदा विराजै भाल ॥
बड़ो पियारी जिन दुर्वा है ❀ फूलो बड़े पियारे लाल ।
भोग लगावै जो लड्डू को ❀ तापर खुशी रहैं सब काल ॥
हैं शिवशङ्कर के लरिका ते ❀ अरि का करैं सदा जे नाश ।
बिधिवतपूजनजोकोउकीन्ह्यो ❀ पूरी सदा तासु की आश ॥
बड़ो भरोसो तिन गणेश को ❀ अपने हृदय करो सब काल ।
करो मनोरथ पूरण हमरो ❀ गौरा पारवती के लाल ॥
छूटि सुमिरनी गै गणेश कै ❀ सुनिये बेला केर हवाल ।
ब्याह बखानों त्यहि ब्रह्मा को ❀ ज्यहिका पितारजापरिमाल ॥

अथ कथाप्रसंग

पृथीराज दिल्ली को राजा ❀ ज्यहिका जानै सकल जहान ।
कन्या उपजी जब त्यहि के घर ❀ तारा टूटि तबै असमान ॥
थर थर थर थर पृथ्वी कांपी ❀ दर दर बोले श्वान शृगाल ।
झन् झन् झन् झन् बायू डोलीं ❀ अशकुनबहुतभयेत्यहिकाल ॥
अशकुन दीख्यो पृथीराज ने ❀ तुरतै पंडित लीन बुलाय ।
लैकै पोथी ज्योतिष वाली ❀ पंडित हाल दीन बतलाय ॥
गौना ह्वैहै जब कन्या का ❀ ह्वैहै तबै घोर घमसान ।
बहुतक क्षत्री तब नशि जैहैं ❀ जुझिहैं बड़े बड़े ह्याँ ज्वान ॥
ताते बेला यहि कन्या का ❀ राखो नाम आप महराज ।
पाय दक्षिणा पंडित चलिभो ❀ होवन लागिऔरफिरिकाज ॥
छठी बारहों पसनी ह्वैगै ❀ बेला परो तासु को नाम ।
सात बरस की जब बेला भइ ❀ खेलत फिरै सखिन के धाम ॥
कोउकोउसखियाँतहँब्याहीथीं ❀ बेंदी दिये आपने भाल ।
क्वारी पूछै तिन ब्याहिन ते ❀ सखितुमकहौश्वशुरपुरहाल ॥

ब्याही बोलीं अनब्याहिन ते ❀ मानो सखी बचन तुम साँच ।
जब सुधि आवत है बालम कै ❀ तब उर जरै बिरह की आँच ॥
सुरपुर नरपुर अहिपुर माहीं ❀ सो सुख नहीं परै दिखराय ।
जो सुख पावा हम श्वशुरे में ❀ बालम छाती लीन लगाय ॥
कटिगहिमसकैं हम नहिंटसकैं ❀ कसकै हृदय किये सुधि आज ।
कासुखजानौतुमअनुब्याहिउ ❀ बैरिनि भई हमारी लाज ॥
सुनि सुनि बातैं ये ब्याहिन की ❀ सब अनब्यही गईं शर्माय ।
बढ़ी लालसा तब ब्याहे की ❀ ब्याला घरै पहूँची आय ॥
खयो मिठाई औ मेवा कछु ❀ पलँगा सोय रही फिरि जाय ।
फिकिरि लगाये सो ब्याहे की ❀ एका एकी उठी कवाय ॥
हम नहिं जैहैं अब श्वशुरे को ❀ यह कहि रोय उठी चिल्लाय ।
रानी अगमा तहँ ठाढ़ी थी ❀ तुरतै छाती लीन लगाय ॥
धीरज दैकै माता पूछै ❀ बेटी स्वपन दीख का आज ।
इतना सुनिकै बेटी बोली ❀ माता कहत लगै बड़ि लाज ॥
माता बोली फिरि बेटी सों ❀ बेटी सत्य देउ बतलाय ।
कैसो स्वपना तुम दीख्यो है ❀ हमरे धीर धरा ना जाय ॥
सुनिकै बातैं ये माता की ❀ बेटी कहन लागि त्यहि बार ।
मोहिंबियाहनजनुकोउआयो ❀ हाथ म लिये ढाल तलवार ॥
फिरि बैठायो मोहिं डोला पर ❀ अपने घरै लिये सो जाय ।
ऐसा दीख्यों जब माता मैं ❀ तबहीं रोय उठिउँ चिल्लाय ॥
इतना कहिकै बेला चलि भै ❀ खेलन लागि सखिन के साथ ।
महलन आये पिरथी राजा ❀ रानी गहा जाय तब हाथ ॥
स्वपन बतायो सब बेला को ❀ सो सुनि लीन पिथौराराय ।
ब्याहन लायक अब कन्या है ❀ बोली बार बार समुझाय ॥

रानी अगमा की बातैं सुनि ❀ बोले पृथीराज महराज।
कहे अधीरज तुम होती हौ ❀ रानी कहा न टारों आज॥
इतना कहिकै पिरथी चलिभे ❀ औ दरबार पहूँचे आय।
ताहर बेटा को बुलवायो ❀ चौंड़ा बाम्हन लीन बुलाय॥
कलम दवाइति कागज लैकै ❀ चिट्ठी लिखन लाग सरदार।
शिरी सरबऊ शिरिपत्री करि ❀ पाछे आपन राम जुहार॥
पहिलि लड़ाई है द्वारे पर ❀ मड़ये कठिन चली तलवार।
खान कलेवा लड़िका आई ❀ तबहूँ मूड़ कटावब यार॥
इतनी जुर्रति ज्यहिके होवै ❀ टीका लेय हमारो सोय।
नहीं बिधाता की मर्जी ना ❀ कन्या ब्याह और विधिहोय॥
इतना लिखिकै पृथीराज ने ❀ नाई बारी लीन बुलाय।
साल दुसाला मोतिन माला ❀ चीरा कलँगी लीन मँगाय॥
तिरपन पलकी अस्सी गजरथ ❀ उम्दा घोड़ा सवा हजार।
धरिकै तोड़ा दो मुहरन का ❀ अच्छा थार सुवरण क्यार॥
तीनि लाख को टीका देकै ❀ सबको हाल दीन समुझाय।
नगर मोहोबे कोउ जायो ना ❀ ओछी जाति बनाफरराय॥
चिट्ठी दीन्ह्यो फिरि ताहर को ❀ ताहर चलिभे शीश नवाय।
नाई बारी चौंड़ा ताहर ❀ फाटक पार पहूँचे आय॥
ताहर बैठे दलगंजन पर ❀ चौंड़ा एकदन्त असवार।
कूच कराये फिरि दिल्ली ते ❀ दूनों चलत भये सरदार॥
आठ रोज को धावा करिकै ❀ झुन्नागढ़ै पहूँचे जाय।
लड़िका क्वारो गजराजा को ❀ पाती तुरत दीन पकराय॥
पढ़िकै चिट्ठी गजराजा ने ❀ टीका तुरत दीन लौटार।
तहँते पहुँचे फिरि बौरीगढ़ ❀ जहँ पर रहैं यादवा यार॥

तिनहुन टीका जब लीन्ह्यो ना ❀ नरवर फेरि पहूँचे जाय।
नरपति राजा नरवरवाला ❀ सोऊ टीका दीन फिराय॥
गंगाधर बूँदी का राजा ❀ त्यहि दरबार गये फिरि धाय।
चिट्ठी पढ़िके सोऊ ठाकुर ❀ टीका तुरत दीन लौटाय॥
ताहर बोले फिरि चौंड़ा ते ❀ दादा कही हमारी मान।
चार महीना घूमत ह्वैगे ❀ अब हम भये बहुत हैरान॥
जल्दी चलिये अब उरई को ❀ जहँ पर बसै महिल परिहार।
यह मन भाय गई चौंड़ा के ❀ हाथी उपर भयो असवार॥
चढ़ि दलगंजन की पीठी पर ❀ ताहर नाहर भयो तयार।
नाई बारी सँग में लीन्हे ❀ पहुँचे माहिल के दरबार॥
आवत दीख्यो जब ताहर को ❀ माहिल बहुत गयो घबड़ाय।
माहिल बोले फिरि ताहर ते ❀ बेटा कुशल देउ बतलाय॥
ताहर बोले फिरि माहिल ते ❀ ठाकुर उरई के सरदार।
टीका लाये हम बहिनी का ❀ घूमत बिते महीना चार॥
कुँवर बतावो क्यहु चत्री का ❀ मोको पूत आपनो जान।
माहिल बोले तब ताहर ते ❀ मानो कही बीर चौहान॥
अजयपाल कनउज का राजा ❀ राजन मध्य बीर सरदार।
ताको लड़िका रतीभान भो ❀ जाकी जग जाहिर तलवार॥
ताको लड़िका लाखनि राना ❀ टीका तासु चढ़ावो जाय।
इतना सुनिकै ताहर चौंड़ा ❀ तुरतै कूच दीन करवाय॥
जायकै पहुँचे फिरि कनउज में ❀ जहँ पर भरी लाग दरबार।
को गति बरणै चन्देले कै ❀ आली खानदान सरदार॥
ताहर दीख्यो जब जयचँद को ❀ तुरतै कीन्ह्यो राम जुहार।
चिट्ठी दीन्ह्यो फिरि जल्दी सों ❀ लीन्ह्यो कनउज के सरदार॥

पढ़िकै चिट्ठी राहुट ह्वैगा ❀ नैना अग्निवरण भे लाल।
लै जा चिट्ठी कहुँ अनतै को ❀ मेरो बड़ो पियारो बाल॥
ताहर चौंड़ा दूनो जरिकै ❀ तुरतै कूच दीन करवाय।
पार उतरिकै श्रीयमुना के ❀ उरई निकट पहूँचे आय॥
मलखे ठाकुर त्यहि समया में ❀ मारन आयो तहाँ शिकार।
ताहर चौंड़ा मलखे ठाकुर ❀ मारग भेंटि गये सरदार॥
कुशल प्रश्न ताहर सों कहिकै ❀ बोला वचन वीर मलखान।
कौने मतलब को निकरे हौ ❀ नाहर दिल्ली के चौहान॥
सुनिकै बातैं ई मलखे की ❀ ताहर हाल गयो सब गाय।
मलखे बोले फिरि ताहर सों ❀ लड़िका तुम्हैं देयँ बतलाय॥
संग हमारे कछु दूरी तुम ❀ औरो चलो वीर चौहान।
इतना सुनिकै दूनों चलिभे ❀ मोहबे गये तीनहू ज्वान॥
ताहर बोले तहँ मलखे ते ❀ यहु है कौन शहर मलखान।
मलखे बोले तहँ ताहर सों ❀ यह है नगर मोहोबा ज्वान॥
यहँ को राजा परिमालिक है ❀ ब्रह्मा लड़िका तासु कुँवार।
तोरी बहिनी सों त्यहि ब्याहौं ❀ साँची बात मानु सरदार॥
सुनिकै बातैं ये मलखे की ❀ ताहर बहुत गयो शर्माय।
ऐसी बातैं का तुम बोलौ ❀ ब्याह न करैं बनाफरराय॥
नहीं आज्ञा दिल्लीपति कै ❀ टीका नगर मोहोबे जाय।
सरबरि हमरी का नाहीं हैं ❀ ठाकुर काह गयो बौराय॥
सुनिकै बातैं ये ताहर की ❀ बोला बचन बीर मलखान।
धाँसि सिरोही मुँह में देवों ❀ जो फिरि ऐस कहै चौहान॥
इतनी सुनिकै ताहर ठाकुर ❀ पाती तुरत दीन पकराय।
मूड़ कटाई सो ब्याहे जाँ ❀ नाहर जौन पिथौराराय॥

ताका बाना जग मर्दाना ❀ मारै शब्द ताकि कै बान।
परै निशाना पूरशब्द पर ❀ ता सँग कौन लड़ैया ज्वान॥
सुनिकै बातैं ये ताहर की ❀ बोला तुरत बनाफरराय।
लड़ै मरै का कछु डर नाहीं ❀ यह ही धर्म सनातन भाय॥
रीछ बाँदरन सँग में लैकै ❀ लङ्का बिजय कीन भगवान।
ग्वालन बालन सँग माँ लैकै ❀ कंसै हना कृष्ण बलवान॥
काह हकीकति है दिल्ली कै ❀ चलिकै बिल्ली देउँ बनाय।
परि खरभिल्ली दिल्ली जाई ❀ किल्ली तुरतै देउँ नवाय॥
कैसो दिल्ली में गिल्ली सम ❀ पिल्ली पूत पिथौराराय।
लिल्ली घोड़िन के चढ़वैया ❀ लड़िहैं कौन तहाँ पर आय॥
चौंड़ा बोला तहँ मलखे ते ❀ चलिये जहाँ चँदेलोराय।
सुनिकै बातैं ये चौंड़ा की ❀ तीनों अटे महल में जाय॥
देखिकै सूरति मलखाने कै ❀ बोला मोहबे का सरदार।
हाल बतावो सब सिरसा को ❀ ओ बिरमा के राजकुमार॥
हाथ जोरिकै मलखे बोले ❀ दादा मोहबे के महराज।
मनोकामना सब पूरण हैं ❀ तुम्हरी कृपा सुफल सब काज॥
टीका लाये ये दिल्ली सों ❀ मैं ब्रह्मा का करों बिवाह।
यही कामना यक बाकी है ❀ साँची मानु कही नरनाह॥
पाती दीन्ह्यो मलखाने ने ❀ बांचन लाग रजा परिमाल।
डसे भुवंगम लहरैं आवैं ❀ कहरन लाग तुरत नरपाल॥
हाथ जोरिकै ऊदन बोले ❀ दादा मोहवे के महराज।
टेक न टारैं मलखे दादा ❀ तासों करे बनी यहु काज॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❀ बोले तुरत रजा परिमाल।
हाल बतावो सब मल्हना को ❀ वाको बड़ो पियारो बाल॥

मोहिं बुढ़ापा की लाठी है ❀ मला बड़ा पियारा मान।
नासी राजा दिल्लीवाला ❀ ठाकुर समरधनी चौहान॥
टेक कठिन है मलखाने के ❀ पूरण यही हृदय विश्वाश।
जियत न देखें हम काहू कर ❀ सब कर होय वहाँ पर नाश॥
पढ़िकै चिट्ठी पृथीराज की ❀ हमरे गई करेजे हूक।
जानि बूझिकै जस मलखे की ❀ ऐसी करै कौन नर चूक॥

सवैया

सुनिकै नृपबैन तबै बलऐन ब्वले मलखे ललिते अनखाई।
कउनसो काज अकाज भयो महराज गयउ जहँ लाज गँवाई॥
सुक्ख को साज समाज करउ रघुराज़ सदा मम लाज बचाई।
घबड़ानको आज न काज कछू हम ब्याहकरैं बछराज दुहाई॥

सुनिकै बातैं मलखाने की ❀ राजा गयो सनाका खाय।
मलखे चलिभे फिरि महलनको ❀ मल्हना पास पहूँचे जाय॥
चिट्ठी पढ़िकै पृथीराज की ❀ मलखे हाल दीन बतलाय।
सुनिकै चिट्ठी पृथीराज की ❀ मल्हना गई तुरत कुँभिलाय॥
तारा टूटे आसमान में ❀ थर थर धरा गई तब हाल।
चील्है छाईं राजमहल में ❀ रोवन लागे श्वान शृगाल॥
मल्हना बोली तब मलखे ते ❀ अशकुन बहुत परैं दिखलाय।
कारो ब्रह्मा घर में रहिहै ❀ टीका आप देउ लौटाय॥
सुनिकै बातैं ये मल्हना की ❀ मलखे बोले बचन रिसाय।
ब्याह बिधाता यह रचि राखा ❀ टीका कौन सकै लौटाय॥
सदा न फूलै कहुँ बन तोरई ❀ माई सदा न सावन होय।
सदा जवानी नहिं स्थिर है ❀ माई सदा न बर्षा होय॥

टीका फेरो जो दिल्ली का ❀ माता होउ जगत बदनाम ।
जाति के ओछे मोहबे वाले ❀ यह है देश देश सरनाम ॥
होय नतैती जो दिल्ली में ❀ पूरण होयँ हमारे काम ।
झुन्ना नैनागढ़ माड़ो में ❀ हम पर कृपा कीन सियराम ॥
ये सब अशकुन हैं ताहर को ❀ माता कहाँ ज्ञान गा त्वार ।
अबै कबुतरी ना बुड़्ढी भै ❀ ना बल खाय गई तलवार ॥
बार जो बाँका जा ब्रह्मा का ❀ हमरो मूड़ लियो कटवाय ।
बातैं सुनिकै ये मलखे की ❀ मल्हना दीन्ह्यो बाँह गहाय ॥
जस मनभावै मलखाने के ❀ तैसी करो बनाफरराय ।
बड़ी खुशी भै मलखाने के ❀ फूले अंग न सके समाय ॥
बड़ी प्रशंसा की मल्हना की ❀ मलखे बार बार शिर नाय ।
शाका चलिहै महरानी तव ❀ ईजति हमरी लियो बचाय ॥
बारु न बांका इनका जैहै ❀ ओ महरानी बात बनाय ।
जहाँ पसीना इनका गिरि है ❀ तहँ मैं देहौं खून बहाय ॥
करो तयारी अब जल्दी सों ❀ ताहर टीका देय चढ़ाय ।
बातैं सुनिकै मलखाने की ❀ मल्हना हुकुम दीन फर्माय ॥
बाँदी लीपन चौका लागी ❀ छींक्यो एक पुरुष ने आय ।
मल्हना बोली तब मलखे ते ❀ अशकुन बहुत परैं दिखराय ॥
टीका फेरो तुम दिल्ली का ❀ मानो कही बनाफरराय ।
बातैं सुनिकै ये मल्हना की ❀ बोला तुरत लहुरवा भाय ॥
टीका फिरिहै जो दिल्ली का ❀ होई देश हँसौवा माय ।
कीन तयारी जब माड़ो की ❀ तबहूँ छींक भई थी आय ॥
तबहूँ रोंक्यो महरानी तुम ❀ माड़ो फते कीन हम जाय ।
शकुन हमारो फिरि वैसे भा ❀ शंका कौन गई मन आय ॥

सुनिकै बातैं उदयसिंह की ❀ मल्हना ठीक लीन ठहराय।
ऊदन मलखे द्वउ मनिहैं ना ❀ अब अनहोनी परै दिखाय॥
बड़ा लड़ैया दिल्लीवाला ❀ है सब राजन में शिरताज।
तुम्ही गोसइयाँ दीनबन्धु हौ ❀ स्वामी रामचन्द्र महराज॥
परो साँकरो अब हम पर है ❀ राखनहार तुम्ही रघुराज।
हम सुनि राखा है विप्रन सों ❀ राख्यो सदा भक्त की लाज॥
गौतमनारी को तुम तारा ❀ केवट लीन्ह्यो हृदय लगाय।
मांस अहारी गृद्धै तार्‌यो ❀ भीलिनि दर्श दिखायो जाय॥
सोई दशरथ के रघुरैया ❀ नैया तुही लगैया पार।
एक पूतकी मैं मैया हौं ❀ ताकी कुशल किह्यो करतार॥
सुमिरन करिकै रघुनन्दन को ❀ मल्हना करनलागि घरकाम।
मलखे ठाकुर त्यहि समया में ❀ ताहर बेगि बुलावा धाम॥
जितने बासी रहैं मुहबे के ❀ आये सबै नारि नर द्वार।
सात सुहागिल त्यहि समया में ❀ गावन लगीं मंगलाचार॥
बड़ी भीर भै परिमालिक घर ❀ कहुँ तिलडरा भूमि ना जाय।
चूड़ामणि पण्डित तहँ आयो ❀ साइति तुरत दीन बतलाय॥
तब पिचकारी भरि केशरि रँग ❀ मारैं एक एक को धाय।
धूरि उड़ाई तहँ अबीर की ❀ महलन गई लालरी छाय॥
चौक पुराई गजमोतिन सों ❀ पीढ़ा तहाँ दीन धरवाय।
चौंड़ा ताहर द्वउ ठाढ़े थे ❀ ब्रह्मा गये तहाँ पर आय॥
को गति बरणै परिमालिक के ❀ लोहा छुये सोन ह्वै जाय।
पारस पाथर ज्यहि के घर माँ ❀ त्यहि की द्रव्य सकै को गाय॥
ऊदन बोले तहँ ताहर सों ❀ अब तुम टीका देउ चढ़ाय।
साँग गाड़ दइ तब ताहर ने ❀ औ यह बोल्यो भुजा उठाय॥

साँग उखारैं ब्रह्मा ठाकुर ❀ तौ हम टीका देइँ चढ़ाय।
रीति हमारे यह घर की है ❀ साँचे हाल दीन बतलाय॥
सात तवा लोहे के नीचे ❀ तापर साँग गाड़ि हम दीन।
साँग उखारैं ब्रह्मा ठाकुर ❀ तौ हम ब्याह बहिन का कीन॥
देखि तमाशा यहु ताहर का ❀ मल्हना बोली बचन रिसाय।
अशकुन कीन्ह्योम्बरे महलन माँ ❀ टीका तुरत देउ लौटाय॥
बिना बियाहे ब्रह्मा रहिहैं ❀ तौ नहिं होय हमारी हान।
अकिल तुम्हारी को लै लीन्ही ❀ मानों नहीं कही मलखान॥
सुनिकै बातैं ये मल्हना की ❀ ऊदन बोले माथ नवाय।
टीका फेरा गा दिल्ली का ❀ तौ मुँह कौन दिखावा जाय॥
इतना कहिकै ऊदन ठाकुर ❀ तुरतै डारा साँग उखार।
ऊदन बोले फिरि ताहर सों ❀ नाहर दिल्ली के सरदार॥
हम तो नौकर परिमालिक के ❀ तिन यह डारा साँग उखार।
ऐसे नौकर जिनके घर माँ ❀ तिनसे कौन करै तलवार॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❀ ताहर मनै गयो शर्माय।
बीरा दीन्ह्यो ताहर ठाकुर ❀ ब्रह्मा बीरा गये चबाय॥
छींक तड़ाका भै सम्मुख माँ ❀ मल्हना रोय उठी घबड़ाय।
ब्याह न करिहौं मैं ब्रह्मा का ❀ मानो कही बनाफरराय॥
हमैं चाह है नहिं भौरिन कै ❀ ना कछु बहू केरि परवाह।
म्दर इकलौता यहु जीवै जग ❀ औ फिरि बने रहैं नरनाह॥
बहुतक अशकुन हम देखे हैं ❀ कैसे धरा जाय जिय धीर।
पुत्रघाव सों दशरथ मरिगे ❀ यासों और कौन जगपीर॥
भला न देखैं यहि ब्याहे में ❀ मानो कही बीर मलखान।
जो नहिं मानो मलखाने तुम ❀ हमरे जाय प्रान पर आन॥

बातैं सुनिकै ये मल्हना की ❀ बोले फेरि वीर मलखान ।
घर को आवो टीका फेरैं ❀ तौ सब हँसिहै देश जहान ॥
बिटिया आहिउ तुम ठाकुर की ❀ ठाकुर घरैं वियाही माय ।
नहिं क्यहुबनियाकी महतारी ❀ जो मन बार बार पछिताय ॥
हल्दी मिरचा हम बेचैं ना ❀ ना हम करैं बणिज ब्यापार ।
हम तो लरिका हैं ठाकुर के ❀ औ दिन राति करैं तलवार ॥
धन्य सराहैं हम कुन्ती का ❀ आपन दीन्हे पुत्र पठाय ।
युद्ध मचायो तिन कौरव ते ❀ औ यश रहा जगत में छाय ॥
बचे युधिष्ठिर समरभूमि ते ❀ पाँचो भाय कृष्ण महराज ।
पै ना रहिगे त्यउ दुनिया माँ ❀ रहिगै एक जगत में लाज ॥
जपतप होवै नहिं कलियुग में ❀ ना कछु दानपुण्य अधिकाय ।
जो मरि जावैं समरभूमि में ❀ पावैं स्वर्गलोक को माय ॥
इतना कहिकै मलखे ठाकुर ❀ टीका तुरत दीन चढ़वाय ।
चारो नेगिन को बुलवायो ❀ भूषण बस्त्र दीन पहिराय ॥
बहुधन दीन्ह्योफिरि चौंड़ा को ❀ अपने हाथ बनाफरराय ।
चूड़ामणि पंडित ते बोल्यो ❀ अब तुम लगन देउ बतलाय ॥
सुनिकै बातैं मलखाने की ❀ पंडित बोला लगन बिचार ।
माघ महीना कृष्णपच्छ में ❀ तेरसि तिथी शुक्र को बार ॥
नीकी साइति मलखाने है ❀ सो हम तुम का दीन बताय ।
सुनिकै बातैं ये पंडित की ❀ औ ताहर को दीन सुनाय ॥
यादि राखियो यह दिन भाई ❀ दिल्ली ब्याह करब हम आय ।
बातैं सुनिकै ये मलखे की ❀ ताहर चलि भे शीश नवाय ॥
दर्गी सलामैं सौ तोपन की ❀ धुवना रहा सरग मड़राय ।
अद्भुत शोभा भै मोहबे कै ❀ घर घर ढोलक परै सुनाय ॥

चलैं पिचका कहुँ केशरि के ❀ कहुँ कहुँ अबिरगुलालउड़ाय।
पान मोहोबे के जग जाहिर ❀ लाली पीकैं परैं दिखाय॥
कहूँ कहुँ छैला गैला ठाढ़े ❀ बेला हार परैं दिखराय।
कहूँ चमेला के तेला को ❀ रहे अलबेला जुलुफ लगाय॥
कहुँ कहुँ हेला मेला कैके ❀ बुलबुल बुलबुल रहे लड़ाय।
उड़ै तमाखु कहुँ हुक्कन में ❀ गुड़गुड़गुड़गुड़ रहे मचाय॥
मारु मारुकै मोहरि बाजै ❀ कहुँ कहुँ हाव हाव करनाल।
कहूँ पैंतड़ा बालक बदलैं ❀ कहुँ कहुँ लड़ैं मल्ल जसकाल॥
पटा बनेठी बाना कहुँ कहुँ ❀ कहुँ कहुँ गदका को घमसान।
बाढ़ि धरावैं कहुँ कहुँ चत्री ❀ कहुँ कहुँ हनैं निशानाज्वान॥
देखि तमाशा चौंड़ा ताहर ❀ मन में बड़े खुशी ह्वै जायँ।
कूच कराये द्वउ मोहबे ते ❀ दिल्ली शहर गये नगच्याय॥
ह्याँ सुधि पाई माहिल ठाकुर ❀ दिल्ली अटे अगाड़ी जाय।
माथ नवायो जब माहिल ने ❀ खातिर कीन पिथौराराय॥
सोने कि चौकी में बैठास्यो ❀ राजा दिल्ली के महराज।
बोले पिरथी फिरि माहिल ते ❀ तुम्हरो कौन करी हम काज॥
बोले माहिल फिर पिरथी ते ❀ मानो कही सत्य महराज।
ब्याह जो कीन्ह्यो तुम मोहबे में ❀ खोई सबै आपनी लाज॥
जाति बनाफर की ओछी है ❀ है सब जातिन केरि उतार।
इतना कहते चौंड़ा ताहर ❀ दोऊ आय गये दरबार॥
सूरति दीख्यो जब ताहर की ❀ गरुई हाँक दीन ललकार।
हमजो बरजा तुमको ताहर ❀ ना तुम मानी कही हमार॥
सुनिकै बातैं ये राजा की ❀ ताहर हाथ जोरि शिर नाय।
कही हकीकति सब मलखे की ❀ ताहर बार बार समुझाय॥

माहिल बोले फिर राजा ते ❀ नाहर दिल्ली के सरदार।
टीका फेरो तुम जल्दी सों ❀ इतनी मानो कही हमार॥
इतना सुनिकै चौंड़ा चलिभा ❀ ताहर बोले वचन उदार।
बड़े लड़ैया मोहबे वाले ❀ जिनके बाँट परी तलवार॥
ब्याहन आवैं जब तुम्हरे घर ❀ तब तुम मूड़ लिह्यो कटवाय।
टीका फिरि है अब दादा ना ❀ तुमते सत्य दीन बतलाय॥
यह मन भाय गई माहिल के ❀ तुरतै कीन्ह्यो रामजुहार।
बिदा माँगिकै पृथीराज सों ❀ चलिभा उरई का सरदार॥
खेत छूटि गा दिननायक सों ❀ झंडा गड़ा निशा को आय।
तारागण सब चमकन लागे ❀ संतन धुनी दीन परचाय॥
माथ नवावों पितु अपने को ❀ ह्याँ ते करों तरँग को अन्त।
रामरमा मिलि दर्शन देवो ❀ इच्छा यही मोरि भगवन्त॥

सवैया
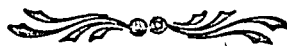
ओ रघुनाथ अनाथन नाथ सनाथ करो अब तो भगवाना।
और न आश निराश करो नहिं देखि चुके सब ठौर ठिकाना॥
मात पिता अरु भ्रात को नात सबै तुमहीं यह ही मन जाना।
गात सुखात सबै दिन जात नहीं ललिते कछु झूठ बखाना॥

सुमिरन

दोउ पद ध्यावों रघुनन्दन के ❀ बन्दन करों जोरि द्वउ हाथ।
नहीं सहायक कउ काको है ❀ स्वामी दीनबन्धु रघुनाथ॥
बिना तुम्हारे को परमारथ ❀ अन्त में देइ कौन को साथ।
भो जगतारण भवभयहारण ❀ तुमहीं सदा हमारे नाथ॥

को अस दुनिया माँ पैदा भा ❀ जो तरिगयो बिना तब नाम ।
माता भ्राता अरु ताता ना ❀ अन्तम अवैं आपने काम ॥
तुम्हीं गोसइयाँ दीनबन्धु हौ ❀ सीतापती चराचर नाथ ।
नालति हमरी द्विज देही का ❀ जावै समय हाथ बे हाथ ॥
शिव औ ब्रह्मा कोउ पायो ना ❀ गाय कै पार तुम्हारी गाथ ।
त्यहि को गावों कस मानुष मैं ❀ स्वामी दीनबन्धु रघुनाथ ॥
छूटि सुमिरनी गै रघुबर कै ❀ सुनिये ब्रह्मा केर बिवाह ।
फौजैं सजिहैं आल्हा ऊदन ❀ करि हैं समर केर उत्साह ॥

अथ कथाप्रसंग

माहिल चलिभे जब दिल्ली ते ❀ मल्हना महल पहूँचे आय ।
बड़ी खुशाली भै मल्हना के ❀ हमरे बूत कही ना जाय ॥
मल्हना बोली फिरि माहिल ते ❀ भैया उरई के सरदार ।
टीका चढ़िगा है दिल्ली का ❀ ब्रह्मा भैने जौन तुम्हार ॥
बहुतकअशकुनत्यहिसमयाभे ❀ जियरा धीर धरा ना जाय ।
मैं समुझायों भल मलखे को ❀ पै ना मन्यो बनाफरराय ॥
त्यही समैया ते भैया अब ❀ रहि रहि मोर प्राण घबड़ायँ ।
माह महीना जब ते आवा ❀ तब ते भूख नींद गै भाय ॥
कल नहिं पावैं हम पलँगा में ❀ औ घर दीखे नित्त डेरायँ ।
बिरमा घावलिके लड़िका सब ❀ हम को शत्रु रूप दिखरायँ ॥
पै अब करतब कछु सूझै ना ❀ साँचे हाल दीन बतलाय ।
बातैं सुनिकै ये मल्हना की ❀ माहिल बोले बचन बनाय ॥
काम हमारो रहै पिरथी ते ❀ हम दरबार मँझावा जाय ।
सुनी हकीकति तहँ पिरथी की ❀ बहिनी साँच देयँ बतलाय ॥
जाति बनाफर की ओछी है ❀ पिरथी बार बार पछितायँ ।

ब्याहन अइहैं हमरे घर माँ ❀ सबके मूड़ लेव कटवाय ॥
चलिकै ब्रह्मा इकलो आवै ❀ तौ बिनब्याधि ब्याह ह्वैजाय।
चन्द्रबंश में उइ पैदा हैं ❀ नहिंकछु उजुरु हमारे भाय ॥
हम समुझावा तब पिरथी को ❀ ऐसै करब मोहोबे जाय।
भैने हमरो ब्रह्माठाकुर ❀ औ बहनोई चँदेलोराय ॥
बड़ी खुशाली भै पिरथी के ❀ फूले अंग न सक्यो समाय।
भलो आपनो जो तुम चाहौ ❀ इकलो ब्रह्मा देउ पठाय ॥
हमहूँ जैबे त्यहि संगै माँ ❀ तुम्हरे काज सिद्ध ह्वै जायँ।
सुनिकै बातैं ये माहिल की ❀ मल्हना बोली मन हर्षाय ॥
कहा तुम्हारो हम टारब ना ❀ भैया उरई के सरदार।
इकलो ब्रह्मा तुम लै जावो ❀ जामें होय नहीं तहँ मार ॥
माहिल बोले फिरि मल्हना ते ❀ बहिनी मानो कही हमार।
चोरी चोरा काम निकालो ❀ नाकछु रीतिभांतिकीब्यार ॥
यह मन भाय गई मल्हना के ❀ चुप्पे पलकी लीन मँगाय।
ब्रह्माठाकुर को बुलवायो ❀ औ पलकीमाँ दीनबिठाय ॥
लैकै पलकी माहिल चलिभे ❀ ऊदन अटा तहाँ पर आय।
हाल जानि कै सब माहिल को ❀ चुप्पै धावन लीन बुलाय ॥
लिखि कै चिट्ठी मलखाने को ❀ ऊदन तुरतै दीन पठाय।
चिट्ठी पढ़ि कै मलखाने ने ❀ औ सुलखे को लीन बुलाय ॥
कहि समुझायो सब सुलखे को ❀ सोऊ चला बेगिही धाय।
जाय कै पकर्यो सो माहिल को ❀ तुरतै कैद लीन करवाय ॥
लैकै पलकी औ माहिल को ❀ सिरसागढ़ै पहूँचा आय।
बाँधि जँजीरन फिरि माहिल को ❀ फाटक पास दीन बैठाय ॥
ऊदन चलिभे फिरि महलनको ❀ मल्हनै शीश झुकावा जाय।

हाथ जोरिकै ऊदन बोले ✻ माता साँच देयँ बतलाय ॥
माहिल मामा की बातन में ✻ इकलो ब्रह्मा दियो पठाय ।
कुशल न होइहै तहँ ब्रह्मा की ✻ साँची बात कहैं हम माय ॥
इतना कहिकै ऊदन चलि भे ✻ दशहरिपुरै पहूँचे आय ।
कही हकीकति सब आल्हा सों ✻ ऊदन बार बार समुझाय ॥
चिट्ठी लिखिकै मलखाने ने ✻ औ परिमालै दीन जनाय ।
नेवता पठवो सब राजन को ✻ यहँ हीं कुँवाँ बियाहैं माय ॥
पायकै चिट्ठी मलखाने की ✻ सोई कीन रजापरिमाल ।
पायकै नेवता परिमालिक का ✻ आये सबै तहाँ नरपाल ॥
तम्बू गड़िगे महराजन के ✻ झगडा आसमान फहराय ।
सुनवाँ बोली ह्याँ ऊदन ते ✻ तुम सुनिलेउ लहुरवा भाय ॥
ब्याह नगीचे है ब्रह्मा का ✻ ना मोहबे का भयो तयार ।
काह तुम्हारे मन माँ ब्यापी ✻ देवर बेंदुल के असवार ॥
सुनिकै बातैं ये भौजी की ✻ बोले उदयसिंह सरदार ।
हम नहिं जावैं अब मोहबे का ✻ भौजी मानों कही हमार ॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ✻ सुनवाँ कहे वचन मुसुकाय ।
दूध पियायो मल्हना रानी ✻ सेयो तुम्हैं बनाफरराय ॥
तुम्हैं न चहिये अस बघऊदन ✻ धोखा देउ समय पर आय ।
धोखो दीन्हो माहिल मामा ✻ मलखे कैद लीन करवाय ॥
कुशल आपने सब लड़िकाकी ✻ चाहैं सदा लहुरवा भाय ।
को जगरक्षक है जननी सम ✻ ऊदन काह गये बौराय ॥
करो तयारी अब भैया सँग ✻ मानो कही बनाफरराय ।
इतना सुनिकै ऊदन चलिभे ✻ आल्है खबरि जनायो जाय ॥
बातैं सुनिकै बघऊदन की ✻ आल्हा लश्कर लियो सजाय ।

बैठे हाथी आल्हा ठाकुर ❀ मनमें सुमिरि शारदामाय ॥
चढ़ा बेंदुला की पीठी पर ❀ नाहर उदयसिंह सरदार ।
दशहरिपुरवा ते चलिकै फिरि ❀ पहुँचे मोहबे के दरबार ॥
खातिर कीन्ह्यो परिमालिक ने ❀ दोऊ भाय बैठि शिरनाय ।
भई तयारी फिरि सिरसा की ❀ सबकोउ अटे तहाँपर जाय ॥
गई पालकी तहँ मल्हना की ❀ सिरसा भीर भई अधिकाय ।
आल्हा दीख्योजबमाहिल को ❀ मनमें गई दया तब आय ॥
फिरि ललकार्‍यो मलखाने को ❀ यहुका कीन लहुरवा भाय ।
जल्दी छोरो तुम मामा को ❀ हमसों बिपतिदीखिनाजाय॥
सुनिकै बातैं ये आल्हा की ❀ मलखे तुरतै दीन छुड़ाय ।
कुँवाँ बियाह्यउ ब्रह्मा ठाकुर ❀ पलकीचढ़्योगणेशमनाय॥
भई तयारी फिरि बिवाह की ❀ सबियाँ क्षत्री भये तयार ।
हम ना जैबै अब दिल्ली को ❀ बोला उरई का सरदार ॥
बातैं सुनिकै ये माहिल की ❀ बोला उदयसिंह त्यहिबार ।
तुम ना जैहौ जो दिल्ली को ❀ तौ को करिहै काम हमार ॥
बाँधि जँजीरन हम लै जैहैं ❀ मामा उरई के सरदार ।
बातैं सुनिकै ये ऊदन की ❀ माहिल तुरत भये तय्यार ॥
हाथी सजि कै आगे चलि भे ❀ पाछे चले घोड़ असवार ।
पैदर सेना त्यहि पाछे सों ❀ तोपैं चलिभइँ पाँच हजार ॥
आगे हाथी परिमालिक का ❀ पाछे सबै शूर सरदार ।
पाग बैंजनी शिरपर बाँधे ❀ ऊदन बेंदुलपर असवार ॥
कूच कराये सिरसागढ़ सों ❀ दिल्ली शहर गये नगच्याय ।
दिल्ली केरे फिरि डाँडेपर ❀ तम्बू तुरत दीन गड़वाय ॥
लक्षपताका एकमिल ह्वैगे ❀ नभ माँ गईं झालरी छाय ।

लागि कचहरी परिमालिक की ❀ शोभा कही बूत ना जाय ॥
आल्हा बोले चूड़ामणि सों ❀ पंडित साइति देउ बताय ।
लै कै पत्रा पंडित बोले ❀ मानो कही बनाफरराय ॥
मीनलग्न की अब बिरिया है ❀ ऐपनवारी देव पठाय ।
बातैं सुनिकै चूड़ामणि की ❀ मलखे रुपना लीन बुलाय ॥
ऐपनवारी बारी लैकै ❀ दिल्ली तुरत देव पहुँचाय ।
बातैं सुनिकै मलखाने की ❀ रुपना हाथ जोरि शिर नाय ॥
उत्तर दीन्ह्यो मलखाने को ❀ मानो कही बनाफरराय ।
नैनागढ़ झुन्नागढ़ नाहीं ❀ ह्याँ पर बसै पिथौरा राय ॥
लौटब मुशकिल है दिल्ली ते ❀ पिरथी मूड़ लेइ कटवाय ।
औरो बारी हैं मोहबे के ❀ तिनका आप देयँ पठवाय ॥
बातैं सुनिकै ये रुपना की ❀ बोले उदयसिंह सरदार ।
तेहा राखो रजपूती का ❀ बाँधो सदा ढाल तलवार ॥
जौन गोसइयाँ पैदा कीन्ह्यो ❀ सोई सदा बचावनहार ।
बातैं सुनिकै उदयसिंह की ❀ रूपन बोला बचन उदार ॥
घोड़ा पावैं हरनागर को ❀ औ मलखे कि ढाल तलवार ।
ऐपनवारी हम लै जावैं ❀ लावैं नहीं नेकहू बार ॥
सुनिकै बातैं ये रूपन की ❀ मलखे दीन ढाल तलवार ।
ऐपनवारी रूपन लैकै ❀ हरनागर पर भयो सवार ॥
माथ नायकै सब क्षत्रिन को ❀ तुरतै कूच दीन करवाय ।
पिरथी केरे फिरि फाटक पर ❀ रूपन तुरत पहूँचा जाय ॥
तब ल्यलकारा दरवानी ने ❀ नाहर घोड़े के असवार ।
कहाँ ते आयो औ कहँ जैहौ ❀ कहँ है देश रावरे क्यार ॥
सुनिकै बातैं द्वारपाल की ❀ रूपन कहा बचन ततकाल ।

आई बरातैं हैं मोहबे ते ❀ डाँड़े परे रजा परिमाल ॥
ब्याहन आये हैं ब्रह्मा को ❀ रूपन बारी नाम हमार ।
ऐपनबारी हम लाये हैं ❀ चहिये नेग म्वार अब द्वार ॥
सुनिकै बातैं ये रूपन की ❀ बोला द्वारपाल त्यहि बार ।
नेगु तुम्हारो का द्वारे का ❀ बोलो घोड़े के असवार ॥
सुनिकै बातैं द्वारपाल की ❀ रूपन कहा बचन ललकार ।
चार घरी भर चलै सिरोही ❀ द्वारे बहै रक्त की धार ॥
जौन शूरमा हो दिल्ली को ❀ द्वारे देवै नेग हमार ।
ऐसे वैसे हम नेगी ना ❀ कम्मर बँधी ढाल तलवार ॥
शूर सराही हम ऊदन का ❀ मलखे सिरसा के सरदार ।
का गति बरणैं हम आल्हा की ❀ जिनसों हारि गई तलवार ॥
तिनके नेगी हम रूपन हैं ❀ राजै खबरि जनावो जाय ।
सुनिकै बातैं ये रूपन की ❀ रहिगा द्वारपाल सन्नाय ॥
सोचिसमभिकैफिरि बोलतभा ❀ रूपन काह गये बौराय ।
दही के धोखे कहुँ भूले ना ❀ जो तैं जाय कपास चबाय ॥
एक तो ऊदन के गिनती ना ❀ बावन चढ़ैं उदयसिंह आय ।
ह्याँ पर मलखे सब घर घर हैं ❀ आल्हा कौन वस्तु है भाय ॥
हैं परिमालिक अस ठाकुर बहु ❀ जिनते पोत तसीला जाय ।
जूँठनि खावैं घर घर बारी ❀ सो का रारि मचावैं आय ॥
पीकै दारू को आवा है ❀ की बश सन्निपात के भाय ।
भूरि भांग जो तू खावा हो ❀ तौ हम औषधि देयँ बताय ॥
ज्ञान ठिकाने करि बोलै तू ❀ राजै काह सुनावैं जाय ।
सुनिकै बातैं द्वारपाल की ❀ रूपन बोला क्रोध बढ़ाय ॥

सवैया

आय गयो तव प्राण पै भाय सहाय कोऊ कहुँ देखि परैना ।
जानत नाहिन रूपन को अरु नाहक दुष्ट बकै बहु बैना ॥
ताहर नाहर को गहिकै इकलो मलखान जिता बिन सैना ।
का बड़ि बात करै ललिते दिन ही नहिं देखि परै तव नैना ॥

बातैं सुनिकै ये बारी की ❀ चलिभा द्वारपाल ततकाल ।
हाथ जोरिकै महराजा को ❀ सब बारी के कहे हवाल ॥
सुनिकै बातैं द्वारपाल की ❀ यहु महराज पिथौराराय ।
सूरज लड़िका को बुलवायो ❀ औ सब हाल कह्यो समुझाय ॥
पकरिकै लावो त्यहि बारी को ❀ हमको बेगि दिखावो आय ।
सुनिकै बातैं महराजा की ❀ सूरज चलिभा शीशनवाय ॥
दीख दुवारे पर बारी को ❀ नाहर घोड़े पर असवार ।
शंका जाके कछु नाहीं है ❀ हाथ म लिये नाँगि तलवार ॥
हुकुम लगावा द्वारपाल को ❀ फाटक बंद लेउ करवाय ।
फिरि ल्यलकारा रजपूतन को ❀ लावो पकरि शूरमाँ जाय ॥
हुकुम पायकै तब सूरज को ❀ तुरतै चले सिपाही धाय ।
एँड़ लगायो हरनागर के ❀ टापन क्षत्री दीन गिराय ॥
बहुतन मार्‍यो रूपन बारी ❀ हाहाकार शब्द गा छाय ।
देखि तमाशा सूरज ठाकुर ❀ मनमाँ बार बार पछिताय ॥
रूपन बारी के मुर्चा माँ ❀ कोऊ शूर न रोंकै पाँय ।
उड़न बछेड़ा हरनागर ने ❀ बहुतक क्षत्री दीन गिराय ॥
फिरि फिरि मारै औ ललकारै ❀ बारी बड़ा लड़ैया ज्वान ।
देखि तमाशा यहु बारी का ❀ ताहर समरधनी चौहान ॥
सूरज ताहर द्वउ सहजादे ❀ रूपन पास पहूँचे जाय ।

एँड़ लगायो हरनागर के ❀ फाटक पार निकरिगा भाय ॥
मारो मारो हल्ला कैकै ❀ क्षत्री सबै चले बिरझाय ।
नेग लेब अब हम भौंरिन में ❀ गरुई हाँक दीन गुहराय ॥
इतना कहिकै एँड़ लगायो ❀ फौजन तुरत पहूँचा आय ।
जैसे फागुन फगुई खेलैं ❀ लोहू छीटन गयो अन्हाय ॥
तैसे दीख्यो जब रूपन का ❀ बोल्यो उदयसिंह सरदार ।
कहौ हकीकति सब दिल्ली कै ❀ द्वारे भली कीन तलवार ॥
बातैं सुनिकै उदयसिंह की ❀ रूपन यथातथ्य गा गाय ।
सुनिकै बातैं ये रूपन की ❀ माहिल बोले बचन बनाय ॥
यह नहिं चहिये पृथीराज को ❀ जो अब रारि बढ़ावत जायँ ।
कौन दुसरिहा है आल्हा का ❀ सम्मुख लड़ै समर में आय ॥
जो मन पावैं बघऊदन का ❀ राजै तुरत देयँ समुझाय ।
नेग कराय देयँ द्वारे का ❀ सातो भाँवरि देयँ फिराय ॥
भली भली कहि ऊदन बोले ❀ माहिल घोड़ी लीन मँगाय ।
चढ़िकै घोड़ी माहिल ठाकुर ❀ दिल्ली शहर पहूँचे जाय ॥
को गति बरणै तहँ पिरथी कै ❀ भारी लाग राज दरबार ।
खाँड़ेराय पिरथी का भाई ❀ धाँधू तासु पुत्र सरदार ॥
रहिमतिसहिमतिजिन्सीवाले ❀ औ रणधीर लहाउर क्यार ।
भुरा मुगुलिया काबुल वाला ❀ टिहुनन धरे नाँगि तलवार ॥
देवी मरहटा दच्छिन वाला ❀ आला समरधनी मैदान ।
अंगद राजा ग्वालीयर का ❀ जगनिकक्यारभुगंताज्वान ॥
सातो लड़िका पृथीराज के ❀ तेऊ बैठि राज दरबार ।
मोती जवाहिर, गोपी, ताहर, ❀ सूरज, चन्दन ये सरदार ॥
मर्दन, सर्दन, सातो लड़िका ❀ ये रणबाघ लड़ैया बाल ।

सोने सिंहासन पिरथी सोहैं ❀ त्यहि माँ जड़े जवाहिरलाल ॥
औरो ठाकुर बहु बैठे हैं ❀ एक ते एक शूर सरदार ।
तहँ ही पहुँचो उरई वाला ❀ तुरतै कीन्ह्यो राम जुहार ॥
किह्यो खातिरी पृथीराज ने ❀ अपने पास लीन बैठाय ।
माहिल बोला तब पिरथी ते ❀ मानो कही पिथौराराय ॥
काम न सरिहै लड़े भिड़े ते ❀ दूनों तरफ हानि है भाय ।
जहर घुरावो तुम शरबत में ❀ औ लश्कर में देउ पठाय ॥
बिना बयारी जूना टूटै ❀ औ बिन औषधि बहै बलाय ।
यहै तयारी अब करि डारो ❀ तौ सब काम सिद्ध ह्वै जाय ॥
साम दाम औ दण्ड भेद सों ❀ चत्री करैं आपनो काम ।
छल बल चत्री का धर्म है ❀ तुमको कौन करै बदनाम ॥
बातैं सुनिकै ये माहिल की ❀ भा मन वड़ा खुशी नरनाह ।
स्याबसि स्याबसि उरई वाले ❀ हमका नीकि दीन सल्लाह ॥
बिदा मांगिकै पृथीराज सों ❀ तम्बुन फेरि पहूँचा आय ।
हाल बतायो परिमालिक को ❀ चेउँ न करी पिथौरा राय ॥
जैसे पियासा पानी पावै ❀ सूखे धान परै जस नीर ।
बातैं सुनिकै ये माहिल की ❀ तैसे आय गयो मन धीर ॥
घड़ा मँगायो ह्याँ पिरथी ने ❀ तामें जहर दीन डरवाय ।
चारो नेगिन को बुलवायो ❀ सूरज पूत लीन बुलवाय ॥
कह्यो हकीकति सब सूरज सों ❀ पिरथी बार बार समुझाय ।
तुरत कहारन को बुलवायो ❀ सूरज घड़ा लीन उठवाय ॥
माथ नायकै फिरि पिरथी को ❀ मन में श्रीगणेशपद ध्याय ।
सूरज चलिभा फिरि दिल्ली सों ❀ लश्कर तुरत पहूँचा आय ॥
जहँना तम्बू परिमालिक का ❀ बहिंगी तहाँ दीन धरवाय ।

साथ नायकै परिमालिक को ❀ आपो बैठि गयो तहँ जाय ॥
मलखे बैठे हैं दहिने पर ❀ बायें बैठ उदयसिंहराय।
बैठ बराबर आल्हा ठाकुर ❀ शोभा कही बूत ना जाय ॥
सूरज बोले तहँ राजा सों ❀ शरबत आप देउ बँटवाय।
करो तयारी फिरि द्वारे की ❀ साइति आय गई नगच्याय ॥
देबा बोला महराजा सों ❀ मानो कही चँदेलोराय।
पहिले शरबत माहिल पीवैं ❀ पाछे सबको देउ बटाय ॥
इतना सुनिकै सूरज चलिभे ❀ तुरतै काने जनो चढ़ाय।
माहिल बोले तब देबा ते ❀ चत्री काह गये बौराय ॥
पान बड़े को पानी छोटे ❀ यह है रीति सदा की भाय।
भाय लहुरवा शरबत पीवै ❀ औरो पियैं बनाफरराय ॥
माघ महीना दिन सरदी के ❀ हमरो शरबत पियै बलाय।
शिर में पीड़ा ऐसे होवै ❀ औ फिरि सन्निपात ह्वै जाय ॥
बातैं सुनिकै ये माहिल की ❀ देबा कुत्ता लीन बुलाय।
पीतै शरबत कुत्ता मरिगा ❀ तब सब गये तहां सन्नाय ॥
जितना शरबत रहै बहिंगिनमें ❀ सो सब खन्दक दीन डराय।
भागिकै सूरज दिल्ली आये ❀ औ दरबार पहूँचे आय ॥
खबरि जनाई सब राजा को ❀ नेगी चले यहां ते धाय।
भागत नेगिन ऊदन देखा ❀ पकरा तुरत सबन को जाय ॥
दया आयगै तब आल्हा के ❀ तुरतै नेगी दीन छुड़ाय।
नेगी चलिभे सब दिल्ली को ❀ औ दरबार पहूँचे आय ॥
कही हकीकति सब पिरथी ते ❀ नेगिन बार बार शिर नाय।
माहिल बोले परिमालिक ते ❀ मानो कही चँदेले राय ॥
यह नहिं करतब है पिरथी के ❀ लरिकन घाटि कीन ह्याँ आय।

रक्षक ज्यहि को है परमेश्वर ❁ त्यहि को बार न बाँका जाय ॥
पै रिस हमरे अस आई है ❁ सखियाँ दिल्ली डरैं खुदाय ।
काह बतावैं हम जीजा ते ❁ तुम सुनि लेउ लहुरवा भाय ॥
शङ्का हम पर है देवा की ❁ साँचे हाल देयँ बतलाय ।
हम नहिं जानत यह करतबरहैं ❁ मानो कही बनाफरराय ॥
बड़ी पियारी मल्हना बहिनी ❁ औ नित खातिर करै हमारि ।
सगो भानजो ब्रह्मा हमरो ❁ तासों कौनि हमारी रारि ॥
सुनिकै बातैं ये माहिल की ❁ बोले उदयसिंह त्यहि बार ।
अब तुम जावो फिरि दिल्ली को ❁ मामा उरई के सरदार ॥
शंका तुम पर नहिं काहू की ❁ मामा मानो कही हमारि ।
रक्षक ज्यहि की जगदम्बा है ❁ त्यहिको सकैकौनजगमारि ॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❁ माहिल घोड़ी लीन मँगाय ।
चढ़िकै घोड़ी माहिल ठाकुर ❁ फिरि दरबार पहूँचे जाय ॥
बड़ी खातिरी राजा कीन्ह्यो ❁ माहिल बैठि गयो शिरनाय ।
माहिल बोले फिरि राजा ते ❁ मानो कही पिथौरा राय ॥
खंभ गड़ावो दरवाजे पर ❁ तिन पर कलश देउ धरवाय ।
जौंरा भौंरा दोनों हाथी ❁ तिनके आगे देउ छुड़ाय ॥
प्याय कै दारू तिन हाथिनको ❁ तुरतै मस्त देउ करवाय ।
द्वारे आवैं जब परिमालिक ❁ तब यह बोल्यो वचन सुनाय ॥
हथी पछारो म्वरे द्वार में ❁ तुरतै भाँवर देयँ डराय ।
कुल की हमरे यह रीती है ❁ मानो कही चँदेले राय ॥
अबती बचिहैं नहिं द्वारे पर ❁ मानो कही पिथौरा राय ।
इतना कहिकै माहिल चलिभे ❁ तम्बुन फेरि पहूँचे आय ॥

दरवाजे की लड़ाई

भई तयारी ह्याँ दिल्ली में ❀ द्वारे खम्भ दीन गड़वाय।
जो कुछ माहिल बतलावाथा ❀ सो सब सामा दीन कराय ॥
माड़ो छावा गा जल्दी सों ❀ जल्दी चौक भई तय्यार।
अईं सुहागिल बहु दिल्ली की ❀ गावन लगीं मंगलाचार ॥
देखिकै सूरति ह्याँ माहिल की ❀ मलखे कहे बचन यहि बार।
खबरि बतावो सब दिल्ली की ❀ मामा उरई के सरदार ॥
सुनिकै बातैं ये मलखे की ❀ माहिल बोले बचन बनाय।
करो तयारी अब द्वारे की ❀ मानो कही बनाफरराय ॥
मलखे बोले परिमालिक ते ❀ दूनो हाथ जोरि शिर नाय।
हुकुम जो पावैं महराजा को ❀ ह्याँ ते कूच देयँ करवाय ॥
बातैं सुनिकै मलखाने की ❀ राजा हुकुम दीन फरमाय।
बाजे डंका अहतंका के ❀ हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❀ बाँके घोड़न पर असवार।
जितनी फौजैं परिमालिक की ❀ सबियाँ बेगि भई तय्यार ॥
मनियादेवन को सुमिरन करि ❀ गज पर बैठि रजा परिमाल।
मारु मारु कै मौहरि बाजी ❀ बाजी हाव हाव करनाल ॥
गर्द उड़ानी तब पिरथी माँ ❀ लोपे अन्धकार सों भान।
मारू तुरही बाजन लागीं ❀ घूमन लागे लाल निशान ॥
आगे पलकी भै ब्रह्मा कै ❀ पाछे चले सिपाही ज्वान।
घोड़ी कबुतरी के ऊपर माँ ❀ दहिने चला बीर मलखान ॥
वँयें वेंदुला को चढ़वैया ❀ नाहर लिये नाँगि तलवार।
पाग बैंजनी शिर पर सोहै ❀ तापर कलँगी करै बहार ॥

गर्दन समझै क्यहु दुशमनको ❀ क्षत्री उदयसिंह सरदार ।
शोभा बरणै को आल्हा की ❀ साँचो धर्मरूप अवतार ॥
भा खलभल्ला औ हल्ला अति ❀ दिल्ली पास गये नगच्याय ।
चन्दन बेटा को बोलवायो ❀ यहु महराज पिथौरा राय ॥
भई तयारी अगवानी की ❀ दिल्ली सजन लागि सरदार ।
रथ औ हाथिन में बहु बैठे ❀ छैला घोड़न भे असवार ॥
बड़ी सजाई भै ठकुरन कै ❀ छैला चलिभे बाँधि कतार ।
भाला बल्छी फरसा बाँधे ❀ कोऊ लिये ढाल तलवार ॥
दगीं सलामी दुहुँ तरफन ते ❀ धुँवना छाय गयो असमान ।
आतशबाजी की शोभा अति ❀ भाला तारा के अनुमान ॥
कउँधालपकनिखड्गचमकनि ❀ हुकनि गुड़गुड़ दीन मचाय ।
पैग पैग पर दूनों चलि चलि ❀ रुकि रुकि पैग पैग पर जायँ ॥
को गति बरणै महराजन कै ❀ मानो देव भूमि गे आय ।
दो बिचवानी द्वउ दिशि घूमैं ❀ रुकिरुकि पैगपैग पर जायँ ॥
उठैं सुगन्धैं तहँ अतरन की ❀ बेला और चमेला हार ।
को गति बरणों मैं निवारि की ❀ क्षत्री किये फूल शृंगार ॥
नीली पीली जंगाली औ ❀ लाली पगड़िन केरि कतार ।
मुँदरी छल्ला मोहनमाला ❀ क्यहुगरपरा मोतिनकाहार ॥
देखैं तमाशा जे नारी नर ❀ तिनका लागै नीकि बहार ।
शाल दुशाले नीले पीले ❀ चमकैं इन्द्रधनुष अनुहार ॥
बाल सूर्यसम मूँगा चमकैं ❀ दमकैं तहाँ जवाहिर लाल ।
जब अगवानी पूरण ह्वैगै ❀ गावन लगीं द्वार पर बाल ॥
संगम ह्वैगा दुहुँ तरफा ते ❀ दूनों तरफ भये सतकार ।
दूनों मिलिकै संगम ह्वैकै ❀ पहुँचे पृथीराज के द्वार ॥

जौंरा भौंरा हाथी ठाढ़े ❀ ताहर बोले बचन पुकार।
जौन शूरमा हों मोहबे के ❀ द्वारे हाथी देयँ पछार॥
सुनिकै बातैं ये ताहर की ❀ चलिभा उदयसिंह झन्नाय।
जावत दीख्यो उदयसिंह को ❀ मलख्यो चला तुरत ठन्नाय॥
को गति बरणै दोउ बीरन की ❀ मानो चले कृष्ण बलराम।
ऊदन सुमिरयो श्री शारद को ❀ मलखेलीन शिवाशिवनाम॥
ऊदन चलिभा जौंरा दिशि को ❀ मलखे भौंरा की दिशिजाय।
पूंछ पकरिकै तिन हाथिन कै ❀ जैसे सिंह घसीटै गाय॥
तैसे ऊदन मलखे ठाकुर ❀ दोऊ नाग घसीटैं धाय।
देखि तमाशा दिल्ली वाले ❀ अँगुरी दाँते लीन चपाय॥
मलखे ऊदन दोऊ ठाकुर ❀ सम्मुख गही सूँड़ को आय।
दाबिकै मस्तक तिन हाथिन का ❀ दूनों दीन्ह्यों भूमि लुटाय॥
दाँत तूरिकै तिन हाथिन का ❀ दोऊ चढ़े घोड़ पर आय।
ताहर बोले फिरि दोउन ते ❀ मानो कही बनाफरराय॥
कलश गिरावो अब खम्भन ते ❀ तौहम कहीशूर फिरि भाय।
इतना सुनिकै जगनिक ठाकुर ❀ कलशन पास पहूँचा जाय॥
ताहर बोला कमलापति सों ❀ मारो याहि दौरि सरदार।
इतना सुनिकै कमलापति फिरि ❀ दौरे लिहे नाँगि तलवार॥
को गति बरणै जगनायक कै ❀ भैने जौन चँदेले क्यार।
आवत दीख्यो कमलापति को ❀ गरुई हाँक दीन ललकार॥
लौटिज ठाकुर म्वरे मुर्चा ते ❀ नहिं शिरकाटि देउँभुइँडारि।
सुनिकै बातैं जगनायक की ❀ कमलापतिउ बढ़ायो रारि॥
हथी बढ़ायो फिरि आगे को ❀ जगनिकपासपहूँच्योजाय।
एँड़ लगायो हरनागर को ❀ हौदा उपर बिराजा आय॥

भाला माखो कमलापति को ❀ सोतो लीन ढाल पर वार।
रिसहा ह्वैकै जगनायक फिरि ❀ तुरतै खैंचि लीन तलवार॥
ऐंचि महाउत को मारत भा ❀ तुरतै भूमि दीन शिर डारि।
आवा मस्तक ते भूमाँ फिरि ❀ गरुई हाँक दीन ललकार॥
सँभरि कै बैठे अब हौदा पर ❀ ठाकुर हाथी के असवार।
की भगि जावै म्वरे मुर्चा ते ❀ नहिं अबजान चहतयमद्वार॥
बातैं सुनिकै जगनायक की ❀ कमलापतिउ दीन ललकार।
काह गवाँरे तू बोलत है ❀ ठाकुर घोरे के असवार॥
तू अस क्षत्री हम संगर में ❀ केतन्यो डारे खेलि शिकार।
ऐसी बातैं जो फिर बोलै ❀ तौ मुहँ धाँसि देउँ तलवार॥
बातैं सुनिकै कमलापति की ❀ भैने जौनु चँदेले क्यार।
एँड़ लगायो हरनागर के ❀ हाथी उपर गयो सरदार॥
भाला माखो कमलापति के ❀ तोंदी परा घाव सो जाय।
द्वार जू भिगा कमलापति जब ❀ रहिमतसहिमत चले रिसाय॥
ऊदन बोले तब देवा ते ❀ ठाकुर मैनपुरी चौहान।
देखो आवत दुइ लड़ने को ❀ उत सों समरभूमि में ज्वान॥
मन्ना गूजर को सँग लैकै ❀ मारो समरभूमि मैदान।
तुम्हरी दूनन की बरणी हैं ❀ मानो कही बीर चौहान॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ दोऊ बढ़े अगारी ज्वान।
रहिमत सहिमतकोललकाखो ❀ होवो खड़े समर मैदान॥
सुनिकै बातैं इन दोउन की ❀ उनहुन खैंचि लीन तलवार।
उसरिन उसरिन दोऊ मारैं ❀ दोऊ लेयँ ढाल पर वार॥
बड़ी लड़ाई भै द्वारे पर ❀ औ बहि चली रक्त की धार।
रहिमत सहिमत जिन्सीवाले ❀ घायल भये दुऊ सरदार॥

सुमिरि भवानी मइहरवाली ❀ मनिया देव मोहेबे क्यार।
घोड़ बढ़ायो बघऊदन ने ❀ दोऊ कलशा लिये उतार॥
देखि बीरता बघऊदन की ❀ भा मन खुशी पिथौराराय।
हँसिकै बोल्यो बघऊदन ते ❀ मानो कही बनाफरराय॥
उलटी रीती हमरे घर की ❀ ऐसो सदा क्यार ब्यवहार।
हो समध्वारो जब द्वारे पर ❀ तब फिरि भौंरिन का त्यवहार॥
अब तुम लावो परिमालिकको ❀ यह हू नेग यहाँ ह्वै जाय।
होय तयारी फिरि भौंरिन कै ❀ साँचे हाल दीन बतलाय॥
इतना सुनिकै ऊदन चलिभो ❀ पहुँचा जहाँ रजा परिमाल।
जो कछु भाषा पृथीराज ने ❀ ऊदन जाय कह्यो सब हाल॥
सुनीहकीकतिजबमाहिलसब ❀ पहुँचा पृथीराज के पास।
बड़ी उदासी सों बोलत भा ❀ राजा करो बचन विश्वास॥
ब्याह जो होइहै ब्रह्मानँद का ❀ होइहै बड़ा जगत उपहास।
भेटन आवैं परमालिक जब ❀ तब तुम करो द्वार पर नास॥
इतनाकहिकै माहिल चलिभे ❀ अब ऊदन के सुनो हवाल।
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ बोले तुरत रजा परिमाल॥
ताकत हमरे अस नाहीं है ❀ जो हम मिलैं द्वार समध्वार।
गजभर छाती पृथीराज की ❀ क्यहि के जमे करेजे बार॥
रह्यो भरोसे तुम हमरे ना ❀ मानो कही बनाफरराय।
मलखे बोले तब आल्हा ते ❀ दोऊ हाथ जोरि शिर नाय॥
भयो हँसौवा अब दिल्ली माँ ❀ दादा साँच परै दिखराय।
ऐसी बातैं राजा बोलैं ❀ सो तुम सुनी रह्यो है भाय॥
अब तुम चलिहौ समध्वारे को ❀ तौ सब बात यहाँ रहि जाय।
हँसिहैं दिल्ली में नर नारी ❀ भारी बिपति परी अब आय॥

जेठो भाई बाप बरोबरि ❀ तुम्हरे गये बात बनि जाय।
सुनिकै बातैं ये मलखे की ❀ आल्हा हाथी दीन बढ़ाय॥
द्वारे ठाढ़े पृथीराज जहँ ❀ तहँ पर गये बनाफरराय।
उतरिकै हाथी के हौदा ते ❀ मन में सुमिरि शारदा माय॥
गये सामने जब पिरथी के ❀ दधि औ पान दीन चपकाय।
लखैं तमाशा तहँ नारी नर ❀ भा समध्वार द्वार पर आय॥
पिरथी बोले तहँ आल्हा सों ❀ मानो कही बनाफरराय।
अब तुम जावो निज तम्बू को ❀ भौंरी समय गयो नगच्याय॥
सुनिकै बातैं ये पिरथी की ❀ लश्कर कूच दीन करवाय।
बाजे डंका अहतंका के ❀ तम्बुन फेरि पहूँचे आय॥
पिरथी पहुँचे राजमहल को ❀ सखियाँ झगड़ा गयो पटाय।
खेत छूटि गा दिननायक सों ❀ झंडा गड़ा निशा को आय॥
करों वन्दना पितु अपने की ❀ जिनबलभयोतरँगको अन्त।
राम रमा मिलि दर्शन देवैं ❀ इच्छा यही भवानीकन्त॥

सुमिरन

अब हम सुमिरैं जगदम्बा को ❀ जिनको पारबती है नाम।
पूजन कीन्ह्यो जो देवी का ❀ पूरण भये तासु के काम॥
यई भवानी सती कहाई ❀ ह्वैकै दच्छप्रजापति धाम।
फेरि हिमंचल के घर उपजीं ❀ गिरिजा भयो तहाँ पर नाम॥
उमा अपर्णा के नामन को ❀ कहँ लग ललिते करैं बखान।
शिवा बिवाही गईं शंकर को ❀ उपजे पूत षडानन ज्वान॥
बिनती कीन्ह्यो सीताजी ने ❀ तब वर मिले राम भगवान।

भये बिनायक तिन गिरिजा के ❁ पहिले पूजैं सकल जहान ॥
सुर अनादि सब जगमाँ जाहिर ❁ शंका समाधान यह जान ।
ब्याह बखानों मैं ब्रह्मा को ❁ करिकै श्रीगणेश पद ध्यान ॥

अथ कथाप्रसंग

बैठे तम्बू में परिमालिक ❁ भारी लाग राज दरबार ।
आल्हा ऊदन मलखे सुलखे ❁ देबा बनरस का सरदार ॥
बैठे क्षत्री देश देश के ❁ टिहुनन धरे नाँगि तलवार ।
ऊदन बोले तहँ मलखे ते ❁ दादा मानो कही हमार ॥
भयो चढ़ावा की बिरिया अब ❁ रूपन हाथ देउ पठवाय ।
बातैं सुनिकै ये ऊदन की ❁ मलखे डिब्बा लीन मँगाय ॥
रूपन बारी को दै दीन्ह्यो ❁ औ सब हाल कह्यो समुझाय ।
लैकै डिब्बा रूपन चलि भा ❁ पहुँचा तुरत द्वार पर जाय ॥
नाई ठाढ़ो थो राजा को ❁ ताको डिब्बा दियो थँभाय ।
लैकै डिब्बा नाई चलिभा ❁ दीन्ह्यो पृथीराज को जाय ॥
रानी अगमा को महराजा ❁ तुरतै डिब्बा दीन गहाय ।
चढ़ै चढ़ाओ अब बेटी को ❁ साइति आय गई नगच्याय ॥
सुनिकै बातैं महराजा की ❁ अगमा बेटी लीन बुलाय ।
सखियन सँग में बेला चलिकै ❁ मड़ये तरे पहूँची आय ॥
खोलिकै डिब्बा रानी अगमा ❁ सो बेला को दीन छिदाय ।
बेला दीख्यो जब गहना को ❁ मड़ये तरे दीन फैलाय ॥
बाँदी बाँदी कै गुहरायो ❁ बाँदी तुरत पहूँची आय ।
बेला बोली तब बाँदी ते ❁ बारी खबरि जनावो जाय ॥
गहनो लाये कलियुग वालो ❁ ब्याहन अये चँदेलेराय ।
पुरी हस्तिना को गहनो जो ❁ द्वापरवालो देयँ मँगाय ॥

चढ़ै चढ़ाओ तब बेटी को ❀ नाहीं लौटि मोहोबे जायँ।
सुनिकै बातैं ये बेला को ❀ बाँदी गई तड़ाका धाय॥
खबरि सुनाई सब रूपन को ❀ सुनतै गयो सनाका खाय।
उनहिन पायँन रूपन चलिभा ❀ तम्बुन फेरि पहूँचा आय॥
खबरि सुनाई सब आल्हा को ❀ रूपन बार बार समुझाय।
सुनि संदेशा यहु बेला को ❀ आल्हा सुमिरि शारदा माय॥
चलिकै लश्कर ते दूरी कछु ❀ पहुँचा नींब वृक्ष तर जाय।
चौका लीपा गा गोबर सों ❀ आसन तहां लीन बिछवाय॥
लौंग बतासा घी तिल लैकै ❀ होमन लाग बनाफरराय।
शीश हवनहित आल्हा चाह्यो ❀ शारद तुरत पहूँची आय॥
भइ नभबानी आनँदसानी ❀ ठाकुर कष्ट देय बतलाय।
सुनि नभबानी आल्हा ठाकुर ❀ बोले हाथ जोरि शिर नाय॥
नमो भवानी महरानी तुम ❀ जानी तीनिलोक गतिमाय।
मैं अज्ञानी औगुणखानी ❀ ओ बरदायिनि बात बनाय॥
कौनि सो गाथा अस दुनिया में ❀ जौनि न जानु शारदा माय।
फिरि नभबानी सुनि बानी भै ❀ मानो कही बनाफरराय॥
पूर मनोरथ हम सब करिहैं ❀ किंचितकाल और थँभिजाय।
इतना कहिकै शारद चलिभै ❀ पहुँची नागलोक में धाय॥
तुरत बासुकी को बुलवायो ❀ औ सब हाल कह्यो समुझाय।
कौरव घर को गहना लावो ❀ बेला ब्याह होय तब भाय॥
सुनिकै बानी यह शारद की ❀ बासुकि डिब्बा लवा उठाय।
सो दै दीन्ह्यो श्रीशारद को ❀ पहुँची मातु फेरि ह्याँ आय॥
डिब्बा दीन्ह्यो फिरि आल्हाको ❀ चलिभा तुरत बनाफरराय।
आयकै पहुँच्यो ह्याँ तम्बुन में ❀ रूपन बारी लीन बुलाय॥

देकै डिब्बा ज़ेवरवाला ❀ दिल्ली तुरत दीन पठवाय।
रूपन पहुँचा फिरि जल्दी सों ❀ ज़ेवर महल दीन पहुँचाय॥
ज़ेवर दीख्यो जब बेला ने ❀ मन माँ भई खुशी अधिकाय।
रूपन चलिभा दरवाजे ते ❀ तम्बुन फेरि पहूँचा आय॥

सवैया

चौहान सुजान महान जहाँ तहँ सोहत भो पृथिराज भुवारा।
बार न लाग गयो सरदार कुमार सबै कियो राम जुहारा॥
माहिल को लखिकै नृप आपहि कीन सबै बिधि सों सतकारा।
बैठत देर लगी नहिं ते नहिं भूप सों माहिल बैन उचारा॥
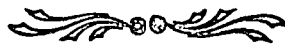
मड़ए की लड़ाई

ब्याह जो होई यहु मोहबे माँ ❀ बूड़ी सात शाख को नाम।
त्यहिते तुमका समुझाइत है ❀ जामें होउ नहीं बदनाम॥
पानी पीहै कोउ तुम्हरे ना ❀ मानो साँच पिथौराराय।
करो बुलौवा अब भौंरिन का ❀ घर के ठाकुर लेउ बुलाय॥
जितने आवैं माड़ौ नीचे ❀ सबके मूड़ लेउ कटवाय।
धर्म बचावो यहि औसर में ❀ मानो कही पिथौराराय॥
इतना कहिकै माहिल चलिभे ❀ तम्बुन फेरि पहूँचे आय।
चन्दन बेटा को बुलवायो ❀ तुरतै यहाँ पिथौराराय॥
हाल बतायो सब चन्दन को ❀ राजा बार बार समुझाय।
इतनी सुनिकै चन्दन चलिभे ❀ औ परिमाल निकटगे आय॥
हाथ जोरिकै परिमालिक के ❀ चन्दन बोले वचन सुनाय।
दश अरु ग्यारा घर के ठाकुर ❀ भौंरिन हेतु देउ पठवाय॥

रीति हमारे यह घर की है ❀ राजै कहा मोहिं समुझाय।
शंका लावैं कछु मन में ना ❀ मानैं ठीक चँदेलेराय॥
धीर न होवै म्वरे जियरे माँ ❀ बोले फेरि रजापरिमाल।
चन्दन बोले फिरि राजा सों ❀ कैसी कहौ आप नरपाल॥
टीका फेर्‌यो सब राजन ने ❀ राख्यो आप हमारी लाज।
आल्हा ऊदन जिनके चाकर ❀ तिनसों कौन बड़ा शिरताज॥
काज तुम्हारे घर करिहैं ना ❀ करि हैं कौन देश महराज।
काम भतखवन ते सरि है ना ❀ परि है नारि पुरुष ते काज॥
सुनिकै बातैं ये चन्दन की ❀ बोला उदयसिंह सरदार।
साँच बखानो चन्दन ठाकुर ❀ तुम्हरो कहा करों यहिबार॥
यह मन भाय गई आल्हा के ❀ मलखे तुरत भये तय्यार।
बैठे हाथी आल्हा ठाकुर ❀ ऊदन बेंदुल पर असवार॥
जोगा भोगा सुलखे ठाकुर ❀ तीनों सजे तहाँ सरदार।
मोहन यादव बौरी वाला ❀ जगनिक भैने चँदेले क्यार॥
मन्नागूजर मोहबे वाला ❀ देवा मैनपुरी चौहान।
सजी पालकी फिरि ब्रह्मा कै ❀ बैठे सुमिरि राम भगवान॥
नाई बारी भाट तंमोली ❀ इनहुन बाँधि लीन हथियार।
कूच नगाड़ा बाजन लागे ❀ दशहू चलत भये सरदार॥
दशहू पहुँचे फाटक भीतर ❀ चन्दन गयो अगारी धाय।
खबरि सुनाई पृथीराज को ❀ फाटक बन्द लीन करवाय॥
भयो बुलौवा फिरि भीतर को ❀ पहुँचे दशौ तहाँ सरदार।
अई सुहागिल तहँ दिल्ली की ❀ गावन लगीं मंगलाचार॥
पण्डित बैठो पोथी लीन्हे ❀ औ बेला की भई पुकार।
साती लड़िका पृथीराज के ❀ आये लिये नाँगि तलवार॥

बेला आई फिरि मड़ये तर ❀ औ भौंरिन का भयो बिचार।
पहिली भाँवरि के परतै खन ❀ ताहर हनी तुरत तलवार॥
दहिने ठाढ़ो मलखे ठाकुर ❀ सो लै लीन ढाल पर वार।
आधे आँगन भौंरी होवैं ❀ आधे चलन लागि तलवार॥
ब्रह्मा ठाकुर की रक्षा में ❀ आल्हा ठाकुर भये तयार।
मलखे सुलखे जगनिक देबा ❀ आँगन करैं भड़ाभड़ मार।
तेगा चटकै बर्दवान का ❀ ऊना चलै बिलाइति क्यार।
छूरी छूरा कोउ कोउ मारैं ❀ कोताखानी चलैं कटार॥
फिरि फिरि मारैं औ ललकारैं ❀ नाहर दिल्ली के सरदार।
आँगन थिरकै उदन बाँकुड़ा ❀ लीन्हे हाथ नाँगि तलवार॥
मूड़न केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार।
बड़ी लड़ाई भै आँगन में ❀ औ बहि चली रक्त की धार॥
अपन परावा कछु सूझै ना ❀ झामाझोर चलै तलवार।
बड़े लड़ैया मलखे सुलखे ❀ नामी सिरसा के सरदार॥
को गति बरणै तहँ ताहर कै ❀ दूनों हाथ करै तलवार।
फिरि फिरि मारै औ ललकारै ❀ नाहर उदयसिंह सरदार॥
को गति बरणै तहँ देबा के ❀ क्षत्री मैनपुरी चौहान।
मन्नागूजर जगना ठाकुर ❀ इनहुन खूब कीन मैदान॥
मोहन ठाकुर बौरी वाला ❀ रण माँ बड़ा लड़ैया ज्वान।
जोगा भोगा दोनों भाई ❀ मारिकै खूब कीन खरिहान॥
विकट लड़ाई भै आँगन में ❀ साँगन खूब भई तहँ मार।
सातो लड़िका पृथीराज के ❀ बाँध्यो सिरसा के सरदार॥
सातो भँवरी ब्रह्मानँद की ❀ आल्हा तुरत लीन करवाय।
देखि तमाशा बघऊदन का ❀ पिरथी गये सनाका खाय॥

चौंड़ा बोला त्यहि समया में ❀ मानो कही पिथौराराय।
अबहीं जावैं हम मड़ये तर ❀ सबके बन्धन देयँ छुड़ाय॥
इतना कहिकै चौंड़ा चलिभा ❀ मड़ये तरे पहूँचा आय।
चौंड़ा बोला फिरि आल्हा ते ❀ मानो कही बनाफरराय॥
इकलो लड़िका भीतर पठवो ❀ सो लहकौरि खान को जाय।
मुशकै छोरो सब लरिकन की ❀ यह कहिदीन पिथौराराय॥
दया आय गै मलखाने के ❀ मुशकै तुरत दीन छुड़वाय।
अब तुम जावो जनवासे को ❀ बोला फेरि चौंड़िया राय॥
नाउनि आई फिरि भीतर सों ❀ औ आल्हासों कह्यो सुनाय।
इकलो दूलह अब पठवावो ❀ रानी भीतर रहीं बुलाय॥
ऊदन बोले तब नाइनि ते ❀ साँची मानो कही हमार।
संग न छाँड़ैं सहिबाला कहुँ ❀ यह है मोहबे का व्यवहार॥
इतना सुनिकै नाइनि बोली ❀ जल्दी चलो करो नहिं बार।
आगे नाइनि फिरि दूलह भा ❀ पाछे बेंदुल का असवार॥
और बीर सब तम्बुन आये ❀ ये दोउ महल पहूँचे जाय।
चौंड़ा बोला पृथीराज सों ❀ आयसु मोहिं देउ फरमाय॥
मैं अब मारों बघऊदन को ❀ ओसर नीक पहूँचा आय।
सुनिकै बातैं ये चौंड़ा की ❀ आयसु दीन पिथौराराय॥
बिछिया अँगुठा चौंड़ा पहिस्यो ❀ लीन्ह्यो रूप जनाना धार।
ठुम्मुक ठुम्मुक चौंड़ा चलिभा ❀ बिषधर चापे बगल कटार॥
जाय कै पहुँच्यो त्यहि महलन में ❀ ऊदन जहाँ करैं ज्यउँनार।
दुचिता दीख्यो जब ऊदन को ❀ चौंड़ा मारी तुरत कटार॥
खाय मूर्च्छा ऊदन गिरिगे ❀ नारिन कीन तहाँ चिग्घार।
भये सनाका ब्रह्मा ठाकुर ❀ मनमाँ लागे करन बिचार॥

आजु बीरता गै मोहबे ते ❀ जो मरिगयो लहुरवा भाय।
मर्द न ऐसो कहुँ पैदा भो ❀ जैसो रहै बनाफरराय॥
शोच आयगा ब्रह्मानँद के ❀ मनमाँ बार बार पछिताय।
छाती पीटै रानी अगमा ❀ महलन गिरि पछारा खाय॥
तौंहिं चौंड़िया यह चाही ना ❀ कीन्हे घाटि महलमाँ आय।
नालति तेरी द्विज देही का ❀ चौंड़ा काह गये बौराय॥
घाव मूँदिकै बघऊदन का ❀ रानी औषध दीन लगाय।
कन्या राजन की महरानी ❀ औ सब जानैं भले उपाय॥
मारु कूटकी घर घर चरचा ❀ क्षत्री बंश रहै तब भाय।
राजा पिरथी की महरानी ❀ त्यहि बघऊदन दीन जियाय॥
उठा दुलरवा द्यावलि वाला ❀ बेला देखि गई हर्षाय।
ऐसि खुशाली भै ब्रह्मा के ❀ जैसे योग सिद्धि ह्वैजाय॥
गवैं सुहागिन दिल्ली वाली ❀ लैलै नाम बनाफर क्यार।
बड़ी खुशाली भै महलन में ❀ होवन लाग मंगलाचार॥
पाँय लागि कै महरानी के ❀ बोला उदयसिंह सरदार।
आयसु तुम्हरी जो हम पावैं ❀ तौ तम्बुन को होयँ तयार॥
रूप देखिकै बघऊदन को ❀ नारी पीटन लगीं कपार।
भईं अभागिनि हम सब महलन ❀ अब ये चलन हेत तय्यार॥
रूप न देखा क्यहु क्षत्री का ❀ जैसो उदयसिंह सरदार।
पाग बैंजनी शिर पर बाँधे ❀ ऊपर कलँगी करै बहार॥
बेला चमेला के गजरा हैं ❀ तिन पर परा मोतियन हार।
बाँके नैना यह क्षत्री के ❀ सखिया चुभे करेजे फार॥
मन बौराना सहिबाला पर ❀ आला देव रूप अवतार।
दूसरि बाला त्यहि काला में ❀ बोली मानो कही हमार॥

भागि तुम्हारी अस नाहीं है ❀ जो ये होयँ तोर भर्त्तार।
नालति तुम्हरे मन चब्बन को ❀ तुमका बार बार धिक्कार॥
त्यही समैया ऊदन चलिभा ❀ सबसों बिदा मांगि त्यहिबार।
चढ़ा पालकी ब्रह्मा ठाकुर ❀ ऊदन बेंदुल भा असवार॥
आयकै पहुँचे द्वउ लश्कर में ❀ जहँ दरबार चँदेले क्यार।
हाथ पकरिकै ब्रह्मा ऊदन ❀ तम्बुन गये दोऊ सरदार॥
चरणन परिकै परिमालिक के ❀ बैठे दोऊ बीर बलवान।
पूंछन लागे बघऊदन ते ❀ तुरतै तहाँ बीर मलखान॥
कहौ हकीकति सब महलन की ❀ कैसी भई रीति व्यवहार।
सुनिकै बातैं मलखाने की ❀ कहिगा यथातथ्य सरदार॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ आल्हा ठाकुर लीन बुलाय।
कमर बिलोकैं बघऊदन की ❀ कैसा परा कटारी घाय॥
चिह्न न पायो कहूँ घाव को ❀ आल्हा बोल्यो बचन सुनाय।
झूंठ न बोलत तुम ऊदन रहौ ❀ कैसी किह्यो दिल्लगी भाय॥
ब्रह्मा बोले तब आल्हा ते ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय।
साँची दादा ऊदन बोल्यो ❀ झूँठ न कह्यो लहुरवा भाय॥
लीन्हे बूटी रानी आई ❀ सो ऊदन के दिह्यो लगाय।
घाव पूरिगा बघऊदन का ❀ औ उठि बैठ लहुरवा भाय॥
सुनिकै बातैं ब्रह्मानँद की ❀ गे परिमाल सनाका खाय।
कूच कराओ अब लश्कर को ❀ बोला फेरि चँदेलाराय॥
बातैं सुनिकै महराजा की ❀ मलखे रुपना लीन बुलाय।
औ समुझायो यह रुपना को ❀ यह तुम कहौ पिथौरै जाय॥
कह्यो सँदेशा परिमालिक है ❀ बेटी बिदा देयँ करवाय।
इतना सुनिकै रुपना चलिभा ❀ औ फिरि अटा द्वारपर जाय॥

द्वारे ठाढ़े पिरथी राजा ❀ तिनसों बोला शीश नवाय।
बिदा कि बिरिया अब आई है ❀ यह मोहिं कह्यो चँदेलोराय॥
यहु संदेशा हम लाये हैं ❀ ओ महराज पिथौराराय।
जो कछु उत्तर तुम ते पावैं ❀ राजै स्वई सुनावैं जाय॥
बातैं सुनिकै ये रूपन की ❀ बोले पृथीराज महराज।
देश हमारे की रीती यह ❀ पुरिखन कियो अगारी काज॥
ब्याह के पीछे गौना देवैं ❀ तबहीं होवै पूर बिवाह।
यह तुम कहियो परिमालिकते ❀ ऐसे कहे बचन नरनाह॥
धन्य बखानैं हम आल्हा को ❀ सातो भाँवरि लियो कराय।
हैं सब लायक मलखे ठाकुर ❀ हमरो कहौ सँदेशो जाय॥
सुनिकै बातैं पृथीराज की ❀ रूपन चला तुरत शिरनाय।
आयकै पहुँच्यो त्यहि तम्बू में ❀ ज्यहि में रहैं चँदेलेराय॥
आल्हा ऊदन मलखे सुलखे ❀ बैठे लिहे ढाल तलवार।
जोगा भोगा मन्नागूजर ❀ जगनिक भैने चँदेले क्यार॥
जो संदेशा पृथीराज का ❀ रूपन सो गा सबै सुनाय।
सुनिकै बातैं पृथीराज की ❀ भा मन खुशी चँदेलोराय॥
हुकुम लगायो फिरि लश्कर में ❀ क्षत्री कूच देयँ करवाय।
मानि आज्ञा परिमालिक की ❀ आल्हा कूच दीन फरमाय॥
कूच क डंका तब बाजत भो ❀ क्षत्री सबै भये हुशियार।
हथी चढ़ैया हाथी चढ़िगे ❀ बाकी घोड़न भे असवार॥
बाजे डंका अहतंका के ❀ घूमन लागे लाल निशान।
बैठि पालकी ब्रह्मा चलि भे ❀ साथै चले बीर मलखान॥
ढोल औ तुरही कै गिनती ना ❀ बाजन कीन घोर घमसान।
ग्यारा रोज कि मंजलि करिकै ❀ मोहबे आये बराती ज्वान॥

आगे चलि कै रूपन बारी ❀ मल्हना महल पहूँचा आय ।
कुशल प्रश्न सों सब जन आये ❀ रूपन बोला शीश नवाय ॥
बड़ी खुशाली भै मल्हना के ❀ तुरतै सखियाँ लीन बुलाय ।
चौमुख दियना रानी बारे ❀ पहुँची तुरत द्वार पर आय ॥
बारह रानी मरिपालिक की ❀ गावन लगीं मंगलाचार ।
पलकी आई ब्रह्मानँद की ❀ परछन होन लगी तब द्वार ॥
भई आरती ब्रह्मानँद की ❀ सबियाँ याचक भये निहाल ।
जितनी रैयति मोहबे वाली ❀ आये ज्वान बृद्ध औ बाल ॥
भयो बुलौवा फिरि पंडित का ❀ धावन चला तड़ाका धाय ।
लैकै पत्रा पंडित आवा ❀ साइति ठीक दीन बतलाय ॥
महलन पहुँचे ब्रह्मा ठाकुर ❀ बिप्रन मोद भयो अधिकाय ।
दान दक्षिणा मल्हना दीन्हे ❀ सीधा घरै दीन पहुँचाय ॥
दगीं सलामी दरवाजे पर ❀ धुँवना रहा सरग में छाय ।
बिदा मांगि कै नेवतहरी सब ❀ निज निज देश पहूँचे जाय ॥
दशहरि पुरवा आल्हा पहुँचे ❀ सिरसा गये बीर मलखान ।
कथा पूरि भै अब ब्याहे कै ❀ मानो सत्य बचन परमान ॥
खेत छूटिगा दिननायक सों ❀ झंडा गड़ा निशा को आय ।
तारागण सब चमकन लागे ❀ सन्तन धुनी दीन परचाय ॥
परे आलसी खटिया तकितकि ❀ घों घों कण्ठ रहे घर्राय ।
भल बनिआई तहँ योगिन कै ❀ निर्भय रहे राम यश गाय ॥
निशा पियारी सब योगिन को ❀ चोरन अर्द्धमास की भाय ।
कछु नहिं भावै मन बिरहिन के ❀ उनको कालरूप दिखराय ॥
सदा सहायक पितु अपने को ❀ दोऊ हाथ जोरि शिर नाय ।
आशिर्वाद देउँ मुंशीसुत ❀ जीवो प्रागनरायण भाय ॥

रहै समुन्दर में जब लों जल ❀ जब लों रहैं चन्द औ सूर।
मालिक ललिते के तबलों तुम ❀ यश सों रहौ सदा भरपूर॥
माथ नवावों शिवशंकर को ❀ यहँ सों करों तरँग को अन्त।
राम रमा मिल दर्शन देवो ❀ इच्छा यही मोरि भगवन्त॥

ब्रह्मा औ बेला का विवाह सम्पूर्ण।

आल्हखण्ड

उदयसिंह का विवाह

अथवा

नरवर की लड़ाई

सवैया

भो प्रभु दीन दयाल गुपाल सदा नँदलाल दोऊ पद ध्यावों।
सागर कीर्त्ति सबै गुण आगर नागर मोहनलाल बतावों ॥
स्वर्ग औ नर्क रहूँ कतहूँ पै सदा शुचि सों तुम्हरो गुण गावों।
याँच यही ललिते कर साँच मिलै रघुनन्दन सो बर पावों ॥

सुमिरन

दोउ पद ध्यावों बड़े प्रेम सों ❀ स्वामी कृष्णचन्द्र महराज।

काज सँवाख्यो धर्मराज के ❀ राख्यो द्रुपदसुता की लाज ॥
कंस पछाख्यो यदुनन्दन तुम ❀ दीन्ह्यो उग्रसेन को राज ।
सदा पियारे तुम भक्तन के ❀ हमरे माननीय शिरताज ॥
भक्त तुम्हारे सुखी न देखे ❀ आवत नाम बतावत लाज ।
भक्त सुदामा जग में जाहिर ❀ दूसर जनकपुरी द्विजराज ॥
लक्ष्मीपति तुमको सब जानत ❀ चाहत सरन आपनो काज ।
भूप युधिष्ठिर की गति देखी ❀ बनमाँ रहे छूटिगै राज ॥
वस्त्र न देखा जिन देहीमां ❀ केवल चढ़ी भस्म सब अङ्ग ।
रावण बाणासुर को देखा ❀ जिन सों जुरी आपसों जङ्ग ॥
छूटि सुमिरनी गै देवन कै ❀ औ ऊदन का सुनो बिवाह ।
घोड़ खरीदन काबुल जैहैं ❀ पठई मोहबे का नरनाह ॥

अथ कथाप्रसंग

एक समैया परिमालिक का ❀ भारी लाग राजदरबार ।
बैठे क्षत्री सब महिफिल हैं ❀ एकते एक शूर सरदार ॥
पारस पत्थर ज्यहि के घरमा ❀ लोहा छुये सोन ह्वैजाय ।
कौन बड़ाई तिनकै करकै ❀ शोभा बरणि पार लै जाय ॥
माहिल शाले परिमालिक के ❀ सोऊ गये तहाँ पर आय ।
देखि बनाफर उदयसिंह को ❀ माहिल पीर भई अधिकाय ॥
माहिल बोले तहँ राजा सों ❀ मानो कही चँदेलेराय ।
नाम तुम्हारो देश देश में ❀ तुम पर कृपा कीन रघुराय ॥
एक बात की अब कमती है ❀ सो बिन कहे रहा ना जाय ।
घोड़ तुम्हारे घर कमती हैं ❀ बूढ़े घोड़ भरे अधिकाय ॥
रुपिया पैसा की कमती ना ❀ थोड़े घोड़ लेउ मँगवाय ।
अबें बछेड़ा काबुलवाले ❀ तौ फिरिनामहोयअधिकाय ॥

इतना सुनिकै राजा बोले ❀ काबुल कौन खरीदन जाय।
हाथ जोरिकै ऊदन बोले ❀ काबुल हमैं देउ पठवाय॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ राजा गये सनाका खाय।
बोलि न आवा परिमालिक ते ❀ मुँहका बिरा गयो कुम्हिलाय॥
कलँगी गिरिगै फिरि पगड़ी ते ❀ काँपन लाग चँदेलोराय।
रोवाँ ठाढ़े भे देही के ❀ नैनन दीन्ह्यो झरी लगाय॥
माहिल बोले परिमालिक ते ❀ काहे शोच कीन अधिकाय।
लड़िका बाउर ऊदन नाहीं ❀ जो तुम डरो चँदेलेराय॥
इनते बढ़िकै को मोहबे माँ ❀ घोड़ा जौन खरीदन जाय।
है मर्दाना इनको बाना ❀ कालौ लड़ै न सम्मुख आय॥
कहिकै पलटत नहिं ऊदन हैं ❀ जानो भली भाँति महराज।
भय नहिं लावो अपने मनमाँ ❀ करिहैं सिद्धकाज रघुराज॥
बातैं सुनिकै ये माहिल की ❀ बोले फेरि रजा परिमाल।
तुम भल जानत हौ ऊदन को ❀ कलहा देशराज को लाल॥
रारि मचाई यहु मारग में ❀ आई फेरि ब्याधि कछु भाय।
बात चलाई तुम ऐसी है ❀ जासों सोच भयो अधिकाय॥
सुनिकै बातैं परिमालिक की ❀ बोला उदयसिंह सरदार।
शपथ शारदा शिवशङ्कर की ❀ हम काबुल को खड़े तयार॥
भली बताई माहिल मामा ❀ राजा करो बचन बिश्वास।
यक अवलम्बा जगदम्बा का ❀ सोई पूरि करैं सब आस॥
क्षत्री ह्वैकै समर सकावै ❀ त्यहि को बार बार धिक्कार।
बाँझै होवै सो नारी जग ❀ नाहक रखै पेटमें भार॥
बेद यज्ञ औ दान युद्ध ये ❀ क्षत्री केर रूप शृंगार।
ये नहिं होवैं ज्यहि क्षत्री के ❀ त्यहि को बार बार धिक्कार॥

एक ऋचा गायत्री जानै ❁ सोऊ बेद पढ़ैया ज्वान।
ब्राह्मण क्षत्री बनिया तीनों ❁ यासोंबिमुखश्वान अनुमान ॥
बातैं सुनिकै बघऊदन की ❁ बोले फेरि रजा परिमाल।
कहा न मनिहौ तुम बच्चा अब ❁ कलहा देशराज के लाल ॥
देवा ठाकुर को सँग लैकै ❁ काबुल घोड़ खरीदो जाय।
रारि मचायो कहुँ मारग ना ❁ मान्यो कही बनाफरराय ॥
इतना कहिकै परिमालिक ने ❁ फिरि यह हुकुम दीन फरमाय।
पंद्रह खच्चर मुहरै लैकै ❁ काबुल जाउ लहुरवा भाय ॥
सुनिकै बातैं परिमालिक की ❁ दोऊ हाथ जोरि शिर नाय।
बिदा मांगिकै परिमालिक ते ❁ मल्हना महल पहूँचा जाय ॥
कही हकीकति सब मल्हना ते ❁ ऊदन बार बार शिर नाय।
करतब जान्यो जब माहिल कै ❁ मल्हना बार बार पछिताय ॥
पै भलजानै अपने मन माँ ❁ मानी नहीं लहुरवा भाय।
तासों रोंक्यो महरानी ना ❁ आशिर्बाद दीन हर्षाय ॥
बिदा मांगिकै ऊदन चलिभा ❁ दशहरिपुरै पहूँचा जाय।
हाल बतायो सब माता को ❁ ऊदन बार बार समुझाय ॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❁ भौजी माता उठीं रिसाय।
तुम नहि जावो अब काबुल को ❁ ऊदन काह गये बौराय ॥
आल्हा बरज्यो भल ऊदन को ❁ नीक न करो लहुरवा भाय।
तुम्हैं पठावत नहिं राजा हैं ❁ तुमहीं कौन हेतु को जाय ॥
बातैं सुनिकै ये आल्हा की ❁ ऊदन कहा वचन शिरनाय।
हम तो जैबे अब काबुल को ❁ चहु तन धजीधजीउड़िजाय ॥
हम को बरजो अब भाई ना ❁ इतना प्यार करो अधिकाय।
बातैं सुनिकै बघऊदन की ❁ आल्हा चुप्पसाधि रहिजाय ॥

पायँ लागिकै फिरि माता के ❀ औ सुनवाँ को शीश नवाय।
विदा मांगि कै बड़ भाई सों ❀ ऊदन कूच दीन करवाय॥
घोड़ मनोहर देबा बैठा ❀ ऊदन बेंदुल पर असवार।
चला काफिला फिरि काबुल को ❀ दोऊ चले शूर सरदार॥
एक कोस जब नरवर रहिगा ❀ ऊदन बोले वचन सुनाय।
कौन शहर है देबा ठाकुर ❀ हमको साँच देउ बतलाय॥
देबा बोला तब ऊदन ते ❀ जानो नहीं हमारो भाय।
इतना कहिकै दूनों चलि भे ❀ रहिगा पाव कोस फिरि आय॥
तहँ चरवाहन को देखत भो ❀ तिनसों कह्यो बनाफरराय।
कौन शहर औ को राजा है ❀ हमको साँच देउ बतलाय॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ बोला अहिरपूत तब भाय।
नरपति राजा नरवरगढ़ है ❀ औ परदेशी बात बनाय॥
इतना सुनिकै दूनों चलिभे ❀ पुर के पास पहूँचे जाय।
तहाँ जखेड़ा बहु नारिन को ❀ खैंचैं वारि कूप में आय॥
को गति बरणै तिन नारिन कै ❀ पतली कमर तीनि बलखाय।
दाँत अनारन के बीजासम ❀ मीसी हँसत परै दिखलाय॥
परी बतीसी है पानन कै ❀ आननकमलखिलाजसभाय।
छाती सोहैं नवरंगी सम ❀ घुण्डी भौंर सरिस दिखराय॥
गजकी शुण्डासम भुजदण्डा ❀ जंघा कदलिथम्भ अनुमान।
रूप देखिकै तिन नारिन का ❀ धैहा होयँ अनेकन ज्वान॥
ऐसी बाला सब आला हैं ❀ नाभी यमुन भँवरसम भाय।
रूप देखिकै तिन नारिन का ❀ पहुँचा पास बनाफरराय॥
मनमाँ सोचा उदयसिंह तब ❀ औ यह ठीक लीन ठहराय।
जौने पुरकी अस नारी हैं ❀ रानिन रूप बरणि ना जाय॥

यहै सोचिकै बघऊदन फिरि ❀ बोला एक नारि के साथ।
पूरब तेनी पश्चिम आये ❀ बाबा सूर्य चराचर नाथ॥
घोड़ पियासा अति हमरो है ❀ याको पानी देउ पियाय।
बातैं सुनिकै ये ऊदन की ❀ बोली तुरत नारि रिसियाय॥
करन दिल्लगी हम सों आयो ❀ क्षत्री घोड़े के असवार।
पनी पियावन अब घोड़े का ❀ फेरि न कह्यो दूसरी बार॥
नरपति राजा यहि नगरी का ❀ सब बिधि शूरबीर सरदार।
टरिजा टरिजा अब जल्दी सों ❀ क्षत्री घोड़े के असवार॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ अब ना बोले फेरि गवाँरि।
ऐसी बातैं जो फिरि बोलै ❀ तौ मुहँ धाँसि देउँ तलवारि॥
नरपति खरपति कै गिनती ना ❀ बर बर करै बैलनी नारि।
काह हकीकति है नरपति कै ❀ हमरे साथ करै तलवारि॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❀ सहमी तहाँ तुरत सो नारि।
औरी नारी त्यहि सों बोलीं ❀ आईं संग भरन जे बारि॥
रूप उजागर सब गुण सागर ❀ नागर घोड़े को असवार।
करुई वाणी नाहक बोलिउ ❀ बहिनी मानों कही हमार॥
यहु बर लायक है फुलवा के ❀ सबविधि रूपशील गुणवान।
वह तो बोली भल धीरज में ❀ पर परिगई बनाफर कान॥

सवैया

ऊदन बोलि उठा त्यहि नारिसों कौन अहै फुलवा सहिदानी।
देहु बताय न राखु छिपाय चुभी मनमें सुनिबे को कहानी॥
कोमल बैन सुन्यो जब भामिनि बोलि उठी तबहीं यह बानी।
नरपति की कन्या लखिकै ललिते रतिहू मनमें सकुचानी॥

त्यहि की समता सुन्दरता की ❀ यहि पुर नारि कौन यहिकाल।

काह बतावों परदेशी मैं ❀ फूलन शयन करै वह बाल ॥
त्यहिमुखफुलवाकीगाथासुनि ❀ ऊदन आगम गयो जनाय ।
दक्षिण बाहू फरकन लाग्यो ❀ दहिने भईं शारदा माय ॥
यादि आयगै फिरि माड़ो कै ❀ जोकछु कहा बिजैसिनिबाल ।
बाण लागिगा उर मन्मथ का ❀ घायल देशराज का लाल ॥
आदर करिकै फिरि देबा का ❀ बोला उदयसिंह सरदार ।
अब दिन थोड़ा अति बाकी है ❀ देखो चलैं शहर को यार ॥
आखिर सोना है बिरवा तर ❀ सब दिन मारग में सरदार ।
भागि भरोसे शहर जो पावा ❀ तौ कस त्यागि चलैं यहिबार ॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❀ देबा मैनपुरी चौहान ।
ज्योतिष बिद्या के परचय से ❀ जाना कुशल करी भगवान ॥
देबा बोला फिरि ऊदन सों ❀ मानो कही लहुरवा भाय ।
द्रव्य बांधिकै पर पुर जैये ❀ यह नहिं हृदय मोर पतियाय ॥
ता सों रहिबो तर बिरवा के ❀ नीकी बात बनाफरराय ।
द्रव्य प्राण की घातक जानो ❀ मानो साँच बचन तुम भाय ॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ साँची मानो कही हमार ।
भय उर राखो कछु जियरे ना ❀ चलिये टिकैं यहाँ सरदार ॥
इतना कहिकै बघऊदन ने ❀ आगे दीन्ह्यो घोड़ बढ़ाय ।
पाछे चलि भा देबा ठाकुर ❀ मन में बार बार पछिताय ॥
जाय कै पहुँचे फुलबगिया में ❀ मालिन भीर दीख अधिकाय ।
तहाँ पै उतरे बघऊदन जब ❀ माली पास पहूँचा आय ॥
माली बोला बघऊदन ते ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ।
चलिकै उतरो चहु मोरे घर ❀ ह्याँ नहिं टिको मुसाफिर भाय ॥
यह फुलवाई महराजा की ❀ ह्याँ सों मेख लेउ उखराय ।

देबा ऊदन दोऊ सोये ❀ चकरन पहरा दीन बिठाय ॥
सोयकै जागे जब बघऊदन ❀ प्रातःक्रिया कीन हर्षाय ।
फेरिकै पहुँचे मालिनि घर माँ ❀ मालिनि हरवा रही बनाय ॥
ऊदन बोले तहँ मालिनि सों ❀ हिरिया भौजी बात बनाय ।
लाव मलाई अब जल्दी सों ❀ दौरति चली बजारै जाय ॥
इतना सुनिकै हिरिया बोली ❀ साँची सुनो बनाफर राय ।
हार छोड़ि कै जाउँ बजारै ❀ तौ तकसीर बड़ी ह्वै जाय ॥
तनकिउ देरी हमका लागी ❀ फूलवा जाई बेगि रिसाय ।
बातैं सुनिकै ये हिरिया की ❀ बोले फेरि बनाफर राय ॥
हार तुम्हारो हम गूंथत हैं ❀ मालिनि जाउ बजरिया धाय ।
पांच अशर्फी ऊदन दीन्ह्यो ❀ मालिनिचली तड़ाकाजाय ॥
बेला चमेली औ निवारि को ❀ ऊदन हार कीन तय्यार ।
मालिनि आई जब बजार ते ❀ देखा चार लरिन को हार ॥
हिरिया बोली तब ऊदन ते ❀ देवर मानो कही हमार ।
हार दुलरिया रोज बनावों ❀ चौलर आज भयो तय्यार ॥
करीं गांठी तुम्हरी दीन्ही ❀ फूलन खूब सटा है यार ।
हाल जो पूँछी फुलवा बेटी ❀ उत्तर काह देब सरदार ॥
बातैं सुनिकै ये मालिनि की ❀ बोला उदयसिंह त्यहि बार ।
बिटिया आई म्वरि बहिनी कै ❀ ताने हार कीन तय्यार ॥
इतना सुनिकै हिरिया मालिनि ❀ तुरतै डिलिया लीन उठाय ।
जहँना बेटी रह नरपति कै ❀ मालिनि तहाँ पहूँची जाय ॥
बैठि पलँगरा फुलवा बेटी ❀ मालिनि हार दीन पहिराय ।
चार लरिन को हरवा दीख्यो ❀ फुलवा बोली वचनरिसाय ॥
रोज दुलरिया लै आवत थी ❀ कौने गुँधा चौलरा हार ।

साँच बतावै री मालिनि अब ❀ नाहीं पेट फरैहौं त्वार ॥
इतना सुनिकै मालिनि बोली ❀ दोऊ हाथ जोरि शिर नाय ।
बिटिया आई क्वरि बहिनी कै ❀ ताने हार बनायो आय ॥
वह तो ब्याही है मोहबे माँ ❀ जहँ पर बसैं रजापरिमाल ।
पारस पत्थर तिनके घरमाँ ❀ उनकी रय्यत सबै निहाल ॥
बातैं सुनिकै ये मालिनि की ❀ फुलवा हुकुम दीन फरमाय ।
हार बनायो ज्यहि मालिनि है ❀ सोको बेगि दिखावै आय ॥
इतना सुनिकै मालिनि चलिभै ❀ मनमाँ बार बार पछिताय ।
ज्यों त्यों आई घर अपने को ❀ तहँ पर मिले बनाफरराय ॥
हाल बतायो सब फुलवा को ❀ मालिनि बार बार समुझाय ।
मारे डरके पिंडुरी काँपैं ❀ जर्दी आनन परै दिखाय ॥
ऊदन बोले तब मालिनि ते ❀ काहे शोच करो अधिकाय ।
नई पुरानी जेवर लैकै ❀ हमको देउ आय पहिराय ॥
देखन जैबे हम फुलवा को ❀ मालिनि मानो कही हमार ।
शंका लावो कछु जियरे ना ❀ तुम्हरो जाय न बांको बार ॥
कौन दुसरिहा जग हमरो है ❀ जो तुम्हरे तन करै निगाह ।
निश्चय जानो अपने मनमाँ ❀ हम फुलवाते करब विवाह ॥
बातैं सुनिकै उदयसिंह की ❀ मालिनि शंका दीन भुलाय ।
तुरतै गहना को लै आई ❀ पहिरन लाग लहुरवा भाय ॥
मिस्सी रगरी सब दाँतन में ❀ ता पर लीन्ह्यो पान चबाय ।
काजल आँज्यो दोउ नैनन में ❀ शोभा कही वूत ना जाय ॥
बेंदी बँदनी टीका तीनों ❀ मस्तक ऊपर धरा सँवार ।
करनफूल कानन में पहिरा ❀ तामें गुज्झी करैं वहार ॥
मोहन माला मोतिन माला ❀ पहिरे और फुलन के हार ।

बाजू जोसन टाड़ैं तीनों ❀ दोऊ भुजा पहिरि सरदार ॥
नीले रँगकी चुरियाँ पहिरी ❀ गोरे हाथन का शृङ्गार ।
अगे अगेला पिछे पछेला ❀ तिन बिच ककना करैं बहार ॥
छल्ले पहिरे सब अँगुरिन में ❀ अँगुठा लीन आरसी धार ।
पहिरि करधनी ली कम्मर में ❀ पायँन पायजेब झनकार ॥
कड़ा के ऊपर छड़ा बिराजै ❀ नीचे मेंहदी करै बहार ।
बिछुवा पहिरे सब अँगुरिन में ❀ अनवट अँगुठन का शृंगार ॥
वेष जनाना ऊदन धरिकै ❀ तुरतै पलकी लीन मँगाय ।
बैठ पालकी में नरनाहर ❀ मन में सुमिरि शारदा माय ॥
हिरिया मालिनि को सँगलैकै ❀ फुलवा महल गये नगच्याय ।
उतरि पालकी सों नरनाहर ❀ शारदचरणकमलफिरिध्याय ॥
आगे हिरिया पाछे ऊदन ❀ फुलवा पास पहूँचे जाय ।
फुलवा दीख्यो जब ऊदन को ❀ मन माँ बड़ी खुशी ह्वै जाय ॥
रूप देखिकै त्यहि मालिनि को ❀ मन माँ गई सनाका खाय ।
कै पैताना खाली दीन्ह्यो ❀ आदर कीन फेरि अधिकाय ॥
बैठि उसीसे जब ऊदन गे ❀ फुलवा बोली बचन रिसाय ।
कैसी मालिनि यह लाई है ❀ मालिनि हाल देय बतलाय ॥
मालिनि बोली तब फुलवा ते ❀ बेटी साँची देयँ बताय ।
बेटी प्यारी परिमालिक की ❀ नौकरि तासुपास की आय ॥
राजनीति का यह जानति है ❀ राखति स्वऊ सखी का भाय ।
बैठि उसीसे यह जावैं जो ❀ तौ वह क्षमा करै हपाँय ॥
सुनिकै बातैं ये मालिनि की ❀ फुलवा क्षमा कीन सुखपाय ।
हँसिकै बोली फिरिमालिनिते ❀ साँची साँची देउ बताय ॥
कौन बहादुर परिमालिक घर ❀ क्वारो राजपुत्र यहिकाल ।

बातैं सुनिकै ये फुलवा की ❀ बोला देशराज का लाल ॥
आल्हा ब्याहे हैं नैनागढ़ ❀ पथरीगढ़ै बीर मलखान ।
पिरथी घरमाँ ब्रह्मा ब्याहे ❀ ठाकुर दिल्ली के चौहान ॥
क्वारो इकलो बघऊदन है ❀ ज्यहि कै बेंड़ि बहै तलवार ।
बड़ा लड़ैया जगमाँ जाहिर ❀ ठाकुर बेंदुल का असवार ॥
इतना सुनिकै फुलवा बोली ❀ मालिनि साँच देउ बतलाय ।
हाथ पैर पुरुषन के ऐसे ❀ करैं करैं परैं दिखाय ॥
इतना सुनिकै मालिनि बोली ❀ साँचे बचन करो परमान ।
भैंसि चराईं बालापन माँ ❀ माता पिता दरिद्री जान ॥
परी ब्यवस्था लरिकाईं में ❀ ताको करी कहाँ लग गान ।
जैसी गुजरी हमरे ऊपर ❀ ऐसी परै न काहू आन ॥
फुलवा बोली फिरि हिरिया ते ❀ मालिनि जाउ घरै यहिबार ।
कालिह सबेरे यहि लै जायो ❀ सांची मानो कही हमार ॥
इतना सुनिकै हिरिया चलिभै ❀ अपने घरै पहूँची आय ।
फुलवा बाँदी को बुलवायो ❀ तासों चौपरि लीन मँगाय ॥
खेलन लागी मालिनि सँगमाँ ❀ आधी राति गई नगच्याय ।
लैकै पंखा बाँदी हाँकै ❀ ऊदन केर वस्त्र उड़ि जाय ॥
कब्जा झलकै तलवारी का ❀ सो फुलवा के परा निगाह ।
फुलवा बोली तब मालिनि ते ❀ झलकै बगल तुम्हारे काह ॥
तुम नहिं बेटी हौ मालिनि की ❀ औ छल किह्यो यहाँ पर आय ।
सुनि मकरन्दा तुमका पाई ❀ तुरतै खोदि लेइ गड़वाय ॥
अब पहिंचाना हम तुमको है ❀ बेटा देशराज के लाल ।
जियत न जैहौ तुम महलन ते ❀ औ परिगयो काल के गाल ॥
नाम तुम्हारो उदयसिंह है ❀ तुमहीं बेंदुल के असवार ।

इतना सुनिकै मालिनि बोली ❀ कीन्ह्यो नीकी आज चिन्हार ॥
कहँ पै दीख्यो तुम ऊदन को ❀ साँचे हाल देउ बतलाय ।
इतना सुनिकै सब बाँदिन को ❀ फुलवा तुरतै दीन हटाय ॥
औ फिरि बोली बघऊदन ते ❀ मानो कही बनाफरराय ।
रानी कुशला के महलन में ❀ योगीरूप धरा तुम जाय ॥
घर घर लूटा तुम माड़ो माँ ❀ हमसों शपथ कीन फिरि आय ।
भेद बतावा घर अपने का ❀ तब तुम लीन बाप का दायँ ॥
ब्याह हमारो जब तुम कीन्हा ❀ मलखे हना मोहिं ततकाल ।
मिलन आपनो तुम्हैं बतावा ❀ नाहर देशराज के लाल ॥
साँचो चाहत जो जाको है ❀ ताको स्वई मिलै सब काल ।
यह सुनि राखा हम बिप्रन सों ❀ सो सब साँचा भयो हवाल ॥
पै गति तुम्हरी ह्याँ नाहीं है ❀ हम सों ब्याह करो सरदार ।
बड़ा लड़ैया मकरन्दा है ❀ ज्यहि ते हारि गई तलवार ॥
सुनिकै बातैं ये फुलवा की ❀ बोला उदयसिंह सरदार ।
काह हकीकति मकरन्दा कै ❀ साँची मानो कही हमार ॥
भल पहिचान्यों तुम मोका है ❀ अब सब पूर भये मम काम ।
ब्याह तुम्हारो अब कीन्हे बिन ❀ लौटि न जायँ आपने धाम ॥
इतना सुनिकै फुलवा बोली ❀ मानो कही बनाफरराय ।
काठक घोड़ा बाण अजीता ❀ जादू सेल शनीचर भाय ॥
पापी जियरा अति मेरो है ❀ ताते धीर धरा ना जाय ।
करो बियारी तुम महलन में ❀ सोवो सेज बनाफरराय ॥
ऊदन बोले तब फुलवा ते ❀ तुमको साँच देयँ बतलाय ।
क्वाँरी कन्या की शय्या पर ❀ कबहुँ न धरैं बनाफर पायँ ॥
धीरज राखो अपने मनमाँ ❀ सोवो तुरत सेज में जाय ।

भयो भरोसा तब फुलवा के ❀ सोई बिकट नींद को पाय ॥
तारागण सब चमकन लागे ❀ सन्तन धुनी दीन परचाय ।
उये निशाकर आसमान में ❀ बिरहिनिपीर भई अधिकाय ॥
माथ नवावों पितु अपने को ❀ ह्याँ ते करों तरँग को अन्त ।
राम रमा मिल दर्शन देवैं ❀ इच्छा यही भवानीकन्त ॥
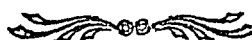
सवैया

कौन कि आश सुपास मिलै नित होत मनै मन याहि बिचारा ।
आश कि पाश सुपास कहाँ यह सोचत मोचत दुःख अपारा ॥
भीर परी यहि लोकहि की शिर शास्त्र औ बेद पुराण निहारा ।
बाम भये रघुनाथ सों साँच करै ललिते फिरि कौन उबारा ॥

सुमिरन

मैं पद बन्दौं रिपुसूदन के ❀ लवणासुरै पराजय कीन ।
मानों शत्रुन के जीतै को ❀ साँचो जन्म शत्रुहन लीन ॥
काटिकै मधुवन पुरी बसायो ❀ मथुरा पुरी परा त्यहि नाम ।
अश्वमेध में सब जग जीत्यो ❀ कीन्ह्यो शम्भु साथ संग्राम ॥
छोटे भाई लषण लाल के ❀ साँचे भये भरत के दास ।
इन यश बरणा अश्वमेध में ❀ पूरण भई हमारी आस ॥
मातु सुमित्रा के बालक ये ❀ जग में भये सुयश की रास ।
जो कोउ सुमिरै रिपुसूदन का ❀ साँचो करै प्रेम बिश्वास ॥
प्यारो होवै रघुनन्दन का ❀ साँचो स्वई राम को दास ।
छूटि सुमिरनी गै ह्याँते अब ❀ ऊदन ब्याह करों परकास ॥

अथ कथाप्रसंग

उये दिवाकर जब पूरब में ❀ बालकरूप बिम्ब अतिलाल ।

वेटी फुलवा के महलन में ❀ जागा देशराज का लाल ॥
देवा बोला ह्याँ हिरिया ते ❀ मालिनि मानो कही हमार ।
देर लगावो अब घरमाँ ना ❀ लावो उदयसिंह सरदार ॥
लैकै पलकी मालिनि चलि भै ❀ फुलवा पास पहूँची जाय ।
फुलवा बोली तब हिरिया ते ❀ अब यहि जावो तुरत लिवाय ॥
इतना सुनिकै ऊदन चलिभे ❀ पहुँचे तुरत द्वार में आय ।
बैठ पालकी में बघऊदन ❀ मन में सुमिरि शारदामाय ॥
आयकै पहुँचे जब मालिनि घर ❀ देवा बोला बचन सुनाय ।
साथ जनाना का करिबे ना ❀ जैबे जहाँ चँदेलाराय ॥
बन्यो जनाना तुम नरवर में ❀ कैहौं हाल जाय दरबार ।
बाना छोड़े रजपूती का ❀ ऊदन जीबे का धिक्कार ॥
इतना सुनतै कायल ह्वैगा ❀ नाहर उदयसिंह सरदार ।
पेट मारने के कारण सों ❀ ऊदन लीन्ही हाथ कटार ॥
हाथ पकरि कै देवा ठाकुर ❀ बोला सुनो बनाफरराय ।
चरचा करिबे ना मोहबे माँ ❀ ऊदन साँच देवँ बतलाय ॥
भई लालसा हमरे मन माँ ❀ फुलवा देखन को अधिकाय ।
करु अभिलाषा पूरण हमरी ❀ आल्हा केर लहुरवा भाय ॥
ऊदन बोले तब देवा ते ❀ तुमको कैसे लखैं दिखाय ।
जैस बतावो देवा ठाकुर ❀ तैसे साँचो करैं उपाय ॥
इतना सुनिकै देवा बोले ❀ योगी बनो बनाफरराय ।
अलख जगावें पुर घर घर में ❀ याही सीधो साद उपाय ॥
यह मन भाई बघऊदन के ❀ दूनों लीन्ह्यो भस्म रमाय ।
कर में माला औ मृगछाला ❀ आला योगी रूप बनाय ॥
गुदड़ी लीन्ही दोऊ ठाकुर ❀ नामें छिपी ढाल तलवार ।

डमरू लीन्ह्यो देबा ठाकुर ❀ बंशी उदयसिंह सरदार ॥
धुरपद, सोरठ, जैजैवन्ती, ❀ गावैं पूरराग कल्यान ।
टप्पा टुमरी भजन रेखता ❀ तारैं गजल पर्ज पर तान ॥
को गति बरणै तिन योगिन कै ❀ एक ते एक रूप गुणवान ।
ड्योढ़ी दाबे दोउ नरपति कै ❀ योगी चले तुरत बलवान ॥
देखि तमाशा तिन योगिन का ❀ मारग भीर भई अधिकाय ।
ता ता थेई ता ता थेई ❀ थेई थेई दीन मचाय ॥
बाजै डमरू भल देबा का ❀ ऊदन बंशी रहा बजाय ।
मोर कि नाचन ऊदन नाचै ❀ मारग भूलि गये सब भाय ॥
म।हीं तिरिया भल नरवर की ❀ चढ़ि चढ़ि लखैं अटारिन आय ।
एक एक सों बोलन लागीं ❀ जैसे नारिन केर स्वभाय ॥
धन्य बखानों इन मातन को ❀ जिनकी कोखिलीन अवतार ।
देखो आली इन योगिन को ❀ कैसो रूप दीन करतार ॥
ये दोउ बालक क्यहु राजा के ❀ बारे लीन योग को धार ।
सब गुण आगर दोउ नागर हैं ❀ योगी कामरूप अवतार ॥
क्य ू पियासे लरिका घर में ❀ भोजन करैं क्यहू भरतार ।
पै ते भूलीं दोउ योगिन में ❀ तन मन केरो नहीं सँभार ॥
गावत नाचत दोऊ योगी ❀ पहुँचे नरपति के दरबार ।
बाजा डमरू तहँ देबा का ❀ नाचा बेंदुल का असवार ॥
कमर भुकावै भाव बतावै ❀ गावै देशराज का लाल ।
देखि तमाशा यहु योगिन का ❀ भा मन बड़ा खुशी नरपाल ॥
नरपति बोला तब योगिन ते ❀ साँचे हाल देउ बतलाय ।
कहां ते आयो औ कहँ जैहो ❀ चाहो काह लेन को भाय ॥
हम तो आये बंगाले ते ❀ जावें हिंगलाज महराज ।

द्रव्य न चाहैं कछु महराजा ❀ केवल उदर भरन सों काज ॥
सुनिकै बातैं ये देवा की ❀ बोला नरवर का सरदार ।
धुरपद गावो यहि समया में ❀ भोजन अबै होय तय्यार ॥
बातैं सुनिकै महराजा की ❀ बोला देशराज का लाल ।
ब्याही नारी के हाथे का ❀ भोजन करैं नहीं नरपाल ॥
इतना सुनिकै राजा बोले ❀ योगी मानो कही हमार ।
है जो कन्या उपरोहित कै ❀ भोजन सोई करी तयार ॥
देवा बोला तब राजा ते ❀ यह नहिं ठीक भूमिभरतार ।
जरिजा अँगुरी जो वाम्हनि कै ❀ हमरो योग होय सब छार ॥
शास्त्र पुराणन को जानैं हम ❀ मानैं लिखा ठीक महराज ।
मारैं शापैं गारी देवै ❀ तबहूँ विप्र पूजने काज ॥
होय जो कन्या तुम्हरे घर की ❀ भोजन करै स्वई तैयार ।
तौ तौ योगी भोजन करि हैं ❀ नाहीं मांगैं और दुवार ॥
इतना सुनिकै फिरि बोलत भा ❀ राजा नरवर का सरदार ।
बेटी हमरी जो फुलवा है ❀ सोई भोजन करी तयार ॥
इतना सुनिकै योगी बोले ❀ यहही ठीक रहा महराज ।
धर्म न जैहै कछु योगिन का ❀ रहि है दुऊ दिशा की लाज ॥
पुत्र आपने मकरन्दा को ❀ तबहीं बोलि लीन नरपाल ।
फुलवा बहिनी जो तुम्हरी है ❀ तासों कहो जाय यह हाल ॥
इतना सुनिकै मकरँद चलिभा ❀ औ फुलवा ते कहा सुनाय ।
बातैं सुनिकै मकरन्दा की ❀ माता पास पहूँची आय ॥
आयसु लैकै महतारी की ❀ भोजन करन लागि तैयार ।
नाचैं गावैं दोऊ योगी ❀ मोहित भयो राज दरबार ॥
भयो बुलौवा फिरि महलन में ❀ योगी करैं चलैं ज्यउनार ।

इतना सुनिकै योगी चलिभे ❀ पीढ़न बैठि गये सरदार ॥
भोजन परसन फुलवा लागी ❀ देबा चितय दीन इक बार ।
बैठे पाटा पर बघऊदन ❀ मनमाँ लाग्यो करन बिचार ॥
किह्यो रसोई कारी कन्या ❀ भोजन केर नहीं अधिकार ।
बनि बौराहा जो हम जावैं ❀ तौ रहि जावै धर्म हमार ॥
देबा बोला फिरि ऊदन ते ❀ यह ही फुलवा है सरदार ।
इनही कारण नाक छिदायो ❀ धार्‌यो बेष जनाना यार ॥
किह्यो बहाना ह्याँ ऊदन ने ❀ औ गिरि गयो पछारा खाय ।
रानी चंपा दौरति आई ❀ योगिन पास पहूँची आय ॥
कौर डारिकै देबा योगी ❀ तहँ पर बार बार पछिताय ।
देखिकै सूरति लघु योगी कै ❀ चंपा बोली बचन सुनाय ॥
पाप आयगा यहि के मन माँ ❀ ताते गिरा पछारा खाय ।
योगी नाहीं यहु भोगी है ❀ यहिका डारों पेट फराय ॥
मकरँद लरिका को बुलवावों ❀ यहिका योग सिद्ध है जाय ।
इतना सुनिकै देबा बोला ❀ रानी काह गई बौराय ॥
भूत चुरैलै यहि महलन में ❀ की क्यहु नजरि लगाई आय ।
जो कछु होई यहिके जीका ❀ तौ फिरि योग देयँ दिखराय ॥
ऐसे वैसे हम योगी ना ❀ ना हम मँगैं खेत खरिहान ।
हमतो योगी संतोषी हैं ❀ जानै काह नारि बैलान ॥
सुनिकै बातैं ये देबा की ❀ रानी गई सनाका खाय ।
जल के छीटा फुलवा मारे ❀ जागा तुरत बनाफरराय ॥
बड़ी खुशाली देबा कीन्ह्यो ❀ लीन्ह्यो तुरत ताहि लपटाय ।
ऊदन बोले तब रानी ते ❀ तुमका साँच देयँ बतलाय ॥
परिगै छाया क्यहु ब्याही कै ❀ ताते गई मूरछा आय ।

फुलवा बोली तब माता ते ❀ योगी साँच रहा बतलाय ॥
परिगै छाया जव बाँदी कै ❀ तबहीं गिरा मूरछा खाय ।
ऊदन बोले तब रानी ते ❀ ह्याँते जान चहैं हम माय ॥
इतना सुनिकै चम्पा बोली ❀ योगी मानो कही हमार ।
भोजन दूसर हम परसावैं ❀ योगी जेंय लेउ ज्यवनार ॥
देबा बोला तब रानी ते ❀ साँचे बचन करो परमान ।
फिरिकै बैठैं हम चौका ना ❀ पूरण नियम हमारो जान ॥
ऐसे योगी आगे ह्वै हैं ❀ भोगिहैं भोगस्वादबश आय ।
तैसे योगी हम नाहीं हैं ❀ अपनो डारैं नियम नशाय ॥
योगी ह्वैकै भोगी होवै ❀ शोचन योगसोय अधिकाय ।
इतना कहिकै दोऊ योगी ❀ माँगिकै बिदा चले हर्षाय ॥
आयकै पहुँचे मालिनि घर माँ ❀ योगिन बाना धरे उतार ।
पाग बैंजनी शिर पर बाँधी ❀ नाहर उदयसिंह सरदार ॥
ऊदन बोले फिरि देबा ते ❀ ठाकुर मैनपुरी चौहान ।
कई महीना ह्याँ पर गुजरे ❀ ना अब रहिगा द्रब्य ठिकान ॥
घोड़ खरीदन कासों जावैं ❀ यहही शोच होय अधिकाय ।
पै कछु औषधि ह्याँ सूझै ना ❀ कैसी करी यहाँ पर भाय ॥
का लै जावैं अब मोहबे को ❀ काबुल काह खरीदैं जाय ।
इतना सुनिकै देबा बोले ❀ धीरज धरो लहुरवा भाय ॥
गत नहिं शोचैं कहुँ पण्डितजन ❀ मत यह ठीक हृदय ठहराय ।
कूच करावो अब नरवर ते ❀ चलिये नगर मोहोबे भाय ॥
यह हम कहिबे परिमालिक ते ❀ नरवर टिक्यन चँदेलेराय ।
भूत चुरैलै इनके लागीं ❀ ऊदन तहाँ गये बौराय ॥
कछु नहिं आशा तहँ बचने की ❀ निश्चय गई प्राण पै आय ।

कीन दवाई हम ऊदन की ❀ सब धन आये तहाँ गँवाय ॥
यह मन भाई उदयसिंह के ❀ तुरतै कूच दीन करवाय ।
कीरति सागर के डाँड़े पर ❀ पहुँचे फेरि बनाफर आय ॥
उतरि बेंदुला ते भुइँ आये ❀ तम्बू तुरत दीन गड़वाय ।
परिगा पलँगा तहँ ऊदन का ❀ लेटे तहाँ बनाफरराय ॥
उबटन लाग्यो भल हल्दी का ❀ पीली देह परै दिखराय ।
भोजन कमती कैदिन खायो ❀ तासों बदन गयो कुम्हिलाय ॥
करिकै सूरति बीमरिहा कै ❀ बोला उदयसिंह सरदार ।
बात बनावो परिमालिक ते ❀ तौ रहि जावै धर्म हमार ॥
गंगा कीन्ही हम फुलवा सँग ❀ तुम्हरो ब्याह करब ह्याँ आय ।
टरै प्रतिज्ञा जो क्षत्री कै ❀ तौ फिरि जहरखाय मरिजाय ॥
मित्र साँकरो फिरि ऐसो अब ❀ परिहै बार बार नहिं आय ।
इतना सुनिकै देबा चलिभा ❀ पहुँचा जहाँ चँदेलोराय ॥
सूरति दीख्यो जब देबा की ❀ भा मन खुशी रजा परिमाल ।
हाथ जोरिकै देबा बोल्यो ❀ औ ऊदन के कह्यो हवाल ॥
लगीं चुरैलै नरवरगढ़ में ❀ ऊदन ह्वैगे हाल बिहाल ।
रुपिया पैसा सब खर्चा भे ❀ रहिगा कछू नहीं नरपाल ॥
कीरतिसागर तम्बू भीतर ❀ ब्याकुल परा लहुरवा भाय ।
इतना सुनिकै परिमालिक जी ❀ तुरतै गये सनाका खाय ॥
लिखिकै पाती आल्हा जी को ❀ तुरतै धावन लीन बुलाय ।
दैकै पाती फिरि धावन को ❀ बाकी हाल कह्यो समुझाय ॥
लैकै पाती धावन चलिभा ❀ दशहरिपुरै पहूँचा जाय ।
दीन्ह्यो पाती जब आल्हा को ❀ बाँचा आंकु आंकु निरताय ॥
पढ़िकै पाती आल्हा ठाकुर ❀ तुरतै हाथी लीन मँगाय ।

चढ़िकै हाथी आल्हा चलिभे ❀ मनमाँ सुमिरि शारदा माय ॥
कीरतिसागर पर पहुँचत भा ❀ यहु रणबाघु बनाफरराय ।
चढ़े पालकी परिमालिक जी ❀ सोऊ अटे वहाँ पर जाय ॥
पौढ़ा पलँगा पर बघऊदन ❀ पागल बना बनाफरराय ।
देखि सनाका परिमालिक भे ❀ मनमाँ बार बार पछिताय ॥
ऊदन ऊदन कै गोहरायो ❀ आल्हा बैठि पलँग पर जाय ।
जब नहिं बोले बघऊदन हैं ❀ आल्हा बोले बचन रिसाय ॥
तुमहीं पठयो है ऊदन को ❀ साँची सुनो चँदेलेराय ।
जो कछु जीका यहिके होइहै ❀ मोहबा तुरत द्याब फुकवाय ॥
बोलि न आवा परिमालिक ते ❀ हाँ अरु हूँव बन्दभा भाय ।
ऊदन ऊदन कै गोहरायो ❀ बारम्बार चँदेलेराय ॥
तबहूँ ऊदन कछु बोले ना ❀ आल्हा बहुत गये घबड़ाय ।
उठिकै चुप्पे चढ़ि हाथी माँ ❀ दशहरिपुरै पहूँचे आय ॥
हाल बतायो सब सुनवाँ को ❀ सुनतै गई सनाका खाय ।
सोचन लागी अपने मनमाँ ❀ साँची बात गई जिय आय ॥
आँखि लागिगै तहँ फुलवा कै ❀ ब्याकुल भये लहुरवा भाय ।
पूरि गवाही मन यह दीन्ह्यो ❀ साँची ठीक लीन ठहराय ॥
यहै सोचिकै सुनवाँ बोली ❀ लीजै ऊदन यहाँ बुलाय ।
करब दवाई हम ऊदन कै ❀ नीको होय बनाफरराय ॥
यह मन भाय गई आल्हा के ❀ तुरतै पलकी दीन पठाय ।
सौंपिकै देवा को ऊदन का ❀ औ चलि भयो चँदेलेराय ॥
खबरि फैलिगै यह मोहबे माँ ❀ ब्याकुल उदयसिंह सरदार ।
जितनी रानी परिमालिक की ❀ रोईं छाँड़ि सबै डिडकार ॥
जितनी रय्यत रह मोहबे की ❀ कीरतिसागर चली बिहाल ।

जायकै देखैं जब ऊदन को ❀ रोवैं तहाँ बृद्ध औ बाल ॥
गई पालकी जब आल्हा की ❀ चकरन जाय कहा सब हाल।
सुनवाँ भौजी ने बुलवायो ❀ चलिये देशराज के लाल ॥
हमसोंफिरिफिरियहसमुझायो ❀ आवैं यहाँ लहुरवा भाय।
करब दवाई हम नीकी बिधि ❀ चंगे होयँ बनाफरराय ॥
सुनिकै बातैं ये चकरन की ❀ ऊदन ठीक लीन ठहराय।
हाल बतावब जो भौजी ते ❀ ह्वैहैं काम सिद्ध तहँ जाय ॥
यहै सोचिकै मन अपने माँ ❀ पलकी चढ़ा लहुरवा भाय।
चारि कहरवा हुँकरत चलिभे ❀ दशहरिपुरै पहूँचे आय ॥
उतरि पालकी ते भुइँ आवा ❀ धावलि देखि गई घबड़ाय।
रानी सुनवाँ तहँ चलि आई ❀ औ कर गहिकै गई लिवाय ॥
जायकै पहुँची निजमहलन में ❀ पलँगा उपर दीन बैठाय।
पूँछन लागी बघऊदन ते ❀ साँचे हाल देउ बतलाय ॥
आँखि लागिगै का फुलवा कै ❀ धावर बिकल भयो अधिकाय।
सुनिकै बातैं ये भौजी की ❀ बोला तुरत बनाफरराय ॥
जैसे साँची तुम पुछती हौ ❀ तैसे साँच देयँ बतलाय।
किरिया कीन्ही हम फुलवा ते ❀ भौंरी करब तुम्हारी आय ॥
काह बतावैं हम भौजी ते ❀ ना कछु सूझा और उपाय।
तब बौराहा बनिकै आयन ❀ तुम ते साँच दीन बतलाय ॥
इतना सुनिकै सुनवाँ बोली ❀ साँची सुनो लहुरवा भाय।
काठक घोड़ा बाण अजीता ❀ उनघर सेल शनीचर आय ॥
कैसे किरिया तुम कै लीन्ही ❀ देवर भूल भई अधिकाय।
तेहिते चुप्पे घर माँ बैठो ❀ मानो कही बनाफरराय ॥
वैसी फुलवा लाखन मिलिहैं ❀ भाषन साँच लहुरवा भाय।

यह नहिं आई मन ऊदन के ❀ सुनतैबदनगयो कुम्हिलाय ॥
जब रुख दीख्यो यह ऊदन का ❀ सुनवाँ चली महल ते धाय ।
जायकै पहुँची आल्हा ढिगमाँ ❀ औ सबहाल कहा समुझाय ॥
सुनिकै बोले आल्हा ठाकुर ❀ तिरिया काह गई बौराय ।
बेढब राजा है नरवर का ❀ तहँ शिर कौन कटावै जाय ॥
इतना सुनिकै सुनवाँ बोली ❀ क्षत्री पूत बनाफरराय ।
तुमका बातैं ये छाजैं ना ❀ कन्ता बार बार बलि जायँ ॥
इतना सुनिकै आल्हा बोले ❀ तिरिया बिना बुद्धिकी आय ।
नाहक हिंसा हम करिहैं ना ❀ मरिहैं जीव जन्तुअधिकाय ॥
इतना सुनिकै सुनवाँ बोली ❀ दोऊ हाथ जोरि शिर नाय ।
यह नहिं हिंसा है क्षत्री कै ❀ कीन्हेनि युद्धकृष्णयदुराय ॥
सोलह सहस आठ कन्यन को ❀ लड़िकै लीन कृष्ण महराज ।
तिनकी बहिनी के पति अर्जुन ❀ कीन्हेनि युद्ध द्रौपदीकाज ॥
धर्म धुरंधर भीषम ह्वैगे ❀ लड़िगे काशिराज घरजाय ।
अम्बा अम्बे अम्बालिका को ❀ लायेजीति नृपन समुदाय ॥
पै कछु हिंसा तिन मानी ना ❀ जानैं धर्म कर्म अधिकाय ।
पढ़िकै भूल्यो तुम महराजा ❀ कीयहिअवसरगयो डेराय ॥
लड़नो मरनो समरभूमि में ❀ यह ही क्षत्री को बयपार ।
लहँगा लुगरा हमरो पहिरो ❀ अपनी देउ ढाल तलवार ॥
मैं चढ़ि जाऊँ नरवरगढ़ को ❀ ब्याहूँ जाय लहुरवा भाय ।
किरिया कीन्ही बघऊदन ने ❀ भौंरी करब यहाँ पर आय ॥
झूँठी किरिया जो ह्वै जैहै ❀ तौ मरिजाय जहरकोखाय ।
ऐसो वैसो बघऊदन ना ❀ गंगा झूँठ उलीचै जाय ॥
उदय दिवाकर हों पश्चिम में ❀ चन्दा चहौ रसातल जाय ।

सोंकि समुन्दर चहु महि लेवै ❀ बिल्ली लड़ै सिंह सों आय ॥
ये अनहोनी चहु ह्वै जावैं ❀ झूँठ न कहै लहुरवा भाय।
इतना सुनिकै आल्हा बोले ❀ अब तू चुप्प साधि रहि जाय॥
टरिजा टरिजा री सम्मुख ते ❀ काहे बार बार बर्राय।
ब्याहन जैबे हम नरवर में ❀ तहदिल होयँ बनाफरराय॥
इतना सुनिकै सुनवाँ चलि भै ❀ आल्हा रुपना लीन बुलाय।
लिखिकै चिट्ठी मलखाने को ❀ सिरसा तुरत दीन पठवाय॥
खबरि पायकै मलखे ठाकुर ❀ दशहरिपुरै पहूँचे आय।
हाथ जोरिकै द्वउ आल्हा के ❀ बोले चरणन शीश नवाय॥
काह आज्ञा है दादा कै ❀ जो सेवक का लीन बुलाय।
सुनिकै बातैं मलखाने की ❀ आल्हा हाल कहा समुझाय॥
घोड़ खरीदन गे काबुल को ❀ नरवर नैन खरीद्यनि जाय।
बनि बौराहा ऊदन बैठे ❀ चलिये ब्याह करन अब भाय॥
बड़ी खुशाली भै मलखे के ❀ बोले हाथ जोरि शिरनाय।
न्यवत पठावो सब राजन को ❀ दादा भली बनी यह आय॥
इतना सुनिकै आल्हा ठाकुर ❀ तुरतै धावन लीन बुलाय।
पाती लिखिकै सब राजन को ❀ तुरतै न्यवत दीन पठवाय॥
यक हरिकारा गा झुन्नागढ़ ❀ यक नैनागढ़ दीन पठाय।
यक हरिकारा गा बौरीगढ़ ❀ दिल्ली एक पहूँचा जाय॥
उरई कनवज सिरसा मोहबे ❀ सबते न्यवत दीन पठवाय।
खबरि पायकै सब राजागण ❀ दशहरिपुरै पहूँचे आय॥
कीनि खातिरी सबकै आल्हा ❀ डंका तुरत दीन बजवाय।
बाजे डंका अहतंका के ❀ हाहाकार शब्द गा छाय॥
द्यावलिबोली फिरि आल्हा ते ❀ मानो कही बनाफरराय।

रीती भाँती मल्हना करिहै ❀ पाल्यो बारे दूध पिलाय ॥
कौन हितैषी है मल्हना सम ❀ ह्याँते कूच देउ करवाय ।
सुनिकै बातैं ये माता की ❀ आल्हा कूच दीन करवाय ॥
कीरतिसागर मदनताल पर ❀ डेरा गड़े नृपन के आय ।
आल्हा ऊदन मलखे सुलखे ❀ मल्हना महल पहूँचे जाय ॥
द्यावलि बिरमा सुनवाँ आदिक ❀ येऊ गईं तहाँ पर आय ।
बड़ी खुशाली भै मल्हना के ❀ हमरे बूत कही ना जाय ॥
चूड़ामणि पण्डित को तुरतै ❀ आल्हा लीन तहाँ बुलवाय ।
तेल कि साइति सो बतलायो ❀ सुबरण कलश लीन मँगवाय ॥
घृतको दीपक धरि कलशा पर ❀ चौकी तहाँ दीन डरवाय ।
ऊदन बैठे फिरि चौकी पर ❀ मनमें सुमिरि शारदा माय ॥
एक कुमारी तेल चढ़ावै ❀ गावन लगीं तहाँ सब गीत ।
आई बिरिया फिरि नहखुर की ❀ पगिया धरी शीश पर पीत ॥
कङ्कण बांधा गा हाथे माँ ❀ शिर पर मौर दीन धरवाय ।
ब्याहके कपड़ा फिरिपहिरायो ❀ पलकी तुरत लीन मँगवाय ॥
सुमिरि भवानी मइहरवाली ❀ पलकी बैठ बनाफरराय ।
बेटी बैठी चन्द्रावलि तहँ ❀ राई लोन उतारति जाय ॥
चली पालकी बघऊदन की ❀ कुँवना पास पहूँची आय ।
इन्द्रसेन चन्द्रावलि दुलहा ❀ सो कुँवना पर गयो लिवाय ॥
रानी मल्हना त्यहि समया में ❀ दीन्ह्यो कुँवाँ पैर लटकाय ।
पहिली भाँवरि के घूमत खन ❀ ऊदन लीन्ह्यो पैर उठाय ॥
प्राणनेग मैं तुमको दीन्हे ❀ माता काढ़ु पैर हरषाय ।
याविधि कहिकै सातों भाँवरि ❀ घूमे तहाँ बनाफरराय ॥
बैठे पलकी फिरि बघऊदन ❀ आल्हा नेग दीन चुकवाय ।

भये अयाचक सब याचकगण ❀ जयजयकार रहे तहँ गाय ॥
कूच के डंका बाजन लागे ❀ घूमन लागे लाल निशान ।
बैठे हाथी आल्हा ठाकुर ❀ करिकै रामचन्द्र को ध्यान ॥
मलखे सुलखे देबा ब्रह्मा ❀ मन्नागूजर भयो तयार ।
औरो राजा न्योते आये ❀ तिनहुन बाँधिलीनहथियार॥
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❀ बाँके घोड़न भे असवार ।
कूच कराय दयो मोहबे ते ❀ चलिभे सबै शूर सरदार ॥
खर खर खर खर के रथ दौरे ❀ चह चह धुरी रहीं चिल्लाय ।
चलिभैं फौजैं दल बादल सों ❀ शोभा कही बूत ना जाय ॥
झम्झम् झम्झम् झीलम बोलैं ❀ मर्मर होयँ गैंड़ की ढाल ।
मारु मारु कै मोहरि बाजैं ❀ बाजैं हाव हाव करनाल ॥
छाय अँधेरिया गै मारग में ❀ छिपिगे अन्धकार सों भान ।
को गति बरणै शहजाद्यन कै ❀ एकते एक रूप गुणखान ॥
तेगा लीन्हे बर्दबान के ❀ कोता खानी लिहे कटार ।
यक यक भाला दुइ दुइ बरछी ❀ कम्मर परी एक तलवार ॥
आठ रोज का धावा करिकै ❀ नरवर पास गये नगच्याय ।
पाँच कोस जब नरवर रहिगा ❀ मलखे डेरा दीन डराय ॥
ऊंची टिकुरिन तम्बू गड़िगे ❀ नीचे लागीं खूब बजार ।
हौदा उतरे तहँ हाथिन के ❀ चत्रिन छोरि धरा हथियार ॥
जहँना तम्बू है आल्हा का ❀ तहँना लाग खूब दरबार ।
चूड़ामणि पण्डित तहँ बैठे ❀ साइति लागे करन बिचार ॥
ऐपनवारी की साइति है ❀ पण्डित कहा सुनो मलखान ।
मलखे बोले तब रुपना ते ❀ हमरे करो बचन परमान ॥
ऐपनवारी बारी लैकै ❀ नरपति द्वार देउ पहुँचाय ।

इतना सुनिकै रूपन बोले ❀ दोऊ हाथ जोरि शिर नाय ॥
ऐपनवारी बारी लैकै ❀ दूसर जाय आज महराज ।
नैना झुन्ना औ दिल्ली में ❀ कीन्हे हमीं अकेले काज ॥
मूड़ कटावन हम जैबे ना ❀ मानो कही बीर मलखान ।
इतना सुनिकै मलखे बोले ❀ हारी बात कहौ तुम ज्वान ॥
गदका बाना पटा बनेठी ❀ अइ हैं कौन दिवस ये काज ।
पहिले मुर्चा तुमहीं कैकै ❀ राख्यो देश देश में लाज ॥
उदन बियाहे का रहिहैं ना ❀ बतियाँ कहिबे का रहिजायँ ।
यहुदिनमिलिहैफिरिकबहूँना ❀ तातेसोचि समझि बतलाय ॥
इतना सुनिकै रूपन बोला ❀ ठाकुर सिरसा के सरदार ।
घोड़ बेंदुला हमको देवो ❀ ऊदन केरि देउ तलवार ॥
घोड़ बेंदुला को मँगवायो ❀ औ दैदीन ढाल तलवार ।
ऐपनवारी बारी लैकै ❀ बेंदुल उपर भयो असवार ॥
एँड़ा मसक्यो जब बेंदुल के ❀ तुरतै चला हवा की चाल ।
राजा नरपति के द्वारे पर ❀ रूपनपहुँचि गयो ततकाल ॥
द्वारपाल ने तब ललकाख्यो ❀ नाहर घोड़े के असवार ।
कहाँ ते आयो औ कहँ जैहौ ❀ कहँ है देश शवरे क्यार ॥
इतना सुनिकै रूपन बोले ❀ तुम सुनि लेउ हमारो हाल ।
देश हमारो नगर मोहोबा ❀ जहँपर बसैं रजा परिमाल ॥
छोटो भइया जो आल्हा को ❀ बेटा देशराज को लाल ।
क्वारी कन्या जो नरपति कै ❀ ब्याहनआये रजा परिमाल ॥
ऐपनवारी हम लै आये ❀ रूपन वारी नाम हमार ।
खबरि जनावो तुम राजा को ❀ बारी खड़ा तुम्हारे द्वार ॥
नेग आपने को झगरत है ❀ सो अब पठै देयँ सरदार ।

इतना सुनिकै द्वारपाल कह ❀ बारी घोड़े के असवार ॥
नेग बतावो तुम द्वारे का ❀ राजै स्वऊ सुनावैं जाय ।
इतना सुनिकै रूपन बोला ❀ तुमसों साँच देयँ बतलाय ॥
चार घरीभर चलै सिरोही ❀ द्वारे बहै रक्त की धार ।
नेग हमारो यह साँचा है ❀ याँचा आय तुम्हारे द्वार ॥
सुनिकै बातैं ये रूपन की ❀ बोला द्वारपाल ततकाल ।
पीकै दारू द्वारे आये ❀ टेढ़ी बात कहै मतवाल ॥
टरिजा टरिजा अब द्वारे ते ❀ ओ मतवाले जाति गँवार ।
असगतिनाहीं क्यहु राजा की ❀ द्वारे करै आय तलवार ॥
काल गाल माँ तू बैठा है ❀ मानै साँच बात यहि बार ।
हवा खायकै ठंढे ह्वैकै ❀ बोलै घोड़े के असवार ॥
इतना सुनिकै रूपन बोला ❀ गरुई हाँक दीन ललकार ।
हाथ सिपाही पर डारैं ना ❀ जबलग मिलैं ढूंढ़ि सरदार ॥
हमका जानैं दिल्लीवाले ❀ जिनके द्वार कीन तलवार ।
झुन्नागढ़ औ नैनागढ़ में ❀ द्वारे बही रक्त की धार ॥
चारि रुपल्ली का नौकर तू ❀ टिलटिलटिलटिल रहामचाय ।
इतना सुनिकै द्वारपाल चलि ❀ राजै खबरि सुनाई जाय ॥
जितनी गाथा रूपन बोले ❀ गा सो यथातथ्य सब गाय ।
सुनिकै बातैं द्वारपाल की ❀ नरपति तुरतै उठा रिसाय ॥
हुकुम लगायो मकरन्दा ते ❀ बारी पकरि दिखावै आय ।
बिजयसिंह बिजहट को राजा ❀ मकरँदसाथ चला रिसियाय ॥
द्वारे दीख्यो जब रूपन को ❀ गरुई हाँक दीन ललकार ।
खबरदार हो खबरदार हो ❀ बारी घोड़े के असवार ॥
काल गाल माँ तू बैठा है ❀ अबहीं जान चहत यमद्वार ।

इतना सुनिकै बिजयसिंह ने ❀ अपनी खैंचि लई तलवार ॥
खैंचि सिरोही रूपन लीन्ह्यो ❀ द्वारे होन लगी तब मार ।
अगल बगल में बेंदुल मारै ❀ रूपन खूब कीन तलवार ॥
घायल ह्वैगे बिजयसिंह जब ❀ तब सब बढ़े लड़ैया ज्वान ।
दाँतन काटै टापन मारै ❀ बेंदुल खूब कीन मैदान ॥
को गति बरणै तहँ रूपन कै ❀ दोऊ हाथ करै तलवार ।
रंग बिरंगे क्षत्री ह्वैगे ❀ मानो होली ख्यलैं गँवार ॥
कितन्यों क्षत्री घायल ह्वैगे ❀ कितन्यों गिरिगे खाय पछार ।
मूड़न केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार ॥
बड़ी लड़ाई भै रूपन ते ❀ द्वारे बही रक्त की धार ।
देखि तमाशा त्यहि बारी का ❀ क्षत्री गये मनै मन हार ॥
एँड़ा मसक्यो फिरि बेंदुल के ❀ फाटक पार पहूँचा जाय ।
मारो मारो हल्ला कैकै ❀ क्षत्री चले पछारी धाय ॥
रूपन पहुँचा त्यहि तम्बू में ❀ जहँपर बैठि बनाफरराय ।
जितने क्षत्री नरवरगढ़ के ❀ आये लौटि सबै खिसियाय ॥
जितनी गाथा रह द्वारे की ❀ रूपन यथातथ्य गा गाय ।
रूपन बारी की बातैं सुनि ❀ भे मन खुशी बनाफरराय ॥
खेत छूटिगा दिननायक सों ❀ झंडा गड़ा निशा को आय ।
तारागण सब चमकन लागे ❀ संतन धुनी दीन परचाय ॥
माथ नवावों पितु अपने को ❀ ह्याँ ते करों तरँग को अन्त ।
राम रमा मिलि दर्शन देवैं ❀ माँगों यही भवानीकन्त ॥
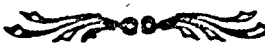
ऊदल के ब्याह की पहली लड़ाई

सवैया

दीनदयाल कृपाल भुवाल तुम्हीं सब काल करो रखवारी।
मारीच सुबाहु सुरा सुरनाहु तुम्हीं पल एकहि में संहारी॥
बालि बली खरदूषण रावण आप हन्यो सब को धनुधारी।
काम औ क्रोध औ लोभ हटाय करो ललिते रघुनाथ सुखारी॥

सुमिरन

दोउ पद बन्दौं भरतलाल के ❀ जिनसम धन्यजगतकोआन।
बड़े पियारे रघुनन्दन के ❀ इनयश बालमीकि करगान॥
भायप निबह्यो जस भारत जग ❀ आरत भये राम सों जाय।
राज्य न लीन्ही रघुनन्दन जब ❀ आपौ कीन योग घर आय॥
सब जग ध्यावै रघुनन्दन को ❀ रघुबर करैं भरत को याद।
रघुबर लछिमन भरत शत्रुहन ❀ चहु ज्यहि भजैं छांड़िकै बाद॥
जो ज्यहि भावै सो त्यहि ध्यावै ❀ आवै सबै आपने काज।
क्यहू न ध्यावै सो दुख पावै ❀ औ बड़ होवै तासु अकाज॥
हमरे सर्वोपरि एकै हैं ❀ स्वामी रामचन्द्र महराज।
तिन्हैं बिसारैं तौ दुख पावैं ❀ यह मन सदा हमारे राज॥
छूटि सुमिरनी गै रघुबर कै ❀ सुनिये नरवर केर हवाल।
ब्याह बखानैं उदयसिंह का ❀ लड़िहैं बड़े बड़े नरपाल॥

अथ कथाप्रसंग

नरपति राजा नरवरगढ़ का ❀ भारी लाग राजदरबार।
बैठे क्षत्री अलबेला तहँ ❀ एकते एक शूर सरदार॥
नरपति बोला मकरन्दा ते ❀ तुम सुत मानो कही हमार।
बड़े लड़ैया मोहबेवाले ❀ बारी भली कीन तलवार॥

काह तुम्हारे अब मनमाँ है ❁ हमते साँच देउ बतलाय।
हारि बचैहौ की लड़ि जैहौ ❁ तैसो जल्दी करौ उपाय॥
इतना सुनिकै मकरँद बोला ❁ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय।
हुकुम जो पावैं महराजा को ❁ सबको बांधि दिखावैं आय॥
सुनिकै बातैं मकरन्दा की ❁ राजै हुकुम दीन फरमाय।
तुरत नगड़ची को बुलवायो ❁ पुरमें डौंड़ी दीन पिटाय॥
हुकुम पायकै मकरन्दा का ❁ फौजैं होन लगीं तय्यार।
रण की मौहरि बाजन लागी ❁ रणका होन लाग ब्यवहार॥
बाजे डंका अहतंका के ❁ चत्री सबै भये हुशियार।
ढाढ़ी करखा बोलन लागे ❁ बिप्रन कीन बेद उच्चार॥
पहिल नगाड़ा में जिनबन्दी ❁ दुसरे बांधि लीन हथियार।
तिसर नगाड़ा के बाजत खन ❁ चत्री सबै भये तय्यार॥
मारु मारु करि मौहरि बाजी ❁ बाजी हाव हाव करनाल।
बैठ्यो घोड़ा पर मकरन्दा ❁ मनमें सुमिरि यशोदालाल॥
कूच करायो नरवरगढ़ ते ❁ पहुँच्यो समर भूमि मैदान।
गर्दा दीख्यो आसमान में ❁ बोल्यो यहाँ बीर मलखान॥
यहु दल आवत है नरपति का ❁ गर्दा छाय रही असमान।
सँभरो सँभरो ओ रजपूतौ ❁ हमरे करो बचन अब कान॥
इतना सुनिकै मोहबेवाले ❁ तुरतै बाँधि लीन हथियार।
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❁ बाँके घोड़न भे असवार॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातु की ❁ सो चरखिन में दीन चढ़ाय।
दुहूँ ओर ते गोला छूटे ❁ हाहाकार शब्द गा छाय॥
गोला लागै ज्यहि चत्री के ❁ आधे सरग लिहे मड़राय।
गोला लागै ज्यहि घोड़े के ❁ धुनकत तूल सरिस उड़ि जाय॥

गोला लागै ज्यहि हाथी के ❀ मानो गिरा धौरहर आय ।
गोला लागै ज्यहि सँड़िया के ❀ तुरतै गिरै भूमि अललाय ॥
जौने बैल के गोला लागै ❀ मानो मगर कुल्याचै खायँ ।
जौने रथमाँ गोला लागै ❀ ताके टूक टूक ह्वैजायँ ॥
बड़ी दुर्दशा भै तोपन में ❀ धुवना रहा सरग में छाय ।
दूनों दल आगे को बढ़िगे ❀ तोपन मारु बन्द ह्वैजाय ॥
उठीं बँदूखैं बादलपुर की ❀ जो नब्बे कै याक बिकाय ।
मघा के बूँदन गोली बरसैं ❀ झरसैं सबै शूर त्यहि घाय ॥
दूनों दल आगे को बढ़िगे ❀ रहिगा एक खेत मैदान ।
भाला बरछी तलवारिन का ❀ लाग्यो होन घोर घमसान ॥
अपन परावा कछु चीन्हैं ना ❀ मारैं एक एक को ज्वान ।
सूँढ़ि लपेटा हाथी भिड़िगे ❀ घोड़न भिरी रान में रान ॥
कउँधालपकनिबिजुलीचमकनि❀कहुँ कहुँ देखि परै तलवार ।
दूनों दिशिके रजपूतन ने ❀ कीन्ह्यो तहां भड़ाभड़ मार ॥
चलै कटारी बूँदी वाली ❀ ऊना चलै विलाइति क्यार ।
तेगा धमकै बर्दवान के ❀ कटि कटि गिरैं शूरसरदार ॥
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार ।
रुधिरकिसरितातहँबहिनिकरी❀ जूझे क्षत्री अमित अपार ॥
हाथी सोहैं त्यहि सरिता माँ ❀ छोटे द्वीपन के अनुमान ।
परे बछेड़ा त्यहि नदिया माँ ❀ तिनको नदी कगारा जान ॥
छुरी कटारी मछली ऐसी ❀ ढालैं कछुवा परैं दिखाय ।
बाहैं सेवरा जस नदिया माँ ❀ तैसे बहे बार तहँ जायँ ॥
नचैं योगिनी खप्पर लीन्हे ❀ मज्जैं भूत प्रेत बैताल ।
परीं लहासैं जो मनइन की ❀ तिनका खावैं श्वान शृगाल ॥

बड़ी सनेही नरदेही में ❀ कहुँ कहुँ चढ़े काक खग जायँ।
नदी नेवारा जस नर ख्यालैं ❀ तैसे काक कंक गति भाय॥
को गति बरणै समरभूमि कै ❀ हमरे बूत कही ना जाय।
जितने कायर रहैं फौजन में ❀ तर लोथिन के रहे लुकाय॥
हेला आवै जब हाथिन का ❀ तब बिन मरे मौत ह्वै जाय।
छाती धड़कै रण कायर कै ❀ सायर खुशी होय अधिकाय॥
परम पियारी जिनके नारी ❀ आरी भये समर में आय।
कीरति प्यारी जिन क्षत्रिन के ❀ सम्मुख सहैं खड्ग के घाय॥
मकरँद ठाकुर मलखाने का ❀ परिगा समर बरोबरि आय।
दोऊ मारैं दोउ ललकारैं ❀ दोऊ लेवैं वार बचाय॥
मकरँद बोले मलखाने ते ❀ ठाकुर लौटि धाम को जाय।
वार हमारी ते बचिहै ना ❀ नाहक फँसे समर में आय॥
सुनिकै बातैं मकरन्दा की ❀ बोला बच्छराज को लाल।
बहिनि बियाहे तौ बचि जइहै ❀ नाहीं परे काल के गाल॥
ज्यहिकी बिटिया सुन्दरि धावै ❀ त्यहि पर चढ़ै बीर मलखान।
बिना बियाहे घर नहिं जावै ❀ तजिकै कबौं समर मैदान॥
इतना सुनतै मकरँद ठाकुर ❀ तुरतै खैंचि लीनि तलवार।
ऐंचिकै मारा मलखाने को ❀ मलखे लीन ढाल पर वार॥
सुमिरि भवानी शिवशङ्कर को ❀ मारी साँग बीर मलखान।
मूड़ बिसानी सो घोड़ा के ❀ घोड़ा भाग्यो लिहे परान॥

सवैया

भागि गयो मकरन्द तवै अरु जाय कै धाम में वेगि विराजा।
काठक घोड़ औ सेल शनीचर वाण अजीत लियो जय काजा॥
मालिनि धाम गयो फिरि धाय बुलाय चल्यो रण साजि समाजा।

आय गयो रण खेतन में ललिते मकरन्द बली फिरि गाजा ॥
मालिनि डारि मशान दियो अरु आपहु सेलशनीचर लीन्ह्यो।
काठक घोड़ उड़्यो रण ऊपर घायल आय कबूतरि कीन्ह्यो॥
बाण अजीत चलाय तहाँ औ सबै बिधि फौज शिकस्तहि दीन्ह्यो।
जादुक खेल तहाँ ललिते रण भीषम पुत्र भली बिधि चीन्ह्यो॥
घायल घोड़ी भै मलखे कै ❀ फौज ते तुरत गये अलगाय।
जे थे नेवतहरी आल्हा के ❀ मकरँद कैद लीन करवाय॥
देबा पहुँचा फिरि तम्बू में ❀ जहँ पर रहैं बनाफरराय।
आल्हा ठाकुर के सम्मुख में ❀ देबा यथातथ्य गा गाय॥
सुनि कै बातैं सब देबा की ❀ आल्हा गये सनाका खाय।
डाटि कै बोल्यो बघऊदन ते ❀ तुम सुनिलेउ लहुरवा भाय॥
नाशि करायो तुम नरवर में ❀ हमरे गई प्राण पर आय।
जे व्यवहारी हमरे आये ❀ सब कउ परे कैद में जाय॥
भयो हँसौवा नरवरगढ़ में ❀ मोहबे काह बतैहौ जाय।
घायल घोड़ी भै मलखे कै ❀ सो त्यहि प्राण सरिस है भाय॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ दादा काह गयो घबड़ाय।
काह हकीकति मकरन्दा कै ❀ सबकी कैद देउँ छुड़वाय॥
माथनवायो फिरि आल्हा को ❀ बेंदुल उपर भयो असवार।
सुमिरण करिकै जगदम्बा को ❀ अपनी लई ढाल तलवार॥
ऊदन पहुँचे फिरि मुर्चा पर ❀ गरुई हाँक दीन ललकार।
आवो आवो मकरँद ठाकुर ❀ हमरे साथ करौ तलवार॥
इतना सुनिकै मकरँद लौटा ❀ सेना लौटि परी ततकाल।
मारन लाग्यो सरदारन को ❀ रणमाँ देशराज के लाल॥
जौने हौदा ऊदन ताकैं ❀ बेंदुल तहाँ पहूँचै जाय।

ऊदन मारैं तलवारी सों ❀ बेंदुल हनैं टाप के घाय॥
यकइस हाथी असवारन को ❀ ऊदन दीन्ह्यो तुरत सुलाय।
ऊदन ठाकुर के मुर्चा पर ❀ कउ रजपूत न रोकै पाँय॥
देखि बीरता बघऊदन की ❀ मकरँद दौरा गुर्ज उठाय।
यह गति दीख्यो मकरन्दा कै ❀ हिरिया बोली शीशनवाय॥
हमका लाये तुम काहे को ❀ जो अब दौरे गुर्ज उठाय।
जादू डारों बङ्गाले की ❀ इनकी कैद लेउ करवाय॥
इतनाकहिकैहिरियामालिनि ❀ औ ऊदन पर डरा मशान।
मकरँद ठाकुर त्यहि समया में ❀ तुरतै बांधि लीन तहँ आन॥
गा हरकारा तब आल्हा ढिग ❀ औ रण हाल बतावा जाय।
आल्हा बोले तब देबा ते ❀ तुम इन्दल का लवो बुलाय॥
इतना सुनतै देबा ठाकुर ❀ अपने घोड़ भयो असवार।
माथ नवायो सो आल्हा को ❀ अपनी लई ढाल तलवार॥
देबा चलिभा ह्याँ तम्बू ते ❀ दशहरिपुरै पहुँचा जाय।
जीति के डंका बाजन लागे ❀ मकरँद कूच दीन करवाय॥
बड़ी खुशाली नरपतिकीन्ह्यो ❀ हिरियै द्रव्यदियो अधिकाय।
देबा भेंटा ह्याँ सुनवाँ को ❀ सखियाँ हालगयो फिरिगाय॥
देबा भेंटा फिरि द्यावलि को ❀ दोऊ चरणन शीश नवाय।
कही हकीकति सब नरवर की ❀ देवलि गिरी मूर्च्छा खाय॥
कैदी ह्वैगे बघऊदन जो ❀ पकरे गये सबै सरदार।
मोहिं अभागिनि के बेड़ा को ❀ अबयों कौन लगावै पार॥
इतना देवलि के कहतै खन ❀ इन्दल तहाँ पहूँचा आय।
हाथ जोरिकै सो देबा के ❀ बोल्यो चरणन शीश नवाय॥
कही हकीकति तुम चाचाकी ❀ नरवर हाल देउ बतलाय।

देबा बोला तहँ इन्दल ते ❀ बेटा कही बूत ना जाय ॥
हिरिया मालिनि की जादू ते ❀ पकरे गये उदयसिंह राय ।
जे ब्यवहारी तुम्हरे दिशि के ❀ मकरँद कैद लीन करवाय ॥
घोड़ी जखमी भै मलखे कै ❀ आल्हा पठयो तुम्हैं बुलाय ।
इतना सुनिकै इन्दल बोले ❀ सबकी कैद देउँ छुड़वाय ॥
हुकुम जो पावों महतारी को ❀ दादा चरण बिलोकों जाय ।
काह हकीकति है मालिनि कै ❀ सम्मुख लड़ै हमारे आय ॥
इतना सुनिकै सुनवाँ बोली ❀ बेटै बार बार समुझाय ।
पिता आज्ञा रघुनन्दन करि ❀ चौदह बर्ष रहे बन जाय ॥
कौन सिखाई सुत अपने को ❀ तुम ना करो पिता के बैन ।
कही न मानैं पितु अपने की ❀ तेई गिरैं नरक के ऐन ॥
जैसे देवता पति नारी को ❀ तैसे पिता पुत्र को देव ।
नीके जानैं धर्मशास्त्र जे ❀ ते नित करैं पिता की सेव ॥
तेई सपूते नर बाजत हैं ❀ जिनकेपिताबचनबिश्वास ।
कौन भरोसा नरदेही का ❀कलियुगकौनजियनकीआस॥
पिता हितैषी जग सबको है ❀ अपनो हुनर देय बतलाय ।
रहै लालसा पितु उर माहीं ❀ हमसों पुत्र होय अधिकाय ॥
जे नहिं मानैं पितु अपने को ❀ तेई नीच जगत में भाय ।
येई कुलीने अकुलीने के ❀ लच्चण साफ परैं दिखलाय ॥
निन्दक होवै रघुनन्दन को ❀ तासों कौन हमारो नात ।
नेही गेही नरदेही का ❀ जग में साँचो राम लखात ॥

ऊदल के ब्याह की दूसरी लड़ाई

इतना सुनिकै इन्दल ठाकुर ❀ देवी चरण शरण गा धाय ।

बिनय सुनाई भल देवी को ❀ पढ़िपढ़ि बेदऋचनकोभाय ॥
बरंबूहि मैं तब मठिया ते ❀ इन्दल बोल्यो शीश नवाय ।
बिजय हमारी नरवर होवै ❀ तुम सुनि लेउ शारदा माय ॥
एवमस्तु भा फिरि मठिया माँ ❀ इन्दल चलिभा शीशनवाय ।
आयसु माँग्यो फिरि माता ते ❀ सुनवाँलीन्ह्योहृदयलगाय ॥
यन्त्र बाँधिकै भुजदण्डन में ❀ मस्तक रुचना दियोलगाय ।
पढ़ि पढ़ि रक्षा के मन्त्रन को ❀ भूली जादू दीन बताय ॥
घोड़ करिलिया आल्हावाला ❀ इन्दल तुरत लीन कसवाय ।
बिदा माँगिकै महतारी सों ❀ देबा साथ चले हरषाय ॥
देवी चलिकै मठ भीतर सों ❀ नरवरगढ़ै पहूँची आय ।
काठक घोड़ा बाण अजीता ❀ लीन्ह्योसेल शनीचर जाय ॥
किरपा करिकै जगदम्बा तहँ ❀ चेतन कीन फौज को जाय ।
इन्दल पहुँचे जब तम्बू में ❀ आल्हा लीन्ह्योगोदबिठाय ॥
चूम्यो चाट्यो हृदय लगायो ❀ औ सब दीन्ह्यो कथासुनाय ।
इन्दल बोल्यो तब आल्हा ते ❀ दादा सत्य देयँ बतलाय ॥
करो तयारी अब नरवर की ❀ सबकी कैद लेयँ छुड़वाय ।
ठाढ़ो हाथी पचशब्दा था ❀ आल्हा तुरत लीन सजवाय ॥
बैठे हाथी आल्हा ठाकुर ❀ इन्दल तुरत भये तय्यार ।
बैठ कबुतरी पर मलखाने ❀ देबा भयो घोड़ असवार ॥
मारु मारु करि मौहरि बाजी ❀ बाजी हाव हाव करनाल ।
खर खर खर खर कै रथ दौरे ❀ रब्बा चले पवन की चाल ॥
कूच कराये आल्हा ठाकुर ❀ नरवरगढ़ै चले ततकाल ।
कउ कउ घोड़ा हिरन चाल पर ❀ कउ कउ चलैं मोर की चाल ॥
कउ कउ घोड़ा हंस चाल पर ❀ कउ कउ सरपट रहे भगाय ।

कदम चाल पर कोऊ घोड़ा ❀ केहू टाप न परै सुनाय ॥
या बिध छैला अलबेला सब ❀ पहुँचे समरभूमि में जाय ।
गा हरिकारा तब नरवर में ❀ राजै खबरि दीन बतलाय ॥
गाफिल बैठे का महराजा ❀ शिर पर फौज पहूँची आय ।
सुनिकै बातैं हरिकारा की ❀ राजा गये सनाका खाय ॥
आज्ञा दीन्ह्यो मकरन्दा को ❀ जावो समरभूमि तुम धाय ।
इतना सुनतै मकरँद चलिभा ❀ तुरतै राजै शीश नवाय ॥
बाण अजीता सेल शनीचर ❀ ढूँढ्यो घोड़ काठ को जाय ।
पता न पायो इन काहू का ❀ लाग्यो बार बार पछिताय ॥
हिरिया मालिनि के घर पहुँचा ❀ लीन्ह्यो ताको संग लिवाय ।
चलि मकरन्दा भा नरवर ते ❀ पहुँचा समरभूमि में आय ॥
आगे घोड़ा मकरन्दा का ❀ पाछे सकल सेनसमुदाय ।
ऐसी आगे इन्दल ठाकुर ❀ पहुँच्यो समरभूमि में आय ॥
इन्दल बोल्यो मकरन्दा ते ❀ मामा काहू गयो बौराय ।
भाँवरि कैद्यो म्वरे चाचा की ❀ चाची घरै देव पठवाय ॥
जीति न पैहौ कुल पूज्यन ते ❀ मामा साँच दीन बतलाय ।
सुनिकै बातैं ये इन्दल की ❀ मकरँद बोला बचन रिसाय ॥
सुनवाँ भौजी के बालक तुम ❀ इन्दल बेटा लगो हमार ।
समर जो करिहौ तुम फूफा ते ❀ जैहौ अवशि यमन के द्वार ॥
इतना कहिकै मकरँद ठाकुर ❀ तुरतै खैंचि लीन तलवार ।
रान रान सों घोड़ा भिड़िगे ❀ ऊँटन भिड़िगै ऊँट कतार ॥
सूँढ़ि लपेटा हाथी भिड़िगे ❀ अंकुश भिड़े महौतन क्यार ।
तेगा छूटे बर्दवान के ❀ कोताखानी चलीं कटार ॥
भाला बलछिन की मारुइ कहुँ ❀ कहुँ कहुँ कड़ाबीन की मार ।

चलैं भुजाली कहुँ कहुँ गहर ❀ कहुँकहुँ कठिनचलैंतलवार ॥
टूटे भाला बलछी साँहैं ❀ पै जस खेत बाजरे क्यार ।
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार ॥
बड़ी लड़ाई भै नरवर में ❀ मकरँद इन्दल के मैदान ।
बड़े लड़ैया दूनौ ठाकुर ❀ रणमाँ करैं घोर घमसान ॥
मकरँद बोला तहँ हिरिया ते ❀ यहि पर छाँड़ो घोर मशान ।
इतना सुनतै इन्दल ठाकुर ❀ हिरिया पास पहूँचा ज्वान ॥
पकरि कैजूरा त्यहिहिरियाको ❀ इन्दल काटि लीन ततकाल ।
जादू झूठी भईं हिरिया की ❀ तुरतै ह्वैगै हाल बिहाल ॥
देखि दुर्दशा यह हिरिया कै ❀ मकरँद खैंचि लीन तलवार ।
ऐंचिकै मारा सो इन्दल के ❀ इन्दल लीन ढाल पर वार ॥
बचा दुलरुवा आल्हावाला ❀ त्यहिका राखिलीन भगवान ।
औ ललकारा मकरन्दा को ❀ मामा मौत आपनी जान ॥
ढाल कि औझरि इन्दल मारा ❀ मकरँद गिरा मूरछा खाय ।
उतरिकै घोड़ी ते मलखाने ❀ तुरतै मुशक लीन बँधवाय ॥
मकरँद बँधिगे समरभूमि में ❀ भगिगे सबै सिपाही ज्वान ।
कोउ न रहिगा त्यहि समयामें ❀ जो क्षण एक करै मैदान ॥
कूच करायो आल्हा ठाकुर ❀ तम्बुन फेरि पहूँचे आय ।
खबरि पायकै नरपति राजा ❀ तुरतै गयो सनाका खाय ॥
कछू न सूझी तब नरपति को ❀ अपने मंत्री लये बुलाय ।
मंत्र पूँछिकै तिन मंत्रिन सों ❀ आल्हा पास पहूँचे आय ॥
हाथ जोरिकै नरपति बोले ❀ मानो कही बनाफरराय ।
कैद छुड़ावो सुत हमरे की ❀ अपने शूर लेउ छुड़वाय ॥
बेटी ब्याहैं हम ऊदन को ❀ सुख सों लौटि मोहबे जाउ ।

दगा जो राखैं तुम्हरे सँग माँ ❀ खरपति कह्यो हमारो नाउँ ॥
सुनिकै बातैं ये नरपति की ❀ आल्हा मकरँद दीन छुड़ाय ।
जायकै छोंड़्यो राजा सबको ❀ तम्बू गयो यऊ सब आय ॥
साइति शोधी चूड़ामणि ने ❀ आल्हे खबरि दीन पहुँचाय ।
काल्हि सबेरे भौंरी ह्वैहैं ❀ नरपति खबरि गये यह पाय ॥
इतना सुनिकै माहिल चलिभा ❀ लिल्ली घोड़ी पर असवार ।
जायकै पहुँचा नरवरगढ़ में ❀ जहँ पर नरपति का दरबार ॥
बड़ी खातिरी राजा कीन्ह्यो ❀ अपने पास लीन बैठाय ।
माहिल बोले तहँ राजा ते ❀ मानो कही हमारी भाय ॥
शूर छिपावो तुम महलन में ❀ भौंरिन कटा देउ करवाय ।
जाति बनाफर की नीची है ❀ हल्ला देश देश अधिकाय ॥
पानी पीहै कोउ तुम्हरे ना ❀ मानो नरवर के महराज ।
पगिया अरुझी नहिं माहिलकै ❀ भावै तौन करो तुमकाज ॥
इतना कहिकै माहिल चलिभे ❀ तम्बुन फेरि पहुँचे आय ।
तैसे कीन्ह्यो नरपति राजा ❀ जैसे माहिल गये बताय ॥
माड़ो छायो मालिन तुरतै ❀ राजै खम्भ दीन गड़वाय ।
गऊ के गोबर आँगन लीप्यो ❀ बारिनि तुरत तहाँ पर आय ॥
चौक बनावन प्रोहित लाग्यो ❀ आई नगर सुहागिल धाय ।
ब्याह गीत सब गावन लागीं ❀ उत्सव देखि परै अधिकाय ॥
तब मकरन्दा को बुलवायो ❀ नरपति हाल कह्यो समुझाय ।
लैकै नेगी तुम चलि जावो ❀ घर के ठाकुर लवो बुलाय ॥
इतना सुनिकै मकरँद चलिभा ❀ नाई बारी सङ्ग लिवाय ।
जाय कै पहुँच्यो त्यहि तम्बू में ❀ जहँ पर बैठि बनाफरराय ॥
हाथ जोरि कै मकरँद बोल्यो ❀ जो कछु राजै दीन सिखाय ।

दशै आदमी भौंरिन आवैं ❀ यह जब सुन्यो बनाफरराय ॥
बिस्मय कीन्ह्यो आल्हा मनमाँ ❀ मकरँद फेरि कहा समुझाय ।
रारि करैया को तुमते है ❀ हमहूँलड़िभिड़िगयनअघाय॥
इतना सुनिकै मलखे बोले ❀ मानी बात तुम्हारी भाय ।
दशही चलि हैं अब भौंरिन में ❀ आल्है हुकुम दीन फर्माय ॥
मलखे सुलखे देबा आल्हा ❀ इन्दल तुरत भयो तय्यार ।
जोगा भोगा मन्ना ब्रह्मा ❀ जगनिक भैन चँदेले क्यार ॥
चढ़ि चढ़ि घोड़ा हाथिन ठाकुर ❀ मड़ये तर को भये तयार ।
सुमिरि शारदा मइहरवाली ❀ ऊदन पलकी भे असवार ॥
नरपति राजा के द्वारे पर ❀ पहुँचे तुरत बनाफरराय ।
मकरँद ठाकुर सब बीरन को ❀ घर के भीतर गयो लिवाय ॥
फाटकबन्दी करि नरपति ने ❀ कन्या तुरत लीन बुलवाय ।
वर औ कन्या इकठौरी में ❀ भौंरिन समयगयो तहँ आय॥
फुलवा ऊदन का गठिबन्धन ❀ नाइनि बारिनि दीन कराय ।
पग परछाल्यो नरपति राजा ❀ कन्यादान दीन हरषाय ॥
पहिली भाँवरि के परतै खन ❀ सबियाँ शूर गये तहँ आय ।
मारु मारु का हल्ला ह्वैगा ❀ येऊ उठे तड़ाका धाय ॥
आधे आँगन भाँवरि होवैं ❀ आधे चलन लागि तलवार ।
मारे मारे तलवारिन के ❀ आँगन वही रक्त की धार ॥
को गति वरणै रजपूतन कै ❀ मानैं नहीं नेकहू हार ।
ना मुँह फेरैं नरवरवाले ❀ ना ई मोहवे के सरदार ॥
बड़ी गचापच भै आँगन में ❀ मुण्डन लागे ऊँच पहार ।
जोगा भोगा दोनों भाई ❀ दोनों हाथ करैं तलवार ॥
बड़ा लड़ैया मकरँद ठाकुर ❀ आँगन भली मचाई रार ।

जीति न दीख्यो इन दशहू ते ❀ नरपति गयो हिये सों हार ॥
हाथ जोरिकै नरपति बोल्यो ❀ मानो कही बनाफरराय ।
पाजी लरिका मकरन्दा है ❀ ज्यहियहदीन्ह्योरारिमचाय॥
स्याबसिस्याबसितुमकाआल्हा ❀ काहे न बिजय होय सब काल ।
मलखे सुलखे जिनके भाई ❀ नामी बच्छराज के लाल ॥
मेल जोल भा दुहुँ तरफा ते ❀ ह्वैगै मारु बन्द त्यहि काल ।
सातों भाँवरि फुलवा सँग में ❀ घूमी देशराज के लाल ॥
राजा नरपति के महलन में ❀ तुरतै भात भयो तय्यार ।
भयो बुलौवा फिरि त्तत्रिन को ❀ पहुँचे मोहबे के सरदार ॥
जेंवन बैठे आल्हा ऊदन ❀ तबहूँ चलन लागि तलवार ।
गेडुवा पाटन की मारुन में ❀ सबियाँ शूर गये तहँ हार ॥
कीनि नम्रता फिरि नरपति ने ❀ बेटी बिदा दीन करवाय ।
दायज दीन्ह्यो भल नरपति ने ❀ आल्हा सब धन दीन लुटाय ॥
उठी पालकी नृप द्वारे ते ❀ तम्बुन फेरि पहूँची आय ।
कूच को डङ्का बाजन लाग्यो ❀ हाहाकार शब्द गो छाय ॥
खीमा उखरे रजपूतन के ❀ सो छकरन में लिये लदाय ।
कूच करायो नरवरगढ़ ते ❀ मोहबे चले शूर समुदाय ॥
बारा दिन का धावा करिकै ❀ दशहरिपुरै पहूँचे आय ।
दगैं सलामी तहँ आल्हा की ❀ सुनवाँ चढ़ी अटा पर धाय ॥
दीख कबुतरी पर मलखाने ❀ बेंदुल चढ़ा लहुरवा भाय ।
आल्हा इन्दल इक हौदा पर ❀ सुनवाँ गई द्वार पर आय ॥
पलकी आई तहँ फुलवा की ❀ नारिन कीन नेग सब गाय ।
घर के भीतर के जाने की ❀ पण्डित साइति दीन बताय ॥
बधू पुत्र घर भीतर गमने ❀ द्यावलि रूपन लीन बुलाय ।

जल्दी जावो तुम मोहबे को ❀ मल्हनै खबरि जनावो जाय ॥
इतना सुनिकै रुपना चलिभा ❀ मल्हना महल पहूँचा आय ।
खबरि सुनाई सब मल्हना को ❀ रुपना बार बार शिर नाय ॥
बारह रानी परिमालिक की ❀ अपने कीन सबन शृंगार ।
मनिया देवन को सुमिरन करि ❀ पलकी उपर भईं असवार ॥
आल्हा ऊदन के महलन में ❀ रानी गईं तड़ाका आय ।
रूप देखिकै तहँ फुलवा को ❀ रानिन खुशी भई अधिकाय ॥
विदा माँगिकै न्यवतहरी सब ❀ अपने नगर चले ततकाल ।
बाजत डङ्का अहतङ्का के ❀ पहुँचत भये नगर नरपाल ॥
पूर मनोरथ भे ऊदन के ❀ घर घर भयो मंगलाचार ।
व्याह पूरभा अब फुलवा का ❀ सोये सबै शूर सरदार ॥
खेत छूटि गा दिननायक सों ❀ झंडा गड़ा निशाकर केर ।
तुमसों ब्रह्मा यह माँगत हौं ❀ सब विधि अपनि दीनता हेर ॥
नदी औ परवत चहु जंगल में ❀ कतहूँ जाय लेउँ अवतार ।
तहँ तहँ स्वामी रघुवर होवैं ❀ चाहौं यही सृष्टि कर्त्तार ॥
करों वन्दना पितु अपने की ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ।
आशिर्वाद देउँ मुंशीसुत ❀ जीवो प्रागनरायण आय ॥
बढ़ै साहिबी दिन दिन दूनी ❀ औ कविकरैं सुयश को गान ।
ललिते ऐसे नर दुर्बल को ❀ करतो कौन और सनमान ॥
रहे समुन्दर में जबलों जल ❀ जबलों रहैं चन्द औ सूर ।
मालिक ललिते के तबलों तुम ❀ यश सों रहौ सदा भरपूर ॥
माथ नवावों शिवशंकर को ❀ ह्याँते करों तरँग को अन्त ।
राम रमा मिलि दर्शन देवें ❀ इच्छा यही भवानीकन्त ॥

उदयसिंह का विवाह सम्पूर्ण

आल्हखण्ड

चन्द्रावलि की चौथि

अथवा

बौरीगढ़ की लड़ाई

सवैया

शेश महेश गणेश रमेश धनेश सुरेश दिनेश मनावैं।
बावन पावन धोवन को सुखकारि पुरारि धरे सुख पावैं॥
सोई भये जमदग्नि के बंश औ पूरण अंश पुराण बतावैं।
वोई भये रघुनन्दन भूप सो रूप लखे ललिते मुद पावैं॥

सुमिरन

धन्य बखानों मैं दिनकर को ❀ जिनते पढ़ा वीर हनुमान।

तिनके कुलमाँ रघुनन्दन भे ❀ जिनकोजानतसकलजहान॥
तिनको मानत हम परमेश्वर ❀ पूरण ब्रह्म सुरासुर पाल।
चारो प्यारे नृप दशरथ के ❀ कीन्हेनिबालरूपजोख्याल॥
सोई धारे उर गिरिजापति ❀ मन में बालरूप के हाल।
काकभुशुण्डी कौवा तन को ❀ मुनिसोंमांगिलीनसबकाल॥
कितन्यो राजा सिंहासन तजि ❀ इनके परे प्रेम के जाल।
सुन्यो विभीषण की गाथा है ❀ शरणहिताकतभयोनिहाल॥
सोई ललिते जब उर आवैं ❀ जावैं सबै लोक जंजाल।
चौथि बखानों चन्द्रावलि की ❀ सुनिये ताको पूर हवाल॥

अथ कथाप्रसंग

लागो सावन मनभावन जब ❀ वर्षन मेघ झमाझम लाग।
दुःख छूटिगा नर नारिन का ❀ उपजा हिये प्रेम अनुराग॥
गड़े हिंडोला सब घर घर हैं ❀ दर दर झुंड खड़े अधिकार।
सावन आवन मनभावन की ❀ गावन लागीं गीत बहार॥
कजली जाहिर मिर्जापुर की ❀ सिर्जा जनों वहाँ कर्त्तार।
गड़ें हिंडोला कोशलपुर में ❀ अवहूँ देखैं लोग बहार॥
सोई महीना जब आवत भा ❀ तब मल्हना को सुनो हवाल।
बेटी प्यारी चन्द्रावलि जो ❀ ताको शोच करै सब काल॥
नयनन आँसू ढरकन लागे ❀ वयनन कढ़े चित्त घबड़ाय।
ऐसी हालत में मल्हना के ❀ तबहीं गये उदयसिंह आय॥
लखि असहालत उदयसिंह तब ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय।
पूँछन लागे महरानी ते ❀ काहे गई उदासी छाय॥
सुनिके बातैं उदयसिंह की ❀ मल्हना बोली वचन बनाय।
याद आयगै लरिकाई कै ❀ सोई बात गई उरछाय॥

ताहि बिसूरति मैं ऊदन थी ❀ सोई गई उदासी छाय।
सखी हमारी एक साथ की ❀ पायो दुःख रहै अधिकाय॥
दुःख याद हो जब काहू को ❀ कोमल चित्त जाय घबड़ाय।
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ माता साँच देउ बतलाय॥
आजुइ तुमका अस देखा ना ❀ बहु दिन लखा तुम्हैं असमाय।
की बिष देवो उदयसिंह को ❀ की दुख देवो साँच बताय॥
करो बहाना चहु केते तुम ❀ मानी नहीं लहुरवा भाय।
इतना सुनिकै मल्हना बोली ❀ ऊदन साँच देयँ बतलाय॥
लाग महीना अब सावन को ❀ गावन लगे नारि नर गीत।
सुधि जब आवै चन्द्रावलि की ❀ तबहीं लेय मोह दल जीत॥
कठिन यादवा बौरीगढ़ के ❀ जिनके लूटि मारका काम।
बेटी ब्याही तिनके घरमाँ ❀ कबहुँन चखी आपनो धाम॥
चौथि पठावैं जो बौरीगढ़ ❀ तौ फिर होय वहाँ पर मार।
है बहनोई इन्द्रशाह तव ❀ ताके परी बाँट है रार॥
गउना रउना सबके आवैं ❀ बेटी परी मोरि ससुरार।
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ माता मानो कही हमार॥
चौथी लैकै बौरी जैबे ❀ बहिनी बिदा लेव करवाय।
अब मैं जावों महराजा ढिग ❀ माँगों बिदा बेगिही जाय॥
इतना सुनिकै मल्हना बोली ❀ मानो कही बनाफरराय।
मोहिं पियारी अस बेटी ना ❀ जो तुम जाउ लहुरवा भाय॥
कछु तुम कहियो ना राजा ते ❀ ना बौरी को होउ तयार।
प्राण पियारे तुम ऊदन हौ ❀ साँची मानो कही हमार॥
सुनिकै बातैं ये मल्हना की ❀ ऊदन चले जहाँ परिमाल।
हाथ जोरिकै ऊदयसिंह ने ❀ औ राजा ते कहा हवाल॥

हम अब जैहैं बौरीगढ़ को ❁ बहिनी बिदा करैहैं जाय।
कहा न मानब हम काहू को ❁ राजन हुकुम देउ फरमाय॥
बातैं सुनिकै बघऊदन की ❁ तुरतै उठा चँदेलाराय।
साथै लैकै बघऊदन को ❁ फिरि रनिवास पहूँचा आय॥
डाटन लाग्यो तहँ मल्हना को ❁ री कस जौंहर दीन लगाय।
ऊदन जैहैं चलि बौरी को ❁ बेटी बिदा करै हैं जाय॥
हवें लुटेरा बौरी वाले ❁ औ बइलानी बात बनाय।
कुशल न होइहै ऊदन जैहैं ❁ त्वहि ते साँच देयँ बतलाय॥
कहा न मनिहैं ये काहू का ❁ कलहा देशराज के लाल।
इतना सुनिकै मल्हनारानी ❁ सब राजा ते कहा हवाल॥
दोष हमारो कछु नाहीं है ❁ साँची सुनो बात महराज।
काम न अवरा कछु हमरे घर ❁ बिन चन्द्रावलि होयअकाज॥
कहा न हमरो ऊदन मानैं ❁ अपनो कहा करैं सब काल।
पूँछो इनसे तुम महराजा ❁ पासै देशराज के लाल॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❁ साँची मानो कही हमार।
खर्चा देवो मोहिं जल्दी अब ❁ मैं बौरी का खड़ा तयार॥
कहा न मानब हम काहू को ❁ यहुतो साँच दीन बतलाय।
जान न पावब जो बौरी का ❁ तौ मरिजाब जहर को खाय॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❁ निश्चयजानिलीनपरिमाल।
यहु समझाये ते मानौना ❁ रिसहा देशराज का लाल॥
यह सोचिकै मन अपने माँ ❁ राजा सामा दीन कराय।
चौरा कलँगी औ दश तोड़ा ❁ सो ऊदन को दियो मँगाय॥
बाइस हाथी साठि पालकी ❁ रथ चौरासी घोड़ हजार।
यह सब सामा तहँ दीन्ह्यो तुम ❁ नाहर उदयसिंह सरदार॥

दिल्ली ह्वैकै तुम चलिजावो ❀ औ मिलि लेउ पिथौरै जाय।
जौन बतावैं पिरथी राजा ❀ तौनै किह्यो लहुरवा भाय॥
इतना कहिकै गे परिमालिक ❀ पहुँचे फेरि राज दरबार।
वस्त्र अभूषण औ मोतिन के ❀ मल्हना दीन आय दश हार॥
भरि भरि मेवा औ कसारु को ❀ मल्हना मटुका लीन रँगाय।
नाई बारी भाट तँबोली ❀ चारो नेगी लीन बुलाय॥
कहि समुझावा सब नेगिन को ❀ औ सब सामा दीन गहाय।
बिदा होन जब ऊदन लागे ❀ मल्हना छाती लीन लगाय॥
कहि समुझावा भल ऊदन को ❀ कीन्ह्यो रारि नहीं तुम जाय।
देश पराये में गमखाना ❀ यह ही नीति बनाफरराय॥
इतना कहिकै रानी मल्हना ❀ आशिर्बाद दीन हरषाय।
सुमिरि भवानी मइहर वाली ❀ मनिया देव हृदय सों ध्याय॥
तुरत बेंदुला पर चढ़ बैठ्यो ❀ औ चलि दियो बनाफरराय।
माहिल साले चंदेले के ❀ सोतो गये महोबे आय॥
गये कचहरी परिमालिक की ❀ माहिल बोले शीश नवाय।
सबियाँ क्षत्री ह्याँ बैठे हैं ❀ पै नहिं ऊदन परैं दिखाय॥
इतना सुनिकै राजा बोले ❀ नीके ह्वैं लहुरवा भाय।
पता लगावैं माहिल ठाकुर ❀ कहँ पर गये बनाफरराय॥
नीके जानैं सब माहिल को ❀ इनके चुगुलिन का बयपार।
कउन बतावा तहँ माहिल को ❀ कहँ पर उदयसिंह सरदार॥
तहँ ते उठिकै माहिल चलिभे ❀ मारग पता लगावत जायँ।
चुगुलशिरोमणिमाहिलठाकुर ❀ याते कौन देय बतलाय॥
मालिनि भिटिया उरई वाली ❀ वेही नगर महोबे भाय।
पता न पायो जब काहू ते ❀ माहिल गये तासुघर धाय॥

हाल बतायो सब माहिल को ❀ सुनतै कूच दीन करवाय।
जाय कै पहुँचे फिरि दिल्ली में ❀ जहँ पर रहे पिथौराराय॥
ऊदन पहुँचे ह्याँ दिल्ली में ❀ डेरा परा बाग में जाय।
बड़ी खातिरी भै माहिल कै ❀ राजा पास लीन बैठाय॥
माहिल बोले तहँ राजा ते ❀ मानो कही पिथौराराय।
ऊदन आये हैं मोहबे ते ❀ साँचे हाल देयँ बतलाय॥
कालिह सबेरे मलखे अइ हैं ❀ दिल्ली देहैं आगि लगाय।
यहिसुनिआयनपरिमालिकते ❀ मानो साँच पिथौराराय॥
इतना सुनिकै पिरथी बोले ❀ माहिल काह गयो बौराय।
कौन दुशमनी परिमालिक ते ❀ दिल्ली शहर देयँ फुकवाय॥
ऊदन जैहैं बौरीगढ़ को ❀ हमको खबर मिली है साँच।
असरिस लागी माहिल ठाकुर ❀ मारों निकरि परै तब काँच॥
इतना सुनिकै माहिल चलिभे ❀ बौरीगढ़ै पहूँचे जाय।
बोले ताहर सों पिरथीपति ❀ तुम ऊदन को लवो बुलाय॥
इतना सुनिकै ताहर चलिभे ❀ बगिया फेरि पहूँचे जाय।
तुम्हे बुलायो महराजा है ❀ यह ऊदन ते कह्यो सुनाय॥
इतना सुनतै ऊदन ठाकुर ❀ बेंदुल उपर भयो असवार।
सुमिरि शारदा मइहर वाली ❀ अपनी लीन ढाल तलवार॥
ताहर ऊदन दूनों चलि भे ❀ औ दरबार पहूँचे आय।
हाथ जोरिकै महराजा के ❀ सन्मुख ठाढ़ भयो शिरनाय॥
पाग उतारी बघऊदन ने ❀ औ धरिदीन चरणपर जाय।
देखि नम्रता उदयसिंह कै ❀ राजा पास लीन बैठाय॥
पिरथी बोले उदयसिंह ते ❀ कहँ को चले बनाफरराय।
इतना सुनतै ऊदन बोले ❀ मानो साँच पिथौराराय॥

बहिनी हमरी जो चन्द्रावलि ❀ ताकी चौथि लेन को जायँ।
दर्शन करिकै पृथीराज के ❀ जायो कह्यो चँदेलोराय॥
सोई दर्शन को आयेहन ❀ मानो सत्य बचन महिपाल।
इतना सुनिकै पिरथी बोले ❀ बेटा देशराज के लाल॥
लौटि महोबे ऊदन जावो ❀ मानो सत्य बचन यहिकाल।
मारे जैहौ बौरीगढ़ में ❀ ऊदन साँचे कहैं हवाल॥
ह्वैं लुटेरा यदुबंशी सब ❀ कैसे पठै दीन परिमाल।
भलो बुरो कछु वे मानैं ना ❀ बेटा देशराज के लाल॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय।
कीन प्रतिज्ञा हम महराजा ❀ बहिनी बिदा लेब करवाय॥
झूँठि प्रतिज्ञा हम करि हैं ना ❀ चहुतनधजीधजीउड़िजाय।
कीजे आज्ञा अब जाने की ❀ आशिर्बाद देउ हरषाय॥
इतना सुनिकै महराजा तब ❀ चौरा कलँगी दीन मँगाय।
शाल दुशाला मोहनमाला ❀ सब धन दीन लाख को भाय॥
रानी अगमा यह सुनि पावा ❀ आये देशराज के लाल।
भयो बुलौवा जब महलन ते ❀ आयसु दीन तबै महिपाल॥
तुरतै ऊदन तहँ ते चलिभे ❀ रानी भवन पहूँचे आय।
आईं नारी बहु दिल्ली की ❀ देखन हेतु लहुरवा भाय॥
रूप देखिकै बघऊदन को ❀ मन में कहैं गिरीश मनाय।
मेरो बालम ऊदन होतो ❀ देतो शिव यह योग बनाय॥
तौ मनभाती दिखलाती सब ❀ आती फेरि यहाँ लग कौन।
छाती खोले दिखलाती सो ❀ गाती गीत रँगीले जौन॥
ऐसी नारी नहिं केहू युग ❀कलियुगकुलटनकोअधिकार।
उलटन पुलटन कुलटन दीख्यो ❀ ऊदन जानि गयो बयपार॥

भगिनी माता औ कन्या सम ❀ कीन्ह्योतीनिभाँति ब्यवहार।
रानी अगमा बोलन लागी ❀ मानों उदयसिंह सरदार ॥
तुम नहिं जावो गढ़बौरी को ❀ बेटा देशराज के लाल।
विना विचारे औ शोचे विन ❀ कैसे पठै दीन परिमाल ॥
विना दया के बौरी वाले ❀ नित उठि करैं निर्दयी काम।
जानि बूझि कै कैसे पठवैं ❀ ऊदन जाउ यमन के धाम ॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ माता साँच देयँ बतलाय।
ना मुहिं पठयो परिमालिक ने ❀ ना मुहिं मल्हना दीन पठाय ॥
मनसे आई चन्द्रावलि को ❀ सावन मुहवा देउँ दिखाय।
राजा रानी की सम्मत ना ❀ अपने बूत चल्यन हम माय ॥
रीछ औ बाँदर सँगमा लैकै ❀ जीत्यो लङ्क राम महराज।
ग्वालनबालनयशुमतिलालन ❀ लैकै हना कंस शिरताज ॥
छोटो अंकुश मानुष लैकै ❀ बैठै नित्त नाग शिर जाय।
जहँ मन भावै तहँ लै जावै ❀ तेजै सबल परै दिखलाय ॥
तेज न होई ज्यहि देही माँ ❀ सो लै करी फौज का माय।
दया धर्म माँ कछु अन्तर ना ❀ मन्तर साँच देयँ बतलाय ॥
धरम युधिष्ठिर का जाहिर है ❀ अधरम कौरौ गये नशाय।
लौटि बनाफर अब जाई ना ❀ चहुतन धर्जीधजी उड़िजाय ॥

पहली लड़ाई—ऊदन की कैद

इतना सुनिकै रानी अगमा ❀ मनमाँ ठीक लीन ठहराय।
क्यहु समुझाये ते मानी ना ❀ साँचो हठी बनाफरराय ॥
बहु धन दीन्ह्यो फिरि ऊदन को ❀ आशिर्वाद दीन हर्षाय।
पायँ लागि कै महरानी के ❀ ऊदन कूच दीन करवाय ॥

छाय उदासी गै महलन में ❀ तम्बुन अटा बनाफर आय।
कूच करायो फिरि बगिया ते ❀ औ बौरीगढ़ चला दबाय॥
बारा दिनकी मैंजलि करि कै ❀ बौरी पास पहूँचे आय।
एक कोस जब बौरी रहि गै ❀ ऊदन तम्बू दीन गड़ाय॥
परा पलँगरा त्यहि तम्बू माँ ❀ तापर बैठ बनाफरराय।
लिखिकै चिट्ठी बीरशाह को ❀ धावन हाथ दीन पठवाय॥
बैठक बैठे तहँ चत्री सब ❀ एकते एक शूर सरदार।
चिट्ठी लैकै धावन दीन्ह्यो ❀ आवन पढ़ा बनाफर क्यार॥
बड़ी खुशाली बीरशाह करि ❀ जोरावर को लीन बुलाय।
तुम चलिजावो अब बगिया को ❀ जहँ पर टिका बनाफरराय॥
आदर करिकै नरनाहर को ❀ जल्दी लावो इहाँ बुलाय।
इतना सुनिकै बुला जुरावर ❀ अपने मित्रन सों हरषाय॥
पाग बैंजनी सब कोइ बँधिये ❀ जामा हरे रंग को भाय।
एकै बाना एक निशाना ❀ मिलिये उदयसिंह को जाय।
देखैं किसको पहिले भेटैं ❀ नाहर उदयसिंह सरदार।
इतना सुनिकै सब मित्रन ने ❀ एकै रंग कीन शृंगार॥
पंद्रा सोला एकै रँग के ❀ बगिया तुरत पहूँचे जाय।
एकै रँग के सब चत्री हैं ❀ नहिं कोउ रावरङ्क दिखराय॥
मिले जुरावर को ऊदन तब ❀ निश्चय राजपुत्र अनुमान।
देखि चतुरता उदयसिंह की ❀ सोऊ मनै बहुत शरमान॥
औ फिरि बोला उदयसिंह ते ❀ तुमको नृपति बुलावा भाय।
इतना सुनिकै बघऊदन तब ❀ साथै कूच दीन करवाय॥
नचै बेंदुला तहँ मारग में ❀ अद्भुत कला रहा दिखराय।
पाग बैंजनी शिरपर बाँधे ❀ यहु रणबाघु बनाफरराय॥

बैठ सिंहासन महराजा जहँ ❀ पहुँचा उदयसिंह तहँ जाय ।
चरण लागि कै महराजा के ❀ ठाढ़े भये शीश को नाय ॥
पकरिकै बाहू तबै ऊदन की ❀ तुरतै लीन्ह्यो हृदय लगाय ।
बड़ी खातिरी करि ऊदन की ❀ अपने पास लीन बैठाय ॥
चिट्ठी दीन्ह्यो चंदेले की ❀ लीन्ह्यो बीरशाह हर्षाय ।
पढ़िकै चिट्ठी परिमालिक की ❀ मनमाँ बड़ा खुशी ह्वै जाय ॥
जो कछु सामा मर्दाना थी ❀ ऊदन सबै दीन मँगवाय ।
बड़ी खुशाली भै राजा के ❀ फूले अंग न सका समाय ॥
राजा बोला फिरि ऊदन ते ❀ मानो कही बनाफरराय ।
दिन दश रहिकै तुम बौरी में ❀ पाछे बिदा लिह्यो करवाय ॥
कबहूँ आयो नहिं बौरी को ❀ नाहर उदयसिंह सरदार ।
जाय कै भेंटो अब बहिनी को ❀ इतनी मानो कही हमार ॥
इतना सुनिकै बघऊदन ने ❀ अपने साथ जुरावर लीन ।
जाय बेंदुला पर चढ़ि बैठा ❀ महलन गमन बेगिही कीन ॥
अगे जुरावर पीछे ऊदन ❀ महलन बेगि पहूँचे जाय ।
चरण लागिगे महरानी के ❀ ऊदन सामा दीन मँगाय ॥
देखें सामा महरानी तहँ ❀ औरो नारिन लीन बुलाय ।
देखिकै सामा चंदेले की ❀ सबके खुशी भई अधिकाय ॥
मटुका खुलिगे मेवावाले ❀ घर घर तुरत दीन बँटवाय ।
दर दर गाथा चंदेले की ❀ घर घर रहे नारि नर गाय ॥
यकटक देखें बघऊदन को ❀ क्षत्री बड़ा रँगीला ज्वान ।
रूप देखि कै बघऊदन को ❀ नारिन छूटि गयो अभिमान ॥
जिन नहिं देखा बघऊदन को ❀ तेऊ गईं तहाँ पर आन ।
जब पुन देखें बघऊदन को ❀ तब चुभि जाय करेजे बान ॥

बेटी प्यारी परिमालिक की ❀ भेंटी उदयसिंह को आय।
लाज ससेटी बेटी भेंटी ❀ बैठा सकुचि बनाफरराय॥
तबलों माहिल दाखिल ह्वैगे ❀ औ दरबार पहूँचे आय।
किह्यो खातिरी बीरशाह ने ❀ अपने पास लीन बैठाय॥
किह्यो बड़ाई जब ऊदन की ❀ माहिल ठाकुर सों महराज।
माहिल बोले महराजा ते ❀ आवत सुने हमारे लाज॥
किह्यो प्रशंसा तुम ऊदन की ❀ जान्यो भेद नहीं महिपाल।
राज्य ते बाहर इनको कीन्ह्यो ❀ क्रोधित भयो बहुत परिमाल॥
आल्हा रहिगे नैनागढ़ में ❀ ऊदन यहाँ पहूँचे आय।
बिदा करै हैं ये बेटी को ❀ दासी अपनि बनैहैं जाय॥
खबरि पायकै परिमालिक ने ❀ हमको तुरत दीन पठवाय।
बिदा करै हैं जो बघऊदन ❀ तौ सब जैहैं काम नशाय॥
ईजति जैहै दोऊ दिशि की ❀ साँचे हाल दीन बतलाय।
जहर घोरावो तुम भोजन में ❀ औ ऊदन को देउ खवाय॥
बिना बयारी जूना टूटै ❀ औ बिन औषधि बहै बलाय।
चरचा कीन्ह्यो नहिं ऊदन ते ❀ मानो साँच यादवाराय॥
इतना कहिकै माहिल ठाकुर ❀ चलिभा करिकै राम जुहार।
हुकुम लगायो महराजा ने ❀ महलन भोजन होयँ तयार॥
फेरि बुलायो सब पुत्रन को ❀ माहिल कथा कह्यो समुझाय।
बात लेन को ऊदन आयो ❀ भोजन जहर देउ डरवाय॥
छली धूर्त्त को या विधि मारै ❀ तौ नहिं दोष देय संसार।
खबरि जनाई फिरि महलन में ❀ भोजन बेगि भये तय्यार॥
भयो बुलौवा फिरि भोजन का ❀ ऊदन लीन ढाल तलवार।
देश हमारे कै रीती ना ❀ भोजन करै बाँधि हथियार॥

शंका लावो कछु मन में ना ❀ नाहर उदयसिंह सरदार।
बातैं सुनिकै बहनोई की ❀ ऊदन धरी ढाल तलवार॥
जाय कै पहुँचे फिरि चौका पर ❀ नाहर देशराज के लाल।
साथै बैठे बहनोई के ❀ राखे गये परोसे थाल॥
रक्षक सबको जग एकै है ❀ पूरण ब्रह्म चराचर राम।
करैं चाकरी नहिं अजगर क्यहु ❀ पक्षी करैं न केहू काम॥
अथवा जानो यह साँची तुम ❀ मछलिन कौन देय आहार।
ताल सुखाने चर्पी भूमि में ❀ रक्षा करैं राम भर्त्तार॥
मैं रघुनन्दन कै दाया तब ❀ ऊदन लीन्ह्यो थाल उठाय।
आपन दीन्ह्यो बहनोई को ❀ ताको लीन आप सरकाय॥
यह गति दीख्यो बहनोई जब ❀ तब अति बोल्यो क्रोध बढ़ाय।
हमरो भोजन तुम कस लीन्ह्यो ❀ अपनो दीन्ह्यो हमैं उठाय॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ ठाकुर साँच देयँ बतलाय।
उचित हमारे यही देश में ❀ सोई कीन यहाँ पर आय॥
इतना सुनिकै इन्द्रसेन ने ❀ अपनो पाटा लीन उठाय।
पीठिम मारा बघऊदन के ❀ बोला यहै रीति है भाय॥
देखि तमाशा ऊदन ठाकुर ❀ अपनो गडुवा लीन उठाय।
कुमक आयगै बीरशाह कै ❀ परिगो गाँस बनाफरराय॥
मर्द मर्दई ते चूकैं ना ❀ चहु निर्दई दई ह्वैजाय।
नरपुर गाथा घर घर गावैं ❀ सुरपुर वास मर्द का आय॥
कौन मर्दई बघऊदन ने ❀ बहुतक क्षत्री दिये गिराय।
काटे परने तलवारी को ❀ चन्द्रावलि ने दीन गहाय॥
सो लै लीन्ह्यो बघऊदन ने ❀ मारन लाग बनाफरराय।
जितने ऊदन के मुर्चा पर ❀ कोई शूर नहीं समुदाय॥

उचित न मारब बहनोई का ❀ ऊदन ठीक लीन ठहराय।
पाय दुचित्ता बघऊदन को ❀ बंधन तुरत लीन करवाय॥
जाय कै डार्यो फिरि खन्दक में ❀ पहरा चौकी दीन कराय।
देखि दुर्दशा यह ऊदन कै ❀ बहिनी बारबार पछिताय॥
मन में शोचै मनै बिचारै ❀ कासों कहै दुःख अधिकाय।
तबलों मालिनि पोहपा आई ❀ ऊदन कथा गई सब गाय॥
ऐसो पाहुन ऐसि दुर्दशा ❀ हमते कछू कहा ना जाय।
को समुझावै महराजा को ❀ आपन देवै प्राण गँवाय॥
सुनिकै बातैं ये मालिनि की ❀ तब चन्द्रावलि कह्यो सुनाय।
मैं अब देखों जस ऊदन को ❀ मालिनि तसतुमकरो उपाय॥
बातैं सुनिकै चन्द्रावलि की ❀ मालिनिकहावचनसमुझाय।
निशा अँधेरी है सावन की ❀ तुमको ऊदन लवैं दिखाय॥
इतना सुनिकै मालिनि सँग में ❀ ऊदन पास पहूँची जाय।
बहिनी प्यारी चन्द्रावलि तहँ ❀ बोली सुनो बनाफरराय॥
बाहर आवो तुम खन्दक के ❀ अपने घोड़ होउ असवार।
निर्भय जावो तुम मोहबे को ❀ भाई उदयसिंह सरदार॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ बहिनी साँच देयँ बतलाय।
चोरी चोरा जो घर जावैं ❀ तौ रजपूती धर्म नशाय॥
खबरि जो पइहैं सिरसा वाले ❀ अइहैं तुरत बीर मलखान।
सुखसों सोवो तुम महलन में ❀ करिहैं कुशल मोरि भगवान॥
इतना सुनिकै बहिनी चलिभै ❀ महलन फेरि पहूँची आय।
लिखी हकीकति सबमलखेको ❀ खन्दक परे लहुरवा भाय॥
लिखि कै पाती सुवना गरमें ❀ बाँधिकै दीन्ह्यो तुरत उड़ाय।
जावो सुवना तुम मोहबे को ❀ मल्हना महल पहूँचो जाय॥

उड़िकै सुवना तहँ ते चलिभा ❀ नरवरगढ़ै पहूँचा आय।
मकरँद घूमै ज्यहि बगियामें ❀ सुवना बैठ तहाँ पर जाय॥
चकित घूमै मकरन्दा तहँ ❀ परिगै दृष्टि सुवा पर आय।
पाती दीख्यो गल सुवना के ❀ तुरतै लीन तहाँ पकराय॥
पढ़िकै पाती लै सुवना को ❀ सो नरपति को दीन दिखाय।
पाछे पहुँचा फिरि महलन में ❀ रानी खबरि जनाई जाय॥
सुनी हकीकति जब रानी ने ❀ पाती गले दीन बँधवाय।
सुवना चलिभा नरवरगढ़ ते ❀ पहुँचा नगर महोबे आय॥
मल्हना ठाढ़ी रह अटा पर ❀ सुवना बैठ तहाँ पर जाय।
पाती दीखी गल सुवना के ❀ मल्हना नाम दीन बतलाय॥
सुन्यो जबानी जब मल्हना की ❀ सुवना बैठ हाथ पर आय।
छोरिकै पाती मल्हना रानी ❀ आँकुइ आँकु नजरि कैजाय॥
पढ़िकै पाती रानी मल्हना ❀ रुपना बारी लीन बुलाय।
चिट्ठी दीन्ह्यो महरानी ने ❀ औ सब हाल कह्यो समुझाय॥
लैकै चिट्ठी रुपना चलिभा ❀ मलखे पास पहूँचा जाय।
चिट्ठी दीन्ह्यो मलखाने को ❀ औरो हाल गयो सब गाय॥
पढ़िकै चिट्ठी मलखाने ने ❀ तुरतै फौजन कीन तयार।
जितने क्षत्री रहैं सिरसा में ❀ सबियाँ बाँधि लीन हथियार॥
लैकै फौजैं मलखाने फिरि ❀ पहुँचा नगर मोहोबे आय।
खबरि पठाई फिरि आल्हा को ❀ राजा पास पहुँचे जाय॥
हाथ जोरिकै मलखे बोले ❀ दोऊ चरणन शीश नवाय।
कौन तयारी हम बीरों को ❀ बड़े साथ देव पठवाय॥
सुनिकै बातैं मलखाने की ❀ बोले तुरत चँदेलेराय।
सगुन उठायो देवा ठाकुर ❀ देवौ हाल जीन बतलाय॥

सुनिकै बातैं महराजा की ❀ ज्योतिषपुस्तक लीन उठाय।
शकुन उठायो देबा ठाकुर ❀ बोल्यो हाथ जोरि शिरनाय॥
जीति तुम्हारी बौरी ह्वैहै ❀ राजन सत्य दीन बतलाय।
लैकै फौजै आल्हा ठाकुर ❀ तब लग गये तहाँपर आय॥
खेत छूटिगा दिननायक सों ❀ झण्डा गड़ा निशाको आय।
तारागण सब चमकन लागे ❀ पक्षी गये बसेरन धाय॥
परे आलसी खटिया तकितकि ❀ घों घों कण्ठ रहा घर्राय।
सब दिन प्यारे रघुनन्दन के ❀ सन्तन धुनी दीन परचाय॥
माथ नवावों पितु अपने को ❀ ह्याँ ते करों तरँग को अन्त।
राम रमा मिलि दर्शन देवैं ❀ इच्छा यही भवानीकन्त॥
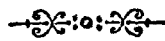
दूसरी लड़ाई चन्द्रावलि की बिदा

सवैया

ध्यावत तोहिं सरस्वति मातु करो निज सेवक पै अब दाया।
शारद नारद के पद ध्याय मनावत तोहिं सदा रघुराया॥
गावत हौं गुण गोबिंद के अरु पावत हौं नित ही मनभाया।
नावत हौं शिर बारहिं बार करो ललिते कर मातु सहाया॥

सुमिरन

दोउ पद ध्यावों जो बर पावों ❀ सो सुनि लेउ शारदा माय।
जस जस गावों मैं आल्हा को ❀ तसतस सुखीहोउँअधिकाय॥
माता भ्राता त्राता ताता ❀ नाता तुममां दीन लगाय।
तारो बोरो जो अब चाहो ❀ हमतो शरण तुम्हारी माय॥
वेद पुराणन श्रुति असमृति में ❀ जाँचा साँचा हम अधिकाय।
तुम्ही भवानी शारद मइया ❀ सबका सार परी दिखराय॥

तव पद बिछुरे उर हमरे ते ❀ मूरखचन्द कहैं सब गाय ।
ताते बिछुरैं पद उरते ना ❀ यह वर मिलै शारदामाय ॥
छूटि सुमिरनी गै शारद कै ❀ अब आगे के सुनो हवाल ।
मलखे आल्हा बाँरी जैहैं ❀ ह्वैहैं तहाँ युद्ध बिकराल ॥

अथ कथाप्रसंग

उदय दिवाकर भे पूरब में ❀ किरणनकीनजगतउजियार।
हुकुम पायकै मलखाने को ❀ सवियाँ फौज भई तय्यार ॥
सजि पचशब्दा गा आल्हा का ❀ तापर होत भयो असवार ।
घोड़ी कबुतरी की पीठी पर ❀ बैठ्यो सिरसा का सरदार ॥
चढ़ा मनोहर की पीठी पर ❀ देवा मैनपुरी चौहान ।
ब्रह्मा ठाकुर हरनागर पर ❀ बैठे सुमिरि राम भगवान ॥
गर्भ गिरावनि कुँवा सुखावनि ❀ लछिमिनि तोप भई तय्यार ।
ढाढ़ी करखा बोलन लागे ❀ विप्रन कीन वेद उच्चार ॥
रणकी मोहरि बाजन लागी ❀ घूमन लागे लाल निशान ।
आय लालरी गै अकाश में ❀ लोपे अन्धकार सों भान ॥
पहिल नगारा में जिन बन्दी ❀ दुसरे बाँधि लीन हथियार ।
तिसर नगारा के बाजत खन ❀ हाथी घोड़न भये सवार ॥
चौथ नगारा बाजन लाग्यो ❀ मलखे कूच दीन करवाय ।
हाथी चलिभे दल बादल सों ❀ बगटा गरे रहे हहराय ॥
कोउ कोउ घोड़ा हंस चाल पर ❀ कोउ कोउ मोरचाल पर जाय।
सरपट जावैं कोउ कोउ घोड़ा ❀ केहू टाप न परै सुनाय ॥
सर सर सर सर के रथ दौरैं ❀ रथ्या चलैं पवन की चाल ।
मारु मारु के मौहरि बाजैं ❀ बाजैं हाव हाव करनाल ॥
बाजैं डंका अहतंका के ❀ बड़ा नचैं शूर सरदार ।

शङ्का नाहीं क्यहु जियरे में ❀ चहुदिन राति चलै तलवार ॥
लश्कर पहुँचा सब दिल्ली में ❀ क्षत्रिन कीन तहाँ बिश्राम ।
इकलो मलखे त्यहि समया में ❀ पहुँचा पृथीराज के धाम ॥
बड़ी खातिरी राजा कीन्ह्यो ❀ तहँ पर बैठ बीर मलखान ।
सखियाँ गाथा बौरीगढ़ की ❀ मलखे कीन तहाँ पर गान ॥
सुनी हकीकति जब मलखे की ❀ चौंड़ा सूरज लीन बुलाय ।
चिट्ठी दीन्ह्यो पृथीराज ने ❀ चौंड़े फेरि कह्यो समुझाय ॥
कह्यो जबानी बीरशाह ते ❀ जल्दी बिदा देयँ करवाय ।
कलहा लरिका बच्छराज का ❀ नामी सबै बनाफरराय ॥
लड़िकै जितिहौ तुम इनते ना ❀ मरिकै सात धरौ अवतार ।
लैकै फौजै सूरज बेटा ❀ मलखे साथ होउ तय्यार ॥
बिदा माँगिकै महराजा ते ❀ सूरज सिरसा का सरदार ।
आये फौजन में मलखाने ❀ सब दल बेगि भयो तय्यार ॥
गज इकदन्ता चौंड़ा बैठ्यो ❀ सूरज सब्जा पर असवार ।
कूच को डङ्का बाजन लाग्यो ❀ हाथिन घोर कीन चिग्घार ॥
चलि भइँ फौजैं दल बादल सों ❀ बौरीगढ़ै गईं नगच्याय ।
आठ कोस जब बौरी रहिगै ❀ आल्हा डेरा दीन गड़ाय ॥
तम्बू गड़िगा तहँ आल्हा का ❀ बैठे सबै शूरमा आय ।
आल्हा बोले तहँ देबा ते ❀ कहिये करिये कौन उपाय ॥
इतना सुनिकै देबा बोला ❀ साँची तुम्हैं देयँ बतलाय ।
योगी बनिकै बौरी चलिये ❀ तौसबहालठीकमिलिजाय ॥
यह मन भाई मलखाने के ❀ गुदरी पहिरि लीन ततकाल ।
आल्हा देबा ब्रह्मा ठाकुर ❀ इनहुनतिलकलगायोभाल ॥
लीन बाँसुरी ब्रह्मा ठाकुर ❀ खँझरी मैनपुरी चौहान ।

कर इकतारा आल्हा लीन्ह्यो ❀ डमरू लीन बीर मलखान ॥
चारो चलिभे फिरि तम्बुन ते ❀ बौरीगढ़ै पहूँचे आय।
बजी बाँसुरी तहँ ब्रह्मा की ❀ देबा खँभरी रहा बजाय ॥
टप्पा ठुमरी भजन रेखता ❀ मलखे गावैं मेघ मलार।
को गति बरणै इकतारा कै ❀ बाजें खूब लोह के तार ॥
रूप देखिकै तिन योगिन का ❀ मोहे सबै नारि नर बाल।
बात फैलिगै बौरीगढ़ में ❀ योगी आये खूब बिशाल ॥
भा खलभल्ला औ हल्ला अति ❀ पहुँचे बीर शाह के द्वार।
तजिकै लल्ला चलीं इकल्ला ❀ बल्लन क्यार मनों त्यौहार ॥
अटा के ऊपर कटा करन को ❀ नारिन पैन नैन हथियार।
कड़ा के ऊपर छड़ा बिराजैं ❀ तिनपर पायजेब झनकार ॥
कर इकतारा आल्हा लीन्हे ❀ नीचे करैं तारसों रार।
बजै बाँसुरी भल ब्रह्मा कै ❀ मानो लीन कृष्ण अवतार ॥
उपमा नाहीं शिरीकृष्ण कै ❀ तीनों लोकन के कर्त्तार।
काह हकीकति है ब्रह्मा कै ❀ पै यह बँसुरी केरि बहार ॥
बाजै खँभरी भल देबा कै ❀ मलखे करैं तहाँ पर गान।
देखि तमाशा तहँ योगिन का ❀ लागे कहन परस्पर ज्वान ॥
ऐसे योगी हम देखे ना ❀ दाढ़ी गई सफेदी छाय।
गङ्गासागर के संगम लों ❀ देखा देश देश अधिकाय ॥
बीरशाह तब बोलन लाग्यो ❀ चारों योगिन ते मुसुकाय।
कहाँ ते आयो औ कहँ जैहौ ❀ आपन हाल देउ बतलाय ॥
सुनिकै बातैं महराजा की ❀ मलखे बोले बचन बनाय।
हम तो आये प्रागराज ते ❀ जावैं हरद्वार को भाय ॥
भोजन पावैं हम चत्रिन घर ❀ बृत्ती यहै लीन ठहराय।

होय जनेऊ ज्यहि घर नाहीं ❀ क्षत्री कौन भाँति सो आय ॥
जनमत ब्राह्मण क्षत्री बनियाँ ❀ तीनों शूद्र सरिस हैं भाय ।
होय जनेऊ जब तीनों घर ❀ तब वह बर्ण ठीक ठहराय ॥
जो मर्यादा तुम छोंड़ा ना ❀ तौ घर भोजन देउ कराय ।
कलियुग आवा महराजा है ❀ ताते साफ दीन बतलाय ॥
हम नहिं भोजन करैं शूद्र घर ❀ चहु मरि जायँ पेट के घाय ।
यकइस लंघन चहु ह्वै जावैं ❀ पै नहिं सिंह घास को खाय ॥
सुनिकै बातैं ये योगी की ❀ भा मन खुशी यादवाराय ।
औ यह बोला फिरि योगिन ते ❀ हमहूँ साँच देयँ बतलाय ॥
तुम्हरो हमरो मत एकै है ❀ शंका आप देउ बिसराय ।
पतित न क्षत्री कोउ बौंरीगढ़ ❀ यादवबंश यहाँ अधिकाय ॥
पापी आयो इक मोहबे ते ❀ ताको खन्दक दीन डराय ।
और न पापी कोउ बौंरी में ❀ तुमको साँच दीन बतलाय ॥
इतना सुनिकै मलखे बोले ❀ ओ महराज यादवाराय ।
कैसो खन्दक कैसो पापी ❀ दर्शन हमैं देउ करवाय ॥
कबहूँ खन्दक हम देखा ना ❀ तुमते साँच दीन बतलाय ।
बड़ी लालसा भै जियरे माँ ❀ खन्दक आप देउ दिखलाय ॥
इतना सुनिकै महराजा तब ❀ योगिनलीन्ह्योसाथलिवाय ।
जौने खन्दक में ऊदन थे ❀ सो महराज दिखावा जाय ॥
ऊदन दीख्यो जब योगिन को ❀ नीचे लीन्ह्यो शीश नवाय ।
चारो योगी तहँते चलिभे ❀ पहुँचे राजभवन में आय ॥
भयो बुलौवा फिरि भोजन को ❀ मलखे बोले बचन बनाय ।
आजु यकादशि निर्जल बत्तें ❀ राजन साँच दीन बतलाय ॥
करैं बसेरो नहिं बस्ती में ❀ जंगल बास करैं सब काल ।

बिदा माँगिकै महराजा ते ❀ चारो चलत भये ततकाल ॥
आयकै पहुँचे फिरि फौजन में ❀ अंगड़ खंगड़ धरे उतार ।
सुरँग खुदायो मलखाने ने ❀ क्षत्रिन तुरत कीन तय्यार ॥
जौने खन्दक में ऊदन थे ❀ फूटो सुरँग तहाँ पर जाय ।
सुरँग के भीतर सों बघऊदन ❀ पहुँचे फौज आपनी आय ॥
जैसे पियासा पानी पावै ❀ तैसे खुशी भये सब भाय ।
बाजे डंका अहतंका के ❀ शंका सबन दीन बिसराय ॥
मलखे बोले तहँ आल्हा ते ❀ लश्कर कूच देउ करवाय ।
बिदा करावैं चन्द्रावलि को ❀ तब यश जाय जगत में छाय ॥
इतना सुनिकै आल्हा ठाकुर ❀ बोले करौ यहै अब भाय ।
हुकुम पायकै यहु आल्हा को ❀ मलखे कूच दीन करवाय ॥
चलि भैं फौजैं दल बादल सों ❀ बौरीगढ़ै गईं नगच्याय ।
प्रलय मेघ सम बजैं नगारा ❀ हाहाकार शब्द गा छाय ॥
गा हरिकारा तब बौरी में ❀ राजै खबरि जनाई जाय ।
फौजैं आईं क्यहु राजा की ❀ बौरी डांड़ दबायनि आय ॥
सुनिकै बातैं हरिकारा की ❀ राजा गयो सनाका खाय ।
मलखे बोले ह्याँ रूपन ते ❀ कहियो बीरशाह ते जाय ॥
सुरँग खोदिकै बघऊदन को ❀ आल्हा ठाकुर लीन निकारि ।
बिदा कराये बिन जैहैं ना ❀ ताते करो नहीं तुम रारि ॥
बहिनी ब्याही तुम्हरे घर माँ ❀ ताते क्षमा कीन यहि बार ।
नहिं अस ठाकुर को जन्मा जग ❀ जाते मानि लीन हम हार ॥
इतना सुनिकै रूपन चलिभा ❀ बौरीगढ़ै पहूँचा जाय ।
खबरि सुनाई महराजा को ❀ जो कछु कह्यो बनाफरराय ॥
सो नहिं भाई बीरशाह मन ❀ बोल्यो तुरत बचन ललकार ।

काह हकीकति है आल्हा के ❀ आवैं बिदा करावन द्वार ॥
हठ नहिं छोड़्यो दुर्योधन ने ❀ औ मरिगयो सहित परिवार।
खबरि जनावो तुम आल्हा को ❀ हमरे साथ करैं तलवार ॥
इतना सुनिकै रूपन चलिभे ❀ फौजन फेरि पहूँचे आय।
कही हकीकति बीरशाह की ❀ सुनि जरि उठे बनाफरराय ॥
हुकुम लगायो निज फौजन में ❀ सबियाँ शूर होयँ तय्यार।
हुकुम पाय कै मलखाने को ❀ चत्रिन बाँधि लीन हथियार॥
गजै चढ़ैया गज पर चढ़िगे ❀ बाँके घोड़न भे असवार।
झीलमबखतरपहिरिसिपाहिन ❀ हाथम लीन ढाल तलवार ॥
यक यक भाला दुइ दुइ बरछी ❀ कोताखानी लीन कटार।
रण की मोहरि बाजन लागी ❀ रणका होन लाग व्यवहार ॥
सजा बेंदुला का चढ़वैया ❀ लाला देशराज का लाल।
को गति बरणै मलखाने कै ❀ जाको डरैं देखि नरपाल ॥
बड़ा लड़ैया भीषम वाला ❀ देबा मैनपुरी चौहान।
ब्रह्मा ठाकुर सजि ठाढ़ो भो ❀ करिकै रामचन्द्र को ध्यान ॥
ढाढ़ी करखा बोलन लागे ❀ बन्दी कीन समर पद गान।
बाजे डंका अहतंका के ❀ घूमन लागे लाल निशान ॥
हिंया कि गाथा ऐसी गुजरी ❀ सुनिये बीरशाह को हाल।
सुरज जुरावर दोउ पुत्रन को ❀ तुरतै बोलि लीन नरपाल ॥
करो तयारी समरभूमि कै ❀ अपनी फौज लेउ सजवाय।
जान न पावैं मोहबे वाले ❀ सबकी कटा देउ करवाय ॥
हुकुम पायकै महराजा को ❀ डंका तुरत दीन बजवाय।
सजे सिपाही बौरी वाले ❀ मनमाँ श्रीगणेश पद ध्याय ॥
अंगद पंगद मकुना भौंग ❀ सजिगे श्वेत बरण गजराज।

सजि इकदन्ता दुइदन्ता गे ❀ तिनपर हौदा रहे बिराज ॥
कच्छी मच्छी नकुला सब्जा ❀ हरियल मुश्की घोड़ अपार ।
ताजी तुरकी पँचकल्यानी ❀ सुरखा सुरँगा भये तयार ॥
चढ़ि अलबेला तिन घोड़न पर ❀ अपने बाँधि लये हथियार ।
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❀ हाथम लिये ढाल तलवार ॥
बाजीं तुरही मुरही ऐसी ❀ पुप्पूं पुप्पूं परा सुनाय ।
बाजे डफला अलबेला सब ❀ शूरन मेला दीन लगाय ॥
मारु मारु कर मौहरि बाजीं ❀ बाजीं हाव हाव करनाल ।
खर खर खर खर कै रथ दौरे ❀ रब्बा चले पवन की चाल ॥
सुर्खा घोड़ा चढ़े जुरावर ❀ सूरज सब्जा पर असवार ।
सुमिरि भवानी सुत गणेश को ❀ दोऊ चलत भये सरदार ॥
घोड़न बरणों की असवारन ❀ पैदर सेना तीस हजार ।
तीन सहस हाथिन पर सोहैं ❀ बाँके यादव परम जुझार ॥
बाम्हन थोरे चत्री ज्यादा ❀ लीन्हे कठिन धार तलवार ।
गर्जति आवैं समरभूमि को ❀ एकते एक शूर सरदार ॥
कायर हल्ला खलभल्ला में ❀ तल्ला छोंड़ि प्राण के दीन ।
खुशी छायगै मन शूरन के ❀ मानों जीति इन्द्रपुर लीन ॥
बजे नगारा ठनकारा के ❀ दारा गर्भपात सुनि कीन ।
गये दरारा उर कायर के ❀ सायर सत्य सत्य कहि दीन ॥
उइ धिरकारैं अपने तन का ❀ मनमाँ बार बार पछितायँ ।
भैंसि बियानी घर हमरे मा ❀ माठा दूध केर अधिकाय ॥
हाय रुपैया मारे डारैं ❀ लीन्हे समरभूमि को जायँ ।
दैया मैया भैया कहि कै ❀ ज्वैया हेतु बहुत पछितायँ ॥
शूर यशोमति मैया वाले ❀ भैया गैयन के चरवाह ।

नाव खेवैया भवसागर के ❀ नागर कृष्णचन्द्र नरनाह ॥
तिनकासुमिरणमनअन्तरकरि ❀ तत्पर भये स्वामि के काज ।
करि अभिलाषा समरभूमि के ❀ राखे मनै धर्म की लाज ॥
पढ़िअशलोकनतजिशोकनको ❀ लोकन केर मिले जनु राज ।
तैसे गाजे मन अन्तर में ❀ बाजे तहाँ शूर शिरताज ॥
बाजे बाजे बाजे सुनिकै ❀ लाजे मनै आपने बीच ।
तिनकोकहियतहमअपनीदिशि ❀ जानो सकल नरन में नीच ॥
हम अनुमाना मन अपने है ❀ जाना नारि बित्तको कीच ।
पै हम त्यागी अनुरागी ना ❀ लागी आश नारि धन बीच ॥
आपै त्यागी अनुरागी ना ❀ तौ कस कहै नारि धन कीच ।
साँच बखानैं हम अपनी दिशि ❀ सोई सकल नरन में नीच ॥
पै यहु कलियुग बाबा आयो ❀ छायो रहै मनै संताप ।
मन नहिं इस्थिर क्षणहू होवै ❀ कैसे होय मुनिन में थाप ॥
जपतै माला गायत्री के ❀ आला परब्रह्म के ध्यान ।
यहु मन काला भाला मारै ❀ जो सब इन्द्रिन में बलवान ॥
नीच न कहिये यहि काला में ❀ जो कोउ साँच बिप्रको बाल ।
युग यहु पाजी बदिकै बाजी ❀ राजानल को किह्यो बिहाल ॥
ऐसे पाजी की राजी में ❀ सूरज बीरशाह का लाल ।
जायकै पहुँच्यो समरभूमि में ❀ अब मलखे का सुनो हवाल ॥
सो जब दीख्यो आसमान को ❀ छाई खून गर्द गुब्बार ।
हँसिकै बोला रणशूरन ते ❀ सँभरो सबै शूर सरदार ॥
इतना कहतै फौजैं आई ❀ तोपन होन लागि तहँ मार ।
अररर अररर तोपैं छूटीं ❀ हाथिन घोर कीन चिग्घार ॥
को गति बरणै त्यहि समया कै ❀ भारी भयो भयङ्कर मार ।

जावैं गोला जौनी दिशि को ❀ तौनी दिशि को करैं त्रिथार॥

सवैया

भभकार उठैं तहँ गोलन की फुफकार करैं रण में गजराजा।
धुधकार नगारन की गमकी चमकी तलवारि जुरे सब राजा॥
अपार जुभार करैं तहँ मार न डरैं मन नेकहु एकहु साजा।
समाज औसाजदोऊ दिशि में अवलरैं ललिते सबही जयकाजा॥

बड़ी लड़ाई भै तोपन कै ❀ लोपे अन्धकार सों भान।
छाय अँधिरिया गै दशहू दिशि ❀ कतहुँ न सूझै अपन बिरान॥
धावा ह्वैगा दोऊ दल का ❀ दोऊ भये बरोबरि आय।
सूरज ठाकुर बौरी वाला ❀ सिरसा क्यार बनाफरराय॥
दोऊ सोहैं भल घोड़न पर ❀ लीन्हे हाथ ढाल तलवार।
द्वउ ललकारन मारन लागे ❀ सम्मुख होत होत सरदार॥
सूँढ़ि लपेटा हाथी भिड़िगे ❀ अंकुश भिड़ा महौतन क्यार।
हौदा हौदा यकमिल ह्वैगा ❀ औ असवार साथ असवार॥
कल्ला भिड़िगे असवारन के ❀ लागी होन भड़ाभड़ मार।
छूटे ऊना लगडन वाले ❀ कोता खानी चलीं कटार॥
बिजुली दमकै कउँधा चमकै ❀ तैसे धमकि रही तलवार।
मलखे ठाकुर शूर जुरावर ❀ दोऊ लड़न लागि सरदार॥
सूरज ऊदन की भेंटन में ❀ लेटन लागि सिपाही ज्वान।
परे लपेटे भट भेटे जे ❀ लेटे समरभूमि मैदान॥
मनो ससेटे यम भेटे भे ❀ लेटे क्षत्री परम जुभार।
बहैं पनारा तहँ रक्तन के ❀ औ हिलकारा उठैं अपार॥
को गति वरणै तहँ पैदल की ❀ बाजैं घूमि घूमि तलवार।
अपन परावा कछु सूझै ना ❀ जूझै जूझ बूझ त्यहि बार॥

बड़ी लड़ाई मै बौरीगढ़ ❀ मलखे सूरज के मैदान।
फिरि फिरि मारै औ ललकारै ❀ लाहर सजर धनी मलखान॥
बड़ा लड़ैया सिरसा वाला ❀ ज्यहिले हारि गई तलवार।
घोड़ी कबुतरी रणमें नाचे ❀ साँचे शूर बीर सरदार॥
सूरज बोले तिन मलखे ते ❀ ठाकुर मानो कही हमार।
लौटि मोहोबे जल्दी जावो ❀ तबहीं कुशल रचा करतार॥
इतना सुनिकै मलखे बोले ❀ तुमते साँच देयँ बतलाय।
बिदा कराये बिन जैबे ना ❀ चहुतनधजीधजीउड़िजाय॥
सूरज बोले मलखाने ते ❀ यह नहिं होनहार यहिबार।
इतना कहिकै सूरज ठाकुर ❀ अपनी खैंच लीन तलवार॥
ऐंचिकै मारा मलखाने के ❀ मलखे लीन ढाल पर वार।
आल्हा बोले मलखाने ते ❀ ठाकुर सिरसा के सरदार॥
पकरिकै बाँधो तुम सूरज को ❀ इनपर करो नहीं अब वार।
गरुहर नाते के लड़िका हैं ❀ मानों सिरसा के सरदार॥
सुनिकै बातैं ये आल्हा की ❀ तुरतै उतरि परा मलखान।
पकरिकै बाँध्यो रणमण्डल में ❀ देखैं खड़े अनेकन ज्वान॥
सूरज बन्धन दीख जुरावर ❀ पहुँचा तुरत तहाँ पर आय।
औ ललकारा मलखाने को ❀ ठाढ़े होउ बनाफरराय॥
इतना सुनिकै बघऊदन ने ❀ तुरतै पकरि जुरावरि लीन।
उतरि कबुतरी ते मलखाने ❀ बन्धन तुरत तहाँ पर कीन॥
दूनों लरिका बीरशाह के ❀ आल्हा ठाकुर लीन बँधाय।
भागीं फौजैं बौरीगढ़ की ❀ काहू धरा धीर ना जाय॥
खबरि सुनाई बीरशाह को ❀ चत्रिन नीचे शीश नवाय।
बन्धन सुनिकै द्वउ पुत्रन को ❀ दुखिया भयो यादवा राय॥

इन्द्रसेन औ मोहन बेटा ❀ इनको तुरत लीन बुलवाय।
हाल बतायो समरभूमि को ❀ आशिर्बाद दीन हर्षाय॥
करो तयारी सब भाइन सह ❀ आल्हे पकरि दिखावोआय।
इतना सुनिकै सबियाँ बेटा ❀ चलिभे राजै शीश नवाय॥
आयकै पहुँचे निज सेनन में ❀ डंका तुरत दीन बजवाय।
बाजे डंका अहतंका के ❀ हाहाकार शब्द गा छाय॥
पहिल नगारा में जिनबन्दी ❀ दूसरे शूर भये हुशियार।
तिसर नगारा के बाजत खन ❀ चत्री समर हेतु तैयार॥
ढाढ़ी करखा बोलन लागे ❀ बिप्रन कीन बेद उच्चार।
रण की मौहरि बाजन लागीं ❀ रणका होन लाग व्यवहार॥
चलिभै सेना बौरीगढ़ सों ❀ हाहाकारी परै सुनाय।
घरी मुहूरत के अन्तर में ❀ पहुँचे समरभूमि में आय॥
आल्हा ऊदन मलखे सुलखे ❀ देबा मैनपुरी चौहान।
सब रणशूरन त्यहि समया में ❀ भारी भीर दीख मैदान॥
उड़ी कबुतरी मलखाने की ❀ हौदन उपर पहूँची जाय।
मलखे मारै तलवारिन सों ❀ घोड़ी देय टाप के घाय॥
मोहन ठाकुर उदयसिंह को ❀ परिगा समर बरोबरि आय।
भई कसामसि समरभूमि में ❀ औ तिलडरा भुइँ ना जाय॥
को गति बरणै रजपूतन कै ❀ दूनों हाथ करैं तलवार।
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार॥
जैसे भेड़िन भेड़हा पैठै ❀ जैसे अहिर बिडारै गाय।
तैसे मारै मलखे ठाकुर ❀ कायर भागैं पीठि दिखाय॥
हैं मर्दाना जिनको बाना ❀ ते नर करैं तहाँ पर मार।
को गति बरणै इन्द्रसेन कै ❀ दूनों हाथ करैं तलवार॥

बड़े लड़ैया बौरीवाले ❀ मानैं नहीं समर में हार।
ना मुँह फेरैं मोहबेवाले ❀ दोऊ कठिन मचाई रार॥
गिरैं कगारा जस नदिया माँ ❀ तैसे गिरैं ऊँट गज धाय।
परीं लहासैं रणशूरन की ❀ तिन पर रहे गीध मड़राय॥
गोली ओली कतहूँ बरसैं ❀ कतहूँ कठिन चलै तलवार।
छुरी कटारी कोऊ मारैं ❀ कोऊ कड़ाबीन की मार॥
गदा के ऊपर गदा चलावैं ❀ ढालन मारैं ढाल घुमाय।
सर सर मारैं तलवारिन सों ❀ तीरन सन्न सन्न गा छाय॥
धम् धम् धम् धम् बजैं नगारा ❀ मारा मारा परै सुनाय।
झम्झम्झम्झम्झीलमझलकैं ❀ नीलम रंग परैं दिखराय॥
चम् चम् चम् चम् भाला चमकैं ❀ दमकैं उडुगण मनों अकाश।
बम् बम् बम् बम् छत्री बँबकैं ❀ भभकैं शूरन केर प्रकाश॥

सवैया

आश करैं नहिं प्राणन की ललिते रणशूरन रीति सदा है।
प्राण कि नाश कि कीर्त्ति प्रकाश कि आश नहीं सुखया बिपदा है॥
वीर कि शान कि आन कि मान कि ठान ठने मलखान यदा है।
शान कि आन करे रण ज्वान सो प्राण पयान कियेयी तदा है॥

को गति बरणै मलखाने कै ❀ रणमाँ कठिन करै तलवार।
घोड़ बेंदुला का चढ़वैया ❀ नाहर उदयसिंह सरदार॥
गनि गनि मारै रजपूतन का ❀ बेटा देशराज का लाल।
मोहन ठाकुर बौरीवाला ❀ आला वीरशाह का बाल॥
विकट लड़ाई की संयुग में ❀ कायर भागे लिहे, परान।
बड़ा लड़ैया भीषमवाला ❀ आला मैनपुरी चौहान॥
लड़ै चौंड़िया दिल्लीवाला ❀ बेटा लड़ै पिथौरा क्यार।

को गति बरणै इन्द्रसेन कै ❀ दूनों हाथ करै तलवार ॥
मलखे बोले इन्द्रसेन से ❀ जीजा मानों कही हमार ।
बहिनी बेही तुम्हरे घर माँ ❀ तुमते सदा हमारी हार ॥
अबै मसाला कछु बिगरा ना ❀ अनभल नहीं कीन कर्त्तार ।
बिदा कराये बिन जैबे ना ❀ मानो सत्य बचन सरदार ॥
फौजै प्यारो समरभूमि ते ❀ बौरी जाउ आप ततकाल ।
तुम समुझावो महराजा को ❀ काहे रारि करैं नरपाल ॥
इतना सुनिकै इन्द्रसेन ने ❀ गरुई हाँक कीन ललकार ।
काह हकीकति तुम राखति हौ ❀ जावो बिदा करावन द्वार ॥
इतना कहिकै इन्द्रसेन ने ❀ अपनी खैंचि लई तलवार ।
दौरिकै पकस्यो उदयसिंह ने ❀ मलखे बाँधि लीन त्यहिबार ॥
देखिकै बन्धन इन्द्रसेन को ❀ मोहन आय गयो त्यहिकाल ।
मारन लाग्यो रजपूतन को ❀ मोहन बीरशाह का लाल ॥
औरो भाई जे मोहन के ❀ तेऊ करन लागि तलवार ।
झुके सिपाही बौरीवाले ❀ लागे करन भड़ाभड़ मार ॥
पैदरि पैदरि कै बरणी भै ❀ औ असवार साथ असवार ।
बड़ी लड़ाई हाथिन कीन्ह्यो ❀ घोड़न कीन टाप की मार ॥
लीन्हे साँकरि दल बादल सों ❀ हाथी करत फिरैं चिग्घार ।
भाला छूटैं असवारन के ❀ पैदल खूब चलै तलवार ॥
झुके सिपाही मोहबेवाले ❀ इनहुन कीन घोर घमसान ।
चौंड़ा वाम्हन के मुर्चा में ❀ कोऊ शूर नहीं समुहान ॥
सोहै चौंड़िया इकदन्ता पर ❀ हाथम लिये ढाल तलवार ।
मोहन ठाकुर बौरीवाला ❀ सब्जा घोड़ा पर असवार ॥
हनि हनि मारै रजपूतन का ❀ गरुई हाँक देय ललकार ।

अभिरे क्षत्री अस्सवारा सों ❀ आमाझवार चलै तलवार ॥
जौने हौदा ऊदन ताकैं ❀ बेंदुल तहाँ पहूँचै जाय ।
ऊदन मारैं तलवारिन सों ❀ बेंदुल टापन देइ गिराय ॥
भाला चमकै तहँ देवा का ❀ मोहन केरि चलै तलवार ।
घोड़ी कबुतरी का चढ़वैया ❀ मलखे सिरसा का सरदार ॥
मारि गिराये रजपूतन का ❀ कायर भागे लिहे परान ।
को गति वरणै रणशूरन कै ❀ सम्मुख करैं समर मैदान ॥
मान न रहिगा क्यहु क्षत्रिन के ❀ सबके छूटि गये अरमान ।
बहुतक करहैं समरभूमि में ❀ अधजल परे अनेकन ज्वान ॥
बहुतक सुमिरैं घर अपने को ❀ औ मन परे परे पछितायँ ।
बहुतक क्षत्री गिरैं समर में ❀ काटे वृक्ष सरिस भहराय ॥
नदी भयङ्कर बही रकत की ❀ त्यहिमाँ गिरे ऊँट गज धाय ।
छुरी कटारी मछली ऐसी ❀ ढालैं कछुवा परैं दिखाय ॥
परीं लहासैं तहँ मनइन की ❀ छोटी डोंगिया सम उतरायँ ।
बहैं सिवारा जस नदिया माँ ❀ तैसे बहे बाल तहँ जायँ ॥
भूत पिशाच योगिनी नाचैं ❀ गावैं गीत वीर बैताल ।
श्वान शृगालन की बनिआई ❀ गीधन गरे परे जयमाल ॥
चिघरैं हाथी रणमण्डल में ❀ डगरैं बड़े बड़े सरदार ।
झगरैं मलखे रणशूरन ते ❀ डगरैं डारि डारि हथियार ॥
रहि अभिलाषा नहिं केहू कै ❀ जो फिरि करै वहाँ पर मार ।
जितने लड़िका बीरशाह के ❀ बाँधे सिरसा के सरदार ॥
रहैं सिपाही जे बौरी के ❀ भागे डारि ढाल तलवार ।
भागे क्षत्रिन का मारैं ना ❀ नाहर मोहबे के सरदार ॥
रीति पुरानी इन छोड़ी ना ❀ कतहूँ समरभूमि में ज्वान ।

पूरो क्षत्रीपन करतीं ना ❀ मरतीं नहीं समर मैदान ॥
तौ यह गावत को गाथा फिरि ❀ तजिकै सकल आपनो काम।
यह सब जानत है अपने मन ❀ रहि है एक राम को नाम ॥
तबहूँ मानत है जीवन बहु ❀ तजिकै कर्म्म धर्म्म इतमाम।
यह नहिं जानत है अपने मन ❀ साँचो धर्म कर्म सुखधाम ॥
गये सिपाही नृप द्वारे पर ❀ औ सब हाल बताये जाय।
बन्धनसुनिकैसबलड़िकनको ❀ राजा गये सनाका खाय ॥
खबरि पहुँचिगै रनिवासे में ❀ राजा रानी लीन बुलाय।
बौहर आई चन्द्रावलि तहँ ❀ सोऊ गई कथा सब गाय ॥
हमरे घर के माहिल बैरी ❀ उनके चुगुलिन का बयपार।
कहा मानिकै तुम माहिल का ❀ दादा कियो यहाँ लग रार ॥
ना सुनि पावा मैं पहिले ते ❀ माहिल दीन्ह्यो रारि लगाय।
तौ अस हालत कस होतै अब ❀ तबहीं देति सबै समुझाय ॥
योगी बनिकै ब्रह्मा आये ❀ सूरति दीख दूरि ते भाय।
होति खटपटी जो ऊदन ते ❀ ब्रह्मा भाय न अउतो धाय ॥
टेक कठिन है बघऊदन कै ❀ हम खुब जानैं ठीक स्वभाव।
मिलिये दादा अब आल्हा ते ❀ याही जानो नीक उपाव ॥
सुनि सुनि बातैं सब बौहर की ❀ रानी नृपति दीन समुझाय।
सुनिकै बातैं महरानी की ❀ राजा ठीक लीन ठहराय ॥
आगि लगाई माहिल ठाकुर ❀ नातेदारी दीन तुराय।
राजा सोचत यह अपने मन ❀ पहुँचा तुरत सिंहासन आय ॥
कलम दवाइति कागज लैकै ❀ चिट्ठी लिखन लाग ततकाल।
जितनी बातैं माहिल कहिगा ❀ लिखिगे यथातथ्य नरपाल ॥
फिरि कछु बातैं चन्द्रावलि की ❀ लल्लो पत्तो लिखा बनाय।

बन्धन छोरो सब पुत्रन को ❀ तुरतै बिदा खेउ करवाय ॥
कीनि घटिहई माहिल ठाकुर ❀ नाहक ऐसा दीन लगाय ।
कहा मानिकै हम माहिल का ❀ साँचो साँच गयन बौराय ॥
लिखी बिधाता के मेटै को ❀ साँचो कहैं गीत सब गाय ।
लिखिकै चिट्ठी दै धावन को ❀ राजा बैठि गये शिर नाय ॥
लैकै चिट्ठी धावन चलिभा ❀ पहुँचा जहाँ बनाफरराय ।
चिट्ठी दीन्ह्यो सो आल्हा को ❀ ठाढ़ो भयो शीश को नाय ॥
लागि कचहरी तहँ आल्हा कै ❀ झमि झुमि रहीं पतुरियानाच ।
आल्हा बाँचन चिट्ठी लागे ❀ ह्वैगा रंग भंग तहँ साँच ॥
पढ़िकै चिट्ठी आल्हा ठाकुर ❀ सबको दीन्ह्यो हाल बताय ।
माहिल ठाकुर की किरपा ते ❀ इतना परा परिश्रम आय ॥
फिकिरि माहिल हैं ऊदन की ❀ निश्चय समुझि परैयहिबार।
जाको रच्छक रघुनन्दन है ❀ ताको जाय न बाँको बार ॥
इतना कहिकै आल्हा ठाकुर ❀ बन्धन तुरत दीन छुड़वाय ।
कहि समुझायो सब लरिकन ते ❀ राजै खबरि जनावो जाय ॥
ब्रह्मा आवत इन्द्रसेन सँग ❀ इनका बिदा देयँ करवाय ।
माहिल मामा हमरे लागैं ❀ ताते किहिनि दिल्लगी आय ॥
त्यहिमा सज्जन तुम महराजा ❀ सोऊ दया दीन बिसराय ।
क्षम्यो ढिठाई अब हमरी तुम ❀ तुम्हरी शरण गये हम आय ॥
नातेदारी में उत्तम हौ ❀ आहिउ कृष्णवंश महराज ।
गुरू श्वशुर सों संगर ठानैं ❀ क्षत्री जन्म युद्ध के काज ॥
इतना कहिकै आल्हा ठाकुर ❀ सबको बिदा कीन ततकाल ।
ब्रह्मा पहुँचे वीरशाह घर ❀ औ सब कह्यो बनाफरहाल ॥
सुनिकै बातैं सब आल्हा की ❀ राजा बिदा दीन करवाय ।

बैठि पालकी में चन्द्रावलि ❀ गौरा पारबती को ध्याय ॥
बहुधन दीन्हो ब्रह्मा ठाकुर ❀ महरन पलकी लीन उठाय ।
दशहूँ लरिकन सों महराजा ❀ आये जहाँ बनाफरराय ॥
आवत दीख्यो बीरशाह को ❀ आल्हा मिले अगारी आय ।
मिला भेंटकरि सबसों राजा ❀ अपने धाम गये हर्षाय ॥
बाजे डंका अहतंका के ❀ आल्हा कूच दीन करवाय ।
चौंड़ा सूरज दिल्ली पहुँचे ❀ आल्हा गये मोहोबे आय ॥
बेटी पहुँची जब महलन में ❀ मल्हना मिली अगाड़ी धाय ।
बारहु रानी परिमालिक की ❀ बेटी देखि गईं हरषाय ॥
सावन भावन गावन लागीं ❀ आवन लागि बिदेशी ज्वान ।
मल्लन कल्लन फरकन लागे ❀ थिरकन लागि मेघ असमान ॥
दादुर बोलन जल में लागे ❀ बिरहिन उठी करेजे पीर ।
विना पियारे घर पीतम के ❀ कैसे धरै नारि मन धीर ॥

सवैया

कैसे धरै मन धीर तिया परदेश पिया ज्यहि सावन छाये ।
राग औ रङ्ग अनंग कि जंग उमंग भरै पियकी सुधि आये ॥
गात सबै तियके सकुचात बिदेश परे पिय पेट खलाये ।
काह कहैं ललिते बिधि प्रीति अनीति किरीति सदा दरशाये ॥

गवैं सुहागिल सब सावन में ❀ बारामासी मेघ मलार ।
गड़े हिंडोला हैं घर घर में ❀ दर दर सावन केरि बहार ॥
काग उड़ावन उन घर लागीं ❀ जिन घर परे पिया परदेश ।
सावन रावन उनके लागैं ❀ जिनके चिट्ठी के अन्देश ॥
नहीं तो सावन अति पावन है ❀ गावन गीत क्यार व्यवहार ।
हमें सुहावन मनभावन है ❀ सावन क्यारसकल व्यवहार ॥

चौथि पूरिभै चन्द्रावलि कै ❀ ह्याँते होय तरँग को अन्त ।
राम रमा मिलि दर्शन देवो ❀ इच्छा यही मोरि भगवन्त ॥
खेत छूटिगा दिननायक सों ❀ झंडा गड़ा निशा को आय ।
तारागण सब चमकन लागे ❀ सावन मेघ रहे घहराय ॥
कहुँ कहुँ तारा कहुँ कहुँ बादल ❀ नभहू भयो कलियुगी आय ।
आशिर्वाद देउँ मुन्शीसुत ❀ जीवो प्रागनरायण भाय ॥
रहे समुन्दर में जबलों जल ❀ जबलों रहैं चंद औ सूर ।
मालिक ललिते के तबलों तुम ❀ यशसों रहौ सदा भरपूर ॥
माथ नवावों पितु अपने को ❀ मन में रामचन्द्र को ध्याय ।
तुम्ही खेवैया हौ नैया के ❀ औ रघुरैया होउ सहाय ॥
माघकृष्ण तिथि श्रीगणेशको ❀ ताते बार बार पदध्याय ।
सम्वत वनइस से पचपन में ❀ पूरो भयो आज अध्याय ॥

चन्द्रावलि की चौथि सम्पूर्ण ।

आल्हखण्ड

बलखबुखारे की लड़ाई

अथवा

इन्दलहरण व विवाह वर्णन

सवैया

बाजत झांझ मृदंग तहाँ औ सबै मुरचंगन सों स्वर गावैं।
बाजत तार सितारन के यकतारन की गति कौन बतावैं॥
राजत बीण तहाँ तबला अबला जहँ झुंडन झुंडन आवैं।
गाजत कृष्ण तहाँ ललिते अब जहाँ शिव गोपी रूप बनावैं॥

सुमिरन

मैया भैया और बपैया ❀ सब दिशि देखा खूब निहार।

बिना चरैया गैया वाला ❀ दैया कौन होय रखवार ॥
बूड़ै नैया भवसागर में ❀ कोउ न मिलै खेवैया हाल ।
मैया यशुमति केर कन्हैया ❀ भैया साँच कहैं सुरपाल ॥
पार लगैया म्वरि नैया के ❀ गैयापाल कृष्ण महराज ।
और खेवैया को नैया का ❀ जाकी शरण लेयँ हम आज ॥
तुम्ही गुसैयाँ दीनबन्धु हौ ❀ औ ब्रह्मण्य देव ब्रजराज ।
लाज रखैया बाम्हन तनकी ❀ साँचे एक कृष्ण महराज ॥
शरणहि ताकत बिप्र सुदामा ❀ पायो सकल सम्पदा राज ।
छूटि सुमिरनी गई कृष्ण की ❀ इन्दल ब्याह बखानों आज ॥

अथ कथाप्रसंग

परब दशहरा की जग जाहिर ❀ बुड़की हेतु जाय संसार ।
भारी मेला श्रीगंगा को ❀ हिंदुन क्यार पूर त्यवहार ॥
बहुतक छैला अलबेला तहँ ❀ घोड़न उपर भये असवार ।
करी तयारी श्रीगंगा की ❀ चक्कस लिये बुलबुलनक्यार ॥
जेठ दुपहरी आरी ह्वैकै ❀ ब्यारी करैं वृक्षतर आय ।
देखि गँवारी तहँ नारी नर ❀ बोला तुरत बनाफरराय ॥
कहाँ तयारी नर नारी करि ❀ ब्यारी किह्यो यहाँ पर आय ।
देखि बनाफर को नर नारी ❀ बोले साँच देयँ बतलाय ॥
कौन तयारी हम बिठूर की ❀ भारी पर्ब दशहरा केरि ।
चक्रित ह्वैकै ऊदन दीख्यो ❀ चारिउ दिशा तरफ फिरिहेरि ॥
भारी मेला अलबेला तहँ ❀ रेला चला जाय सब राह ।
घोड़ बेंदुला का चढ़वैया ❀ आयो जहाँ बैठ नरनाह ॥
हाथ जोरिकै तहँ आल्हा के ❀ ऊदन बोले शीश नवाय ।
करैं तयारी हम गंगा की ❀ दादा हुकुम देउ फरमाय ॥

इतना सुनिकै आल्हा बोले ❀ साँची सुनो लहुरवा भाय।
देश देश के राजा अइ हैं ❀ होई भीर भार अधिकाय॥
रारि मचैहौ तुम मेला में ❀ हम पर परी आपदा आय।
ताते जावो नहिं मेला को ❀ मानो कही लहुरवा भाय॥
इतना सुनिकै माहिल बोले ❀ तुम सुनि लेउ बनाफरराय।
लड़िका ऊदन अब नाहीं हैं ❀ जो तहँ रारि मचैहैं जाय॥
बातैं सुनिकै थे माहिल की ❀ आल्हा बोले बचन बनाय।
तुम चलि जावो माहिल मामा ❀ तौ हम ऊदन देयँ पठाय॥
इतना सुनिकै माहिल बोले ❀ हम तो करब जाय असनान।
करो तयारी ऊदन ठाकुर ❀ आल्हा बचन मानिपरमान॥
आल्हा बोले फिरि देवा ते ❀ तुमहूँ जाउ साथ यहिकाल।
पै तुम बर्ज्यो बघऊदन को ❀ जहँ पर होय रारि को हाल॥
इतना कहिकै आल्हा ठाकुर ❀ महलन फेरि गयो अलसाय।
करै तयारी ऊदन लागे ❀ बाँके घोड़ लीन कसवाय॥
कच्छी मच्छी हरियल मुश्की ❀ सुर्खा सुरँगा रंग बिरंग।
लक्खा गर्रा पँच कल्यानी ❀ सब्जा स्याह एकही रंग॥
चुने सिपाही लिये संग में ❀ जिनते हारि गई तलवार।
सजा रिसाला घोड़न वाला ❀ लग भग जानो एक हजार॥
सजे सिपाही पंद्रा सौ लग ❀ एकते एक लड़ैया ज्वान।
बाजे डंका अहतंका के ❀ घूमन लागे लाल निशान॥
इन्दल आये त्यहि समया में ❀ ऊदन पास पहूँचे आय।
हमहूँ चलिबे श्रीगंगा को ❀ चाचा लेवो साथ लिवाय॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ बेटा मानो कही हमार।
दादा भौजी जो रोकैं ना ❀ हमरे साथ होउ तय्यार॥

इन्दल चलिभे तब महलन को ❀ माता पास पहूँचे जाय।
हाथ जोरिकै इन्दल बोले ❀ मातै बार बार शिरनाय॥
हुकुम कराय देउ ददुवा सों ❀ आवों चाचा साथ नहाय।
इतना सुनिकै सुनवाँ बोली ❀ बेटै बारबार समुझाय॥
पर्व दशहरा की टरिजावै ❀ फिरि तुम आयो गङ्ग नहाय।
भारी मेला है बिठूर का ❀ जो तुम जैहौ पूत हिराय॥
हौ इकलौता म्वरी कोखि में ❀ ताते मोर प्राण घबड़ाय।
इतना सुनिकै इन्दल बोले ❀ माता साँच देयँ बतलाय॥
जान न पावैं जो गंगा को ❀ तौ मरिजायँ जहर को खाय।
हुकुम देवावै की ददुवा ते ❀ की अब घरै बैठि पछिताय॥
सुनिकै बातैं ये इन्दल की ❀ सुनवाँ गई सनाका खाय।
गई तड़ाका ढिग आल्हा के ❀ इन्दल हाल बतावा जाय॥
बातैं सुनिकै सब सुनवाँ की ❀ आल्हा बोले बचन सुनाय।
लिखी बिधाता की मेटै को ❀ अब तुम देवो पूत पठाय॥
जहर खाय कै जो मरि जाई ❀ तौहू शोच होय अधिकाय।
पार लगै हैं श्रीगंगा जी ❀ यह मत ठीक लीन ठहराय॥
इतना सुनिकै सुनवाँ चलिभै ❀ इन्दल पास पहूँची आय।
औ बुलवायो बघऊदन को ❀ सबियाँ हाल कह्यो समुझाय॥
इन्दल बिगरे हैं महलन में ❀ गंगा इन्हैं देउ अन्हवाय।
पै हम सौंपति त्वहिं इन्दल को ❀ देवर बार बार शिरनाय॥
किह्यो बखेड़ा नहिं मेला में ❀ रेला होय तहाँ अधिकाय।
वहाँ न जायो इन्दल लैकै ❀ मान्यो कही बनाफरराय॥
इतना सुनिकै ऊदन इन्दल ❀ दोऊ चलिभे शीश नवाय।
जायकै पहुँचे फिरि फौजन में ❀ लश्कर कूच दीन करवाय॥

बायें घोड़ा है देवा का ❀ दहिने बेंदुल का असवार।
बीच म जावै इन्दल ठाकुर ❀ कम्मर परी एक तलवार॥
पाँच दिनौना मारग लागे ❀ छठयें दिवस पहूँचे जाय।
भारी मेला भा बिठूर माँ ❀ आवा तहाँ कनौजीराय॥
बाजे डंका तहँ ऊदन का ❀ लाखनि धावन लीन बुलाय।
कहि समुझावा त्यहि धावनको ❀ डंका बन्द देउ करवाय॥
हुकुम कनौजी का नाहीं है ❀ डंका कोऊ बजावै आय।
इतना सुनिकै धावन चलिकै ❀ डंका बजत दीन रुकवाय॥
कहा न मान्यो जब बघऊदन ❀ देवा ठाकुर उठा रिसाय।
तुम्हैं मुनासिब यह चहिये ना ❀ सबसों बैर बढ़ावो भाय॥
चलिकैमिलियेअबलाखनिसों ❀ उनसों हुकुम लेउ करवाय।
हीनी तुम्हरी कछु ह्वैहै ना ❀ मानो कही बनाफरराय॥
सुनिकै बातैं ये देवा की ❀ ऊदन मानिगयो त्यहिकाल।
पाँच दुसाला दुइ हीरा लै ❀ चलिभा देशराज का लाल॥
नचै पतुरिया त्यहि तम्बू में ❀ ज्यहि में रहैं कनौजीराय।
ऊदन ठाकुर तहँ पहुँचत भा ❀ राखी भेंट अगाड़ी जाय॥
हाथ पकरि कै लाखनि राना ❀ अपने पास लीन बैठाय।
कही हकीकति बघऊदन ने ❀ लाखनि हुकुम दीनफरमाय॥
बाजै डंका इक ऊदन का ❀ औरन बन्द देउ करवाय।
इतना सुनिकै ऊदन चलिभे ❀ तम्बुन फेरि पहूँचे आय॥
सुनोहकीकतिअभिनन्दनकी ❀ हंसा ताको राज कुमार।
त्यहि की बेटी चित्तर रेखा ❀ मेला हेतु भई तय्यार॥
नटिनी सँग में त्यहि बेटी के ❀ जादू क्यार जिन्हैं बयपार।
बलख बुखारे को राजा जो ❀ त्यहिअभिनन्दननामउदार॥

त्यहि का बेटा हंसा ठाकुर ❀ चलिभा बहिनीसाथलिवाय।
सवा लाख लश्कर को लैकै ❀ ब्रह्मावर्त्त पहूँचा आय॥
तम्बू गड़िगे त्यहि रेती माँ ❀ भारी ध्वजा रही फहराय।
संग सहेली त्यहि बहिनी की ❀ बोलीं बेटी बचन सुनाय॥
चलिये हनवन जल्दी करिये ❀ अब दिन गयो याम भरआय।
सुनिकै बातैं ये सखियन की ❀ बेटी चली तड़ाका धाय॥
भा भटभेरा तहँ इन्दल का ❀ देखत रूप गईं ललचाय।
मन अरु नैना यकमिल ह्वैगे ❀ सखियन देखिगईं सकुचाय॥
फिरिफिरिचितवैदिशिइन्दलके ❀ हनवन करै गंग को बारि।
विधिउ न जानै गति नारी की ❀ दशरथ मरे नारिसों हारि॥
सोई नारी फिरि फिरि चितवै ❀ कैसी करैं आजु त्रिपुरारि।
इन्दल निकले जल के बाहर ❀ सोऊ निकलिपरी सुकुमारि॥
दिह्यो दक्षिणा द्विज देवन को ❀ दोऊ मोहवे के सरदार।
तहँ ते चलिभे फिरि तम्बू को ❀ देखत मेला केरि बहार॥
चचा भतीजे दोऊ ठाकुर ❀ तम्बुन फेरि पहूँचे आय।
बेटी प्यारी अभिनन्दन की ❀ सोऊ चली तहाँ ते धाय॥
आयकै पहुँची सो तम्बुन में ❀ औसखियनसों लगी बतान।
ऐस रँगीला और सजीला ❀ मेला नहीं दूसरो ज्वान॥
करिकै जादू याको हरिये ❀ करिये सखी स्वई अब साज।
मन नहिं हटको हमरो मानै ❀ ना अब करैं तुम्हारी लाज॥

सवैया

होत अकाज न लाज रहै यह राज समाज लखे दुख छावै।
जो कुलकानि न आनिकरों कुलटा उलटा म्वहिं लोग बतावै॥
भावै यहै हमको सजनी रजनी बिन पीतम आनि मिलावै।

पावै जबै ज्यहि नेह लग्यो ललिते मनमें तबहीं सुख आवै ॥
सुनिकै बातैं चित्ररेखा की ❀ सखियनकहाबहुतसमुझाय।
धीरज राखो अपने मन माँ ❀ पीतम मिली तुम्हारो आय ॥
इतना कहिकै संग सहेली ❀ हेली तुरत भई तय्यार।
लय अलबेली संग सहेली ❀ आई देखन गङ्ग बहार ॥
ऊदन इन्दल देवा ठाकुर ❀ तीनों गये तहाँ पर आय।
नाव मँगायो मल्लाहन ते ❀ बैठ्यो सुमिरि शारदा माय ॥
बैठी नावन में चित्ररेखा ❀ बेखा नटिनिन केरि बनाय।
काह बतावैं हम लेखा त्यहि ❀ देखा रूप नहीं है भाय ॥
पै अवरेखा चितरेखा को ❀ लेखा कामदेव की नारि।
उठैं तरंगैं तहँ गंगा की ❀ जंगा करैं बारि सों बारि ॥
लैकै पुरिया भैरोंवाली ❀ ऊदन उपर दीन सो डारि।
बीर महम्मद की पुरिया को ❀ देवा उपर चलावा नारि ॥
नजर बन्द भे जब दूनों कै ❀ तुरतै इन्दल लीन उतारि।
सुवा बनायो सो इन्दल को ❀ पिंजरा लीन तड़ाका डारि ॥
उतरिकै नावन सों जल्दी सों ❀ तम्बुन गई तड़ाका आय।
उतरी जादू जब ऊदन की ❀ तब नहिं इन्दल परे दिखाय ॥
जब नहिं दीख्यो तहँइन्दल को ❀ ऊदन तुरत गये घबड़ाय।
जार मँगाये तहँ लोहे के ❀ सो गंगा माँ दये डराय ॥
मच्छ कच्छ बहुतक फँसि आये ❀ पै नहिं इन्दल परे दिखाय।
तिल तिल ढूँढ़ा भुइँ मेला में ❀ ऊदन देवा संग लिवाय ॥
पता न पायो जब इन्दल को ❀ तम्बुन फेरि पहूँचे आय।
कही हकीकति तहँ माहिल ते ❀ नाहर उदयसिंह तहँ गाय ॥
सुनिकै बातैं उदयसिंह की ❀ माहिल बोले वचन बनाय।

करो अँदेशा कछु जियरे ना ❀ आल्है द्याब वहाँ समुझाय ॥
जादू कै कै कोउ इन्दल का ❀ साँचो लियो बनाफरराय ।
घरते ह्वैकै फिरि तुम ढूँढ्यो ❀ ह्याँते कूच देउ करवाय ॥
इतना सुनिकै उदयसिंह ने ❀ डंका कूच दीन बजवाय ।
पाँच रोज को धावा करिकै ❀ दशहरिपुरै पहूँचे आय ॥
ऊदन रहिगे एक कोस में ❀ माहिल गये अगाड़ी धाय ।
बड़ी खातिरी आल्हा करिकै ❀ अपने पास लीन बैठाय ॥
आल्हा बोले तहँ माहिल ते ❀ मामा हाल देउ बतलाय ।
ऊदन देबा इन्दल बेटा ❀ तीनों रहे कहाँ पर भाय ॥
हम नहिं देखत इन तीनों को ❀ ताते चित्त बहुत घबड़ाय ।
इतना सुनिकै माहिल बोले ❀ साँची सुनो बनाफरराय ॥
ख्यलै नेवारा गे नदिया में ❀ ऊदन इन्दल साथ लिवाय ।
ऊदन देबा इकमिल ह्वैकै ❀ औ इन्दल को दीन बहाय ॥
टरिजा टरिजा माहिल मामा ❀ धरती खोदि लेउँ गड़वाय ।
ऐसी बातैं फिरि बोले ना ❀ ठाकुर साँच दीन बतलाय ॥
है मर्दाना ऊदन बाना ❀ मामा काह गये बौराय ।
किहे दिल्लगी की साँची है ❀ हमरो चित्त बहुत घबड़ाय ॥
इतना सुनिकै माहिल बोले ❀ साँची कहा बनाफरराय ।
पोथा पढ़िकै धरि दीन्ह्यो सब ❀ अकिल तुम्हरी गई हिराय ॥
कौनिअदावतिनलपुष्कलकी ❀ भारत पढ़े बनाफरराय ।
कैसि दुर्दशा नल की कीन्ह्यो ❀ पुष्कलनलकोजुआँखिलाय ॥
विना वस्त्र के महराजा भे ❀ साजा सबै साज कर्त्तार ।
तिनकी प्यारी दमयन्ती जो ❀ सोऊ छूटि गई त्यहि बार ॥
त्यहि दमयन्ती के ब्याहे में ❀ आये पवन अग्नि सुरराज ।

उद्यम कीन्ह्यो भल ब्याहे को ❀ चाहे दूत भये नलराज ॥
ब्याह न कीन्ह्यो दमयन्ती ने ❀ बिन्ती बहुत कीन नलराज ।
गन्ती कीन्ह्यो दमयन्ती ना ❀ लज्जित भये तहाँ सुरराज ॥
बारह बरसै बनबाजी मा ❀ राजी भये इन्द्र महराज ।
आल्हा भैने साँची जानो ❀ ऊदन कीन साँच यह काज ॥
इतना सुनिकै आल्हा ठाकुर ❀ गरुई हाँक दीन ललकार ।
टरिजा टरिजा उरई वाले ❀ तोरे चुगुलिन का बयपार ॥
साँची साँची आल्हा ठाकुर ❀ तुम्हरो इन्दल गयो हिराय ।
कहौं असाँचा आल्हा ठाकुर ❀ साँचा सहौं पुत्र का घाय ॥
करों दिल्लगी अस कबहूँ ना ❀ साँची सुनो बनाफरराय ।
ऊदन बोले ह्याँ देबा ते ❀ हमरो चित्त बहुत घबड़ाय ॥
दशहरि पुरवा माहिल पहुँचे ❀ कैसी खबरि सुनावैं जाय ।
पुत्रशोक सम दुख दूसर ना ❀ जानत गाथ भली तुम भाय ॥
पुत्रशोक सों दशरथ मरिगे ❀ कीरति रही जगत में आज ।
कीरति सागर भट नागर जे ❀ आगर सबै गुणन रघुराज ॥
तेई खेवैया अब नैया के ❀ भैया काह करैं धौं आज ।
यहु दिन आये लग ध्यावै जो ❀ कलयुग स्वऊभक्त शिरताज ॥
सोई कलयुग के ऊदन हम ❀ साँचे कर्म्म कीन रघुराज ।
दया न छोड़ा द्विज गाइन ते ❀ पीठि न दीन प्राण के काज ॥
नहिं अभिमानी बातैं ठानी ❀ बालक विप्र साथ महराज ।
परम पियारे द्विज तुम का हैं ❀ निर्मलएकत्रचाज्यहिभ्राज ॥
ऐसी स्तुति ऊदन कीन्ह्यो ❀ देबा चलत भयो ततकाल ।
आयकै पहुँच्यो त्यहि मंदिर में ❀ ज्यहि में देशराज को लाल ॥
ठाढ़े दीख्यो जब देबा को ❀ चलिभा उरई का सरदार ।

भल भल रोंका आल्हा ठाकुर ❀ करिकै बहुत भाँति सतकार ॥
पै नहिं मान्यो जब माहिल ने ❀ आयसु दियो बनाफरराय ।
देखिकै सूरति फिरि देबा की ❀ आल्हा गये बहुत घबराय ॥
कैसी गुजरी है तीरथ में ❀ देबा साँच देय बतलाय ।
परम पियारो पुत्र हमारो ❀ इन्दल राख्यो कहाँ छिपाय ॥
पूत न होवैं बहु कलयुग में ❀ यामें भूतन को अधिकार ।
सेवा करावैं बालापन में ❀ ज्वाने भये बनैं गमुगार ॥
पूत सपूतो इन्दल प्यारो ❀ कहँ पर मैनपुरी चौहान ।
इतना सुनिकै देबा बोला ❀ साँची कहौं शपथ भगवान ॥
बंश पिथौरा के नजदीकी ❀ आहिन सत्य बनाफरराय ।
आल्हा ऊदन मलखे सुलखे ❀ भाई सरिस चारिहू भाय ॥
कमती जानैं जो काहू को ❀ तो म्वहिं सजा देयँ भगवान ।
कोऊ लैगा छलि जादू सों ❀ इन्दल तुम्हरो पूत परान ॥
ऊदन बिगड़े तहँ मेला में ❀ जैबे पता लगावन काज ।
तिल तिल पृथ्वी मेला ढूँढ़ा ❀ भारी भीर तहाँ महराज ॥
पता न लाग्यो जब इन्दल को ❀ माहिल कहा तबै समुझाय ।
आल्हा ठाकुर को समुझावब ❀ ऊदन कूच देब करवाय ॥
कहा मानिकै तब माहिल का ❀ डाँड़े परा लहुरवा भाय ।
जौन देश में इन्दल ह्वैहैं ❀ ऊदन लैहैं खोज लगाय ॥
बातैं सुनिकै ये देबा की ❀ आल्हा बहुत गये घबड़ाय ।
जो कछु भाषा माहिल ठाकुर ❀ साँची जना बनाफरराय ॥
पुत्रशोच सों उर धड़कत भो ❀ जियरे धीर धरा ना जाय ।
आल्हा बोले तब देबा ते ❀ तुम ऊदन को लवो बुलाय ॥
उनहीं पाँयन देबा चलिभा ❀ ऊदन खबरि दीन बतलाय ।

बड़े शोच में बड़ भैया हैं ❀ तुमको तुरत बुलायनि भाय ॥
इतना सुनिकै ऊदन चलिभे ❀ सम्मुख गये तड़ाका आय ।
आवत जान्यो जब ऊदन को ❀ आल्हा शीशलीन निहुराय॥
औदिशि दीख्यो ना ऊदन के ❀ मानों शत्रु ठाढ़ भो आय ।
हाथ जोरिकै ऊदन बोले ❀ चरणन बार बार शिरनाय ॥
मोहलति पावों छा महिना कै ❀ इन्दल खोजि दिखाओं आय ।
इतना सुनिकै आल्हा जरिगे ❀ अपनो कोड़ा लीन उठाय ॥
पीटन लाग्यो जब ऊदन को ❀ सुनवाँ सुनत गई तहँ आय ।
कहि समुझायो सो आल्हा को ❀ आल्हा तुरत दीन दुरियाय ॥
टरिजा टरिजा री सम्मुख ते ❀ नहिं शिरकाटि देउँ भुइँ डारि ।
ऊदन मारा है इन्दल को ❀साँचीखबरिमिलीम्वहिंनारि॥
सुनवाँ बोली फिरि आल्हा ते ❀ साँची सुनो बनाफरराय ।
हम तुम जी हैं जो दुनिया में ❀ ह्वैहैं पुत्र नाथ अधिकाय ॥
मिली सहोदर फिरि भाई ना ❀ आई कौन साँकरे काज ।
सुन्दरगढ़ को चाचा हमरो ❀ तुमको कैद कीन महराज ॥
बनि सौदागर उदयसिंह ने ❀ तुम्हरी कैद दीन छुड़वाय ।
बरा बरस के ऊदन ठाकुर ❀ माड़ो लीन बाप का दायँ ॥
लड़ि गजराजा सों ऊदन ने ❀ मलखे ब्याह दीन करवाय ।
नरपति राजा सों लड़िकै फिरि ❀ फुलवा लये लहुरवाभाय ॥
हथी पछारा इन दिल्ली में ❀ द्वारे पृथीराज के जाय ।
ऐसे नामी इन ऊदन का ❀ मारब नहीं मुनासिब आय ॥
इतना सुनिकै आल्हा ठाकुर ❀ जूरा पकड़ि तड़ाका लीन ।
खैंचि तमाचा शिरमाँ मारा ❀ सुनवाँ गमनमहल कोकीन ॥
मारन लाग्यो फिरि ऊदन को ❀ धावलि सुनत पहूँची आय ।

औ ललकारा फिरि आल्हा को ❀ मारो नहीं बनाफरराय ॥
इतना सुनिकै आल्हा बोले ❀ माता बैठु धाम में जाय ।
जैसे ऊदन तुमको प्यारे ❀ तैसे पूत हमारो आय ॥
हम समुझावा भल ऊदन को ❀ तुम ना जाउ लहुरवा भाय ।
पूत हमारे के मारन को ❀ ऊदन मेला गये लिवाय ॥
बातैं सुनिकै ये आल्हा की ❀ द्यावलि ठाढ़ि रही शिरनाय ।
ऊदन ठाकुर को आल्हा ने ❀ कोड़न चर्सा दीन उड़ाय ॥
औ ललकारा फिरि ऊदन को ❀ आल्हा दाँतन ओठ चबाय ।
धिक धिक तेरी रजपूती का ❀ इन्दल बिना पहूँचे आय ॥
दशहरि पुरवा अब आये ना ❀ नहिं हनिडरों खड्ग के घाय ।
जहँ मन भावै तहँ चलि जावै ❀ साँची शपथ शारदा माय ॥
सुनिकै बातैं ये आल्हा की ❀ ऊदन चला बहुत घबड़ाय ।
सुनवाँ फुलवा द्यावलि तीनों ❀ पृथ्वी गिरीं पछारा खाय ॥
देबा ऊदन दोऊ ठाकुर ❀ सिरसागढ़े पहूँचे जाय ।
खबरि पायकै मलखाने ने ❀ फाटक बन्द लीन करवाय ॥
यह गति दीख्यो उदयसिंह ने ❀ ठाढ़ो लाग तहाँ पछिताय ।
कोऊ साथी नहिं बिपदा में ❀ यह देबा ते कह्यो सुनाय ॥

सवैया

जाकि सुता हरिके गृह शोभित चन्द्रललाट महेश प्रवीनो ।
इन्द्र गयन्द दयो रवि को हय देवन धेनु द्रुमादिक दीनो ॥
श्री मुनिरायजू कोप कियो तब गण्डकधारि सबै जल पीनो ।
एते बड़े को विपत्ति परी तब सिंधु कि काहु सहाय न कीनो ॥

इतना सुनिकै देबा बोला ❀ साँची सुनो लहुरवा भाय ।
साथ तुम्हारो हम छाँड़ब ना ❀ चहु तन धर्जा धर्जा उड़ि जाय ॥

पै हम बाँचे बहु पुराण हैं ❀ देखी कथा अनेकन भाय।
विपति में साथी कोउ बिरला है ❀ साँची सुनो बनाफरराय॥

सवैया

राग वही ज्यहि राम बसैं अरु ध्यान वही जो धनी के धरे का।
प्रीति वही जो सदा निबहै अरु दाग वही कटु बैन कहे का॥
सुख सम्पत्ति अनेक भरी पर आवै नहीं कोउ काम परे का।
काहे को आदम शोचत है कोउ मित्र नहीं है बिपत्ति परे का॥
ठाकुर वही जो दुख सुख बूझै सेवक वो मन लाग रहे का।
भाई वही जो भारहि खैंचत पुत्र वही परिवार बढ़े का॥
नारी वही जो जरै पिय के सँग शूर वही सनमुक्ख लड़े का।
सम्पति में तो अनेक मिलैं पर मित्र वही जो बिपत्ति परे का॥

इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ साँची कही समय की बात।
अब मन भाई यह हमरे है ❀ नरवर चलैं आज ही तात॥
यह मन भाय गई देबा के ❀ दोऊ भये बेगि तय्यार।
सात रोज की मँजलि करिकै ❀ नरवर पहुँचि गये सरदार॥
यह सुधि पहुँची जब मोहबे में ❀ आल्हा तजा लहुरवाभाय।
बारहु रानिन सों परिमालिक ❀ महलन गिरे मूर्च्छा खाय॥
तुरत पालकी को मँगवायो ❀ दशहरिपुरै पहूँचे जाय।
औ धिरकाल्यो भल आल्हा को ❀ रहिगा चुप्प बनाफरराय॥
कायल ह्वैगे आल्हा ठाकुर ❀ राजा लौटि परा पछिताय।
ऊदन बैठे ह्याँ कुँवना पर ❀ हिरिया गई तहाँ पर आय॥
देखिकै सूरति बघऊदन कै ❀ हिरिया गई तुरत पहिचान।
हँसिकै हिरिया बोलन लागी ❀ साँची सुनो बनाफर ज्वान॥
कौनि मुसीबत तुम पर परिगै ❀ जो तजिदियो ढालतलवार।

इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ मालिनि ठीक कहै यहिबार॥
परी मुसीबत हमरे ऊपर ❀ पृथ्वी मोहबा लीन लुटाय।
घोड़ बेंदुला फुलवा मुनवाँ ❀ लीन्ह्यो जीति पिथौरा राय॥
करब नौकरी हम मकरँद कै ❀ महलन खबरि जनावै जाय।
इतना सुनिकै हिरिया मालिन ❀ महलन अटी तुरतही आय॥
जहँ पर माता मकरन्दा की ❀ ऊदन कथा गई तहँ गाय।
आवन सुनिकै बघऊदन का ❀ माता मकरँद लीन बुलाय॥
जो कुछ गाथा मालिनि भाषी ❀ माता मकरँद गई सुनाय।
इतना सुनिकै मकरँद चलिभा ❀ कुँवना उपर पहूँचा आय॥
कुशल प्रश्न करि सब आपस में ❀ मकरँद बोला अति घबड़ाय।
हाल बतावो ऊदन ठाकुर ❀ हमरे धीर धरा ना जाय॥
हिरिया मालिनि की बातैं सुनि ❀ माता बैठि महल पछिताय।
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ मालिनि बात दिल्लगी भाय॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ मकरँद घरका चला लिवाय।
ऊदन पहुँचे रनिवासे में ❀ देवा टिका द्वार पर आय॥
हाल बतायो सब महलन में ❀ जैसे इन्दल गये हिराय।
माग पीटा जस आल्हा ने ❀ सोऊ कथा गये सब गाय॥
बनी रसोई फिरि महलन में ❀ संध्या काल पहूँचा आय।
मकरँद ऊदन भोजन करिकै ❀ सोये विकट नींद को पाय॥
चले दिवाकर घर अपने को ❀ पच्छिन लियो बसेरा धाय।
लिहे अञ्जली दोउ हाथन में ❀ सुरजन अर्घ देयँ द्विजराय॥
खेत छूटिगा दिननायक सों ❀ झंडा गड़ा निशाको आय।
तारागण सब चमकन लागे ❀ सन्तन धुनी दीन परचाय॥
परे आलसी निज निज शय्या ❀ घों घों कराठ रहे घर्राय।

गुरु पिता दोऊ पद जिनके ❀ तिनके चरणन शीशनवाय ॥
करों तरंग यहाँ सों पूरण ❀ तवपद सुमिरि भवानीकन्त ।
राम रमा मिलि दर्शन देवो ❀ इच्छा यही मोरि भगवन्त ॥

सवैया
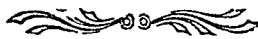
कौन फली भव काल बली यहि पुण्य थली मन माँझ बिचारा ।
निंदि कै काहि बखान करों क्यहि कौन सों बैर करों यहि बारा ॥
याहि लियों ठहराय मनै प्रभु एक सों एक हैं देव उदारा ।
बेद पुराण बतावत हैं ललिते सब ते बढ़िकै ॐकारा ॥

सुमिरन

इकलो अक्षर ॐकार को ❀ अब हम शिरसों करैं प्रणाम ।
ब्रह्मा बिष्णू औ शिवशंकर ❀ दुर्गा केर ताहि में धाम ॥
एक मात्रा में शिवशंकर ❀ दुर्गा अर्द्ध करैं बिश्राम ।
एक मात्रा में ब्रह्मा जी ❀ एक म रहैं हमारे राम ॥
इकलो अक्षर यहु जो ध्यावै ❀ पूरण होयँ तासु के काम ।
यहिते बढ़िकै हिन्दूमत में ❀ दूसर नहीं बेद में नाम ॥
अज अबिनाशी घट घट बासी ❀ पूरण ब्रह्म चराचर राम ।
बेद व्याकरण दोउ साखी हैं ❀ खण्डन करै कौन यह नाम ॥
नाम न रैहै जब दुनियाँ मां ❀ तब सब होइ हैं पशू समान ।
कीरति गावों बघऊदन कै ❀ सुनिये खूब ध्यान धरिज्वान ॥

अथ कथाप्रसंग

उदय दिवाकर भे पूरब में ❀ किरणनकीनजगतउजियार ।
सोयकै जागे बघऊदन तब ❀ प्रातःकृत्य कीन सरदार ॥

ऊदन देबा मकरँद ठाकुर ❀ तीनों एक जगा में आय।
ऊदन बोले तब देबा ते ❀ दादा शकुन देउ बतलाय॥
भाई भौजी माता छूटी ❀ फुलवा ऐसि छूटिगै नारि।
पता लगाये बिन घर जावैं ❀ दादा डरैं जान सों मारि॥
माता तलफति घरमाँ होई ❀ भौजी होई हाल बिहाल।
मल्हना रानी रोवति होई ❀ होइ हैं दुखी रजापरिमाल॥
हाल बतावों का फुलवा के ❀ मुर्दा सरिस होयगी बाल।
जेठ दशहरा दुशमन ह्वैगा ❀ कहिये काह करैं यहिकाल॥
इकलो बेटा स्वरे भैया के ❀ सब बिधि रूप शीलगुणवान।
क्षमा न करि हैं सो बेटा बिन ❀ यह हम ठीक कीन अनुमान॥
इतना सुनिकै देबा बोला ❀ भैया उदयसिंह सरदार।
प्रश्न हमारो यह बोलत है ❀ योगी बनो फेरि यहिबार॥
यह मन भाई उदयसिंह के ❀ मकरँद साथ भयो तय्यार।
तिलकलगायोफिरिकेशरिका ❀ गेरुहा वस्त्र पहिरि सरदार॥
गुदरी डारी फिरि काँधे माँ ❀ त्यहि माँ परी ढाल तलवार।
डमरू लीन्ह्यो मकरंदा ने ❀ बँसुरी उदयसिंह सरदार॥
खँभड़ी लीन्ह्यो देबा ठाकुर ❀ मकरँद बोलि उठा त्यहिबार।
महल हमारे पहिले चलिये ❀ पाछे अनत चलेंगे यार॥
सम्मत करिकै तीनों योगी ❀ पहुँचे जाय राज दरबार।
बैठ सिंहासन नरपति राजा ❀ देबा कीन्ह्यो राम जुहार॥
पै पहिचाना जब नरपति ना ❀ मकरँद हाथ जोरि शिरनाय।
जितनी गाथा बघऊदन की ❀ सो राजा को दीन बताय॥
हाल जानिकै महराजा ने ❀ तुरतै हुकुम दीन फर्माय।
तहँने चलिभे मकरँद ऊदन ❀ माता पास पहूँचे आय॥

मर्म जानिकै महतारी ने ❀ आशिर्बाद दीन हरषाय।
मकरँदचलिभानिजमहलनको ❀ पहुँचा नारि पास सो जाय॥
कही हकीकति सब रानी सों ❀ कुसुमा बोली शीश नवाय।
पहिले जैयो तुम झुन्नागढ़ ❀ तहँ पर पता लगैयो जाय॥
घर घर जादू है झुन्नागढ़ ❀ कन्ता सत्य कहौं समुझाय।
तुमहूँ जावो ऊदन सँग में ❀ हमरो चित्त बहुत घबड़ाय॥
इतना कहिकै कुसुमा रानी ❀ पुरिया चारि दीन पकराय।
रखिहौ मुखमाँ यह पुरिया जब ❀ जादू सकी निकट नहिं आय॥
लैकै पुरिया मकरन्दा फिरि ❀ तहँ ते कूच दीन करवाय।
देबा ऊदन जहँ ठाढ़े थे ❀ मकरँद तहाँ पहूँचा आय॥
सम्मत करिकै तीनों योगी ❀ झुन्नागढ़ै चले फिरि धाय।
सात रोज की मैंजलि करिकै ❀ झुन्नागढ़ै पहूँचे आय॥
बाजा डमरू मकरन्दा का ❀ खँझड़ी मैनपुरी चौहान।
बाजी बँसुरी तहँ ऊदन की ❀ गावन लाग राग कल्यान॥
तान कान में ज्यहि के जावे ❀ त्यहि के जाय प्रान पर आन।
मोहित ह्वैगे नर नारी सब ❀ लागे हृदय तान के बान॥
भा खलभल्ला औ हल्ला अति ❀ लल्ला छाँड़ि चलीं तब बाल।
होश बजुल्ला ना छल्ला का ❀ *अल्ला ध्यान करैं त्यहिकाल॥
भये दुपल्ला उरपल्ला तब ❀ कल्लन कल्ला दीन भिड़ाय।
प्राणन तल्ला तज्यो इकल्ला ❀ लल्ला जौनु वनाफर राय॥
बड़ी भीर भै गलियारे में ❀ नाचै देशराज का लाल।
बाजै डमरू जस मकरँद कै ❀ देबा देय तैसही ताल॥
रूप देखिकै तिन योगिन का ❀ जादू करैं अनेकन नारि।

* (अल्ला) देबी का नाम है॥

कुसुमा रानी की पुरिया सों ❀ जादू गई तहाँ सब हारि ॥
रूप उजागर सब गुण आगर ❀ नागर देशराज का लाल ।
विषय उमण्डी बलबण्डी जी ❀ खण्डी कुलै शिखण्डी बाल ॥
ती सब देखैं बघऊदन को ❀ नैनन बैनन सैन चलाय ।
धर्म न छाँड़ै यहु क्षत्री का ❀ ज्यहिका कहीउदयसिंहराय॥
दीख कुदृष्टी ज्यहि ऊदन का ❀ त्यहिका डाटि दीन ततकाल।
नैनन सैनन अरु बैनन में ❀ डिगैनसिद्धपुरुषक्यहु काल॥
हम नहिं भोगी नर योगी हैं ❀ भोगी विषय भरी तू बाल ।
माता भगिनी अरु कन्या सम ❀ देखें तीनि भाव सब काल ॥
तपै शिखण्डी पर रण्डी है ❀ भण्डी नरक केरि अधिकाय।
यह हम जानत हैं नीकी विधि ❀ तुमते साँच देयँ बतलाय ॥
बातें सुनिकै ई योगी की ❀ नारिन मूड़ लीन औंधाय ।
बोलि न आवा क्यहु नारी ते ❀ घर घर चलन लगीं शर्माय ॥
खबरि पायकै कान्तामल ने ❀ योगिन द्वार लीन बुलवाय ।
योगी आये जब द्वारे पर ❀ आसन तुरत दीन बिछवाय॥
लैकै गड़ुवा दौरति आवा ❀ तुरतै पाँय पखारेसि आय ।
पैर धोयकै तिन योगिन का ❀ लै जल धाम छिनाका जाय ॥
पढ़े मनुस्मृति भल कान्तामल ❀ जानै अतिथिभाव अधिकाय।
पै पहिचानत त्यहि योगी थे ❀ मकरँद बार बार मुसुकाय ॥
यह गति दीख्यो मकरन्दा कै ❀ बोल्यो तुरत बनाफरराय ।
तुमपहिचान्योनहिंमकरँदको ❀ तुमको देखि देखि मुसुकायँ ॥
पाय इशारा यहु ऊदन का ❀ मुख तन दीख खूब धरिध्यान ।
देखा ऊदन मकरन्दा का ❀ निश्चय फेरि लीन पहिचान ॥
कियो ग्लानिरो तब पहुनन कै ❀ लै रनिवास पहूँचा जाय ।

ऊदन मकरँद को रानी लखि ❀ खातिर फेरि कीन अधिकाय ॥
रानी पूछा फिरि मकरँद ते ❀ योगी बन्यो पूत कस आय ।
इतना सुनिकै मकरँद ठाकुर ❀ इन्दल हरण गयो सब गाय ॥
सुनिकै बातैं सब मकरँद की ❀ रानी बार बार पछिताय ।
लिखी बिधाता की मेटै को ❀ औ दैयागति कही न जाय ॥
पूत सपूतो इन्दल खोयो ❀ मातै पितै दुःख अधिकाय ।
बिधना डारै अस बिपदा ना ❀ कोउ न सहै पुत्र का [illegible]
भरे घुचघुचा सुनि ऊदन के ❀ नैनन नीर परे [illegible]
उठिकै ऊदन रनिवासे ते ❀ देबी धाम पहूँचे आय ।
बैठिकै मठिया माँ बघऊदन ❀ सुमिरयो तहाँ शारदा माय ।
ध्यान लगायो जगदम्बा का ❀ सब अवलम्बा दीन भुलाय ॥
शोच भूलिगा तब ऊदन का ❀ मनमाँ खुशी भई अधिकाय ।
तहँते चलिकै बघऊदन फिरि ❀ महलन अंटा तुरतही आय ॥
बनी रसोईं रनिवासे में ❀ भोजन कीन सबन सुखपाय ।
रातिअँध्यरिया फिरि आवतभै ❀ सोये बिकट नींद को पाय ॥
बलखबुखारे निशि स्त्रपनामाँ ❀ पहुँचा देशराज का लाल ।
सोयकै जाग्यो बघऊदन जब ❀ लाग्यो सबते कहन हवाल ॥
बलखबुखारे के जैबे को ❀ तीनों बीर भये तय्यार ।
कान्तामलहू सँग में ह्वगा ❀ चारों चलत भये सरदार ॥
अटक उतरिकै काबुल ह्वैकै ❀ पहुँचे बलखबुखारे जाय ।
शहर पना है चौगिर्दा ते ❀ बड़ बड़ महल परैं दिखलाय ॥
साँचे योगी चारो बनिकै ❀ पहुँचे शहर बीच में आय ।
बाजी खँभ्कड़ी तहँ देबा की ❀ मकरँद डमरू रहा बजाय ॥
कर इकतारा कान्तामल के ❀ ऊदन बँसुरी रहा बजाय ।

ता ता थेई ता ता थेई ❀ थिरकनलाग लहुरवा भाय ॥
टप्पा ठुमरी भजन रेखता ❀ धुर्पद सरंगीत कल्यान।
राग बिहगरो जयजयवन्ती ❀ तूरैं गजल पर्जपर तान ॥
कमर झुकावै भाव बतावै ❀ लाला देशराज का लाल।
रूप देखिकै तिन योगिन का ❀ अबलन सबल खड़ीतहँमाल ॥
कोऊ अँगिया पहिरति आवै ❀ जूरा कोऊ सँवारति बाल।
कोऊ दुपट्टा गलसों ओढ़ै ❀ कोऊ चली मोर की चाल ॥
कोऊ महाउर लिये हाथ में ❀ कोऊ चली छाँड़ि कै बाल।
कोऊ मेंहदी तजिकै दौरी ❀ बौरी भई तहाँ पर बाल ॥
ऐसी वंशी प्यारी बाजै ❀ राजै ऊदन ओठ बिशाल।
गाजै छाजै ध्वनि उपराजै ❀ लाजै देखि देखि मनबाल ॥
हेला मेला अलबेला भा ❀ ठेला ठेल गैल में भाय।
कोऊ चमेला कोउ बेला का ❀ बारन तेल लगावत जाय ॥
बड़ी भीर भय गलियारन में ❀ कहुँ तिलडरा भूमि ना जाय।
नचै बेंदुला का चढ़वैया ❀ आल्हा केर लहुरवा भाय ॥
दाबति आवैं नृप ड्योढ़ी को ❀ चारों रूप शील अधिकाय।
जायकै पहुँचे जब फाटक पर ❀ बाँदिन भीर भई अति आय ॥
खबरि सुनाई रनिवासे में ❀ रानिन महलन लीन बुलाय।
भूँठ लफाड़ा अस नाहीं थे ❀ जसकछु आज परैं दिखलाय ॥
तब जमाना कछु साँचा था ❀ जाँचा चला धाम को जाय।
ब्राह्मण साधुन पर परतीती ❀ नीती यही सदा की आय ॥
चलै अनीती तजि रीती जो ❀ ताको देश देय धिक्कार।
नृप अभिनन्दन के महलन में ❀ योगी पहुँचिगये त्यहिवार ॥
कहाँ ते आयो औ कहँ जैहौ ❀ अपनो हाल देउ बतलाय।

सुनिकै बानी महरानी कै ❁ बोला तुरत बनाफर राय ॥
हमतो योगी बंगाले के ❁ जावैं हरद्वार को माय।
भिक्षावृत्ती करि हम खावैं ❁ तुमते साँच दीन बतलाय ॥
रानी बोली फिरि योगिन ते ❁ बारे डास्यो मूड़ मुड़ाय।
कौनि व्यवस्था तुमपर परिगै ❁ सोऊ साँच देउ बतलाय ॥
सुनिकै बानी यह रानी कै ❁ बोला मैनपुरी चौहान।
गीता गायो जो अर्जुन ते ❁ स्वामी कृष्ण चन्द्रभगवान॥
पढ़ि पढ़ि गीता बैरागी हैं ❁ हम सबलीन योग को धार।
लिखी बिधाता की मेटै को ❁ रानी मानो कही हमार ॥
इतना सुनिकै रानी बोली ❁ अबतुम भजन सुनावोगाय।
बातैं सुनिकै महरानी की ❁ नाचनलाग लहुरवा भाय ॥
बेटी आई अभिनन्दन कै ❁ देखै सोऊ तमाशा धाय।
बाजै खँझड़ी तहँ देबा कै ❁ मकरँद डमरू रहा बजाय ॥
भैरोंवाली पुरिया डारी ❁ सबकीसुधिबुधिगई हिराय।
ऊदन बोले तब बेटी ते ❁ भोजन हमैं देउ करवाय ॥
कीनि तयारी जब ब्यारी कै ❁ लाग्यो चित्त तबै मचलाय।
कलके भूँखे हम गावत हैं ❁ आरी भयन पेट के घाय ॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❁ बेटी चलि भै साथ लिवाय।
जायकै पहुँची पँचमहला पर ❁ पीढ़ा तहाँ दीन डरवाय ॥
ऊदन बोले तब बेटी ते ❁ तुमको मंत्र देयँ बतलाय।
सुनिकै बातैं ई योगी की ❁ बेटी बाँदिन दीन हटाय ॥
ऊदन बोले तब बेटी ते ❁ हमते साँच देउ बतलाय।
इन्दल ठाकुर तुम्हरे घर में ❁ ठहरे कौन जगह पर आय ॥
जो अभिलाषा फिरि तुम्हरी हो ❁ अबहीं पूरि देयँ करवाय।

मोहिं तपस्या को बल पूरो ❀ तुमहूँ राख्यो नाहिं छिपाय ॥
भूत भविष्यत वर्त्तमान की ❀ गाथा सबै सकैं बतलाय ।
बातैं सुनिकै ई योगी की ❀ बेटी पिंजरा लई उठाय ॥
करिकै बाहर फिरि पिंजरा के ❀ तुरतै मानुष दीन बनाय ।
यही तरासों नित प्रति बेटी ❀ निशि में पास लेय पौढ़ाय ॥
इन्दल दीख्यो जब ऊदन को ❀ तब यह बोल्यो बचन सुनाय ।
धोखे भूले ना योगी के ❀ चाचा यहाँ पहूँचे आय ॥
बातैं सुनिकै ये इन्दल की ❀ बेटी मूड़ लीन निहुराय ।
ऊदन बोले तब बेटी ते ❀ तुम्हरो ब्याह देब करवाय ॥
सुवा बनावो तुम इन्दल को ❀ हमको मंत्र देउ बतलाय ।
परी उदासी है मोहबे में ❀ करिबे ब्याह वहाँ ते आय ॥
बेटी बोली तब ऊदन ते ❀ चाचा साँच देयँ बतलाय ।
डोला हमरो पहिले जाई ❀ तौ हम मानुष देब बनाय ॥
नहीं तो कन्ता अब जैहैं ना ❀ रैहैं सदा हमारे पास ।
बारा बरसै जब तप कीनी ❀ तबविधिपूरिकीनममआस॥
कैसे जीबे बिन स्वामी के ❀ चाचा कहैं छोंड़िकै लाज ।
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ बेटी धरो धीर मन आज ॥
चोरी चोरा म्बहिं भावै ना ❀ तुमते साफ देयँ बतलाय ।
कौन दुसरिहा उदयसिंह को ❀ रोंकी ब्याह यहाँ पर आय ॥
बाँधिकै मुशकै अभिनन्दन की ❀ भौंरी तुरत लेब करवाय ।
देश देश औ जग में जाहिर ❀ नामी सबै बनाफर राय ॥
महिना भर के फिरि अर्सा में ❀ ह्याँपर ब्याह करब हम आय ।
इन्दल बोले चितरेखा ते ❀ यहही ठीक ठाक ठहराय ॥
कहा न टारो तुम चाचा को ❀ तौ विधि फेरि मिलैहैं आय ।

जो कछु कै हैं चाचा हमरे ❁ सो नहिं टरै भूमि टरिजाय ॥
बेटी बोली फिरि ऊदन ते ❁ चाचा साँच देयँ बतलाय ।
किरिया करलोतुम आवनकी ❁ तौ फिरि जावो इन्हैंलिवाय ॥
सुनिकै बातैं चित्ररेखा की ❁ ऊदन गङ्गा लीन उठाय ।
सुवा बनायो तब बेटी ने ❁ पिंजरा तुरत दीन बैठाय ॥
मन्त्र बतायो फिरि ऊदन को ❁ औ लै पिंजरा दीन गहाय ।
ऊदन चलिभे फिरि महलन ते ❁ पहुँचे फेरि द्वार में आय ॥
पिंजरा दीख्यो जब देबा ने ❁ तबमन खुशी भयोअधिकाय।
गीत बंदभे फिरि योगिन के ❁ तहँते कूच दीन करवाय ॥
चारो योगी चलि मारग में ❁ बैठे एक वृक्षतर जाय ।
बाहर पिंजरा के सुवना करि ❁ ऊदन मानुष दीन बनाय ॥
मानुष ह्वैगे बघइन्दल जब ❁ तब सब खुशीभये अधिकाय ।
बिदामांगिकैकान्तामलफिरि ❁ भुज्ञागढ़ै पहूँचा जाय ॥
ऊदन देबा इन्दल मकरँद ❁ चारो चले तहाँते ज्वान ।
आयकै पहुँचे सिरसागढ़ में ❁ जहँपर बसै बीर मलखान ॥
मलखे दीख्यो जब ऊदन को ❁ भेंट्यो बड़े प्रेम सों आय ।
देबा बोल्यो मलखाने ते ❁ तुम सुनि लेउ बनाफरराय ॥
बिपदा आई जब ऊदन पर ❁ फाटक बन्द लीन करवाय ।
यहु दिन लायो नारायण जब ❁ तब तुम मिले बनाफरराय ॥
कांऊ बिपदा माँ साथी ना ❁ साँचो साँच परा दिखराय ।
मलखे बोले तब देबा ते ❁ तुमको साँच देयँ बतलाय ॥
लषण राम की तुम गाथा को ❁ जानो भली भांति सरदार ।
छोटे भाई हम आल्हा के ❁ यह सब जानि गयो संसार ॥
करैं लड़ाई बड़ भाई ते ❁ तौ सब क्षत्रीधर्म नशाय ।

धर्म न छाँड़्यो भीमसेन ने ❁ बनमाँ रह्यो मूल फल खाय ॥
किह्यो दुर्दशा दुर्योधन ने ❁ योधन भीमसेन अधिकाय ।
हुकुम युधिष्ठिर का पायो ना ❁ आयो धन बल सबै गवाँय ॥
अब बतलावो तुम इन्दल को ❁ पायो खोज कहाँ पर भाय ।
इतना सुनिकै बघऊदन ने ❁ सबियाँ कथा दीन बतलाय ॥
मलखे बोले फिरि ऊदन ते ❁ दशहरिपुरै चलो तुम भाय ।
ऊदन बोले मलखाने ते ❁ दादा साँच देयँ बतलाय ॥
हमहूँ मकरँद नरवर जैबे ❁ इन्दल जावो आप लिवाय ।
कसम जो खाई चितरेखा ते ❁ करिबे ब्याह तुम्हारो आय ॥
कहि समुझायो तुम दादा ते ❁ नरवर मिली उदयसिंहराय ।
इतना सुनिकै इन्दल बोले ❁ चाचा सुनो बनाफरराय ॥
तुम ना जैहौ दशहरिपुर को ❁ तौ इन्दल कै जाय बलाय ।
कौन बुलाई घर इन्दल का ❁ जेंवो बच्छ तड़ाका आय ॥
सुनिकै बातैं बघइन्दल की ❁ ऊदन कहा बहुत समुझाय ।
मलखे दादा के सँग जावो ❁ नरवर मिलब तुम्हैंहम आय ॥
इतना कहिकै बघऊदन ने ❁ तहँ ते कूच दीन करवाय ।
मकरँद ऊदन सिरसागढ़ ते ❁ नरवरगढ़ै पहूँचे जाय ॥
मलखे देखा इन्दल ठाकुर ❁ इनहुन कूच दीन करवाय ।
लागि कचहरी परिमालिक कै ❁ तीनों तहाँ पहूँचे आय ॥
राजा दीख्यो जब इन्दल को ❁ तबमन खुशीभयो अधिकाय ।
मलखे बोले तब राजा ते ❁ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥

सवैया

आज जो काज कियो बघऊदन लाज रही औ बढ़ी प्रभुताई ।
राजन आपके पुण्य प्रकाश ते भाग रही जग में ठकुराई ॥

पारस है जिनके घरमा तिनकी लघुता कहि कौन दिखाई।
राजनराजसमाजबढ़्यो औ चढ़्यो ललिते यशसिंधु उफाई॥

इन्दल का ब्याह

इतना कहिकै मलखाने ने ❀ औरो हाल दीन बतलाय।
बिदा माँगिकै परिमालिक ते ❀ दशहरिपुरै पहूँचे आय॥
मलखे देबा इन्दल सँगमाँ ❀ महलन गये बनाफरराय।
रूप देखिकै इन तीनों का ❀ आल्हा ठाढ़ भये हर्षाय॥
बड़ी खुशाली मन अन्तर भै ❀ औ यह बोले बचन सुनाय।
कहाँ बनाफर बघऊदन हैं ❀ हमरे परम सनेही भाय॥
नेही गेही नरदेही को ❀ इनसोंअधिककौनदिखलाय।
परम सनेही यहि देही का ❀ नेही टिका कहाँ पर जाय॥
डाटा डपटा नहिं ऊदन का ❀ पाला प्रीति रीति अधिकाय।
गुण ही प्यारे हैं मानुष के ❀ जानो युगनयुगन तुम भाय॥
होय निर्गुणी जो दुनिया मां ❀ जहँ तहँ बैठै पेट खलाय।
यहु यश गैहैं जे आगे नर ❀ खैहैं पुवा कचौरी भाय॥
कलियुग आवा है दुनिया मां ❀ सब सों कलह देय करवाय।
भूप युधिष्ठिर यहि डरि भागे ❀ गलिगे शैलहिमालय जाय॥
क्षण क्षण बुद्धी उलटै पुलटै ❀ पण्डित मूर्ख बनावै भाय।
उड़ैं सुहारा सम परदारा ❀ आरा चलै पेट में भाय॥
बश नहिं इन्द्री अब काहू की ❀ कलियुगनीचमीच दुखदाय।
ऋषी कहावैं जे मनइन माँ ❀ तिनहुन काम देय बहँकाय॥
यहु परितापी अरु पापी अति ❀ ब्यापी भयो जगत में आय।

हाय रुपैया यहि समया में ❀ दैया बापू रहा कहाय॥
बिना कन्हैया के ध्याये ते ❀ बिपदा कौन हटावै आय।
यहु सब जानत हैं अपने मन ❀ कलियुग अधिक २ लपटाय॥
खायँ पछारा मन कलियुग में ❀ जप तप पुराय देयँ बिसराय।
कोऊ ज्ञानी अरु ध्यानी ना ❀ रघुबर पार लगावैं भाय॥
यह संजीवनि जब तक रहिहै ❀ रघुबर नाम चिंतवन भाय।
यहि परितापी अरु पापी ते ❀ कोउ कोउ बची ममर मेंआय॥
कलह करायो यहि कलियुग ने ❀ ऊदन नहीं परैं दिखराय।
इतना सुनिकै मलखे बोले ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय॥
गये बनाफर हैं नरवरगढ़ ❀ मकरँद ठाकुर गये लिवाय।
किह्यो शिकायत नहिं ऊदन ने ❀ यह सब भाग्य करावै भाय॥
पूर शनैश्चर माहिल मामा ❀ सोना लखत ल्वाह ह्वैजाय।
आय हकीकी यहुमल्हना का ❀ फीकी कहै रात दिन भाय॥
पै अरसान्यो त्यहि ऊदन ना ❀ क्षत्री रूप लहुरवा भाय।
तुम कछु शोचो अब दादा ना ❀ होनी मेटि कौन पै जाय॥
यह अनहोनी शुभदाई मैं ❀ इन्दल ब्याह करो अब भाय।
ऊदन मिलि हैं नरवरगढ़ माँ ❀ साँचो मिलन दीन बतलाय॥
यहु शिरनाई यह गाई है ❀ दादै आप बुझायो जाय।
मोरि ढिठाई जड़ताई को ❀ करि हैं क्षमा बनाफरराय॥
कसम जो खाई चितरेखा सँग ❀ करिबे ब्याह तुम्हारो आय।
आयसु पावें जो दादा की ❀ राजन न्यवत देयँ पठवाय॥
आल्हा बोले मलखाने ते ❀ पहिले हाल देउ बतलाय।
कौन देश को इन्दल हरिगे ❀ मिलिगे कौन रीतिसों भाय॥
कछू हकीकति तुम गाई ना ❀ अबहीं न्यवत पठावो भाय।

इतना सुनिकै मलखे ठाकुर ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
जितनी कीरति बघऊदन की ❀ सो आल्हा को गये सुनाय ।
हाल जानिकै आल्हा ठाकुर ❀ मनमेंसोचिसाचिअधिकाय॥
आयसु दीन्ह्यो मलखाने को ❀ भावै करो तौन तुम भाय ।
इतना सुनिकै मलखे चलि भे ❀ सुनवाँ महल पहूँचे जाय ॥
सुनवाँ दीख्यो मलखाने को ❀ आदर भाव कीन अधिकाय ।
हाथ पकरिकै फिरि इन्दल का ❀ मलखे भाभी दीन गहाय ॥
यह गति जानैं नारायण फिरि ❀ कितनी खुशी भई अधिकाय ।
पूँछन लागी जब ऊदन का ❀ मलखे गये कथा सब गाय ॥
अब सुखदाई दिन आवा है ❀ भौजी पूत बिवाहब जाय ।
कायल ह्वैकै बड़ भाई ने ❀ हमते हुकुम दीन फरमाय ॥
यही महीना मां भौंरी हैं ❀ परिडत साइति दीन बताय ।
करो तयारी अब ब्याहे की ❀ नरवर मिली बनाफरराय ॥
नाम बनाफर का सुनतै खन ❀ फुलवा तहाँ पहूँची आय ।
जितनी गाथा बघऊदन की ❀ बाँदिन तहाँ दीन बतलाय ॥
बड़ी खुशाली भै फुलवा के ❀ धावलि बार बार बलिजाय ।
तहँ ते चलिकै मलखे ठाकुर ❀ परिडत तुरत लीन बुलवाय ॥
पूँछिकै साइति मलखे ठाकुर ❀ राजन न्यवत दीन पठवाय ।
ब्याह नगीचे न्यवतहरी सब ❀ दशहरिपुरै पहूँचे आय ॥
माँय मन्तरा कै ब्यरिया भै ❀ परिडत अटा तड़ाका आय ।
रानी आईं मोहबेवाली ❀ भारी भीर भई अधिकाय ॥
करि अवलम्बा जगदम्बा का ❀ अम्बा बार बार शिरनाय ।
भई तयारी फिरि ब्याहे की ❀ इन्दल चढ़ा पालकी जाय ॥
बाजे डंका अहतंका के ❀ हाहाकार शब्द गा छाय ।

कुँवाँ बिवाह्यो फिरि इन्दल ने ❀ सुनवाँ पैर दीन लटकाय ॥
यहौ नेग जब पूरा ह्वैगा ❀ इन्दल चढ़ा पालकी आय ।
सजे बराती तहँ ठाढ़े थे ❀ आल्हा कूच दीन करवाय ॥
चलिकै पहुँचे फिरि नरवरगढ़ ❀ ऊदन मिले तहाँ पर आय ।
लैकै फौजैं मकरन्दा मिलि ❀ आल्हा सहित चले हर्षाय ॥
अटक उतरिकै काबुल ह्वैकै ❀ पहुँचे मास अन्त में जाय ।
रहो बुखारो आठ कोस जब ❀ तब टिकि रहे बनाफरराय ॥
टिकिगा लश्कर रजपूतन का ❀ क्षत्रिन छोरि धरे हथियार ।
आल्हा ठाकुर के तम्बू माँ ❀ बैठे बड़े बड़े सरदार ॥
बोले पण्डित तब आल्हा ते ❀ तुम सुनि लेउ बनाफरराय ।
ऐपनवारी की बिरिया है ❀ रूपन वारी देउ पठाय ॥
इतना सुनिकै रूपन बोला ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ।
हम नहिं जैहैं बलखबुखारे ❀ अबकी आन देउ पठवाय ॥
इतना सुनिकै मलखे बोले ❀ रूपन साँच देउ बतलाय ।
जौने घोड़ा का जी चाहे ❀ तौने देयँ तुरत मँगवाय ॥
घोड़ करिलिया रूपन माँग्यो ❀ मलखे तुरत दीन कसवाय ।
ऐपनवारी बारी लैकै ❀ बैठा घोड़ पीठि में जाय ॥
ढाल खड्ग लै मलखाने ते ❀ रूपन कूच दीन करवाय ।
डेढ़ पहर के फिरि असीं मां ❀ पहुँचा राजद्वार पर जाय ॥
हुकुम दर्रे हुकुम दर्रे ❀ नाहर घोड़े के असवार ।
कहाँ ते आये औ कहँ जैहौ ❀ कहँ है देश रावरे क्यार ॥
इतना सुनिकै रूपन बोला ❀ तुमते साँच देयँ बतलाय ।
नगर महोबा ते आयन हम ❀ इन्दल ब्याह करन को भाय ॥
ऐपनवारी हम लै आये ❀ रूपन बारी नाम हमार ।

खबरि जनावो महराजा को ❀ हमरो नेग देयँ अब द्वार ॥
इतना सुनिकै द्वारपाल कह ❀ रूपन बारी बात सुनाय ।
काह नेग द्वारे को चहिये ❀ सोऊ देयँ आप बतलाय ॥
रूपन बोला द्वारपाल सों ❀ यह तुम खबरि सुनावो जाय ।
एक पहर भर चलै सिरोही ❀ यह ही नेग देयँ पठवाय ॥
सुनिकै बातैं ये बारी की ❀ आरी द्वारपाल अधिकाय ।
शोचि समझिकै महराजा सों ❀ रूपन कथा सुनाई जाय ॥
इतना सुनिकै अभिनन्दन ने ❀ हंसामल को लयो बुलाय ।
पकरिकै लावो त्यहि बारी को ❀ द्वारे जौन रहा बर्राय ॥
इतना सुनिकै हंसामल ने ❀ अपनी लई ढाल तलवार ।
औरो क्षत्री चलि ठाढ़े भे ❀ अपने बाँधि बाँधि हथियार ॥
द्वारे देखैं जब बारी को ❀ आरी भये सिपाही ज्वान ।
भीर देखिकै रूपन बारी ❀ लाग्यो करन घोर घमसान ॥
चली सिरोही भल द्वारे पर ❀ औ बहि चली रक्त की धार ।
रूपन बारी के मुर्चा पर ❀ अंधाधुंध चलै तलवार ॥
रूपन मारै तलवारी सों ❀ घोड़ा करै टाप की मार ।
बड़े लड़ैया काबुलवाले ❀ मन सों गये तहाँ पर हार ॥
धर्म बनाफर का जाहिर है ❀ जिनके जपै तपै का काम ।
बिजय अधर्मिन की दीखी ना ❀ रावण कीन बहुत संग्राम ॥
कंस सुयोधन जरासंध अरु ❀ अधरम रूप मरा शिशुपाल ।
काल कलेवा सबको कीन्ह्यो ❀ रहिगा धर्म एक सब काल ॥
ताते धर्मी आल्हा ठाकुर ❀ रूपन खूब करै तलवार ।
देखि बीरता यह रूपन की ❀ हंसा कहा वचन ललकार ॥
सँभरिकै बैठै अब घोड़ा पर ❀ बारी भली मचाई रार ।

जियत न जैहै दरवाजे ते ❀ हमरी देखि लेय तलवार॥
इतना सुनिकै रूपन बोला ❀ क्षत्री मानो कही हमार।
नेग आपनो हम भरिपावा ❀ राजन आय आपके द्वार॥
दायज लैहैं आल्हा ठाकुर ❀ अब हम जान चहत सरदार।
इतना कहिकै रूपन वारी ❀ फाटक निकरि गयो वापार॥
मारु मारु कहि क्षत्री दौरे ❀ रूपन घोड़ दीन दौराय।
आयकै पहुँच्यो त्यहि तम्बू में ❀ ज्यहि में बैठ बनाफरराय॥
खबरि सुनाई ह्याँ आल्हा को ❀ ह्वाँपर शूर लागि पछिताय।
तब अभिनन्दन सब लरिकनते ❀ बोला दोऊ भुजा उठाय॥
बाजैं डङ्का अहतङ्का के ❀ लश्कर सबै होय तय्यार।
जान न पावैं मोहबेवाले ❀ मारो ढूँढ़ि ढूँढ़ि सरदार॥
हुकुम पायकै महराजा को ❀ सातो पुत्र भये तय्यार।
झीलम बखतर पहिरि सिपाही ❀ हाथम लईं ढाल तलवार॥
अंगद पंगद मकुना भौंरा ❀ सजिगे श्वेतबरण गजराज।
धरिगे हौदा तिन हाथिन पर ❀ क्षत्री चढ़े समर के काज॥
को गति बरणै तहँ घोड़न कै ❀ जिनपर चढ़े शूर शिरताज।
सजिगा हाथी अभिनन्दन का ❀ तापर बैठि गयो महराज॥
सुमिरि भवानी सुत गणेश को ❀ राजा कूच दीन करवाय।
खर खर खर खर कै रथ दौरे ❀ चह चह धुरी रहीं चिल्लाय॥
मारु मारु करि मौहरि बाजीं ❀ बाजीं हाव हाव करनाल।
मारू बाजा सुनि बोलन भा ❀ बेटा देशराज का लाल॥
जनु अभिनन्दन चढ़ि आवतहै ❀ लक्षण जानि परैं यहिकाल।
हँसिकै बोला मलखाने ते ❀ बेटा देशराज का लाल॥
सजिये दादा मलखाने अब ❀ देवा होउ आप तय्यार।

और सिपाही जे मोहबे के ❀ तेऊ बाँधि लेयँ हथियार ॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ सबियाँ शूर भये तय्यार ।
रणकी मौहरि बाजन लागीं ❀ रणका होन लाग ब्यवहार ॥
बलखबुखारे का अभिनन्दन ❀ सोऊ गयो समर में आय ।
प्रथम लड़ाई भै तोपन कै ❀ धुवना रहा सरग में छाय ॥
लागै गोला ज्यहि हाथी के ❀ मानो च्वार सेंधि कै जाय ।
जउने ऊँट के गोला लागै ❀ तुरतै गिरै समर अललाय ॥
गोला लागै ज्यहि क्षत्री के ❀ धुनकत रुई सरिस उड़िजाय ।
लागै गोला ज्यहि घोड़ा के ❀ मानों गिरह कबूतर खाय ॥
जौने रथमा गोला लागै ❀ पहिया धुरी अलग ह्वैजाय ।
गिरैं कगारा जस नदिया में ❀ तैसे गिरैं ऊँट गज धाय ॥
सन् सन् सन् सन् गोली छूटैं ❀ लोटैं शूर पछारा खाय ।
छाँड़ि आसरा जिंदगानी का ❀ खेलन लागे ल्वाह अघाय ॥
भाला बलछी छूटन लागे ❀ कहुँ कहुँ कड़ाबीन की मार ।
मारैं तेगा बर्दवान का ❀ ऊना चलै बिलाइत क्यार ॥
चलै कटारी बूँदी वाली ❀ अंधा धुंध चलै तलवार ।
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार ॥
बड़ी लड़ाई अभिनन्दन की ❀ नदिया बही रक्त की धार ।
फिरि फिरि मारैं औ ललकारैं ❀ नाहर उदयसिंह सरदार ॥
सातौ लड़िका अभिनन्दन के ❀ आमाभ्त्वार करैं तलवार ।
चढ़ा चौंड़िया इकदन्ता पर ❀ बकशी जौनु पिथौरा क्यार ॥
हनि हनि मारै रजपूतन का ❀ चौंड़ा समरधनी मैदान ।
को गति बरणौं मैं देबा कै ❀ ठाकुर मैनपुरी चौहान ॥
हंसा ठाकुर के मुर्चा पर ❀ पहुँचा समरधनी मलखान ।

घोड़ी कबुतरी टापन मार ❀ घायल होयँ अनेकन ज्वान ॥
को गति बरणै मलखाने कै ❀ बेटा बच्छराज का लाल ।
त्यहिकी समता का हंसा ना ❀ पै तहँ युद्ध करै बिकराल ॥
को गति बरणै तहँ हंसा कै ❀ ध्वंसा बड़े बड़े सरदार ।
भई प्रशंसा तहँ हंसा कै ❀ क्षत्री डारि भागि तलवार ॥
बड़ा प्रतापी अरि परितापी ❀ सुर्खा घोड़े पर असवार ।
गनि गनि मारै रजपूतन को ❀ क्षत्री खेलै खूब शिकार ॥
भागीं फौजैं मोहबे वाली ❀ आली खानदान को ज्वान ।
आयकै गर्ज्यो त्यहि समया में ❀ नाहर समर धनी मलखान ॥
अकसर मलखे के जियरे पर ❀ अरुझे बड़े बड़े सरदार ।
जीति न पावें मलखाने ते ❀ औ मुँह फेरि लेयँ त्यहिवार ॥
देखा बोला तब ऊदन ते ❀ ठाकुर बेंदुल के असवार ।
अकसर मलखे के ऊपर माँ ❀ क्षत्री अरुझे तीनि हजार ॥
भागीं सेना मुहबेवाली ❀ अकसर लड़ै बीर मलखान ।
इतना सुनिकै ऊदन चलिभा ❀ संगम चला चौंड़िया ज्वान ॥
बला मकरँद जगनायक जी ❀ येऊ चलत भये त्यहिवार ।
जोगा भोगा देवा ठाकुर ❀ मन्नागूजर परम जुझार ॥
ये सब पहुँचे समरभूमि में ❀ हाथ में लिये नाँगि तलवार ।
बल्खबुखारे के क्षत्रिन को ❀ मारन लागि ढूँढ़ि सरदार ॥
बड़ी कसामसि समरभूमि में ❀ कहुँ तिलडरा भूमि ना जाय ।
छाय लालरी गै अकाश में ❀ सब रँग ध्वजा रहे फहराय ॥
घोड़ा हींसें समरभूमि में ❀ सावन यथा मेघ घहरायँ ।
हाथी चिग्घरें रणमण्डल में ❀ कायर समर न रोंकें पायँ ॥
शूर सिपाही ईजतवाले ❀ ते तहँ मारु मारु बरायँ ।

कऊ तमंचा को धरि धमकै ❁ कोऊ देयँ गुर्ज के घाय ॥
कोऊ मारैं तलवारी सों ❁ कोऊ मारैं ढाल घुमाय।
पटा बनेठी बाना जानै ❁ ते नर मारैं गदा चलाय ॥
बलखबुखारे का अभिनन्दन ❁ मलखे साथ करै तलवार।
हंसा ठाकुर उदयसिंह ये ❁ दोऊ लड़ैं तहाँ सरदार ॥
सुक्खालड़िका अभिनन्दनका ❁ मकरँद नरपति राजकुमार।
अपने अपने द्वउ मुर्चा मा ❁ मारैं एक एक ललकार ॥
देबा ठाकुर औ मोहन का ❁ परिगा समर बरोबरि आय।
बड़ी लड़ाई क्षत्रिन कीन्ह्यो ❁ कायर भागे पीठि दिखाय ॥
जितने कायर दुहुँ तरफा के ❁ तर लोथिन के रहे लुकाय।
हेला आवै जब हाथिन का ❁ तब बिन मरे मौत ह्वैजाय ॥
कागति बरणौं मैं कायर कै ❁ मनमाँ बार बार पछितायँ।
हाय रुपैयन के लालच ते ❁ हमरे गई प्राण पर आय ॥
करित नौकरी क्यह्उ बनियाँ के ❁ हल्दी धनियां के वयपार।
तौ नहिं बिपदा हम पर आवत ❁ छूटत नहीं लोग परिवार ॥
कायर सोचैं यह अपने मन ❁ शूरन होयँ अनन्दा चार।
गिरि उठि मारैं समरभूमि में ❁ दोऊ हाथ करैं तलवार ॥
छाँड़ि आसरा जिंदगानी का ❁ क्षत्रिन कीन घोर घमसान।
दोउ दल अरुझे समरभूमि माँ ❁ मारैं एक एक को ज्वान ॥
कटि कटि कल्ला गिरैं समर में ❁ उठि उठि रुण्ड करैं तलवार।
मुण्डन केरे मुड़ चौरा भे ❁ औ रुण्डन के लगे पहार ॥
परीं लहासैं जो मनइन की ❁ तिनका खावैं श्वान सियार।
मेला ह्वैगा तहँ गीधन का ❁ चील्हन सीधा का व्यवहार ॥
नचैं योगिनी खप्पर लीन्हे ❁ मज्जैं भूत प्रेत बैताल।

धरु धरु धरु धरु मारो मारो ❀ बोलै बच्छराज का लाल॥
ऊदन ताकैं ज्यहि होदा का ❀ बेंदुल तहाँ देइ पहुँचाय।
सातो लड़िका अभिनन्दन के ❀ आल्हा कैद लीन करवाय॥
तब अभिनन्दन रिसहा ह्वैकै ❀ अपनो हाथी दीन बढ़ाय।
आल्हा ठाकुर पचशब्दा पर ❀ राजा पास पहूँचे आय॥
तब ललकारो अभिनन्दन ने ❀ आल्हा कूच देउ करवाय।
जियत न जैहो तुम सम्मुख ते ❀ जो विधि आप बचावै आय॥
इतना सुनिकै आल्हा बोले ❀ राजन साँच देयँ बतलाय।
बिना बियाहे हम बेटा को ❀ कैसे लौटि मोहबे जायँ॥
भलो आपनो जो तुम चाहो ❀ सबकी कैद लेउ छुड़वाय।
हँसी खुशी सों बेटी ब्याहो ❀ काहे रारि बढ़ावो भाय॥
बिना बियाहे हम जैबे ना ❀ चहुतन धजी धजी उड़िजाय।
इतना सुनिकै अभिनन्दन ने ❀ मार्यो भाला तुरत चलाय॥
वार बचाई तब आल्हा ने ❀ साँकरि हाथी दीन गहाय।
आल्हा बोले पचशब्दा ते ❀ अब गाढ़े में होउ सहाय॥
घूमो हाथी तब आल्हा को ❀ रणमा साँकरि रहा घुमाय।
जितने मार्यो अभिनन्दन के ❀ ते सब भागे पीठि दिखाय॥
झुके सिपाही मोहबे वाले ❀ मारैं एक एक को धाय।
मलखे ऊदन देबा मकरँद ❀ सभियाँ लश्कर दीन भगाय॥
भागीं फौजें अभिनन्दन की ❀ इकलो रहा आप नरराज।
लियो लड़ाई भल इकलोई ❀ कैदी भयो फेरि महराज॥
गंगा कीन्ही फिरि फौजन में ❀ इन्दल ब्याह चाव करवाय।
सातों लड़िकन को महराजा ❀ आल्हा ठाकुर दीन छुड़ाय॥
तुरते पण्डित को बुलवायो ❀ मांडो माड़नि दीन बनाय।

भई तयारी फिरि भौंरिन कै ❀ मड़ये तरे पहूँचे जाय ॥

सवैया

आम को खम्भ गड़ो तहँ सुन्दर माड़व मालिन ठीक बनायो।
कै गठि बन्धन बैठि गयो नृप स्वच्छ कुशा निज हाथ उठायो ॥
दान दयो कन्या अभिनन्दन बन्दन कै रघुनाथ मनायो।
चन्दन अच्छत फूलनलै ललिते मन मोद गणेश चढ़ायो ॥

बड़ी खुशी सों अभिनन्दन ने ❀ बेटी ब्याह दीन करवाय।
बिदा करायो चितरेखा को ❀ औ धन दीन्ह्यो खूब लुटाय ॥
भये अयाचक सब याचक गण ❀ जय जय कार रहे सब गाय।
बाजे डंका अहतंका के ❀ आल्हा कूच दीन करवाय ॥
एक महीना के भीतर में ❀ दशहरि पुरै पहूँचे आय।
परछन करिकै दरवाजे सों ❀ सुनवाँ लैगय बधू लिवाय ॥
दगीं सलामी की तोपैं बहु ❀ धुवना रहा सरग में छाय।
मनिया देवन की पूजा करि ❀ बैठीं धाम आपने आय ॥
आल्हा बैठे फिरि महलन में ❀ ऊदन बैठे शीश नवाय।
माहिल ठाकुर की गाथा को ❀ आल्हा ठाकुर दीन सुनाय ॥
चुगुलशिरोमणिमाहिलठाकुर ❀ ठाकुर रहे तहाँ सब गाय।
हाय भलाई मम चुगुलिन में ❀ इतना कहा लहुरवा भाय ॥
खेत छूटिगा दिन नायक सों ❀ झंडा गड़ा निशा को आय।
ब्याहपूर भा अब इन्दल का ❀ सुमिरों तुम्हैं शारदा माय ॥
पार लगायो महरानी तुम ❀ दानीयुगन युगन अधिकाय।
कोउअभिमानीजगरहिगाना ❀ ज्यहिपर कोपकीन तुममाय ॥
आशिर्वाद देउँ मुंशीसुत ❀ जीवो प्रागनरायण भाय।

गावैं नित प्रति रघुनन्दन को ❀ नरपुर फेरि न जन्मै आय।
बड़ा महातम रघुनन्दन का ❀ नारद बालमीकि कह गाय॥
गीधअजामिल शबरीगणिका ❀ चारो कीरति रहे बताय।
कलियुग तुलसी की समता को ❀ दूसर कौन बतावा जाय॥
तैसे कीरति यदुनन्दन की ❀ द्वापर फैलि गई अधिकाय।
सूर औ मीराबाई कलियुग ❀ पायो स्वाद भूमि में आय॥
ललिते चक्खन को ललचायो ❀ गायो आल्हा छन्द बनाय।
कहौं निकासी अब आल्हा कै ❀ सुमिरन देवन को बिसराय॥

अथ कथाप्रसंग

एक समइया की बातैं हैं ❀ यारो मानो कही हमार।
लिल्ली घोड़ी पर चढ़ि बैठो ❀ माहिल उरई का सरदार॥
तिक्तिक् तिक् तिक् टिटुई हाँकत ❀ दिल्ली शहर पहूँचा जाय।
लागि कचहरी दिल्लीपति की ❀ जिनका कही पिथौरा राय॥
आवत दीख्यो तिन माहिल का ❀ अपने पास लीन बैठाय।
बड़ी खातिरी करि माहिल कै ❀ पूँछन लाग पिथौरा राय॥
काहे आये उरई वाले ❀ आपन हाल देउ बतलाय।
इतना सुनिकै माहिल बोले ❀ साँची सुनो पिथौरा राय॥
मलखे सुलखे आल्हा ऊदन ❀ इनका दीखै देश डेराय।
आज बनाफर की समता को ❀ ठाकुर आन नहीं दिखलाय॥
चार चौहद्दी के डाँड़े पर ❀ मलखे किला लीन बनवाय।
जो कछु चाहैं आल्हा ऊदन ❀ सो सब करिकै देयँ दिखाय॥
कौन दुसरिहा है आल्हा का ❀ सम्मुख बात करै जो जाय।
मान न राखैं कबहु नरेश के ❀ चारों बढ़े बनाफरराय॥
हमरा मानैं भल मामा करि ❀ खातिर करैं रोज अधिकाय।

हमहूँ जानत हैं ब्रह्मा सम ❀ राजन साँच दीन बतलाय ॥
अधिक पियारे पै तिनते तुम ❀ मानो कही पिथौराराय ।
तुम्हैं लरिकई सों जानत हौं ❀ सीधो सादो आप स्वभाय ॥
तिनकी धरती का स्वामी मैं ❀ त्यहि का पास लिह्यो बैठाय ।
तुम अस राजा को दुनिया माँ ❀ ज्यहितेप्रीतिकरोंअधिकाय ॥
इतना सुनिकै पिरथी बोले ❀ माहिल उरई के सरदार ।
यतन बतावो यहि समया में ❀ जासों जायँ बनाफर हार ॥
इतना सुनिकै माहिल बोले ❀ मानो कही पिथौराराय ।
पाँच बछेड़ा मोहबे वाले ❀ तिनका आप लेउ मँगवाय ॥
बेंदुल हंसामनि हरनागर ❀ पपिहा और कबूतरि पाँच ।
उड़न बछेड़ा ये पाँचो हैं ❀ इनबल लड़ैं बनाफर साँच ॥
पाँचो घोड़न के पाये ते ❀ साँचो बिजय होय महराज ।
जीते न पैहौ तिन पाँचो ते ❀ साँचो साँच पाँच शिरताज ॥
इतना सुनिकै पिरथीपति ने ❀ तुरतै लीन्ही कलम उठाय ।
लिखिकै चिट्ठी परिमालिकको ❀ औ माहिल को दीनसुनाय ॥
सुनिकै चिट्ठी पिरथीपति कै- ❀ माहिल बड़ा खुशी ह्वैजाय ।
तुरतै धावन को बुलवायो ❀ पिरथी चिट्ठी दीन पठाय ॥
लैकै चिट्ठी धावन चलिभा ❀ पहुँचा नगर मोहोबे आय ।
जहाँ कचहरी परिमालिक कै ❀ धावन तहाँ पहूँचा जाय ॥
कीन दण्डवत महराजा को ❀ चिट्ठी फेरि दीन पकराय ।
लैकै चिट्ठी पृथीराज की ❀ आँकुइ आँकु नजरि कै जाय ॥
तुरत बुलायो निज धावन को ❀ की आल्हा को लाउ बुलाय ।
इतना सुनिकै धावन चलिभा ❀ दशहरिपुरै पहूँचा जाय ॥
तुम्हैं बुलावत महराजा हैं ❀ यह आल्हा ते कह्यो सुनाय ।

इतना सुनिकै आल्हा ऊदन ❀ पहुँचे नगर मोहोबे आय ॥
जहाँ कचहरी परिमालिक की ❀ दूनों गये बनाफरराय ।
हाथ जोरिकै आल्हा ऊदन ❀ ठाढ़े भये शीश को नाय ॥
आल्हा बोले परिमालिक ते ❀ राजन साँच देउ बतलाय ।
कौन सी बिपदा तुम पर आई ❀ जो सेवक को लीन बुलाय ॥
इतना सुनिकै राजा बोले ❀ साँची सुनो बनाफरराय ।
बेंदुल हंसामनि हरनागर ❀ पपिहा औ कबूतरि भाय ॥
पाँचो घोड़ा पिरथी माँगै ❀ सो अब दीन चही पहुँजाय ।
चिट्ठी आई महराजा की ❀ धावन बैठ बनाफरराय ॥
इतना सुनिकै आल्हा बोले ❀ राजन साँच देयँ बतलाय ।
अपने घोड़ा हम देवे ना ❀ चहु चढ़ि अवै पिथौराराय ।
लड़ि भिड़ि लेवे हम पिरथी ते ❀ देवे समरभूमि समुझाय ।
जियत न पाई कोउ घोड़न को ❀ साँची सुनो चँदेलराय ॥
इतना सुनिकै राजा बोले ❀ मानो कही बनाफरराय ।
रारि मिटावो दै घोड़न को ❀ यामें भला परै दिखलाय ॥
घोड़ा अइहैं नहिं दिल्ली को ❀ मोहबा तुरत लेउँ लुटवाय ।
ऐसी चिट्ठी पृथीराज की ❀ सो पढ़ि लेउ बनाफरराय ॥
घोड़ा पैहैं जो पिरथी ना ❀ मोहबा तुरत गाँसिहैं आय ।
कितन्यो घोड़ा लड़ि मरि जैहैं ❀ ऐसे पाँच देउ पठवाय ॥
अंकुश विष का तुम गाड़ो ना ❀ मानो कही बनाफरराय ।
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
काह हकीकति है पिरथी कै ❀ मोहबा नगर मँझावैं आय ।
दतिया जीति उरैछा जीत्यों ❀ जीत्यों सेतुबंध लों जाय ॥
जीति पेशावर मुलतानालों ❀ बूँदी शहर शहर घराय ।

राज्य कमायूँ का लै लीन्ह्यो ❀ झंडा अटक दिह्यों गड़वाय ॥
जितनी तिरिया हैं मेवात में ❀ संध्या समय नित्त पछितायँ ।
काह हकीकति है पिरथी कै ❀ दिल्ली कालिह लेउँ लुटवाय ॥
एक पिथौरा कै गिनती ना ❀ लाखन चढ़ैं पिथौरा आय ।
मैं हनिडारों तलवारी सों ❀ साँची सुनो चँदेलेराय ॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ जरि बरि गये रजा परिमाल ।
दशहरिपुरवा को खाली करु ❀ बेटा देशराज के लाल ॥
गऊ रक्त सम जल तू जानै ❀ भोजन गऊ माँस अनुमान ।
करै मेहरिया कै संगति जो ❀ होवै बहिनी संग समान ॥
होउ पातकी तुम कलियुग में ❀ जो नहिं करो बचन परमान ।
इतना सुनिकै आल्हा ऊदन ❀ तुरतै चले वहाँ ते ज्वान ॥
अपने अपने फिरि घोड़न पर ❀ दूनों भाय भये असवार ।
तुरतै रूपन को बुलवायो ❀ बोले उदयसिंह सरदार ॥
छा हजार जो हमरी फौजैं ❀ तिनमाँ खबरि सुनावो जाय ।
करैं तयारी सब नर नाहर ❀ अबहीं कूच देयँ करवाय ॥
इतना सुनिकै रुपना चलिभा ❀ सबका खबरि सुनाई जाय ।
इक हरकारा को पठवायो ❀ औ देबा को लीन बुलाय ॥
हाल बतायो आल्हा ठाकुर ❀ जो कछु कह्यो चँदेलेराय ।
इतना सुनिकै देबा बोला ❀ दादा साँच देयँ बतलाय ॥
हमहूँ रहिबे ना मोहबे माँ ❀ साथै चलैं तुम्हारे भाय ।
सवन चिरैया ना घर छोड़ै ❀ ना बनिजरा बनिजको जाय ॥
यहनहिंचहियेपरिमालिकको ❀ ऐसे समय निकारैं भाय ।
लिखी गोसइँयाँ की को मेटै ❀ साथै चलब बनाफरराय ॥
कौन देश में अब चलि बसिहौ ❀ हमको साँच देउ बतलाय ।

सुनिकै बातैं ये देबा की ❀ बोले तुरत बनाफरराय॥
बैरी हमरे सब राजा हैं ❀ जावैं कौन देश को भाय।
तुमहूँ ऊदन सम्मत करिकै ❀ ठीहा ठीक देउ ठहराय॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ दादा साँच देयँ बतलाय।
देश देश में कीन लड़ाई ❀ संकट परा आज दिन आय॥
जयचँद राजा कनउजवाला ❀ सोई एक मित्र दिखराय।
दूसर कोऊ अस चत्री ना ❀ जो बिपदा में होय सहाय॥
इतना सुनिकै आल्हा ठाकुर ❀ मनमाँ ठीक लीन ठहराय।
चलिकै रहिये अब कनउज में ❀ साँची कही लहुरवाभाय॥
हमहूँ चाहत रहैं कनउज को ❀ तुमहूँ दीन स्वई बतलाय।
यह मन भाई भल देबा के ❀ दशहरिपुरै पहूँचे आय॥
बड़े प्रेम सों बावलि दौरी ❀ पूँछी कुशल दुवारे आय।
आल्हा बोले तब बावलि ते ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय॥
मोहिं निकार्योपरिमालिकने ❀ अनुचितअनुचितकसमखवाय।
आजु न रहिबे हम दशहरिपुर ❀ माता साँच दीन बतलाय॥
बावलि बोली फिरि आल्हा ते ❀ काहे कह्यो चँदेलेराय।
बात बतावो जो पूरी तुम ❀ तौ फिरि कूच देयँ करवाय॥
इतना सुनिकै आल्हा ठाकुर ❀ सबियाँ कथा गये तहँ गाय।
हाल जानि कै बावलि माता ❀ महलन हुकुम दीन फरमाय॥
सुनवाँ फुलवा चित्ररेखा ❀ तीनों होवें बेगि तयार।
मोहिं निकार्यो परिमालिकने ❀ कीन्यो तनको नाहिं विचार॥
इतना सुनिकै बाँदी दौरी ❀ महलन खबरि जनाई जाय।
सुनवाँ फुलवा चित्ररेखा ❀ तीनों गईं सनाका खाय॥
डोल सजिगे ठकुरानिन के ❀ बहुका रंग संग भो आय।

तबतो गाथा सब आल्हा की ❀ बाँदी तहाँ दीन समुझाय ॥
तब ठकुरानी मनसानी सब ❀ अपनो हर्ष शोक बिसराय ।
डोला मँगायो बघऊदन ने ❀ सोऊ गयो तहाँ पर आय ॥
भई तयारी फिरि जल्दी सों ❀ सबहिन कूच दीन करवाय ।
बाजे डंका अहतंका के ❀ हाहाकार शब्द गा छाय ॥
आगे आल्हा हैं पपिहा पर ❀ ऊदन बेंदुल पर असवार ।
हंसामनि घोड़े के ऊपर ❀ इन्दल आल्हा केर कुमार ॥
आय कै पहुँचे सब मोहबे में ❀ मल्हना महल पहूँचे जाय ।
बड़ी खुशाली सों महरानी ❀ आदर भाव कीन अधिकाय ॥
खबरि पायकै सब रानी फिरि ❀ मल्हना महल पहूँचीं आय ।
रोवन लागीं सब रानी तहँ ❀ दारुण बिपति कहीना जाय ॥
मल्हना बोली फिरि आल्हा ते ❀ साँची सुनो बनाफरराय ।
तुम्हैं मुनासिब यह नाहीं है ❀ जो अब कूच देउ करवाय ॥
घाटि न जाना हम ब्रह्मा सों ❀ चारो भाय बनाफरराय ।
कहा न मानो अब काहू को ❀ बैठो धाम आपने जाय ॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ।
अब नहिं रहिबे हम मोहबे माँ ❀ माता साँच दीन बतलाय ॥
गऊ रक्त सम जल को जानै ❀ भोजन गऊ माँस सममान ।
करै मेहरिया कै संगति जो ❀ होवै बहिनी संग समान ॥
ऐसी बातैं महराजा की ❀ माता काह गई बौराय ।
जो हम बिलमैं अब मोहबे माँ ❀ तौ सब क्षत्री धर्म नशाय ॥
तुम्हैं मुनासिब यह नाहीं है ❀ राखो हमैं फेरि जो माय ।
दर्शन ह्वैगे सब मातन के ❀ अब हम कूच द्यहैं करवाय ॥
इतना कहिकै ऊदन ठाकुर ❀ डोला तुरत लीन मँगवाय ।

औ ललकारा फिरि माता को ❀ अब तुम कूच देउ करवाय ॥
सुनि सुनि बातैं उदयसिंह की ❀ मल्हना बार बार पछिताय ।
तुरतै धावन को बुलवायो ❀ सिरसागढ़ै दीन पठवाय ॥
लागि कचहरी मलखाने कै ❀ धावन वहाँ पहूँचा जाय ।
कही हकीकति सब आल्हा की ❀ धावन हाथ जोरि शिरनाय ॥
सुनिकै बातैं धावनमुख की ❀ मलखे घोड़ी लीन मँगाय ।
मल्हना करे फिरि महलन ते ❀ आल्हा कूच दीन करवाय ॥
बाजे डंका अहतंका के ❀ कनउज चले बनाफरराय ।
व्याकुल रैयत भै मोहबे कै ❀ काहू धीर धरा ना जाय ॥
भोजनकीन्ह्योकोउतादिनना ❀ सोवन रात दीन बिसराय ।
जहँ तहँ गाथा बघऊदन की ❀ घर घर रहे नारिनर गाय ॥
चढ़ा कबुतरी पर मलखाने ❀ मारग मिला तुरत ही आय ।
कुशल पूछिकै आल्हा ठाकुर ❀ आपनिकुशलदीनबतलाय ॥
जो कछु भाषा परिमालिक ने ❀ आल्हा सत्य सत्य गे गाय ।
मलखे बोले तब आल्हा ने ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
चलिकै रहिये तुम सिरसा में ❀ करिहै काह चँदेलाराय ।
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ दादा साँच देयँ बतलाय ॥
अब नहिं टिकिहैं हम सिरसा में ❀ चहु तुम कोटिन करो उपाय ।
राज्य छोड़िकै परिमालिक की ❀ जयचँद पुरी जायँ हम भाय ॥
जब सुधि आवै नृप बातन कै ❀ तब मन पीर होय अधिकाय ।
बात कै मारे जो मरि है ना ❀ मरिहै काह लात कै घाय ॥
आज जो घोड़ा पिरथी माँगा ❀ काल्हिकोतिरियालेनमँगाय ।
यह मर्दाना को बाना ना ❀ आपन घोड़ देयँ पठवाय ॥
इतना सुनिकै मलखे बोले ❀ मानो कही बनाफरराय ।

सवन चिरैया ना घर छोड़ै ❀ ना बनिजरा बनिज को जाय ॥
अस गति नाहीं है पिरथी की ❀ तुम्हरे घोड़ लेयँ मँगवाय ।
इतना सुनिकै आल्हा ठाकुर ❀ बोले फेरि बचन समुझाय ॥
लिखी बिधाता की मिटिहै ना ❀ सिरसा लौटि जाउ मलखान ।
काह हकीकतिहै मानुष कै ❀ सुख दुख देनहार भगवान ॥
बातैं सुनिकै ये आल्हा की ❀ मलखे ठीक लीन ठहराय ।
क्यहु समुझायेते मनिहैं ना ❀ आल्हाउदयसिंह दोउ भाय ॥
मिला भेंट करि सब काहू सों ❀ मलखे कूच दीन करवाय ।
जायकै पहुँचै सिरसागढ़ में ❀ महलन खबरि बताई जाय ॥
नदी बेतवा को उतरत भे ❀ दूनों भाय बनाफरराय ।
ढाई दिन के फिरि अर्सा में ❀ झाबर गये बनाफर आय ॥
बिजुली चमकै कउँधा लपकै ❀ कहुँ कहुँ मेघ रहे हहराय ।
मेढुक बोलैं चौगिर्दा ते ❀ बीछीसाँपन की अधिकाय ॥
नचैं मुरैला कहुँ जंगल में ❀ झींगुर कहूँ करैं झनकार ।
किह्यो बसेरा तटयमुना के ❀ नाहर उदयसिंह त्यहिबार ॥
बनी रसोईं रजपूतन की ❀ सबहिन जेयँ लीन ज्यँवनार ।
भोर भुरहरे मुर्गा बोलत ❀ उतरे घाट कालपी क्यार ॥
तहँते चलिकै परहुल पहुँचे ❀ दूनों भाय बनाफरराय ।
दिना द्वैक रहि त्यहि परहुलमें ❀ तहँते कूच दीन करवाय ॥
जायकै पहुँचे अस ऊसर में ❀ जहँ पानी को नहीं ठिकान ।
इन्दल बेंदुल दोउ प्यासे भे ❀ इनके गई प्राण पर आन ॥
रहा न बीरा तहँ पानन का ❀ जो इन्दल का देय खवाय ।
ताकि त्यवरिया इन्दल बेंदुल ❀ पानी पिया तहाँ पर जाय ॥
आधा पानी आधी माटी ❀ जाको दीखे चित्त घिनाय ।

हाय मुसीबत अस परिगैहै ❀ सोई पिया तहाँ पर जाय ॥
सुनवाँ रोई त्यहि समया में ❀ फुलवा बार बार पछिताय ।
फाटै छाती नहिं द्यावलि कै ❀ चित्तररेखा गई डराय ॥
आल्हा सोचैं त्यहि समया में ❀ ऊदन तहाँ गये मुरझाय ।
हाय मुसीबत यह दुखदाइनि ❀ डाइनि सबै सतावैं आय ॥
इतना कहिकै आल्हा ठाकुर ❀ तहँते कूच दीन करवाय ।
कनउज केरे फिरि डाँड़े पर ❀ लश्कर सबै पहूँचा आय ॥
तम्बू गड़िगा तहँ आल्हा का ❀ डेरा गड़े सिपाहिन क्यार ।
कम्मर छोरे रजपूतन ने ❀ औ धरि दई ढाल तलवार ॥
तंग बछेड़न के छोरेगे ❀ हाथिन हौदा धरे उतार ।
भाँग खायकै नरनाहर कोउ ❀ गावन लागे मेघ मलार ॥
कोऊ अफीमन के झोंकन ते ❀ झुकि २ झूमि २ रहिजायँ ।
कोऊ क्षत्री हुक्का लीन्हे ❀ गुड़गुड़गुड़गुड़ रहे मचाय ॥
ऊदन बोले फिरि आल्हा ते ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ।
चलिकैमिलियेअबजयचँदको ❀ दादा सुनो बनाफरराय ॥
इतना सुनिकै आल्हा ठाकुर ❀ अपनो हाथी लीन मँगाय ।
सुमिरि भवानी जगदम्बा को ❀ मन में गणाधीश को ध्याय ॥
आल्हा बैठे पचशब्दापर ❀ ऊदन बेंदुल में असवार ।
माथ नायकै शिवशंकर को ❀ दोऊ चलत भये सरदार ॥
राजा जयचँद की ड्योढ़ी पर ❀ दोऊ भाय पहुँचे आय ।
औ ललकारा द्वारपाल को ❀ राजै खबरिसुनावो जाय ॥
आल्हा ऊदन मोहबे वाले ❀ राजन तुमरे खड़े दुवार ।
आयसु पावैं महराजा को ❀ तौ फिरि मिलैं आय दरबार ॥
इतना सुनिकै द्वारपाल चलि ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ।

जो कछु आल्हा ने बतलावा ❀ सो सब यथातथ्य गा गाय।
सुनिकै बातैं द्वारपाल की ❀ राजा हुकुम दीन फरमाय।
तुम लै आवो अब आल्हाको ❀ हमरी नजरि गुजारो आय॥
इतना सुनिकै द्वारपाल चलि ❀ आल्है खबरि सुनाई आय।
तुम्हैं बुलावत महराजा हैं ❀ साथै चलो हमारे भाय॥
आल्हा ऊदन दूनों भाई ❀ तब दरबार पहूँचे जाय।
हाथ जोरिकै आल्हा ठाकुर ❀ आपनि कथा गये सबगाय॥
इतना सुनिकै जयचँद राजा ❀ बोला सुनो बनाफरराय।
तुम्हैं निकास्यो परिमालिकहै ❀ तौ हम नाहीं सकैं बसाय॥
जगा न देबे हम बसने को ❀ तुमते साँच दीन बतलाय।
जहँ मन भावै तहँ चलि जावो ❀ ह्याँ नहिं ठौर बनाफरराय॥
इतना सुनिकै आल्हा ऊदन ❀ तहँते कूच दीन करवाय।
आयकै पहुँचे निज तम्बुन में ❀ दोऊ भाय बनाफरराय॥
ऊदन बोला रजपूतन ते ❀ लश्कर बेगि होय तैयार।
इतना सुनिकै सब नरनाहर ❀ अपने बाँधिलीन हथियार॥
तबै बनाफर उदयसिंह ने ❀ सुमिरी तहाँ शारदा माय।
कन्या बिप्रन की बुलवाई ❀ तिनकोभोजनदीनकराय॥
दीन दच्छिणा तिन कन्यन को ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय।
भयो बुलौवा फिरि बिप्रन को ❀ तिनहुन हवन करावाआय॥
दीन दच्छिणा तहँ सुहरन को ❀ इच्छित भोजन दीन कराय।
ऊँचे कुल के कनवजिया तहँ ❀ आशिर्बाद दीन हर्षाय॥
संग सिपाहिन को लैकै फिरि ❀ तहँते चला बनाफरराय।
जाय बजारन माँ पहुँचत भा ❀ कल्हा जौनु लहुरवाभाय॥
लगीं दुकानैं हलवाइन की ❀ ऊदन तिन्हैं लीन लुटवाय।

कपड़ा लूटे क्यहु बजाज के ⊛ काहुकोअन्नदीनछिरकाय ॥
उलटे झौवा घुइँयन वाले ⊛ छीताफलहू दीन चलाय ।
छीनि सराफन की थैली ली ⊛ दैया बापू रहे मनाय ॥
उल्टि बिसातन की दुकानदी ⊛ भुर्जिन छप्पर दीन गिराय ।
तेलि तँबोली कलवारन की ⊛ दुर्गति भई तहाँ पर आय ॥
लैले टटुवा बनियां चलिभे ⊛ मन में बार बार पछिताय ।
हाय रुपैया बैरी हेगा ⊛ ह्याँ अब गई प्राणपर आय ॥
भा खलभल्ला औ हल्ला अति ⊛ पहुँचे बहुत राजदरबार ।
रोय रोयकै बनियाँ ब्वाले ⊛ राजन मानो कही हमार ॥
अजयपाल औ रतीभान से ⊛ एकते एक शूर सरदार ।
ऐसि दुर्दशा में कबहूँ ना ⊛ जैसी भई आय यहिबार ॥
ऊदन आये मोहबे वाले ⊛ तिन सब लीन बजारलुटाय ।
इतना सुनिकै जयचँद राजा ⊛ लाखनिराना लीन बुलाय ॥
कहि समुझावा लखराना को ⊛ तोपन आगिदेउ लगवाय ।
सुनिकै बातैं महराजा की ⊛ लाखनिचलाशीशकोनाय॥

सवैया

चर्खिन में सब तोप चढ़ाय औ फौज तयार कियो लखराना ।
बाजत डंक निशंक तहाँ औ यथा घन सावन को घहराना ॥
छिन्न कृपानी कटा करै कहुँ चमकत खड्ग तहाँ मरदाना ।
गोहन बाजत हाव किये ललिते यह भाव ने जान बखाना ॥

भई तयारी लखराना की ⊛ क्षत्रिन बाँधि लीन हथियार ।
सैयद ताल्हन बनरस वाला ⊛ पहुँचा तबै राजदरबार ॥
कियो बन्दगी महराजा को ⊛ औ सब हाल कह्यो समुझाय ।
गहि तमाशो नहिं कनउज में ⊛ आल्हा ऊदन गेउ बनाय ॥

मुर्चा फेरा इन पिरथी का ❁ द्वारे हाथी दीन पछार।
बड़े लड़ैया द्यावलिवाले ❁ इनते हारि गई तलवार॥
जयचँद बोले तब सय्यद ते ❁ नाहर बनरस के सरदार।
जौंरा भौंरा दुइ हाथिन को ❁ हमरे द्वारे देयँ पछार॥
खता माफ करि हम आल्हा कै ❁ औ कनउज माँ लेयं बसाय।
इतना सुनिकै सय्यद बोले ❁ धावन पठै लेउ बुलवाय॥
तब महराजा कनउज वाला ❁ तुरतै धावन दीन पठाय।
खबरि सुनाई त्यहि आल्हा को ❁ तुमको राजा रहे बुलाय॥
मीरा सय्यद तहँ बैठे हैं ❁ तिनहिन हमैं दीन पठवाय।
इतना सुनिकै आल्हा ऊदन ❁ दोऊ भाय बनाफरराय॥
अपनी अपनी असवारिनचढ़ि ❁ तहँते कूच दीन करवाय।
जौंरा भौंरा मस्ता हाथी ❁ जयचँद द्वारे दीन ढिलाय॥
आल्हा ऊदन दोऊ भाई ❁ पहुँचे तुरत द्वार पर आय।
जयचँद बोले तब आल्हा ते ❁ मानो कही बनाफरराय॥
हथी पछारो जो द्वारे पर ❁ तौ तकसीर माफ ह्वैजाय।
इतना सुनिकै उदयसिंह ने ❁ मनमाँ सुमिरि शारदा माय॥
ताकिकै मस्तक इक हाथी के ❁ भाला हना लहुरवा भाय।
पैठिग भाला त्यहि हाथी के ❁ तुरतै गिरा पछारा खाय॥
दन्त पकरिकै फिरि दुसरे के ❁ ऊदन दीन्ह्यो द्वार लिटाय।
देखि बीरता उदयसिंह की ❁ जयचँद बहुत गयो हर्षाय॥
बाँह पकरिकै फिरि आल्हा कै ❁ औ दरबार पहूँचा जाय।
कीनि खातिरी भल ऊदन की ❁ खाली महल दीन करवाय॥
लैकै लश्कर तब कनउज माँ ❁ बसिगे तहाँ बनाफरराय।
खेत छूटिगा दिननायक सों ❁ झगडा गड़ा निशाको आय॥

परे आलसी खटिया तकि तकि ❀ सन्तन धुनी दीन परचाय।
आशिर्वाद देउँ मुन्शीसुत ❀ जीवो प्रागनरायण भाय॥
रहै समुन्दर में जबलों जल ❀ जबलों रहैं चन्द औ सूर।
मालिक ललिते के तबलों तुम ❀ यशसों रहो सदा भरपूर॥
माथ नवावों पितु अपने को ❀ ह्याँ ते करों तरँग को अन्त।
राम रमा मिलि दर्शन देवो ❀ इच्छा यही मोरि भगवन्त॥

आल्हानिकासी सम्पूर्ण

आल्हखण्ड

लाखनि का विवाह

अथवा

बूँदी की लड़ाई

सवैया

फूलमती पद बन्दन कै दशस्यन्दन के सुत को यश गावैं।
ध्यावैं मनावैं सदा रघुनन्दन बन्दन कै अतिही सुख पावैं॥
प्रेम के नेम में क्षेम सदा प्रभु की करणी बरणी नहिं जावैं।
क्षेम सदा हमरी करियो ललिते पद पङ्कज नित्त मनावैं॥

सुमिरन

फूलमती कनउज की देबी ❀ जिनयशप्रकटआजयहिकाल।

करैं मनोरथ पूरण सबके ❀ ध्यावैं ज्वान वृद्ध चहुवाल ॥
हैं महरानी सब सुखदानी ❀ रक्षा करैं विकट कलिकाल ।
करि अवलम्बा तिन अम्बा का ❀ लाखनि ब्याह बखानों हाल ॥
करो सहाई अब माई तुम ❀ जाते चला जाउँ भवपार ।
नैया बूड़ै भवसागर में ❀ माता तुम्हीं निबाहन हार ॥
पार लगायो जस ऊदन का ❀ तैसे पार करो यहि बार ।
माता भ्राता अरु ताता ये ❀ स्वारथ मित्र सबै संसार ॥
साँची माता अरु त्राता तुम ❀ धाता सृष्टि माँझ यहिकाल ।
ललिते ऐसे नर दुर्बल को ❀ माता जानु आपनो बाल ॥
छूटि सुमिरनी गै देवी कै ❀लाखनिब्याहसुनोयहिकाल ।
गंगाधर बूँदी का राजा ❀ ता घर ब्याह होय गा हाल ॥

अथ कथाप्रसंग

कुसुमा बेटी गंगाधर की ❀ राजा बूँदी का सरदार ।
खेलत देखा सो बेटी को ❀ यौवन जानि परा त्यहिबार ॥
लाग बिचारन मन अपने माँ ❀ बेटी ब्याहन के अनुसार ।
नव अरु आठ दशै बर्षन माँ ❀ ज्योतिषशास्त्रदीनअधिकार ॥
फिरि तौ गिनती ना कन्या की ❀ यह मन कीन्ह्यो खूब बिचार ।
म्वती जवाहिर दो बेटा थे ❀ तिनकोबोलिलीनत्यहिबार ॥
हाल बतावा मन अपने का ❀ राजा बार बार समुझाय ।
घरबर नीको जहँ तुम देखो ❀ त्यहिघर टीका अवो चढ़ाय ॥
एक मोहोबे तुम जायो ना ❀ तहँ पर रहैं बनाफरराय ।
जाति बनाफर की हीनी है ❀ हल्ला देश देश अधिकाय ॥
इतना कहिकै महराजा ने ❀ सबियाँ सामा दीन मँगाय ।
चला जवाहिर तब बूंदी ते ❀ राजै बार बार शिरनाय ॥

तीनिलाख को टीका लैकै ❀ दिल्ली शहर पहूँचा जाय।
हाल जानि कै पृथीराज ने ❀ टीका तुरत दीन लौटाय॥
बौरीगढ़ में बीरशाह घर ❀ पहुँचा फेरि जवाहिर जाय।
सोऊ जादू की शंका ते ❀ टीका तुरत दीन लौटाय॥
तहँते चलिकै फिरि बिसहिनगा ❀ जहँ पर बसैं बिसेनेराय।
लागि कचहरी गजराजा की ❀ शोभा कही बूत ना जाय॥
सोने सिंहासन पर सोहत है ❀ राजा बिसहिन का सरदार।
दीन जवाहिर तहँ चिट्ठी को ❀ राजा पढ़न लाग त्यहिबार॥
पढ़िकै चिट्ठी गंगाधर कै ❀ टीका तुरत दीन लौटाय।
तबै जवाहिर मन खिसियाने ❀ पहुँचे फेरि कनौजै जाय॥
लागि कचहरी तहँ जयचँद कै ❀ भारी लाग राज दरबार।
आल्हा ऊदन तहँ बैठे हैं ❀ बैठे बड़े बड़े सरदार॥
दीन जवाहिर तहँ चिट्ठी को ❀ जयचँदआँकुआँकुपढ़िलीन।
पढ़िकै चिट्ठी वापस दीन्ह्यो ❀ हाँहूँ कछू नहीं नृप कीन॥
तबै जवाहिर यह बोलत भा ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय।
लाखनि क्वाँरे हैं तुम्हरे घर ❀ यह हम आयन पता लगाय॥
आयसु पावैं महराजा को ❀ तौ हम टीका देयँ चढ़ाय।
इतना सुनिकै जयचँद बोले ❀ तुमते साँच देयँ बतलाय॥
ब्याह न करिबे हम तुम्हरे घर ❀ ह्वाँपर जादू को अधिकाय।
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय॥
टीका आयो घर तुम्हरे है ❀ राजन लीजै आप चढ़ाय।
कौन दुसरिहा नृप तुम्हरो है ❀ ज्यहिभयकरौ कनौजीराय॥
औरो बोले त्यहि समया माँ ❀ साँची कहौ बनाफरराय।
सम्मत सबका जयचँद लैकै ❀ तब परिडत ते कहा सुनाय॥

देखो साइति यहि समया माँ ❀ टीका लीन जाय चढ़वाय।
सुनिकै बातैं महराजा की ❀ पंडित साइति दीन बताय॥
पाख अँध्यरियातिथि तेरसिओं ❀ फागुन मास सुनो महराज।
भौंरिन केरी शुभ साइति है ❀ ह्वैहैं सुफल आपके काज॥
पै यहि बिरिया शुभ साइति में ❀ टीका आप लेउ चढ़वाय।
इतना सुनिकै महराजा ने ❀ महलन खबरि दीन पठवाय॥
खबरि पायकै महरानी ने ❀ चौका तुरत लीन लिपवाय।
चौक पुराई गजमोतिन सों ❀ चन्दन पीढ़ा दीन डराय॥
तापर बैठे लखराना जब ❀ गावन लगीं सुहागिल आय।
ब्यटा जवाहिर गंगाधर का ❀ तहँ पर टीका दीन चढ़ाय॥
बीरा दीन्ह्यो जब लाखनि को ❀ सम्मुख छींक भई तब आय।
रानी तिलका त्यहि समया में ❀ बोली राजै बचन सुनाय॥
ब्याह न करिबे हम बूँदी माँ ❀ टीका आप देयँ लौटाय।
परम पियारे लखराना के ❀ बीरा लेत छींक भै आय॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय।
जो कछु होवै इनके जीका ❀ हमरो लीन्ह्यो मूड़ कटाय॥
टीका फेरयो महरानी ना ❀ जान्यो शकुन छींक का माय।
भयो सखरमा यहि मानुष का ❀ पौंवन नाक गिरावत जाय॥
यहिकीछींकनका अशकुनना ❀ माता भरम देउ बिसराय।
राजा बोले फिरि रानी ते ❀ साँची कहै बनाफरराय॥
जो अस हालत सच होती ना ❀ टीका तुरत देत लौटाय।
इतना सुनिकै तिलका रानी ❀ अपनो भरम दीन बिसराय॥
फेरि जवाहिर सब नेगिन को ❀ सुबरण कड़ा दीन पहिराय।
जितनी सामा रह टीका की ❀ सो आँगन माँ दीन धराय॥

राजा जयचँद उन नेगिन का ❀ सुबरण कड़ा दीन पहिराय।
साल दुसाला मोहनमाला ❀ इनहुन दीन तहाँ पर आय॥
बड़ी खुशाली दुहुँ तरफा के ❀ नेगिन मनै भई अधिकाय।
बिदा माँगिकै चला जवाहिर ❀ बूँदी शहर पहूँचा जाय॥
हाल बतायो महराजा का ❀ जाबिधि टीका अयो चढ़ाय।
भई खुशाली गंगाधर के ❀ फूले अंग न सके समाय॥
नामी राजा कनउज वाले ❀ बेटा कीन काज खुब जाय।
भई तयारी ह्याँ ब्याहे की ❀ फागुन मास पहूँचा आय॥
न्यवत पठावा सब राजन को ❀ राजा कनउज के सरदार।
पावत चिट्ठी के राजा सब ❀ कनउज आय गये त्यहिवार॥
तेल औ मायन नहछुर आदिक ❀ ब्याहन कुँवाँ क्यार ब्यवहार।
नेग चार सब पूरन ह्वैगे ❀ लागे सजन शूर सरदार॥
झीलम बखतर पहिरि सिपाहिन ❀ हाथम लई ढाल तलवार।
सुमिरि भवानीसुत गणेश को ❀ राजा जयचँद भये तयार॥
आल्हा बैठे पचशब्दा पर ❀ ऊदन बेंदुल पर असवार।
गंगापाँवर कुड़हरि वाला ❀ मामा लाखनि का सरदार॥
सूरज राजा परहुल वाला ❀ सोऊ बेगि भयो तैयार।
सिर्गा घोड़े की पीठी पर ❀ सय्यद बनरस का सरदार॥
पूजि गोबर्धनि संदोहिनि अरु ❀ लाखनि फूलमती त्यहिवार।
सुमिरि भवानी सुत गणेश को ❀ पलकी उपर भये असवार॥
बाजे डङ्का अहतङ्का के ❀ बारालाख फौज तैयार।
आगे हलका भा हाथिन का ❀ पाछे चलन लागि असवार॥
चले सिपाही त्यहि पीछे सों ❀ रब्बा चले पवन की चाल।
मारु मारु कै मौहरि बाजी ❀ बाजी हाव हाव करनाल॥

गर्द उड़ानी अति मारग में ❀ लोपे अन्धकार सों भान।
हाथी चिघरैं घोड़ा हींसैं ❀ घूमत जावैं लाल निशान॥
भयऊ कलाहल अति मारग में ❀ जंगल जीव गये थर्राय।
वनइस दिन के फिरि अर्सा में ❀ बूँदी पास गये नगच्याय॥
चार कोस जब बूँदी रहिगे ❀ जयचँद तम्बू दीन गड़ाय।
गड़िगे तम्बू सब राजन के ❀ सब रँग ध्वजा रहे फ़हराय॥
अपने अपने सब तम्बुन में ❀ राजा नृत्य रहे करवाय।
गमकैं तबला सब तम्बुन में ❀ सावन यथा मेघ घहरायँ॥
ओढ़े सारी काशमीर की ❀ धारी शिरन सोहनी भाय।
बनी मोहनी अति मूरति है ❀ सूरति बरणि नहीं कछु जाय॥
ऊदन बोले तब रूपन ते ❀ ऐपनवारी दे पहुँचाय।
रूपनबारी तब बोलत भा ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय॥
ऐपनवारी बारी लैकै ❀ आपन मूड़ कटावै जाय;
आये बारी बहु कनउज के ❀ ऐपनवारी देउ पठाय॥
बातैं सुनिकै ये रूपन की ❀ बोला फेरि बनाफरराय।
बाना राखे रजपूती का ❀ बारी कौन बतावै भाय॥
इतना सुनिकै रूपन बोले ❀ बेंदुल घोड़ देउ मँगवाय।
सुनिकै बातैं उदयसिंह ने ❀ बेंदुल बाग दीन पकराय॥
ऐपनवारी बारी लैकै ❀ बेंदुल उपर भयो असवार।
सवा पहर के फिरि अर्सा माँ ❀ पहुँचा जाय नृपति के द्वार॥

सवैया

देखि कै रूपनि को दरबानि कहा इमि बानि सो बेगि सुनाई।
कौनसो देश बसौ क्यहिग्राम औ कौन सो काज गये तुम आई॥
जाय कहौं नृपसों चलिकै भलिकै निज हाल जो देउ बताई।

बानि सुन्यो ललिते जब रूपनि बोलि उठ्यो तब मोद बढ़ाई ॥
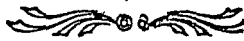
लाखनि का ब्याह—पहली लड़ाई

ऐपनवारी बारी लाबा ❀ राजै खबरि सुनावो जाय ।
हमैं पठावा आल्हा ऊदन ❀ ब्याहन अये कनौजीराय ॥
इतना सुनिकै द्वारपाल चलि ❀ राजै खबरि दीन बतलाय ।
सुनिकै बातैं द्वारपाल की ❀ राजा गये दुवारे आय ॥
द्वारे आये जब गंगाधर ❀ रूपन बोला शीश नवाय ।
ब्याहन आये लखराना को ❀ अगुवाकार बनाफरराय ॥
आल्हा ऊदन के बारी हन ❀ रूपन जानो नाम हमार ।
ऐपनवारी लै आयन है ❀ पावैं नेग आपके द्वार ॥
कीरति गावत रूपनबारी ❀ जावैं आल्हा के दरबार ।
इतना सुनिकै राजा बोले ❀ चहिये नेग काह तव द्वार ॥
रूपन बोले महराजा ते ❀ चाहैं यही आपके द्वार ।
दुइ घंटा भरि चलै सिरोही ❀ द्वारे बहै रक्त की धार ॥
कीरति गावत रूपन जावै ❀ होवै जग में नाम तुम्हार ।
बारी आवा बघऊदन का ❀ द्वारे कठिन कीन तलवार ॥
इतना सुनिकै गंगाधर ने ❀ फाटक बन्द लीन करवाय ।
जाय न पावै रूपन बारी ❀ आरी होय लोह के घाय ॥
इतना सुनिकै रजपूतन ने ❀ अपनी खैंचिलीन तलवार ।
रूपन बारी बेंदुल परते ❀ गरुई हाँक दीन ललकार ॥
प्राण पियारे ज्यहि होवैं ना ❀ सोई लड़ै आय सरदार ।
धावा कीन्ह्यो रजपूतन ने ❀ बेंदुल भली मचाई रार ॥

टापन मारै रजपूतन का ❀ काहू दाँतन लेय चबाय।
जब मन पावै सो रूपन का ❀ तड़पत उड़ा दूर लग जाय॥
का गति बरणौं तहँ रूपन कै ❀ दूनों हाथ करै तलवार।
बड़े लड़ैया बूँदीवाले ❀ तेऊ हनैं आपनी वार॥
दुइ दश पन्द्रह बीसक तीसक ❀ गिरिगे समरभूमि मैदान।
देखि तमाशा गंगाधर जी ❀ द्वारे बहुत भये हैरान॥
क्रोधित ह्वैकै महराजा ने ❀ आपै खैंचि लीन तलवार।
एँड़ लगायो तब रूपन ने ❀ घोड़ा चला गयो वा पार॥
मारु मारु औ हल्ला करिकै ❀ पाछे चले बहुत सरदार।
उड़ा बेंदुला त्यहि समया मा ❀ तम्बुन पास गयो असवार॥
क्षत्री लौटे बूँदी वाले ❀ बैठे आय राजदरबार।
रूपन बारी को देखत खन ❀ बोला उदयसिंह सरदार॥
कैसी गुजरी कहु बूँदी में ❀ रूपन रङ्ग बिरङ्गा ज्वान।
इतना सुनिकै रूपन बोले ❀ भइया भलो कौन मैदान॥
नामी ठाकुर का बारी है ❀ जान्यो सबै राजदरबार।
दुइ घण्टा भरि चली सिरोही ❀ द्वारे बही रक्त की धार॥
मातु शारदा तुम्हरी बशिमा ❀ लाला देशराज के लाल।
सरबर तुम्हरी का दुनिया मा ❀ दूसर नहीं आज नरपाल॥
सुनो हकीकति अब बूँदी कै ❀ भारी लाग राजदरबार।
रूपन बारी की चरचा का ❀ खरचा होन लाग त्यहिबार॥
म्वती जवाहिर दोउ पुत्रन को ❀ राजा पास लीन बैठाय।
कही हकीकति सब ऊदन की ❀ पुत्रन बार बार समुझाय॥
जाति बनाफर की हीनी है ❀ अगुवाकार भये सो आय।
कैसे ब्याहब हम बेटी का ❀ हँसिहैं जाति पाँति के आय॥

लड़िके जितिबे नहिं ऊदन ते ❀ यहहू साँच दीन बतलाय ।
धोखा देके लखराना का ❀ अब हम कैद लेयँ करवाय ॥
तौ तौ इज्जत हमरी रहिहै ❀ नहिं सब जैहै काम नशाय ।
तुम अब जावो त्यहि तम्बू मा ❀ जहँ पर बैठ कनौजीराय ॥
समय आयगा अब भौंरिन का ❀ इकलो लड़का देउ पठाय ।
देश हमारे यह रीती है ❀ कहियो बारबार समुझाय ॥
इतना सुनिकै चला जवाहिर ❀ चारो नेगी संग लिवाय ।
जहाँ कनौजी का तम्बू था ❀ पहुँचा तहाँ जवाहिर आय ॥
कही हकीकति सब राजा सों ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ।
देश हमारे की रीती यह ❀ इकलो लड़िका देउ पठाय ॥
नाई बारी दूनों नेगी ❀ इनको लेवैं संग लिवाय ।
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
ग्यारह नेगी औ सहिबाला ❀ इतने पठै देव महराज ।
इतना सुनिकै राजा बोले ❀ भावै करो तौन तुम काज ॥
जो मन भावै सो करु ऊदन ❀ तुमको दीन पूर अधिकार ।
बनि सहिबाला तब ऊदन गे ❀ नेगी बने और सरदार ॥
बैठि पालकी में लखराना ❀ अपनी लिये ढाल तलवार ।
संग जवाहिर के चलि दीन्हे ❀ नेगी बने शूर सरदार ॥
आसा लीन्हे कोउ हाथे मा ❀ मुरछल कोऊ डुलावत जाय ।
झण्डी लीन्हे कोऊ नेगी ❀ कोऊ रहे मशाल दिखाय ॥
बूँदी केरे नर नारी सब ❀ भारी भीर कीन अधिकाय ।
रूप देखिकै लखराना का ❀ मन में कामदेव शर्माय ॥
धरी पालकी गै फाटक पर ❀ बैठे सबै शूर सरदार ।
यक यक भाला दुइ दुइ बरछी ❀ कम्मर परी एक तलवार ॥

बाहर आये तब गंगाधर ❁ औ लाखनि ते कह्यो सुनाय।
जल्दी चलिये तुम भीतर को ❁ भौंरी समय गयो नगच्याय॥
इतना सुनिकै ऊदन ठाकुर ❁ नेगी लीन्हे संग लिवाय।
भीतर पहुँचा जब मन्दिर के ❁ तहँ नहिं खम्भ परा दिखराय॥
लौटन लाग्यो जब बाहर को ❁ आये शूरबीर तब धाय।
मारु मारु कै हल्ला करिकै ❁ ऊदन उपर पहूँचे आय॥
चली सिरोही तब आँगन मा ❁ हाहाकार शब्द गा छाय।
नेगी बनिकै जे क्षत्री गे ❁ ते सब दीन्ह्यो जूझ मचाय॥
तेरा क्षत्री कनउजवाले ❁ बूँदी केर पाँचसै ज्वान।
मारे मारे तलवारिन के ❁ मचिगा घोर शोर घमसान॥
ऊदन मारैं ज्यहि क्षत्री को ❁ सो मुँहभरा तुरत गिरिजाय।
पास न जावै कोउ ऊदन के ❁ रणमा बढ़ा बनाफरराय॥
का गति बरणौं तहँ लाखनि कै ❁ दूनों हाथ करै तलवार।
मारे मारे तलवारिन के ❁ आँगन बही रक्त की धार॥
म्वती जवाहिर दूनों भाई ❁ आँगन खूब कीन मैदान।
लड़ै बहादुर भीषमवाला ❁ देबा मैनपुरी चौहान॥
घायल ह्वैकै ग्यारह नेगी ❁ आँगन गिरे पछारा खाय।
लाखनि ऊदन त्यहि समया मा ❁ चालिस क्षत्री दीन गिराय॥
तबै जवाहिर सम्मुख आवा ❁ गरुई हाँक देत ललकार।
काह सिपाहिन का मारो तुम ❁ हमरे साथ करो तलवार॥
इतना सुनिकै लाखनि ऊदन ❁ सम्मुख चले तुरत ही धाय।
आगे पीछे चौगिर्दा ते ❁ परिगे गाँस फाँस में आय॥
लाखनि ऊदन दोऊ ठाकुर ❁ मोती कैद लीन करवाय।
घैहा नेगी जे आँगन में ❁ तिन इन तुरत लीन बँधवाय॥

लाखनि ऊदन दोउ क्षत्रिन को ❀ राजै खंदक दीन डराय।
यह सुधि पाई जब मालिनि ने ❀ कुसुमा पास पहूँची जाय॥
हाल बतायो त्यहि बेटी को ❀ मालिन बार बार समुझाय।
ब्याहन तुमका लाखनि आये ❀ राजै खन्दक दीन डराय॥
देश देश में जब फिर आये ❀ टीका लीन कनौजीराय।
ऐस मुनासिब नहिं राजा को ❀ जोअबदीन्हेनिजूझमचाय॥
गली गली में यह चरचा है ❀ नीकिन कीन बात महराज।
रूप उजागर सब गुण आगर ❀ खन्दक परे तुम्हारे काज॥
इतना सुनिकै कुसुमा बेटी ❀ मन में बार बार पछिताय।
हमैं न भाई यह आली है ❀ तुमते साँच दीन बतलाय॥
वयस बराबरि की मालिनि हौ ❀ अब गाढ़े माँ होउ सहाय।
राति अँधेरिया की बिरिया है ❀ खन्दक मोहिं देइ दिखराय॥
मोरे कारण महराजा सुत ❀ कैदी भये यहाँ पर आय।
उत्तम शय्या केरि स्ववैया ❀ खन्दक दीन बाप डरवाय॥
मोहिं दिखावै त्यहि क्षत्री को ❀ जियरा धीर धरा ना जाय।
इतना सुनिकै मालिन दौरी ❀ पलकी लाई तुरत लिवाय॥
बैठि पालकी मा दूनो फिरि ❀ खन्दक पास गईं नियराय।
दीन अशर्फी तहँ चकरन का ❀ तिन फिर तहाँ दीनपहुँचाय॥
कुसुमा बोली तहँ लाखनि ते ❀ स्वामी बार बार बलिजायँ।
मोहि अभागिनि के कारण सों ❀ तुमपरबिपतिपरीअधिकाय॥
अब तुम निकरो यहि खन्दक ते ❀ रस्सा देउँ कन्त लटकाय।
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ तुमते साँच देयँ बतलाय॥
जो तुम चाहौ लखराना को ❀ फौजन खबरि देउ पहुँचाय।
चहैं सहारा जो नारी को ❀ तौ सब क्षत्री धर्म नशाय॥

शंका लावो मन अन्तर ना ❀ महलन जाउ तड़ाका धाय।
खबरि पायकै आल्हा ठाकुर ❀ हमरी बिपति बिदरिहैं आय॥
कुसुमा बोली फिरि ऊदन ते ❀ क्षत्री भोजन देइँ पठाय।
ऊदन बोले तब कुसुमा ते ❀ यहनहिंउचित यहाँपरआय॥
चोरी चोरा कछु ह्वैहै ना ❀ शाहंशाह कनौजीराय।
भोर भ्वरहरे मुरगा बोलत ❀ फौजन खबरि देउ पठवाय॥
और न चाहैं कछु तुमते ये ❀ साँचे हाल दीन बतलाय।
इतना सुनिकै कुसुमा बेटी ❀ महलन फेरि पहूँची आय॥
सोचत सोचत राति पार भै ❀ प्रातःकाल गयो नगच्याय।
कहिसमुझावा तबमालिनि को ❀ फौजन तुरत दीन पठवाय॥
नाइनि बारिनि तेलि तँबोलिनि ❀ मालिनिधोबिनिकेसमुदाय।
साँची दूती रस ग्रन्थन में ❀ भाषा चतुरन खूब बनाय॥
सोई मालिनि चलि बूँदी ते ❀ फौजन आटी तड़ाका धाय।
पता लगायो तहँ आल्हा को ❀ चकरन तम्बू दीन बताय॥
बेला चमेलिन के हरवा को ❀ मालिनि तुरत दीन पहिराय।
कह्यो सँदेशा तहँ ऊदन का ❀ मालिनि बारबार सब गाय॥
जो सुधि पावैं बूँदी वाले ❀ हमरो पेट देयँ फरवाय।
भुसा भरावैं ते पेटे मा ❀ तुमका साँच दीन बतलाय॥
इतना सुनिकै आल्हा ठाकुर ❀ मुहरैं सात दीन पकराय।
मालिनि चलिभै तब फौजन ते ❀ बेटी पास पहूँची आय॥
खबरि सुनाई सब जयचँद को ❀ आल्हा बार बार समुझाय।
तब महराजा कनउजवाला ❀ डंका तुरत दीन बजवाय॥
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❀ बाँके घोड़न भे असवार।
झीलमबखतर पहिरिसिपाहिन ❀ हाथम लई ढाल तलवार॥

तोपैं चढ़ि गईं सब चर्खन माँ ❀ गोला तुरत दीन छुटवाय।
चढ़े जवाहिर औ मोती दोउ ❀ तोपन आगि दीनलगवाय॥
तोपैं छूटीं दुहुँ तरफा ते ❀ धुवना रहा सरग में छाय।
बड़ी दुर्दशा भै तोपन माँ ❀ तब फिरि मारु बन्द ह्वैजाय॥
गोली ओला सम वर्षत भइँ ❀ सननन सन्न सन्न सन्नाय।
दुनो गोल आगे का बढ़िगे ❀ सम्मुख भये समर में आय॥
भाला बलछी तलवारिन की ❀ लागी होन भड़ाभड़ मार।
मारे मारे तलवारिन के ❀ नदिया बही रक्त की धार॥
ना मुहँ फेरैं बूँदी वाले ❀ ना ई कनउज के सरदार।
शूर सिपाही सम्मुख रहिगे ❀ कायर छोंड़ि भागि हथियार॥
कटि कटि मूड़ गिरैं धरणी माँ ❀ उठि उठि रुण्ड करैं तलवार।
मूड़न केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लाग पहार॥
सात कोस के तहँ गिर्दा माँ ❀ कौवा गीध रहे मड़राय।
घैहा करहैं समरभूमि माँ ❀ दैया बापू रहे मचाय॥
हाय रुपैया बैरी ह्वैगे ❀ हमरे गई प्राणपर आय।
सात रुपैया के कारण ते ❀ छूटे लोग कुटुम औ भाय॥
तहिले बिरिया भै संध्या कै ❀ तब फिरि मारु बन्द ह्वैजाय।
जीबे लायक जितने घैहा ❀ तिनकीलोथिलीनउठवाय॥
ढई लाख दल कनउज वाला ❀ बूँदी डेढ़ लाख सरदार।
इतने जूझे दुहुँ तरफा ते ❀ करि करि मारु तहाँ पर यार॥
आल्हा आये जब तम्बू माँ ❀ आसनअलगलीनबिछवाय।
श्वास चढ़ाई फिरि ऊपर का ❀ शारद सुमिरि बनाफरराय॥
बिनती कीन्ही भल शारद की ❀ आल्हा बार बार शिरनाय।
तव अवलम्बा जगदम्बा है ❀ दूसर करि है कौन सहाय॥

बिनती करिकै आल्हा ठाकुर ❀ सोये सेज आपनी जाय।
देवी शारदा मइहर वाली❀निशिमाँस्वपनदिखायोआय॥
मलखे ब्रह्मा को बुलवावो ❀ ह्वैहै जीति बनाफरराय।
स्वपन देखिकै आल्हा ठाकुर ❀ प्रातःकाल उठे हर्षाय॥
लिखिकै चिट्ठी मलखाने को ❀ धावन हाथ दीन पठवाय।
चढ़ा साँड़िया माँ धावन तब ❀ सिरसागढ़ै पहूँचा जाय॥
चिट्ठी दीन्ही मलखाने को ❀ धावन बार बार शिरनाय।
पढ़िकै चिट्ठी मलखे ठाकुर ❀ औ यह बोले बचन सुनाय॥
हम समुझावा मल ऊदन का ❀ सिरसा बसो बनाफरराय।
कहा न माना आल्हा ऊदन ❀ खन्दक परे लहुरवा भाय॥
मनते हमरे यह आवति है ❀ की बूँदी का जाय बलाय।
जैसो कीन्हेनि तस फल पायनि ❀ दूनों भाय बनाफरराय॥
करैं तयारी नहिं बूँदी की ❀ तबहूँ ठीक नहीं ठहराय।
इतना कहिकै मलखे ठाकुर ❀ फौजन हुकुम दीन करवाय॥
करो तयारी सब बूँदी की ❀ खन्दक परा लहुरवा भाय।
इतना कहिकै मलखे ठाकुर ❀ अपने महल पहूँचे जाय॥
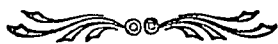
लाखनि का विवाह—दूसरी लड़ाई

पढ़िकै चिट्ठी गजमोतिनि को ❀ मलखे हाल दीन समुझाय।
हम ना जैबे अब बूँदी का ❀ प्यारी साँच दीन बतलाय॥
इतना सुनिकै प्यारी बोली ❀ दोऊ हाथ जोरि शिर नाय।
आजु साँकरा बघऊदन का ❀ स्वामी गाढ़े होउ सहाय॥
बिना सहायक अब दादा को ❀ स्वामी दुःख होय अधिकाय।

आजु साँकरा है दादा पर ❀ यहु दिन परी रोजना आय ॥
त्याना सहिबे घवरानिन का ❀ होई पीर रोज अधिकार ।
धर्म विहीनी हीनी ह्वैकै ❀ जीनो जन्म जन्म धिक्कार ॥
धर्म न रैहै जब देही मा ❀ करि है कौन काहि उपकार ।
धर्म निशाना मर्दाना है ❀ अर्जुन सकल लोक सरदार ॥
सारथि कीन्ह्यो नारायण जो ❀ स्वामी कृष्णचन्द्र महराज ।
बुद्धी द्वारा करि दिखलावा ❀ सबविधि अस्त्र शस्त्र के काज ॥
करौं किहानी जो पूरी मैं ❀ तौ फिरि होय बड़ा बिस्तार ।
सुनी किहानी जो बिप्रन ते ❀ सोई कहा सत्य भर्त्तार ॥
हवै दवाई दुख दाई यह ❀ नीबी हरै अनेकन रोग ।
जो कोउ पीवै चंगा होवै ❀ याको कैस नीक संयोग ॥
धर्म दवाइन के पीबे माँ ❀ स्वामिन सत्य सत्य आरोग ।
ताते जावो तुम बूँदी को ❀ होवै पूर हमारो भोग ॥
बातैं सुनिकै गजमोतिन की ❀ मलखे धरा पीठि पर हाथ ।
होय पियारी अस नारी जो ❀ तबहीं रहै धर्म की पाथ ॥
बड़ी पियारी निज नारी को ❀ मलखे बार बार समुझाय ।
गये दुबारा फिरि माता घर ❀ चलिभे चरणकमल शिरनाय ॥
घोड़ी कबुतरी पर चढ़ि बैठे ❀ डंका तुरत दीन बजवाय ।
लैकै लश्कर मोहबे आये ❀ जहँ पर रहैं चँदेलेराय ॥
आय सिंहासन के लगभग में ❀ ठाढ़े भये शीश को नाय ।
आल्हा ऊदन की गाथा को ❀ मलखे गये तहाँ पर गाय ॥
भयो बुलौवा हम ब्रह्मा का ❀ आयसु काह मिलै महराज ।
परम दयालू चित तुम्हरो है ❀ स्वामी पूँछि करौं मैं काज ॥
गुरु पितु भ्राता अरु त्राता तुम ❀ हमरे सदा चँदेलेराय ।

आज्ञा पावों महराजा कै ❀ तौ ऊदन का लवों छुड़ाय ॥
सुनिकै बातैं मलखाने की ❀ आयसु दीन रजापरिमाल ।
लैकै ब्रह्मा को जावो तुम ❀ दूनों वहू हमारे बाल ॥
माथ नायकै महराजा को ❀ मल्हना महल पहूँचे जाय ।
चिट्ठी पढ़िकै तहँ आल्हा की ❀ मलखे दीन सकल समुझाय ॥
बिपदा सुनिकै बघऊदन कै ❀ मल्हना रोय दीन त्यहिबार ।
हाथ पकरिकै फिरि ब्रह्मा को ❀ बोली लेउ पूत तलवार ॥
क्षत्री ह्वैकै समर सकावै ❀ जावै तुरत नरक के द्वार ।
परम पियारे सुत जावो तुम ❀ हमरो पूर होय उपकार ॥
इतना सुनिकै ब्रह्मा ठाकुर ❀ अपनी लीन ढाल तलवार ।
बिदा मांगिकै पितु माता सों ❀ दोऊ चलत भये सरदार ॥
सजिगा घोड़ा हरनागर जो ❀ तापर ब्रह्मा भये सवार ।
घोड़ी कबुतरी की पीठी पर ❀ मलखे सिरसा का सरदार ॥
बाजे डंका अहतंका के ❀ बंका चले शूर त्यहि बार ।
शङ्का फंका करि डंका तहँ ❀ बाजे घोर शोर ललकार ॥
रहा कलङ्का नहिं देही माँ ❀ ऐसे कहत चलैं सब यार ।
पंद्रादिन का धावा करिकै ❀ बूंदी निकट गये सरदार ॥
झील देखिकै मलखाने ने ❀ तम्बू तहाँ दीन गड़वाय ।
लाले पीले नीले काले ❀ सबरँग ध्वजा रहे फहराय ॥
खेत छूटिगा दिननायक सों ❀ झंडा गड़ा निशाको आय ।
तारागण कछु चमकन लागे ❀ पक्षी चले बसेरन धाय ॥
परे आलसी खटिया तकि तकि ❀ संतन धुनी दीन परचाय ।
भस्म लगायो सब अंगन में ❀ ध्यायो चरित पुरातन गाय ॥
शिवा रमा ब्रह्माणी पति के ❀ मन में चरित रहे सुलगाय ।

बड़े यशस्वी पितु अपने के ❀ दोऊ चरण कमल को ध्याय॥
करों तरंग यहाँ सों पूरण ❀ दोऊ गणपति चरण मनाय।
राम रमा मिलि दर्शन देवैं ❀ लेवैं आपन मोहिं बनाय॥

सवैया

सत्य हैं बेद पुराण सबै मति एक असत्य यहै लखि पावा।
मति ही के असत्य असत्य सबै यह सत्यहि २ सत्य बतावा॥
बेद पुराणन भूल नहीं यह भूल असत्य मती ठहरावा।
ललिते मति सत्यासत्य निवारण बेद पुराणन ने दर्शावा॥

सुमिरण

बेदन ध्यावों सामबेद को ❀ बिप्रन परशुराम महराज।
क्षत्रिन ध्यावों रामकृष्ण को ❀ बैश्यन नन्द भये शिरताज॥
शूद्रन ध्यावों मैं निषाद को ❀ कीशन पवनतनय बलवान।
ईशन ध्यावों शिवशङ्कर को ❀ शीशनबढ़ादशाननज्वान॥
ध्याय नदीशन में बड़वानल ❀ पक्षिन बैनतेय महराज।
ध्याय गिरीशन में हिमपर्वत ❀ नारिनजनकसुताशिरताज॥
क्वाँरिन ध्यावैं हम राधा को ❀ राखैं सदा हमारी लाज।
परम पियारी यदुनन्दन की ❀ हमरी माननीय शिरताज॥
सबै पुस्तकन में दुर्गा जी ❀ अबहूँ बिप्रन की रखवार।
छूटि सुमिरनी गै ह्याँते अब ❀ बूँदी हाल सुनो यहिबार॥

अथ कथाप्रसंग

देखिकै फौजै मलखानें की ❀ बोला तुरत कनौजीराय।
फौजें आई हैं बूँदी ते ❀ आल्हा देखु भीर अधिकाय॥
चिट्ठी पठई तुम सिरसा को ❀ आये नहीं बीर मलखान।

गंगा मामा लखराना का ❀ साऊ बांधि लीन हथियार॥

सवैया

ते सरदार सबै चलिकै फिरि भीतर भौन के जाय सिधाये।
सुन्दर आसन डारि तहाँ नृप आदर भाव किये अधिकाये॥
पण्डित आयकै बैठि गयो गठिबन्धन हेतु सुता बुलवाये।
सात सुहागिल आय तहाँ ललिते मन मोदन गीत सुनाये॥

पहिली भाँवरि के परतै खन ❀ क्षत्री आये आध हजार।
आल्हा ऊदन मलखे ब्रह्मा ❀ इनहुन खैंचि लीन तलवार॥
आधे आँगन भाँवरि होवैं ❀ आधे होय भड़ाभड़ मार।
मारे मारे तलवारिन के ❀ आँगन बही रक्त की धार॥
काटिकै कल्ला दुइ पल्ला करि ❀ लल्ला बच्छराज के लाल।
लड़ैं इकल्ला अति हल्ला करि ❀ अल्ला खैर करैं त्यहिकाल॥
भा खलभल्ला औ हल्ला अति ❀ बल्लन क्यार मनो त्यवहार।
काटि बजुल्ला सोने छल्ला ❀ लल्ला उदयसिंह सरदार॥
हनि हनि मारै औ ललकारै ❀ देबा मैनपुरी चौहान।
रुपती जवाहिर दूनों भाई ❀ लीन्हे तहाँ अनेकन ज्वान॥
बड़ी लड़ाई करि हारे तहँ ❀ पै नहिं बिजय परी दिखराय।
तब पछितान्यो फिरि गंगाधर ❀ दीन्ह्यो मारु बन्द करवाय॥
कन्या दान दीन आनँद सों ❀ नेगिन नेग दीन हर्षाय।
सातो भाँवरि पूरी करिकै ❀ पूरा ब्याह दीन करवाय॥
बिदा न करिबे हम ब्याहे में ❀ लीन्ह्यो गवन साल में आय।
इतना कहिकै गंगाधर जी ❀ दायज खूब दीन अधिकाय॥

१—(अल्ला) देवी का नाम है॥

बात मानिकै चन्देले फिरि ❀ तहँ ते कूच दीन करवाय।
बिदा मांगिकै मलखे ब्रह्मा ❀ पहुँचे नगर महोबे आय॥
बाजत डंका अहतंका के ❀ कनउज गये कनौजी आय।
अनँद वधैया घर घर बाजीं ❀ मंगल गीत रहीं सब गाय॥
रानी तिलका त्यहि अवसर में ❀ बिप्रन दान दीन अधिकाय।
धबी शारदा के बरदानी ❀ दूनों भाय बनाफरराय॥

सवैया

गावत गीत सबै तिनको जिनको कछु ज्ञान बलै अधिकाई।
ते मनमाँझ बिचार करैं औ धरैं मन में प्रभु की प्रभुताई॥
त्यागत झूँठ प्रपञ्च सबै औ जबै मन भासत हैं रघुराई।
नाशत पाप सबै ललिते फलिते जगधर्म कि बेलि सदाई॥

सोई मन्तर मन अन्तर धारे ❀ यन्तर धर्म बनाफरराय।
बड़ी बड़ाई कनउज पायो ❀ कीरति रही आजलों छाय॥
बिपदा सहिकै यहि दुनिया माँ ❀ त्यागा धर्म नहीं कहुँभाय।
तासों बेली यह फैली अति ❀ सुन्दर धर्म रूप जलपाय॥
अधरम बेली दुरयोधन की ❀ फैलिकैलीन जगतकोछाय।
तैसे रावण कंमासुरहू ❀ बाढ़्यो धनै बलै अधिकाय॥
रीछ बँदरवा ग्वालन बालन ❀ दोउन दीन्ह्यो तुरत नशाय।
तासों चहिये यहि दुनियाँ माँ ❀ नितप्रतिनवतनवतनैजाय॥
धन बल बाढ़ै त्यहि दुनिया माँ ❀ कीरति जाय धरा में छाय।
खेत छूटिगा दिननायक सों ❀ झंडा गड़ा निशाको आय॥
तारागण सब चमकन लागे ❀ संतन धुनी दीन परचाय।
परे आलसी खटिया तकि तकि ❀ घोंघों कण्ठ रहे घर्राय॥
आशिर्बाद देउँ मुंशीसुत ❀ जीवो प्रागनरायण भाय।

हुकुम तुम्हारो जो पावत ना ❀ ललितेकहत कथाकसगाय ॥
रहै समुन्दर में जबलों जल ❀ जबलों रहैं चन्द औ सूर ।
मालिक ललिते के तबलों तुम ❀ यशसों रहौ सदा भरपूर ॥
माथ नवावों पितु अपने को ❀ जिन बल गाथ भई यह पार ।
जैसे सेयो बालापन में ❀ तैसे सदा होउ रखवार ॥
जल थल जन्मों चहु पहाड़ में ❀ स्वामी होयँ राम भगवान ।
यह बर पावैं ललिते पण्डित ❀ खण्डित होय न हमरी बान ॥
पूर बिवाह भयो लाखनि को ❀ ह्याँते करों तरँग को अन्त ।
राम रमा मिलि दर्शन देवैं ❀ इच्छा यही भवानी कन्त ॥

लाखनि रानाजी का विवाह सम्पूर्ण

माँजर की लड़ाई

आल्हखण्ड

गाँजर की लड़ाई का प्रारम्भ

सवैया

दानिन में बलि औ हरिचन्द शिबी दधि कर्ण इन्हीं यश पाये।
बीरन में गिनती रघुबीर औ धीरन कृष्ण युधिष्ठिर गाये॥
पापिन औ परितापिन में जग कंस दशानन बीर सुनाये।
जापिन योग उदार अपार सदा शिवही ललिते मन आये॥

सुमिरन

प्रथमैं ध्यावों श्रीगणेश को ❀ लीन्हे सुभग पुस्तकी हाथ।

करों बन्दना शिवशंकर की ❀ दूनों धरों चरण पर माथ ॥
देवि दूर्गा को ध्यावों फिरि ❀ लैकै रामचन्द्र को नाम ।
कीरति गावों मैं ऊदन कै ❀ पूरण करो हमारो काम ॥
देवि शारदा मइहर वाली ❀ मनियादेव महोबे केर ।
ध्यावों ललिता नैमषार की ❀ माता मोरि दीनता हेर ॥
नहीं बीरता कछु मोमें है ❀ तव बल धरी धीरता हीय ।
कीरति तुम्हरी जो कोउ गावै ❀ पावै वहै चहै जो जीय ॥
निरभय होवै घर बाहर सों ❀ केवल करै तुहारी आश ।
बन्धन छूटैं सब दुनियाँ के ❀ यमकी परै गले नहिं पाश ॥
छूटि सुमिरनी गै ह्याँते अब ❀ सुनिये गाँजर केर हवाल ।
साजिकै फौजै ऊदन चलिहैं ❀ लड़िहैं बड़े बड़े नरपाल ॥

अथ कथाप्रसंग

जैचन्द राजा कनउज वाला ❀ आला सकल जगत सरनाम ।
लागि कचहरी त्यहि राजा कै ❀ सोहै सोन सरिस त्यहिधाम ॥
कोगनि बरणै त्यहि मन्दिर कै ❀ ज्यहि माँ भरी लाग दर्बार ।
आसपास माँ राजा सोहैं ❀ बीचम कनउज का सरदार ॥
बना सिंहासन है सोने का ❀ हीरा पन्ना करैं बहार ।
तामें बैठे जैचन्द बोले ❀ सुनिये सकल शूर सरदार ॥
बारह बरसन का अरसा भा ❀ पैसा मिला न गाँजर क्यार ।
कौन शूरमा मोरे दल माँ ❀ नङ्गी काढ़ि लेय तलवार ॥
करै बन्दगी तलवारी सों ❀ औ गाँजर को होय तयार ।
सुनिकै बातैं ये जैचँद की ❀ झुकिगे सकल शूर सरदार ॥
झुका दुलरुवा नहिं द्यावलि का ❀ औ आल्हाक लहुरवा भाय ।
सुनिकै बातैं ये जैचँद की ❀ नैना अग्निबरण ह्वैजायँ ॥

सबदिशिताक्यो सबक्षत्रिनको ❁ सबहिनलीन्ह्यो मूड़ नवाय।
उठा दुलरुवा तब द्यावलि को ❁ औ आल्हाको शीशनवाय॥
सुमिरि भवानी जगदम्बा को ❁ म्यान ते खैंचि लीन तलवार।
किह्यो वन्दगी फिरि राजा को ❁ यहु द्यावलि का राजकुमार॥
हाथ जोरिकै बोलन लाग्यो ❁ सुनिये बिनय कनौजीराय।
लाखनि राना सँग माँ दीजै ❁ लीजै पैसा सकल मँगाय॥
बिना हकीकी लखराना के ❁ पैसा कौन तसीलै जाय।
साथ में होवैं लखराना जो ❁ तम्बू बैठे लेयँ मँगाय॥
लड़ै भिड़ै को जिम्मा हमरो ❁ इनको बार न बाँको जाय।
हुकुम जो पावों महराजा को ❁ गाँजर अबै पहूँचों जाय॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❁ बोला कनउज का सरदार।
सोरह रानिन में इकलौतो ❁ मेरो लाखनि राजकुमार॥
सो नहिं जैहै चढ़ि गाँजर को ❁ पैसा मिलै चहौ रहिजाय।
सुनिकै बातैं ये जैचँद की ❁ बोला तुरत बनाफरराय॥
क्षत्री राजा यह नहिं सोचैं ❁ मानो सत्य बचन महराज।
रही न देही रामचन्द्र कै ❁ रहि ना गये कृष्ण यदुराज॥
यशै इकेलो जग में रहिगो ❁ गावैं तीनलोक तिहुँकाल।
तासों देवो सँग लाखनि को ❁ सोचो कछू नहीं नरपाल॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❁ जैचँद हुकुम दीन फरमाय।
हुकुम पायकै महराजा को ❁ लाखनि ढिगै पहूँचो जाय॥
कही हकीकति सब जैचँद की ❁ यहु द्यावलि को राजकुमार।
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❁ लाखनि बेगि भयो तय्यार॥
चोबदार को फिर बुलवायो ❁ ताको दीनो हुकुम सुनाय।
पिटै ढिंढोरा अब कनउज माँ ❁ सजिकै फौज आय सबजाय॥

सुनिकै बातैं लखराना की ❀ दौरत चोबदार चलिजाय।
ढोल बजाई गै कनउज माँ ❀ सबका खबरि दीन पहुँचाय॥
खबरि पायकै सब क्षत्री दल ❀ तुरतै सजन लागि सरदार।
हथी महाउत हाथी लैकै ❀ तिनका करन लागि तय्यार॥
अंगद पंगद मकुना भौंरा ❀ हाथी भूमा दीन बिठाय।
चुम्बक पत्थर का हौदा धरि ❀ जामें सेल बरौंचा खाय॥
रेशम रस्सन सों कसिकै फिरि ❀ साँखों सीढ़ी दीन लगाय।
बारह कलशन की अम्बारी ❀ तिनपर धरी तुरतही जाय॥
घण्टा बांधे तिन के गर माँ ❀ क्षत्री होन लागि असवार।
भूरी हथिनी लखराना की ❀ सोऊ बेगि भई तय्यार॥
चन्दन सीढ़ी तामें लागी ❀ वामें लाखनि भये सवार।
हाथी सजिगा जब आल्हा का ❀ हाथ म लई ढाल तरवार॥
मनमाँ सुमिरयो जगदम्बा का ❀ अम्बा लाज तुम्हारे हाथ।
बैठ्यो हाथी पर आल्हा जब ❀ नायो रामचन्द्र को माथ॥
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❀ घोड़न होन लागि असवार।
घोड़ बेंदुला की पीठी पर ❀ चढ़िगो द्यावलिकेर कुमार॥
घोड़ पपीहा मोहबे वालो ❀ तापर जोगा भयो सवार।
हंसामनि घोड़ा के ऊपर ❀ इन्दल आल्हा केर कुमार॥
घोड़ मनोहर पर देवा है ❀ भोगा सबजा पर असवार।
या विधि सेना सब इकठौरी ❀ बारहलाख भई तय्यार॥
मारू डङ्का बाजन लागे ❀ घूमन लागे लाल निशान।
कऊ नालकिन कऊ पालकिन ❀ कोऊ चढ़े साँड़िया ज्वान॥
आगे हलका है हाथिन का ❀ बलकातिनकेनांहिं ठिकान।
घण्टा बाजैं गल हाथिन के ❀ जहँ सुनिपरै बात नहिंकान॥

चिघरति हाथी आगे चलिभे ❁ पाछे घोड़न चली कतार।
सरपट घोड़ा कोउ दउरावै ❁ कावा देवै कोऊ सवार॥
कोउ मन पावै असवारे का ❁ तौ असमान पहूँचै जाय।
कोउ कोउ घोड़ा हंस चालपर ❁ कोउकोउ मोरचालपरजाय॥
खर खर खर खर कै रथ दौरैं ❁ चह चह रहीं धुरी चिल्लाय।
छाय अँधेरिया गै दशहूदिशि ❁ आपन परै न हाथ दिखाय॥
डगमग डगमग धरती हाली ❁ थर थर शेष गये थर्राय।
देव सकाने बहु डर माने ❁ पर्वत खोह छिपाने जाय॥
को गति बरणै बघऊदन कै ❁ आगे घोड़ नचावत जाय।
धीरे धीरे छत्तिस दिन में ❁ गोरखपुरै पहूँचे आय॥

बिरियागढ़ की लड़ाई

पाँच कोस जब बिरिया रहिगइ ❁ डेरा तहाँ दीन डरवाय।
ऊँची टिकुरिन तम्बू गड़िगे ❁ नीचे लगीं बजारैं आय॥
कम्मर छोरयो रजपूतन ने ❁ झीलम बखतर डरे उतार।
तंग बछेड़न के छोरेगे ❁ हाथिन उतरि परे असवार॥
झण्डा गड़िगे तम्बुन ढिग में ❁ ते सब आसमान फहरायँ।
लागि कचहरी गै लाखनि कै ❁ बीच म बैठ बनाफरराय॥
कलम दवाइत को मँगवायो ❁ कागज तुरतै लीन उठाय।
लिखीहकीकतिसबहिरसिंहको ❁ अब तुम खबरदार ह्वैजाय॥
बारह बरसै पूरी ह्वइ गइँ ❁ पैसादिह्यो न कनउज जाय।
अब चढ़ि आये उदयसिंह हैं ❁ साथे लिहे कनौजीराय॥
धरम छत्तिरिन के नाहीं ये ❁ धोखे डाँड़ दबावैं आय।

लैकै पैसा बरह बरस का ❁ ह्याँपै वेगि देउ चुकवाय ॥
नहीं भ्वरहरे पहके फाटत ❁ सबियाँ बिरिया लेउँ लुटाय ।
बाँधिकै मुशकैं मैं हिरसिंह की ❁ कनउज तुरत देउँ पहुँचाय ॥
लिखि परवाना दै धावन को ❁ ऊदन करन लाग बिश्राम ।
लै परवाना धावन चलिभो ❁ हिरसिंह बैठ रहै निजधाम ॥
लै परवाना आटि धावन गो ❁ जायकै द्वारपाल को दीन ।
लै परवाना द्वारपाल गो ❁ हिरसिंहबाम हाथ लैलीन ॥
खोलि लिफाफा सों कागज को ❁ आँकुइ आँकु बांचिसबलीन ।
उत्तर लिखिकै हिरसिंह राजा ❁ तुरतै द्वारपाल को दीन ॥
उत्तर लैकै द्वारपाल ने ❁ दीन्ह्यो धावन हाथ गहाय ।
चलिकै धावन तब बिरिया ते ❁ पहुँचोउदयसिंहढिगआय ॥
शीश नवायो त्यहि ऊदन को ❁ कागज दिह्यो हाथ में जाय ।
पढ़िकै कागज को बघऊदन ❁ औलाखनिकोदीनसुनाय ॥
सुनिकै कागज को लखराना ❁ नैना अग्निबरण ह्वैजायँ ।
हुकुम लगायो निज फौजन में ❁ तोपन बिरिया देव उड़ाय ॥
हुकुम पायकै लखराना को ❁भिलमैंपहिरिसिपाहिनलीन।
धरिकै कुंडी लोहे वाली ❁ पाछे ढाल गैंड़ की कीन ॥
यक यक भाला दुइ दुइ बरछी ❁ कम्मर कसी तीन तलवारि ।
जोड़ी तमंचा औ पिस्तोलैं ❁ बाँधी छूरी और कटारि ॥
धरि बंदूखन को काँधे पर ❁ क्षत्री भये वेगि तय्यार ।
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❁ बाँके घोड़न भे असवार ॥
रण की मोहरि बाजन लागी ❁ रण के होन लाग व्यवहार ।
ढाढ़ी करखा बोलन लागे ❁ बिप्रन कीन वेद उच्चार ॥
हिंया हकीकति ऐसी गुजरी ❁ अब बिरिया का सुनौ हवाल ।

तुरत नगड़ची को बुलवायो ❁ हिरसिंहबिरियाको नरपाल ॥
हुकुम पायकै सो ठाकुर को ❁ तुरतै अटा भौन में जाय ।
धस्यो नगाड़ा को सँड़िया पर ❁ डंका तुरत बजायो धाय ॥
पहिल नगाड़ा में जिनबन्दी ❁ दुसरे बाँधि लीन हथियार ।
तिसर नगाड़ा के बाजत खन ❁ चत्री भये सबै तय्यार ॥
हिरसिंह बिरसिंह दूनों भाई ❁ हाथिन ऊपर भये सवार ।
तापै सजिकै आगे चलि भईं ❁ पाछे हाथिन केर कतार ॥
चला रिसाला घोड़न वाला ❁ पाछे ऊँटन के असवार ।
चले सिपाही त्यहि के पाछे ❁ खच्चर चलिभे डेढ़ हजार ॥
कूच के डङ्का बाजन लाग्यो ❁ घूमनलाग्यो लाल निशान ।
ढाढ़ी करखा बोलन लागे ❁ बन्दी कीन समर पद गान ॥
मारु मारु करि मोंहरि बाजीं ❁ बाजीं हाव हाव करनाल ।
हिरसिंह बिरसिंह दोऊ भाई ❁ पहुँचे समरभूमि तनकाल ॥
पहिले मारुइ भईं तोपन की ❁ गोलंदाज भये हुशियार ।
बम्ब के गोला छूटन लागे ❁ सीताराम लगहैं पार ॥
ज्यहि हाथी के गोला लागै ❁ मानो चोर सेंधि कैजाय ।
जौने ऊंट के गोला लागै ❁ सारेक कूल जुदा ह्वइजाय ॥
जौने बछेड़ा के गोला लागै ❁ मानों मगर कुल्याँचै खाय ।
गोला लागै ज्यहि चत्री के ❁ साथै उड़ा चील्ह असजाय ॥
जौने रथमाँ गोला लागैं ❁ ताके टूक टूक ह्वैजायँ ।
जौने बैलके गोला लागैं ❁ मानों गिरह कबूतर खायँ ॥
जौने अँग माँ गोला लागैं ❁ तरवर पात अइस गिरिजाय ।
चुकीं बरूदैं जब तोपन की ❁ तब फिरि मारु बन्द ह्वजाय ॥
उठीं बँदूखैं बादलपुर की ❁ जो नब्बे की एक बिकाय ।

मघा की बूँदन गोली बरषैं ❀ क्षत्रिन दीन्हों झरी लगाय॥
सन् सन् सन् सन् गोली छूटैं ❀ क्षत्रिन लगैं करेजे जाय।
पार निकरिकै सो छातिन के ❀ देहिम करैं अनेकन घाय॥
गिरैं कगारा जस नदिया माँ ❀ तैसे गिरैं ऊँट गज धाय।
गिरैं मुँहभरा कितनेउँ क्षत्री ❀ कितनेउँभागैंपीठिदिखाय॥
दूनों दल आगे को बढ़िगे ❀ परिगो समर बरोबरि आय।
को गति बरणै त्यहि समया कै ❀ हमरे बूत कही ना जाय॥
सूँड़ि लपेटा हाथी भिड़िगे ❀ अंकुश भिड़े महौतन केरि।
हौदा हौदा यकमिल ह्वइगे ❀ मारैं एक एक को हेरि॥
पहिया रथके रथमाँ भिड़िगे ❀ घोड़न भिड़ी रान में रान।
भाला छूटे असवारन के ❀ मारैं एक एक को ज्वान॥
ऊँट चढ़ैया ऊँटन भिड़िगे ❀ पैदर चलन लागि तलवारि।
भुजा औ छाती में हनि मारैं ❀ कउशिर काटिदेइँ भुइँ डारि॥
बही लड़ाई मै क्षत्रिन कै ❀ नदिया बही रकत की धार।
लड़ि लड़ि हाथी तामें गिरिगे ❀ छोटे द्वीपन के अनुहार॥
छुरी कटारी मछली जानो ❀ ढालैं कछुवा मनो अपार।
कटि कटि बार बहैं शूरन के ❀ जस नदिया माँ बहै सिवार॥
भुजा छत्तिरिन के ग्वाहै जस ❀ ऊँटन बँधिगे नदी कगार।
बिना पैर के बहैं बछेड़ा ❀ मानों घूमैं मगर अपार॥
बिना मूड़ के क्षत्री बहि बहि ❀ छोटी डोंगिया सम उतरायँ।
गिद्ध काग सब तिन पर सोहैं ❀ मानों जल बिहार को जायँ॥
नचैं जोगिनी खप्पर भरि भरि ❀ मज्जैं भूत प्रेत बैताल।
कुत्तन गरमा आँतन माला ❀ स्यारनसबनकीन मुँहलाल॥
त्यही समइया त्यहि अवसर माँ ❀ यहु द्यावलि को राजकुमार।

गरुई हाँकन सों ललकारै ❁ मारै भुजा ताकि तलवार ॥
घववा ग्वालै तब ऊदन ते ❁ ऊदन सुनिल्यो कान लगाय।
भागे क्षत्रिन का मास्यो ना ❁ नहिं सब क्षत्री धर्म नशाय ॥
हाथ सिपाहिन पर डास्यो ना ❁ जब लग ढूँढ़ि मिलै सरदार ।
कउँधा लपकनि बिजुली चमकनि ❁ आपौ खैंचिलीन तलवार ॥
देवा ऊदन के मारुन माँ ❁ क्षत्री होन लागि खरिहान ।
हिरसिंह बिरसिंह दोऊ कोपे ❁ तिन हुन कीन घोर घमसान॥
बड़ी लड़ाई भै बिरिया माँ ❁ हमरे बूत कही ना जाय।
जितने कायर रहैं फौजन माँ ❁ तर लोथिन के रहे लुकाय ॥
ह्याला आवैं जब हाथिन के ❁ तब बिन मरे मौत ह्वैजाय ।
कोउकोउ रोवैं महतारिन का ❁ कोउकोउ दुलहिनि का लुलुआँयँ॥
कायर बिनवैं यह सुर्य्यन सों ❁ बाबा आजु अस्त ह्वइजाउ ।
राति अँधेरिया जो कै पाऊँ ❁ भागिकै तीस कोसघरजाउँ ॥
माठा रोटी घरमाँ खावैं ❁ आपनि भैंसि चरावन जायँ ।
ऐसि नौकरी हम करिहैं ना ❁ कण्डा बेंचि शहर माँ खायँ ॥
त्यही समइया त्यहि अवसरमाँ ❁ हिरसिंह बोल्यो भुजा उठाय ।
बनते कन्या धरि आईती ❁ त्यहि के अहिउ बनाफरराय ॥
अहिउ टुकरहा परिमालिक के ❁ औ चंदेले केर गुलाम ।
जाति गुलामन की हीनी है ❁ तुम्हरो नहीं लड़ै को काम ॥
यह कहिभाला नागदवनिको ❁ दूनो अँगुरिन लीन उठाय ।
दूनो अँगुरिन भाला तौलै ❁ काली नाग ऐस मन्नाय ॥
तारा टूटैं आसमान ते ❁ औ हिरगास भुइँ ना जायँ ।
छूटि ग भाला जो हाथे ते ❁ कम्मर मचा ठनाका आय ॥
तरे ते कटिगा यहु मछरीबँद ❁ ऊपर कटिगा कुलाकबार ।

बचा दुलरुवा द्यावलि वाला ❀ ज्यहि का राखिलीन कर्त्तार ॥
औललकारा फिरि हिरसिंह को ❀ ठाकुर खबरदार ह्वैजाउ ।
दूधु लरिकई माँ पायो ना ❀ तुम्हरे मरे चढ़ै ना घाउ ॥
वार हमारी सों बचिजायो ❀ घरमाँ छठी धरायो जाय ।
गर्दन ठोंक्यो फिरि बेंदुल कै ❀ हौदा उपर पहूँचो धाय ॥
ढालकी ओंझरि सों हनिमारा ❀ हिरसिंह गिरयो मूर्च्छा खाय ।
तब फिरि बिरसिंह ने ललकारा ❀ ऊदन खबरदार ह्वैजाय ॥
भाला बरछिन को बहुमारा ❀ ऊदन लीन्ह्यो वार बचाय ।
ताकिकै मारा फिरबिरसिंह को ❀ सोऊ गिरा मूर्च्छा खाय ॥
बाँधिकै मुशकैं फिरि दोउनकी ❀ कनउज तुरत दीन पहुँचाय ।
किलाजीतिकै फिरि बिरियाको ❀ आगे चला बनाफरराय ॥
चारि कोस जब पट्टी रहिगै ❀ ऊदन डेरा दीन गड़ाय ।
सातनि राजा पट्टी वालो ❀ ताको डाँड़ दबायो जाय ॥
तब हरिकारा पट्टी वाला ❀ सातनि खबरि सुनावाआय ।
गाफिल बैठे तुम महराजा ❀ डांड़े फौज परी अधिकाय ॥

पट्टी की लड़ाई

इतना सुनिकै सातनि राजा ❀ गुप्ती धावन दीन पठाय ।
हाल पायकै मो फौजन का ❀ राजै फेरि सुनावा आय ॥
सुनी हकीकति जब सातनि ने ❀ डंका तुरत दीन बजवाय ।
सजे सिपाही पट्टी वाले ❀ मन में श्रीगणेश को ध्याय ॥
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❀ बांके घोड़न भे असवार ।
झीलमबखतर पहिरि सिपाहिन ❀ हाथम लई ढाल तलवार ॥

चढ़िगा हाथी पर महराजा ❀ करिकै रामचन्द्र को ध्यान।
कूच कराय दयो पट्टी सों ❀ घूमत आवैं लाल निशान॥
घरी अढ़ाई के अरसा माँ ❀ सम्मुख गयो फौज के आय।
आवत दीख्यो जब फौजन को ❀ तुरतै उठा बनाफरराय॥
भुजा उठाये ऊदन बोल्यो ❀ गरुई हाँक देत ललकार।
सँभरो सँभरो ओ रजपूतो ❀ अपने बांधि लेउ हथियार॥
इतना सुनिकै सब रजपूतन ❀ अपनी लई ढाल तलवार।
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❀ बाँके घोड़न भे असवार॥
सजा बेंदुला का चढ़वैया ❀ लाला देशराज का लाल।
मारु मारु करि मौहरि बाजीं ❀ बाजीं हाउ हाउ करनाल॥
बजे नगारा औ तुरही फिरि ❀ ढोलन शब्दकीनबिकराल।
शूर सिपाही दुहुँ तरफा के ❀ लागे युद्धकरन त्यहिकाल॥
पैदल पैदल कै बरणी भै ❀ औ असवार साथ असवार।
सूँड़ि लपेटा हाथी भिड़िगे ❀ अंकुश भिड़े महौतन क्यार॥
इतसों आगे पट्टी वाला ❀ उतसों उदयसिंह सरदार।
गज के हौदा पर महराजा ❀ ऊदन बेंदुल पर असवार॥
गर्दन ठोंकी जब बेंदुल की ❀ हौदा उपर पहूँचा जाय।
कलँगी पगड़ी महराजा की ❀ ऊदन दीन्ह्यो भूमिगिराय॥
औ ललकारा महराजा को ❀ पैसा आज देउ मँगवाय।
मारि सिरोहिन ते हनिडरिहौं ❀ नेका टका लेउँ निकराय॥
धोखे जयचँद के भूले ना ❀ हमरो नाम बनाफरराय।
उदयसिंह दुनिया माँ जाहिर ❀ सातनि साँच दीन बतलाय॥
बारह बरसन की बाकी जो ❀ सो तू आज देय समुझाय।
नहीं तो बचिहै ना संगर माँ ❀ जो बिधि आपु बचावै आय॥

इतना सुनिकै सातनि राजा ❀ हौदा उपर ठाढ़ ह्वैजाय।
औ ललकारा बघऊदन का ❀ क्षत्री काह गये बौराय॥
बतियाँ आहिन ना कुम्हड़ा की ❀ तर्जनि देखिजायँकुम्हिलाय।
एक बनाफरकै गिन्ती ना ❀ लाखन चढ़ैं बनाफर आय॥
जब लग हड्डिन माँ जी रैहै ❀ जब लग रही हाथ तलवार।
कौड़ी पैसन की बातैं ना ❀ देउँ न एक देहँ का बार॥
जीना चाहे जो दुनिया माँ ❀ तौ फिरि लौटि जाय सरदार।
नहिं शिरकटिहौं मैं संगर में ❀ ऊदन देखु मोरि तलवार॥
इतना कहिकै सातनि राजा ❀ अपने शूरन कहा सुनाय।
जाय न पावैं कनउज वाले ❀ इनके देवो मूड़ गिराय॥
सुनिकै बातैं महराजा की ❀ क्षत्रिन कीन घोर घमसान।
भाला बलछी तलवारिन सों ❀ मारन लागि खूबतहँज्वान॥
वहे पनारा नरदेहिन सों ❀ नदिया बही रक्त की धार।
लंबी धोतिन के पहिरैया ❀ क्षत्री जूझे तीनि हजार॥
साल दुसाला मोहनमाला ❀ आला परे गले में हार।
ऐसे सुन्दर रजपूतन को ❀ नोचन लागे श्वान सियार॥
गीधन केरी खुब बनि आई ❀ चीलहन भीर भई अधिकाय।
लगीं बजारैं तहँ कौवन की ❀ काली भूमि परै दिखलाय॥
लगी अथाई तहँ भूतन की ❀ प्रेतन कथा कही ना जाय।
यह अलबेला आल्हा वाला ❀ गर्जा समर भूमि माँ आय॥
इन्दल ठाकुर के सम्मुख माँ ❀ कोऊ शूर नहीं समुहाय।
चढ़ि पचशब्दा हाथी ऊपर ❀ आल्हा गये समर में आय॥
यह महराजा पट्टी वाला ❀ मारत फिरै शूर समुदाय।
आल्हा ठाकुर औ सातनि का ❀ परिगा समर बरोबरि आय॥

सातनि बोला तब आल्हा ते ❁ मानो कही बनाफरराय।
दीन न पैसा हम जयचँद को ❁ कैयो बार लड़े ते आय॥
टका न पैहौ आल्हा ठाकुर ❁ याते कूच देउ करवाय।
इतना सुनिकै आल्हा बोले ❁ सातनि काह गयो बौराय॥
बहुती बातैं हम जानैं ना ❁ पैसा आज देउ मँगवाय।
नहिं दिखलावै अब संगर में ❁ जो कछु कीन्न बूत तव जाय॥
सुनिकै बातैं ये आल्हा की ❁ सातनि खैंचि लीन तलवार।
हनिकै मारा सो आल्हा के ❁ आल्हा लीन ढाल पर वार॥
भाला मारा फिरि आल्हा के ❁ सोऊ लीन्हीं वार बचाय।
गदा चलावा सातनि राजा ❁ सो शिर परी महाउत आय॥
गिरा महाउत जब आल्हा का ❁ इन्दल दीन्ह्यो घोड़ उड़ाय।
पहुँचा घोड़ा जब हौदा पर ❁ इन्दल मास्यो ढाल घुमाय॥
मुर्च्छित ह्वैगा सातनि राजा ❁ तुरतै कैद लीन करवाय।
बाँधिकै मुशकै महराजा की ❁ कनउज तुरत दीन पहुँचाय॥
जोगा भोगा दोउ मारेगे ❁ जखमी भयो पपीहा आय।
इतना शोचत उदयसिंह के ❁ मनमा गयो क्रोध अतिछाय॥
माल खजाना सब सातनि का ❁ ऊदन तुरत लीन लुटवाय।
कूच करायो फिरि पट्टी ते ❁ पहुँचे देश कामरू जाय॥

कामरू की लड़ाई

गड़िगे तम्बू तहँ आल्हा के ❁ सब रँग ध्वजा रहे फहराय।
चला कामरू का हरिकारा ❁ राजै खबरि सुनाई जाय॥
फौजै आईं क्यहु राजा की ❁ डाँड़े भीर भार अधिकाय।

इतना सुनिकै कमलापति ने ❀ गुप्ती धावन दीन पठाय ॥
खबरि लायकै सो फौजन की ❀ राजै फेरि सुनावा आय ।
सुनिकै बातैं त्यहि धावन की ❀ डंका तुरत दीन बजवाय ॥
हाथी सजिगा कमलापति का ❀ तापर आप भयो असवार ।
झीलमबखतरपहिरिसिपाहिन ❀ हाथ म लई ढाल तलवार ॥
यक यक भाला दुइ दुइ बलछी ❀ कोताखानी लीन कटार ।
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❀ बाँके घोड़न पर असवार ॥
बाजीं तुरही तहँ मुरही सब ❀ पुप्पूं पुप्पूं परै सुनाय ।
बाजे डङ्का अहतङ्का के ❀ राजा कूच दीन करवाय ॥
आयकै पहुँच्यो जब डाँड़े पर ❀ गरुई हाँक दीन ललकार ।
को चढ़ि आवा है डाँड़े पर ❀ सम्मुख ज्वाब देय सरदार ॥
पाछे फौजै ऊदन करिकै ❀ आगे घोड़ नचावा जाय ।
गरुई हाँकन ते बोलत भा ❀ यहु रणबाघु बनाफरराय ॥
तुम पर चढ़िकै लाखनि आये ❀ पैसा आप देउ मँगवाय ।
कुमक म आये आल्हा ठाकुर ❀ ऊदन नाम हमारो आय ॥
छोटे भाई हम आल्हा के ❀ राजन साँच दीन बतलाय ।
वाको देदो तुम जयचँद के ❀ हम सब कूच देयँ करवाय ॥
इतनी सुनिकै राजा बोले ❀ मानो कही बनाफरराय ।
झंझी कौड़ी तुम पैहौ ना ❀ टटुवा टायर लेयँ लुटाय ॥
कहाँ मंसई तुम करि आये ❀ ऊदन नाम सुनावै आय ।
तुम अस ऊदन बहुतेरन को ❀ रणमाँ मारा खेत खिलाय ॥

सवैया

सुनिकै यह बानि कहा बघऊदन साँच सुनै नृप बात हमारी ।
सेतु बँधा जहँ पर रघुनन्दन बेदुल टाप तहाँ लग भारी ॥

जयपुर जीति लुटाय लियो दतिया औ उरैछा भये सब आरी।
पृथिराज की शान कमान बढ़ी ललिते तिनद्वार गयंद पछारी॥

बंगाले गोरखा की लड़ाई

झन्ना पन्ना को जीता हम ❀ जीता काशमीर मुल्तान।
थहर थहर सब बूँदी काँपै ❀ झंडा अटक पार फहरान॥
देश देश सब हम मथि डारे ❀ मारे हेरि हेरि नरपाल।
पैसा लेवैं जब संगर में ❀ तबहीं देशराज के लाल॥
इतना कहिकै उदयसिंह ने ❀ तुरतै हुकुम दीन फर्माय।
जान कामरू के पावैं ना ❀ इनके देवो मूड़ गिराय॥
भा खलभल्ला औ हल्ला अति ❀ लागी चलन तहाँ तलवार।
पैदल पैदल के बरणी भे ❀ औ असवार साथ असवार॥
सूँड़ि लपेटा हाथी भिड़िगे ❀ अंकुश भिड़े महौतन केर।
हौदा हौदा यकमिल ह्वैगे ❀ मारैं एक एक को हेर॥
गाफिलदीख्योकमलापतिका ❀ ऊदन कैद लीन करवाय।
बाँधिकै मुशकै महराजा की ❀ कनउज तुरत दीन पठवाय॥
माल खजाना सब लुटवायो ❀ डंका फेरि दीन बजवाय।
जीति कामरू कामच्छा को ❀ तहँते कूच दीन करवाय॥
जायकै पहुँचे बँगाले में ❀ झंडा तहाँ दीन गड़वाय।
बजे नगारा तहँ आल्हा के ❀ नभऔ अवनिशब्दगाछाय॥
गा हरिकारा तब जल्दी सों ❀ राजै खबरि सुनावा जाय।
भारी फौजैं क्यहु राजा की ❀ डाँड़े परीं हमारे आय॥
सुनिकै बातैं हरिकारा की ❀ राजा गयो सनाका खाय।

देखन पठवा क्यहु अफसर को ❀ त्यहिसबखबरिसुनावाआय ॥
गुरुखा राजा बंगाले का ❀ मन्त्रिन बोला बचन सुनाय ।
तुरत नागाड़ा को बजवावो ❀ सब्रियाँ फौज लेउ सजवाय ॥
हुकुम पायकै महराजा का ❀ सब्रियाँ फौज भई तैयार ।
पहिल नगाड़ा माँ जिनबंदी ❀ दुसरे फाँदि भये असवार ॥
हथी अगिनियाँ महराजा को ❀ सोऊ बेगि भयो तय्यार ।
सुमिरि भवानी जगदम्बा का ❀ राजा तुरत भयो असवार ॥
ढाढ़ी करखा बोलन लागे ❀ विप्रन कीन बेद उच्चार ।
रणकी मौहरि बाजन लागीं ❀ रणका होन लाग व्यवहार ॥
पाँच घरी के फिरि अर्सा माँ ❀ राजा गयो समर में आय ।
घोड़ बेंदुला को चढ़वैया ❀ यहु रणबाघु बनाफरराय ॥
सम्मुख आवा महराजा के ❀ औ यह बोला भुजा उठाय ।
बारह बरसन की बाकी अब ❀ राजन आप देउ मँगवाय ॥
लाखनि आये हैं कनउज ते ❀ आल्हा ऊदन साथ लिवाय ।
छोटे भाई हम आल्हा के ❀ ऊदन नाम हमारो आय ॥
इतना सुनिकै गुरुखा राजा ❀ बोला महाक्रोध को पाय ।
टरिजा टरिजा रे सम्मुख ते ❀ नहिं शिर देवों भूमि गिराय ॥
तुइ अभिनन्दन के धोखे ते ❀ आये यहाँ बनाफरराय ।
पैसा लेबे की बातन को ❀ ऊदन चित्त देय बिसराय ॥
कूच करावैं अब डाँड़े ते ❀ नाहीं गई प्राण पर आय ।
इतना सुनिकै ऊदन जरिकै ❀ तुरतै दीन्ह्यो युद्ध मचाय ॥

सवैया

रणशूरन की तलवार चलै अरु कूरन के उर होत दरारा ।
छप्प औ छप्प खपाखप शब्द बहे तहँ शोणित केर पनारा ॥

हाथ औ पाँव भुजा अरु जाँघ परे तहँ सर्पन के अनुहारा।
मारु औ काटु उखारु भुजा ललिते इन शब्दन को अधिकारा॥
मारु चपेट लपेट करैं औ दपेट ससेट करैं सरदारा।
शूल औ सेल गदा अरु पट्टिश मारि रहे सब शूर उदारा॥
हारि न मानत ठानत रारि पुरारि मुरारि खरारि अधारा।
ललितेसुर बन्दि अनन्दि सबै रणशूरन युद्ध कियो त्यहि बारा॥

भई लड़ाई बंगाले में ❀ नदिया बही रक्त की धार।
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार॥
हाथी घोड़न कै गिन्ती ना ❀ पैदर जूझे पाँच हजार।
घोड़ बेंदुला का चढ़वैया ❀ नाहर उदयसिंह सरदार॥
एँड़ लगायो रसबेंदुल के ❀ हाथी उपर पहूँचा जाय।
गुर्ज चलायो बंगाली ने ❀ ऊदन लीन्ह्यो वार बचाय॥
ढाल कि ओझड़ ऊदन मारी ❀ मुर्च्छा खाय गयो नरपाल।
मुशकै बाँधी तब राजा की ❀ नाहर देशराज के लाल॥
रुपिया पैसा बंगाली के ❀ सब छकड़न में लियो लदाय।
तुरतै चलिकै बंगाले ते ❀ घेरयो अटक बनाफर आय॥
मुरली मनोहर दोउ भाइन को ❀ तहँ पर कैद लीन करवाय।
सुन्दर फाटक जौन अटक को ❀ त्यहिको तोपन दीन उड़ाय॥
मालखजाना ताको लैकै ❀ तहँ ते कूच दीन करवाय।
आयकै पहुँचे फिरि जिन्सी में ❀ तम्बू तहाँ दीन गड़वाय॥
बाजे डंका अहतंका के ❀ हाहाकार शब्द गा छाय।
राजा जगमनि जिन्सीवाला ❀ सोऊ गयो समर को आय॥

सवैया

औ ललकार कियो रण में तुम ठाकुर काहे ग्रस्यो मम ग्रामा।

काह तुम्हार चहैं रण नाहर तौन बताय कहौ यहि ठामा ॥
ऊदन बोलि उठा ततकाल सुनो नृप सुन्दरि बात ललामा ।
द्वादश अब्द भये तुमको नृप जयचँद को न दियो कछु दामा ॥

कटक आदि के राजाओं की लड़ाई

पैसा बाकी सब दै देवो ❁ तौ हम कूच देयँ करवाय ।
इतना सुनिकै जिन्सीवाला ❁ शूरन बोला बचन सुनाय ॥
मारो मारो ओ रजपूतौ ❁ यह ही ठीक लीन ठहराय ।
झुके सिपाही दोनों दल माँ ❁ मारैं एक एक को धाय ॥
चली सिरोही भल जिन्सी माँ ❁ लागे गिरन शूर सरदार ।
को गति वरणै त्यहि समया कै ❁ आमाझोर चलै तलवार ॥
मूड़न केरे मुड़चौरा भे ❁ औ रुण्डन के लगे पहार ।
मारे मारे तलवारिन के ❁ नदिया बही रक्त की धार ॥
घोड़ बेंदुला का चढ़वैया ❁ आल्हा केर लहुरवा भाय ।
जीति लड़ाई माँ जगमनि को ❁ तुरतै कैद लीन करवाय ॥
बांधिकैमुशकैतहँजगमनिकी ❁ तुरतै कनउज दीन पठाय ।
मालखजाना सब जगमनि का ❁ ऊदन तुरत लीन लुटवाय ॥
चिन्ता ठाकुर रुसनीवाला ❁ ताको जीति लीन फिरि जाय ।
बजे नगारा हहकारा के ❁ तहँ ते चला बनाफरराय ॥
आयकै पहुँचा फिरि गोरखपुर ❁ सवियाँ शहर लीन घिरवाय ।
सूरज ठाकुर गोरखपुर का ❁ ऊदन लीन तहाँ बँधवाय ॥
तहँते चलिकै पटना आवा ❁ यहु रणबाघु बनाफरराय ।
पूरण राजा पटना वाला ❁ ताको कैद लीन करवाय ॥
चला बनाफर फिरि तहँना ते ❁ काशीपुरी पहूँचा आय ।

धन्य बखानैं हम काशी का ❀ मनमें शिवाचरण को ध्याय ॥
अज अविनाशी घट घट बासी ❀ पूरण ब्रह्म शम्भु करतार ।
परम पियारी निज काशी के ❀ आजौ सत्य सत्य रखवार ॥
रहे भास्करानँद स्वामी हैं ❀ सबके माननीय शिरताज ।
अब लग काशी हम देखी ना ❀ ना कछु परा क्यहू ते काज ॥
वर्ष अठारा कीन नौकरी ❀ बाबू प्रागनारायण धाम ।
छपीं पुस्तकैं ह्याँ जितनी हैं ❀ ते सब पढ़ा पेट के काम ॥
सुनी बड़ाई भल काशी की ❀ दासी सरिस मुक्ति तहँ भाय ।
तौनी काशी अविनाशी माँ ❀ ऊदन तम्बू दीन गड़ाय ॥
हंसामनि काशी का राजा ❀ ऊदन कैद लीन करवाय ।
मारू डंका फिरि बजवाये ❀ कनउज चला बनाफरराय ॥
तीनि महीना औ तेरा दिन ❀ गाँजर खूब कीन तलवार ।
बारह राजन को कैदी करि ❀ पठवा जयचँद के दरबार ॥
बोला मारग में लाखनि ते ❀ बेटा देशराज को लाल ।
हम पर साँकर जहँ कहुँ परिहै ❀ लाला रतीभान के लाल ॥
बदला देहौ की मुरि जैहौ ❀ लाखनि साँच देउ बतलाय ।
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ लाखनि गंगशपथ गा खाय ॥
साथ तुम्हारो साँचो देहैं ❀ प्यारे उदयसिंह तुम भाय ।
करत बतकही दुउ मारग में ❀ कनउज शहर पहूँचे आय ॥
अनँद बधैया घर घर बाजी ❀ सबहिन कीन मंगलाचार ।
पूरि लड़ाई भै गाँजर कै ❀ रक्षा करैं सिया भर्त्तार ॥
खेत छूटिगा दिननायक सों ❀ झण्डा गड़ा निशाको आय ।
आशिर्बाद देउँ मुन्शीसुत ❀ जीवो प्रागनरायण भाय ॥
रहै समुन्दर में जबलों जल ❀ जबलों रहैं चन्द औ सूर ।

मालिक ललिते के तबलों तुम ❀ यशसों रहौ सदा भरपूर ॥
माथ नवावों पितु अपने को ❀ जिन बल गाथ भई तय्यार ।
बड़े यशस्वी पितु हमरे हौ ❀ साँचे धर्म कर्म रखवार ॥
करों तरंग यहाँ सों पूरण ❀ तवपद सुमिरि भवानीकन्त ।
राम रमा मिलि दर्शन देवो ❀ इच्छा यही मोरि भगवन्त ॥

माँजर का युद्ध समाप्त

आल्हखण्ड

सिरसा का समर वर्णन

पहली लड़ाई

सवैया

ध्यावत तव पद कंज शिवा मन भावत दे बरदान भवानी।
तवपति भंग नशे में परे अरु गावत गीत हरी हरि बानी॥
नाहिं सुनय बिनती ललिते यह साँचहु साँचहु साँच बखानी।
दे मृगनयनी कि दे मृगछाल यहै हम चाहत हैं शिवरानी॥

सुमिरन

सुमिरि भवानी शिवरानी को ❀ सिरसा समर करों बिस्तार।

मालिक ललिते के तबलों तुम ❀ यशसों रहो सदा भरपूर ॥
माथ नवावों पितु अपने को ❀ जिन यश गाथ भई तय्यार ।
बड़े यशस्वी पितु हमरे हो ❀ साँचे धर्म कर्म रखवार ॥
करों तरंग यहाँ सों पूरण ❀ तवपद सुमिरि भवानीकन्त ।
राम रमा मिलि दर्शन देवो ❀ इच्छा यही मोरि भगवन्त ॥

पाँजर का युद्ध समाप्त

आल्हखण्ड

सिरसा का समर वर्णन

पहली लड़ाई

सवैया

ध्यावत तव पद कंज शिवा मन भावत दे बरदान भवानी ।
तवपति भंग नशे में परे अरु गावत गीत हरी हरि बानी ॥
नाहिं सुनय बिनती ललिते यह साँचहु साँचहु साँच बखानी ।
दे मृगनयनी कि दे मृगछाल यहै हम चाहत हैं शिवरानी ॥

सुमिरन

सुमिरि भवानी शिवरानी को ❀ सिरसा समर करों बिस्तार ।

नैया डगमग भवसागर में ❀ माता तुम्हीं निबाहन हार ॥
आदि भवानी महरानी तुम ❀ तुम बल सृष्टि रचैं करतार ।
परम पियारी त्रिपुरारी की ❀ धारी देह जगत उपकार ॥
पुत्र षडानन गजआनन हैं ❀ हमरे माननीय शिरताज ।
प्रथमैं सुमिरैं गजआनन को ❀ होवैं सकल तासु के काज ॥
सुमिरि षडानन का दुनियामाँ ❀ लाखन सिद्ध भये द्विजराज ।
मलखे पृथ्वी के संगर को ❀ वर्णन करों सुमिरि रघुराज ॥

अथ कथाप्रसंग

एक समैया माहिल ठाकुर ❀ लिल्ली घोड़ी पर असवार ।
तिक्तिक्तिक्तिक् घोड़ी हाँकत ❀ पहुँचे दिल्ली के दर्बार ॥
आवत दीख्यो जब माहिल को ❀ पिरथी कीन बड़ा सत्कार ।
आवो आवो बैठो बैठो ❀ ठाकुर उरई के सरदार ॥
कुशल बताओ अब मोहवे की ❀ नीके राज करैं परिमाल ।
इतना सुनिकै माहिल बोले ❀ साँची सुनो आप नरपाल ॥
अवसर नीको यहि समया माँ ❀ तुम्हरे हेतु रचा कर्त्तार ।
आल्हा ऊदन गे कनउज का ❀ राजा जयचँद के दरबार ॥
भले बुरे जो दिन बीतत हैं ❀ आवैं फेरि नहीं सो हाथ ।
त्यहिते तुमका समुझावत हैं ❀ साँची सुनो धरणि के नाथ ॥
सिरसा मोहबा यहि समया मा ❀ दूनों आप लेउ लुटवाय ।
सुनिकै बातैं ये माहिल की ❀ भा मन खुशी पिथौराराय ॥
सात लाख फिरि फौजैं लैकै ❀ तुरतै कूच दीन करवाय ।
चारकोस जब सिरसा रहिगा ❀ तम्बू तहाँ दीन गड़वाय ॥
हुकुम लगायो महराजा ने ❀ सिरसा किला गिरावा जाय ।
तब हरकारा सिरसावाला ❀ मलखे खबरि जनावा आय ॥

फौजें आईं पृथीराज की ❀ ओ महराज बनाफरराय।
इतना सुनिकै मलखे ठाकुर ❀ डंका तुरत दीन बजवाय॥
हुकुम लगायो अपने दल मा ❀ फौजै होन लगीं तय्यार।
तुरत कबुतरी पर चढ़िबैठा ❀ नाहर सिरसा का सरदार॥
छींक तड़ाका भै सम्मुख मा ❀ माता बोली बचन सुनाय।
तुम नहिं जावो अब मुर्चा को ❀ मानो कही बनाफरराय॥
इतना सुनिकै मलखे बोले ❀ माता साँच देयँ बतलाय।
आशिर्वाद देउ जल्दी सों ❀ जासें काम सिद्ध ह्वैजाय॥
चढ़ा पिथौरा है सिरसा पर ❀ माता हुकुम देउ फरमाय।
बिरमा बोली तब मलखे ते ❀ तुम्हरो बार न बाँका जाय॥
चरण लागिकै महतारी के ❀ मलखे कूच दीन करवाय।
चौंड़ा ताहर चन्दन बेटा ❀ तीनों परे तहाँ दिखलाय॥
चौंड़ा बोला मलखाने ते ❀ मानो कही बनाफरराय।
किला गिराय देउ सिरसा का ❀ दीन्ह्यो हुकुम पिथौराराय॥
इतना सुनिकै मलखे बोले ❀ चौंड़ा काह गये बौराय।
अपने हाथे हम बनवावा ❀ हमहीं देवैं किला गिराय॥
जो कछु ताकति हो पिरथी की ❀ सो अब हमैं देयँ दिखलाय।
असगति नाहीं है पिरथी कै ❀ हमरो किला देयँ गिरवाय॥
सुनिकै बातैं मलखाने की ❀ चौंड़ा लागु दीन लगवाय।
झुके सिपाही दुहुँतरफा के ❀ मारैं एक एक को धाय॥
पैदल पैदल कै बरणी भै ❀ औ असवार साथ असवार।
मारे मारे तलवारिन के ❀ नदिया बही रक्त की धार॥
अपन परावा क्यहु सूझै ना ❀ दूनों हाथ करैं तलवार।
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लाग पहार॥

जैसे भेड़िन भेड़हा पैठै ❀ जैसे अहिर बिडारै गाय।
तैसे मारै मलखे ठाकुर ❀ रणमा क्षत्रिन खेल खिलाय॥
बहुतक घायल भे खेतन माँ ❀ बहुतक ह्वैगे बिना परान।
फिरि फिरि मारै औ ललकारै ❀ नाहर समरधनी मलखान॥
चढ़ा चौंड़िया इकदन्ता पर ❀ गरुई हाँक देय ललकार।
मोरि लालसा यह ड्वालति है ❀ ठाकुर सिरसा के सरदार॥
मरे सिपाहिन का पैहौ तुम ❀ ठाकुर मोरि तोरि तलवार।
इतना सुनिकै मलखे बोले ❀ चौंड़ा भली कही यहि बार॥
इतना कहिकै मलखे ठाकुर ❀ चौंड़ा पास पहूँचे जाय।
साँग चलाई तब चौंड़ा ने ❀ मलखे लीन्ह्यो वार बचाय॥
एँड़ लगाई फिरि घोड़ी के ❀ हौदा उपर पहूँचे जाय।
ढाल कि औभड़ मलखे मारा ❀ चौंड़ा गयो मूर्च्छा खाय॥
बांधिकै मुशकै तब चौंड़ा की ❀ अपनी फौज पहूँचा आय।
कड़ा छड़ा औ बिछिया अँगुठा ❀ चौंड़े दीन तहाँ पहिराय॥
अगे अगेला पिछे पछेला ❀ तिन बिच चुरियाँ दीन डराय।
जोशन पट्टी औरं बजुल्ला ❀ कानन करनफूल पहिराय॥
बेंदीभाल नयन बिच काजर ❀ पीछे चूनरि दीन उढ़ाय।
तुरत घाँघरा को पहिरावा ❀ मलखे पलकी लीन मँगाय॥
रूप जनाना करि चौंड़ा को ❀ पलकी उपर दीन बैठाय।
फिरि बुलवावा हरकारा को ❀ ताको हाल दीन समुझाय॥
कह्यो जबानी पृथीराज ते ❀ चौंड़ै मुहबा लीन लुटाय।
बेटी प्यारी परिमालिक की ❀ लैकै कूच देउ करवाय॥
चली पालकी फिरि चौंड़ा की ❀ लश्कर तुरत पहूँची आय।
दौरति धावन महराजा ते ❀ सबियाँ हाल बतावा जाय॥

बड़ी खुशाली भै पिरथी के ❀ फूले अंग न सके समाय।
जल्दी आये फिरि पलकी ढिग ❀ देखन लागि पिथौराराय ॥
दीख जनाना तहँ चौंड़ा को ❀ पिरथी गये बहुत शर्माय।
बँधा चौंड़िया जो बैठा था ❀ बंधन तुरत दीन खुलवाय ॥
क्रोधित ह्वैकै महराजा फिरि ❀ आपै गये समर में आय।
औ ललकारा मलखाने को ❀ अबहीं किला देउ गिरवाय ॥
इतना सुनिकै मलखे बोले ❀ राजन साँच देयँ बतलाय।
बंजर धरती जब देखी हम ❀ तबफिर किला लीनबनवाय॥
जैसे मालिक परिमालिक हैं ❀ तैसे आप पिथौराराय।
अदब तुम्हारो हम मानत हैं ❀ राजन कूच देउ करवाय ॥
इतना सुनिकै पिरथी बोले ❀ अबहीं किला देउ गिरवाय।
सिरसा मुहवा नतु दूनों हम ❀ मलखे लेब आज लुटवाय ॥
इतना सुनिकै मलखे बोले ❀ ओ महराज पिथौराराय।
हथी पछारा तब द्वारे मा ❀ आपन बूत दीन दिखलाय॥
काह बतावैं महराजा ते ❀ सबियाँ देश रहा थर्राय।
किला गिरावो जो सिरसा का ❀ दिल्ली शहर देउँ फुँकवाय ॥
कौने धोखे तुम भूले हौ ❀ मारो राज भंग ह्वैजाय।
इतना सुनिकै पृथीराज ने ❀ तोपन आगिदीन लगवाय ॥
हाहाकारी तब बीतति भै ❀ मानो प्रलय गई नगच्याय।
बड़ी लड़ाई भै तोपन कै ❀ औ दलगिरा बहुत महराय ॥
चारकोस लौं गोला जावै ❀ गोली पाँच खेत लौं जाय।
धुँवा उड़ाना अति तोपन का ❀ चहुँदिशि अंधकार गा छाय॥
बन्द लड़ाई भै तोपन कै ❀ औफिरिचलनलागितलवार।
जितने कायर दूनों दल मा ❀ ते सब भागि डारि हथियार ॥

शूर सिपाही रणमण्डल मा ❀ मारैं फेरि फेरि ललकार।
कटि कटि मूड़ गिरैं धरती मा ❀ उठि उठि रुण्ड करैं तलवार॥
मूड़न केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार।
मारे मारे तलवारिन के ❀ नदिया बही रक्त की धार॥
छुरी कटारी तिहि नदिया मा ❀ मछली सरिस परैं दिखलाय।
ढालै कछुवा त्यहि नदिया मा ❀ गोहै सरिस भुजा उतरायँ॥
को गति बरणै त्यहि समया कै ❀ नदिया खूब बहै बिकराल।
नचैं योगिनी खप्पर लीन्हे ❀ मज्जैं भूत प्रेत बैताल॥
घोड़ी कबुतरी का चढ़वैया ❀ नाहर समरधनी मलखान।
सुमिरन करिकै शिवशंकर का ❀ मारिकै कीन खूब खरिहान॥
औ ललकारा रजपूतन का ❀ हमरे सुनो शूर सरदार।
जो कोउ पैदा है दुनिया मा ❀ आखिर मरण होय इकबार॥
परे खटोलिन्ह में मरि जैहौ ❀ आखिर ह्वैहौ भूत परेत।
सम्मुख जूझै तलवारी के ❀ त्यहि बैकुण्ठ धाम हरि देत॥
दिह्यो बढ़ावा बहु क्षत्रिन को ❀ नाहर सिरसा के सरदार।
पैदल पैदल इकमिल ह्वैगे ❀ औ असवार साथ असवार॥
बिकट लड़ाई क्षत्रिन कीन्ह्यो ❀ नदिया बही रक्त की धार।
सूरति राजा हाड़ावाला ❀ मलखे सिरसा के सरदार॥
दूनों अभिरे समरभूमि मा ❀ दूनों खूब करैं तलवार।
भाला बलछी दूनों मारैं ❀ दूनों लेयँ ढाल पर वार॥
सूरति गिरिगा जब संगर में ❀ अंगद शूर पहूँचा आय।
औ ललकारा मलखाने को ❀ तुम भगि जाउ बनाफरराय॥
इतना कहिकै अंगद ठाकुर ❀ तुरतै मारा साँग चलाय।
घोड़ी कबुतरी का चढ़वैया ❀ तुरतै लीन्ह्यो वार बचाय॥

खैंचिकै मारा तलवारी का ❀ औशिरदीन्ह्योभूमिगिराय।
तीनि शूर पिरथी के जूझे ❀ हाहाकार शब्द गा छाय॥
मुर्चा फिरिगे रजपूतन के ❀ काहू धीर धरा न जाय।
मलखे मारै दश पंद्रा को ❀ घोड़ी देवै बीस गिराय॥
दाँतन काटै टापन मारै ❀ अद्भुत समर कहा ना जाय।
हटा पिथौरा तब पाछे का ❀ आगे बढ़े बनाफरराय॥
मलखे ताहर का मुर्चा भा ❀ मारैं एक एक को धाय।
सात कोसलौं मलखे ठाकुर ❀ मारत मारत गये हटाय॥
रंग बिरंगी पृथ्वी ह्वैगै ❀ मज्जा चर्बी परै दिखाय।
बड़ा लड़ैया बिरमा वाला ❀ ज्यहिका कही बनाफरराय॥
त्यहि के संगर धरती काँपै ❀ थर थर आसमान थर्राय।
काह हकीकति है ताहर कै ❀ जो संगर ते देयँ हटाय॥
पाँउ पछारी को डारै ना ❀ यहु रणबाघु बीर मलखान।
कोऊ चत्री अस दूसर ना ❀ मलखे साथ करै मैदान॥
मुर्चा फिरिगा पृथीराज का ❀ लौटा तबै बीर मलखान।
बाजे डंका अहतंका के ❀ लौटे सबै सिपाही ज्वान॥
पहुँचे पिरथी तब दिल्ली में ❀ सिरसा सिरसा का सरदार।
माता बिरमा त्यहि औसर मा ❀ द्वारे आरति लीन उतार॥
एक समैया की बातैं हैं ❀ आये उरई के सरदार।
आवो आवो बैठो बैठो ❀ बिरमा कीन बड़ा सतकार॥
माहिल बैठा तब महलन मा ❀ करिकै रामचन्द्र को ध्यान।
बोला माहिल फिरि बिरमा ते ❀ तुम्हरो पूत बड़ा बलवान॥
बड़े लड़ैया दिल्ली वाले ❀ ते सब हारि गये चौहान।
कौनि तपस्या तुम कै राखी ❀ पैदा भये बीर मलखान॥

सरबर मलखे की दुनिया मा ❀ दूसर नहीं लीन औतार।
यहै मनावैं परमेश्वर ते ❀ इनका भला करो कर्त्तार॥
नाम हमारो है दुनिया मा ❀ भैने माहिल के बरियार।
आल्हा ऊदन मलखे सुलखे ❀ इनते हारि गई तलवार॥
यहै मनावैं जगदम्बा ते ❀ अंजलिजोरिजोरिशिरनाय।
मलखे सुलखे आल्हा ऊदन ❀ नीके रहैं बनाफरराय॥
सुनि सुनि बातैं ये माहिल की ❀ नारी बुद्धिहीन जगजान।
पदुम पैर है मलखाने के ❀ यह वर दीन रहे भगवान॥
दुनिया बैरी ह्वै मलखे कै ❀ भैया काह बनाई आय।
पदुम न फटिहै जो तरवा का ❀ तौ नहिं मरी बनाफरराय॥
लिखी बिधाता कै मेटै को ❀ माता हाल दीन बतलाय।
बिदा माँगिकै फिरि जल्दी सों ❀ माहिल कूच दीन करवाय॥
राह छोंड़िकै फिरि उरई कै ❀ दिल्ली चला तड़ाका जाय।
लिल्ली घोड़ी का चढ़वैया ❀ दिल्ली पहुँचि गयो फिरआय॥
हाल बतायो सब पिरथी को ❀ माहिल बार बार समुझाय।
भाला बलछी औ साँगन को ❀ खन्दक आप देउ गड़वाय॥
पदुम न रैहै जब तरवा मा ❀ तब ना रही बनाफरराय।
मीचु आयगै मलखाने कै ❀ माता हाल दीन बतलाय॥
सुनिकै बातैं ये माहिल की ❀ राजा कुँवर लीन बुलवाय।
दुइसै खन्दक तुम खुदवावो ❀ आधे देउ जाय पटवाय॥
एक छाँड़िकै इक पटवावो ❀ या बिधि दीन खूब समुझाय।
अधीराति कै फिरि अमला मा ❀ कुँवरन कीन तहाँ तस जाय॥
पाँच राति में यह रचना करि ❀ दिल्ली फेरि पहूँचे आय।
हाल बतायो सब पिरथी को ❀ कुँवरन बार बार समुझाय॥

सिरसा की दूसरी लड़ाई—(मलखान-वध)

माहिल चलिभे फिरि उरई का ❀ राजा फौज कीन तैयार ।
झीलमबखतरपहिरिसिपाहिन ❀ हाथम लई ढाल तलवार ॥
पहिल नगाड़ा में जिनबन्दी ❀ दुसरे फाँदि घोड़ असवार ।
तिसर नगाड़ा के बाजत खन ❀ चलिभे सबै शूर सरदार ॥
आयकै पहूँचे फिरि संगर में ❀ तम्बू तहाँ दीन गड़वाय ।
लिखीहकीकतिफिरिमलखेको ❀ अबहूँ किला देउ गिरवाय ॥
लिखिकै चिट्ठी दी धावन को ❀ धावन तुरत पहूँचा जाय ।
द्वारे ठाढ़े मलखाने थे ❀ चिट्ठी तुरत दीन पकराय ॥
चढ़ा पिथौरा है सँभराभरि ❀ औ यह कहा बनाफरराय ।
किला गिरावैं जो सिरसा का ❀ तब सब रारि शान्त ह्वैजाय ॥
नहीं तो बचिहैं ना संगरमा ❀ जो बिधि आपु बचावैं आय ।
लौटि पिथौरा अब जैहै ना ❀ सिरसा ताल देय करवाय ॥
मृत्यु आयगै मलखाने कै ❀ जो नहिं किला देयँ गिरवाय ।
लौटि पिथौरा अब जैहै ना ❀ नेका टका लेय निकराय ॥
चौंड़ा बकशी पृथीराज का ❀ सोऊ कहा सँदेशा आय ।
बने जनाना मलखानें अब ❀ घरमा बैठि रहैं शरमाय ॥
कौने राजा की गिनती मा ❀ जो नहिं किला देयँ गिरवाय ।
कह्यो सँदेशा यह ताहर है ❀ सो सुनि लेउ बनाफरराय ॥
मलखे चाकर परिमालिकका ❀ सो कस रारि मचावै आय ।
दीन बड़ाई हम चाकर को ❀ पहिले फौज लीन हटवाय ॥
जियति न जाई अब संगर से ❀ जो विधि आपु बचाई आय ।
कह्यो सँदेशा सब लोगन को ❀ धावन बार बार समुझाय ॥
सुनिकै बातैं ये धावन की ❀ क्रोधित भयो बनाफरराय ।

हुकुमलगायो फिरिसिरसा में ❀ बाजन सबै रहे हहराय ॥
बोले मलखे फिरि धावन ते ❀ यह तुम कह्यो पिथौरै जाय ।
मारे मारे मुख धावन के ❀ धावन घाव तहाँ समुझाय ॥
यहै बतायो तुम पिरथी ते ❀ आवत समरधनी मलखान ।
कसरि न राखैं चौंड़ा ताहर ❀ संगर करैं दूनहू ज्वान ॥
कौन जनाना हम दोउन का ❀ उनके साथ कौन मैदान ।
हमरो संगर पृथीराज को ❀ जावैं सँभरि आज चौहान ॥
इतना सुनिकै धावन चलिकै ❀ राजै खबरि बतावा आय ।
हाल पायकै सिरसागढ़ का ❀ क्रोधित भयो पिथौराराय ॥
बाजे डंका इत पिरथी के ❀ वैसी सिरसा के महराज ।
सूरज बंशी औ यदुबंशी ❀ तोमर बंश केर शिरताज ॥
ये सब सजिसजि सिरसागढ़ में ❀ अपनी लीन ढाल तलवार ।
नीले काले सब्जे सुर्खे ❀ सब रँग घोड़ भये तय्यार ॥
अंगद पंगद मकुना भौंरा ❀ सजिगे श्वेतबरण गजराज ।
हाड़ा बूँदी गहिलवार के ❀ तिनपर बैठिशूर शिरताज ॥
सुमिरन करिकै शिवशंकरका ❀ मातै शीश नवावा जाय ।
पीठि ठोंकि कै बिरमा माता ❀ आशिर्बाद दीन हर्षाय ॥
चलिभा मलखे माताढिग ते ❀ रानी महल पहूँचा आय ।
दीन दिलासागजमोतिनिका ❀ ठाकुर चला खूब समुझाय ॥
बेटी बोली गजराजा की ❀ स्वामिन चेरी बोल बनाव ।
पावँ पछारी का डार्यो ना ❀ नाहीं हँसी देश औ गाँव ॥
होय हँसौवा ज्यहि दुनिया मा ❀ त्यहिकामरण नीकहीआय ।
सुनी किहानी हम विप्रन ते ❀ स्वामी साँच दीन बतलाय ॥
इतना सुनिकै मलखे चुप्पै ❀ फौजन फेरि पहूँचे आय ।

बाजे डंका अहतंका के ❁ मलखे कूच दीन करवाय ॥

सवैया

चरखन में सब तोप चढ़ाय औ फौज अपार लिये मलखाना ।
बाजत डंक निशंक तहाँ औ यथा घन सावन को घहराना ॥
बिज्जु छटासों कटाकरिबे कहँ चमकत खड्ग तहाँ मर्दाना ।
मौहर बाजत हाव किये ललिते यह भाव न जात बखाना ॥

चढ़ा कबुतरी पर मलखाने ❁ मुर्चा सबै कीन तैयार ।
पाग बैंजनी शिरपर बाँधे ❁ हाथ म लये ढाल तलवार ॥
फिरिफिरिध्यावैशिवशंकरको ❁ गावै सुन्दर भजन बनाय ।
चीलह्औंगीधउड़ैं खुपरिनपर ❁ कुत्ता स्यार रहे चिल्लाय ॥
मरणकाल के जो अशकुन हैं ❁ मलखे दीख तहाँपर आय ।
पै भयलायो मन अन्तर ना ❁ यहु निरशंक बनाफरराय ॥
इकदिशि तोपनको छुटवावा ❁ इकदिशि धावा दीन कराय ।
जैसे भेड़िन भिड़हा पहुँचै ❁ जैसे अहिर बिडारै गाय ॥
तैसे मारै रजपूतन को ❁ यहु रणबाघु बनाफरराय ।
ताहर चौंड़ा औ चन्दन का ❁ मुर्चा मलखे दीन हटाय ॥
जौने हौदा मलखे ताकैं ❁ घोड़ी तहाँ देय पहुँचाय ।
जाय महावत का हनिडारैं ❁ औ असवारै देयँ गिराय ॥
दहिने बायें टापन मारै ❁ सम्मुख दाँतन लेय चबाय ।
मलखे ठाकुर के मारुनमा ❁ बहुदल परा तहाँ भहराय ॥
जहँना हाथी पृथीराज का ❁ मलखे तहाँ पहूँचे आय ।
पतरी लकड़िन खन्दक पाटे ❁ ताके पार पिथौराराय ॥
खाली खन्दक एक बीच में ❁ ताको दीख बनाफरराय ।
गर्दन ठोंकी तहँ घोड़ी की ❁ दूनों एँड़ा दीन लगाय ॥

चूकि कबुतरी धरती जाना ❀ खन्दक परी तड़ाका जाय।
मलखे घोड़ी दोउ खन्दकमा ❀ भालन उपर गिरे महराय॥
बलछी भालनकी नोकनसों ❀ घायल भये बनाफरराय।
बड़ा शोचभा तहँ घोड़ी का ❀ रोवैं बार बार पछिताय॥
घोड़ी तड़पी फिरि खन्दकते ❀ मलखे सहित पारगै आय।
पदुम फाटिगा तहँ तरवा का ❀ औ मरिगये बनाफरराय॥
गा हरिकारा तब सिरसामा ❀ ब्रिरमै खबरि बतावा जाय।
सुनिकै बातैं हरिकारा की ❀ ब्रिरमा गिरी मूर्च्छा खाय॥
खबरिपायकै गजमोतिनितहँ ❀ फिरिउठिबैठिफेरिगिरिजायँ।
सासु पतोहू बैली ह्वैकै ❀ शिरधुनि बारबार पछितायँ॥
सुयश बखानैं मलखाने का ❀ महलन गई उदासी छाय।
सातपाँच दश जुरीं सहिलरी ❀ सम्मत देन लगीं सो आय॥
तब गजमोतिनि ब्रिरमा दूनों ❀ पलकी लीन तहाँ मँगवाय।
सुमिरि गजानन लम्बोदरको ❀ गौरा पारबती पद ध्याय॥
चढ़ीं पालकी सासु पतोहू ❀ पहुँचीं समरभूमि में आय।
गदहन पृथ्वी को जुतवावैं ❀ यहु महाराज पिथौराराय॥
तब गजमोतिनिने ललकारा ❀ यह सुनि लेउ बीर चौहान।
यह ना जान्यो अपने मनते ❀ की मरि गये बीर मलखान॥
सुनी पतिब्रतकी महिमा ना ❀ ताते चढ़ी तुम्हारे शान।
हम जब लेबे तलवारी को ❀ तब नहिं रही तुम्हारो मान॥
बातैं सुनिकै गजमोतिनिकी ❀ पृथ्वी कूच दीन करवाय।
कैयो दिन का धावा करिकै ❀ दिल्ली शहर पहूँचे आय॥
लाश देखिकै मलखाने कै ❀ माता तुरत गई लपटाय।
उठै औ बैठै गिरि गिरि जावै ❀ रानी दशा कही ना जाय॥

बिपदा बरणौं गजमोतिनिकै ❀ तौफिरि एकसाललगिजाय।
सखी सहिलरी तहँ समुझावैं ❀ बिरमा धीरज रही कराय॥
तेज पतिब्रत का जाहिर है ❀ जाते सत्त चढ़ा अधिकाय।
चिता लगावा गा चन्दन सों ❀ रानी बैठि सरा पर जाय॥
सुमिरि भवानी महरानी को ❀ पति शिरधरा जाँघपर आय।
हवा खैंचिकै सब देहीकै ❀ शिरपर दीन तुरत पहुँचाय॥
संध्यावाले यह गति जानैं ❀ प्राणायाम करैं जे भाय।
नाक चपावैं ते अँगुठा ते ❀ ऊपर श्वास चढ़ावत जायँ॥
तैसे करिकै गजमोतिन ह्याँ ❀ ऊपर हवा दीन पहुँचाय।
जब फुफकास्यो पति शव लैकै ❀ हाहाकार अग्निगै आय॥
भम्भम्भम्भम् चन्दन लकड़ा ❀ सुलगन लागि तहाँपर भाय।
हाय पियारे बघऊदन के ❀ मारे गये बनाफरराय॥
भाय पियारो ऊदन होते ❀ दिल्ली शहर देत फुँकवाय।
हाय बिधाता यहगति कीन्ही ❀ न्यारे भये बनाफरराय॥
कौन दुसरिया जग दादा को ❀ इन्दल पूत बड़ा बरियार।
मरत न देखा यहि समया मा ❀ देवर उदयसिंह सरदार॥
जो हम जानति यहगतिहोई ❀ तुमका लेति तुरत बुलवाय।
दगा न करते दिल्लीवाले ❀ तौकसमरतिप्राणपतिआय॥
कड़कै धड़कै फड़कै छाती ❀ ऐसो देखि शूर सरदार।
यहै मनाऊँ औ ध्याऊँ नित ❀ स्वामी दीनबन्धु कर्त्तार॥
जहँ जहँ जन्मैं ये स्वामी मम ❀ तहँ तहँ होयँ मोरि भर्तार।
अग्निप्रज्वलित त्यहिसमयाभै ❀ लागे जरन सबै शृंगार॥
गमकै ढोलक त्यहिसमया माँ ❀ धमकै थाप नगारे भाय।
चम्चम्चमकै गजमोतिनि तहँ ❀ दमकै जरत हेम अधिकाय॥

एकरूप सों हनुमत ह्वैकै ❀ कीन्हे सकल रामके काज ॥
मुख्य स्वरूपी शिवशङ्कर के ❀ डमरू एक हाथ में राज ।
लिहे त्रिशूलौ दुसरे हाथे ❀ मुण्डनमाल गरे में भ्राज ॥
भस्म रमाये सब अंगन में ❀ खाये भंग धतूरा ईश ।
कण्ठ हलाहल अतिसोहत है ❀ सोहैं श्वेत बरण जगदीश ॥
नग्न अमंगल मंगलकारी ❀ हारी तीनि ताप वागीश ।
शिवा बिहारी सब सुखकारी ❀ धारी सदा गंग को शीश ॥
तिनके भुजबल बल ललितेको ❀ फलिते करैं याहि गौरीश ।
कीरति सागर की गाथा को ❀ ललिते कहैं नायकर शीश ॥

अथ कथाप्रसंग

सवन सुहावन जब आवत भा ❀ तब सब चले बिदेशी ज्वान ।
कीन चढ़ाई पृथीराज ने ❀ जब मरिगये बीर मलखान ॥
कीरति सागर मदनताल पर ❀ सब रँग ध्वजा रहे फहराय ।
परा पिथौरा दिल्ली वाला ❀ आला रूप शील समुदाय ॥
हाल पायकै परिमालिक ने ❀ फाटक बन्द लीन करवाय ।
बन्धन छूटैं ना गौवन के ❀ ना कउ त्रिया सेजपर जायँ ॥
मारे डरके पिंडुरी काँपैं ❀ मोहबा थहर थहर थर्राय ।
बिना इकेले बघऊदन के ❀ फाटक कौन खुलावै आय ॥
ऐसी बातैं घर घर होवैं ❀ दर दर नारिझुण्ड अधिकाय ।
मस्तक पीटैं कर अपने सों ❀ औ यह कथा रहीं तहँ गाय ॥
होत बनाफर जो सिरसा का ❀ फाटक आज देत खुलवाय ।
पबनी आई है मूड़े पर ❀ लूटन अवा पिथौराराय ॥
कुशल न देखैं हम मुहबे माँ ❀ संकट परा आज दिन आय ।
बिना इकेले अब आल्हा के ❀ फाटक कौन खुलावै धाय ॥

देवा सुलखे की मारुन मा ❀ ठहरत कौन यहाँपर माय।
हाय गुसैयाँ की मरजी अस ❀ पवनी गई मूड़पर आय॥
कौन बचाई पृथीराज सों ❀ झंडा मदनताल फहराय।
सात कोस के चौगिर्दा में ❀ तम्बू तम्बू परैं दिखाय॥
पति औ देवर भोजन करते ❀ घरमा कहैं हमारे माय।
तब तो बुढ़िया तिरिया बोली ❀ मन में श्रीगणेशको ध्याय॥
धीरज राखो अपने मनमा ❀ करिहै काह पिथौरा आय।
मनियादेवन की शरणागत ❀ जावो हाथ जोरि शिरनाय॥
त्यई सहायी सुखदायी अब ❀ फाटक तुरत देयँ खुलवाय।
घर घर सुमिरैं नरनारी सब ❀ साँचे देव परैं दिखराय॥
घट घट व्यापी अरि परितापी ❀ जापी चले जायँ तिनधाम।
आला देवन में देवता हैं ❀ मनियादेव मोहोबे ग्राम॥
भा खलभल्ला औ हल्लाअति ❀ घर घर गई उदासीछाय।
टोला टोला में हल्लाभा ❀ लल्ला नहीं बनाफरराय॥
बिना इकेले बघऊदन के ❀ फाटक कौन खुलावै आय।
ऐसे घर घर पुरवासी सब ❀ दर दर कहैं नारिनर धाय॥
भा खलभल्ला रनिवासे माँ ❀ मोहबा गँसा पिथौरा आय।
ध्यबी शारदा त्यहि समया मा ❀ मल्हना ध्यायरही शिरनाय॥
तुम्हरे बूते बघऊदन ने ❀ जीता देश देश सब जाय।
तुम लैआवो उदयसिंह को ❀ ईजति राखु शारदामाय॥
सदा सहायी तुम मायी हौ ❀ गायी तीनि लोक गुणगाथ।
मोहिंअनाथिनिकी मातातुम ❀ तुम्हरे चरण हमारो माथ॥
देकै सुपना बघऊदन को ❀ माता लावो यहाँ बुलाय।
नितप्रति पूजा हम मोहबे मा ❀ चन्दन अक्षत फूल चढ़ाय॥

चढ़ा पिथौरा है सँभरा भर ❀ हमरे प्राण रहे घबड़ाय।
कऊ सहायी ना दुनिया माँ ❀ ईजति राखु शारदा माय॥
बैठि कुशासन रानी मल्हना ❀ सारी दीन्ही रैनि गँवाय।
स्वपना देखा ताही निशिमाँ ❀ औ जगि परा बनाफरराय॥
हाल बतावा सब देबा का ❀ ठाकुर उदयसिंह समुझाय।
इतना सुनिकै देबा बोला ❀ साँची सुनो बनाफरराय॥
जैसो स्वपना तुम देखा है ❀ तैसो दीख हमों है भाय।
बिपदा आई है मल्हना पर ❀ साँचो साँच बनाफरराय॥
होत भुरहरे के स्वपना सब ❀ साँचे उदयसिंह सरदार।
करो बहाना अब गाँजर को ❀ औ मोहबे को होउ तयार॥
कुँवा बिवाहन की बिरिया मा ❀ दीन्ह्यो प्राण नेग तुम भाय।
चढ़ा पिथौरा है दिल्ली का ❀ साँचो स्वपन परा दिखलाय॥
चलिये जल्दी अब मोहबे को ❀ लाखनिराना संगलिवाय।
इतना सुनिकै द्यावलि वाला ❀ लाखनि पास पहूँचा जाय॥
बड़ी नम्रता ते बोलत भा ❀ यहु रणबाघु बनाफरराय।
जाहिर पबनी है मोहबे की ❀ साँची सुनौ कनौजीराय॥
मोरि लालसा यह डोलति है ❀ पबनी करैं मोहोबे जाय।
करैं बहाना हम गाँजर को ❀ तुमको मोहबा लवैं दिखाय॥
इतना सुनिकै लाखनि बोले ❀ चलिये बेगि बनाफरराय।
चरचा करिये नहिं मोहबे की ❀ नहिं सब जैहैं काम नशाय॥
करो तयारी अब गाँजर की ❀ पहुँचैं नगर मोहोबे जाय।
जैसि दवाई रोगी माँगै ❀ तैसी बैद देय बतलाय॥
तैसि खुशाली भै ऊदन के ❀ डंका तुरत दीन बजवाय।
हुकुमलगायो फिरि लश्करमा ❀ सजिगे सबै शूर समुदाय॥

जहाँ कचहरी चंदेले की ❀ ऊदन तहाँ पहूँचे जाय।
हाल बतायो महराजा को ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
लाखनिराना की मंशा है ❀ गाँजर खेलैं खूब शिकार।
न्वरिव लालसा यह डोलति है ❀ राजा कनउज के सरदार ॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ राजै हुकुम दीन फरमाय।
तहँते चलिकै ऊदन देबा ❀ आल्हा पास पहूँचे आय ॥
कहीहकीकति सब आल्हासों ❀ ऊदन बार बार समुझाय।
जानिकै इच्छा लखराना की ❀ आल्हा ठाकुर रहे चुपाय ॥
माथ नायकै फिरि आल्हा को ❀ माता पास पहूँचे आय।
कह्यो हकीकति महतारी सों ❀ दोऊ चरणन शीशनवाय ॥
बिदा माँगिकै महतारी सों ❀ भाभी पास पहूँचे जाय।
हाल बतायो सब सुनवाँ को ❀ साँचो साँच बनाफरराय ॥
बड़ी खुशाली सों भाभी ने ❀ आशिरबाद दीन हर्षाय।
माथ नायकै उदयसिंह फिर ❀ फौजन तुरत पहूँचे आय ॥
लाखनि देबा ऊदन तीनों ❀ लश्कर कूच दीन करवाय।
बाजत डंका अहतंका के ❀ यमुनापार पहूँचे जाय ॥
नदी बेतवा को उतरत भे ❀ झाबर डेरा दीन डराय।
योगिहा बस्तर सबक्षत्रिनको ❀ ऊदन तहाँ दीन पहिराय ॥
लाखनि ऊदन देबा सय्यद ❀ सम्मत कीन तहाँ त्यहिबार।
सिरसा केरे फिरि फाटकमाँ ❀ आये सबै शूर सरदार ॥

सवैया

फाटक हाटक नाटक दीख बिना मलखान नहीं गुलजारा।
श्वानशृगालन जाति जमातिऔ भाँति सबै बिपरीत निहारा ॥
ऊदन नैनन नीरन धार अपार बही सो सही त्यहि बारा।

शोचत मोचत नैनन को ललिते लखि ऐनन नैननद्वारा ॥
एक बरदिया लखि बोलतभा ❀ योगी काह शोच यहिबार।
एक इकेले मलखाने बिन ❀ पृथ्वी डारा नगर उजार॥
दगा ते मारे मलखानेगे ❀ अब ह्याँ रोवैं श्वान शृगाल।
इतना सुनिकै देबा ऊदन ❀ नैनन ढाँपि लीन रूमाल॥
होश उड़ाने दोउ क्षत्रिन के ❀ दोऊ ह्वैगे हाल बिहाल।
कह्यो बरदिया ते धीरज धरि ❀ बेटा देशराज के लाल॥
का खा गा घा ङ ङा आदिक ❀ हमहूँ पढ़ा एकही साथ।
हाय ! पियारे गुरु भाई को ❀ कैसे निधन कीन जगनाथ॥
ब्वला बरदिया तब ऊदन ते ❀ साँची सुनो गुरू महराज।
जो महरानी गजमोतिनि थी ❀ सत्ती भई धर्म के काज॥
परम पियारे बघऊदन का ❀ लै लै बार बार सो नाम।
धरिकै जंघापर प्रीतम शिर ❀ पहुँची तुरत बिष्णु के धाम॥
सुनी बरदिया की बातैं ये ❀ बोला देशराज का लाल।
सरा दिखावो मलखाने का ❀ कहँ पर जरी सती सो बाल॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ तुरतै साथ भयो तय्यार।
बना चबुतरा तहँ सत्ती का ❀ देखत भये सबै सरदार॥
बहु रन बोले त्यहि समयामाँ ❀ साफै शब्द परा सो कान।
आज साँकरा परिमालिकका ❀ जावो तहाँ सबै तुम ज्वान॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ साफै साफ देयँ बतलाय।
जियत मोहोबे हम जावैं ना ❀ कौवा मरे हाड़ लै जायँ॥
नाता टूटो अब मोहबे का ❀ जादिन मरे बीर मलखान।
कोअस ठाकुर अबदुनियामा ❀ दादा मलखे के अनुमान॥
इतना कहिकै ऊदन देबा ❀ दोऊ छांड़ि दीन डिंडकार।

फिरि रन बोलेत्यहि समयामा ❀ ऊदन जीबे का धिक्कार ॥
आजु साँकग है मल्हना पर ❀ यहु दिन परी न बारम्बार ।
ताते जावो तुम मोहबे को ❀ ठाकुर उदयसिंह सरदार ॥
इतना सुनिकै सब योगिन ने ❀ सुमिरा हृदय भवानीनाथ ।
बड़ा मोह करितेहि समयामा ❀ औरै फेरि नवायो माथ ॥
चारो योगी चलि तहँना ते ❀ मोहबे फेरि पहूँचे आय ।
मोहबा केरे फिरि फाटक पर ❀ योगिनअलखजगायोजाय ॥
बजी बाँसुरी तहँ ऊदन की ❀ खँभड़ी मैनपुरी चौहान ।
बाजै डमरू भल लावनि का ❀ तोड़ैं गजल पर्ज पर तान ॥
को गति बरणै तहँ सय्यदकै ❀ सो इकतारा रहा बजाय ।
ऊदन बोले दरवानी ते ❀ फाटक तुरत देउ खुलवाय ॥
सुनी हकीकति हमकाशीमाँ ❀ मोहबा बसैं रजा परिमाल ।
पारस पत्थर इनके घरमा ❀ इनसम नहीं और महिपाल ॥
भिक्षा माँगब हम ड्योढ़ी माँ ❀ साँचैं साँच दीन बतलाय ।
हैं हम योगी बङ्गाले के ❀ आयन द्रव्य हेतु है भाय ॥
तुम्हैं मुनासिब अब याही है ❀ फाटक तुरत देउ खुलवाय ।
सुनिकै बातैं बैरागिन की ❀ बोला तुरत बचन शिरनाय ॥
खुलि है फाटक बैरागी ना ❀ तुम ते साँच दीन बतलाय ।
आफति आई परिमालिक पर ❀ गाँसा नगर पिथौरा आय ॥
बन्धन छूटैं ना गौवन के ❀ ना कउ त्रिया सेजपर जाय ।
आज मोहोबा पर बिपदा है ❀ घर घर रही उदासी छाय ॥
भुलैं हिंडोला ह्याँ कोऊ ना ❀ ना कउ गावै मेघ मलार ।
आज मोहोबा लङ्का ह्वैगा ❀ शङ्का घूमि रही सब द्वार ॥
बङ्का ठाकुर सिरमावाला ❀ जब ते मरा बीर मलखान ।

आल्हा ऊदन गे कनउज को ❀ तबते छूटिगई सब शान ॥
इतना कहिकै दरवानिन ने ❀ योगिन पुरै दीन पहुँचाय ।
ता ता थेई ता ता थेई ❀ ऊदन ठाकुर दीन मचाय ॥
धुरपद सरंगीत तिल्लाना ❀ गावै खूब कनउजीराय ।
बाजै खँझड़ी भल देबा कै ❀ सय्यददशा बरणि ना जाय ॥
साँचे योगी जनु पैदा भे ❀ पूरण योग परै दिखराय ।
माथा चमकै भल ऊदन का ❀ नैनन गई अरुणता छाय ॥
चढ़ा उतारू भुजदण्डै हैं ❀ सब बिधि सुघर लहुरवा भाय ।
नगर मोहोबा की गलियनमें ❀ योगिन दीन्ह्यो धूममचाय ॥
रय्यति मोही परिमालिक की ❀ दीन्हेनि खानपान बिसराय ।
भये बावला सँग योगिन के ❀ घूमन लागि नारिनर धाय ॥
रूप देखिकै लखराना का ❀ मोहीं युवा बाल तहँ आय ।
अलख लाड़िला रतीभान का ❀ लाखनि शूरबीर अधिकाय ॥
नयन मिलावै नहिं नारिनसों ❀ नीचे शीश लेय औंधाय ।
राग हिंडोला ऊदन गावै ❀ अँगुरिन भाव बतावत जाय ॥
मीरा ताल्हन बनरस वाला ❀ सो इकतारा रहा बजाय ।
ताल स्वरन सों देबा ठाकुर ❀ खँझरी खूब रहा गमकाय ॥
खबरि पायकै मल्हना रानी ❀ योगिन महललीन बुलवाय ।
चन्दन चौकिन माँ योगी सब ❀ बैठे रामचन्द्र को ध्याय ॥
मल्हना बोली तहँ योगिन ते ❀ साँचे हाल देउ बतलाय ।
पूत पिथौरा के चारो तुम ❀ यह हम मनै लीन ठहराय ॥
लूटन आयो है महलन को ❀ सो यह मनै देउ बिसराय ।
जियत न जैहौ तुम महलन ते ❀ ब्रह्मा रंजित लेउँ बुलाय ॥
मारि सिरोहिन ते हनिडरिहैं ❀ यमपुर अबै द्यहैं दिखलाय ।

हाय ! बेंदुला का चढ़वैया ❀ नाहिंन आजु लहुरवाभाय ॥
सुन पायकै पृथीराज ने ❀ गाँस्यो नगर मोहोबा आय ।
पै अस खाली है मोहबा ना ❀ जस तुम मनै लीन ठहराय ॥
तिरिया लरिहैं रजपूतन की ❀ भाला बलछी साँग उठाय ।
कुशल पिथौरा की ह्वैहै ना ❀ तुम ते साँच दीन बतलाय ॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ।
हम नहिं लरिका पृथीराज के ❀ माता काह गई बौराय ॥
हमतो योगी बंगाले के ❀ मोहबा शहर मँझावा आय ।
कुटी हमारी है गोरखपुर ❀ जावैं हरद्वार को माय ॥
मोहिं बखेड़ा ते मतलब ना ❀ भिक्षा आप देयँ मँगवाय ।
पारस पत्थर तुम्हरे घरमा ❀ लोहा छुवत स्वान ह्वै जाय ॥
सुनी बड़ाई हम कनउज मा ❀ राजा जयचँद के दरबार ।
साल दुसाला मोहनमाला ❀ दीन्ह्यो उदयसिंह सरदार ॥
आला राजा कनउज वाला ❀ गुदरी तुरत दीन बनवाय ।
मुँदरी दीन्ह्यो इन्दल ठाकुर ❀ लाखनिकड़ादीन पहिराय ॥
जो कछु पावैं हम महलन ते ❀ लैकै कूँच देयँ करवाय ।
भजनानन्दी सब योगी हैं ❀ कहु कछुदेवैं भजन सुनाय ॥
शोक छाँड़िकै आनँद होवो ❀ करिहैं कुशल जानकीमाय ।
एक पिथौरा कै गिनती ना ❀ लाखन चढ़ैं पिथौरा आय ॥
पुण्य तुम्हारी ते मिटि जैहैं ❀ माता साँच देयँ बतलाय ।
काहे रोवो तुम महलन मा ❀ माता बार बार घबड़ाय ॥
सुनिकै बातैं ये योगिन की ❀ मल्हनाछाँड़िदीन डिडकार ।
काह बतावैं हम योगिन ते ❀ नाहिंन उदयसिंह सरदार ॥
कुँआँ विवाहन उदयसिंह गे ❀ तब मैं पैर दीन लटकाय ।

प्राणनेग तहँ हमका दीन्ह्यो ❀ आल्हा केर लहुरवा भाय ॥
बात ब्यगरिगै महराजा ते ❀ आल्हा ऊदन गये रिसाय ।
मरिगा ठाकुर सिरसावाला ❀ बिपदा गई मोहोबे आय ॥
खान पान अब कछु सूझै ना ❀ बूझै नहीं कछू दिनरात ।
को अब जूझै पृथीराज ते ❀ सूझै नहीं मनै यह बात ॥
पर्ब भुजरियन कै मूड़ेपर ❀ पृथ्वी गाँसि मोहोबा लीन ।
कैसे जैबे हम सागर पर ❀ पवनी खोटि बिधातै कीन ॥
प्यारी बेटी चन्द्रावलि घर ❀ ऊदन लाये बिदा कराय ।
सो नहिं जैहै जो सागर पर ❀ हमरी जियत मौत ह्वैजाय ॥
बेटी ठाढ़ी चन्द्रावलि तहँ ❀ नैनन आँस रही ढरकाय ।
जैसो योगी यहु ठाढ़ो है ❀ ऐसो मोर लहुरवा भाय ॥
हाय ! अकेले बिन ऊदन के ❀ गड़बड़ परा नगर में आय ।
ऊदन मलखे की समता का ❀ तीसर भयो कौन जगमाय ॥
मोहिं अभागिनि के कर्म्मनते ❀ दूनों भाई गये हिराय ।
कह्यो संस्कृत मा ऊदन ते ❀ लाखनिराना बचनसुनाय ॥
नाम बतावो तुम मल्हना ते ❀ काहे धरी निठुरता भाय ।
कह्यो संस्कृत मा ऊदन तब ❀ तुम सुनिलेउ कनौजीराय ॥
नाम बतावैं जो मल्हना ते ❀ हमरी जियत मृत्यु ह्वै जाय ।
इतना कहिकै लखराना ते ❀ मल्हनै बोले बचन सुनाय ॥
शोचनराखोकछु मन अन्तर ❀ रानी साँच देयँ बतलाय ।
पर्ब तुम्हारी हम करवैहैं ❀ अपनो योग दिहैं दिखलाय ॥
काह हकीकति है पिरथी कै ❀ गड़बड़ करै परब में आय ।
हैं अनगिनती योगी सँगमा ❀ झाबर डेरा दीन गड़ाय ॥
करी लबरई पिरथी राजा ❀ दिल्ली ताल देब करवाय ।

कीनइशाराफिरिलाखनितन ❀ आपन गुरू दीन बतलाय ॥
गुरू जानिकै लखराना को ❀ चन्द्रावलि ने कहा सुनाय ।
होय सनीनो अब सागर माँ ❀ जो गुरुबाबा करो सहाय ॥
नहीं सनीनो अब मोहबे माँ ❀ साँचो नहीं परै दिखलाय ।
लाखनि बोले चन्द्रावलि ते ❀ बहिनी साँचदेयँ बतलाय ॥
योग दिखावब हम सागर पर ❀ खेतम लड़ब बरोबरि आय ।
देखि सनीनो हम मोहबे का ❀ पाछे धरब अगाड़ी पायँ ॥
पंद्रादिन लौं रहि मोहबे मा ❀ तुम्हरी परब देब करवाय ।
नहिं मुख देखैं हम पिरथी का ❀ गड़बड़ तहाँ मचावैं आय ॥
अड़बड़ योगी हमरे सँगमा ❀ लड़बड़ गड़बड़ देयँ हटाय ।
बड़बड़ राजनकी गिनती ना ❀ सड़बड़ करैं हमारी आय ॥
काह हकीकति है पिरथी कै ❀ जो नहँ चैंय करैं मुख माय ।
मान न रैहैं तहँ काहू के ❀ योगी योग देयँ दिखलाय ॥
कालि्ह सबेरे तुम सागर मा ❀ पबनी करो आपनी जाय ।
दूत पठावो तुम झाबर का ❀ योगी फौज देयँ दिखलाय ॥
मारि गिरावैं हम भोगिन का ❀ माता साँच दीन बतलाय ।
भयो आसरा तब मल्हना के ❀ योगी चलिभे शीश नवाय ॥
सुनी बतकही यह माहिलजब ❀ टाहिल चुगुलन मा सरदार ।
चला उताइल सो सागर को ❀ राजा पिरथी के दरबार ॥
बड़ी खातिरी करि माहिल कै ❀ राजा पास लीन बैठाय ।
कही हकीकति तहँ योगिनकै ❀ माहिल बार बार मब गाय ॥
योगी आये अनगिनती हैं ❀ झाबर डेरा दिह्यनि डराय ।
शपथ खायकै ते मल्हना ते ❀ अबहीं गये पिथौराराय ॥
मारि गिरावब हम सागर मा ❀ गड़बड़ जौन मचाई आय ।

काह हकीकति पृथीराज कै ❀ आपन योग देब दिखलाय ॥
साँचे योगी सो अड़बड़ हैं ❀ हमहूँ देखि गयन सकुचाय ।
पहिले खेदो तुम योगिनका ❀ पाछे मोहबा लेउ लुटाय ॥
काह हकीकति है योगिनकै ❀ सरबरि करैं नृपति कै आय ।
चौंड़ा धांधू को पठवावो ❀ योगी कूच देयँ करवाय ॥
इतना सुनिकै पृथीराज ने ❀ चौंड़ा धांधू लीन बुलाय ।
भल समुझावा तिन दोउनका ❀ यहु महराज पिथौराराय ॥
दोऊ चढ़िकै तहँ हाथिन मा ❀ तहँते कूच दीन करवाय ।
जायकै पहुँचे फिरि झाबरमा ❀ जहँपर योगिन का समुदाय ॥
चौंड़ा बोला तहँ ऊदन ते ❀ योगी हाल देउ बतलाय ।
कहाँते आयो औ कहँ जैहौ ❀ काहे डेरा दीन गड़ाय ॥
ऊदन बोले तब चौंड़ा ते ❀ ठाकुर हाथी के असवार ।
हम तो आये बंगाले ते ❀ जावैं हरद्वार यहिबार ॥
पै हम रहिबे ह्याँ पंद्रादिन ❀ तुमते साँचदीन बतलाय ।
मल्हनारानी इक मोहबे मा ❀ ताकी परब देब करवाय ॥
है खलभल्ला औ हल्लाअति ❀ की चढ़ि अवा पिथौराराय ।
कीन प्रतिज्ञा हम मोहबे मा ❀ तुम्हरी परब देब करवाय ॥
साँची करिबे हम बानी का ❀ ताते टिकब यहाँ पर भाय ।
कहाँ के ठाकुर तुम दोऊ हौ ❀ हमते साफ देउ बतलाय ॥
फौज देखिकै बैरागिन कै ❀ दोऊ लागि मनै पछिताय ।
कौन हटाई बैरागिन का ❀ सम्मुख समरभूमि में जाय ॥
जौन बतावा महराजा ने ❀ योगिन स्वई दीन बतलाय ।
कैसे टरिहैं ये झाबर ते ❀ यह नहिं चित्त ठीकठहराय ॥
चौंड़ा धाँधू फिरि बोलत भे ❀ योगिन बार बार समुझाय ।

करैं बखेड़ा कहुँ योगी ना ❀ ताते कूच देउ करवाय ॥
कह्यो पिथौरा यह हमते है ❀ योगिन जाय देउ समुझाय ।
कूच करावैं उइ झावर ते ❀ नाहक रारि मचावैं आय ॥
लड़ना मरना रजपूतन का ❀ युग युग धर्म यहै है भाय ।
युद्ध न चहिये बैरागिन को ❀ ताते कूच देउ करवाय ॥
फौज तुम्हारी ह्याँ जितनी है ❀ सबको भोजन देयँ पठाय ।
खावो पीवो हरिको ध्यावो ❀ जावो हरद्वार को भाय ॥
इतना सुनिकै ऊदन तड़पे ❀ चौंड़ा चला तुरत भयखाय ।
आय कै पहुँचा त्यहि तम्बूमा ❀ जहँ पर बैठ पिथौराराय ॥
कही हकीकति सब योगिनकै ❀ चौंड़ा बार बार समुझाय ।
सुनी ढिठाई जब योगिनकै ❀ माहिल बोले शीश नवाय ॥
अब हम जावत हैं मोहबे को ❀ तुम्हरे काज पिथौराराय ।
इतनी कहिकै माहिल चलिभे ❀ पहुँचे फेरि मोहोबे आय ॥
रानी मल्हना ह्याँ महलनमा ❀ मनमा बार बार पछिताय ।
त्यही समइया त्यहि औसरमा ❀ माहिल भाय पहूँचा जाय ॥
मल्हना बोली तहँ माहिलते ❀ नीके गयो यहाँपर आय ।
हाल बतावो अब सागर का ❀ चाहत काह पिथौराराय ॥
सुनिकै बातैं ये बहिनी की ❀ बोला उरई का सरदार ।
बैठक मांगत है खजुहा की ❀ माँगै राज ग्वालियर क्यार ॥
उड़न बछेड़ा पाँचो माँगै ❀ औरो चहै नौलखाहार ।
डोला माँगै चन्द्रावलि का ❀ राजा दिल्ली का सरदार ॥
तुम्हरी दिशिते हम पिरथीते ❀ बोल्यन बहुतभाँति समुझाय ।
लाख रुपैया लग लैकै तुम ❀ ह्याँते कूचदेउ करवाय ॥
यह मनभाई नहिं पिरथी के ❀ चौंड़ा ताहर उठे रिसाय ।

जो कछु माँगत महराजा हैं ❀ सोई देउ आप मँगवाय॥
कुशलनमानो तुम मोहोबे कै ❀ तिलतिल भूमि लेउँ खुदवाय।
पारस पत्थर पिरथी माँगैं ❀ बहिनी साँच दीन बतलाय॥
ये सब चीजैं अब लीन्हे बिन ❀ जावैं नहीं पिथौराराय।
ताहर चौंड़ा की मरजी अस ❀ सबियां मोहबा लेयँ लुटाय॥
इतनो कहिकै माहिल चलिभे ❀ मल्हना रोय उठी अकुलाय।
त्यही समैया त्यहि अवसरमा ❀ ब्रह्मानन्द पहूँचे आय॥
मूड़ सूँघिकै रानी मल्हना ❀ अपने पास लीन बैठाय।
बहिनी ठाढ़ी चन्द्रावलि तहँ ❀ नैनन आँसू रही गिराय॥
रोयकै बोली फिरि मल्हनाते ❀ माता साँच देयँ बतलाय।
सुजी सिराउब हम सागर मा ❀ योगी गये भरोस कराय॥
साँची बाणी के योगी हैं ❀ निश्चय पर्ब द्यहैं करवाय।
मोहिं भरोसा है योगिन का ❀ जो कछु करैं सहारा भाय॥
मल्हना बोली चन्द्रावलि ते ❀ बिटिया साँच देउँ बतलाय।
सुजी सिरावो तुम कुँवनापर ❀ दीनौ धर्म द्वऊ रहिजाय॥
इतना सुनिकै बेटी बोली ❀ ऐसे कहौ बचन का माय।
समरथ भैया हैं ब्रह्मानँद ❀ हमरी पर्ब द्यहैं करवाय॥
इतना सुनिकै ब्रह्मा बोले ❀ साँची साँच देयँ बतलाय।
रहौ भरोसे तुम योगिन के ❀ जानौ नहीं हमारे भाय॥
पै हम जावैं जो सागर को ❀ आपन मूड़ कटावैं जाय।
चढ़ा पिथौरा है सँभरा भर ❀ बहिनी काह गई बौराय॥
जानि बूझिकै को आगीमा ❀ आपन हाथ जरावैं जाय।
बिना बेंदुला के चढ़वैया ❀ मुर्चा देवै कौन हटाय॥
आल्हा इन्दल लग होते जो ❀ तुम्हरी पर्ब देत करवाय।

मरिगा ठाकुर सिरसावाला ❀ सब बिधि शूर बनाफरराय ॥
इकले दादा मलखाने बिन ❀ यहु दुख परा जानपर आय ।
होत जो ठाकुर सिरसावालो ❀ तौ का चढ़त पिथौराराय ॥
शूर न देखा हम दुनिया माँ ❀ जैसो रहै बीर मलखान ।
हाथी पटका पिरथी द्वारे ❀ काँपे तहाँ सबै चौहान ॥
इतना सुनिकै रानी मल्हना ❀ तुरतै छाँड़ि दीन डिंडकार ।
रंजित बोला तब माता ते ❀ गरुई हाँक देत ललकार ॥
छाँड़ि भरोसा अब योगिनका ❀ हमरे साथ चलो तुम हाल ।
काह हकीकति है पिरथी कै ❀ जबलग रहै हाथ करवाल ॥
मारे मारे तलवारिन के ❀ नदिया बहै रक्त की धार ।
मूड़ न रैहै जब देही माँ ❀ तबहूं चली मोरि तलवार ॥
लड़ना मरना रजपूतन का ❀ युग युग यही धर्म व्यवहार ।
प्राण न रैहैं जब देही माँ ❀ तबहीं मिटी म्वार त्यवहार ॥
साँची साँची हम बोलत हैं ❀ माता शपथ तुम्हारी खाय ।
कीरतिसागर मदनताल पर ❀ बहिनी साथचलौ तुममाय ॥
जो नहिं जैहौ तुम सागर को ❀ रंजित मरी जहर को खाय ।
मर्द मर्दई ते चूका जो ❀ तौ फिरि जियतमृत्युह्वैजाय ॥
देही रैहै नहिं दुनिया माँ ❀ कीरति बनी रहै सब काल ।
मोहिं पियारी स्वइ कीरति है ❀ साँची शपथ खाउँ महिपाल ॥
सुनि सुनि बातैं ये बेटा की ❀ मल्हना ह्वैगै हाल बिहाल ।
बेटा अभई माहिल वाला ❀ बोला बचनसाँचत्यहिकाल ॥
हमहूं चलिबे तुम्हरे सँग मा ❀ साँचे बचन बतावैं भाय ।
आजु मोहोबा खाली लखिकै ❀ गांसा आय पिथौराराय ॥
आल्हा ऊदन हैं कनउज माँ ❀ ह्यां मरि गये बीर मलखान ।

अब हम लूटैं खुब मोहबे को ❀ सोची भली बीर चौहान ॥
पै नहिं जानत हैं अभई का ❀ जब लग रही हाथ तलवार ।
तबलग मारब हम क्षत्रिन का ❀ नदिया बही रक्त की धार ॥
करो तयारी अब सागर की ❀ फूफू साँच देयँ बतलाय ।
काह हकीकति है पिरथी कै ❀ गड़बड़ करै परब में आय ॥
रंजित अभई की बातैं सुनि ❀ मल्हना गई तुरत बौराय ।
बोलि न आवा महरानी ते ❀ मुँहकापानगयोकुम्हिलाय ॥
धीरज धरिकै अपने मनमाँ ❀ औफिरिसुमिरिशारदामाय ।
देव मनावै मनिया देवन ❀ मल्हना बार बार शिरनाय ॥
तुम्हीं गोसइयाँ दीनबन्धु हौ ❀ देवता मोहबे के भगवान ।
रंजित अभई दोउ बेटन की ❀ कीन्ह्योआपअवशिकल्यान ॥
हम जो बरजैं अब रंजित का ❀ करिहै पूत नहीं कछु कान ।
शपथ खायकै महराजा कै ❀ हमरीशपथकीनफिरिआन ॥
अब समुझाये ते मानी ना ❀ मनमाँ ठीक लीन ठहराय ।
कीन तयारी फिरि सागर कै ❀ गौरा पारबती को ध्याय ॥
माहिल बोले ह्याँ अभई ते ❀ बेटा काह गयो बौराय ।
तुम नहिं जावो सँग रंजित के ❀ मोहबा भले उजरि सबजाय ॥
रंजित ब्रह्मा दोउ मरिजावैं ❀ तुम्हरी जूझै पूत बलाय ।
इतना सुनिकै अभई बोले ❀ दाऊ साँच देयँ बतलाय ॥
कहानपलटबहमकौनिउबिधि ❀ चहु तन रहै चहौ नशिजाय ।
पाँय लागिकै फिरि माहिल के ❀ डङ्का तुरत दीन बजवाय ॥
बाजे डङ्का अहतङ्का के ❀ शङ्का छोंड़ि दीन सरदार ।
शूर अशङ्का भट बङ्का जे ❀ ते सब गही हाथ तलवार ॥
सजा रिसाला घोड़न वाला ❀ आला एक लाख अनुमान ।

सजि इकदन्ता दुइदन्ता गे ❁ हाथी छोटे मेरु समान ॥
अंगद पंगद मकुना भौंरा ❁ सजिगे श्वेतबरण गजराज ।
धरी अँबारी तिन हाथिन पर ❁ बहुतन हौदा रहे बिराज ॥
घण्टा बांधे गल हाथिन के ❁ भारी देत चलैं ठनकार ।
सजे सिपाही पैदल वाले ❁ लीन्हे हाथ ढाल तलवार ॥
बारह रानी परिमालिक की ❁ सोऊ भई बेगि तय्यार ।
जहर बुझाई छूरी लैकै ❁ नलकी पलकी भई सवार ॥
मल्हना बोली चन्द्रावलि ते ❁ बेटी करो बचन परमान ।
डोला तुम्हरो गहै पिथौरा ❁ तौ दै दियो आपनो प्रान ॥
पै तुम जायो नहिं दिल्ली को ❁ पेट म मारयो काढ़ि कटार ।
इतना कहिकै रानी मल्हना ❁ आपो होत भई असवार ॥
आगे पीछे फौजें कैकै ❁ बीच म डोला लीन कराय ।
मनियादेवनको सुमिरन करि ❁ रंजित कूच दीन करवाय ॥
छींक तड़ाका भै सम्मुख मा ❁ मल्हना रोय उठी ततकाल ।
तुम नहिं जावो अब सागरको ❁ बेटा करो बचन प्रतिपाल ॥
अशकुन पहिले ते ह्वैगा है ❁ कैसी करी तहाँ करतार ।
लेउँ बलैया मैं रंजित कै ❁ बेटा लौटि चलो यहिबार ॥
इतना सुनिकै रंजित बोले ❁ माता करो बचन विश्वाश ।
शकुनऔअशकुनकोमानैंना ❁ ना हमकरैं जीवकी आश ॥
कीरतिसागर मदनताल पर ❁ तुम्हरी पर्ब घहैं करवाय ।
जो मरि जैहैं हम सागर में ❁ कीरति रही जगत में छाय ॥
पाउँ पिछारी को धरिबे ना ❁ बहुतन धजीधजी उड़िजाय ।
स्याबसि स्याबसि अभई बोले ❁ मल्हना चुप्पसाधि रहिजाय ॥
चलिभालशकरफिरिआगे का ❁ फाटक उपर पहूँचा जाय ।

जहँना तम्बू पृथीराज का ❀ माहिल तहाँ पहूँचा धाय ॥
खबरि सुनाई सब पिरथी को ❀ माहिल बार बार समुझाय ।
हुकुम पायकै तहँ पिरथी का ❀ चौंड़ा कूच दीन करवाय ॥
खेत छूटिगा दिननायक सों ❀ झंडा गड़ा निशाको आय ।
तारागण सब चमकन लागे ❀ सन्तन धुनी दीन परचाय ॥
करों बन्दना पितु माता को ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ।
मातु भवानी पितु परमेश्वर ❀ बन्दन किहे स्वर्ग का जाय ॥
निश्चयजिनका पितु मातापर ❀ देवी देव सरिस अधिकाय ।
तिनका जगमा कछु दुर्लभ ना ❀ साँची कहतललितयहगाय ॥
करों बन्दना अब शंकर की ❀ ह्याँते करों तरँग को अन्त ।
राम रमा मिल दर्शन देवैं ❀ इच्छा यही भवानीकन्त ॥
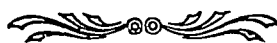
सवैया

दीनदयाल गुपाल कृपाल सुरासुरपाल सुनो महराजा ।
सोवत जागत बैठ जो होहु सुनो बिनती तुमहूँ रघुराजा ॥
गाजि रह्यो खल काम बली औ छली दल मोहके बाजतबाजा ।
राम औ कृष्ण भजै ललिते तबहूँ यह जीतत है कलिराजा ॥

सुमिरन

रच्छा जग की जो करते ना ❀ तौ कस होत नाम जगदीश ।
ईश्वर होते रघुनन्दन ना ❀ कैसे हनत समर दशशीश ॥
बड़े प्रतापी अंजनिवाले ❀ अबहूँ अमर जगत हनुमान ।
ऐसे अनुचर ज्यहि स्वामी के ❀ पूरण ब्रह्म ताहि अनुमान ॥
रीछ औ बाँदर को सँगमाँ लै ❀ जीता बली शत्रुको जाय ।
शत्रु प्रतापी के भाई को ❀ को नर लेय जगत अपनाय ॥

को फल खावत घर शबरी के ❀ कोधों तजत आपनी राज।
कोधों तारत तिय गौतम की ❀ प्यारी माननीय शिरताज॥
कोधों तोरत शिवके धनु को ❀ जो नहिं होत राम महराज।
कछु नहिं शंका मन हमरे में ❀ पूरण ब्रह्म राम रघुराज॥
माथ नवावों रघुनन्दन को ❀ हम पर कृपा करो भगवान।
चौंड़ा रंजित का मुर्चा मैं ❀ करिहौं सकल अगाड़ी गान॥

अथ कथाप्रसंग

अटा चौंड़िया फिरि फाटक पर ❀ गरुई हाँक दीन ललकार।
पाँव अगाड़ी का डास्यो ना ❀ ठाकुर मोहबे के सरदार॥
डोला देकै चन्द्रावलि को ❀ पाछे धरयो अगाड़ी पाँय।
हुकुम पिथौरा का याही है ❀ तुमते साँच दीन बतलाय॥
इतना सुनिकै अभई बोल्यो ❀ चौंड़ा काह गयो बौराय।
अस गति नाहीं पृथीराज कै ❀ डोला लेयँ आज मँगवाय॥
खाली मोहबा तुम जान्यो ना ❀ मान्यो साँच बचन बिश्वास।
शूर सराहैं त्यहि ठाकुर को ❀ जो अब जाय पालकी पास॥
इतना सुनिकै चौंड़ा तुरतै ❀ अपनी खैंचि लीन तलवार।
पाँव अगाड़ी का डास्यो ना ❀ ठाकुर उरई के सरदार॥
इतना सुनिकै रंजित ठाकुर ❀ फौजन हुकुम दीन फरमाय।
जान न पावैं दिल्लीवाले ❀ इनके देवो मूड़ गिराय॥
हुकुम पायकै यह रंजित का ❀ क्षत्रिन खैंचि लीन तलवार।
पैदल के सँग पैदल अभिरे ❀ औ असवार साथ असवार॥
सूँढ़ि लपेटा हाथी भिड़िगे ❀ मारन लागि शूर सरदार।
भाला बलछी तीर तमंचा ❀ कोताखानी चलै कटार॥
बिकट लड़ाई भै फाटक पर ❀ नदिया बही रक्त की धार।

ना मुहँ फेरैं दिल्लीवाले ❀ ना ई मुहबे के सरदार ॥
रंजित अभई की मारुन मा ❀ सब दल होनलाग खरिहान।
रही न आशा क्यहु लड़िबेकी ❀ आरी भये समर में ज्वान ॥

सवैया

मारत औ ललकारत संगर लंगर भे क्यहु बुद्धि चलैना।
शूर शिरोमणि रंजित ज्वान सो मान किये रण पैर टरैना ॥
होत जहाँ घमसान महा तहँ बीर कोऊ अभिमान करैना।
माहिल पूत सुपूत जहाँ सो तहाँ ललिते कोउ देखि परैना ॥

बड़ा लड़ैया माहिलवाला ❀ आला उरई का सरदार।
हनि हनि मारै रजपूतन का ❀ भारी हाँक देय ललकार ॥
चौंड़ा बकसी पृथीराज का ❀ सोऊ खूब करै तलवार।
चौंड़ा सोहत है हाथी पर ❀ अभई घोड़े पर असवार ॥
सेल चौंड़िया हनिकै मारा ❀ अभई लीन्ह्यो वार बचाय।
एँड़ लगावा फिरि घोड़े के ❀ हाथी उपर पहूँचा जाय ॥
ढालकि औझड़ अभई मारा ❀ चौंड़ा गयो मूर्च्छा खाय।
भागि सिपाही दिल्लीवाले ❀ रंजित दीन्ह्यो फौज बढ़ाय ॥
कीरतिसागर मदनताल पर ❀ पहुँचा फेरि चँदेला आय।
गा हरिकारा ह्याँ फौजन ते ❀ राजै खबरि सुनाई जाय ॥
हाल पायकै पृथीराज ने ❀ सूरज पूत दीन पठवाय।
सूरज आयो जब सागर पै ❀ बोल्यो दोऊ भुजा उठाय ॥
डोला दैकै चन्द्रावलि का ❀ रंजित कूच देउ करवाय।
नहीं तो बचिहौ ना संगर मा ❀ जो बिधि आपु बचावैं आय ॥
इतना सुनिकै रंजित बोले ❀ सूरज काह गये बौराय।
मर्द सराहौं त्यहि ठाकुर का ❀ डोला पासजाय नगच्याय ॥

जितनी बिल्ली दिल्लीवाली ❀ तिनको देवों समर सुवाय।
तौ तो लरिका परिमालिक का ❀ नहिं ई मुच्छ डरों मुड़वाय॥
इतना सुनिकै सूरज जरिगे ❀ अपने कहा सिपाहिन टेर।
जान न पावैं मोहबेवाले ❀ मारो एक एक को घेर॥
सुनिकै बातैं ये सूरज की ❀ क्षत्रिन खैंचि लीन तलवार।
कीरतिसागर मदनताल पर ❀ लाग्यो होन भड़ाभड़ मार॥
पैग पैग पर पैदल गिरिगे ❀ दुइ दुइ पैग गिरे असवार।
मारे मारे तलवारिन के ❀ नदिया बही रक्त की धार॥
को गति बरणै तहँ अभई कै ❀ मारै ढूँढ़ि ढूँढ़ि सरदार।
रंजित लड़िकापरिमालिकका ❀ दूनों हाथ करै तलवार॥
सूरज ठाकुर दिल्लीवाला ❀ आला समरधनी चौहान।
गनि गनि मारै रजपूतन का ❀ कीरतिसागर के मैदान॥
रंजित सूरज द्वउ ठकुरन का ❀ मुर्चा परा बरोबरि आय।
दोऊ सोहैं भल घोड़न पै ❀ दोऊ रूपशील अधिकाय॥
सूरज मारैं जब रंजित का ❀ दाहिन बाँउ खेलि तब जाय।
रंजित मारैं जब सूरज का ❀ सोऊ लेवै वार बचाय॥
उसरिन उसरिन दोऊ खेलैं ❀ पानी भरै यथा पनिहार।
कोऊ काहू ते कमती ना ❀ दोऊ लड़ैं तहाँ सरदार॥

सवैया

सिंह समान सो रंजित बीर औ सूरजहू बल घाटि कछू ना।
मार अपार भई ललिते पै उदारन के मन शङ्क कछू ना॥
शक्ति औ शूल चलैं तलवार सो मार कही कहिजात कछू ना।
रक्त कि धार अपार बही पर हार औ जीत लखात कछू ना॥

सब्जा घोड़े पर रंजित हैं ❀ सूरज सुरखा पर असवार।

दोऊ मारैं तलवारिन सों ❀ दोऊ लेयँ ढाल पर वार ॥
कोऊ काहू ते कमती ना ❀ दोउ रण परा बरोबरि आय ।
वार चलाई रंजित ठाकुर ❀ सूरज लैगा चोट बचाय ॥
सूरज मारा तलवारी का ❀ रंजित लीन ढाल पर वार ।
रंजित मारा तलवारी का ❀ चेहरा काटि निकरिगै पार ॥
सूरज जूझे जब मुर्चा में ❀ पहुँचा टंक तुर्तही आय ।
टंक सामने अभई आये ❀ खेलन लागि जूझके दायँ ॥
यहु रणनाहर माहिलवाला ❀ गरुई हाँक देय ललकार ।
टंक शंक तजि त्यहि औसर मा ❀ दूनों हाथ करै तलवार ॥
साँग चलाई नृपति टंक ने ❀ अभई लीन्ही वार बचाय ।
भाला मारा जब अभई ने ❀ तोंदी परा घाव सो जाय ॥
टंक औ सूरज दोऊ मरिगे ❀ हाहाकार फौज गा छाय ।
गा हरिकारा फिरि फौजन ते ❀ राजै खबरि जनाई जाय ॥
हाल पायकै पृथीराज ने ❀ ताहर बेटा लीन बुलाय ।
मर्दनि सर्दनि को बुलवावा ❀ तिनते हाल कहा समुझाय ॥
टंक और सूरज दोऊ जूझे ❀ कीरतिसागर के मैदान ।
लाश लयआवो द्वउ बीरन की ❀ भावी जानि सदा बलवान ॥
हुकुम पायकै महराजा को ❀ डंका तुरत दीन बजवाय ।
तीन लाखलों लश्कर लैकै ❀ तुरतै कूच दीन करवाय ॥
कीरतिसागर मदनताल पर ❀ ताहर अटा तुरतही धाय ।
लाश देखिकै द्वउ बीरन कै ❀ सो पलकी म दीन रखवाय ॥
निकट जायकै दल रंजित के ❀ गरुई हाँक कहा गुहराय ।
कौन वहादुर है मोहवे का ❀ सूरज टंकै दीन गिराय ॥
डोला दैकै चन्द्रावलि का ❀ अबहीं कूच देव करवाय ।

नहीं सुहागिल कोउ बचिहै ना ❀ मोहबा रंडन सों भरिजाय ॥
इतना सुनिकै अभई बोले ❀ रण माँ दोऊ भुजा उठाय ।
हम नहिं देखैं गति काहूकै ❀ डोला पासजाय नगच्याय ॥
पर्व आपनी पूरी करिकै ❀ अबहीं कूच देब करवाय ।
रारि मचाये कछु पैहौ ना ❀ साँची बात दीन बतलाय ॥
अबै मोहोबा अस सूना ना ❀ जैसा समझि लीन सरदार ।
मूड़ न रैहैं जब देही माँ ❀ तबहूँ रुण्ड करैं तलवार ॥
इतना सुनिकै ताहर ठाकुर ❀ लाशैं फौज दीन पठवाय ।
हुकुम लगावा रजपूतन का ❀ इनके देवो मूड़ गिराय ॥
हुकुम पायकै यह ताहर का ❀ लागे लड़न शूर सरदार ।
पैदल पैदल कै बरणी भै ❀ औ असवार साथ असवार ॥
भाला बलछी छूटन लागे ❀ पागे मोद शूर त्यहि बार ।
अपन परावा कछु सूझै ना ❀ आमाझोर चलै तलवार ॥
कटि कटि कल्ला गिरैं खेत माँ ❀ उठि उठि रुण्ड मचावैं मार ।
को गति बरणै त्यहि समया कै ❀ नदिया बही रक्त की धार ॥
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार ।
यहु रणनाहर मल्हनावाला ❀ आला मोहबे का सरदार ॥
जैसे भेड़िन भेड़हा पैठै ❀ जैसे सिंह बिडारै गाय ।
तैसे मारै रजपूतन का ❀ छप्पन दीन्हे मूड़ गिराय ॥
बड़ा प्रतापी रण नाहर यहु ❀ यहि के बाँट परी तलवार ।
यहि के मारे हाथी गिरिगे ❀ मरिगे सूरज से सरदार ॥
रंजित नामी यहु ठाकुर जो ❀ रणमाँ भली मचाई रार ।
पटा बनेठी बाना फेंकै ❀ टेकै द्वऊ हाथ तलवार ॥
लोह कि टोपी शिर में धारे ❀ सब्जा घोड़े पर असवार ।

झीलम बखतर दोऊ पहिरे ❀ रंजित मोहबे का सरदार ।
ताहर बेटा पृथीराज का ❀ सोऊ आय गयो त्यहिबार ।
गरुई हाँकन ते ललकारा ❀ ठाकुर मोहबे के सरदार ॥
कौन ढिठाई तुम अब लग है ❀ अब हम साँच देत बतलाय ।
डोला दैकै चन्द्रावलि का ❀ अबहीं कूच देउ करवाय ॥
नहीं तो आशा तजु जीवन की ❀ यमपुर देत आज दिखलाय ।
दीखि लड़ाई नहिं ताहर की ❀ नाहर खबरदार ह्वैजाय ॥
इतना कहिकै ताहर ठाकुर ❀ रंजित पास पहूँचा जाय ।
रंजित मारी तलवारी को ❀ ताहर लैगा चोट बचाय ॥
ताहर मारा तलवारी का ❀ रंजित लीन ढाल पर वार ।
खैंचि सिरोही रंजित मारी ❀ ताहर रोंकि लीन त्यहिबार ॥
जैसे रसरी गगरी लैकै ❀ पानी खैंचि रही पनिहार ।
तैसे रंजित ताहर दोऊ ❀ रणमाँ भली मचाई रार ॥

सवैया

मार अपार भई त्यहि बार सो यार सँभार रह्यो कछु नाहीं ।
जूझि गये बहु पैदल स्वार तजे हथियार कबों रण नाहीं ॥
जात भये सुरलोक तबै औ जबै तजि प्राण दिये रण माहीं ।
कीरति लोक रहे ललिते परलोक बनै क्षण एकहि माहीं ॥
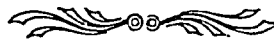
कीरतिसागर की दूसरी लड़ाई

दोऊ प्यारे रघुनन्दन के ❀ वन्दन करौं हृदय कर्त्तार ।
दोऊ मारैं तलवारी सों ❀ दोऊ लेयँ ढाल पर वार ॥
रंजित चूके तलवारी ते ❀ कटिकै मूड़ गिरा त्यहिबार ।

पूत सुपूता माहिलवाला ❀ आला उरई का सरदार॥
सम्मुख ताहर के आवा सो ❀ सुर्खा घोड़े पर असवार।
औ ललकारा फिरि ताहर को ❀ सँभरो दिल्ली के सरदार॥
इतना सुनिकै ताहर बोले ❀ अभई बार बार धिक्कार।
लिल्ली घोड़ी के चढ़वैया ❀ माहिल बाप तुम्हारे यार॥
तिनके लरिका तुम तलवरिहा ❀ कबते भयो कहाँ सरदार।
इतना सुनिकै अभई ठाकुर ❀ अपनी खैंचि लीन तलवार॥
ताहर अभई दोउ बीरन का ❀ परिगा समर बरोबरि आय।
रञ्जित जूझे हैं संगर में ❀ धावन खबरि सुनाई जाय॥
खबरि पायकै मल्हना रानी ❀ तुरतै गिरी तहाँ कुम्हिलाय।
बारह रानी परिमालिक की ❀ गिरि गिरि परैं पछाराखाय॥
रञ्जित रञ्जित कै गुहरावैं ❀ छातीधड़किधड़किरहिजाय।
मारे डरके पिंडुरी काँपैं ❀ थर थर देह रही थर्राय॥
को गति बरणै चन्द्रावलि कै ❀ भलिकैबिपति कहीना जाय।
सावधान भै मल्हना रानी ❀ तुरतै दीन्ह्यो दूत पठाय॥
बोलन लागी चन्द्रावलि ते ❀ मनमा बार बार पछिताय।
खप्पर भरिगा धिक् बेटी त्वहिं ❀ सागर पूत गँवावा आय॥
इतना कहिकै मल्हना रानी ❀ तुरतै गिरी पछारा खाय।
गा हरिकारा ह्वाँ मोहबे मा ❀ ब्रह्मै खबरि जनाई जाय॥
रञ्जित जूझे हैं सागर पर ❀ तिनकी लाश लेहु उठवाय।
इतना सुनिकै ब्रह्मा ठाकुर ❀ डंका तुरत दीन बजवाय॥
सजि हरनागर तहँ ठाढ़ो थो ❀ तापर कूदि भये असवार।
पाँचलाख लों फौजैं लैकै ❀ सागर चलन हेतु तय्यार॥
ढाढ़ी करखा बोलन लागे ❀ बिप्रन कीन बेद उच्चार।

रणकी मौहरि बाजन लागी ❀ रणका होन लाग ब्यवहार ॥
झीलमबखतरपहिरिसिपाहिन ❀ हाथम लई ढाल तलवार ।
आगे हलका भा हाथिन का ❀ पाछे चले घोड़ असवार ॥
अभई ठाकुर ह्याँ ताहर का ❀ होवै खूब भड़ाभड़ मार ।
दूनों मारैं तलवारी सों ❀ दूनों लेयँ ढाल पर वार ॥
मारे मारे तलवारिन के ❀ नदिया बही रक्त की धार ।
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार ॥
को गति बरणै त्यहि समया कै ❀ आमाझोर चलै तलवार ।
वार चूकिगा माहिलवाला ❀ जूझा उरई का सरदार ॥
रञ्जित अभई द्वउ ठकुरन के ❀ उठि उठि रुण्ड करैं तलवार ।
सुरपुर पहुँचे दोऊ ठाकुर ❀ ब्रह्मा आय गयो त्यहिबार ॥
लाश पाय कै द्वउ बीरन कै ❀ मोहबे तुरत दीन पठवाय ।
सुमिरिगजाननशिवशङ्करको ❀ मारन लाग फौज माँ जाय ॥
ब्रह्मा मारै तलवारी सों ❀ घोड़ा टापन देय गिराय ।
ब्रह्मा ठाकुर के मुर्चा मा ❀ सद्दनि गयो तड़ाका आय ॥
हँसिकै बोला सो ब्रह्मा ते ❀ ठाकुर साँच देयँ बतलाय ।
डोला दैकै चन्द्रावलि का ❀ पवनी करो आपनी जाय ॥
सुनिकै बातैं ये सद्दनि की ❀ बोला मोहबे का सरदार ।
नाम न लीन्हे अब डोला का ❀ नहिं मुखधाँसिदेउँ तलवार ॥
सुनिकै बातैं ये ब्रह्मा की ❀ सद्दनि मारा गुर्ज उठाय ।
वार रोंकि कै ब्रह्मा ठाकुर ❀ तुरतै दीन्ह्यो मूड़ गिराय ॥
मद्दनि आवा तब सम्मुख माँ ❀ सोऊ वार चलावा आय ।
खाली वार परी मद्दनि कै ❀ ब्रह्मा दीन्ह्यो मूड़ गिराय ॥
मद्दनि सद्दनि दोऊ जूझे ❀ माहिल अटे तड़ाका धाय ।

हाल बतावा पृथीराज का ❀ माहिल बार बार समुझाय ॥
इकले ब्रह्मा हैं मोहवे मा ❀ तिनका आप लेउ बँधवाय ।
मद्द नि सद्द नि दोऊ जूझे ❀ अब तुम चढ़ो पिथौराराय ॥
सुनिकै बातैं ये माहिल की ❀ हाथी तुरत लीन सजवाय ।
सुमिरि भवानीसुत गणेश को ❀ पहुँचा समरभूमि मा आय ॥
चौंड़ा बकसी का बुलवावा ❀ औ यह हुकुम दीन फरमाय ।
जितने डोला हैं सागर में ❀ सबका अबै लेउ लुटवाय ॥
पाछे मल्हना चन्द्रावलि का ❀ दिल्ली शहर देउ पठवाय ।
हुकुम पायकै पृथीराज का ❀ तहँ पर अटा चौंड़िया धाय ॥
लाखनि बोले ह्याँ ऊदन ते ❀ नाहर सुनो बनाफरराय ।
कीरतिसागर मदनताल पर ❀ चलिये बेगि लहुरवा भाय ॥
सुनिकै बातैं लखराना की ❀ डङ्का तुरत दीन बजवाय ।
सजे सिपाही कनउजवाले ❀ मनमा फूलमती को ध्याय ॥
सुमिरि भवानी महरानी को ❀ दानी तीनि लोक की माय ।
फूलमती पद बन्दन कैकै ❀ हाथी चढ़ा कनौजीराय ॥
चढ़ा बेंदुला का चढ़वैया ❀ मैया शारद चरण मनाय ।
ध्याय भवानीसुत गणेश को ❀ देबा चढ़ा मनोहर जाय ॥
मीराताल्हन बनरस वाले ❀ सोऊ बेगि भये असवार ।
योगिहा बाना मर्दाना सब ❀ ठाकुर भये समर तय्यार ॥
धुरपद सरंगीत तिल्लाना ❀ गावन लागे मेघ मलार ।
घोर घटा हैं कहुँ सावन के ❀ आवन प्रीतम केरि बहार ॥
शोचैं बिरहिनी घर आँगन में ❀ जब कहुँ परै पर्व्व त्यवहार ।
प्रीतम होते जो सावन में ❀ तौ दुख दावन जात हमार ॥
को गति बर्णै त्यहि समया कै ❀ ऊदन गावैं मेघ मलार ।

पावन बर्षा है सावन कै ❀ जङ्गल देखि परैं हरियार ॥
फसल आँबकी नर बागन में ❀ जंगल देखि परैं गुलजार ।
कारी जामुन काले मेघा ❀ नीचे ऊपर करैं बहार ॥
योगी पहुँचे मदनताल पर ❀ यारो सुनो कथा यहिवार ।
चौंड़ा ठाढ़ो तट मल्हना के ❀ बकशी जौनु पिथौरा क्यार ॥
कहन सँदेशा सो जब लाग्यो ❀ आयो देशराज के लाल ।
धरिकै डाट्यो तहँ चौंड़ा का ❀ झगरा काह करैं नरपाल ॥
कीन्हि प्रतिज्ञा हम रानी ते ❀ तुम्हरी पर्ब्ब घाट करवाय ।
काह हकीकति है पिरथी कै ❀ लूटैं मदनताल पर आय ॥
इतना सुनिकै ताहर जरिगे ❀ अपनी खैंचिलीन तलवार ।
तब लखराना कनउजवाला ❀ सम्मुख भयो तुरत सरदार ॥
ताहर लाखनि का मुर्चा भा ❀ चौंड़ा मैनपुरी चौहान ।
को गति बरणै बघऊदन कै ❀ लागो करन खूब घमसान ॥
हौदा हौदा बेंदुल नाचै ❀ ऊदन करैं खूब तलवार ।
बावन हौदा खाली ह्वैगे ❀ जूझे हाथिन के असवार ॥
चोट लागिगै कछु धाँधू के ❀ सोऊ गिरे मूर्च्छा खाय ।
सँभरिकै बैठे फिरि हौदा पर ❀ मनमाशोचिशोचिरहिजाय॥
बड़े लड़ैया सब योगी हैं ❀ मुर्चा पूरे दीन जमाय ।
अपने अपने सब मुर्चन मा ❀ ठकुरन दीन्ही शारि चढ़ाय ॥
लाला तमोली धनुवाँ तेली ❀ सय्यद बनरस का सरदार ।
लाखनि ऊदन देबा ठाकुर ❀ रणमा खूब करैं तलवार ॥
को गति बरणै तहँ ताहर कै ❀ नाहर दिल्ली का सरदार ।
चौंड़ा धाँधू कछु कमती ना ❀ येऊ करैं भड़ाभड़ मार ॥
चलैं सिरोही मल सागर में ❀ ऊना चलैं विलाइति क्यार ।

खट खट खट खट तेगा बोलै ❀ बोलै छपक छपक तलवार ॥
झल्झल् झल्झल् छूरीचमकैं ❀ दमकैं रणमा खूब कटार ।
धम् धम् धम् धम् बजैं नगारा ❀ मारा मारा की ललकार ॥
सन् सन् सन् सन् गोली छूटैं ❀ तीरन मन्न मन्न गा छाय ।
फर फर फर फर घोड़ा रपटैं ❀ लपटैं देह देह में धाय ॥
को गति वरणै रजपूतनकै ❀ उठि उठि रुण्ड करैं तलवार ।
मूड़न केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार ॥
चहला ह्वैगा चार कोसलों ❀ नदिया बही रक्तकी धार ।
लड़ैं पिथौरा तहँ सँभरा भर ❀ राजा दिल्ली का सरदार ॥
शब्द पायकै तीर चलावै ❀ कलयुग यही एकही ज्वान ।
अबयहि समयायहि औसरमा ❀ ताहर लाखनि का मैदान ॥
देबा धाँधूके मुर्चा मा ❀ जूझे बहुत सिपाही ज्वान ।
पिरथी बोले फिरि चौंड़ा ते ❀ हमरे बचन करो परमान ॥
रानी मल्हना चन्द्रावलि का ❀ डोला तुरत लेउ उठवाय ।
इतना सुनिकै चौंड़ा बकसी ❀ डोलन पास पहूँचा जाय ॥
खबरि सुनाई सब मल्हना का ❀ जो जो कहा पिथौराराय ।
सुनि संदेशा पृथीराज का ❀ मल्हना बोली वचन सुनाय ॥
जबै बनाफर उदयसिंह थे ❀ तब नहिं चढ़े पिथौराराय ।
बाँधिकैमुशकैसबलड़िकनकी ❀ मड़येपाँय लिह्यनि पुजवाय ॥
हथी पलाय्यनि जब द्वारे पर ❀ तब कहँ गये पिथौराराय ।
ब्याहे ब्रह्मा गे दिल्ली मा ❀ समरथ हते बनाफरराय ॥
ब्रह्मा रञ्जित द्वउ लरिकन ते ❀ कीन्हेनि रारि आय महराज ।
रारि मचैहैं जो नारिन ते ❀ तौ सब ह्वैहैं काज अकाज ॥
इतना सुनिकै चन्द्रावलि कै ❀ पलकी तुरत लीन उठवाय ।

चलिभा चौंड़ा लै पलकी को ❀ पहुँचा पञ्च पेड़ तर जाय ॥
रोवै मल्हना त्यहि समया मा ❀ गिरि गिरि परै पछारा खाय ।
ऊदन ऊदन कै गुहरावै ❀ कहँ तुम गये बनाफरराय ॥
लाउ शारदा यहि समया मा ❀ आल्हा केर लहुरवा भाय ।
बिना इकेले बघऊदन के ❀ डोला कौन छुड़ाई जाय ॥
सदा भवानी ज्यहि दाहिन हैं ❀ ज्यहिघर सिद्धि करैं गन्नेश ।
पारस पत्थर ज्यहिके घर मा ❀ पूरित बिभो सदा धन्नेश ॥
भई सहायी शारद मायी ❀ ऊदन आय गये त्यहिकाल ।
हाथ जोरिकै योगी बोले ❀ लाला देशराज के लाल ॥
भिक्षा पावैं जो मैया हम ❀ तौ अब हरद्वार को जायँ ।
इतना सुनिकै मल्हना रोई ❀ बोली आरत बैन सुनाय ॥
रही न इजति अब मोहबे की ❀ पलकी लीन चौंड़िया आय ।
जायकै पहुँचा पँच बिरवातर ❀ हा दैयागति कही न जाय ॥
बिना वेंदुला के चढ़वैया ❀ नैया कौन लगैहै पार ।
चीरिकै धरती ऊदन आवो ❀ ईजति राखि लेउ यहि बार ॥
इतना सुनिकै ऊदन योगी ❀ घोड़ा तुरत दीन रपटाय ।
जायकै पहुँचा पँच बिरवातर ❀ यहु रणबाघु लहुरवा भाय ॥
चौंड़ा दीख्यो जब ऊदन का ❀ सम्मुख हाथी दीन बढ़ाय ।
औ ललकारा फिरि योगी का ❀ काहे प्राण गवाँवो आय ॥
इतना सुनिकै ऊदन योगी ❀ गरुई हाँक दीन ललकार ।
डोला धरिदे चन्द्रावलि का ❀ चौंड़ा मानु कही यहिबार ॥
धोखे योगी के भूले ना ❀ अबहीं योग देउँ दिखलाय ।
एँड़ लगाई फिरि बेंदुल के ❀ हाथी उपर पहूँचा जाय ॥
ढाल कि औभड़ ऊदन मारी ❀ चौंड़ा गयो मूर्च्छा खाय ।

लैकै डोला चन्द्रावलि का ❀ मल्हना पास दीन रखवाय ॥
देबा ठाकुर ते फिरि बोले ❀ अब तुम रहौ यहाँ पर आय ।
अब हम जावत त्यहि दलमा हैं ❀ ज्यहिमा लड़ै चँदेलाराय ॥
जितने योगी हैं सागर में ❀ सबियाँ बेगि होयँ तय्यार ।
लाखनि आये हैं मुर्चा ते ❀ तिनके साथ चलैं सरदार ॥
इतना सुनिकै सबियाँ योगी ❀ तुरतै होन लागि तय्यार ।
हिरसिंह बिरसिंह बिरियावाले ❀ चन्दन दतिया के सरदार ॥
चिंता राजा रुसनीवाला ❀ औ पतउँज के मदनगुपाल ।
पूरनराजा पूरा वाला ❀ जगमनि जिन्सीकानरपाल ॥
बारह कुँवर बनौधा वाले ❀ चारो गाँजर के सरदार ।
चिन्ता दूसर गोरखपुर के ❀ रूपनि मधुकरसिंह उदार ॥
ये सब योगी सजि सागर में ❀ रणका चलन हेतु तय्यार ।
मीराताल्हन बनरसवाले ❀ सिरगा घोड़े पर असवार ॥
सुमिरि भवानी फूलमती को ❀ हाथी चढ़ा कनौजीराय ।
सुमिरि शारदा मैहरवाली ❀ आगे चला बनाफरराय ॥
उतसों सेना पृथीराज की ❀ सोऊ गई बरोबरि आय ।
चली सिरोही फिरि सागर पर ❀ अद्भुत समर कहा ना जाय ॥
ना मुँह फेरैं कनउजवाले ❀ ना ई दिल्ली के चौहान ।
कीरतिसागर मदनताल पर ❀ क्षत्रिन कीन खूब मैदान ॥
कटि कटि कल्ला गिरैं बछेड़ा ❀ चेहरा गिरैं सिपाहिन केर ।
बिना सूँढ़ि के हाथी घूमैं ❀ मारैं एक एक को हेर ॥
आदि भयङ्कर का चढ़वैया ❀ यहु महराज पिथौराराय ।
भूरी हथिनी पर लखराना ❀ सम्मुख गयो तड़ाका आय ॥
ब्रह्मा ताहर का मुर्चा है ❀ दोऊ खूब करैं तलवार ।

चौंड़ा ऊदन का रण सोहै ❀ धाँधू बनरस का सरदार ॥
सवापहर लों चली सिरोही ❀ नदिया बही रक्त की धार ।
ढालै कच्छा छूरी मच्छा ❀ बारन मानो नदी सिवार ॥
नचैं योगिनी खप्पर लीन्हे ❀ ठोकैं ताल भूत बैताल ।
लूटि मचाई भल गृद्धन है ❀ फौजैं कुत्तन की बिकराल ॥
भल बनिआई तहँ चील्हन की ❀ कागन लागी कारि बजार ।
लैलै सौदा चले शृगालौ ❀ आंतनमाल कण्ठ में धार ॥
लाखनि पिरथी के मुर्चा मा ❀ लागी चलन खूब तलवार ।
हौदन हौदन के ऊपर मा ❀ घूमै बेंदुल का असवार ॥
जूझक कंकण सवालाख का ❀ सो हाथे मा करै बहार ।
त्यहिकादीख्योजबपिरथीपति ❀ राजा दिल्ली के सरदार ॥
तब पहिचान्यो बघऊदन का ❀ निश्चय ठीक लीन ठहराय ।
लाखनिराना है सम्मुख मा ❀ ज्यहि मम हाथी दीन हटाय ॥
यहै शोचिकै पृथीराज ने ❀ दीन्ह्यो मारु बन्द करवाय ।
बढ़िगो डोला महरानिन के ❀ सागर उपर पहूँचे जाय ॥
दक्षिण दिशि मा परा पिथौरा ❀ उत्तर उदयसिंह सरदार ।
लाखनि बोले ह्याँ मल्हना ते ❀ रानी करो अपन व्यवहार ॥
इतना सुनिकै तहँ चन्द्रावलि ❀ सीढ़िन उपर बैठिगै जाय ।
पात मँगाये तहँ पुरइन के ❀ सुन्दरि दोनी लीन बनाय ॥
छाँड़ि दोनइया दी सागर में ❀ माहिल दीख तमाशा आय ।
लिल्ली घोड़ी का चढ़वैया ❀ पिरथी पास पहूँचा जाय ॥
खबरि बताई सब सागर की ❀ माहिल बार बार समुझाय ।
हाल पायकै पृथीराज ने ❀ चौंड़ा बकशी दीन पठाय ॥
छूँड़ी दुनैया जब चन्द्रावलि ❀ चौंड़ा हाथी दीन बढ़ाय ।

रोयके बोली तब चन्द्रावलि ❀ पबनीकिहिसिखोंटियहुआय॥
बिना बेंदुला के चढ़वैया ❀ को अब दुनिया लेय बचाय।
जो कहुँ दुनिया चौंड़ा लैगा ❀ हमरी पर्ब खोंटि ह्वै जाय॥
सुनिकै बातैं चन्द्रावलि की ❀ बोला तुरत कनौजीराय।
लेउ दोनइया उदयसिंह तुम ❀ मानो कही बनाफरराय॥
इतना सुनिकै उदयसिंह ने ❀ अपनो दीन्ह्यो घोड़ बढ़ाय।
तबै चौंड़िया ने ललकारा ❀ योगी खबरदार ह्वै जाय॥
पैहौ दोनी ना सागर में ❀ आपन प्राण गवाँये आय।
इतना कहिकै चौंड़ा बकशी ❀ भाला मार्‌यो तुरत चलाय॥
वार बचाई तहँ भाला की ❀ तुरतै दोनी लीन उठाय।
लैकै दोनी दी बहिनी को ❀ बहिनी बार बार बलिजाय॥
सूजी खोसैं अब क्यहि के हम ❀ नहिं घर आज लहुरवाभाय।
इतना सुनिकै मल्हना बोली ❀ चन्द्रावलि को बचन बुझाय॥
खोंसो सूजी तुम योगिन के ❀ जिन अब पबनी दीन कराय।
इतना सुनिकै चन्द्रावलि फिरि ❀ पहुँची उदयसिंह ढिग जाय॥
कीन इशारा तब लाखनि का ❀ यहु रणबाघु बनाफरराय।
लाखनि बोले तब ऊदन ते ❀ हमरो मूड़ कटायो आय॥
माल खजाना कछु लाये ना ❀ देवैं कौन नेगु ह्याँ आय।
तहिले पहुँची चन्द्रावलि तहँ ❀ सूजी धरी कान पर जाय॥
बाइस हाथी तीनि पालकी ❀ दीन्ह्यो नेगु कनौजीराय।
सूजी खोंसी जब ऊदन के ❀ जूझको कंकण दीन गहाय॥
देखिकै कंकण उदयसिंह का ❀ निश्चय मनै लीन ठहराय।
साँचो योगी यहु ऊदन है ❀ मातै कहा बचन समुझाय॥
सुनिकै बातैं चन्द्रावलि की ❀ ऊदन नाम दीन बतलाय।

बड़ी खुशाली भै सागर में ❀ सब कोउ मिलीं तहाँ पर आय॥

सवैया

मीन मिलै जलको बिछुरे जिमि पङ्कज भानु यथा सुखदाई।
त्योंहि मिली परिमाल कि नारि सो डारि तहाँ बिपदा समुदाई॥
नैनन मोचत बारि निहारि सो नारिन की तहँ लागि अथाई।
कौन बखान करै ललिते सुख सम्पति आय तहाँ सब छाई॥

मिला भेंट करि सब ऊदन ते ❀ सागर सूजी रहीं सिराय।
बीर भुगंतै औ धाँधू को ❀ पठयो फेरि पिथौराराय॥
लै दल वादल दोऊ आये ❀ दोनी लेन हेतु ततकाल।
लाखनि बोले तब ऊदन ते ❀ सुनिये देशराज के लाल॥
लैगे दोनी जो दिल्ली के ❀ हमरो मान भंग है जाय।
बट्टा लागी रजपूती मा ❀ औ सब क्षत्री धर्म नशाय॥
बातैं सुनिकै लखराना की ❀ ऊदन अटे तड़ाका धाय।
धाँधू बोलें तब ऊदन ते ❀ योगी साँच देयँ बतलाय॥
निकट दुनैया के जायो ना ❀ नहिं शिर देवैं अबै गिराय।
बात न मानी कछु धाँधू की ❀ ऊदन दोनी लीन उठाय॥
देखि तमाशा यहु ऊदन का ❀ धाँधू खैंचि लीन तलवार।
कीरतिसागर की सिढ़ियन मा ❀ लागी होन भड़ाभड़ मार॥
झुके सिपाही दिल्लीवाले ❀ दोऊ हाथ करैं तलवार।
को गति बरणै तहँ ऊदन कै ❀ ठाकुर बेंदुल का असवार॥
फिरि फिरि मारैं औ ललकारैं ❀ यहु रणबाघु बनाफरराय।
हटिगा मुर्चा तहँ धाँधू का ❀ कोउ रजपूत न रोंकै पायँ॥
बीर भुगंता कोपित ह्वैकै ❀ अपनो हाथी दीन बढ़ाय।
मीरासय्यद बनरस वाले ❀ सम्मुख गये तड़ाका धाय॥

एँड़ लगावा जब घोड़े के ❀ हौदा उपर पहूँचा जाय।
गुर्ज चलावा बीर भुगन्ता ❀ सय्यद लैगे चोट बचाय॥
ढाल कि औझड़ सय्यद मारी ❀ नीचे गिरा महाउत आय।
तहिले धाँधू तहँ आवत भा ❀ औ सय्यद को दीन हटाय॥
मारन लाग्यो रजपूतन का ❀ धाँधू भाय पिथौरा क्यार।
मारे मारे तलवारिन के ❀ नदिया बही रक्त की धार॥
ना मुँह फेरैं कनउजवाले ❀ ना ई दिल्ली के सरदार।
मूड़न केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार॥
शूर सिपाही दुहुँ तरफा के ❀ दूनों हाथ करैं तलवार।
कायर भागे समरभूमि ते ❀ अपने डारि डारि हथियार॥
तहिले माहिल गे तम्बू में ❀ औ पिरथी ते कहा हवाल।
जीति न होई महराजा अब ❀ आयो देशराज को लाल॥
ऊदन जावैं जब मोहबे ते ❀ तब फिरि चढ़चो पिथौराराय।
तुम्हैं मुनासिब अब याही है ❀ देवो मारु बन्द करवाय॥
सुनिकै बातैं तहँ माहिल की ❀ तैसो कियो पिथौराराय।
मर्दनि सर्दनि सूरज टंको ❀ जूझे समरभूमि में आय॥
इकसै हाथी गिरे खेत में ❀ घोड़ा जूझे पाँच हजार।
लाखयुग्म की तहँ संख्या मा ❀ जूझे दिल्ली के सरदार॥
रंजित अभई दूनों जूझे ❀ घोड़ा जूझे चार हजार।
डेढ़ लाख दल पैदल जूझे ❀ संख्या मोहबे की त्यहिबार॥
छप्पन हाथी मोहबे वाले ❀ मारा रहै पिथौराराय।
मेख उखरिगै फिरि सागर ते ❀ पिरथी कूच दीन करवाय॥
तजिकै शंका अहतंका के ❀ डंका तुरत दीन बजवाय।
कैयो दिनका धावा करिकै ❀ दिल्ली गयो पिथौराराय॥

हाँ सुधि पाई परिमालिक ने ❀ आये देशराज के लाल।
वन्दन कैकै यदुनन्दन को ❀ पलकी चढ़े रजापरिमाल॥
कीरतिसागर मदनताल पर ❀ आये तुरत चँदेलेराय।
हाथ पकरिकै तहँ ऊदन का ❀ औ छाती मा लीन लगाय॥
पगिया धरदइ फिरि पैरन मा ❀ यहु रणबाघु बनाफरराय।
हाथ जोरिकै उदयसिंह तहँ ❀ आपनि कथा गये सब गाय॥
सुनिकै बातैं उदयसिंह की ❀ बोले फेरि चँदेलेराय।
पारस पत्थर तुम लैलेवो ❀ भोगो राज्य बनाफरराय॥
तुमका सौंपत हम ब्रह्मा को ❀ ऊदन मानो कही हमार।
तुम जो जैहौ अब कनउज को ❀ तौ को धर्म निबाहन हार॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ साँची सुनो रजापरिमाल।
तीन तलाकैं हमका दीन्ही ❀ सो अब रहीं करेजेशाल॥
कहा मानिकै तुम माहिल का ❀ ना कछु कीन्ह्यो तनक बिचार।
मोहिं निकाख्यो तुम भादों मा ❀ राजा मोहबे के सरदार॥
इतना सुनिकै मल्हना बोली ❀ साँची सुनो लहुरवाभाय।
जो तुम जैहौ अब कनउज का ❀ पिरथी मोहबा लेय लुटाय॥
दूध आपनो हम प्यावा है ❀ स्यावा तुम्है बनाफरराय।
वैस बुढ़ापा मा दुखपावा ❀ रंजित मरे समर मा आय॥
अबनहिं जावो तुम कनउजको ❀ मानों कही लहुरवा भाय।
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय॥
एक महीना दिन बारा भे ❀ कनउज तजे मोहिं अब माय।
जो नहिं जावें अब कनउज का ❀ भाई आल्हा उठैं रिसाय॥
कौन बहाना हम गाँजर का ❀ आयन नगर मोहोबा धाय।
देश निकारी हमरी ह्वैहै ❀ जो कहुँ सुनी बनाफरराय॥

भई सहायी शारद मायी ❁ स्वपने हाल दीन बतलाय।
दया कनौजी लखराना की ❁ देखा नगर मोहोबा आय॥
चढ़ी पिथौरा जो मोहबे का ❁ दिल्ली शहर लेब लुटवाय।
यहिमा संशय कछु नाहीं है ❁ माता साँच दीन बतलाय॥
इतना सुनिकै मल्हना बोली ❁ लाखनिराना बचन सुनाय।
धन्य कोखिहै वह तिलका कै ❁ ज्यहिमा रहे कनौजीराय॥
बिछुरे ऊदन इन मिलवाये ❁ हमरी पर्ब्ब दीन करवाय।
मोरि गोसैंयाँ लखराना हैं ❁ जो गाढ़े मा भये सहाय॥
सुनिकै बातैं ये मल्हना की ❁ बोले फेरि कनौजीराय।
पुण्य तुम्हारी ते माई सब ❁ कीन्हे काज सिद्धि यदुराय॥
सुमिरन करिये जगदम्बा का ❁ अम्बा बैठि महल मा जाय।
काह हकीकति है पिरथी कै ❁ मोहबा शहर लेयँ लुटवाय॥
मिला भेंट करि सब काहू सों ❁ दोऊ चलत भये सरदार।
छाँड़िकै बाना सब योगिन का ❁ लश्कर कूच भयो त्यहिबार॥
पार उतरिकै श्री यमुना के ❁ कुड़हरि डेरा दीन गड़ाय।
सात रोज को धावा करिकै ❁ कनउज गये कनौजीराय॥
मल्हनापहुँचीफिरिमहलनमा ❁ राजा गये फेरि दरबार।
गड़े हिंडोला फिरि मोहबे मा ❁ घर घर होयँ मंगलाचार॥
खेत छूटिगा दिननायक सों ❁ झण्डा गड़ा निशाको आय।
परे आलसी खटिया तकितकि ❁ घों घों कण्ठ रहा घर्राय॥
माथ नवावों पितु माता को ❁ जिन बल पूर भई यह गाथ।
देवी देवता ये साँचे हैं ❁ इनबल पूर कीन रघुनाथ॥
आशिर्बाद देउँ मुन्शीसुत ❁ जीवो प्रागनरायण आय।
हुकुम तुम्हारो जो पावत ना ❁ कैसे कहत ललित यह गाय॥

ह्याँ सुधि पाई परिमालिक ने ❀ आये देशराज के लाल।
वन्दन कैकै यदुनन्दन को ❀ पलकी चढ़े रजापरिमाल॥
कीरतिसागर मदनताल पर ❀ आये तुरत चँदेलेराय।
हाथ पकरिकै तहँ ऊदन का ❀ औ छाती मा लीन लगाय॥
पगिया धरदइ फिरि पैरन मा ❀ यहु रणबाघु बनाफरराय।
हाथ जोरिकै उदयसिंह तहँ ❀ आपनि कथा गये सब गाय॥
सुनिकै बातैं उदयसिंह की ❀ बोले फेरि चँदेलेराय।
पारस पत्थर तुम लैलेवो ❀ भोगो राज्य बनाफरराय॥
तुमका सौंपत हम ब्रह्मा को ❀ ऊदन मानो कही हमार।
तुम जो जैहौ अब कनउज को ❀ तौ को धर्म निबाहन हार॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ साँची सुनो रजापरिमाल।
तीन तलाकैं हमका दीन्ही ❀ सो अब रहीं करेजेशाल॥
कहा मानिकै तुम माहिल का ❀ ना कछु कीन्ह्यो तनक बिचार।
मोहिं निकास्यो तुम भादों मा ❀ राजा मोहबे के सरदार॥
इतना सुनिकै मल्हना बोली ❀ साँची सुनो लहुरवाभाय।
जो तुम जैहौ अब कनउज का ❀ पिरथी मोहबा लेय लुटाय॥
दूध आपनो हम प्यावा है ❀ स्यावा तुम्है बनाफरराय।
बैस बुढ़ापा मा दुखपावा ❀ रंजित मरे समर मा आय॥
अबनहिं जावो तुम कनउजको ❀ मानों कही लहुरवा भाय।
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय॥
एक महीना दिन बारा भे ❀ कनउज तजे मोहिं अब माय।
जो नहिं जावें अब कनउज का ❀ भाई आल्हा उठैं रिसाय॥
कौन बहाना हम गाँजर का ❀ आयन नगर मोहोबा धाय।
देश निकारी हमरी ह्वैहै ❀ जो कहुँ सुनी बनाफरराय॥

भई सहायी शारद मायी ❀ स्वपने हाल दीन बतलाय।
दया कनौजी लखराना की ❀ देखा नगर मोहोबा आय॥
चढ़ी पिथौरा जो मोहबे का ❀ दिल्ली शहर लेब लुटवाय।
यहिमा संशय कछु नाहीं है ❀ माता साँच दीन बतलाय॥
इतना सुनिकै मल्हना बोली ❀ लाखनिराना बचन सुनाय।
धन्य कोखिहै वह तिलका कै ❀ ज्यहिमा रहे कनौजीराय॥
बिछुरे ऊदन इन मिलवाये ❀ हमरी पर्ब्ब दीन करवाय।
मोरि गोसैंयाँ लखराना हैं ❀ जो गाढ़े मा भये सहाय॥
सुनिकै बातैं ये मल्हना की ❀ बोले फेरि कनौजीराय।
पुण्य तुम्हारी ते माई सब ❀ कीन्हे काज सिद्धि यदुराय॥
सुमिरन करिये जगदम्बा का ❀ अम्बा बैठि महल मा जाय।
काह हकीकति है पिरथी कै ❀ मोहबा शहर लेयँ लुटवाय॥
मिला भेंट करि सब काहू सों ❀ दोऊ चलत भये सरदार।
छाँड़िकै बाना सब योगिन का ❀ लश्कर कूच भयो त्यहिबार॥
पार उतरिकै श्री यमुना के ❀ कुड़हरि डेरा दीन गड़ाय।
सात रोज को धावा करिकै ❀ कनउज गये कनौजीराय॥
मल्हनापहुँचीफिरिमहलनमा ❀ राजा गये फेरि दरबार।
गड़े हिंडोला फिरि मोहबे मा ❀ घर घर होयँ मंगलाचार॥
खेत छूटिगा दिननायक सों ❀ झण्डा गड़ा निशाको आय।
परे आलसी खटिया तकितकि ❀ घों घों कण्ठ रहा घर्राय॥
माथ नवावों पितु माता को ❀ जिन बल पूर भई यह गाथ।
देवी देवता ये साँचे हैं ❀ इनबल पूर कीन रघुनाथ॥
आशिर्वाद देउँ मुन्शीसुत ❀ जीवो प्रागनरायण भाय।
हुकुम तुम्हारो जो पावत ना ❀ कैसे कहत ललित यह गाय॥

रहै समुन्दर में जबलौं जल ❀ जबलौं रहैं चन्द औ सूर।
मालिक ललिते के तबलौं तुम ❀ यशसों रहौ सदा भरपूर॥
करों तरंग यहाँ सों पूरण ❀ तव पद सुमिरि भवानीकन्त।
राम रमा मिलि दर्शन देवैं ❀ इच्छा यही मोरि भगवन्त॥
पुत्र हमारे जो चारो हैं ❀ तिनपर कृपा करो रघुराज।
रामदत्त(१)औकृष्णदत्त(२)औशम्भू(३)ब्रह्मदत्त(४)महराज
नन्द चन्द औ नन्द बाण में ❀ माधव मास बिपति को काल।
ब्रह्मदत्त गे ब्रह्मलोक को ❀ भे अब इन्द्रदत्त युग साल॥

सवैया

संवत बनइस उन्सठ आदि में माधव मास महा दुखदाई।
आय गयो विसफोटक रोग अब शान्त भयो बहु देव मनाई॥
फेरि अचानक भय यह बात कि गर्दन फाटिगै फूट कि नाई।
ब्रह्मदत्त विरंचीलोक बसे ललिते यह दुःख कहैं निज गाई॥

भक्त तुम्हारे चारो होवैं ❀ यह वर मिलै मोहिं भगवान।
कीरतिसागर मदनताल का ❀ पूरा चरित कीन हम गान॥

कीरतिसागर का मैदान सम्पूर्ण।

आल्हखण्ड

ठाकुर आल्हसिंहजी का मनावन वर्णन

सवैया

जौन चहैं ललिते सुख सम्पति तौन भजैं नित शम्भु भवानी।
अक्षत चन्दन पुष्पन बिल्व सों पूजत हैं जे महा कउ ज्ञानी॥
नाति औ पूत परोसिन ज्ञातिन भांतिन भांति लहैं सुखखानी।
बाराणसी रजधानी बिराजत छाजत शम्भु तहाँ सुखदानी॥

सुमिरन

ज्ञानी ध्यानी सब जानत हैं ❀ जग को शम्भु करैं उपकार।

विकटनिशानीकलिपापनकी ❀ यामें गये सबै मन हार ॥
योग यज्ञकै चर्चा उठिगै ❀ अर्चा होय न एकोबार ।
विषय कमाई घर घर होवै ❀ दर दर उलटि गये ब्यवहार ॥
सन्ध्या तर्पण की चर्चा ना ❀ पर्चा टुमरिन के अधिकार ।
खर्चा होवै सँग वेश्यन के ❀ नारी पती देयँ धिक्कार ॥
ऐसे पापी यहि कलियुग मा ❀ स्वामी शम्भु करैं उपकार ।
जो तन त्यागै श्री काशी मा ❀ सो नर चला जाय भवपार ॥
है रजधानी गिरिजापति कै ❀ जाहिर तीनि लोक यहिबार ।
आल्हा मनावन को अब जाई ❀ भैने जौनु चँदेले क्यार ॥

अथ कथाप्रसंग

दिल्ली घोड़ी का चढ़वैया ❀ माहिल उरई का परिहार ।
काम औ धंधा कछु ज्यहि के ना ❀ केवल चुगुलिन का बयपार ॥
सोयकै जागा सो उरई मा ❀ घोड़ी तुरत लीन कसवाय ।
चढ़िकै घोड़ी माहिलठाकुर ❀ दिल्ली शहर पहूँचा जाय ॥
बड़ी खातिरी पिरथी कीन्ह्यो ❀ अपने पास लीन बैठाय ।
समय पायकै माहिल बोले ❀ मानो कही पिथौराराय ॥
आल्हा ऊदन हैं कनउज मा ❀ मोहबा आपु लेउ लुटवाय ।
ऐसो अवसर फिरि मिलिहै ना ❀ मानो कही पिथौराराय ॥
इतना सुनिकै पृथीराज ने ❀ डंका तुरत दीन बजवाय ।
चन्दन गोपी ताहर सजिगे ❀ मनमा श्रीगणेश पद ध्याय ॥
लैकै फौजैं सातलाख लों ❀ पिरथी कूच दीन करवाय ।
कीरतिसागर मदनताल पर ❀ पहुँचा फेरि पिथौरा आय ॥
तम्बू गड़िगे चौगिर्दा सों ❀ सब रँग ध्वजा रहे फहराय ।
पिरथी बोले फिरि माहिल ते ❀ राजै खबरि सुनावो जाय ॥

हाल हमारो सब जानत हौ ❀ तुमते कहौं काह समुझाय।
इतना सुनिकै माहिल चलिभे ❀ पहुँचे जहाँ चँदेलेराय॥
हाल बतायो परिमालिक ते ❀ माहिल झूठ साँच समुझाय।
सुनिकै बातैं माहिल मुखते ❀ राजा गये सनाकाखाय॥
अवा पसीना परिमालिक के ❀ शिर सों छत्र गिरा भहराय।
खबरि पायकै मल्हना रानी ❀ माहिलमहल लीन बुलवाय॥
मल्हनाबोलीफिरिमाहिल ते ❀ काहे चढ़े पिथौराराय।
इतना सुनिकै माहिल बोले ❀ बहिनी साँच देयँ बतलाय॥
उड़न बछेड़ा पाँचो चाहैं ❀ पारस चहैं पिथौराराय।
डोला चाहैं चन्द्रावलि का ❀ ताहर साथ बियाही जाय॥
बैठक चाहैं खजुहागढ़ की ❀ चाहैं राज ग्वालियर क्यार।
इतना लीन्हे बिन जैहैं ना ❀ राजा दिल्ली के सरदार॥
सुनिकै बातैं ये माहिल की ❀ मल्हना गई सनाका खाय।
धीरज धरिकै फिरि बोलति भै ❀ पिरथी देउ जाय समुझाय॥
बारह दिनकी मुहलति देवैं ❀ त्यरहें डाँड़ लेयँ भरवाय।
जबै बनाफर उदयसिंह थे ❀ तब नहिं अये पिथौराराय॥
देखिअनाथनह्याँ तिरियनको ❀ लूटन अये अधर्मी राय।
धर्म्मी होवैं तो मोहलति अब ❀ बारह दिन की देयँ कराय॥
त्यरहें पावैं जो पिरथी ना ❀ मुहबा शहर लेयँ लुटवाय।
हथी पछारा था द्वारे पर ❀ जायकै जबै लहुरवा भाय॥
मलखे ठाकुर जब सिरसा थे ❀ तब नहिं अये पिथौराराय।
इतना कहिकै मल्हना रानी ❀ नीचे बैठी शीश झुकाय॥
बोलि न आवा जब मल्हना ते ❀ माहिल बोले वचन बनाय।
बारह दिन लौं बुलै पिथौरा ❀ पहिले मूड़ देउँ कटवाय॥

त्यरहें दिन जो लुटै पिथौरा ❀ तौ माहिल कै जनै बलाय।
वैर बिसाहा मलखे ऊदन ❀ ताते चढ़ै पिथौरा धाय॥
इतना कहिकै माहिल चलिभे ❀ तम्बुन फेरि पहूँचे आय।
जो कछु भाषा मल्हना रानी ❀ माहिल यथातथ्य गा गाय॥
कछु नहिं ब्वाला दिल्लीवाला ❀ मल्हना गाथ सुनो यहि बार।
मल्हना सोचै मन अन्तर मा ❀ अवधौं कवन बचावन हार॥
बिना बेंदुला के चढ़वैया ❀ नैया कौन लगैहै पार।
दैया मैया सुखदैया जग ❀ मैया शारद चरण तुम्हार॥
यहै बिचारत मल्हना रानी ❀ तुरतै बोलि लीन पतिहार।
तुरत बुलावा जगनायक का ❀ भैने जौनु चँदेले क्यार॥
खबरि पायकै जगनायकजी ❀ तुरतै गये तड़ाका आय।
आवत दीख्यो जगनायक को ❀ मल्हना उठी तड़ाका धाय॥
पकरि कै बाहू जगनायक की ❀ अपने पास लीन बैठाय।
जगनिक बोले महरानी ते ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय॥
कौन साँकरा है माईं पर ❀ हमते हाल देउ बतलाय।
तुरतै करिकै त्यहि कारज को ❀ पाछे शीश नवावों आय॥
इतना सुनिकै मल्हना बोली ❀ ईजति राखि लेउ यहिबार।
जल्दी जावो तुम कनउज को ❀ लावो उदयसिंह सरदार॥
सात लाखलों फौजै लैकै ❀ सागर परा आय चौहान।
बारह दिनकी मुहलति दीन्ही ❀ त्यरहें लूटी नगर निदान॥
कहि समुझायो तुम आल्हा ते ❀ की विपदामा होउ सहाय।
बाति न समझा हम ब्रह्मा ते ❀ संकट परा आज दिन आय॥
इतना कहिकै रानी मल्हना ❀ कागज कलम दवाइति लीन।
सिरी सबँऊ ते भूषित करि ❀ पूरण पत्र समापत कीन॥

सो दै दीन्ह्यो जगनायक को ❁ औरो कह्यो बहुत समुझाय ।
जगनिक बोले तब मल्हना ते ❁ दोऊ हाथ जोरि शिर नाय ॥
कैसे जावैं हम कनउज को ❁ औ मुँह कौन दिखावैं माय ।
सवन चिरैया ना घर छोंड़ै ❁ ना बनिजरा बनिजको जाय ॥
तबैं निकरिगे आल्हा ठाकुर ❁ तिनते बात न पूछा कोय ।
बिपति बिदारण जगतारण की ❁ मर्जी यही आज दिन होय ॥
नहीं तो होते मलखे ठाकुर ❁ कैसे चढ़त पिथौरा आय ।
जियत न जैबे हम कनउज को ❁ कौवा मरे हाड़ लै जाय ॥
इतना सुनिकै मल्हना बोली ❁ दोऊ नैनन नीर बहाय ।
राखो ईजति यहि समया मा ❁ जल्दी जाउ कनौजै धाय ॥
शोच बिचारन की बिरिया ना ❁ मैंने बारबार बलिजायँ ।
इतना सुनिकै जगनिक बोले ❁ माई साँच देयँ बतलाय ॥
घोड़ा मँगावो हरनागर को ❁ अबहीं जाउँ तड़ाका धाय ।
इतना सुनिकै रानी मल्हना ❁ ब्रह्मै खबरि दीन पठवाय ॥
माहिल ब्रह्मा जहँ बैठे थे ❁ चेरी तहाँ पहूँची जाय ।
कह्यो सँदेशा सो मल्हना को ❁ दोऊ हाथ जोरि शिर नाय ॥
सुनि संदेशा रनि मल्हना का ❁ बोला उरई का सरदार ।
घोड़ न देवो जगनायक को ❁ ब्रह्मा मानु कही यहिबार ॥
आल्हा रूठे हैं मोहबे ते ❁ कनउज बसे बनाफरराय ।
घोड़ तुम्हारो फिरि देहैं ना ❁ तुमते साँच दीन बतलाय ॥
कहा न माना कछु माहिल का ❁ ब्रह्मा घोड़ दीन कसवाय ।
बड़ी खुशाली सों जगनायक ❁ सबको यथा योग शिर नाय ॥
मनियादेवन को सुमिरन करि ❁ घोड़ा उपर भयो असवार ।
जहाँ पिथौरा दिल्ली वाला ❁ पहुँचा उरई का सरदार ॥

खबरि सुनाई जगनायक की ❁ माहिल बार बार समुझाय।
लेउ बछेड़ा अब हरनागर ❁ मानो कही पिथौराराय॥
इतना सुनिकै पृथीराज ने ❁ चौंड़ा बकशी लीन बुलाय।
कहि समुझावा सब चौंड़ा ते ❁ यहु महराज पिथौराराय॥
हुकुम पायकै महराजा को ❁ चौंड़ा कूच दीन करवाय।
नदी बेतवा के ऊपर मा ❁ जगनिकगयोतड़ाकाआय॥
दीख्यो जगनिक को चौंड़ा ने ❁ गरुई हाँक दीन ललकार।
देउ बछेड़ा हरनागर को ❁ पाछे जाउ नदी के पार॥
इतना सुनिकै जगनायक जी ❁ चौंड़ै बोले वचन सुनाय।
लौटिकै अइहैं जब कनउज ते ❁ घोड़ा तुरत दिहैं पठवाय॥
ऐसे घोड़ा हम देहैं ना ❁ मानो कही चौंड़ियाराय।
इतना सुनिकै चौंड़ा बकशी ❁ आपन हाथी दीन बढ़ाय॥
एँड़ लगायो जगनायक जी ❁ हौदा उपर पहूँचे जाय।
लीन्ह्यो कलँगी शिर चौंड़ा की ❁ चौंड़ा बहुत गयो शरमाय॥
लैकै कलँगी जगनायक जी ❁ नद्दी निकरि गये वा पार।
चौंड़ा बकशी फिरि बोलत भा ❁ मानो घोड़े के असवार॥
तुम अस योधा हैं मोहबे मा ❁ कस ना राज्य करैं परिमाल।
कलँगी हमरी अब दै देवो ❁ जावो आप कनौजै हाल॥
इतना सुनिकै जगनायक जी ❁ बोले सुनो चौंड़ियाराय।
कलँगी तुम्हरी हम ऊदन को ❁ कनउजशहरदिखाउबजाय॥
इतना कहिकै जगनायक जी ❁ अपनो घोड़ा दीन बढ़ाय।
तीनि दिनौना को धावाकरि ❁ कुड़हरितुरतगयोनगच्याय॥
जेठ महीना ठीक दुपहरी ❁ शिरपर घाम गयो बहुआय।
बरगद दीख्यो इक जगनायक ❁ डारन रही सघनता छाय॥

तहँहीं बाँध्यो हरनागर को ❀ आपो सोयो जीन बिछाय।
दीख किसानन तहँ घोड़ाका ❀ औ असवार निहारा आय॥
सोवत दीख्यो जगनायकको ❀ घोड़ा देखि गये हर्षाय।
करैं बतकही तहँ आपस मा ❀ ऐसो घोड़ दीख नहिं भाय॥
करत बतकही सब आपस में ❀ अपने धाम पहूँचे आय।
बात फैलिगै यह कुड़हरि मा ❀ गंगा कान परी तब जाय॥
उठा तड़ाका सो महलन ते ❀ बरगद तरे पहूँचा आय।
सोवत दीख्योजगनायक को ❀ घोड़ा कोड़ा लीन चुराय॥
घोड़ बँधायोनिज महलन मा ❀ औ यह हुकुम दीन फरमाय।
चर्चा करि है जो घोड़ा की ❀ ताको मूड़ देउँ गिरवाय॥
इतना कहिकै गंगा ठाकुर ❀ महलन करन लाग बिश्राम।
सोयकै जागे जब जगनायक ❀ लागे लेन राम को नाम॥
घोड़ न दीख्यो हरनागर को ❀ तब देहीं ते गयो परान।
देखन लाग्यो चौगिर्दा ते ❀ औ मनकरनलाग अनुमान॥
चौंड़ा आयो का पाछे ते ❀ हमरो घोड़ चुरायो आय।
घोड़ा कोड़ा कछु देखै ना ❀ मनमा गयो सनाकाखाय॥
चिह्न देखिकै तहँ टापन के ❀ कुड़हरि शहर पहूँचा आय।
जहाँ अथाई पनिहारिन की ❀ जगनिक तहाँ पहूँचा जाय॥
करैं बतकही ते आपस मा ❀ घोड़ा दीख नहीं असमाय।
जैसो लायो नरनायक है ❀ मानो उड़न बछेड़ा आय॥
सुनिकै चर्चा तहँ घोड़ा की ❀जगनिकखुशीभयोअधिकाय।
जहाँ कचहरी गंगाधर की ❀ जगनिक तहाँ पहूँचा जाय॥
बड़ी खातिरी करि गंगाधर ❀ आपने पास लीन बैठाय।
जगनिक बोले गंगाधर ते ❀ घोड़ा कोड़ा देउ मँगाय॥

चढ़ा पिथौरा है मोहबा पर ❀ लीन्हे सात लाख चौहान ।
जायँ मनावन हम आल्हा को ❀ हमरे बचन करो परमान ॥
जो सुनि पैहैं आल्हा ऊदन ❀ तुम्हरो नगर लेयँ लुटवाय ।
त्यहिते तुमका समुझाइत है ❀ घोड़ा कोड़ा देउ मँगाय ॥
तब महराजा कुड़हरिवाला ❀ बोला काह गयो बौराय ।
चोर न ठाकुर कोउ कुड़हरि मा ❀ घोड़ा कोड़ा लेय चुराय ॥
हमरे घोड़न की कमती ना ❀ चाहौ जौन लेउ कसवाय ।
तुम्हरो घोड़ा हम जानैं ना ❀ ओ जगनायक बात बनाय ॥
सुनिकै बातैं गंगाधर की ❀ भैने ब्बला चँदेले क्यार ।
घोड़ा कोड़ा जो पैहैं ना ❀ तौ मरिजायँ पेट को मार ॥
इजति रैहै ना मोहबे की ❀ तुमते साँच दीन बतलाय ।
होउ हितैपी परिमालिक के ❀ घोड़ा कोड़ा देउ मँगाय ॥
सुनिकै बातैं जगनायक की ❀ धीरज बहुत दीन समुझाय ।
खबरि पायकै महरानी ने ❀ राजै पास लीन बुलवाय ॥
कहि समुझावा महराजा ते ❀ विपदा परी मोहोबे आय ।
तुम्हैं मुनासिब यह नाहीं है ❀ घोड़ा कोड़ा लेउ चुराय ॥
देउ तड़ाका घोड़ा कोड़ा ❀ राजन यहै बड़ाई आय ।
सुनिकै बातैं महरानी की ❀ तुरतै गयो सभा को धाय ॥
डाटन लाग्यो नहँ चकरन को ❀ घोड़ा पता लगावो जाय ।
पाय इशारा महराजा का ❀ चाकर उठे तड़ाका धाय ॥
लैकै घोड़ा हरनागर को ❀ राजा पास पहूँचे आय ।
दीन्ह्यो सुगति हरनागर कै ❀ जगना चढ़ा तड़ाका धाय ॥
लैगे हमका घोड़ा दीन्ह्यो ❀ लैगे कोड़ा देउ मँगाय ।
सवालाख को थो कोड़ा है ❀ जो बनवावा चँदेलाराय ॥

लोभ न लावो मन अपने मा ❀ कोड़ा तुरत देउ मँगवाय।
नहीं तो लौटों जब कनउज ते ❀ कुड़हरिशहर लेउँ लुटवाय॥
कोड़ा दीन्ह्यो ना गंगाधर ❀ जगना कूच दीन करवाय।
छहे दिनौना के अन्तर मा ❀ कनउज शहर पहूँचे आय॥
लगीं दुकानैं हलवाइन की ❀ सबबिधिसजाशहरअधिकाय।
जाय दुकानन मा पूछत भा ❀ कहँ पै बसैं बनाफरराय॥
कहाँ बनाफर आल्हाठाकुर ❀ हमका पता देउ बतलाय।
सुनिकै बातैं जगनायक की ❀ बोला एक मसखरा भाय॥
आल्हा ऊदन मोहबे वाले ❀ मरिगे समर भूमि मैदान।
काह बतावैं परदेशी से ❀ तिनकीकुशलनहींहैज्वान॥
आल्हा तेली इक कनउज मा ❀ दूसर नगर आल्ह कुतवाल।
सुनी मसखरा की बातैं जब ❀ जगनिकह्वैगाहाल बिहाल॥
तबलौं ढाढ़ी इक बोलत भा ❀ ठाकुर घोड़े के असवार।
आल्हा ऊदन मोहबेवाले ❀ नीके द्वऊ भाय सरदार॥
अबहीं आवत हम ड्योढ़ीते ❀ ठाकुर घोड़े के असवार।
खड़ा धौरहर वहु ऊदन का ❀ झलकैकलश सूबरणक्यार॥
सुनिकै बातैं त्यहि ढाढ़ी की ❀ जगनिक दीन दुकान लुटाय।
हाट बाट में हल्ला ह्वैगा ❀ पहुँचे राजसभा बहु जाय॥
सुनिकै बातैं हलवाइन की ❀ लाखनिराना लीन बुलाय।
पकरिकै लावो त्यहि ठाकुरको ❀ हमरी नजरि गुजारो आय॥
इतना सुनिकै लाखनिराना ❀ भूरी उपर भये असवार।
मीरासय्यद को सँग लैकै ❀ आये वेगि हाट त्यहिवार॥
सय्यद दीख्यो जगनायक को ❀ तब लाखनिते कह्यो हवाल।
यहु है भैनो महराजा को ❀ ज्यहिकानाम रजापरिमाल॥

इतना सुनिकै लाखनिराना ❀ अपनो हाथी लीन घुमाय।
मीरासय्यद जगनायक ते ❀ भेंटे तुरत तहाँ पर आय॥
जहाँ धौरहर वघऊदन का ❀ दोऊ तहाँ गये असवार।
द्वारे ठाढ़े उदयसिंह थे ❀ भेंटे तुरत आय सरदार॥
हाथ पकरिकै जगनायक को ❀ महलन तुरत पहूँचे जाय।
आल्हा दीख्यो जगनायकको ❀ अपने पास लीन बैठाय॥
लिखीहकीकतिजो मल्हनाने ❀ सो जगनायक दीन गहाय।
पढ़िकै चिट्ठी महरानी कै ❀ आल्हाचुप्पसाधि रहिजाय॥
ऊदन बोले जगनायक ते ❀ भोजन हेतु चलौ सरदार।
आल्हा जावें जो मोहबे को ❀ तो हम बैठि करैं ज्यँवनार॥
बारह दिनके अब अरसा मा ❀ लूटी नगर पिथौराराय।
इजति रैहै नहिं मल्हना की ❀ जो नहिं चलैं बनाफरराय॥
डोला लैहैं चन्द्रावलि का ❀ पारस पत्थर लिहैं छिड़ाय।
नहीं बनाफर सिरसावाला ❀ जो गाढ़े मा होय सहाय॥
नाहीं सुनिकै मलखाने की ❀ आल्हा छाँड़ि दीन डिडकार।
ऊदन इन्दल देबा सय्यद ❀ रोवन लागि सबै सरदार॥
बात फैलिगै यह महलन मा ❀ की मरिगये बीर मलखान।
कोगति बरणै त्यहि समयाकै ❀ महलन छायो घोरमशान॥
चन्द्रावलि सुनवाँ फुलवा रानी ❀ शिरधुनि बारबार पछिताय़ँ।
हाय! बनाफर सिरसावाले ❀ कैसे मरे समर में जाय॥

सवैया

हाय! गयो सबमन्दिर छाय सुहाय नहीं ललिते सुखशय्या।
पीर मरे मलखान कुमार गई रणमों सब की मनसय्या॥

हाय! दयी बलवान सदा दुख औसुखको करि कर्म व्यवय्या।
बीरबली मलखान समान जहाननहीं अस सोदर भय्या॥
अस कहि रोवैं आल्हा ठाकुर ❀ दोऊ नैनन नीर बहाय।
बहु समुझायो जगनायक ने ❀ धीरज धस्यो बनाफरराय॥
अब नहिं जावैं हम मोहबे को ❀ तुमते साँच देयँ बतलाय।
खबरि जो पावत मलखाने की ❀ दिल्ली शहर लेत लुटवाय॥
मलखे मरिगे जब सिरसा मा ❀ तबहुँ न लड़े चँदेलेराय!
मोहिं निकास्यो उन भादों मा ❀ दारुण बाणी बज्र चलाय॥
इतना कहिकै जगनायक सों ❀ आल्हा ठाकुर रह्यो चुपाय।
ऊदन बोले जगनायक ते ❀ भोजन करो शोक बिसराय॥
तब जगनायक फिरि बोलत भे ❀ मानो कही बनाफरराय।
संग न जावो जो मोहबे को ❀ हमरो शीश लेउ कटवाय॥
बातैं सुनिकै जगनायक की ❀ द्यावलि कहा बचन समुझाय।
बिपदा तुम्हरी के संगी हैं ❀ समरथ बड़े बनाफरराय॥
इतना सुनिकै आल्हा बोले ❀ माता काह गईं बौराय।
तीनि तलाकै राजै दीन्हीं ❀ सो छाती माँ गईं समाय॥
बिपदा भोगी हम मारग में ❀ सावन बिकट बादरी घाम।
पियैं ल्यवारिन इन्दल पानी ❀ जो सुख चैन करैं बिश्राम॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ दोऊ हाथ जोरि शिर नाय।
करो तयारी अब मोहबे की ❀ पाछिल बात सबै बिसराय॥
इतना सुनिकै आल्हा जरिगे ❀ नैनन गई लालरी छाय।
तब समुझायो देबा ठाकुर ❀ चहिये चलन महोबे भाय॥
मनै आयगै यह आल्हा के ❀ तुरतै हुकुम दीन फरमाय।
भोजन करिये जगनायक जी ❀ चलिबे अवशि मोहोबे भाय॥

भोजन कीन्ह्यो जगनायक जी ❀ सँग मा उदयसिंह सरदार।
जहाँ कचहरी चन्देले की ❀ आल्हा गये राजदरबार॥
कही हकीकति महराजा ते ❀ दोऊ हाथ जोरि शिर नाय।
आज्ञा पावैं महराजा की ❀ देखैं नगर मोहोबा जाय॥
चढ़ा पिथौरा दिल्लीवाला ❀ लीन्हे सातलाख चौहान।
जो नहिं जावैं हम मोहवे को ❀ तौ वह लूटै नगर निदान॥
तेहिते आज्ञा हमको देवो ❀ ओ महराज कनौजीराय।
इतना सुनिकै जयचँद जरिगे ❀ बोले सुनो बनाफरराय॥
रय्यति लूटी तुम गाँजर की ❀ मोहवे द्रव्य दीन पहुँचाय।
दै समझौता सब गाँजर का ❀ पाछे जाउ बनाफरराय॥
घोड़ा लूटे तुम बूँदी के ❀ सो सब कहाँ दीन पठवाय।
गेहूँ खाये तुम गाँजर के ❀ ताते गई म्वटाई आय॥
इतना कहिकै जयचँद राजा ❀ पहरा चौकी दीन कराय।
कैद जानिकै आल्हा ठाकुर ❀ रूपनवारी लीन बुलाय॥
खबरि सुनावो तुम ऊदन का ❀ आल्हा परे कैदमा जाय।
दै समझौता तुम गाँजर का ❀ भाई अपन छुटाओ आय॥
इतना सुनिकै रूपन चलिभा ❀ रिजिगिरि अटातड़ाकाधाय।
खबरि सुनाई बघऊदन का ❀ सुनतै जरा लहुरवाभाय॥
च्यावलि बोली जगनायक ते ❀ तुमहूँ चले जाउ यहि बार।
कपड़ा मैले सब हमरे हैं ❀ कैसे जायँ राजदरबार॥
इतना सुनिकै ऊदन ठाकुर ❀ तुरतै इन्दल लीन बुलाय।
कपड़ा दीन्ह्यो जगनायक को ❀ तुरतै वेंदुल लीन सजाय॥
ऊदन बेंदुला हरनागर पर ❀ जगना तुरत भयो असवार।
घोड़ बेंदुला के ऊपर मा ❀ ठाकुर उदयसिंह सरदार॥

जयचँद राजा की ड्योढ़ी मा ❀ दोऊ अटे तड़ाका आय।
मस्ता हाथी जयचँद राजा ❀ फाटक उपर दीन ढिलवाय॥
मारिकै भाला जगनायक ने ❀ हाथी दीन्ह्यो तुरत भगाय।
जहाँ कचहरी महराजा की ❀ दोऊ अटे तड़ाका धाय॥
सात तवा तहँ ईसपात के ❀ जयचँद राजा दीन धराय।
भाला गाड़ै ई लोहे पर ❀ औ बल मोहिं देय दिखलाय॥
कैसो भैने चन्देले का ❀ गड़बड़ कीन हाट माँ आय।
इतना सुनिकै जगनायक ने ❀ मनमा सुमिरि दूरगामाय॥
भाला मारा ईसपात मा ❀ सातो तवा निकरिगे पार।
स्याबसि स्याबसि क्षत्री बोले ❀ हरषे उदयसिंह सरदार॥
सिंह कि बैठक जगना बैठ्यो ❀ राजा बहुत गयो शरमाय।
ऊदन बोले महराजा ते ❀ दोऊ हाथ जोरि शिर नाय॥
आजु साँकरा परिमालिक पर ❀ औ चढ़ि अवा पिथौराराय।
आयसु पावैं महराजा की ❀ जावैं नगरमोहोबा धाय॥
मेरी माता सम मल्हना है ❀ तापर परी आपदा आय।
बीजक समझौ तुम गाँजर का ❀ दादा कैद देउ छुड़वाय॥
घोड़ पपीहा जखमी ह्वैगा ❀ जूझे स्वानमती के भाय।
जोगा भोगा की बदली मा ❀ सबियाँकनउजजायबिकाय॥
घोड़ पपीहा की यउजी मा ❀ भूरी हथिनी देउ मँगाय।
जोगा भोगा के बदले मा ❀ लाखनि संग देउ पठवाय॥
बारह बरसन का अरसा भा ❀ पैसा मिला न गाँजर क्यार।
तीनि महीना औ त्यारह दिन ❀ गाँजर खूब कीन तलवार॥
लैकै पैसा सब गाँजर का ❀ औ भरिदीन खजाना आय।
लाखनि राना को सँग देवो ❀ तब छातीका डाह बुताय॥

कीन्हीं किरिया लखराना है ❁ मोहबे चलब तुम्हारे साथ ।
आज्ञा देवो लखराना को ❁ साँची सुनो भूमिके नाथ ॥
बातें सुनिकै बघऊदन की ❁ जयचँद बहुत गयो घबड़ाय ।
बोलि न आवा महराजा ते ❁ मुँहकापानगयोकुम्हिलाय ॥
थर थर काँपन देही लागी ❁ शिरते छत्र गिरा भहराय ।
करतब अपनी पर शोचत भा ❁ यहु महराज कनौजीराय ॥
कीन बहाना फिरि ऊदनते ❁ बोला कनउज का महिपाल ।
कीन हँसौवा हम आल्हा ते ❁ लाला देशराज के लाल ॥
जितनी फौजें हैं कनउज मा ❁ सो लैलेउ बनाफरराय ।
रुपिया पैसा जो कछु चाहौ ❁ तुम्हरो मालखजाना आय ॥
लाखनिराना को तिलका सों ❁ माँगो जाय बनाफरराय ।
हमरी ठकुरी नहिं लाखनि पर ❁ तुमते साँच दीन बतलाय ॥
कैद करैया को आल्हा को ❁ नीके जाउ लहुरवाभाय ।
सुनिजगनायकऊदनआल्हा ❁ तीनों चले शीशको नाय ॥
ऊदन पहुँचे ढिग लाखनिके ❁ औ सब हाल कहा समुझाय ।
चढ़ा पिथौरा दिल्लीवाला ❁ गाँभा नगर मोहोबा आय ॥
बिदा मांगिकै अब माता सों ❁ चलिये बेगि कनौजीराय ।
इतना सुनिकै लाखनि चलिभे ❁ सँगमा लिहे लहुरवाभाय ॥
गये तिलका के महलन मा ❁ दोऊ अरे तड़ाका धाय ।
सोने चौकी दोऊ बैठे ❁ माताचरणन शीश नवाय ॥
कही हकीकति सब तिलकाते ❁ यहु रणबाघु लहुरवाभाय ।
आयसु पावैं लखराना जो ❁ देखैं नगर मोहोबा जाय ॥
सुनिकै बातैं उदयसिंह की ❁ तिलका गई सनाका खाय ।
बारह रानिन मा इकलौना ❁ साँची सुनो बनाफरराय ॥

सो चलिजैहैं जो मोहबे का ❀ हमरी जियत मौत ह्वै जाय।
इतना कहिकै रानी तिलका ❀ तुरतै बाँदी लीन बुलाय॥
कहि समुझावा त्यहि बाँदीका ❀ पदमै खबरि जनावो जाय।
करि शृङ्गार महल अपने मा ❀ राखै बहू तहाँ बिलमाय॥
इतना सुनिकै बाँदी दौरी ❀ रानी खबरि जनाई जाय।
सुनिकै बातैं त्यहि बाँदी की ❀ लीन्ह्यो गंगनीर मँगवाय॥
हनवन कीन्ह्यो गंगाजल सों ❀ रेशम सारी लीन मँगाय।
ओढ़ी सारी काशमीर की ❀ चोली बन्दक से अधिकाय॥
पैर महाउर को लगवायो ❀ नैनन सुरमा लीन लगाय।
कड़ा के ऊपर छड़ा बिराजैं ❀ त्यहिपर पायजेब हहराय॥
पहिरि करगता करिहाँयें मा ❀ नइ नइ चुरियाँ लीन मँगाय।
खरिखरिबहियाँहरिहरिचुरियाँ❀ शोभा कही बूत ना जाय॥
अगे अगेला पिछे पछेला ❀ तिन बिच ककना करैं बहार।
जोसन पट्टी बाँधि बजुल्ला ❀ टाड़ै भुजन केर शृंगार॥
को गति बरणै तहँ हमेल कै ❀ चमकै हार मोतियन क्यार।
नथुनीलटकन पहिरिनासिका ❀ कानन करनफूल को धार॥
गुज्झी पहिरी दोउ कानन में ❀ टीका मस्तक करै बहार।
बेंदिया शिर पर सोनेवाली ❀ पैरन बिछिया की झनकार॥
अनवट पहिरे द्वउ अँगुठन में ❀ हाथन लीन आरसी धार।
मुँदरी छल्ला सब अँगुरिन मा ❀ रानी खूब कीन शृंगार॥
बिदा माँगिकै महतारी ते ❀ ह्याँ चलि दिये कनौजाराय।
द्वार राखिकै उदयसिंह का ❀ रानी महल गये फिरि आय॥
रानी कुसुमा आवत दीख्यो ❀ तुरतै उठी तड़ाका धाय।
पकरिकै बाहू द्वउ प्रीतम की ❀ पलँगा उपर लीन बैठाय॥

पंसासारी को मँगवावा ❀ सखियाँ लाईं तुरत उठाय ।
बड़ी खातिरी करि पदमा कै ❀ खेलन लाग कनौजीराय ॥
कुसुमा बोली तब लाखनि ते ❀ स्वामी हाल देउ बतलाय ।
किह्यो तयारी तुम कहँना की ❀ काहे गयो अचाका आय ॥
सुनिकै बातैं ये पदमा की ❀ बोला तुरत कनौजीराय ।
किरिया कीन्ही हम ऊदन ते ❀ औ छाती लग गंग मँझाय ॥
जबै मोहोबे को तुम चलिहौ ❀ चलिबे साथ बनाफरराय ।
आजु साँकरा परिमालिक पर ❀ औ चढ़िआवा पिथौराराय ॥
संगै जैबे हम ऊदन के ❀ करिबे जूझ तहाँ पर जाय ।
जो मरिजैबे समरभूमि मा ❀ तौ यश रही लोकमा छाय ॥
जो बचि अइबे हम मोहबे ते ❀ रानी संग करब फिरि आय ।
सुनिकै बातैं लखराना की ❀ पदमिनि गिरी पछारा खाय ॥
होश उड़ाने महरानी के ❀ पीले अंग भये अधिकाय ।
थर थर देही काँपन लागी ❀ रोवाँ सकल उठे तन्नाय ॥
यह गति दीख्यो महरानी कै ❀ तब गहिलीन कनौजीराय ।
चूम्यो चाट्यो बदन लगायो ❀ धीरज फेरि दीन अधिकाय ॥
रानी पदमिनि पलँगा बैठी ❀ नैनन आँसू रही बहाय ।
बोलन लागनि तब पदमिनि ते ❀ रानी काह गयी बौराय ॥
बिटिया आहिउ का बनियाकी ❀ जो रण सुनिकै गयी डराय ।
भय न राखैं छत्रानी मन ❀ रानी साँच दीन बतलाय ॥
सुनि सुनि बातैं लखराना की ❀ रानी गयी सनाका खाय ।
मनमा सोचै मनै बिचारै ❀ मनमन बार बार पछिताय ॥
धीरज धरिकै पदमिनि बोली ❀ प्रीतम साँच देउँ बतलाय ।
कहे दुकानिन के लाग्यो ना ❀ नहिं सब जैहै काम नशाय ॥

कहाँ कनौजी तुम महराजा ❀ चाकर कहाँ बनाफरराय।
नौकर स्वामी की समता ना ❀ बिद्या काह दयी बिसराय॥
बनते कन्या धरि आई ती ❀ त्यहिके अहीं बनाफरराय।
अहीं टुकरहा परिमालिक के ❀ तुम्हरी कीन गुलामी आय॥
साथ गुलामन औ राजा का ❀ कहँ तुम पढ़ा कनौजीराय।
किरिया कीन्ही जो ऊदन ते ❀ स्वामी ताहि देउ बिसराय॥

सवैया

स्वस्थिर चित्त बिचार करौ यह नाथ सबै बिधि बात अनैसी।
रूप औ यौवन छाँड़ि तिया सोपियाक्यहिभांतिकहौतुमऐसी॥
धीरजवन्त कुलीनन की गति नाथ बिचारि कहौ तुम कैसी।
बात सुहात नहीं ललिते अनरीतिकि प्रीतिकरी तुम जैसी॥

सुनिकै बातैं ये पदमिनि की ❀ बोला फेरि कनौजीराय।
कउने गँवारे की बिटिया है ❀ हमते टेढ़ि मेढ़ि बतलाय॥
ऐसी बातैं अब बोलेना ❀ दशनन चापि जीभको लेय।
जो नहिं जावैं सँग ऊदन के ❀ तौ सब जगत अयशकोदेय॥
कहा न मानैं हम काहू को ❀ निश्चय जानु मोर प्रस्थान।
इतना सुनिकै कुसुमा बोली ❀ स्वामी करो बचन परमान॥
राति बसेरा करि महलन मा ❀ भुरहीं कूच दियो करवाय।
म्वरे संगकी सखी सहिलरी ❀ दुइदुइ बालक रहीं खिलाय॥
दुनियादारी कछु जानी ना ❀ कबहुँ न धरा सेज पै पायँ।
कैसे काटब हम यौबन का ❀ प्रीतम साँच देउ बतलाय॥
तुम्हैं मोहोबे का जाना रह ❀ नाहक लाये गवन हमार।
मई बाप का फिरि गरिआवै ❀ दैकै बार बार धिकार॥

सुनिसुनि बातैं ये पदमिनिकी ❀ बोला फेरि कनौजीराय ।
लौटिमोहोबे ते आवब जब ❀ रानी संग करब तब आय ॥
द्वार बनाफर उदयसिंह हैं ❀ रानी मोह देउ बिसराय ।
संकट टारे बिन मल्हना के ❀ हमको भोगरोगदिखलाय ॥
साथ बनाफर के हम जैहैं ❀ अइहैं जीति पिथौराराय ।
कीरति गैहैं सब दुनिया मा ❀ रानी संग करब तब आय ॥
इतना कहिकै लाखनि चलिभे ❀ रानी पकरिलीन बैठाय ।
करी बदरिया तुमका ध्यावैं ❀ कउँधाबीरन की बलि जायँ ॥
झिमिकिकैबरसोम्बरेमहलनमा ❀ कन्ता एक रैनि रहिजायँ ।
इतना सुनिकै लाखनि बोले ❀ रानी साँच देयँ बतलाय ॥
पाथर बरसैं आसमान ते ❀ तबहूँ न रहैं कनौजीराय ।
लौटि मोहोबे ते आवब जब ❀ रानी संग करब तब आय ॥
तेज न रैहै जो देहीमा ❀ को मुँह धरी पिथौराक्यार ।
मुर्चा परिहै बादशाह ते ❀ लड़िहैं बड़े बड़े सरदार ॥
लौटि मोहोबे ते आवब जब ❀ रानी कहा न टारब त्वार ।
अब हम जावत हैं जल्दी सों ❀ द्वारे उदयसिंह सरदार ॥
सुनिकै बातैं ये लाखनि की ❀ रानी फेरि लीन बैठाय ।
कैसे रहिबे हम कनउज में ❀ स्वामी देउ मोहिं बतलाय ॥
परिगा अरभा तब मोहबे मा ❀ यहु मरिजाय बनाफरराय ।
हाय! पियारे ज्यहि प्रीतमको ❀ ज्यानी समयदीन अलगाय ॥
सुर्गा भवानी आन्हि भक्ता ❀ इन्दल सहित लहुरवाभाय ।
सोई भवानी ज्यहि प्रीतमको ❀ हमते अलग दीन करवाय ॥
काहे जनमी यावलि इनका ❀ ई दहिजार बड़े बरियार ।
सुनवाँ फुलवा चित्ररेखा ❀ तीनों होउ बिना भरतार ॥

करो बियारी तुम महलन मा ❀ पलँगा उपर करो विश्राम।
मोरि जवानी स्वारथ करिकै ❀ तब तुम जाउ मोहोबेग्राम॥
सुनिकै बातैं ये पदमिनि की ❀ बोला फेरि कनौजीराय।
खड़ा बनाफर है द्वारे मा ❀ रानी काह गई बौराय॥
अब तुम ध्यावो फूलमती का ❀ तेई फेरि मिलैहैं आय।
धर्म पतिब्रत का छाँड़यो ना ❀ याही कहैं तोहिं समुझाय॥
गारी देवो नहिं ऊदन का ❀ प्यारी मित्र हमारो जान।
करैं बियारी नहिं महलन में ❀ प्यारी सत्य प्रतिज्ञा मान॥
सुनिकै बातैं लखराना की ❀ पदमा ठीक लीन ठहराय।
प्रीतम हमरे अब मनिहैं ना ❀ जैहैं अवशि मोहोबा धाय॥
यहै सोचिकै मन अपने मा ❀ रानी बोली फेरि सुनाय।
डोला हमरा सँगमा लैकै ❀ राजन कूच देव करवाय॥
मोरि लालसा यह ड्वालति है ❀ बालम मोहबा देउ दिखाय।
बनोबास को रघुनन्दन गे ❀ सीता लैगे साथ लिवाय॥
सुर औ असुरन के संगर मा ❀ दशरथ साथ केकयी माय।
लै सतिभामा कृष्णचन्द्र सँग ❀ भौमासुरै पछारा जाय॥
जिन मर्य्यादा यह बाँधी है ❀ तेई नारि संग मा लीन।
बड़े प्रतापी कृष्णचन्द्र जी ❀ सोऊ पन्थ सत्य यह कीन॥
आगे चलिगे जो क्षत्री हैं ❀ तिनमग चलनचहीमहराज।
संग में लैकै बालम चलिये ❀ करिये सत्य धर्म को काज॥
इतना कहिकै रानी पदमा ❀ आँखिन भरे आँसु अधिकाय।
तब लखराना लै रुमाल को ❀ आँसू पोंछि कहा समुझाय॥
धीरज राखो चार मास लों ❀ पँचये मिलब तुम्हैं हम आय।
सत्य सनेहू ज्यहि ज्यहि पर है ❀ सो त्यहि मिलै तड़ाका धाय॥

यामें संशय कछु नाहीं है ❀ ब्राह्मण रोज कहैं यह गाय ।
शास्त्र पुराणन की बानी यह ❀ रानी तुम्हैं दीन बतलाय ॥
धर्म पतिव्रत ज्यहि नारी के ❀ प्यारी प्रीतम के अधिकाय ।
कहा न टारै सो प्रीतम का ❀ चहु जस परै आपदा आय ॥
जो बिलमावो अब महलन मा ❀ तौ सब कीरति जाय नशाय ।
हँसैं बनाफर म्वहिं मारग मा ❀ मेहरा बड़े कनौजीराय ॥
शोहरा फैली यहु दुनिया मा ❀ हँसिहैं जाति बिरादर भाय ।
मेहरा लड़िका रतीभान का ❀ सँगमा लिहे जनाना जाय ॥
तैसो समया अब नाहीं है ❀ जैसे समय भये रघुराय ।
बड़े प्रतापी कृष्णचन्द्र जी ❀ द्वापर जन्म लीन तिन आय ॥
कलियुग बाबा की रजधानी ❀ रानी कहा गई बौराय ।
दया धर्म दुनिया ते उठिगे ❀ दर दर सत्य पछारा जाय ॥
घर घर कुलटा हैं कलियुग में ❀ नर नर पाप भरा अधिकाय ।
जर जर जरना है दुनिया मा ❀ हर हर हरी हरी बिसराय ॥
आखिर मरना है दुनिया मा ❀ लरना धर्म हमारा आय ।
इतना कहिकै चला कनौजी ❀ रानी फेरि लीन बैठाय ॥
दिया बुझायो तुम परहुल का ❀ इतना किह्यो राह में जाय ।
पान पिकारी का डारो ना ❀ चहुतन धर्जी धर्जी उड़ि जाय ॥
कीरति प्यारी नर नारिन के ❀ निन्दा सुने मौत है जाय ।
नहिंतो ठाकुर बघऊदन जी ❀ लाखनि लाखिन रहे बुलाय ॥
हांक पायकै बघऊदन कै ❀ तुरतै चला कनौजीराय ।
डारि गिलिकै बघऊदन को ❀ जयचँद सभा गयो फिरिधाय ॥
मत्था धरिकै द्वउ चरणन मा ❀ लाखनि ठाढ़ भयो शिरनाय ।
तब फिरि पूँछ्यो जयचंदराजा ❀ आयसु फेरि दीन हर्षाय ॥

आल्हा ऊदन को बुलवायो ❀ लाखनि बाँह दीन पकराय ।
तुम्हैं कनौजी का सौंपति हैं ❀ दोऊ सुनो बनाफरराय ॥
सुनिकै बातैं महराजा की ❀ दोऊ भाय बनाफरराय ।
बोलन लागे महराजा ते ❀ राजन साँच देयँ बतलाय ॥
जहाँ पसीना लखराना का ❀ तहँ गिरि जैहैं मूड़ हमार ।
यामें संशय कछु नाहीं है ❀ मानो सत्य भूमि भरतार ॥
इतना कहिकै आल्हा ऊदन ❀ लाखनि साथ चले शिरनाय ।
बाजे डंका अहतंका के ❀ हाहाकार शब्द गे छाय ॥
चारों राजा गाँजर वाले ❀ बारहु कुँवर बनौधा केर ।
लला तमोली धनुवाँ तेली ❀ इनते कहा चँदेले टेर ॥
लाखनि तुमका हम सौंपत हैं ❀ रक्षा किह्यो सबै सरदार ।
बंश लकड़िया यह इकली है ❀ इतना लीन्ह्यो खूब बिचार ॥
इतना कहिकै जयचँद राजा ❀ पंडित लीन्ह्यो तुरत बुलाय ।
प्रथम पुजायो श्रीगणेश को ❀ पाछे तिलक दिह्यो करवाय ॥
गजाननहिं अरु लम्बोदर को ❀ तीसर गणाध्यक्ष को ध्याय ।
सुमिरि भवानीसुत गणेश को ❀ लेश कलेश दीन बिसराय ॥
रानी तिलका पूजन कीन्ह्यो ❀ भूरी हथिनी तुरत मँगाय ।
थाती सौंप्यो लखराना को ❀ हथिनी सम्मुख बैन सुनाय ॥
फिरि कर पकर्‍यो लखराना का ❀ ऊदन हाथ दीन पकराय ।
मोहिं अभागिनि के बालक की ❀ रक्षा किह्यो बनाफरराय ॥
सुनिकै बातैं महरानी की ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ।
जहाँ पसीना लखराना का ❀ तहँ हम मूड़ देयँ कटवाय ॥
घाटि न जानैं हम भाई ते ❀ माता साँच देयँ बतलाय ।
फिकिरिनराख्योलखरानाकी ❀ इनको बार न बाँको जाय ॥

इतना कहिकै महरानी ते ❀ ऊदन फेरि कहा ललकार।
करो तयारी अब मोहबे की ❀ सबियाँ शूरबीर सरदार॥
हुकुम पायकै बघऊदन का ❀ सबहिन बाँधिलीन हथियार।
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❀ बाँके घोड़न भे असवार॥
पायँ लागिकै दाउ तिलका के ❀ भूरी चढ़ा कनौजीराय।
बजे नगारा त्यहि समया मा ❀ हाहाकार शब्द गा छाय॥
मारु मारु कै मोहरि बाजी ❀ बाजी हाब हाब करनाल।
खर खर खर खर कै रथ दौरे ❀ रब्बा चले पवन की चाल॥
आगे हलका भे हाथिन के ❀ पाछे चलन लाग असवार।
बीच म डोला महरानिन के ❀ हैगे अगलबगल सरदार॥
भूरी हथिनी पर लाखनि हैं ❀ ऊदन बेंदुल पर असवार।
आल्हा बैठे पचशब्दा पर ❀ इन्दल सहित भये तय्यार॥
कौनि सवारी हरनागर पर ❀ मैने जानु चँदेले क्यार।
घोड़ मनोहर पर देबा हैं ❀ सय्यद सिर्गापर असवार॥
लला तमोली धनुवाँ तेली ❀ येऊ लिये ढाल तलवार।
पैदल सेना अनगन्ती सब ❀ गर्जत चली समर त्यहिबार॥
चारिकोस जब परहुल रहिगा ❀ लाखनि डेरा दीन डराय।
लाखनि बोले तहँ आल्हा ते ❀ साँची सुनो बनाफरराय॥
छिनना अंश पर परहुल मा ❀ सो त्यहि आप देउ उतराय।
बचन मानिकै हम पदमिन के ❀ बादा कौन नहाँ पर भाय॥
छिनना खालत है जियरे मा ❀ मानो कही बनाफरराय।

सिहा की लड़ाई

सुनिकै बातैं कनवजिया की ❀ आल्हा धावन लीन बुलाय ॥
लिखिकै चिट्ठी दै धावन को ❀ परहुल तुरत दीन पठवाय ।
जहाँ कचहरी है सिहा कै ❀ धावन तहाँ पहूँचा जाय ॥
चिट्ठी दैकै महराजा का ❀ बाकी हाल कहा सिरनाय ।
पढ़िकै चिट्ठी सिहा जरिगा ❀ डंका तुरत दीन बजवाय ॥
धावन चलिभा तब परहुल ते ❀ लश्कर फेरि पहूँचा आय ।
कही हकीकति सब आल्हा ते ❀ तब जरिगये कनौजीराय ॥
हुकुम लगायो अपने दलमा ❀ डंका तुरत दीन बजवाय ।
सजिकै सेना दुहुँ तरफा ते ❀ पहुँची समरभूमि में आय ॥
लाखनिराना इत हाथी पर ❀ वैसो परहुल का सरदार ।
भाला छूटे असवारन के ❀ पैदल चलन लागि तलवार ॥
झुके सिपाही दुहुँ तरफा के ❀ लागे करन भड़ाभड़ मार ।
मूँड़न केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार ॥
बड़ी लड़ाई भै परहुल में ❀ लाखनि राना के मैदान ।
लड़ैं सिपाही दुहुँ तरफा के ❀ कटि २ गिरैं सुघरुवाज्वान ॥
उठि उठि ठाकुर लरैं खेत में ❀ कहुँ कहुँ रुण्ड करैं तलवार ।
मारे मारे तलवारिन के ❀ नदिया बही रक्त की धार ॥
जैसे भेड़िन भेड़हा पैठै ❀ जैसे अहिर बिडारै गाय ।
तैसे मारैं ऊदन ठाकुर ❀ सिहा फौज गई बिललाय ॥
भागीं फौजैं जब परहुल की ❀ लाखनि हाथी दीन बढ़ाय ।
लाखनि राना के मुर्चा मा ❀ सिहा आपु पहूँचा आय ॥
सूँढ़ि लपेटा हाथी भिड़िगे ❀ दोऊ लड़न लागि सरदार ।

सिंहा मारयो तलवारी को ❀ लाखनिलीन ढाल पर वार ॥
भाला मारयो लखराना ने ❀ नीचे गिरा महाउत आय।
बलछी मारा सिंहा ठाकुर ❀ लाखनि लैगे वार बचाय ॥
खाली वार परी सिंहा की ❀ लाखनि तुरत लीन बँधवाय।
जायकै पहुँचे फिर परहुल मा ❀ तुरतै दिया दीन गिरवाय ॥
लैकै फौजै सिंहा ठाकुर ❀ संगै कूच दीन करवाय।
कोस अढ़ाई कुड़हरि रहिगा ❀ डेरा तहाँ दीन डरवाय ॥
भैने बोल्यो परिमालिक का ❀ मानो कही बनाफरराय।
गंगा ठाकुर कुड़हरि वाला ❀ कोड़ा घोड़ा लीन चुराय ॥
सवा लाख का सो कोड़ा है ❀ जो बनववा रजापरिमाल।
महामुशकिलिनबोड़ादीन्ह्यो ❀ कोड़ा नहीं दीनत्यहिकाल ॥
कौन प्रतिज्ञा हम कुड़हरिमा ❀ लौटति नगर ल्याब लुटवाय।
साँची करिये यहि समया मा ❀ मानो कही बनाफरराय ॥
इतना सुनिकै ऊदन जरिगे ❀ तुरतै हुकुम दीन फरमाय।
लागें तोपैं अब कुड़हरि मा ❀ सबियाँ गर्द देउ मिलवाय ॥
इतना सुनिकै लाखनि बोले ❀ मानो कही बनाफरराय।
गंगाधर कुड़हरि का राजा ❀ मामा सगो हमारो आय ॥
लिखिकै चिट्ठी दै धावन को ❀ उनको खबरि देउ करवाय।
भैने तुम्हरे लाखनि आये ❀ कोड़ा आपु देउ पठवाय ॥
सुनिकै बातैं लखराना की ❀ चिट्ठी लिखा बनाफरराय।
सोने धावन को बुलवायो ❀ औ कुड़हरिको दीनपठाय ॥

गंगा ठाकुर की लड़ाई

लैकै चिट्ठी धावन चलिभा ❀ औ दरबार पहुँचा जाय।
चिट्ठी दीन्ह्यो गंगाधर को ❀ धावन हाथ जोरि शिरनाय॥
कही हकीकति सब गंगा ते ❀ जो कुछ कह्यो बनाफरराय।
सुनि संदेशा पढ़ि चिट्ठी को ❀ ठाकुर क्रोध कीन अधिकाय॥
तुरत नगड़ची को बुलवायो ❀ डङ्का दीन तहाँ बजवाय।
कह्यो सँदेशा फिरि धावन ते ❀ आल्हे खबरि जनावो जाय॥
राजा आवत समरभूमि में ❀ कोड़ा लेउ तहाँ पर आय।
इतना सुनिकै धावन चलिभा ❀ आल्हे खबरि बताई जाय॥
बाजे डङ्का ह्याँ कुड़हरि मा ❀ क्षत्री होन लागि तय्यार।
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❀ बाँके घोड़न मे असवार॥
झीलमबखतरपहिरिसिपाहिन ❀ हाथ म लई ढाल तलवार।
रणकी मौहरि बाजन लागी ❀ रण का होन लागव्यवहार॥
चढ़िकै हथिनी गंगा ठाकुर ❀ तुरतै कूच दीन करवाय।
चारि घरी का अरसा गुजरा ❀ पहुँचे समरभूमि मा आय॥
जहँना हाथी गंगाधर का ❀ तहँ पर गये कनौजीराय।
कहि समुझावा भल मामा का ❀ कोड़ा अबै देउ मँगवाय॥
नहीं बनाफर उदयसिंह जी ❀ कुड़हरि गर्द देयँ करवाय।
कौन दुसरिहा है आल्हा का ❀ सरबर करै समर में आय॥
त्यहिते तुमका समुझाइत है ❀ मामा कूच देउ करवाय।
इतना सुनिकै गंगा जरिगे ❀ बोले सुनो कनौजीराय॥
काह हकीकति है आल्हा कै ❀ हमते कोड़ा लेयँ मँगाय।
एक बनाफर कै गिन्ती ना ❀ लाखन चढ़ैं बनाफर धाय॥

हमते कोड़ा को पैहैं ना ❀ मैंने साँच दीन बतलाय।
इतना सुनिकै चले कनौजी ❀ तम्बुन फेरि पहूँचे आय॥
बत्ती दैकै दुहुँ तरफा ते ❀ तोपन दीन्हीं रारि मचाय।
अररर अररर गोला छूटे ❀ हाहाकार शब्द गा छाय॥
गोला लागै ज्यहि हाथी के ❀ मानो गिरा धौरहर आय।
जउने ऊँट के गोला लागै ❀ तुरतै कूल जुदा ह्वै जाय॥
गोला लागै ज्यहि चत्री के ❀ साथै उड़ा चील्ह अस जाय।
जउने रथमा गोला लागै ❀ ताके टूक टूक ह्वै जायँ॥
गोला लागै ज्यहि घोड़े के ❀ मानो मगर कुल्याचै खायँ।
अँधाधुंध भा दूनों दलमा ❀ धुवना रहा सरग में छाय॥
चुकी बरूदें जब तोपन की ❀ तब फिरि मारु बन्द ह्वै जाय।
दूनों दल आगे को बढ़िगे ❀ रहिगा एक खेत रण आय॥
कहुँकहुँ भाला कहुँकहुँ बलछी ❀ कहुँ कहुँ कड़ाबीन की मार।
गोली ओला सम कहुँ बरसैं ❀ कोताखानी चलैं कटार॥
मारे मारे तलवारिन के ❀ नदिया बही रक्त की धार।
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार॥
ना मुँह फेरैं कुड़हरि वाले ❀ ना ई मोहबे के सरदार।
कडँगा लगकनि बिजुली चमकनि ❀ सपसप चलै खूब तलवार॥
भागि सिपाही कुड़हरि वाले ❀ अपने डारि डारि हथियार।
गंगा ठाकुर के मुर्चा मा ❀ आवा उदयसिंह सरदार॥
ऐंड़ लगावा तब बेंदुल के ❀ हाथी उपर पहूँचा जाय।
भाला मारा बघऊदन ने ❀ गंगा लैगा वार बचाय॥
तबलौं आये आल्हा ठाकुर ❀ हाथी भिड़ा बराबरि आय।
ऐसे मारो पचशब्दा को ❀ तुरतै कैद लीन करवाय॥

लैकै फौजै ऊदन ठाकुर ❀ कुड़हरि शहर लीन लुटवाय।
काछी कुरमी तेली भागे ❀ कोरी भागि थान बिसराय॥
दर्जी भुर्जी सब भागे तहँ ❀ भागे बड़े बड़े महराज।
कौन बखानै त्यहि समया कै ❀ रहिगै नहीं क्यहू कछु लाज॥
साँच बातकरि जगनायक कै ❀ दीन्ह्यों लूट बन्दकरवाय।
लैकै कोड़ा बौना चलिभा ❀ आल्हा नजरि गुजारा जाय॥
कोड़ा दीन्ह्यो जगनायक को ❀ आल्हा तुर्त तहाँ बुलवाय।
कैद छुड़ाय दई गंगा की ❀ आदर कियो कनौजीराय॥
लैकै फौजै गंगा ठाकुर ❀ साथै कूच दीन करवाय।
चलिभालश्करकनवजियाका ❀ यमुना उपर पहूँचा जाय॥
मज्जन करिकै श्रीयमुनाजल ❀ पाछे शम्भुचरण धरि ध्यान।
संध्या तर्पण बिधिवत करिकै ❀ दीन्ह्यो द्विजन तहाँ पर दान॥
कूच करायो श्रीयमुना ते ❀ कलपी पास पहूँचे जाय।
लैकै फौजै लाखनिराना ❀ कलपी शहर लीन लुटवाय॥
ऊदन बोले तब लाखनि ते ❀ यहु का कीन कनौजीराय।
बदले कुड़हरि के लुटवावा ❀ मानो साँच बनाफरराय॥
बातैं सुनिकै लखराना की ❀ देबा कहा तुरत शिरनाय।
साँचे धर्मन के राँचे हैं ❀ याँचे मिले कनौजीराय॥
कर्म कुलीनन के कीन्हे हैं ❀ साँचे मित्र बनाफरराय।
बातैं सुनिकै ये देबा की ❀ बोले तुरत उदयसिंहराय॥
स्याबसिस्याबसिलाखनिराना ❀ कीन्ह्यो धर्म युद्धसों रार।
काहे न होवै यश चत्रिन को ❀ ऐसे युद्ध बीर बरियार॥
इतना कहिकै उदयसिंह ने ❀ तुरतै कूच दीन करवाय।
नदी बेतवा के ऊपर मा ❀ छोरी कमर बनाफरराय॥

हमते कोड़ा को पैहैं ना ❀ मैंने साँच दीन बतलाय।
इतना सुनिकै चले कनौजी ❀ तम्बुन फेरि पहूँचे आय॥
बत्ती देकै दुहुँ तरफा ते ❀ तोपन दीन्हीं रारि मचाय।
अररर अररर गोला छूटे ❀ हाहाकार शब्द गा छाय॥
गोला लागै ज्यहि हाथी के ❀ मानो गिरा धौरहर आय।
जउने ऊँट के गोला लागै ❀ तुरतै कूल जुदा ह्वै जाय॥
गोला लागै ज्यहि क्षत्री के ❀ साथै उड़ा चील्ह अस जाय।
जउने रथमा गोला लागै ❀ ताके टूक टूक ह्वै जायँ॥
गोला लागै ज्यहि घोड़े के ❀ मानो मगर कुल्याचै खायँ।
अँधाधुंध भा दूनों दलमा ❀ धुवना रहा सरग में छाय॥
चुकी बरूदैं जब तोपन की ❀ तब फिरि मारु बन्द ह्वै जाय।
दूनों दल आगे को बढ़िगे ❀ रहिगा एक खेत रण आय॥
कहुँकहुँ भाला कहुँकहुँ बलछी ❀ कहुँ कहुँ कड़ाबीन की मार।
गोली गोला सम कहुँ बरषै ❀ कोताखानी चलैं कटार॥
मारे मारे तलवारिन के ❀ नदिया बही रक्त की धार।
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार॥
ना मुंह फेरैं कुड़हरि वाले ❀ ना ई मोहबे के सरदार।
कहुँभालपकनिबिजुलीचमकनि ❀ रणमा चलै खूब तलवार॥
भागि सिपाही कुड़हरि वाले ❀ अपने डारि डारि हथियार।
गंगा ठाकुर के मुर्चा मा ❀ आना उदयसिंह सरदार॥
एक नचावा तब बेंदुल के ❀ हाथी उपर पहूँचा जाय।
भाला मारा यदुनन्दन ने ❀ गंगा लैगा वारि बचाय॥
तबलौं आगे आल्हा ठाकुर ❀ हाथी भिड़ा बराबरि आय।
कैकै मोर्चा रणगंगा को ❀ तुरतै कैद लीन करवाय॥

बन्द कुठरिया माहिल ठाकुर ❀ मल्हना गई सनाकाखाय ।
चिट्ठी दीन्ह्यो फिरिजगनायक❀ औसबहाल कह्यो समुझाय ॥
पढ़िकै चिट्ठी मल्हना रानी ❀ औ जगनायक संग लिवाय ।
जहाँ कचहरी परिमालिक की ❀ चिट्ठी तहाँ दिखाई जाय ॥

छन्द ॥

पढ़ि पत्रतहाँ । लहिमोद महाँ ॥ परिमाल जहाँ तजिशोकतहाँ ॥
भवनमें आय । महासुख पाय ॥ लखिकैदतहाँ । उरई को जहाँ ॥
महरानि गई । तजि बन्धु दई ॥ अतिबेगचला । उरईको लला ॥
पृथिराज जहाँ । स्वउआयतहाँ ॥ सबहालकहा ॥ बिपदाजो लहा ॥

सुनि कै बातैं सब माहिल की ❀ यहु महराज पिथौराराय ।
घाट बयालिस तेरसघाटी ❀ सबियाँतुरतदीन रुकवाय ॥
पहरा घूमैं कहुँ पैदल का ❀ कहुँ कहुँ फिरैं घोड़असवार ।
अनँद बधैया मोहबे बाजै ❀ घर घर होयँ मंगलाचार ॥
फाटक बन्दी है मोहबे मा ❀ घरका अवै न बाहर जाय ।
आल्हा ऊदन की कीरति तहँ ❀ घर घर रहे नारि नर गाय ॥
आल्ह मनौआ पूरण करिकै ❀ ध्यावों रामचन्द्र महराज ।
जलथलजनमोंजहँदुनियामा ❀ होवों तहाँ भक्त शिरताज़ ॥
पिता मातु के मैं चरणन का ❀ ध्यावों बार बार शिरनाय ।
जिन बल गाथा यह पूरण भै ❀ भुजबल नहीं भरोसा भाय ॥
खेत छूटिगा दिननायक सों ❀ भंडा गड़ा निशाको आय ।
तारागण सब चमकन लागे ❀ संतन धुनी दीन परचाय ॥
आशिर्बाद देउँ मुन्शीसुत ❀ जीवो प्रागनरायण भाय ।
हुकुम तुम्हारो जो पावत ना ❀ ललिते कहत गाथ कसगाय ॥

डेरा गड़िगे तहँ क्षत्रिन के ❀ तम्बू गड़ा बनाफर क्यार।
जहँ महराजा लाखनि बैठे ❀ भारी लाग तहाँ दरबार॥
आल्हा ठाकुर के तम्बू मा ❀ भेने गयो चँदेले क्यार।
कलम दवाइति कागज लैकै ❀ आल्हा पत्र कीन तैयार॥
चिट्ठी दीन्ही आल्हा ठाकुर ❀ बोले उदयसिंह सरदार।
खबरि जनावो तुम मल्हना को ❀ आये कनउज राजकुमार॥
हमरी दादा की दिशि ह्वैकै ❀ रानिन कीन्ह्यो दण्ड प्रणाम।
काह हकीकति है पिरथी कै ❀ सुखसों करो महल विश्राम॥
जितनी बिल्ली हैं दिल्ली की ❀ किल्ली पकरि नचावों माय।
तौ तौ साँचे हम ऊदन हैं ❀ यह तुम कह्यो सँदेशा जाय॥
सुनि संदेशा बघऊदन का ❀ हरनागरै लीन कसवाय।
चढ़ा तड़ाका हरनागर पर ❀ जगनिकयथातथ्यशिरनाय॥
नदी बेतवा को उतरत भा ❀ पहुँचत भयो मोहोबेद्वार।
फाटक खोल्यो दरबानी ने ❀ पहुँचे राजभवन सरदार॥
रानी मल्हना के महलन मा ❀ माहिल आयगयो त्यहिवार।
तबलों पहुँचे जगनायक जी ❀ बोला उरई का सरदार॥
कबलों अइहैं आल्हा ठाकुर ❀ नीके हवैं बनाफरराय।
इतना सुनिकै जगनायक जी ❀ तुरतै बोले वचन बनाय॥
हिंया न अइहैं आल्हा ठाकुर ❀ अब चहु कऊ मनावनजाय।
उनकै खातिर कनवजिया घर ❀ नीके द्वऊ बनाफरराय॥
पारस लैकै तुम कुठरी ते ❀ पिरथी पास देउ पहुँचाय।
लैकै कुंजी जगनायक जी ❀ कुठरी खोलि दीनबतलाय॥
उठे झड़ाका माहिल ठाकुर ❀ कुठरी आटे तड़ाका धाय।
साँकरि मारी जगनायक जी ❀ ताला तुरत दीन डरवाय॥

आल्हखण्ड

नदी बेतवा पर लाखनि पृथी-राज का प्रथम युद्ध वर्णन

सवैया

रामसिया पद दोउ मनाय सो ध्याय शिवा शिव पाउँ जथारथ।
कीरति कृष्ण बखान करों जिनके बलसों बलवान भे पारथ॥
भीषम कर्ण सुयोधन ज्वान महान सबै मरिगे रनभारथ।
चाहत कृष्ण नहीं ललिते बलते थलते जगते सो अकारथ॥

सुमिरन

दशरथनन्दन कोवन्दन करि ❀ सीता चरण कमलको ध्याय।

रहै समुन्दर में जबलों जल ॐ जबलों रहैं चन्द औ सूर ।
मालिक ललिते के तबलों तुम ॐ यशसों रहो सदा भरपूर ॥
सुमिरिभवानी शिवशङ्कर को ॐ ह्यांते करों तरँग को अन्त ।
राम रमा मिलि दर्शन देवो ॐ इच्छा यही मोरि भगवन्त ॥

ठाकुर आल्हसिंहजी का मनावन सम्पूर्ण ॥

आल्हखण्ड

नदी बेतवा पर लाखनि पृथी-राज का प्रथम युद्ध वर्णन

सवैया

रामसिया पद दोउ मनाय सो ध्याय शिवा शिव पाउँ जथारथ।
कीरति कृष्ण बखान करों जिनके बलसों बलवान भे पारथ॥
भीषम कर्ण सुयोधन ज्वान महान सबै मरिगे रनभारथ।
चाहत कृष्ण नहीं ललिते बलते थलते जगते सो अकारथ॥

सुमिरन

दशरथनन्दन कोबन्दन करि ❀ सीता चरण कमलको ध्याय।

सुमिरि भवानी शिवशंकरको ❁ औ यदुनन्दन चरण मनाय ॥
बड़े प्रतापी कुंती नन्दन ❁ वन्दन करों युधिष्ठिरराय ।
गदा प्रहारी भीमसेन को ❁ ध्यावों बार बार शिरनाय ॥
शूर धनुर्धर नर अर्जुन की ❁ कीरति सकै कौन नर गाय ।
विद्या पूरण सहदेऊ की ❁ कीरति रही जगतमें छाय ॥
बड़ा प्रतापी रण मण्डल मा ❁ नकुलो समरधनी तलवार ।
करण न होतो जो दुनिया मा ❁ तो को होत दान बरियार ॥
छूटि सुमिरनी गै देवन कै ❁ शाका सुनो पिथौरा क्यार ।
नदी बेतवा के डाँड़े पर ❁ लाखनि करी खूब तलवार ॥

अथ कथाप्रसंग

आल्हा ठाकुर के तम्बू मा ❁ भारी लाग राज दरबार ।
त्यही समैया त्यहि औसर मा ❁ बोले उदयसिंह सरदार ॥
घाट बयालिस पिरथी रोंके ❁ दादा करो कछू तदबीर ।
इतना सुनिकै आल्हा बोले ❁ ऊदन धरो हृदय में धीर ॥
इतना कहिकै आल्हा ठाकुर ❁ तुरतै पान दीन धरवाय ।
है कोउ योधा दूनों दल मा ❁ जो बितवा पर पान चवाय ॥
इतना सुनिकै दोऊ दल के ❁ क्षत्री गये सनाकाखाय ।
बोलि न आवा क्यहु क्षत्री ते ❁ सबहिन मूड़ लीन अउँधाय ॥
ऊदन तड़पे त्यहि समया मा ❁ पहुँचे पान निकट फिरिजाय ।
आल्हा बोले तब ऊदन ते ❁ मानो कही लहुरवाभाय ॥
अबतौ बारी है लाखनि कै ❁ गाँजर फते कीन तुम जाय ।
नदी बेतवा के मुर्चा पर ❁ जावैं अवशि कनौजीराय ॥
मीरातालहन धनुवाँ तेली ❁ बोले दोऊ शीश नवाय ।
तजी सम्पदा सब कनउज की ❁ आये लड़न कनौजीराय ॥

नव दिन दश दिन भे गौने के ❁ सो तजिदई पदमिनी नारि।
बीरा खैये लाखनि राना ❁ करिये नदी भयानक रारि॥
बात बराबरि की सहिये ना ❁ चहिये जायँ नदी पर प्रान।
बातैं सुनिकै ये सय्यद की ❁ बीरा लीन कनौजी ज्वान॥
ऊदन बोले तब लाखनि ते ❁ हमरे बचन करो परमान।
संग कनौजी हमहूं चलिबे ❁ करिबे घोर शोर घमसान॥
मान न रखिबे क्यहु क्षत्री के ❁ तुम्हरे संग कनौजी ज्वान।
ऊदन लाखनि के मुर्चा ते ❁ जैहैं लौटि बीर चौहान॥
इतना सुनिकै लाखनि बोले ❁ मानो उदयसिंह सरदार।
रतीभान का मैं लड़का हूं ❁ नाती बेनचक्कवै क्यार॥
काह हकीकति हैं दिल्लीपति ❁ जो तुम चलो संगमें ज्वान।
भूरी हथिनी कछु बूढ़ी ना ❁ ना कछु असारोग बलवान॥
संग न लेबे हम काहू को ❁ आल्हा बचन करब परमान।
इतना कहिकै लाखनि ठाकुर ❁ नद्दी हेतु कीन प्रस्थान॥
धनुवाँ तेली मीरा सय्यद ❁ येऊ भये साथ तय्यार।
नदी बेतवा के पाँजर मा ❁ पहुँचा कनउज का सरदार॥
नौसै हाथी लखराना के ❁ पानी पियनगये त्यहिकाल।
पार उतरिगे ते नद्दी के ❁ सहिनहिंसकेघाम बिकराल॥
तब हरिकारा पृथीराज का ❁ चौंड़ै खबरि जनाई जाय।
बहुतक हाथी पार आयगे ❁ मानों कही चौंड़ियाराय॥
इतना सुनिकै चौंड़ा बाम्हन ❁ अपनो हाथी लीन मँगाय।
चढ़ा तड़ाका फिरि हाथीपर ❁ नद्दी उपर पहूँचा आय॥
सबियाँ हथिनी लखराना की ❁ चौंड़ा तुरत लीन खिदवाय।
भगे महाउत सब तहँना ते ❁ आये जहाँ कनौजीराय॥

हाल बताइनि सब हाथिनका ❀ ज्यहिबिधिचौंड़ालीनखिदाय।
सुनि संदेशा लाखनिराना ❀ डंका तुरत दीन बजवाय ॥
भारी लश्कर लखराना का ❀ गर्जति चला समरको जाय।
घरी मुहूरत के अरसा मा ❀ पहुँचे समरभूमि में आय ॥
लाखनिराना मीरा सय्यद ❀ धनुवाँ सहित उतरिगे पार।
नौसै हाथी लखराना का ❀ सातसै हथी पिथौरा क्यार ॥
सोलासै के हाथी दलमा ❀ पहुँचे तुरत कनौजीराय।
जितने हाथी दूनों दल के ❀ सोसब तुरतलीन खिदवाय ॥
गा हरिकारा पृथीराज का ❀ चौंड़े खबरि जनाई जाय।
हमरी अपनी सब हथिनिनको ❀ लाखनिराना लीनखिदाय ॥
सुनिकै बातैं हरिकारा की ❀ चौंड़ा फौज लीन सजवाय।
धाँधू ठाकुर को सँग लैकै ❀ तुरतै कूचदीन करवाय ॥
बीस खेत जब लाखनि रहिगे ❀ चौंड़ा बोला वचन सुनाय।
कहाँते आयो औ कहँ जैहौ ❀ आपन हाल देउ बतलाय ॥
इकलो हाथी लखि चौंड़ाको ❀ लाखनि भूरी दीन बढ़ाय।
सम्मुख आये जब चौंड़ा के ❀ बोले तबै कनौजीराय ॥
बेन चक्कवै के नाती हम ❀ बेटा रतीभान को जान।
मोहबा देखन हम जाइत है ❀ लाखनि नाम हमारो मान ॥
आल्हा ऊदन के सँग आयन ❀ चौंड़ा साँच दीन बतलाय।
इतना सुनतै चौंड़ा बोला ❀ मानो कही चँदेलेराय ॥
आल्हा चाकर परिमालिक के ❀ सो कनउजको गये रिसाय।
कीनि चाकरी उन जयचँदकी ❀ तिनके साथ कनौजीराय ॥
ऐसी कहिये नहिं काहू सों ❀ अबहीं कूच देउ करवाय।
संगति राजा अरु चाकर की ❀ कतहुँ न सुना कनौजीराय ॥

इतना सुनिकै लाखनि बोले ❁ मानो कही चौंड़ियाराय।
बड़ी बड़ाई ऊदन कीन्ही ❁ तब मनगई लालसा आय॥
बिना मोहोबा आँखिन दीखे ❁ कैसे कूच देयँ करवाय।
इतना सुनिकै चौंड़ा बोला ❁ मानो साँच कनौजीराय॥
चढ़ा पिथौरा सातलाख सों ❁ सबियाँ घाट दये रुकवाय।
जो तुम लड़िहौ ह्वै चाकरसँग ❁ तौ रजपूती धर्म नशाय॥
इतना सुनिकै लाखनि बोले ❁ चौंड़ा काह गये बौराय।
किरिया कीन्ही हम गंगा में ❁ चलिबे साथ बनाफरराय॥
पाँउँ पिछारी का डरिबे ना ❁ चहु तन धजी धजी उड़ि जाय।
चुवै निशाकर ते आगी चहु ❁ औ नभ मिलै धरणिमें आय॥
उवै दिवाकर चहु पश्चिमको ❁ सातों सूखि समुन्दर जायँ।
लाखनि भागैं नहिं नदियाते ❁ चौंड़ा साँच दीन बतलाय॥
इतना सुनिकै जरा चौंड़िया ❁ तुरतै दीन्ही ढाल चलाय।
होउ बहादुर जो लखराना ❁ हमरी ढाललेउ उठवाय॥
लाखनि बोले तब धनुवाँ ते ❁ लावो ढाल यार यहिबार।
दाबि बछेड़ा धनुवाँ चलिभा ❁ धाँधू कहा बचन ललकार॥
पाँउँ अगाड़ी को डारे ना ❁ नहिं मुहँ धाँसि देउँ तलवार।
बात न मानी कछु धाँधू की ❁ धनुवाँ घोड़े का असवार॥
भाला धमका धाँधू ठाकुर ❁ धनुवाँ लैगा वार बचाय।
ढाल उठाई जब धनुवाँ ने ❁ स्याबसिकह्यो कनौजीराय॥
लीन कटारी लाखनिराना ❁ औ रेतीमा दीन चलाय।
होय बहादुर जो दिल्ली को ❁ सो अब लेय कटार उठाय॥
इतना सुनिकै भूरा चलिभा ❁ सय्यद उठा तड़ाका धाय।
तब ललकारा वहि भूराने ❁ सय्यद खबरदार ह्वैजाय॥

कहा न माना कछु भूरी का ❀ सय्यद लीन कटार उठाय।
सो दै दीन्ही लखराना का ❀ चौंड़ा बहुत गयो शरमाय॥
झुके सिपाही दुहुँ तरफा के ❀ फिरितहँचलनलागि तलवार।
पैदल पैदल के बरणी में ❀ औ असवार साथ असवार॥
सूँड़ि लपेटा हाथी भिड़िगे ❀ अंकुश भिड़े महौतन क्यार।
गजके हौदाते शर बरषैं ❀ नीचे करैं महाउत मार॥
कटि कटि कल्ला गिरैं खेतमा ❀ घायल भये सुघरुवा ज्वान।
नदी बेतवा के डांड़ेपर ❀ लाखनि चौंड़ाका मैदान॥
दाब्यो लश्कर लखराना का ❀ लाग्यो होन भड़ाभड़ मार।
भागि सिपाही दिल्लीवाले ❀ अपने डारि डारि हथियार॥
चौंड़ा ब्राम्हन औ लाखनिका ❀ परिगा समर बरोबरि आय।
तीर चौंड़िया तकिकै मारा ❀ लाखनि लैगे वार बचाय॥
तुरतै भूरी को दौरावा ❀ चौंड़ा पास पहूँचे जाय।
भाला मारा लखराना ने ❀ हाथी गिरा पछाराखाय॥
तुरत चौंड़िया पैदल ह्वैगा ❀ तब यह कहा कनौजीराय।
पायँ पियादे को मारैं ना ❀ हाथी और लेउ मँगवाय॥
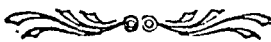
दूसरी लड़ाई

इतना कहिकै लाखनिराना ❀ आगे दीन्ही फौजबढ़ाय।
बाजे डंका अहतंका के ❀ हाहाकार शब्द गा छाय॥
मुर्छा हटिगा जब चौंड़ा का ❀ धावन तबै पहूँचा जाय।
सुनि हरिकारा की बातैं सब ❀ ताहर बेटा लीन बुलाय॥
हुकुम लगावा महराजा ने ❀ तुम चढ़िजाउ नदी[illegible] भाय।
हुकुम पिथौरा का पावतखन ❀ डंका तुरत दीन [illegible]वाय॥

सजा रिसाला घोड़न वाला ❀ आला तीनि लाखलों भाय।
कच्छी मच्छी ताजी तुर्की ❀ हरियल सुर्ख परैं दिखराय॥
कोगति वर्णै तहँ सिरगनकी ❀ सिरगन चाल चलैसब जायँ।
हंस चाल पर पँचकल्यानी ❀ मुश्की मोरसरिस दिखरायँ॥
लवा कि चालन ताजी जावैं ❀ हरियल चलैं कबूतर चाल।
कच्छी कच्छपकी चालनमा ❀ मच्छी मगरमच्छकी चाल॥
सुर्खा जावैं शशाचालपर ❀ तुर्की तीतर के अनुहार।
भाला बरछी छुरी कटारी ❀ लीन्हे चढ़े ढाल तलवार॥
अंगद पंगद मकुना भौंरा ❀ सजिगे श्वेतबरण गजराज।
धरीं अँबारी तिन हाथिन के ❀ बहुतन हौदा रहे बिराज॥
आदिभयंकर हाथी ऊपर ❀ पिरथीराज भये असवार।
तीरकमानै अनगिन्ती लै ❀ लीन्ही फेरि ढाल तलवार॥
छुरी कटारी भाला बरछी ❀ लीन्हे सबै नृपति हथियार।
घोड़नाम दलगंजन ऊपर ❀ ताहर आगे राजकुमार॥
ढाढ़ी करखा बोलन लागे ❀ बिप्रन कीन बेद उच्चार।
औरि बयरिया डोलन लागीं ❀ औरै होनलाग ब्यवहार॥
मारु मारु कै मोहरि बाजी ❀ बाजी हाव हाव करनाल।
खर खर खर खर कै रथ दौरे ❀ रब्बा चले पवनकी चाल॥
घोड़ा हींसैं हाथी चिघरैं ❀ ह्वैगा अन्धधुन्ध त्यहिवार।
डेढ़ लाख दल पैदल लीन्हे ❀ राजा दिल्ली का सरदार॥
डगमग डगमग धरती डोली ❀ देवता झाँपि गये असमान।
देवी देवता पृथ्वी वाले ❀ चकित भये देखि चौहान॥
को गति बरणै त्यहि समया कै ❀ जा क्षण चला पिथौराज्वान।
लाली लाली आँखी कीन्हे ❀ गजभरि छाती का चौहान॥

जहाँ हैं फौजैं लखराना की ❁ प्यारो पूत कनौजी क्यार
मीरताल्हन बनरस वाला ❁ सिर्गा घोड़े पर असवार॥
धनुवाँ तेली है घोड़े पर ❁ बारहु कुँवर बनौधा केर।
चारौ राजा गाँजर वाले ❁ तिनते कहा कनौजी टेर॥
आईं फौजैं पृथीराज की ❁ यारो वेगि होउ हुशियार।
इतना सुनिकै कनउज वाले ❁ बोले सबै शूर सरदार॥
हुकुम लगावो अब तोपन को ❁ गोलंदाज होयँ तय्यार।
लखि अस मर्जी सरदारन की ❁ लाखनिहुकुमदीनत्यहिबार॥
लैलै थैली बारूदन की ❁ सो तोपनमा दई डराय।
गोला छूटे दुहुँ तरफा के ❁ हाहाकार शब्द गा छाय॥
लागै गोला ज्यहि हाथी के ❁ मानों चोर सेंधि कैजाय।
जउने ऊंट के गोला लागै ❁ तुरतै गिरै सार अललाय॥
लागै गोला ज्यहि घोड़ा के ❁ मानो मगर कुल्याचै खाय।
गोला लागै ज्यहि क्षत्री के ❁ धुनकत रुईसरिसउड़िजाय॥
जउने रथमा गोला लागै ❁ बिजली गिरै वृक्ष जस आय।
तैसे चूरण करि स्यन्दन को ❁ पहियाधुरी देय अलगाय॥
फूटैं गोला जब ठुकरे मा ❁ बिथरैं पाँच खेतलों भाय।
गोली निकरैं तिन गोलन ते ❁ ओलनसरिसजायँतहँछाय॥
बोलि न पावैं कोउ ठाकुर तहँ ❁ चुप्पे भूमि देयँ पौढ़ाय।
बड़ी दुर्दशा भै तोपन मा ❁ तब फिरि मारु बन्दह्वैजाय॥
दुनों गोल आगे को बढ़िगे ❁ रहिगा डेढ़ खेत मैदान।
भाला बलछी की मारुन मा ❁ ब्याकुलभये सिपाहीज्वान॥
शुण्डा कटिगे हैं हाथिन के ❁ रुण्डन ह्वैगा ऊंच पहार।
कल्ला कटि कटि गिरैं बछेड़ा ❁ पैहा होन लागि सरदार॥

गंगा ठाकुर कुड़हरि वाला ❀ पूरन पटना का सरदार।
देवी मरहटा दक्षिण वाला ❀ अंगदनृपतिग्वालियरक्यार॥
हिरसिंह विरसिंह बिरिया वाले❀ इनके साथ करैं तलवार।
भुरा मुगलिया काबुल वाला ❀ सय्यद बनरस का सरदार॥
धाँधू धनुवाँ का मुर्चा है ❀ औ दतियाके बंशगुपाल।
चिंता ठाकुर रुसनी वाला ❀ गुरखा नृपति शहरबंगाल॥
कालनेमि औ परसू, सिंहा, ❀ ताहर साथ सबै सरदार।
भूरी हथिनी सों लखराना ❀ गरुई हाँक कीन ललकार॥
कौन बहादुर है दिल्ली का ❀ रोंकै बाट हमारी आय।
इतना सुनिकै ताहर जरिगे ❀ बोले सुनो कनौजीराय॥
तुम्हरे घरते संयोगिन को ❀ दिल्ली वाले लये लिवाय।
वई बहादुर पृथीराज हैं ❀ गाँस्यनिनगरमोहोबाआय॥
काह हकीकति कनवजिया कै ❀ जो अब धरै अगारी पायँ।
हुकुम पिथौरा का नाहीं है ❀ ताते कूच देउ करवाय॥
इतना सुनिकै लाखनि बोले ❀ ताहर काह गये बौराय।
लैकै बिटिया चेरी घरकै ❀ रानी कीन पिथौराराय॥
एकतो बदला है चेरी का ❀ दूसर साथ बनाफर क्यार।
कसरि न राखे दिल्ली वाले ❀ ठाकुर घोड़े के असवार॥
इतना कहिकै लाखनि राना ❀ मारन लाग ढूँढ़ि सरदार।
भूरी हथिनी का चढ़वैया ❀ नाती बेनचक्कवै क्यार॥
जैसे भेड़िन भेड़हा पैठै ❀ जैसे अहिर बिडारै गाय।
तैसे पैठ्यो लाखनि राना ❀ कोऊ शूर नहीं समुहाय॥
कायर भागे दुहुँ तरफा ते ❀ सायर खूब करैं तलवार।
यहु दलगंजन का चढ़वैया ❀ ताहर दिल्ली राजकुमार॥

बहुदल मारैं रजपूतन का ❁ नदिया बही रक्तकी धार।
छूरी मछली के समसोहैं ❁ ढालैं कछुवाके अनुहार॥
बहैं लहाशैं जो मनइन की ❁ तिनपर चढ़े गृद्ध विकराल।
बार सिवारा समसोहत हैं ❁ चहुँदिशिसोहैंश्वानशृगाल॥
बहै अपारा शोणित धारा ❁ मज्जन करैं भूत वैताल।
कोगति वरणै त्यहिसमया कै ❁ कागन भई टोंट सब लाल॥
तीनि सै हाथी के हलका मा ❁ अकसर परे कनौजीराय।
देखन लागे चौगिर्दा ते ❁ कोउनहिंअपनपरैदिखराय॥
जितने आये चढ़ि कनउज ते ❁ ते सब हटे समर ते भाय।
मीरा सय्यद धनुवाँ तेली ❁ दूनों दीन्हेंनि समर बराय॥
सुफना बोला तब लाखनि ते ❁ मानो कही कनौजीराय।
सबदल हटिगाहै कनउज का ❁ इकले आप रहे मड़राय॥
हुकुम जु पावैं महाराजा का ❁ हथिनी देवैं तुरत भगाय।
छुवैं न पावैं दिल्ली वाले ❁ राजन साँच दीन बतलाय॥
इतना सुनिकै लाखनि बोले ❁ सुफना काह गये बौराय।
कहा न माना हम जयचँद का ❁ हटका मातु हमारी आय॥
अब जो भागैं समरभूमि ते ❁ तौ रजपूती धर्म नशाय।
अमर न देही रामचन्द्र कै ❁ ना रहिगये कृष्ण यदुराय॥
जो कोउ जन्माहै दुनिया मा ❁ निश्चय मरै एक दिन भाय।
जितने जावैं मरि दुनिया ते ❁ पैदा होयँ तड़ाका आय॥
यामें संशय कछु नाहीं है ❁ गीता पाठकीन अधिकाय।
सुनिकै बातैं लखराना की ❁ नीचे गयो महाउत आय॥
फूल पियायो त्यहि भूरी को ❁ पका पौवा भाँग खवाय।
गोटा दीन्ह्यो इक अफीम का ❁ ऊपर चढ़ा तड़ाकाधाय॥

बोला महाउतफिरिलाखनिते ❀ ओ महराज कनौजीराय।
चारों तरफा दल बादल सों ❀ज्यहिदिशिहथिनीदेयँबढ़ाय॥
सुनी महाउत की बातैं जब ❀ बोले फेरि कनौजीराय।
ऐसी हाथी है पिरथी का ❀ भारी ध्वजा रहा फहराय॥
चलौ तड़ाका दिशि याहीको ❀ सुफना साँच दीन बतलाय।
किरपा ह्वैहै नारायण की ❀ पैबे बिजय समर में भाय॥
सुनिकै बातैं लखराना की ❀ सुफना हाथी दीन बढ़ाय।
अक़सर लाखनि के जियरेपर ❀ चहुँ दिशिफौजरहीभड़राय॥
साँकरि फेरै भूरीहथिनी ❀ सबदल हटत पछारीजाय।
मारत मारत लाखनिराना ❀ पहुँचे जहाँ पिथौराराय॥
आदिभयंकर गज के भूरी ❀ मस्तक हना तड़ाकाधाय।
आदिभयंकर पाछे हटिगा ❀ तब पहिचना पिथौराराय॥
लैकै माला गल अपने सों ❀ सो लाखनिकोदीन पहिराय।
जैसे लड़िका रतीभान के ❀ तैसे पूत कनौजीराय॥
घाटि न जानैं हम ताहरते ❀ ओ महराना बात बनाय।
तुम अब आवो हमरे दलमा ❀ मोहबाशहर लेयँ लुटवाय॥
पारस पत्थर को तुम लीन्ह्यो ❀ लोहाछुवत स्वान ह्वैजाय।
कहा न मानो तुम ऊदन का ❀ घटिहा बंश बनाफरराय॥
खुनसजो मनिहैं तुमतेतनको ❀ कनउज शहर लेयँ लुटवाय।
बनचक्कवै के नाती हौ ❀ चाकर साथ कनौजीराय॥
तुम्हरी हीनी नीकि न लागै ❀ ताते साँच दीन बतलाय।
सुनिकै बातैं पृथीराज की ❀ बोला फेरि कनौजीराय॥
चढ़िकै आयन ऊदन सँगमा ❀ ना अब घाटि करैं महराज।
पारस पत्थर कै गिन्ती ना ❀ जो मिलिजायइन्द्रकोराज॥

तबहूँ लाखनि काहि बदलेना ❀ ओ महराज पिथौराराय।
बदला लेबे संयोगिनि का ❀ ताते गयन यहाँ पर आय॥
सुनिकै बातैं लखराना की ❀ माहिल बोला बचन उदार।
गहौ कमनियाँ अब हाथे सों ❀ राजा दिल्ली के सरदार॥
डारि कमनियाँ गल लाखनिके ❀ अबहीं कैदलेउ करवाय।
छोटे मुखकी ई बातैं ना ❀ जैसे कहै कनौजीराय॥
सुनिकै बातैं ये माहिल की ❀ राजा लीन कमान उठाय।
त्यही समैया त्यहि औसरमा ❀ रूपन गये नदी पर आय॥
पानी देखैं रक्त वर्ण सब ❀ रूपन गये बहुत चकड़ाय।
ऊँची टिकुरी चढ़ि देखतभे ❀ चहुँदिशिरुण्डपरैंदिखराय॥
पनी पियायो तहँ घोड़े का ❀ भाबर गयो तड़ाका आय।
जहँना तम्बू था द्यावलिका ❀ रूपन अटा तड़ाकाधाय॥
द्वारे ठाढ़ी द्यावलि माता ❀ रूपन बोला बचन सुनाय।
पनी पियावन हम नदी गे ❀ तहँ विपरीतपरा दिखराय॥
हमरे मनते यह आवति है ❀ नदिया जुभै कनौजीराय।
खबरि मँगावो तुम लाखनिकै ❀ हमरे धीर धरा ना जाय॥
इतना सुनिकै द्यावलि माता ❀ आल्हा पास पहूँची जाय।
खबरि सुनाई सब आल्हाको ❀ रूपनगयो जौनबतलाय॥
बारह रानिन का इकलौता ❀ ऊदन लाये ताहि लिवाय।
होय हँसौवा सब दुनिया मा ❀ जो मरिगये कनौजीराय॥
सातलाख सों चढ़ा पिथौरा ❀ देवो उदयसिंह पठवाय।
इतना सुनिकै आल्हा बोले ❀ माता काह गयी बौराय॥
गाँजर उसरीथी ऊदन की ❀ नदिया लड़ैं कनौजीराय।
कुछ नहिं जानैं आल्हा ठाकुर ❀ माता साँच दीन बतलाय॥

नाहिं हँसौवा का डरु राखैं ❀ प्यारो मोर लहुरवाभाय।
जो कहुँ जुभिहैं उदयसिंहजी ❀ तौ हम काहकरबफिरिमाय॥
सुनिकै बातैं ये आल्हा की ❀ धावलि उठी तड़ाका धाय।
जहँना तम्बू था ऊदन का ❀ माता अटी तहाँपर आय॥
आवत दीख्यो जब माता को ❀ ऊदन गहा द्रुऊपद जाय।
आदर करिकै महतारी का ❀ उत्तमआसन दीन बिछाय॥
धूप दीप अरु अक्षत चन्दन ❀ पूजन हेतु लीन मँगवाय।
नदी बेवता का जल लैके ❀ धोये चरण बनाफरराय॥
बिधिवत पूजनकरि माताका ❀ बोला फेरि लहुरवाभाय।
हुकुम जो पावैं महतारी का ❀ सो करिलावैं शीशनवाय॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❀ धावलि बोली आँसुबहाय।
परे कनौजी हैं सँकरे मा ❀ रूपन खबरि जनाई आय॥
जो कछु होई लखराना का ❀ देई दोष सबै संसार।
त्यहिते जावो तुम नदियाको ❀ बेटा उदयसिंह सरदार॥
मैं समुभावा भल आल्हा का ❀ तिन नहिं माना कहा हमार।
गाँजर उसरी थी ऊदन की ❀ नदिया कनउजका सरदार॥
तुम्हैं मुनासिब अब याही है ❀ जावो अवशि पूत यहिबार।
सुनिकै बातैं ये माता की ❀ बेंदुल उपरभयो असवार॥
गयो तड़ाका त्यहि तम्बू मा ❀ ज्यहिमा रहैं बनाफरराय।
खबरि सुनाई सब आल्हा को ❀ दोऊहाथजोरि शिरनाय॥
हुकुम जो पावैं हम दादा को ❀ नदिया जायँ तड़ाका धाय।
जयचँद तिलका ते बाचा दै ❀ लायन रहे कनौजीराय॥
जियत बनाफर उदयसिंह के ❀ इनको बार न बाँकाजाय।
करैं प्रतिज्ञा जो साँची ना ❀ तौ सबजावै धर्म नशाय॥

सुनिकै बातैं उदयसिंह की ❀ आल्हा चुप्प साधि रहिजाय।
चलिभे ऊदन तब तम्बू ते ❀ दोऊहाथ जोरि शिरनाय॥
लौटिकै आवा फिरि लश्करमा ❀ डंका तुरत दीन बजवाय।
साजि सिपाही सब जल्दी सों ❀ ऊदन कूचदीन करवाय॥
नदीबेतवा को उतरत भा ❀ यहु रणबाघु बनाफरराय।
मीरासय्यद धनुवाँ तेली ❀ दोऊ परे तहाँ दिखलाय॥
छाँड़े मुर्चा भागति आवैं ❀ औरौ परे नजरि सब आय।
दय्या बापू की ध्वनि लागी ❀ कोऊ पावँ घसीटतजाय॥
बिना हाथ के कोऊ आवै ❀ कोऊ रोवै घाव दिखाय।
हाय! गोसइयाँ दीनबन्धुकहि ❀ कोऊ सज्जन रहे मनाय॥
यह गति दीख्यो जब क्षत्रिनकै ❀ बोले तुरत बनाफरराय।
सय्यद चाचा तुम बतलावो ❀ कहँपर छूटि कनौजीराय॥
जो कुछ ह्वैहै लाखनि जियका ❀ सबके मूड़ लेब कटवाय।
इतना सुनिकै सय्यद बोले ❀ मानो कही बनाफरराय॥
तीनिसै हाथी के हलकामा ❀ अकसर परे कनौजी जाय।
प्राण आपने लय हम भागे ❀ मानो कही बनाफरराय॥
नहीं आसरा लखराना का ❀ तुमते साँच दीन बतलाय।
सात लाखलों फौजै लैकै ❀ आवा आप पिथौराराय॥
शब्द पाय कै हनै निशाना ❀ त्यहिते कौन आसराभाय।
सुनिकै बातैं ये सय्यद की ❀ ऊदन गये सनाकाखाय॥
धनुवाँ बोला तब सय्यद ते ❀ चलिये फेरि समरको भाय।
हमका तुमका जयचँदराजा ❀ सौंपा रहै कनौजीराय॥
सम्मुख जातै महराजा के ❀ सय्यद जियत मौत ह्वैजाय।
इतना सुनिकै सय्यद लौटे ❀ मुर्चा गहा तड़ाका आय॥

पृथ्वीराज और लाखन राना का युद्ध

धनुवाँ आयो फिरि मुर्चा मा ❀ औरौ शूर गये सब आय।
तीनिसै हाथीके हलका मा ❀ पहुँचा तुरत 'बनाफरराय॥

सवैया

लाखनि खोज करैं बघऊदन नाहिं मिलै कहुँ ठौर ठिकाना।
कूदत फाँदत मारत धावत आवत डंक बजाय निशाना॥
शंक नहीं निरशंक फिरै यहु बंक है ठाकुर ठीक बखाना।
काह बखान करै ललिते गुणवान जहान यही हम जाना॥

बड़ा प्रतापी रणमण्डल मा ❀ ठाकुर उदयसिंह सरदार।
बहु दलमारा पृथीराज का ❀ नदिया बही रक्तकी धार॥
मारत मारत दल बादल के ❀ तब लखिपरे बीर चौहान।
विषधर शायक इक हाथेमा ❀ इक लोहे की गहे कमान॥
तहँईं दीख्यो लखराना को ❀ तब मन ठीक लीन ठहराय।
शब्दभेद शर हनै पिथौरा ❀ कैसे बचैं कनौजीराय॥
जो मरिजैहैं लाखनिराना ❀ तौ सब जैहैं कामनशाय।
जो सुनि पैहैं तिलका रानी ❀ तौ मरिजायँ जहरकोखाय॥
नहीं आसरा यह लाखनि का ❀ जो अब धरैं पछारी पायँ।
शूर शिरोमणि सबबिधिसाँचे ❀ हमरे मित्र कनौजीराय॥
साम दाम अरु दण्ड भेद ये ❀ चारों अङ्ग नीतिके आयँ।
इनसों लड़िकै सज्जन क्षत्री ❀ पावैं बिजय समरमें जाय॥
यहै सोचिकै ऊदन क्षत्री ❀ आपन घोड़ दीन दौराय।
जहँपर हाथी पृथीराज का ❀ ऊदन अटा तड़ाका धाय॥
हाथ जोरिकै ऊदन बोले ❀ ओ महराज पिथौराराय।
तुम्है मुनासिब यह नाहीं है ❀ जैसी करो समर में आय॥

ना चढ़ि आये जयचँद राजा ❀ ना चढ़िअये रजापरिमाल।
राजा राजा का रण सोहै ❀ मानो साँच बात नरपाल॥
लड़िका लाखनि तुम्हरे आगे ❀ तिन पर कैसे गहौं कमान।
बातैं सुनिकै बघऊदन की ❀ रहिगा चुप्प साधि चौहान॥
एँड़ लगावा फिर बेंदुल के ❀ हौदा उपर पहुँचाजाय।
कलश सूबरण हौदावाला ❀ लीन्ह्यो तुरत बनाफरराय॥
स्याबसिस्याबसिकह्योपिथौरा ❀ पाछे हाथी लीन हटाय।
तबै कनौजी मन शरमाने ❀ ताहर गयो बरोबरि आय॥
लाखनि ताहर का मुर्चाभा ❀ ऊदन और चौंड़िया ज्वान।
धांधू धनुवाँ कै बरणी भै ❀ सय्यद भूरूका मैदान॥
नदी बेतवा के झाबर मा ❀ बाजै घूमि घूमि तलवार।
ऐसी नाहर कनउज वाले ❀ वैसी दिल्ली के सरदार॥
हौदा हौदा यकमिल ह्वैगा ❀ अंकुशभिड़ा महौतनक्यार।
पैदल पैदल कै बरणी भै ❀ औ असवारसाथ असवार॥
उरइं फौजै दल बादल सों ❀ बाजैं छपक छपक तलवार।
छुरी कटारी भाला बरछी ❀ ऊना चलै बिलाइति क्यार॥
तीर तमंचा के मंचा भे ❀ भाला बरछिनकेर पगार।
मरे कटारिन औ छूरिनके ❀ नदिया बही रक्त की धार॥
मुण्डन केरे मुड़ चौराभे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार।
हिरसिंह बिरसिंह बिरियावाले ❀ दोऊ लड़ैं तहाँ सरदार॥
रहिमत सहिमत द्वउ मारेगे ❀ हिरसिंह बिरसिंह के मैदान।
धाँधू धनुवाँ के मुर्चामा ❀ मुर्चा हारिगये चौहान॥
लाखनिराना के मुर्चामा ❀ मरिगे दतिया के नरपाल।
ताहर ठाकुर के मुर्चा मा ❀ बेटा देशराज का लाल॥

तबलों आये लाखनिराना ❀ तिनते फेरि चली तलवार।
चढ़ा कनौजी है भूरी पर ❀ यहु दलगंजन पर असवार॥
तीनि सिरोही ताहर मारी ❀ लाखनि लीन ढालपर वार।
क्रोधित ह्वैकै लाखनिराना ❀ तुरतै कीन्ह्यो गुर्जप्रहार॥
चोट लागिगै सो घोड़ा के ❀ तुरतै भाग सहित असवार।
पाछे भूरी लखराना की ❀ आगे दिल्ली राजकुमार॥
घाट बयालिस तेरह घाटी ❀ सब दल भाग पिथौरा क्यार।
जहँ पर तम्बू पृथीराज का ❀ पहुँचा कनउज का सरदार॥
उतरिकै हथिनी ते भुइँ आवा ❀ तम्बू तुरत दीन गड़वाय।
यहु महराजा दिल्लीवाला ❀ तहँते कूचदीन करवाय॥
बहुतक घोड़ा पृथीराज के ❀ लूटे तहाँ बनाफरराय।
बाकी तम्बू जे पिरथी के ❀ लाखनिआगिदीनलगवाय॥
जितनी फौजैं लखराना की ❀ चन्दन बाग पहूँचीं आय।
दिल्ली पहुँचे दिल्ली वाले ❀ धावन गयो बेतवाधाय॥
आल्हा ठाकुर के तम्बू मा ❀ धावन खबरि जनाई जाय।
सुनिकै बातैं मुख धावन की ❀ आल्हा कूचदीन करवाय॥
बाजत डंका अहतंका के ❀ चन्दन बाग पहूँचे आय।
यकदिशि तम्बू है आल्हा का ❀ दुसरी तरफ कनौजीराय॥
बाजैं डंका अहतंका के ❀ हाहाकार शब्द गा छाय।
गा हरिकारा मोहबेवाला ❀ बैठे जहाँ चँदेलेराय॥
खबरि सुनाई सब पिरथी की ❀ जाविधि कूचदीन करवाय।
जैसे आये चन्दन बगिया ❀ दूनों भाय बनाफरराय॥
करणी बरणी सब लाखनि कै ❀ धावन बार बार शिरनाय।
सुनी बीरता लखराना की ❀ भे मन खुशी चँदेलेराय॥

ब्रह्मा ठाकुर को बुलवायो ❀ औ सब हाल कह्यो समुझाय ।
तुरत महोबा को सजवावो ❀ देखन अवैं कनौजीराय ॥
सुनिकै बातैं ब्रह्मा ठाकुर ❀ लीन्ह्यो कोतवाल बुलवाय ।
कहि समुझायो कोतवाल को ❀ मोहबा तुरत देउ सजवाय ॥
इतना कहिकै ब्रह्मा चलिभे ❀ मल्हना महल पहूँचे जाय ।
कही बीरता लखराना की ❀ ब्रह्मा बार बार तहँ गाय ॥
चन्दन बगिया डेरा परिगा ❀ पिरथी कूच दीन करवाय ।
इतना सुनिकै रानी मल्हना ❀ तुरतै दीन्ह्यो हुकुम लगाय ॥
सजो मोहोबा चौगिर्दा ते ❀ फाटक नये करौ तय्यार ।
हुकुम पायकै महरानी का ❀ मोहबासजनलागत्यहिबार ॥
पुती दिवालै गईं केसरि ते ❀ चमचमचमकिचमकिरहिजायँ ।
द्वार द्वार में बन्दनवारें ❀ घरघर रहे पताका छाय ॥
को गति बरणै पुरबासिन कै ❀ द्वारे कलश दीन धरवाय ।
घृतसों पूरित दीपक बारे ❀ सुन्दरि गीत रहीं सबगाय ॥
सजीं बंजारैं गलियारन मा ❀ माली बैठ ठट्ट के ठट्ट ।
चलैं कदमपर कहुँ कहुँ घोड़ा ❀ कहुँ कहुँ चलैं चाल सरपट्ट ॥
ठट्ट लागि गे तम्बोलिन के ❀ जाहिर पान मोहोबे क्यार ।
सतर सराफाकी बैठी है ❀ सोहैं भाँति भाँतिके हार ॥
कौन बजाजा कै गति बरणै ❀ भाला बरछिन केरि बजार ।
गमला बिरवन के गलियनमा ❀ जिनमा छोटि बृच्छकहार ॥
फूले बेला अलबेला कहुँ ❀ मेला लाग चमेलिन क्यार ।
रेला आवैं कहुँ नारिन के ❀ गावैं गीत मंगलाचार ॥
बारह रानी चंदेले की ❀ तिनके महल सजे त्यहिबार ।
धरे खिलौना हैं ताखन मा ❀ पाखन बेलि बूट अधिकार ॥

सोने चाँदी के जेवर को ❀ रानी करतफिरैं झनकार।
को गति बरणै महरानिन कै ❀ सोलोकीन तहाँ शृंगार॥
हाट बाट चौहाटा सजिगे ❀ बोले तबै रजापरिमाल।
चलिकै लइये जगनायक जी ❀ बेटा रतीभान को लाल॥
इतना कहिकै परिमालिक जी ❀ पलकी उपर भये असवार।
ब्रह्मा चढ़िकै हरनागर पर ❀ तुरतै भयो तहाँ तैयार॥
भैने सजिगा परिमालिक का ❀ तब फिरि कूच दीन करवाय।
जहँ पर तम्बू लखराना का ❀ तहँपर गये चँदेलेराय॥
आवतदीख्यो परिमालिकको ❀ लाखनि उठे तड़ाका धाय।
पकरिकै बाहू लखराना की ❀ औ छातीमा लीन लगाय॥
बैठे तम्बू मा परिमालिक ❀ आये द्वऊ बनाफरराय।
मिलाभेंट करि सब काहुन सों ❀ सबहिनकूच दीन करवाय॥
चला कनौजी चढ़ि भूरी पर ❀ इन्दल पपिहा पर असवार।
घोड़ मनोहर पर देबा चढ़ि ❀ बेंदुल उदयसिंह सरदार॥
हिरसिंहबिरसिंहबिरिया वाले ❀ येऊ साथ भये तय्यार।
सिहा ठाकुर परहुल वाला ❀ गंगा कुड़हरिका सरदार॥
मीरा सय्यद बनरस वाले ❀ औरौ नृपति चले त्यहिबार।
ठाढ़ो हाथी पचशब्दा था ❀ आल्हा तापर भये सवार॥
द्यावलि सुनवाँ फुलवा तीनों ❀ डोलन उपर भईं असवार।
डोला चलिभा चितरेखा का ❀ मोहबालखनलागिसरदार॥
जौनीगलियन जायँ कनौजी ❀ तौनी देखैं नई बहार।
चलैंपिचकाक्यहुगलियन मा ❀ कहुँकहुँ होयँ फुलन कीमार॥
कहुँकहुँढोलक सारंगीध्वनि ❀ कहुँ कहुँ बाजैं खूब सितार।
तबलागमकैंक्यहुगलियनमा ❀ होवै नाच पतुरियन क्यार॥

परे पाँवड़े हैं द्वारे मा ❀ महलन मणी करें उजियार ।
उड़ैं कबूतर क्यहु महलन ते ❀ होवें नाच मुरैलन क्यार ॥
पिंजरा टाँगे ललमुनियन के ❀ चमकन गड़े बुलबुलन केर ।
सुवा पहाड़ी कहुं पिंजरन में ❀ कहूँ कहुँ तीतर और बटेर ॥
को गति बरणै त्यहि समयाकै ❀ चमकन लागे चहुँदिशि हेर ।
चारहु राजा गाँजर वाले ❀ चारहु कुँवर बनौधाकेर ॥
इनके सँगमा लाखनिराना ❀ मल्हना द्वार पहुँचे आय ।
कीनि आरती चन्द्रावलि तहँ ❀ भीतरगये कनौजीराय ॥
संग पतोहुन को लैकै फिरि ❀ चावलिगई तड़ाका धाय ।
आल्हा ऊदन इन्दल तीनों ❀ येऊ फेरि पहूँचेजाय ॥
बड़ी कसामसि में महलन मा ❀ बैठे सबै महा सुखपाय ।
बारहु रानी परिमालिक की ❀ मल्हना महल गईं सब आय ॥
बड़ी खुशाली में मल्हना के ❀ फूले अङ्ग न सकें समाय ।
बेटी बोली चन्द्रावलि तब ❀ मानों रोंच लहुरवाभाय ॥
जबते छाँड़्यो नगर मोहोबा ❀ जबते मरे बीर मलखान ।
तबते ईजति ये ताके हैं ❀ लुच्चा दिल्ली के चौहान ॥
जोना अबतिउ ऊदन भैया ❀ पिरथी लूटि लेत करवाय ।
धर्म रखैया सब मोहबे के ❀ युगयुग जियोबनाफरराय ॥
सुनिकै बातैं चन्द्रावलि की ❀ ऊदन कहा बहुत समुझाय ।
काहहकीकति थी पिरथी की ❀ मोहबाशहर लेत लुटवाय ॥
मिला भेंट करि सब काहुन सों ❀ सबहिन कूच दीन करवाय ।
जहाँ कचहरी परिमालिक की ❀ आल्हा सहित पहूँचेआय ॥
खातिर कीन्ह्योपरिमालिकने ❀ बैठे तहाँ कनौजीराय ।
राजा बोले तब आल्हा ते ❀ हमपरदया दीन बिसराय ॥

जबै बनाफर तुम मोहबेगे ❀ तबहीं चढ़ा पिथौराराय।
जूझिग ठाकुर सिरसावाला ❀ बिपदा गई मोहोबे आय॥
इतना सुनिकै आल्हा बोले ❀ मानों साँच बचन महराज।
सुनी तलाकैं जब तुम्हरी हम ❀ मानो गिरी उपरते गाज॥
माहिल भूपतिकी चुगुली सुनि ❀ हमरी देश निकासी कीन।
जूझिगे ठाकुर सिरसा वाले ❀ तबहूं खबरि आपनहिंलीन॥
खबरि जो पावत मलखाने की ❀ दिल्ली शहर देत फुकवाय।
चढ़िकै मारत हम पिरथी का ❀ साँची सुनो चँदेलेराय॥
द्यावलि बिरमा सम माता ना ❀ ना जग भायसरिस मलखान।
ब्रह्मा ठाकुर के ब्याहे मा ❀ हाथी द्वार पछारा ज्वान॥
पहिलि लड़ाई भै माड़ौगढ़ ❀ दूसर नैनागढ़ मैदान।
तिसरि लड़ाई भै पथरीगढ़ ❀ ब्याहे गये तहाँ मलखान॥
चौथि लड़ाई भै दिल्ली मा ❀ पाँचो नरवर का मैदान।
इन्दल ब्याह हरण छठयें मा ❀ तहँपर भयो घोर घमसान॥
सतों लड़ाई भै बौरीगढ़ ❀ आठों बूँदी का मैदान।
नव दश बार लड़े रण नाहर ❀ तब मरिगये बीर मलखान॥
भुजा टूटिगै इक आल्हा की ❀ ह्वैगा बली बीर चौहान।
स्वपना ह्वैगे अब दुनिया मा ❀ हमका आजु बीरमलखान॥
यहु दुख पावा तुम्हरी दिशि ते ❀ मानो साँच चँदेलेराय।
सवन चिरैया ना घर छोंड़ै ❀ नाबनिजरा बणिजकोजाय॥
मोहिं निकारा तब मोहबे ते ❀ तुम्हरो काह बिगारा भाय।
जियत मोहोबे हम आइत ना ❀ जो ना चढ़त पिथौरा धाय॥
पाल्यो पोष्यो लरिकाईं ते ❀ ताते लाज दीन बिसराय।
दूध पियायो मल्हना रानी ❀ तब यहु जिया लहुरवा भाय॥

अससमुझायो मोहिं माता जब ❀ तब मन क्रोध दीन बिसराय ।
सुनिकै बातें ये आल्हा की ❀ कायल भये चँदेलेराय ॥
तबै बनाफर उदयसिंह जी ❀ बोले हाथ जोरि शिरनाय ।
सुखसों सोवो अब मोहबे मा ❀ करिहै काह पिथौराराय ॥
जो कुछ ह्वैगा पाछे परिगा ❀ अब आगे का करो विचार ।
इतना सुनिकै परिमालिकजी ❀ लागे करन मंगलाचार ॥

सवैया

मोद अपार बढ़्यो त्यहि बार सो यार सँभार रह्यो कछु नाहीं ।
पैरको भूषण हाथन धारि सो हाथको भूषण पैरन माहीं ॥
हाथ मिलावत धावत आवत गावत गीत डरे गलबाहीं ।
कौन सों मारग ऐसो तहाँ सो जहाँ ललिते सुखपावत नाहीं ॥

बड़ा मोदभा पुर महलन मा ❀ टहलन नेक न लागी बार ।
आल्हा ऊदन लाखनि ठाकुर ❀ सबहिनखूबकीनज्यँवनार ॥
खेत छूटिगा दिननायक सों ❀ झण्डा गड़ा निशाको आय ।
तारागण सब चमकन लागे ❀ संतन धुनी दीनपरचाय ॥
परे आलसी खटिया तकितकि ❀ घों घों कण्ठ रहे घर्राय ।
आशिर्वाद देउँ मुन्शी सुत ❀ जीवो प्रागनरायण भाय ॥
रहै समुन्दर में जबलों जल ❀ जबलों रहैं चन्द औ सूर ।
मालिक ललिते के तबलों तुम ❀ यशसों रहौ सदा भरपूर ॥
माथ नवावों पितु माता को ❀ देवी देव सरिस औतार ।
सेवा करिकै पितु माताकी ❀ सरवण पूत भयो भवपार ॥
औरौ गाथा रघुनाथा की ❀ कहिगे बालमीकि विस्तार ।
पूरण ब्रह्म आदि पुरुषोत्तम ❀ स्वामी रामचन्द्र अवतार ॥

अब बदनामी का डर नाहीं ❀ होवो रामचन्द्र भर्त्तार।
शरण तुम्हारी हम ताके हैं ❀ दर्शन चहैं नाथ यहिबार॥
पगड़ी हमरी अब अरुझी है ❀ सो सुरझाय देव रघुनाथ।
कितनो पापी कलियुग करि है ❀ तबहूँ धरों चरण में माथ॥
माता भ्राता त्राता ताता ❀ नाता एक ठीक रघुनाथ।
स्वारथ साथी सब दुनिया है ❀ कासों करों जगत में साथ॥
सुमिरि भवानी शिवशङ्कर को ❀ ह्याँते करों तरँग को अन्त।
राम रमा मिलि दर्शन देवैं ❀ इच्छा यही भवानीकन्त॥

नदी बेतवा का युद्ध समाप्त

आल्हखण्ड

ठाकुर उदयसिंहजी का हरण वर्णन

सवैया

वज्रसे अंग औ बानर हय अरु बीरन में बलवान महा।
रणमण्डल कोउ न जाय सकै ज्यहि ठौर जबै यहु बीर रहा॥
सप्त समुन्दर नाँघि अगाध दशकन्धर को पुर जाय दहा।
आयहु फेरि जबै ललिते रघुनाथ ते साँच हवाल कहा॥

सुमिरन

तुम्हैं बहादुर मैं ध्यावत हौं ❀ अञ्जनि पूत बीर हनुमान।

तुम्हीं गोसइयाँ दीनबन्धु हौ ❀ नितप्रतिकरौं चरणकोध्यान॥
सरवरि तुम्हरी का दुनिया मा ❀ दूसर कौन बहादुर ज्वान।
शरण तुम्हारी माँ आयन है ❀ साँचे बीर बली हनुमान॥
गदा प्रहारी हे असुरारी ❀ मारी दुष्ट लङ्किनी नारि।
परसत पाँयन मकरी तरिगै ❀ लायो पर्वत शृंग उखारि॥
बड़े पियारे रघुनन्दन के ❀ बन्दन करौं जोरि दोउ हाथ।
अक्षत चन्दन धूप दीप सों ❀ पूजन करौं मानसी नाथ॥
करो मनोरथ पूरण हमरे ❀ सबबिधि माननीय हनुमान।
छूटि सुमिरनी गै हनुमत कै ❀ ऊदन हरण सुनो अब ज्वान॥

अथ कथाप्रसंग

एक समैया की बातैं हैं ❀ परिगै पर्व दशहरा आय।
सुनवाँ बोली तब ऊदन ते ❀ साँची सुनो बनाफरराय॥
मोरि लालसा यह डोलति है ❀ मज्जन करौं बिठूरै जाय।
आयसु लैकै तुम दादा की ❀ देवर मोहिं देउ हनवाय॥
यह मन भायगई ऊदन के ❀ आल्हा महल पहूँचे जाय।
हाथ जोरि अरु बिनती करिकै ❀ बोला तहाँ लहुरवा भाय॥
सुनवाँ भौजी की इच्छा है ❀ हमको गंग देउ हनवाय।
आयसु पावैं जो दादा की ❀ तौ हम जायँ बिठूरै धाय॥
इतना सुनिकै आल्हा बोले ❀ मानों साँच लहुरवा भाय।
देश देश के राजा अइहैं ❀ करिहौं कलह तहाँपर जाय॥
त्यहिते बैठो घर अपने माँ ❀ ऊदन साँच दीन बतलाय।
पर्व दशहरा की फिरि अइहै ❀ औरे साल हनायो जाय॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ दादा सुनो बनाफरराय।
पगिया हमरी कछु अरुझीना ❀ जो तहँ रारि मचैबे जाय॥

बाचा हारे हम भौजी ते ❀ तुमको गंग देब हनवाय।
मोहिं भरोसा है दादा को ❀ करिहौ पूर मनोरथ आय॥
बातैं सुनिकै बघऊदन की ❀ दीन्ह्यो हुकुम बनाफरराय।
हुकुम पायकै ऊदन ठाकुर ❀ लीन्हीं तुरत फौज सजवाय॥
सजी पालकी तहँ ठाढ़ी थीं ❀ सुनवाँ फुलवा भईं सवार।
घोड़ बेंदुला का चढ़वैया ❀ औ जगनायक भयो तयार॥
सवालाख दल ऊदन लैकै ❀ तुरतै कूच दीन करवाय।
बाजैं डंका अहतंका के ❀ हाहाकार शब्द गा छाय॥
आठ रोज की मैंजिल करिकै ❀ पहुँचा तहाँ बनाफरराय।
तम्बू गड़िगा तहँ ऊदन का ❀ भारी ध्वजा रही फहराय॥
सुभिया बेड़िन झुन्नागढ़ ते ❀ पहुँची स्वऊ बिठूरै जाय।
करै तमाशा सो तम्बुन में ❀ पावै द्रव्य तहाँ अधिकाय॥
जहँ पर तम्बू था ऊदन का ❀ सुभिया तहाँ पहूँची आय।
रूप देखिकै बघऊदन का ❀ दीन्ह्यो नाच रंग बिसराय॥
कछु नहिं भावै सुभिया मनमा ❀ ठगिनी भई तहाँ पर आय।
औरी नटिनी सँग जे आईं ❀ तिनका नाच दीन करवाय॥
अपना बैठे तहँ सोचति है ❀ कैसे मिलैं बनाफरराय।
जादू डारैं जो ऊदन पर ❀ तबहुँनकाजसिद्धदिखलाय॥
जाहिर जादू मा सुनवाँ है ❀ हमरे जाय प्राण पर आय।
मनमा शोचै मनै बिसूरै ❀ मनमा बार बार पछिताय॥
डारि मोहनी दी लश्कर मा ❀ जेवर डिब्बा लीन उठाय।
दीन रुपैया ऊदन ठाकुर ❀ नटिनिन कूचदीन करवाय॥
चढ़ीं पालकी सुनवाँ फुलवा ❀ गंगा उपर पहूँचीं जाय।
मज्जन कीन्ह्यो उदयसिंह तहँ ❀ बिप्रन दान दीन अधिकाय॥

मज्जन कीन्ह्यो जगनायकजी ❁ प्रातःकृत्य कीन हर्षाय।
दान मान दै सब विप्रन को ❁ सबहिन कूचदीन करवाय॥
लखा तमाशा औ मेला खुब ❁ तम्बुन फेरि पहूँचे आय।
उखरिग तम्बू फिरि ऊदन का ❁ लश्कर कूच दीन करवाय॥
बाजें डंका अहतंका के ❁ हाहाकार शब्द गे छाय।
अस्त दिवाकर जब पश्चिम भे ❁ तम्बू दीन तहाँ गड़वाय॥
उत्तम नदिया हैं यमुना जी ❁ उतरे जहाँ बनाफरराय।
डिब्बा दीख्यो नहिं जेवर को ❁ सुनवाँ गई सनाका खाय॥
तुरत बनाफर उदयसिंह को ❁ अपने पास लीन बुलवाय।
कहि समुझावा तहँ ऊदन ते ❁ डिब्बा नहीं परै दिखलाय॥
एक लाख का सब गहना है ❁ कैसी करैं बनाफरराय।
डिब्बा भूला है बिठूर माँ ❁ मोको याद भयो यहँ आय॥
काह बतावों मैं देवर ते ❁ करिये कैसो कौन उपाय।
धीरज राखो अपने मनमाँ ❁ बोले वचन लहुरवा भाय॥
तुरत बुलायो जगनायक को ❁ औ सब हाल कह्यो समुझाय।
हम तो जावत हैं बिठूर को ❁ तुम अब कूच जाउ करवाय॥
यह मन भाय गई जगना के ❁ ऊदन गये बिठूरै आय।
कैयो दिनका धावा करिकै ❁ जगना अटा मोहोबे जाय॥
रहा न मेला कछु लौटे माँ ❁ सिरकी पाल परे दिखराय।
तिनमाँ नटिनी औ नट ठहरे ❁ गे तिन पास बनाफरराय॥
सुभिया दीख्यो जब ऊदन का ❁ भै मन खुशी तबै अधिकाय।
कहाँ ते आयो औ कहँ जैहौ ❁ ठाकुर हाल देउ बतलाय॥
सुनिकै बातैं ये सुभिया की ❁ बोले फेरि बनाफरराय।
नगर मोहोबा के हम ठाकुर ❁ आयन आजु बिठूर नहाय॥

जब तुम नाचन गइ तम्बू मा ❁ गहनो गयो हमार हिराय ।
पतालगावन त्यहि आयन है ❁ तुमते साँच दीन बतलाय ॥
इतना सुनिकै सुभिया बोली ❁ मानो साँच बनाफरराय ।
पंसासारी हमते खेलो ❁ हम फिरि पता देब लगवाय॥
खेल पसारा सुभिया बेड़िनि ❁ बैठे तहाँ लहुरवा भाय ।
जुआँ युद्ध सों साँचे चत्री ❁ कबहुँ न धरैं पछारी पाँय ॥
नल औ पुष्कल आगे खेल्यो ❁ झेल्यो दुःख नृपति अधिकाय ।
भारी गाथा नलराजा की ❁ देखो महाभार्त में जाय ॥
द्वापर शकुनी के सँग खेल्यो ❁ कुन्ती पुत्र युधिष्ठिरराय ।
हारि द्रौपदी महराजा गे ❁ खैंचा चीर दुशासन आय ॥
मानिकै शासन दुर्य्योधन का ❁ पहुँचे बनोबास फिरिजाय ।
काटिकै संकट महराजा सब ❁ कीन्हेनिमहाभार्तफिरिआय॥
यहु दुखदाई पंसासारी ❁ खेलन लागि बनाफरराय ।
जादू डारी सुभिया बेड़िनि ❁ भे तब सुवा लहुरवा भाय ॥
डारिकै पिंजरा मा ऊदन का ❁ सुभिया कूच दीन करवाय ।
जायकै पहुँची फिरि दिल्लीमाँ ❁ जहँ पर बसैं पिथौराराय ॥
जहाँ कचहरी दिल्लीपतिकी ❁ सुभिया गई यतन सों धाय ।
करी बन्दगी महराजा को ❁ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
सुभिया बोली फिरि पिरथी ते ❁ राजन साँच देयँ बतलाय ।
डारिकै जादू हम ऊदन पर ❁ औ मेला ते लईं चुराय ॥
पै डर हमरे है आल्हा का ❁ स्वामी जगा देउ बतलाय ।
डारिकै सिरकी हम दिल्ली माँ ❁ निर्भय बसी पिथौराराय ॥
इतना सुनिकै पिरथी बोले ❁ सुभिया कूच देउ करवाय ।
जो सुनि पैहैं आल्हा ठाकुर ❁ हम ते रारि मचैहैं आय ॥

इतना सुनिकै सुभिया चलिमें ❀ डेरन फेरि पहुँची आय।
कूच करावा फिरि दिल्ली ते ❀ सब दरबार मँझावा जाय॥
कहूँ ठिकाना जब लाग्योना ❀ झुन्नागढ़ गयी तब धाय।
जहाँ कचहरी गजराजा की ❀ सुभिया तहाँ पहूँची जाय॥
हाथ जोरिकै महराजा के ❀ आपन हाल दीन बतलाय।
जगा चाहती हम झुन्नागढ़ ❀ यह इककाज हमारो आय॥
इतना सुनिकै राजा बोले ❀ सुभिया कूच जाउ करवाय।
जौ सुनि पैहैं आल्हा ठाकुर ❀ हमते रारि मचैहैं आय॥
सुनिकै बातैं गजराजा की ❀ सुभिया कूच दीन करवाय।
झारखण्ड के फिरि जंगल माँ ❀ डेराजाय दीन गड़वाय॥
चौकी पहरा करि जादू के ❀ निर्भय बसी तहाँ सुखपाय।
सुनवाँ सोचै ह्याँ महलन माँ ❀ आये नहीं लहुरवा भाय॥
पता लगावों मैं ऊदन का ❀ जावों देश देश को धाय।
यहै सोचिकै रानी सुनवाँ ❀ चिल्हियाबनीसरगमड़राय॥
पहिले ढूँढ़ा त्यहि बिठूर का ❀ पाछे गयी कामरू धाय।
सिलहट बिजहट मौरँग झुन्ना ❀ दिल्लीशहरलखा फिरिजाय॥
पता न पायो जब ऊदन का ❀ पहुँची झारखण्ड में आय।
तहाँ पै डेरा हैं बेड़िनि के ❀ सुनवाँ बैठि बरगदे जाय॥
पेड़ बरगदा के नीचे मा ❀ सुभिया पलँग लीनबिछवाय।
लैकै पिंजरा फिरि सुवना का ❀ मानुष तुरतै दीन बनाय॥
खेलै चौपरि सँग ऊदन के ❀ सुभिया बोली बचन सुनाय।
ब्याह हमारे सँगमा करिये ❀ मानो कही बनाफरराय॥
भजिये अल्ला बिसमिल्ला को ❀ ऊदन रटो खुदाय खुदाय।
तब सुख पैहौ तुम देहीं का ❀ नाहीं खाल लेउँ खिंचवाय॥

खुदा खैरियत तुम्हरी करिहैं ❀ बिसमिल भलाकरी सबकाल।
बाबा आदम संकट टारी ❀ मेटी अली भली जंजाल॥
बातैं सुनिकै ये बेड़िनि की ❀ बोला देशराज का लाल।
खुदा खुदाई चहु दिखलावैं ❀ बिसमिलआयजायँततकाल॥
ऊदन ब्याहैं नहिं बेड़िनि को ❀ कबहूँ राम नाम बिसराय।
देश आरिया के क्षत्री हम ❀ कैसे मुसलमान ह्वैजायँ॥
जब छुइजावैं मुसलमान को ❀ तबहीं तुरत करैं असनान।
बेवश ह्वैकै पिंजरा आयन ❀ ताते छूटिगयो सब मान॥
पढ़ैं फारसी हम बिद्या ना ❀ अपनो धर्म करैं प्रतिपाल।
नित प्रति ध्यावैं रघुनन्दन को ❀ पूरणब्रह्म सुरासुर पाल॥
खाल न रैहै जो देही मा ❀ केवल प्राण करैं बिश्राम।
तबहूँ मुख सों ऊदन ठाकुर ❀ कबहुँन लेयँ खुदा को नाम॥
निर्भय बातैं सुनि ऊदन की ❀ बरगद डार दीन टँगवाय।
बहुतक बाँसन हनि हनि मारा ❀ ऊदन जपो खुदाय खुदाय॥
सुनिकै बातैं ये सुभिया की ❀ बोला फेरि बनाफरराय।
ऊदन ब्याहैं नहिं बेड़िनि को ❀ कबहूँ राम नाम बिसराय॥
बात न दूसरि हम अब कहिबे ❀ चहु तन धजीधजीउड़िजाय।
ऊदन ब्याहैं नहिं बेड़िनि को ❀ कबहूँ राम नाम बिसराय॥
सुनिकै बातैं उदयसिंह की ❀ तुरतै सुवना लीन बनाय।
डारिकै पिंजरामा ऊदन का ❀ टाँगा फेरि बरगदा आय॥
देखि दुर्दशा यह ऊदन की ❀ सुनवाँ बार बार पछिताय।
डारि मशान दियो सुनवाँ ने ❀ पाछे पिंजरा लीन उठाय॥
लैकै पिंजरा कछु दूरी मा ❀ सुनवाँ गई तड़ाका धाय।
सुवना लैकै फिरि पिंजरा ते ❀ मानुष तुरतै दीन बनाय॥

सुनवाँ बोली फिरि ऊदन ते ❀ क्यों नहिं देवर जपो खुदाय।
काहे बिलमे तुम बेड़िनि में ❀ नित प्रति सहो बाँस के घाय॥
चलिये देवर अब मोहबे को ❀ तुम्हरी बार बार बलि जायँ।
सुनिकै बातैं ये सुनवाँ की ❀ बोले फेरि बनाफरराय॥
चोरी चोरा ना हम जैहैं ❀ तुमते साँच देयँ बतलाय।
लैकै फौजैं दादा आवैं ❀ हमरी कैद लेयँ छुड़वाय॥
ऐसे ऊदन अब जैहैं ना ❀ नित प्रति सहैं बाँस के घाय।
सुवा बनावो अब मानुप ते ❀ टाँगो फेरि बरगदा जाय॥
इतना सुनिकै रानी सुनवाँ ❀ टाँगा फेरि बरगदा आय।
चील्ह रूप ह्वै उड़ि तहँना ते ❀ पहुँची फेरि मोहोबे जाय॥
मानुषि ह्वैकै फिरि महलन मा ❀ इन्दल पूत लीन बुलवाय।
कहि समुझावा सब इन्दल ते ❀ बप्पै खबरि जनावो जाय॥
सुनिकै बातैं ये माता की ❀ इन्दल पूत चला शिरनाय।
जहाँ कचहरी है आल्हा कै ❀ इन्दल पूत पहूँचा आय॥
बड़े प्यार सों आल्हा ठाकुर ❀ अपने पास लीन बैठाय।
फिरि शिर सूँघ्यो आल्हा ठाकुर ❀ बोल्यो मधुर वचन मुसुकाय॥
काह लालसा है बचुवा कै ❀ सो अब बेगि देउ बतलाय।
इतना सुनिकै इन्दल ठाकुर ❀ कहिगा यथातथ्य सब गाय॥
सुनिकै आल्हा बोलन लागे ❀ है यहु दुष्ट लहुरवा भाय।
करकति छाती दुख सुनिकै अब ❀ त्यहिते कैद छुड़ावन जाय॥
इतना कहिकै आल्हा ठाकुर ❀ डंका तुरत दीन बजवाय।
सजिगा लश्कर फिरि आल्हा का ❀ तुरतै कूच दीन करवाय॥
बनिकै चिल्हिया सुनवाँ रानी ❀ आधे सरग रही मड़राय।
जाय बरगदा के फिरि पहुँची ❀ चुप्पे बैठि डारपै जाय॥

डारि मशान दयो सुभियादल ❀ तुरतै पिंजरा लीन उठाय।
कछू दूरिचलि झारखण्ड ते ❀ फूँका मन्त्र तहाँ पर जाय॥
मानुष ह्वैकै फिरि बघऊदन ❀ ठाढ़े भये शीश को नाय।
तब समुझावा रानी सुनवाँ ❀ लश्कर गयो तुम्हारो आय॥
चील्ह रूप ह्वै रानी सुनवाँ ❀ बैठी एक डार पै जाय।
तहँते चलिकै ऊदन ठाकुर ❀ आगे मिले फौज में आय॥
जादू चौकी सुभिया वाली ❀ सत्रियाँ हाल कहा समुझाय।
इतना सुनिकै सुभिया बेड़िनि ❀ तुरतै उठी तड़ाका धाय॥
सहुवा बीरन को बुलवावा ❀ औ सब हाल दीन बतलाय।
करो तयारी समरभूमि की ❀ आये लड़न बनाफरराय॥
खबरि फैलिगै यह बेड़ियन मा ❀ ह्वैगे डेढ़ सहस तय्यार।
झीलम बखतर सबहिन पहिरा ❀ सबहिन बाँधिलीन हथियार॥
कोउकोउबेड़ियाचढ़िहाथिनमा ❀ कोउ कोउ घोड़ भये असवार।
बहुतक बेड़िया हैं पैदल मा ❀ लीन्हे हाथ ढाल तलवार॥
गड़िगा तम्बू ह्याँ आल्हा का ❀ भारी ध्वजा रहा फहराय।
बाजै डंका अहतंका का ❀ हाहाकार शब्द गा छाय॥
देबा ऊदन इन्दल ठाकुर ❀ तीनों भये बेगि तय्यार।
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❀ बाँके घोड़न भे असवार॥
दुहुँ दल तुरतै इकठौरी भे ❀ लागी चलन तहाँ तलवार।
कहुँ कहुँ भाला कहुँ कहुँ बरछी ❀ कहुँ कहुँ मारैं ज्वान कटार॥
कटि भुजदण्डैं गिरैं खेत में ❀ उठि उठि रुण्ड करैं तलवार।
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार॥
मारे मारे तलवारिन के ❀ नदिया बही रक्त की धार।
ना मुँह फेरैं मोहबे वाले ❀ नादलबेड़ियनकात्यहिवार॥

बड़े लड़ैया ई बेड़िया हैं ❀ इनते हारि गयी तलवार।
को गति वरणै तहँ इन्दल के ❀ सबदिशि करै भड़ाभड़ मार॥
सुनवाँ सुभिया के वरणी में ❀ जादुन दुऊ बड़ी हुशियार।
आगी पानी अरु आँधी की ❀ पुरियन होय तहाँ पर मार॥
चलै सिरोही रणमण्डल मा ❀ क्षत्री गरू करैं ललकार।
कउँधालपकनिबिजलीचमकनि ❀ तड़पैं चहुँदिशा तलवार॥
क्षत्री गाजैं डंका बाजैं ❀ छाजैं तहाँ शूर सरदार।
को गति वरणै तहँ बेड़ियन के ❀ उनतो भली मचाई रार॥
इनहुन दुर्गति तिनकी कीन्ही ❀ कायर छोड़ि भागि मैदान।
कटि कटि कच्छा गिरैं बछेड़ा ❀ दैहा होयँ अनेकन ज्वान॥
पाँचसै बेड़िया घायल ह्वैगे ❀ सब दल रहिगा एक हजार।
तीनसै क्षत्रिय मोहबे वाले ❀ जूझे समर तहाँ त्यहिवार॥
रानी सुनवाँ सुभिया बेड़िनि ❀ जादुन करैं तहाँ पर रार।
कोऊ काहू ते कमती ना ❀ दोऊ जादुन में हुशियार॥
बीरमहम्मद की पुरिया को ❀ सुभिया छाँड़िदीन त्यहिवार।
नारसिंह की जादू लैकै ❀ सुनवाँ तजा तुरत ललकार॥
चिल्हिया ह्वैकै सुनवाँ सुभिया ❀ दूनन सून कीन मैदान।
लड़ते लड़ते दूनों चिल्हिया ❀ पहुँचीं जाय तुरत असमान॥
लड़ते लड़ते दुउ ऊपर ते ❀ नीचे गिरीं तड़ाका आय।
बड़ी लड़ाई भै पंजन ते ❀ अद्भुत समर कहा ना जाय॥
जहाँ लड़ाई दुउ चिल्हियनकी ❀ इन्दल तहाँ पहूँचा आय।
सुनवाँ बोली तहँ इन्दल ते ❀ बेटा मूड़ देउ बगदाय॥
इन्दल बोले तब सुनवाँ ते ❀ कैसे देवैं मूड़ गिराय।
जो हम मारैं यहि तिरिया को ❀ तौ रजपूती धर्म नशाय॥

हाथ मेहरियन पर छाँड़ैं ना ❀ कबहूँ बीर समर में माय।
कैसे मारैं ह्म तिरिया को ❀ माता सोचो और उपाय॥
इतना सुनिकै सुनवाँ बोली ❀ बेटा जूरा लेउ उड़ाय।
बातैं सुनिकै ये सुनवाँ की ❀ जूरा काटि लीन त्यहिठाँय॥
जीवन दान दीन सुभिया को ❀ सोऊ भागि तड़ाका धाय।
जादू झूठी भईं सुभिया की ❀ तबसो लागि तहाँ पछिताय॥
ऊदन देबा की मारुन मा ❀ बेड़िया भागे खेत बराय।
जो कोउ भागतहै सम्मुख ते ❀ त्यहि ना हनैं बनाफरराय॥
मारे मारे तलवारिन ते ❀ बिड़िया चिरियाकरैं निदान।
खेत छूटिगा सब बिड़ियन ते ❀ जीता उदयसिंह मैदान॥
बाजे डंका अहतंका के ❀ ह्वैगा घोर शोर घमसान।
जितने क्षत्री मोहवेवाले ❀ डेरन आयगये ते ज्वान॥
चील्ह रूप ह्वै सुनवाँ रानी ❀ महलन आयगयी ततकाल।
कूच करायो फिरि लश्कर को ❀ बेटा देशराज के लाल॥
आल्हा ठाकुर पचशब्दा पर ❀ इन्दल पपिहापर असवार।
घोड़ बेंदुला पर ऊदन हैं ❀ कम्मरपरी नाँगि तलवार॥
यहु अलबेला भीषमवाला ❀ देबा मैनपुरी चौहान।
घोड़ मनोहर पर सोहतहै ❀ रणमा बड़ा लड़ैया ज्वान॥
कैयो दिनकी मैजलि करिकै ❀ झुन्नागढ़ै पहूँचे आय।
गड़िगा तम्बू तहँ आल्हा का ❀ भारी ध्वजारही फहराय॥
ढोल नगारा तुरही बाजीं ❀ हाहाकार शब्दगा छाय।
गा हरिकारा तब झुन्नागढ़ ❀ राजै खबरिजनावा जाय॥
आल्हा ऊदन मोहबे वाले ❀ धूरे परे हमारे आय।
आवैं फौजैं झारखण्ड ते ❀ अबतो नगर मोहोबेजायँ॥

सुनिकै बातैं हरिकाग की ❀ पलकी तुरत लीन मँगवाय।
दुइशत मुहरैं इक हीरालै ❀ पलकी चढ़ा तड़ाकाधाय॥
जहाँ बनाफर आल्हा ठाकुर ❀ राजा तहाँ पहूँचा आय।
आदर करिकै आल्हा ठाकुर ❀ अपने पास लीन बैठाय॥
डारि अशर्फी दी सम्मुखमा ❀ हीरा हाथ दीन पकराय।
सवियाँ गाथा तव ऊदन की ❀ आल्हा यथातथ्यगे गाय॥
बड़े प्रेम सों दोऊ ठाकुर ❀ बोलें प्रीति रीति के भाय।
विदा मांगिकै फिरि आल्हासों ❀ राजा चढ़ा पालकी जाय॥
गा महराजा झुन्नागढ़ मा ❀ तम्बुन स्वचे बनाफरराय।
राति बसेरा करि झुन्नागढ़ ❀ भुरहीं कूच दीन करवाय॥
कैयो दिनकी मंजलि करिकै ❀ मोहबे गये बनाफरराय।
सौसौ तोपैं दर्गी सलामी ❀ जब घर गये उदयसिंहराय॥
को गति बरणै त्यहि समयाकै ❀ हमरे वृत कही ना जाय।
ऊदनहरण पूर अब ह्वैगा ❀ ध्यावैं तुम्हैं शारदा माय॥
कण्ठ में बैठो तुम महरानी ❀ भूले अक्षर देउ बताय।
आशिर्बाद देउँ मुंशीसुत ❀ जीवो प्रागनारायण भाय॥
रहै समुन्दर में जबलों जल ❀ जबलों रहैं चन्द्र औ सूर।
मालिक ललिते के तबलों तुम ❀ यशसों रहो सदा भरपूर॥
साथ नवावों पितु माता को ❀ जिनबल पूर कीन यह गाथ।
नहीं भरोसा निज भुजबल का ❀ स्वामी रामचन्द्र रघुनाथ॥
पूर तरंग यहाँ सों ह्वैगा ❀ सुमिरों तुम्हैं भवानीकन्त।
राम रमा मिलि दर्शन देवैं ❀ इच्छा यही मोरि भगवन्त॥

उदयसिंह का हरण समाप्त

आल्हखण्ड

बेला के गौने का प्रथम युद्ध वर्णन

सवैया

ब्याकुल गंध्रब नाग सबै नर देव अदेव लहे दुखभारा।
गोतनु धारि गयी पिरथी अरथी सँग देवन लै त्यहि बारा॥
बाणि भई तबहीं नभते ललिते अवधेश के होब कुमारा।
ध्यावत ब्रह्म सुरासुर जाहि स्वई प्रभु राम लियो अवतारा॥

सुमिरन

दोउ पद बन्दौं रामचन्द्र के ❀ जिनबल चलाजाउँ भवपार।

राम न होते जो दुनिया मा ❀ बेड़ा कौन लगावत पार ॥
कौन समुन्दर को मथिडारत ❀ चौदहरतन लेत निकराय ।
कोधौं मारत दशकन्धर को ❀ धारत कौन धर्मपथ आय ॥
कोधौं तारत इन पापिन को ❀ जिनकी दशा कही ना जाय ।
मारा मारा कहि तरिगे जो ❀ पापी बालमीकि असभाय ॥
गीधअजामिलगतिगणिकाकी❀सबकोविदितभलीबिधिआय
ये सब पापी हैं प्रथमै के ❀ तरिगे रामचरण को ध्याय ॥
स्वई भरोसा धरि जियरेमा ❀ नितप्रति धरों चरणपर माथ ।
पारलगायो भवसागर ते ❀ स्वामी रामचन्द्र रघुनाथ ॥
छोड़ि सुमिरनी अब रघुबर कै ❀ बेला गौन कहौं सब गाय ।
ब्रह्मा ठाकुर दिल्ली जैहैं ❀ पैहैं बिजय पिथौराराय ॥

अथ कथाप्रसंग

एक समैया इक औसर मा ❀ बैठे सभा रजा परिमाल ।
आल्हा ऊदन इन्दल देबा ❀ लाखनि साथ और नरपाल॥
को गति बरणै त्यहि समयाकै ❀ भारी लाग राजदरबार ।
त्यही समैया त्यहि औसरमा ❀ आबा उरई का सरदार ॥
आवो आवो बैठो बैठो ❀ राजै कीन बहुत सतकार ।
बैठिग ठाकुर उरई वाला ❀ आला चुगुलन मा सरदार ॥
बिना बुलाये ते बोला फिरि ❀ तुम सुनिलेउ रजापरिमाल ।
औसर एसो फिरि पैहौ ना ❀ ब्रह्मा गौनलेउ यहिकाल ॥
बैठि कनौजी लाखनिराना ❀ बैठे देशराज के लाल ।
लैकै बीरा यहि औसर मा ❀ तुम धरिदेउ रजापरिमाल ॥
कौन बहादुर यह समया मा ❀ बेला गौन चबावै पान ।
स्याबसिस्याबसिमाहिलठाकुर ❀ तुम्हरे बचन ठीक परमान ॥

इतना कहिकै परिमालिकजी ❀ तुरतै धरा तहाँ पर पान ।
है कोउ क्षत्री तेहेवाला ❀ लेवै पान आन मा ज्वान ॥
सुनिकै बातैं परिमालिक की ❀ सब कोउ गये सनाकाखाय ।
बोलि न आवा क्यहु ठाकुरते ❀ आनन गये तुरत मुरझाय ॥
चारि घरीदिनयहिबिधिबीता ❀ कोउ न पानपास समुहान ।
तबै बहादुर द्यावलि वाला ❀ पहुँचा उदयसिंह तहँ ज्वान ॥
माहिल बोले तब ब्रह्मा ते ❀ ठाकुर काह धरावो नाम ।
पान चबावो तुम दिल्ली का ❀ नाहीं उदयसिंह का काम ॥
जाति कुलीने नहिं ऊदन हैं ❀ नहिं बिश्वासयोग यहिकाल।
इन्हैं निकारयो परिमालिक है ❀ खोंटे देशराज के लाल ॥
मतलब इन ते जो रहिहै ना ❀ पिरथी करी बहुत सनमान ।
अगुवाकारी होयँ बनाफर ❀ तौ सब लड़ैं बीर चौहान ॥
पान चबावो तुम जल्दी सों ❀ देवे बिदा तुरत करवाय ।
इतना सुनिकै ब्रह्मा चलिभे ❀ पहुँचे पाननिकट फिरिआय॥
लैकै बीरा तहँ ऊदनते ❀ ब्रह्मा गये तड़ाकाखाय ।
आल्हा मनमा कायल ह्वैगे ❀ ऊदन बहुत गये शरमाय ॥
दूनों भाई चले तड़ाका ❀ दशहरि पुरै पहूँचे आय ।
आल्हा बोले तहँ ऊदन ते ❀ यह गति भई लहुरवा भाय ॥
बड़ बड़ राजन के सम्मुख मा ❀ ब्रह्मा लीन्ह्यो पान छिनाय ।
घटिहा राजा मोहबे वाला ❀ कैसी हँसी दीन करवाय ॥
तुम नहिं मोहबे ऊदन जावो ❀ हटका रहै लहुरवा भाय ।
कहा हमारा तुम माना ना ❀ ताका पायगयो फलआय ॥
इतना कहिकै आल्हा ठाकुर ❀ सोये बिकट नींद को पाय ।
कछू दिनोंना के बीते मा ❀ गौना समय पहूँचा आय ॥

मल्हना निश्चय तब ठहरायो ❀ जैहैं नहीं बनाफरराय।
बिना बनाफर उदयसिंह के ❀ लैहै कौन बिदा करवाय॥
यहै सोचिकै मल्हना रानी ❀ लाखनिराना लीन बुलाय।
आल्हा ऊदन द्वउ रूठे हैं ❀ जानो आप कनौजीराय॥
हैं दिन बाकी नहिं गौना के ❀ याको कौन करी तदबीर।
जब सुधि आवै इन बातन की ❀ तबहीं होय करेजे पीर॥
आश हमारी अब तुमहीं लग ❀ साँची सुनो कनौजीराय।
तुम जो जावो ब्रह्मा सँग मा ❀ तौ सबकाम सिद्ध ह्वैजाय॥
सुनिकै बातैं ये मल्हना की ❀ बोले फेरि कनौजीराय।
हम चलिजैबे ब्रह्मा सँग मा ❀ लैबे बिदा मातु करवाय॥
इतना कहिकै लाखनि चलिभे ❀ अपनी फौज पहूँचे आय।
बाजा डङ्का इत ब्रह्मा का ❀ हाहाकार शब्द गा छाय॥
उतै कनौजी लाखनिराना ❀ अपनी फौज लीन सजवाय।
यह सुधि पाई उदयसिंह जब ❀ आये तबै तड़ाकाधाय॥
औ यह बोले लखराना ते ❀ मानो कही कनौजीराय।
साथी हमरे की ब्रह्मा के ❀ जो तुम फौजलीनसजवाय॥
पहिले लड़िकै हमरे सँगमा ❀ पाछे धरचो अगारी पाँय।
इतना सुनिकै सय्यद बोले ❀ तुम सुनिलेउ कनौजीराय॥
संग न जावो तुम ब्रह्मा के ❀ सम्मत यहै ठीक ठहराय।
करो लड़ाई तुम ऊदन ते ❀ तौ सब जैहैं काज नशाय॥
हितू तुम्हारे नहीं ब्रह्मा हैं ❀ जैसे हितू बनाफरराय।
कहा मानिकै यह सय्यद का ❀ लाखनि फेंट दीन खुलवाय॥
भई अठारह उरई वाले ❀ मोहबे आये तड़ाकाधाय।
बड़ बड़ शूरन को सँग लैकै ❀ ब्रह्मा कूच दीन करवाय॥

सात दिनौना के अरसा मा ❀ दिल्ली गये चँदेलेराय।
दिल्ली केरे फिरि डाँड़े मा ❀ लश्कर ब्रह्मा दीन डराय॥
गड़िगा तम्बू तहँ ब्रह्मा का ❀ भारी ध्वजा रहा फहराय।
माहिल पहुँचे फिरि दिल्ली मा ❀ जहँ पर बैठ पिथौराराय॥
बड़ी खातिरी पिरथी कीन्ही ❀ अपने पास लीन बैठाय।
काहे आये उरई वाले ❀ आपन हाल देउ बतलाय॥
इतना सुनिकै माहिल बोले ❀ मानो साँच पिथौराराय।
ब्रह्मा आये हैं गौने को ❀ फौजै परीं डाँड़ पर आय॥
पहिले वीश ऊदन लीन्ह्यो ❀ सो ब्रह्मा ने लीन छिनाय।
अब मन तुम्हरे जैसी आवै ❀ तैसी कहो पिथौराराय॥
इतना सुनिकै पिरथी बोले ❀ माहिल साँच देयँ बतलाय।
बिना लड़ाई के गौना कहु ❀ कैसे देयँ पिथौराराय॥
करैं लड़ाई अब सँभराभरि ❀ पाछे बिदा लेयँ करवाय।
यह कहि दीजो तुम ब्रह्मा ते ❀ माहिल बार बार समुझाय॥
इतना सुनिकै ब्रह्मानँद ते ❀ माहिल खबरि जनाई आय।
बिना लड़ाई के मनिहै ना ❀ यहु महराज पिथौराराय॥
इतना सुनिकै ब्रह्मा ठाकुर ❀ कागज कलमदान मँगवाय।
लिखिकै चिट्ठी दी धावन को ❀ धावन चला तड़ाका धाय॥
जहाँ कचहरी पृथीराज की ❀ धावन आटा तड़ाका आय।
हाथ जोरिकै धावन तुरतै ❀ चिट्ठी तहाँ दीन पकराय॥
बाँचत चिट्ठी ब्रह्मानँद की ❀ पिरथी क्रोध कीन अधिकाय।
शूर चौंड़िया को बुलवायो ❀ औ सबहालकह्योसमुझाय॥
तुरतै डंका को बजवावो ❀ सबियाँ फौज लेउ सजवाय।
बाँधि जँजीरन तुम ब्रह्मा का ❀ हमका वेगि दिखावो आय॥

हुकुम पिथौरा का पावतखन ❀ डंका तुरत दीन बजवाय।
बाजे डंका अहतंका के ❀ हाहाकार शब्द गा छाय॥
सजिसजितौपैं खेतन चलिभईं ❀ हाथिन होन लागि असवार।
झीलमबखतरपहिरि सिपाहिन ❀ हाथ म लई ढाल तलवार॥
दुइ दुइ भाला इक इक बरछी ❀ कोउ कोउ बाँधी तीनकटार।
तीर तमंचा कड़ाबीन औ ❀ गदकागुर्ज लीन त्यहिवार॥
कच्छी मच्छी नकुला सब्जा ❀ हरियल मुश्की घोड़ अपार।
ताजी तुर्की पँचकल्यानी ❀ इनपर होन लागि असवार॥
अंगद पंगद मकुना भौंरा ❀ सजिगे श्वेतवरण गजराज।
सोहै अँबारी तिन हाथिन पर ❀ बहुतन हौदा रहे विराज॥
कोगति बरणै त्यहि समया कै ❀ मानो कोप कीन सुरराज।
बाजैं डंका अहतंका के ❀ मानों गिरैं उपर ते गाज॥
पहिल नगाड़ा में जिनबन्दी ❀ दुसरे फाँदि भये असवार।
तिसर नगाड़ा के बाजत खन ❀ चलिभे सबै शूर सरदार॥
खर खर खर खर कै रथदौरे ❀ रब्बा चले पवन की चाल।
हाथी चिघरे घोड़ा हींसे ❀ कीन्हेनिशब्दबहुत नरपाल॥
गुप्ती धावन तहँ ब्रह्मा का ❀ तम्बुन अटा तड़ाका आय।
खबरि सुनाई यह ब्रह्मा को ❀ की दल अवै चँदेलेराय॥
इतना सुनिकै ब्रह्मा ठाकुर ❀ फौजैं तुरत लीन सजवाय।
बाजे डंका अहतंका के ❀ बंकन शंक दीन बिसराय॥
ई निरशंका मोहबे वाले ❀ बाँधेनि तुरत ढाल तलवार।
साजा ठाढ़ा हरनागर था ❀ ब्रह्मा फाँदि भये असवार॥
पहिलि लड़ाई भै तोपन कै ❀ पाछे चलन लागि तलवार।
कहुँ कहुँ भाला कहुँ कहुँ बरछी ❀ मारन लागि शूर सरदार॥

तीर तमंचन की मारुइ भइँ ❀ कोताखानी चलीं कटार ।
तेगा चमकै बर्दवान का ❀ ऊना चलै बिलाइति क्यार ॥
को गति बरणै त्यहि समयामा ❀ बाजै छपक छपक तलवार ।
मारे मारे तलवारिन के ❀ नदिया बही रक्त की धार ॥
ना मुहँ फेरैं दिल्ली वाले ❀ ना ई मोहबे के सरदार ।
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार ॥
को गति बरणै जगनायक कै ❀ मारै घूमि घूमि तलवार ।
ब्रह्मा ठाकुर के मुर्चा मा ❀ कोउ न ठाढ़ होय सरदार ॥
लरिका मरिगे पृथीराज के ❀ क्षत्रिन छाँड़ि दीन मैदान ।
धाँधू चौंड़ा त्यहि समया मा ❀ भारी कीन घोर घमसान ॥
भा खलभल्ला औ हल्लाअति ❀ लल्ला डारि भागि हथियार ।
ना मुहँ फेरैं दिल्ली वाले ❀ ना ई मोहबे के सरदार ॥
कीरति प्यारी के भूखे हैं ❀ दोऊ दिशिमा परम जुझार ।
फिरि फिरि मारै औ ललकारै ❀ यहु मल्हना को राजकुमार ॥
घोड़ा मारै भल टापन ते ❀ ऊपर आप करै तलवार ।
ब्रह्मा ठाकुर के मुर्चा मा ❀ क्षत्री डारि भागि हथियार ॥
देखि तमाशा चौंड़ा धाँधू ❀ रहिगे चुप्प साधि त्यहि बार ।
यहु निरशंकी परिमालिक का ❀ बहुतन पठै दीन यमद्वार ॥
रण अभिलाषा नहिं काहू के ❀ सब कउ गये मनैमन हार ।
ठाकुर बेढब जगनायक है ❀ भैने जौनु चँदेले क्यार ॥
धाँधू ठाकुर के मुर्चा मा ❀ दूनों हाथ करै तलवार ।
चौंड़ा ब्राह्मण इकदन्ता से ❀ बीरन रहा तहाँ ललकार ॥
रोज केतकी कहुँ फूलै ना ❀ चंपा रोज न लागै डार ।
गई जवानी फिरि मिलिहै ना ❀ ना फिरि रोज चलै तलवार ॥

चुरियाँ पहिरी द्वउ हाथन मा ❀ तिनविच लीन पनरियादार ।
नथुनी लटकन वेसरि पहिरी ❀ कानन करनफूल शृङ्गार ॥
बेंदा धाखो फिरि माथे मा ❀ बेंदिया शिरपर करै बहार ।
मिस्सी रगरी सब दाँतन मा ❀ चौंड़ा बना जनाना यार ॥
सिरवा ओंधे धरि छाती मा ❀ चोली बन्द लीन कसवाय ।
पहिरी सारी काशमीर की ❀ शोभा कही बूत ना जाय ॥
दुलहिनिबनिकैचौंड़ाबकशी ❀ तुरतै चढ़ा पालकी जाय ।
जहरबुझाई लीन कटारी ❀ सो सारी में धरी चुराय ॥
ताहर बैठे दलगंजन पर ❀ धाँधू हाथी पर असवार ।
भीलमबखतरपहिरिसिपाहिन ❀ हाथ म लई ढाल तलवार ॥
चली पालकी फिरि चौंड़ा की ❀ लश्कर कूच दीन करवाय ।
इक हरकारा ताहर पठयो ❀ औ सब हाल दीन बतलाय ॥
खबरि जनावो तुम ब्रह्मा को ❀ बेला बिदा लेयँ करवाय ।
आवत डोला है बेला का ❀ इकले आवो चँदेलेराय ॥
इतना सुनिकै धावन चलिभा ❀ तम्बुन फेरि पहूँचा आय ।
खबरि जनाई सब ब्रह्मा को ❀ जो कछु ताहर दीन बताय ॥
सुनिकै बातैं हरकारा की ❀ हरनागर पर भयो सवार ।
घरी अढ़ाई के अरसा मा ❀ पहुँचा मोहबे का सरदार ॥
आवत दीख्यो जब ब्रह्मा का ❀ ताहर बोले वचन उदार ।
आवो आवो ब्रह्मा ठाकुर ❀ तुमते हारि गई तलवार ॥
डोला लाये हम बहिनी का ❀ ठाकुर बिदा लेउ करवाय ।
कौन दुसरिहा ह्याँ तुम्हरो है ❀ जो अब रारि मचावै आय ॥
लड़िभिड़ितुमते हम हारे सब ❀ तब यह ठीक लीन ठहराय ।
रंडा ह्वैहै जो बहिनी मम ❀ तौ सब जैहैं काम नशाय ॥

यहै सोचिकै महराजा ने ❀ डोला यहाँ दीन्ह पठवाय।
बड़ी खुशाली भै राजा के ❀ संग न अये बनाफरराय॥
जो कहुँ औते ऊदन ठाकुर ❀ तौ ह्याँ होत युद्ध अधिकाय।
बड़ी खुशाली भै राजा के ❀ जोतुमलीन्ह्योपानछिनाय॥
अब यहु डोला है बहिनी का ❀ मोहबे आपु देउ पठवाय।
सुनि सुनि बातैं ये ताहर की ❀ ब्रह्मा तुरत गये पतियाय॥
भलऔअनभलजबजसहोवय ❀ तब तस बुद्धि जाय बौराय।
सुना न हन्ना क्यहु सुबरण का ❀ ना क्यहु दीखनैनसों जाय॥
रचा बिधाता नहिं कबहूँ था ❀ मारन हेतु गये रघुराय।
यह अनहोनी हम दिखलाई ❀ सोचोसदास्वजनजन भाय॥
होनहार बश ब्रह्मा ह्वैके ❀ डोला निकट गये नगचाय।
तबहीं चौंड़ा उठि पलकी ते ❀ बाँये दीन कटारी घाय॥
दहिने सांग हनी धाँधू ने ❀ ताहर मार्यो तीर चलाय।
तीनों घायपरे ब्रह्मा के ❀ तुरतै गिरे मूर्च्छा खाय॥
यह गति दीखी जब ब्रह्मा की ❀ रोवनलागि मोहबियाज्वान।
तबललकार्यो जगनायकजी ❀ होवो खड़े समर चौहान॥
दगा ते मार्यो तुम ब्रह्मा को ❀ हमरे साथ करो तलवार।
जियत न जाई कउ दिल्ली का ❀ सबका डारों जानसों मार॥
नौ तौ भैने चंदेले का ❀ नहिं ई डारों मुच्छ मुड़ाय।
सुनिकै बातैं जगनायक की ❀ ताहर कूच दीन करवाय॥
ताहर नाहर के जातै खन ❀ जगना झटा तहाँ पर जाय।
मुर्च्छित दीख्यो ब्रह्मानँद को ❀ पलकी उपर दीन पौढ़ाय॥
लैकै पलकी जगनायक जी ❀ तम्बुन फेरि पहूँचे आय।
जागी मुर्च्छा तहँ ब्रह्मा की ❀ बोले तुरत चँदेलेराय॥

कूच करायो नहिं लश्कर को ❀ मोहबे खबरि देउ पठवाय।
सुनिकै बातैं ये ब्रह्मा की ❀ धावन तुरत लीन बुलवाय॥
कही हकीकति सब धावन ते ❀ तुरतै चला शीश को नाय।
जहाँ कचहरी परिमालिक की ❀ धावन तहाँ पहूँचा आय॥
कही हकीकति महराजा ते ❀ तुरतै गिरे पछारा खाय।
बीछी काट्यो या बेरैं ने ❀ मानो डसा भुजंगम आय॥
बिपदा आई फिरि मोहबे मा ❀ फैली बात महल में जाय।
सुनी हकीकति रानी मल्हना ❀ महलन गिरी मूर्च्छा खाय॥
बारहु रानी चंदेले की ❀ रोवैं तहाँ पछारा खाय।
रय्यति रोवैं घर अपने मा ❀ सपनेसरिसजगतदिखलाय॥
साँचो स्वपना जग हम देखैं ❀ कोउन पूत पतोहू भाय।
आज मरैं दिन दूसर काल्ही ❀ याही साँच परै दिखलाय॥
त्यहिते भैया यहि दुनिया मा ❀ कबहुँन करै उपर को शीश।
सम्मत हमरो यह साँचा है ❀ नितप्रतिभजैरामजगदीश॥
सोउन बाचा यहि दुनिया मा ❀ बाहू भये जासु के बीश।
सहसन बाहुन का अर्ज्जुनभा ❀ ताकाहनाअवशिजगदीश॥
काह हकीकति नर पामर की ❀ जो करिलेय उपर को शीश।
रहिगा ठाकुर ना सिरसा का ❀ कलियुग बीरधीरअवनीश॥
ताते चाही नर देही को ❀ झुकि२ झुकत२ झुकि जाय।
त्यों त्यों त्यों त्यों ऊपर जावै ❀ ज्यों२ शीश झुकावत जाय॥
जैसे तरुवर है रसाल को ❀ बौरन भार रहा गरुवाय।
ज्यों ज्यों बाढ़ैं फल रसाल के ❀ त्यों त्यों झुकत२ झुकि जाय॥
ज्योंज्योंपकिपकिटपकतआवैं ❀ त्यों त्यों डार उपर को जाय।
ऐसो सम्मत यह साँचा है ❀ याँचासमय गयोनगच्याय॥

नहींतोआल्हाकोथाल्हाकरि ❀ ललिते धर्म देत दिखलाय।
काह हकीकति नरपामर की ❀ जो अभिमान करतरहिजाय॥
सुनी पाठ है जिन दुर्गा की ❀ छिन हना बीर समुदाय।
धर्म यथारथ की बातैं सब ❀ अबकोस्वजन देयदिखलाय॥
ताते गाथा यह सब छूटा ❀ लूटा दुःख मोहोबा आय।
खबरि पहुँचिगै दशहरिपुरवा ❀ आल्हा निकटतड़ाका जाय॥
आल्हा ऊदन इन्दल तीनों ❀ लागे बैठि तहाँ पछिताय।
द्यावलि सुनवाँ फुलवा तीनों ❀ सुनतै गिरीं पछारा खाय॥
बड़ी दुर्दशा त्यहि समया कै ❀ हमरे बूत कही ना जाय।
रानी मल्हना के महलन मा ❀ सब दुख उतरा गायबजाय॥
फिरि फिरि रानी रोदन ठानैं ❀ सखियाँ रहीं तहाँ समुझाय।
माहिल भूपति द्वउ मरिजावैं ❀ उरई गिरै गाज अरराय॥
जिनकीचुगुलिनतेमहलनमा ❀ यहु दुख परा आज दिन आय।
मरै पिथौरा दिल्लीवाला ❀ जो यहु पूत डरा मरवाय॥
होय निपूती रानी अगमा ❀ सोऊ महल बैठि पछिताय।
इतना कहिकै रानी मल्हना ❀ फिरिफिरि बारबार पछिताय॥
ताहर नाहर गा दिल्ली मा ❀ राजै खबरि जनाई जाय।
बात फैलिगै सब दिल्ली मा ❀ औ रनिवास पहूँची आय॥
खबरि पायकै रानी अगमा ❀ महलन गिरी पछारा खाय।
कन्त जूझिगे रण खेतन मा ❀ बेला सुना तहाँ पर आय॥
बहु पछितानी मन अपने मा ❀ भूषण बसन दीन छिरकाय।
कहा न मानै तहँ काहू का ❀ बेला गिरै परै बिलखाय॥
औ गरिआवै बेला रानी ❀ चौंड़ा बंश नाशि ह्वैजाय।
बने जनाना तू दिल्ली मा ❀ ओदहिजार भवानी खाय॥

नाहक जन्मी धाँधू भैया ❀ दैया गती कही ना जाय।
नहिं रजपूती कछु ताहर मा ❀ धोखे हना तीर का घाय॥
इतना कहिकै बेला रानी ❀ तुरतै उठी तड़ाका धाय।
महल छोंड़ि कै महतारी का ❀ पहुँची और महल में जाय॥
प्रथम युद्ध भा जो गौने मा ❀ सो हम सबै गये अब गाय।
आशिर्बाद देउँ मुन्शी सुत ❀ जीवो प्रागनरायण भाय॥
रहै समुन्दर में जबलों जल ❀ जबलों रहैं चन्द औ सूर।
मालिक ललिते केतबलों तुम ❀ यशसों रहौ सदा भरपूर॥
माथ नवावों पितु माता को ❀ जिन बल पूरिभई यह गाथ।
करों तरंग यहाँ सों पूरण ❀ तव पद सुमिरि वानीनाथ॥
जो अभिलाषा मन हमरे है ❀ सो तुम पूरि करो भगवन्त।
राम रमा मिलि दर्शन देवें ❀ इच्छा यही भवानी कन्त॥

बेला के गौने का प्रथम युद्ध समाप्त

आल्हखण्ड

बेला के गौने की दूसरी लड़ाई में रानालाखनिसिंह तथा उदयसिंहजी की चढ़ाई का वर्णन

सवैया

हे बिधि दे बरदान यही पद पंकज ईश सदा हम ध्यावैं।
होवैं जहाँ जलहू थल में रघुनन्दन को तहँ शीश नवावैं॥
और न काम कछू हमको इक रामको नाम नितै हमगावैं।
याँच यही ललिते कर साँच मिलैं रघुनाथ तबै सुखपावैं॥

सुमिरन

तुम्हें बिधाता हम ध्यावत हैं ❀ धाता कृपा करौ अब हाल।
परम पियारे रघुनन्दन जी ❀ जाते दरश देयँ यहि काल॥
युक्ति बतावो स्वइ धाता तुम ❀ जाते मिटै सकल भ्रमजाल।
दशरथ नन्दन रघुनन्दन को ❀ बन्दन करों सदा सब काल॥
चन्दन अच्चत औ पुष्पन सों ❀ पूजों शम्भु भवानी लाल।
कण्ठ हलाहल भल सोहत है ❀ सोहै बाल चन्द्रमा भाल॥
जटा के ऊपर सुरसरि सोहै ❀ तापर बैठ भुजग बिकराल।
श्वेत बरण तन भस्म रमाये ❀ धारे हृदय मुण्ड के माल॥
को गति बरणै शिवशङ्कर कै ❀ बटतर नित्त करैं बिशराम।
भाँग धतूरन को भोजन करि ❀ ध्यावैं नित्त राम को नाम॥
छूटि सुमिरनी गै देवन कै ❀ शाका सुनो शूरमन क्यार।
चढ़ी कनौजी अब दिल्ली पर ❀ चढ़ि हैं उदयसिंह सरदार॥

अथ कथाप्रसंग

बेला बैठी निज महलन मा ❀ मन मा धरे राम को ध्यान।
कन्त जूझिगे रणखेतन मा ❀ फिरियहकरनलागिअनुमान॥
नैनन आँसू ढारन लागी ❀ पागी महादुःख भ्रमजाल।
मुर्च्छा जागी जब बेला की ❀ चिट्ठीलिखनलागित्यहिकाल॥
लिखी हकीकत यहऊदनका ❀ बेटा देशराज के लाल।
तुम्हैं मुनासिब यह नाहीं थी ❀ जैसी कीन आप यहिकाल॥
वादा कीन्ह्यो तुम ब्याहे मा ❀ गौने बिदा लेब करवाय।
कन्त जूझिगे रण खेतन मा ❀ अन्तौमिलनकठिन दिखराय॥
भये जनाना तुम द्यावलि के ❀ ऊदन बार बार धिक्कार।
नालति तुम्हरी रजपूती का ❀ नाहक लेउ ढाल तलवार॥

होतिउ बिटियातुम द्यावलि के ❀ करतिउ बैठि महल शृङ्गार ।
शोच न होतै तब बेला के ❀ ठाकुर उदयसिंह सरदार ॥
होत जो बेटा बच्छराज का ❀ ठाकुर शूर बीर मलखान ।
तौ का करतीं दिल्लीवाले ❀ बिल्ली रूप सबै चौहान ॥
गिल्ली ह्वैकै आल्हा ठाकुर ❀ दिल्ली देखि डरे यहिकाल ।
ऐसी पिल्ली हैं मोहबे मा ❀ तौ का करैं रजा परिमाल ॥
टिल् टिल् टिल्ली खलभल्ली ई ❀ लल्ली देशराज के लाल ।
होत इकल्ली ज्यहि पल्ली मा ❀ बेटा बच्छराज को बाल ॥
करत दुपल्ला सो छाती के ❀ घाती समर शूर मलखान ।
तुम्हैं मुनासिब अब याही है ❀ आवो उदयसिंह चढ़िज्वान॥
प्रथम मिलावोमोहिंप्रीतमको ❀ बदला लेउ बन्धु को आन ।
जो नहिं अइहौ उदयसिंहतुम ❀ मरिहैं गदा बीर चौहान ॥
शोक समानी अलसानी सो ❀ मानी प्रथम यौवना नारि ।
पूरी पाती लय छाती में ❀ थाती यौवन के उनहारि ॥
यौवन केरे मदमाती सो ❀ घाती समय दीख त्यहिबार ।
फरकत यौवन भुज दच्छिण है ❀ करकत हृदय करेजा फार ॥
धड़कतअनवटबिछियाअँगुरिन❀ कड़कत चोलीबन्दनिहार ।
तड़कततनियाँचौतनियाँसब ❀ रनियाँदुखित भईं त्यहिबार ॥
दुख मदमाती रस बिसराती ❀ आती यार घांघरा धार ।
फिर सतराती पछताती मन ❀ घाती समय दीख त्यहिबार ॥
थर थहराती लहराती मन ❀ आती मन्द मन्द त्यहिबार ।
लखि कर पाती दुखघातीको ❀ ढाहत नैनन नीर अपार ॥
थाहत आई द्वारपाल ढिग ❀ पाती दुःख करेजा फार ।
सो दै दीन्ही द्वारपाल को ❀ मुद्रा दीन्हे एक हजार ॥

मुद्रा रुद्रा के तुल्या जो ❀ मुल्या बिका सबै संसार।
राम न लीन्ह्यो इक मुद्रा को ❀ त्यागे लंक अवध सरदार॥
अनुचित बानी हम ठानी है ❀ रामै कहा जौन सरदार।
तीन लोक के आनँद करता ❀ हरता दुःख जगत भरतार॥
तिनसरदारकहबजगअनुचित ❀ नहिं यह देव वाणिनिरधार।
बेद शास्त्रन के भागत खन ❀ आल्हा जीति लीन संसार॥
परम पवित्र चरित्र हैं जिनके ❀ तिनके नाम लेय संसार।
आल्हा ऊदन मलखे सुलखे ❀ कलियुग धरमध्वजासरदार॥
इनकी कीरति अतिपवित्र है ❀ जो कोउ देखै हृदय उघार।
परम पवित्र चरित्र जिनके हैं ❀ तिनके नाम लेय संसार॥
यहतो ललिते कै ध्वनि बोलै ❀ खोलै और हाल यहि बार।
पाती लैकै धावन चलिभा ❀ पहुँचा नगर मोहोबा द्वार॥
बिपदा छाई ह्याँ मोहबे में ❀ कोउन मसा सरिस भुन्नाय।
यहि गति देखी द्वारपाल ने ❀ ठाढ़े लोग रहे सन्नाय॥
चुप्पे चलिभा दशहरिपुर का ❀ जहँ पर बैठि बनाफरराय।
पाती दीन्ही तहँ धावन ने ❀ ठाकुर उदयसिंह को जाय॥
चुप्पे पाती ऊदन पढ़िकै ❀ तुरतै डरी तड़ाकाफार।
आल्हा ठाकुर तब बोलत भे ❀ साँचे धर्म्मरूप अवतार॥
कहाँ कि पाती यह आई थी ❀ डारी जौनि तड़ाकाफार।
बातैं सुनिकै ये आल्हा की ❀ बोले उदयसिंह सरदार॥
अड़बड़ पाती थी बेला की ❀ गड़बड़ लिखी दुःखकेभार।
जो नहिं जावैं हम दिल्ली को ❀ बेला देय बहुत धिक्कार॥
आयसु पावैं हम दादा को ❀ जावैं युक्ति सहित यहिबार।
जो नहिं जावैं हम दिल्ली को ❀ हमरे जीबे को धिक्कार॥

सुनिकै बातैं आल्हा बोले ❁ मानो कही लहुरवा भाय।
तुम नहिं जावो अबदिल्ली को ❁ चहु मरिजाय चँदेलाराय॥
दोष न देई कउ दुनिया मा ❁ ब्रह्मा लीन्ह्यो पान छिनाय।
अबहीं भूले त्यहि बघऊदन ❁ कैसी कहै लहुरवा भाय॥
सुनिकै बातैं ये आल्हा की ❁ बोले उदयसिंह सरदार।
दूध पियायो बालापन में ❁ मल्हना कीन बड़ा उपकार॥
कैसे जैबै हम दिल्ली ना ❁ दादा जियत मोहिं धिक्कार।
कारो बाना कार निशाना ❁ सबकोउ करैं आज सरदार॥
बनै गँजरिहा सबदल हमरो ❁ दिल्ली हेतु होय तय्यार।
मैं अब जावतहौं तहँना पर ❁ जहँना कनउज के सरदार॥
इतना कहिकै ऊदन चलिभे ❁ तम्बुन फेरि पहूँचे आय।
सम्मत करिकै लखराना सों ❁ उत्तर पत्र दीन पठवाय॥
लाखनिऊदनमिलिआल्हाते ❁ फौजैं तुरत लीन सजवाय।
भई तयारी फिरि दिल्ली की ❁ लश्कर कूच दीन करवाय॥
पाँच सात दिन के अरसा मा ❁ दिल्ली शहर गये नगच्याय।
दिल्ली केरे फिरि डाँड़ेमा ❁ परिगे जाय कनौजीराय॥
चौंड़ा बकसीत्यहि समयामा ❁ तम्बुन पास पहूँचा आय।
मिले बनाफर तहँऊदन जब ❁ पूँछन लाग चौंड़ियाराय॥
कहाँ ते आयो औ कहँ जैहौ ❁ आपन हाल देउ बतलाय।
सुनिकै बातैं ये चौंड़ा की ❁ बोला तुरत बनाफरराय॥
हिरसिंहबिरसिंहहमबिरियाके❁ गाँजर देश हमारो जान।
सुनी नौकरी घर बेला के ❁ आयन करनस्वई हम ज्वान॥
इतना सुनिकै चौंड़ा बोला ❁ ठाकुर वचन करो परमान।
काह दरमहा तुम चाहत हौ ❁ हमते सत्य बतावो ज्वान॥

हम बतलावैं दिल्लीपति का ❁ नौकर तुम्हैं देयँ करवाय।
करो नौकरी जो औरत की ❁ तौ रजपूती धर्म नशाय॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❁ नाहर साँच देयँ बतलाय।
एकलाख ते कम नहिं लेवैं ❁ यहु नितखर्च हमारो आय॥
देय महीना तीस लाख को ❁ ताकी करैं नौकरी भाय।
बारह बरसै हमते लरिकै ❁ जयचँद कूच दीन करवाय॥
दीन न पैसा हम कनउजका ❁ सो यश रहा जगत में छाय।
चढ़ा बनाफर उदयसिंह जब ❁ हमरी लूट लीन करवाय॥
तंगी आई जब हमरे घर ❁ तब दरबार जुहारा आय।
महिना कमती कछु लेहैं ना ❁ तुमते साँच दीन बतलाय॥
इतना सुनिकै चौंड़ा चलिभा ❁ आयो जहाँ पिथौराराय।
खबरि गँजरिहन की बतलाई ❁ चौंड़ा बार बार समुझाय॥
खबरि पायकै पिरथी बोले ❁ मानो कही चौंड़ियाराय।
कहाँ खजाना घर इतना है ❁ देवैं तीस लाख जो भाय॥
पारस पत्थर चन्देले घर ❁ तिनकी करैं नौकरी जाय।
म्वहिंअभिलाषा नहिं नौकरकी ❁ देवैं तीस लाख जो भाय॥
इतना सुनिकै चौंड़ा बोला ❁ मानो कही पिथौराराय।
बड़े लड़ैया गाँजरवाले ❁ मोहबा आपु लेउ लुटवाय॥
दश औ पन्द्रा दिन नौकरकरि ❁ करिये काज पिथौराराय।
फिरि मनभावै महराजा के ❁ दीजै सबके नाम कटाय॥
यह मनभायी पृथीराज के ❁ तुरतै हुकुम दीन फरमाय।
हुकुम पिथौरा को पावत खन ❁ हिरसिंहबिरसिंहलीनबुलाय॥
लाखनि ऊदन दोऊ आये ❁ चेहरा अपन दीन लिखवाय।
कीन नौकरी घर पिरथी के ❁ क्षत्री गये शहर में आय॥

हुकुम लागिगा यह पिरथीका ❀ हाथी घोड़ा देउ दगाय।
सुनिकै बातैं महराजा की ❀ लाखनिबहुतदीनसमुझाय॥
लिखी न हिंसा कहुँ बेदन में ❀ गीता पाठ कीन अधिकाय।
बिनय हमारी यह राजन है ❀ यहु मंसूख हुकुम ह्वैजाय॥
नहीं फायदा कछु याते है ❀ ओ महराज पिथौराराय।
सुनिकै बातैं ये लाखनि की ❀ खारिज हुकुम दीन करवाय॥
लाखनि ऊदन देबा सय्यद ❀ धनुवाँ यई पाँचहू ज्वान।
बेला बेटी के द्वारे की ❀ रच्छा करो कह्यो चौहान॥
हुकुम पाय कै महराजा को ❀ पाँचो चले शीश को नाय।
बेला बेटी के द्वारे पर ❀ ह्वैगे द्वारपाल फिरि आय॥
चौपरि बिछिगै तहँ लाखनिकै ❀ खेलन लाग बनाफरराय।
चर्चा कीन्ही तहँ बेला की ❀ यहु अलबेला लहुरवाभाय॥
गुप्त बार्त्ता बाँदी सुनिकै ❀ बेलै खबरि जनाई जाय।
द्वारपाल गाँजर के आये ❀ तुम्हरी कथा रहे ते गाय॥
इतना सुनिकै बेला बेटी ❀ आपै गयी द्वारढिग आय।
लाखनि ऊदन की बातैं सुनि ❀ जान्यो गये बनाफर आय॥
रूपा बाँदी ते बोलति भै ❀ पूँछो द्वारपाल सों जाय।
कहाँ के ठाकुर ये आये हैं ❀ आपन हाल देयँ बतलाय॥
सुनिकै बातैं ये बेला की ❀ बाँदी चली तड़ाका धाय।
जहाँ बनाफर उदयसिंह हैं ❀ बाँदी अटी तहाँपर आय॥
कही हकीकति सब बेला की ❀ बाँदी हाथ जोरि शिरनाय।
सुनिकै बातैं त्यहि बाँदी की ❀ चिट्ठी दीन बनाफरराय॥
लैकै चिट्ठी बाँदी चलिभै ❀ बेलै दीन तड़ाका धाय।
पढ़ी बनाफर की चिट्ठी जब ❀ महलन तुरतलीन बुलवाय॥

परदा कीन्ह्यो उदयसिंह ते ❀ कुरसी अलग दीन डरवाय ।
गुप्त वार्ता बेला पूछी ❀ ऊदन सबै दीन बतलाय ॥
तब बिश्वास भई जियरे मा ❀ आँहीं ठीक बनाफरराय ।
तब तो पूँछन बेला लागी ❀ साँची कहौ लहुरवा भाय ॥
संग न आये तुम बालम के ❀ जूझे खेत चँदेलेराय ।
कहाँ मंसई तब तुम्हरी गै ❀ ऊदन साँच देउ बतलाय ॥
ऊदन बोले तब बेला ते ❀ भौंजी मोर कीन अपमान ।
बिरा धरावा गा गौने का ❀ रहिगा चार घरी लों पान ॥
कोऊ खावा जब बीरा ना ❀ तब मैं उठा शारदा ध्याय ।
करसों हमरे बीरा लीन्ह्यो ❀ तुम्हरे कन्त चँदेलेराय ॥
माहिल भूपति तहँ मुसकाने ❀ हमरो मरण समय गो आय ।
कछु नहिंबोलेपरिमालिकजी ❀ दादा हमरे उठे रिसाय ॥
कहा हमारो तुम मान्यो ना ❀ ऊदन गयो मोहोबे आय ।
सवन चिरैया ना घर छोड़ै ❀ नाबनिजराबनिजकोजाय ॥
तबै निकास्यो परिमालिकजी ❀ दीन्ही बहुत तलाकै माय ।
गे जगनायक जब लेने को ❀ तब नहिं अवै बनाफरराय ॥
बहु समुझाये ते आये ते ❀ लाखनिराना संग लिवाय ।
भरी कचहरी परिमालिक की ❀ ब्रह्मा लीन्ह्यो पान छिनाय ॥
वासरि करिकै द्वासरि कीन्ही ❀ दूनों भाय गयन अलगाय ।
दादा रोंका मोहिं अवतीखन ❀ तुमनहिं जाउ लहुरवाभाय ॥
वादा तुमते हम कीन्हा था ❀ तुम्हरी बिदा लेब करवाय ।
गड़बड़िचिट्ठीतुमअतिलिखिकै ❀ धावन हाथ दीन पठवाय ॥
सो दिखलावा नहिं दादा को ❀ कण्ठै हाल दीन बतलाय ।
दूध पियावा मल्हना रानी ❀ स्यावामोहिं बहुत दुलराय ॥

ब्याह हमारे मलहना रानी ❀ कुँवना पाँव दीन लटकाय।
प्राण नेग दै मैं मलहना को ❀ टारयों पैर तहाँ ते माय॥
प्राण निछावरि तुमपर करिकै ❀ बिछुरे कन्त देब मिलवाय।
इतना सुनिकै बेला बोली ❀ यहनहिंआशपूरिदिखलाय॥
कुटुँब हमारो सब बैरी है ❀ हमको राँड़ दीन करवाय।
जियत पिथौरा औ ताहर के ❀ कैसे मिलब पियाको जाय॥
प्रभुता ऐसी क्यहि क्षत्री मा ❀ प्रीतम मिलन देय करवाय।
शब्द कान सुनि तीर चलावैं ❀ हमरे पिता पिथौराराय॥
लाखनि ऊदन कै गन्ती का ❀ हमरी बिदा लेयँ करवाय।
डोला लाये संयोगिन का ❀ तब कहँ हते कनौजीराय॥
सोई लाखनि की दूसर हैं ❀ हमरी बिदा लेयँ करवाय।
रहै आसरा तुम्हरो ऊदन ❀ सोऊ नहीं पूर दिखलाय॥
भारी फौजैं महराजा की ❀ डोला कौन भांति सों जाय।
यहै अँदेशा है जियरे मा ❀ लाखनिराना लेउ बुलाय॥
हुकुम पायकै यह बेला को ❀ बाँदी चली तड़ाका धाय।
है मर्दाना ज्यहि का बाना ❀ सुन्दर सुघर कनौजीराय॥
सो चलिआवा सँग बाँदी के ❀ पहुँचा रंग महल में आय।
आवत दीख्यो लखराना को ❀ खातिर कीन लहुरवाभाय॥
बैठि कनौजी गे महलन मा ❀ बेला बोली बैन सुनाय।
बिदाकरावन तुम कस आये ❀ दिल्ली शहर कनौजीराय॥
तुम्हरे घरते संयोगिन का ❀ लाये दिल्ली के सरदार।
त्यही बंश के तुम लाखनि हौ ❀ की कहुँ अन्तलीनअवतार॥
सुनिकै बातैं ये बेला की ❀ यहु अलबेला कनौजीराय।
लाली लाली आँखी करिकै ❀ दाढ़ी वार दीन बिखराय॥

एक हाथ धरि तहँ मुच्छन मा ❀ नंगी एक हाथ तलवारि।
लाखनि बोले तहँ बेलाते ❀ कैसी बातैं बकै गँवारि॥
काह हकीकत थी पिरथी की ❀ बिटिया लेत चँदेले केरि।
बिटिया लाये घर चेरी की ❀ रानी कहा गँवारिन टेरि॥
त्यहिके बदले कहु अगमा का ❀ डोला लेउँ आज निकराय।
तौ तौ लरिका रतीभान का ❀ नहिं ई मुच्छ डरों मुड़वाय॥
ऊदन बोले फिरि बेलाते ❀ भौजी काह गयी बौराय।
दीख मंसई तुम ऊदन की ❀ हाथी द्वार पछारा आय॥
करो तयारी तुम महलन ते ❀ बिछुरेकन्त देयँ मिलवाय।
इतना सुनिकै बेला बोली ❀ मानो कही लहुरवाभाय॥
चोरी चोरा हम जैहैं ना ❀ नेगिन नेगु देउ चुकवाय।
लेउ अधकरी अब ब्याहे की ❀ पाछे बिदा लेउ करवाय॥
यह मनभाई लखराना के ❀ बोले सुनो बनाफरराय।
चारि रुपैयन के तोड़ा लै ❀ नेगिन नेगु देउ चुकवाय॥
इतना सुनिकै ऊदन ठाकुर ❀ नेगिन तुरत लीन बुलवाय।
चारिउ तोड़ा रुपयन वाले ❀ तहँ पर तुरत दीन बँटवाय॥
रानी अगमा के महलन को ❀ बेला चली तड़ाका धाय।
देबा ऊदन धनुवाँ सय्यद ❀ ये दरबार पहूँचे जाय॥
द्वारे ड्योढ़ी के महराजा ❀ ठाढ़े रहैं पिथौराराय।
सय्यद देबा धनुवाँ सँग में ❀ पहुँचा तहाँ बनाफरराय॥
माथ नायकै महराजा को ❀ बोला सुनो पिथौराराय।
नेगु चुकावा हम नेगिन का ❀ दायज आप देउ मँगवाय॥
बेला जैहैं अब श्वशुरे को ❀ राजन साँच दीन बतलाय।
हिरसिंहबिरसिंहहमआहिनना ❀ हमहैं छोट बनाफरराय॥

इतना सुनिकै माहिल भूपति ❀ बोले सुनो पिथौराराय।
बैठक करिये दरवाज़े पर ❀ दायज उचित देउ मँगवाय॥
माहिल बोले फिर चुप्पे से ❀ राजन साँच देयँ बतलाय।
उतरैं घोड़ा ते जब ऊदन ❀ तुरतै मूड़लेउ कटवाय॥
यह मनभाई महराजा के ❀ बैठक तहाँ दीन करवाय।
बड़े कीमती दुइ कुण्डल को ❀ तुरतै तहाँ दीन रखवाय॥
कह्यो पिथौरा फिरि ऊदन ते ❀ बैठो आय बनाफरराय।
दायज दीन्ह्यों परिमालिक को❀ कुण्डल यहाँ दीन रखवाय॥
इतनी सुनिकै ऊदन बोले ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय।
राजा नौकर की समता ना ❀ बैठैं कौन भाँति से आय॥
नोक लगायो फिर भाला की ❀ कुण्डल दोऊ लीन उठाय।
सजग देखिकै फिरि क्षत्रिनको❀ घोड़ा तुरत दीन दौराय॥
बेला पहुँची जब महलन मा ❀ माता लीन्ह्यो कण्ठ लगाय।
भल समझायो रानी अगमा ❀ बेटी शोक देउ बिसराय॥
लिखी बिधाता की मेटै को ❀ कीन्ह्यों घाटि चौंड़ियाराय।
दुलहिनि बोली तब ताहर की ❀ ननदी रोवै तोरि बलाय॥
ब्याह तुम्हारो कहुँ अनते अब ❀ करि हैं श्वशुर पिथौराराय।
राजपाट सब तुम्हरैं घरमा ❀ दौलतभरी पुरी अधिकाय॥
संग न कीन्ह्यो ननदोई का ❀ ननदी रोवै तोरि बलाय।
ब्याह न अनुचित कछु दूसरहै ❀ ननदी काह गयी बौराय॥
मरे चँदेले मरि जावै दे ❀ ननदी रोवै तोरि बलाय।
सुनिकै बातैं ये भौजी की ❀ बेला बोली क्रोध बढ़ाय॥
उचित न बातैं कुछ तेरी हैं ❀ अनुचित बात रही बतलाय।
भाँवरि फिरिकै चंदेले सँग ❀ करिबे ब्याह और सँगजाय॥

कउने गवाँरे की बिटिया है ❀ ऐसी टेढ़ि मेढ़ि बतलाय।
नहिं सुखस्वइहै तुइ महलन में ❀ डरिहौं अवशि राँड़ करवाय॥
राँड़ अभागिनि की बातैं सुनि ❀ भौजी चुप्प साधि रहिजाय।
तब तो बेला अलबेला यह ❀ भूषणबस्त्र सजे अधिकाय॥
रूप उजागरि सबगुण आगरि ❀ शोभा कही बूत ना जाय।
कटि लचकीली सो मटकीली ❀ पीली दुःख देह दिखलाय॥
माँग सँवारी सो सुकुमारी ❀ मानो इन्द्रधनुष समुदाय।
कारी अलकैं नागिन झलकैं ❀ पलकैं मूँदे औ रहि जाय॥
ब्यला भवानी बनि महरानी ❀ पलकी चढ़ी तड़ाका धाय।
चलिभै पलकी फिरि बेलाकै ❀ लाखनिपास पहूँची आय॥
लैकै पलकी लाखनिराना ❀ तुरतै कूच दीन करवाय।
सय्यद देबा धनुवाँ लैकै ❀ पहुँचा आय बनाफरराय॥
मठी शारदा की डांड़े पर ❀ डोला तहाँ दीन धरवाय।
बेला पहुँची तहँ मठिया मा ❀ पूजन हेतु शारदामाय॥
चन्दन अक्षत औ पुष्पन सों ❀ बेला पूज्यो मोद बढ़ाय।
धूप दीप दी तहँ देबी की ❀ मेवा मिश्री भोग लगाय॥
फुलवा मालिनि ते फिरि बोली ❀ ताहर खबरि जनावो जाय।
बहिनि तुम्हारी के डोला को ❀ लीन्हे जायँ कनौजीराय॥
बदला लैहैं संयोगिनि का ❀ तुम्हरे जीबे का धिकार।
जल्दी आवो अब मारग में ❀ डोला रोंकि लेउ यहिबार॥
मालिनि चलिभै तब मठिया ते ❀ दिल्ली आटी तड़ाका धाय।
खबरि सुनाई सब ताहर को ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय॥
सुनिकै बातैं यहि मालिनि की ❀ ताहर फौज लीन सजवाय।
बाजत डंका अहतंका के ❀ तुरतै कूच दीन करवाय॥

यहु निरशंका दिल्लीवाला ❀ ताहर अटा तड़ाका आय।
औ ललकारा लखराना को ❀ ठाढ़े होउ कनौजोराय॥
धरिकै डोला अब बेला का ❀ तुरतै कूच देउ करवाय।
नहींतोबचिहौनाकनउजलग ❀ जौविधिआपबचावैआय॥
भूरी हथिनी के ऊपर ते ❀ लाखनि गरू दीन ललकार।
मर्द सराहों मैं ताहर को ❀ डोला पास आउ सरदार॥
बेला मिलिहैं अब ब्रह्मा को ❀ ताहर कूच जाउ करवाय।
ब्याह बनाफर ऊदन कीन्ह्यो ❀ लाखनिविदालीनकरवाय॥
काह हकीकति है ताहर कै ❀ डोलापास जायनगच्याय।
जितने सँगमा तुम लै आये ❀ सबके मूड़ लेउँ कटवाय॥
तौ तौ लरिका रतीभान का ❀ नहिं ई मुच्छ डरौं मुड़वाय।
जीवन चाहौ ताहर नाहर ❀ तौ अब कूच जाउ करवाय।
सुनिकै बातें ये लाखनि की ❀ ताहर बोले बचन सुनाय॥
मारो मारो औ रजपूतो ❀ डोला लेवो तुरत छिनाय।
सुनिकै बातैं ये ताहर की ❀ तुरतै चलन लागि तलवार।
एक सहस दल पैदल सेना ❀ दुइशत बीस साथ असवार॥
अभिरे क्षत्री अरभ्रवारा सों ❀ बाजै छपक छपक तलवार।
मारे मारे तलवारिन के ❀ नदिया बही रक्त का धार॥
को गति बरणै तहँ ताहरकै ❀ नाहर दिल्ली का सरदार।
पैदल सेना धुनकत आवै ❀ मारत आवै घोड़ असवार॥
यहु दलगंजन की पीठी मा ❀ सोहै दिल्ली का सरदार।
जहँ पर भूरी है लाखनि कै ❀ ताहर आय गयो रपहिवार॥
एँड़ लगायो दलगंजन के ❀ हौदा उपर पहूँचा जाय।
गुर्ज चलाई लाखनिराना ❀ मस्तक परी घोड़ के आय॥

हटि दलगंजन तब दलतेगा ❀ बलते थहर थहर थर्राय।
जितनी सेना थी ताहर की ❀ तुरतै भागि चली भर्राय॥
ताहर हटिगे जब मुर्चा ते ❀ लाखनि कूच दीन करवाय।
बाजत डंका अहतंका के ❀ निर्भय जात कनौजीराय॥
बेला बोली तहँ ऊदन ते ❀ साँची कहौ बनाफरराय।
दायज दीन्ह्यों का महराजा ❀ हमते साँच देउ बतलाय॥
सुनिकै बातैं ये बेला की ❀ कुण्डल तुरत दीन दिखलाय।
देखि कीमती दोउ कुण्डल को ❀ बेला बड़ी खुशी ह्वै जाय॥
चलै पालकी के संगै मा ❀ यहु रणबाघु लहुरवा भाय।
ताहर चलिभा राजमहल में ❀ जहँ पर बैठ पिथौराराय॥
खबरि सुनाई सब लाखनि की ❀ डोला जौन भाँति लै जाय।
सुनिकै बातैं ये ताहर की ❀ तब जरि उठा पिथौराराय॥
तुरत चौंड़िया को बुलवायो ❀ नाहर हुकुम दीन फरमाय।
लैकै फौजैं जल्दी जावो ❀ बेला डोला लेउ छिनाय॥
जान न पावैं कनउजवाले ❀ सबके मूड़ लेउ कटवाय।
इतना सुनिकै चौंड़ा चलिभा ❀ डंका तुरत दीन बजवाय॥
बाजत डंका अहतंका के ❀ चौंड़ा कूच दीन करवाय।
भा भटभेरा फिरि लाखनि ते ❀ द्वउदल गये बरोबरि आय॥
भाला बरछी कड़ाबीन की ❀ लागीं होन भड़ाभड़ मार।
पैदल के सँग पैदल सेना ❀ औ असवार साथ असवार॥
सूँड़ि लपेटा हाथी भिड़िगे ❀ अंकुश भिड़े महौतन केरि।
हौदा हौदा यकमिल ह्वैगे ❀ मारैं एक एक को हेरि॥
ना मुँह फेरैं दिल्ली वाले ❀ ना ई कनउज के सरदार।
तेगा चमकै बर्दवान का ❀ ऊना चलै बिलाइति क्यार॥

मारे मारे तलवारिन के ❀ नदिया बही रक्त की धार।
मूड़न केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार॥
रुण्डन लैकै तलवारी को ❀ अद्भुत कीन तहाँ पर मार।
बड़े लड़ैया दोऊ ठाकुर ❀ मानैं नहीं तहाँ कछुहार॥
यहु यकदन्ता हाथी ऊपर ❀ चौंड़ा गरू देय ललकार।
भूरी हथिनी के ऊपर ते ❀ राजा कनउज का सरदार॥
भा भटभेरा द्वउ शूरन ते ❀ दोऊ खैंचि लीन तलवार।
दोऊ मारैं तलवारी ते ❀ दोऊ लेयँ ढाल पर वार॥
कोऊ काहू ते कमती ना ❀ द्वउ रण परा बरोबरि आय।
गुर्ज चलाई फिरि चौंड़ा ने ❀ हौदा झुके कनौजीराय॥
ताकिकै भाला लाखनि मारा ❀ हाथी मस्तक गयो समाय।
हाथी गिरिगा यकदन्ता तहँ ❀ पैदल भयो चौंड़ियाराय॥
भागि सिपाही दिल्ली वाले ❀ अपने डारि डारि हथियार।
लैकै डोला आगे चलिभा ❀ लाखनिकनउजका सरदार॥
गाहरिकारा फिरि दिल्ली मा ❀ जहँ पर भरी लाग दरबार।
ताहर धाँधू तहँ बैठे हैं ❀ अंगदनृपतिग्वालियरक्यार॥
तहँ हरिकारा बोलन लाग्यो ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय।
जूझि ग हाथी इकदन्ता है ❀ लश्कर सबै गयो भराय॥
डोला जावत है मोहबे को ❀ साँची खबरि दीन बतलाय।
सुनिकै बातैं हरिकारा की ❀ लश्करतुरत लीन सजवाय॥
आदिभयङ्कर चढ़ि गज ऊपर ❀ तुरतै कूच दीन करवाय।
बाजैं डंका अहतंका के ❀ हाहाकार शब्द गा छाय॥
तुरही मुरही तहँ बाजत भईं ❀ पुप्पू पुप्पू ध्वनी लगाय।
धम् धम् धम् धम् बजैं नगारा ❀ मारा मारा परै सुनाय॥

मोद बढ़्यो रणशूरन के बलपूरन के कछु दुःख न आये ॥
कूर कुपूत रहे रजपूत ते मूत भये रण नाम धराये।
पूत सुपूत महा मजबूत सो बूत लड़ैं नहिं पाउँ डिगाये ॥

बड़ी लड़ाई भै मारग में ❀ पिरथी लाखनि के मैदान।
मारे मारे तलवारिन के ❀ गिरिगे बड़े सुघरुवा ज्वान ॥
मान न रहिगे क्यहु क्षत्रिन के ❀ सबके छूटि गये अभिमान।
आदिभयङ्कर के ऊपर ते ❀ गरुई हाँक देय चौहान ॥
मारो मारो ओ रजपूतो ❀ डोला लेवो तुरत छिनाय।
जान न पावैं द्यावलिवाले ❀ इनके देवो मूड़ गिराय ॥
गरुई हाँकै सुनि पिरथी की ❀ जूझन लागि सिपाही ज्वान।
उड़ै बेंदुला बघऊदन का ❀ खाली होत जात मैदान ॥
धाँधू धनुवाँ के मुर्चा में ❀ बाजै घूमि घूमि तलवार।
अंगद राजा के मुर्चा मा ❀ सय्यद बनरस का सरदार ॥
औरो क्षत्री समरभूमि मा ❀ दूनों हाथ करैं तलवार।
को गति बरणै त्यहि समया कै ❀ अद्भुत होय तहाँ पर मार ॥
पैग पैग पै पैदल गिरिगे ❀ दुइ दुइ कसी गिरे असवार।
मारे मारे तलवारिन के ❀ नदिया बही रक्त की धार ॥
सोहैं लहासैं तहँ हाथिन की ❀ छोटे पर्वत के अनुहार।
परी लहासैं जो घोड़न की ❀ तिनको जानों नदीकगार ॥
मुण्डन केरे मुड़चौड़ा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार।
डोला सौंप्यो फिरि धनुवाँ को ❀ चलि भा कनउज का सरदार ॥
जौनी दिशि को लाखनि जावैं ❀ ता दिशि होय घोर घमसान।
बड़े लड़ैया दिल्ली वाले ❀ ताहर समरधनी चौहान ॥
हनि हनि मारै रजपूतन का ❀ घायल होयँ अनेकन ज्वान।

वा गति बरणौं त्यहि समया कै ❀ हमरे बूत कही ना जाय।
पहिल मारुइ भइँ तोपन की ❀ गोला चलन लागि हहराय॥
बड़ी दुर्दशा भइँ तोपन में ❀ तब फिर मारु बन्द ह्वै जाय।
मघा के बूँदन गोली बरषीं ❀ क्षत्री गये बहुत महराय॥
तीर तमंचा भाला बरछी ❀ कोताखानी चलीं कटार।
भा भटभेरा दल पैदल का ❀ घोड़न लड़ैं घोरअसवार॥
है दलगंजन के ऊपर मा ❀ ताहर पिरथी राजकुमार।
घोड़ बेंदुला की पीठी मा ❀ ठाकुर उदयसिंह सरदार॥
मुर्चाबन्दी भै दूनों मा ❀ दूनों लड़ै लागि त्यहि काल।
त्र भिरे क्षत्री असवारा सों ❀ भिड़िगै तहाँ ढाल में ढाल॥
धाँधू धनुवाँ का मुर्चा भा ❀ सय्यद नृपति ग्वालियर क्यार।
वा गति बरणौं रजपूतन कै ❀ मारैं दुऊ हाथ तलवार॥
जैसे भेड़िन भेड़हा पैठे ❀ जसे अहिर बिडारै गाय।
तैसे मारै ताहर नाहर ❀ शूरन दीन्ह्यों समर बराय॥
धाँधू धमकै तहँ तेगा को ❀ चमकै चमाचम्म तलवार।
अली अली कहि सय्यद दौरै ❀ रणमा होत जात गलियार॥
बड़ा लड़ैया अंगद राजा ❀ मारै ढूँढ़ि ढूँढ़ि सरदार।
मारे मारे तलवारिन के ❀ नदिया बही रक्त की धार॥

सवैया

कटहत शूर गिरैं रणखेतन पूरि रही ध्वनि मारु अपारा।
मत्त मतंग गिरैं महराय सो हाय दयी यह होत पुकारा॥
छूटत तीर सो पूरि रहैं तन धूरि उड़ै नहिं कीच अपारा।
कीच भई रणशूरन की ललिते मन कायर जात दरारा॥
कायर भागि चले ललिते अकुलात महामन दुःखन छाये।

मोद बढ़्यो रणशूरन के बलपूरन के कछु दुःख न आये ॥
कूर कुपूत रहे रजपूत ते मूत भये रण नाम धराये।
पूत सुपूत महा मजबूत सो बूत लड़ैं नहिं पाउँ डिगाये ॥

बड़ी लड़ाई भै मारग में ❀ पिरथी लाखनि के मैदान।
मारे मारे तलवारिन के ❀ गिरिगे बड़े सुघरुवा ज्वान ॥
मान न रहिगे क्यहु क्षत्रिन के ❀ सबके छूटि गये अभिमान।
आदिभयङ्कर के ऊपर ते ❀ गरुई हाँक देय चौहान ॥
मारो मारो ओ रजपूतो ❀ डोला लेवो तुरत छिनाय।
जान न पावैं द्यावलिवाले ❀ इनके देवो मूड़ गिराय ॥
गरुई हाँकै सुनि पिरथी की ❀ जूझनलागिसिपाहीज्वान।
उड़ैं बेंदुला बघऊदन का ❀ खाली होत जात मैदान ॥
धाँधू धनुवाँ के मुर्चा में ❀ बाजै घूमि घूमि तलवार।
अंगद राजा के मुर्चा मा ❀ सय्यद बनरस का सरदार ॥
औरो क्षत्री समरभूमि मा ❀ दूनों हाथ करैं तलवार।
को गति बरणैत्यहि समया कै ❀ अद्भुत होय तहाँ पर मार ॥
पैग पैग पै पैदल गिरिगे ❀ दुइ दुइ कसी गिरे असवार।
मारे मारे तलवारिन के ❀ नदिया बही रक्त की धार ॥
सोहैं लहासैं तहँ हाथिन की ❀ छोटे पर्वत के अनुहार।
परी लहासैं जो घोड़न की ❀ तिनको जानों नदीकगार ॥
मुण्डन केरे मुड़चौड़ा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार।
डोला सौंप्यो फिरिधनुवाँको ❀ चलिभाकनउज कासरदार ॥
जौनीदिशिकोलाखनि जावैं ❀ तादिशि होय घोरघमसान।
बड़े लड़ैया दिल्ली वाले ❀ ताहर समरधनी चौहान ॥
हनि हनि मारै रजपूतन का ❀ घायल होयँ अनेकन ज्वान।

मान न रहिगा क्यहु क्षत्रीका ❀ सबके टूटि गये अरमान ॥
फूटि फूटि शिर चूरण ह्वैगे ❀ पूरण भयो समर मैदान ।
कहँ लग गाथा त्यहिसमयाकै ❀ ललिते करैं यहाँ पर गान ॥
सो भल जानत हैं नीकीविधि ❀ जो यह दीख्यो युद्ध ललाम ।
सम्मुख जूझैं जे मुर्चा में ❀ ते सब जायँ राम के धाम ॥
यही तपस्या है क्षत्री कै ❀ सम्मुख लड़ै समर मैदान ।
तन धन अर्पै समरभूमि मा ❀ पावै सदा जगत में मान ॥
सज्जन मानै के भूखे हैं ❀ दुर्ज्जन सहैं सदा अपमान ।
मान न पावै नरदेही मा ❀ जीवत जानो श्वान निदान ॥
मान के भूखे लाखनिराना ❀ ठाना कठिन तहाँ संग्राम ।
जौनीदिशि को लाखनिजावैं ❀ तादिशि होत जात हंगाम ॥
लाखनिराना के मारुन मा ❀ आरी भये सिपाही ज्वान ।
कायर भागे समरभूमि ते ❀ शूरन कीन घोर घमसान ॥
यहु महराजा कनउजवाला ❀ मारत चला अगारी जाय ।
आदिभयङ्कर जहँ हाथी पर ❀ सोहत बैठि पिथौराराय ॥
तहँ कनवजिया कनउजवाला ❀ आला अटा तड़ाका जाय ।
आदिभयङ्कर ते ललकारा ❀ यहु महराज पिथौराराय ॥
लाखनि पगिया ना अटकी है ❀ रण मा प्राण गँवावो आय ।
प्यारे बेटा तुम ताहर सम ❀ मानो कही कनौजीराय ॥
निमक चँदेले का इन खावा ❀ दूनों भाय बनाफरराय ।
ये मरि जावैं सँग डोला के ❀ उनके नमक अदा ह्वै जाय ॥
तुम्हैं मुनासिब यह नाहीं है ❀ अनहक प्राण गँवावो आय ।
बारह रानिन में इकलौता ❀ यह हम सुना कनौजीराय ॥
त्यहिते तुमका समुझाइत है ❀ चुप्पै कूच जाउ करवाय ।

इतना सुनिकै लाखनि बोले ❀ साँची सुनौ पिथौराराय ॥
तीनि महीना औ ग्यारादिन ❀ ऊदन कठिन कीन तलवार ।
लैकै पैसा सब गाँजर का ❀ पठवा कनउज के दरबार ॥
गंगा कीन्हीं हम ऊदन ते ❀ देबे साथ बनाफरराय ।
हमैं मुनासिब यह नाहीं है ❀ जो अब कूच जायँ करवाय ॥
करब प्रतिज्ञा अब हम पूरी ❀ लड़िबे खूब पिथौराराय ।
पाँव पिछारी का धरिबे ना ❀ चहुतन धजी २ उड़िजाय ॥
पता लगावै ह्याँ लाखनि का ❀ आल्हा केर लहुरवा भाय ।
मारत मारत रजपूतन को ❀ पहुँचा जहाँ पिथौराराय ॥
तीर कमनिया लै हाथे मा ❀ मारन हेतु भयो तैयार ।
तब ललकारा नरनाहर यहु ❀ ठाकुर उदयसिंह सरदार ॥
तुम्हैं मुनासिब यह नाहीं है ❀ राजा समरधनी चौहान ।
नहीं बरोबरि के लखराना ❀ जो तुम लीन्ही तीर कमान ॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ कायल भये बीर चौहान ।
चुप्पै हौदा पर रख दीनी ❀ राजा अपनी तीरकमान ॥
यहु दलगंजन की पीठी मा ❀ ताहर आय गयो त्यहिबार ।
भये कनौजी त्यहिके सम्मुख ❀ लागे करन तहाँ पर मार ॥
ऊदन अंगद का मुर्चा मा ❀ दोऊ लड़न लागि सरदार ।
दोऊ मारैं तलवारी सों ❀ दोऊ लेयँ ढाल पर वार ॥
तब ललकाखो फिरि धाँधू को ❀ यहु महराज पिथौराराय ।
जाय न डोला अब मोहबे का ❀ लावो जाय तड़ाका धाय ॥
इतना सुनिकै धाँधू चलिभे ❀ डोला पास पहूँचे जाय ।
तब ललकारा तहँ धनुवाँ ने ❀ क्षत्री खबरदार ह्वै जाय ॥
पाँव अगाड़ी का डारे ना ❀ नहिं यमपुरी देउँ दिखलाय ।

कहा न माना कछु धनुवाँ का ❀ धाँधू चला तड़ाका धाय ॥
तेलिके बच्चा कच्चा खैहौं ❀ लुच्चा ठाढ़ होय यहि बार ।
सच्चा लड़िका जो क्षत्री का ❀ तौ मुख धाँसि देउँ तलवार ॥
इतना कहिकै धाँधू क्षत्री ❀ अँगुरिन भाला लीन उठाय ।
ताकिकै मारा सो धनुवाँ का ❀ परिगा घाव जाँघ पर आय ॥
गिरिगा धनुवाँ जब खेतन मा ❀ डोला तुरत लीन उठवाय ।
डोला उठिगा जब बेला का ❀ सय्यद गयो तड़ाका आय ॥
औ ललकारा त्यहि धाँधू का ❀ अब ना धरयो अगारी पाँय ।
जान न पैहौ तुम सय्यद ते ❀ क्षत्री साँच दीन बतलाय ॥
इतना सुनिकै अंगद राजा ❀ तहँ पर गयो तड़ाका आय ।
भूरी हथिनी के चढ़वैया ❀ आये तहाँ कनौजीराय ॥
ताहर नाहर दलगंजन पर ❀ सोऊ बेगि पहूँचा आय ।
कठिन लड़ाई भै डोला पर ❀ हमरे बूत कही ना जाय ॥
को गति बरणै त्यहि समया कै ❀ बाजै घूमि घूमि तलवार ।
सुनि सुनि गाजै रजपूतन की ❀ कायर डारि भागि हथियार ॥
को गति बरणै रणशूरन की ❀ दूनों हाथ करैं तलवार ।
कीरति प्यारी जिन क्षत्रिन को ❀ तिनको भला करैं करतार ॥
कीरतिवाले लाखनि ताहर ❀ ठाना घोर शोर घमसान ।
यहु महराजा कनउजवाला ❀ लीन्ही गुर्ज तड़ाका तान ॥
ऐंचिकै मारा सो ताहर के ❀ मस्तक परी घोड़ के जाय ।
घोड़ा भाग्यो तहँ ताहर का ❀ डोला लीन कनौजीराय ॥
विना नृपति के सब सेना तहँ ❀ रणमा कौन भाँति समुहाय ।
विन वर कन्या ज्यों मड़ये मा ❀ भौंरी कौन करावन जाय ।
दुलहिन दुलहा की समता मा ❀ ममता कौन खवैया

मिलै रुपैया बरतौनी ना ❀ तबलग देखिपरै तहँलात ॥
तैसे मुर्चा की बातैं हैं ❀ यारो जानिलेउ सब घात ।
घोड़ा भाग्यो जब ताहर का ❀ लाग्यो नहीं क्यहू की लात ॥
डोला चलिभा तब बेला का ❀ जहँ पर रहै चँदेलाराय ।
ब्रह्मा ठाकुर के तम्बू मा ❀ ह्वैगै भीर भार अधिकाय ॥
बाजे डङ्का अहतङ्का के ❀ शङ्का सबन दीन बिसराय ।
देखा सय्यद ऊदन लाखनि ❀ सबको मिला चँदेलाराय ॥
मिला भेट करि सब काहुन सों ❀ तम्बू बैठि गये सब आय ।
कीन बड़ाई लखराना की ❀ तहँ पर खूब बनाफरराय ॥
सच्ची बातैं उदयसिंह की ❀ नहिंकहुँलसरफसरब्यवहार ।
बड़ा प्रतापी रणमण्डल मा ❀ ठाकुर उदयसिंह सरदार ॥
पाग बैंजनी शिरपर सोहै ❀ टिहुनन धरी ढाल तलवार ।
चढ़ा उतारू भुजदण्डै हैं ❀ आनन पङ्कजके अनुहार ॥
सत्य बड़ाई की लाखनि की ❀ भे सब खुशी तहाँ सरदार ।
जा बिधि चलिकै सब मोहबे ते ❀ पहुँचे दिल्ली के दरबार ॥
कीनि नौकरी ज्यहि प्रकार ते ❀ कुण्डल जौन भाँतिसोंलीन ।
सो सब गाथा तहँ ब्रह्मा ते ❀ ठाकुर उदयसिंह कहिदीन ॥
खेत छूटिगा दिननायक सों ❀ झण्डा गड़ा निशा कोआय ।
तारागण सब चमकन लागे ❀ सन्तन धुनी दीन परचाय ॥
राम राम की मन रटलाये ❀ लीन्हानिअंगबिभूतिरमाय ।
डारि बघम्बर या मृगछाला ❀ आला परब्रह्म को ध्याय ॥
तपनि मिटाई सब देही की ❀ रघुबर नाम औषधी पाय ।
यह सुखदाई सब संतन को ❀ या बल देवैं निशा बिताय ॥
जब लग रैहै संजीवनि यह ❀ तबलग धर्मध्वजा फहराय ।

माथ नवावों पितु माता को ❀ जिनबलगाथगयोंसबगाय ॥
आशिर्बाद देउँ मुंशीसुत ❀ जीवौ प्रागनरायण भाय।
हुकुम तुम्हारो जो पावत ना ❀ ललितेकहतकौनबिधिगाय॥
रहै समुन्दर में जबलों जल ❀ जबलों रहैं चन्द औ सूर।
मालिक ललिते के तबलों तुम ❀ यशसों रहौ सदा भरपूर ॥
बिपति निवारण जगतारणके ❀ दूनों धरों चरणपर माथ।
बेलारानी के गौने की ❀ पूरण भई दूसरी गाथ ॥
पूरि तरंग यहाँ सों ह्वैगै ❀ तव पद सुमिरिभवानीकन्त।
राम रमा मिलि दर्शन देवैं ❀ इच्छा यही मोरि भगवन्त ॥

बेलागमन द्वितीय युद्ध समाप्त
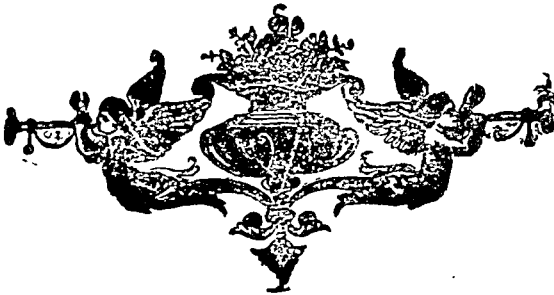
आल्हखण्ड

बेला और ताहर का युद्ध वर्णन

सवैया

मैं बृषभानलली बिनवों सो अली सँग कुंजन जातनितय ।
गावत बेनु बजावत आवत मोहनलालहु नित्त तितय ॥
श्यामहु श्याम भये ज्यहि ठौरसोऔरबखानकरैको कितय ।
गावतगीतसबै ललिते ज्यहि आवत जौन जहाँलों जितय ॥

सुमिरन

राधा रानी ठकुरानी के ❀ दूनों धरों चरण पर माथ ।

मोहिं भरोसा अब तेरो है ❀ स्वामिनिपूरिकरोयहगाथ ॥
कण्ठ में बैठ तुम कण्ठेश्वरि ❀ भुज बल बैठिजाय हनुमान ।
बैठि सरस्वति जा जिह्वामा ❀ भूले अक्षर करों बखान ॥
भाँग भवानी महरानी के ❀ बन्दन करों जोरि दोउ हाथ ।
भाँग न होती जो दुनिया मा ❀ ललिते कौन देत तव साथ ॥
चढ़ैं तरंगैं जब भाँगन की ❀ आँगन देखि परै सुरलोक ।
दुख नहिं ब्यापै कछु देहीमा ❀ मनके छूटिजात सब शोक ॥
भाँग घोटिकै नित प्रति पीवै ❀ जीवै बर्ष एक शत एक ।
हर को ध्यावै तब सुखपावै ❀ पूरी होय तबै यह टेक ॥
छूटि सुमिरनी गै देवन कै ❀ शाका सुनो शूरमन क्यार ।
बेला काटी शिर ताहर का ❀ सोई गाथ कहौं बिस्तार ॥

अथ कथाप्रसंग ॥

जहाँ चँदेले ब्रह्मा ठाकुर ❀ बेला गई तहाँ पर धाय ।
बैठी पलँगा कर पंखालै ❀ लागी करन पवन सुखदाय ॥
खरि२ बहियाँहरि २ चुरियाँ ❀ शोभा कही बूत ना जाय ।
शची मेनका की गिन्ती मा ❀ बेला रूप राशि अधिकाय ॥
यहु अलबेला ब्रह्मा ठाकुर ❀ बेलै बोला बचन सुनाय ।
टरिजा टरिजा री आँखिन ते ❀ दीखे गात सबै जरिजायँ ॥
घटिहा राजा की कन्या ते ❀ कासुखहोयमोहिंअधिकाय ।
इतना सुनिकै बेला बोली ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
तुम्हैं मुनासिब यह नाहीं है ❀ जैसी कहौ चँदेलेराय ।
राज कुटुँब सब अपनो तजिकै ❀ आइन चरण शरणमें धाय ॥
सुनि सुनि बातैं अब प्रीतमकी ❀ छाती घाव होत अधिकाय ।
परवश कन्या की गति जैसी ❀ तैसी रही चँदेलेराय ॥

ऐसी तुमको अब चहिये ना ❀ जैसी सूखी रहे सुनाय।
सुरपुर अहिपुर नरपुर माहीं ❀ प्रीतम कौन मोर अधिकाय॥
प्यारे प्रीतम इक तुमहीं हौ ❀ साँचो साँच दीन बतलाय।
सुनिकै बातैं ये बेला की ❀ बोला फेरि चँदेलाराय॥
मूड़ काटिकै अब ताहर का ❀ प्यारी मोहिं देउ दिखलाय।
घाव करेजे का तब पूरै ❀ औसुखसम्पति मोहिंसुहाय॥
इतना सुनिकै बेला बोली ❀ स्वामी बचन करो परमान।
कपड़ा घोड़ा दै कोड़ा निज ❀ पठवो मोहिं समर मैदान॥
एक लालसा पै डोलति है ❀ स्वामी पूरि करो यहि काल।
नगर मोहोबा मोहिं पठवावो ❀ दर्शन करों सासु के हाल॥
इतना सुनिकै ब्रह्मा बोले ❀ जावो साथ लहुरवा भाय।
बेला बोली तब स्वामी ते ❀ यहनहिंउचितमोहिंदिखलाय॥
ब्रह्मा बोले फिरि लाखनि ते ❀ तुमहीं जाउ कनौजीराय।
बेला बोली फिरि स्वामी ते ❀ यहनहिंउचितमोहिंदिखलाय॥
बदला लैहैं संयोगिनि का ❀ रखिहैं मोहिं कनौजै जाय।
ह्वई हँसौवा दुहुँ तरफा का ❀ प्रीतम करिहौ कौन उपाय॥
ब्रह्मा बोले फिरि आल्हा ते ❀ तुम चलिजाउ बनाफरराय।
यह मन भाई तब बेला के ❀ पलकी चढ़ी तड़ाका धाय॥
चढ़ि पचशब्दा हाथी ऊपर ❀ आल्हा ठाकुर भये तयार।
डोला चलिभा फिरि बेला का ❀ संगै चले बहुत असवार॥
यह गति देखी माहिल ठाकुर ❀ लिल्ली उपर भये असवार।
जहँ पर बैठे पृथीराज हैं ❀ पहुँचा उरई का सरदार॥
बड़ी खातिरी राजा कीन्ह्यो ❀ अपने पास लीन बैठाय।
जो कछु गाथा थी तम्बू की ❀ माहिल यथातथ्य गा गाय॥

तब महराजा दिल्लीवाला ❀ चौंड़ै तुरत लीन बुलवाय।
खबरि सुनाई सब चौंड़ा को ❀ जो कछु माहिल दीन बताय॥
नार कँकरिहा पर तुम घेरो ❀ डोला लावो बेगि छिनाय।
हुकुम पायकै महराजा को ❀ फौजैं तुरत लीन सजवाय॥
चढ़ि इकदन्ता हाथी ऊपर ❀ चौंड़ा कूच दीन करवाय।
बाजत डंका अहतंका के ❀ पहुँचा नार उपरसो आय॥
दीख्यो आल्हा को चौंड़ा ने ❀ गरुई हाँक कहा गुहराय।
डोला धरिकै अब बेला का ❀ जावो लौटि बनाफरराय॥
हुकुम पिथौरा का याही है ❀ आल्हा साँच दीन बतलाय।
सुनिकै बातें ये चौंड़ा की ❀ बोला फेरि बनाफरराय॥
डोला लौटन को नाहीं है ❀ चौंड़ा काह गये बौराय।
एक पिथौरा की गिन्ती ना ❀ लाखन चढ़ैं पिथौरा आय॥
नगर मोहोबे डोला जाई ❀ चौंड़ा साँच दीन बतलाय।
गा हरिकारा फिरि तहँना ते ❀ जहँना बैठ बनाफरराय॥
डोला घेरा है बेला का ❀ बोला हाथ जोरि शिरनाय।
इतना सुनिकै ऊदन ठाकुर ❀ तुरतै कूच दीन करवाय॥
जहँ पर फौजैं हैं चौंड़ा की ❀ पहुँचा तुरत लहुरवा भाय।
हाथ जोरिकै ऊदन बोले ❀ दादा कूच जाउ करवाय॥
इतना सुनिकै चौंड़ा बकशी ❀ तुरतै हुकुम दीन फर्माय।
जान न पावैं मोहबे वाले ❀ सबके देवो मूड़ गिराय॥
हुकुम चौंड़िया का पावतखन ❀ क्षत्रिन खैंचि लीन तलवार।
झुके सिपाही दुहुँ तरफा के ❀ लागी होन भड़ाभड़ मार॥
गोली ओला सम बरसी तहँ ❀ कोताखानी चलीं कटार।
भा खलभल्ला औ हल्लाअति ❀ जूझन लागि शूर सरदार॥

कटि कटि कल्ला गिरैं बछेड़ा ❀ घूमैं मूड़ बिना असवार।
खट खट खट खट तेगा बोलैं ❀ बोलैं छपक छपक तलवार॥
झल्झल्झल्झल्झीलमझलकैं❀नीलम रंग परैं दिखलाय।
चम् चम् चम् चम् छूरीचमकैं ❀ कउँधालपकनिखड्गदिखाय॥
मर् मर् मर् मर् ढालैं व्वालैं ❀ तेगा ठन्न ठन्न ठन्नाय।
सन् सन् सन् सन् गोली बरसैं ❀ तीरन मन्न मन्न गा छाय॥
धम् धम् धम् धम् बजैं नगारा ❀ मारा मारा परै सुनाय।
बड़ी खुशाली रणशूरन के ❀ कायर गये तहाँ सन्नाय॥
कायर सोचत मन अपने मा ❀ नाहक प्राण गँवाये आय।
माठा रोटी घरमा खाइत ❀ आपनि भैंसि चराइत जाय॥
यहगति जानित जो पहिले ते ❀ काहे फँसित समर में आय।
नई बहुरिया घरमा बैठी ❀ कैसे धरा धीर उरजाय॥
हाय रुपैया बैरी ह्वैगे ❀ हमरे गई प्राण पर आय।
को समझाई घर दुलहिनि का ❀ देवी देवता रहे मनाय॥
कायर बिनवैं मन सूरज ते ❀ पश्चिम जाउ आज महराज।
तौ हम भागैं समरभूमि ते ❀ औ रहिजाय जगत में लाज॥
शूर सिपाही ईजतिवाले ❀ दहिनी धरैं मुच्छ पर हाथ।
हनि हनि मारैं समरभूमि मा ❀ कटिकटिगिरैंचरण औ माथ॥
को गति बरणै त्यहि समया कै ❀ बाजै घूमि घूमि तलवार।
मारे मारे तलवारिन के ❀ नदिया बही रक्त की धार॥
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार।
घोड़ बेंदुला के ऊपर ते ❀ नाहर उदयसिंह सरदार॥
फिरि फिरि मारै औ ललकारै ❀ बेटा देशराज का लाल।
गरुई हाँकैं सुनि ऊदन की ❀ कम्पित होयँ तहाँ नरपाल॥

एँड़ लगावै रस बेंदुल के ❀ हौदा उपर पहूँचै जाय।
मारि महाउत को हनिडारै ❀ औ असवारै देय गिराय॥
यह गति दीख्यो जब ऊदन कै ❀ चौंड़ा हाथी दीन बढ़ाय।
औ ललकारा समरभूमि मा ❀ ठाढ़े होउ बनाफरराय॥
गरुई हाँकैं सुनि चौंड़ा की ❀ ऊदन घोड़ा दीन उड़ाय।
भाला मारा इकदन्ता के ❀ भाग्यो तुरत पछाराखाय॥
खेत छूटिगा तब चौंड़ा ते ❀ आल्हा कूच दीन करवाय।
डोला पहुँचा बरइन पुरवा ❀ बेला बोली बैन सुनाय॥
नगर मोहोबा का याही है ❀ साँची कहौ बनाफरराय।
नगर मोहोबे का पुरवा यह ❀ बेला रानी परै दिखाय॥
खबरि पायकै सुखिया बारिन ❀ तहँ पर गई तड़ाका आय।
संग सहेलिन को लैकै सो ❀ परछन कीन तहाँ पर जाय॥
चलिभा डोला फिरि आगे को ❀ मालिनि पुरै पहूँचा आय।
खबरि पायकै फुलियामालिनि ❀ सोऊ चली तड़ाका धाय॥
संग सहेलिन को लीन्हे सो ❀ डोला पास पहूँची आय।
कीनि आरती सो बेला की ❀ देखिकै रूप गई सन्नाय॥
हाय! विधाता यह का कीन्हौ ❀ सुरपुर पती दीन पठवाय।
इतनाकहिकैफुलियामालिनि ❀ दाँते अँगुरी लीन चपाय॥
सुनिकै बातैं ये फुलिया की ❀ बेला गयो क्रोध उरछाय।
हुकुम लगायो इक चाकर को ❀ जूतिन देवो मूड़ ठठाय॥
हुकुम पायकै सो बेला को ❀ मारन लाग तड़ाका धाय।
आल्हा बोले तब बेला ते ❀ यह नहिंतुम्हैंमुनासिबआय॥
अबै न डोला गा मोहबे का ❀ रैयत प्रथम रहिउ पिटवाय।
सुनिकै बातैं ये आल्हा की ❀ बेला तुरत दीन छुड़वाय॥

मालिनि पुरवा ते डोला चलि ❀ पहुँचा नगर मोहोबे आय ।
खबरि पायकै बारहु रानी ❀ मल्हना महल गईं सब धाय ॥
द्यावलि सुनवाँ फुलवा मल्हना ❀ द्वारे सबै पहूँचीं आय ।
कीन आरती तहँ बेला की ❀ सबहिन दुःख शोक बिसराय ॥
संगै लैकै फिरि बेला का ❀ महलन गईं तड़ाका आय ।
भा अति मेला तहँ नारिन का ❀ शोभा कही बूत ना जाय ॥
मुहँ दिखलाई रानी मल्हना ❀ तहँ पर दीन नौलखाहार ।
पायँ लागिकै बेला रानी ❀ कङ्कण तुरतै दीन उतार ॥
भीर मेहरियन कै हटिगै जब ❀ अकसर बहू रही त्यहि ठाँय ।
मल्हना पूँछै तब बेला ते ❀ साँची साँच देय बतलाय ॥
बालम तुम्हरे अब कैसे हैं ❀ कहँ कहँ लगे अंग किन घाय ।
इतना सुनिकै बेला बोली ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
बाईं दहिनी द्वउ कोखिन मा ❀ लागीं सेल कटारी घाय ।
गाँसी खटकति है मस्तक में ❀ मैया बिपति कही ना जाय ॥
बातैं सुनिकै ये बेला की ❀ मल्हना गिरी पछाराखाय ।
कथा पुराणन की बातैं बहु ❀ बेला कहा तहाँ समुझाय ॥
कथा सुनाई गंधारी की ❀ ज्यहि के मरे एकशत पूत ।
कथा बताई यदुनन्दन की ❀ जहँ मरिगये सबै रजपूत ॥
कथा बखानी रघुनन्दन की ❀ नृपपद छूटि मिला वनवास ।
कही कहानी दशकन्धर की ❀ ज्यहिके भई बंश की नास ॥
बेला बानी सुनि रानी सब ❀ तुरतै शोक दीन बिसराय ।
प्रसव बेदना ज्यहि पर बीती ❀ जीतीस्वई शोक अधिकाय ॥
बेला बोली चन्द्रावलि ते ❀ ननँदी साँच देयँ बतलाय ।
भैया अपने को सतखण्डा ❀ ननँदी मोहिं देय दिखलाय ॥

इतना सुनिकै चन्द्रावलि तहँ ❀ गै सतखण्डा तुरत लिवाय ।
को गति बरणै सतखण्डा कै ❀ साँचो इन्द्र धाम दिखलाय ॥
चँदन किंवरिया जहँ लागी हैं ❀ खम्भन रत्न जटित को काम ।
कैसो सम्भ्रम मन जो होवै ❀ बैठत लहै तहाँ बिश्राम ॥
बेला पहुँची जब छज्जा पर ❀ पच्छिन भीर दीख अधिकाय ।
कोकिल हंस मोर पारावत ❀ तीतर लवा सुवा सुखदाय ॥
शोभा देखत तहँ छज्जा की ❀ बेला बार बार पछिताय ।
जीवत प्रीतम हमरे होते ❀ तौ सुख भोग होत अधिकाय ॥
आज काल्ह दिन प्रीतम झेलैं ❀ ताते नरक सरिस दिखलाय ।
हाय ! बिधाता की मरजी अस ❀ भारी बिपति गई शिर आय ॥
प्रीतम प्यारे के सतखण्डा ❀ हम पर फाटि गिरो अरराय ।
यह मन बिनवत बेला रानी ❀ महलन गई तड़ाका आय ॥
बेला बोली फिरि मल्हना ते ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ।
मोरि लालसा यह डोलति है ❀ चन्दन बगिया देउ दिखाय ॥
सुनिकै बातें ये बेला की ❀ पलकी तुरत लीन मँगवाय ।
बैठि पालकी महरानी सब ❀ चन्दन बाग पहूँचीं जाय ॥
पुष्पवाटिका तहँ राजत है ❀ छाजत सबै दिनन ऋतुराज ।
बेला कमेली औ नेवार की ❀ पंक्ती रहीं एक दिशि छाज ॥
बिनुनकान्ता कहुँ कहुँ फूले ❀ कहुँ कहुँ फूले सुर्ख अनार ।
श्वेत रक्त औ मधुर गुलाबी ❀ पाटल फूले भाँति अपार ॥
फुली चाँदनी श्वेत बरण हैं ❀ जिन पर केलि करत बहु भृंग ।
को गति बरणै दुपहरिया कै ❀ ज्यहि को रक्त बरण है रंग ॥
श्वेत रक्त औ मधुर गुलाबी ❀ सब बिधि फूलि रहा करबीर ।
कदली केवड़ा एक दिशि राजत ❀ छूटत देखि मुनिन को धीर ॥

श्वेत रक्त तहँ चन्दन छाजैं ❀ राजैं कोकिल मोर चकोर।
पीव पपीहा की रट सुनिकै ❀ बिरहिनिपीरहोयअतिघोर॥
यह सुख सम्पति बेला लखिकै ❀ कीन्ह्यो घोर शोर चिग्घार।
जितनी रानी थीं बगिया में ❀ सबहिनछाँड़िदीनडिडकार॥
मोती ऐसे आँसू ढरकैं ❀ बेला हृदय शोक गा छाय।
तब समुझावै मल्हना रानी ❀ बहुवर शोक देउ बिसराय॥
पारस पत्थर घर तुम्हरे मा ❀ बहुवर बैठि करो तुम राज।
हुकुम तुम्हारो रैयति मानी ❀ ह्वैहैं सबै धर्म के काज॥
द्यावलि बोली फिरि बेला ते ❀ रानी बचन करो परमान।
धर्म सनातन को याही है ❀ राखै सासुश्वशुर को मान॥
इतना सुनिकै बेला बोली ❀ यहु दुख दून तुम्हारो दीन।
घर बैठास्यो दोउ पुत्रन को ❀ मोहबा बंशनाश तुम कीन॥
इतना सुनिकै द्यावलि बोली ❀ साँची मानो कही हमार।
यह सब करतब है माहिल कै ❀ जिनके चुगुलिन का बैपार॥
सवन चिरैया ना घर छोड़ै ❀ ना बनिजराबनिजकोजाय।
चुगुली करिकै माहिल ठाकुर ❀ मोको तुरत दीन निकराय॥
गे जगनायक जब कनउज का ❀ आवैं नहीं बनाफरराय।
मैं समुझायों द्वउ भाइन का ❀ लाये संग कनौजीराय॥
घाट बयालिस तेरह घाटी ❀ सब रुकवबा पिथौराराय।
जीति पिथौरा को लखराना ❀ सबियाँ लीन्हे घाट छुँड़ाय॥
पान धरायो जब गौने का ❀ तब नहिं बीरा कऊ चबाय।
बीरा लीन्ह्यो जब ऊदन ने ❀ ब्रह्मा लीन्ह्यो तुरत छुँड़ाय॥
यह सब करतब है माहिल कै ❀ डारयनि बंशनाश करवाय।
काल नगीचे ज्यहि के आवै ❀ त्यहिकै देवै बुद्धि नशाय॥

इतना कहतै तहँ द्यावलि के ❀ आल्हा गये तड़ाका आय।
बेला बोली तहँ आल्हा ते ❀ कीरतिसागर लखो दिखाय॥
यह मन भाई सब रानिन के ❀ पलकी चढ़ीं तड़ाका धाय।
चलीं पालकी महरानिन की ❀ संगै चले बनाफरराय॥
कीरतिसागर फिरि आईं सब ❀ नौका पास लीन मँगवाय।
भये खेवैया आल्हा ठाकुर ❀ पहुँचे पार तड़ाका आय॥
अति शुभ मंदिर ब्रह्मानँद का ❀ शोभा कही बूत ना जाय।
गईं तड़ाका सब महरानी ❀ चकित लखैं चहूँदिशि धाय॥
पंसासारी ब्रह्मानँद की ❀ बेला नजरि परी सो आय।
तब अलबेला बेलारानी ❀ बोली सुनो बनाफरराय॥
बड़े खिलारी तुम चौपरि के ❀ सो अब मोहिं देउ सिखलाय।
इतना सुनिकै आल्हा बैठे ❀ चौपरि तहाँ दीन फैलाय॥
बेला खेलै पंसासारी ❀ अंचल अपन उड़ावतिजाय।
यह गति देखी आल्हा ठाकुर ❀ नीचे लीन्ह्योशीश झुकाय॥
वहुतक रूप धरे बेला ने ❀ आल्है मोह रही करवाय।
चाटक नाटक करि सब हारी ❀ मोहा नहीं बनाफरराय॥
रूप भयङ्कर दशवों धरिकै ❀ डाइनि बैठि गई मुहबाय।
यहिका लखिकै आल्हा ठाकुर ❀ तुरतै खाँड़ा लीन उठाय॥
गर्जत बोले आल्हा ठाकुर ❀ का तू मोहिं रही डरवाय।
देखि भयङ्कर क्षत्री डरपै ❀ कीरति जावै सबै नशाय॥
हो अपकीरति जब दुनिया में ❀ तब तो मृत्यु नीकि ह्वैजाय।
ऐसे वैसे हम क्षत्री ना ❀ जो अब देवैं धर्म नशाय॥
रूप मोहनी माता जाना ❀ डाइनि शत्रु रूप दिखलाय।
अब तू पलटै कित स्वरूप को ❀ कित तू करै समरथण आय॥

इतना सुनतै बेलारानी ❁ प्रथमै लीन्ह्यो रूप बनाय।
पाप तुम्हारे कछु मनमें ना ❁ साँचे शूर बनाफरराय॥
याँचे तुमका हम तम्बू मा ❁ अपने लाइन साथ लिवाय।
संग लहुरवा का लीन्ह्यो ना ❁ हमरे उमर सरिस सो आय॥
संगलकड़ियनमिलिअग्नीको ❁ ज्वाला अधिक २ अधिकाय।
यामें संशय कछु नाहीं है ❁ बिप्रन मोहिं दीन बतलाय॥
पै तहँ सज्जन औ दुर्जन का ❁ मंद औ तीक्षण भेद है भाय।
सज्जन क्षत्री अस कलियुग मा ❁नहिंकहुँघरनघरनअधिकाय॥
जस तुम द्यावलि के उपजे हौ ❁ कीरति रही लोक में छाय।
उत्तम करणी करि नर सज्जन ❁ कीरतिध्वजा देयँ फहराय॥
धर्म नशावैं ते मरिजावैं ❁ जिनअपकीरति बहुतसुहाय।
माँचे याँचे तुम क्षत्री हौ ❁ कीरति कही लोक सबगाय॥
धर्म पतिब्रत के शपथन ते ❁ आशिर्बाद बनाफरराय।
कीरति गाई जो सज्जन की ❁ गावत स्वऊ सरिस है जाय॥
सज्जन गावै गाय सुनावै ❁ पूरो अर्थ देय बतलाय।
जो मन भावै क्यहु सज्जन के ❁ पावै अमरलोक सो भाय॥
ऐसे कीरति के सागर तुम ❁ साँचे धर्म बनाफरराय।
इतना कहतै तहँ बेला के ❁ मल्हना आदि गईं सब आय॥
बैठिकै नैया सब महरानी ❁ सागर पार पहूँचीं जाय।
बारह ताल हते मोहबे में ❁ बेला दीख सबन को धाय॥
बेला बोली फिरि मल्हना ते ❁ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय।
मिलै आज्ञा मोहिं माता की ❁ लश्कर जाउँ तड़ाका धाय॥
कीनि प्रतिज्ञा हम प्रीतम सों ❁ माता साँच देयँ बतलाय।
मूड़ काटिकै हम नाहर को ❁ औ स्वामी को देव दिखाय॥

जग मर्य्यादा राखन हेतू ❀ सेवक भाव देव दिखलाय ।
प्रीतम प्यारे की आज्ञा सों ❀ जीतों समर सभा निजभाय ॥
मोहिं बिधाता की मर्जी थी ❀ अनरथ रूप दीन उपजाय ।
अर्थ न पावा कछु देही का ❀ भइ जग देह अकारथ माय ॥
स्वारथ प्रीतम के सँग होती ❀ सोविधिदीन बियोग कराय ।
जन्म अकारथ यहु दुनिया मा ❀ कौनी भाँति काटिहौं माय ॥
नैनन योबन औ बैनन को ❀ नहिं कछु पूर भयो व्यवहार ।
अंग न पर्शा हम प्रीतम का ❀ ना पद पूर भयो भर्त्तार ॥
सदा अभागी नर नारिन को ❀ नाहक रचा यहाँ कर्त्तार ।
कर्म शुभाशुभ जो लाग्यो है ❀ सोई भोगि रहा संसार ॥
यहै सोचिकै मन अपने मा ❀ आयसु देउ तड़ाका माय ।
समय किफायत गाथा भारी ❀ आरी कहे जान है जाय ॥
इतना सुनतै मल्हना रानी ❀ मनमा बार बार पछिताय ।
दुःख बिधाता हमका दीन्ह्यो ❀ गाथा कही कहाँ लग जाय ॥
इतना सोचत मन अपने मा ❀ आयसु फेरि दीन हर्षाय ।
चरण लागिकै महरानी के ❀ बेला कूच दीन करवाय ॥
संग बनाफर आल्हा ठाकुर ❀ पलकी चली तड़ाका धाय ।
बेला बोली तहँ आल्हा ते ❀ साँची सुनो बनाफरराय ॥
घसों चौतरा गजमोतिनि का ❀ यह मन गई लालसा छाय ।
इतना सुनतै आल्हा ठाकुर ❀ शिरसा चले तड़ाका धाय ॥
जहाँ चौतरा गजमोतिनि का ❀ डोला तहाँ दीन धरवाय ।
उतरिकै डोला ते बेला तब ❀ चन्दन अक्षत फूल मँगाय ॥
कीन चबुतरा की पूजा भल ❀ मन में बार बार तहँ ध्याय ।
सतीशिरोमणिगजमोतिनिजो ❀ साँचे शूर बनाफरराय ॥

आभा बोलै तौ चौराते ❀ ज्यहि संतोष मोहिं ह्वैजाय।
बोली आभा गजमोतिनि की ❀ माहिल डारे कन्त मराय॥
सत्त बिधाता मोको दीन्ह्यो ❀ सत्ती भयूँ यहाँ पर आय।
तीनि महीना सत्रह दिन मा ❀ सब महनामथ जाय पराय॥
दिल्ली मोहवा द्वउ शहरन में ❀ राँड़ै राँड़ै परैं दिखाय।
आभा सुनिकै बेला बोली ❀ बहिनी साँच देयँ बतलाय॥
हमतो रण्डा वादिन जाना ❀ जा दिन मरे बीर मलखान।
कीरति पायो जग मण्डल में ❀ तुमको सत्त दीन भगवान॥
करि परिकरमा फिरि चौरा की ❀ पलकी चढ़ी तड़ाका धाय।
दाबे लश्कर को आवति भै ❀ मन में श्रीगणेशपद ध्याय॥
पहर अढ़ाई के अर्सा मा ❀ डोला गयो फौज में आय।
यह अलबेला बेला रानी ❀ प्रीतम पास पहूँची जाय॥
देख्यो बेला को ब्रह्मानँद ❀ आयसु तुरत दीन फरमाय।
मोरि लालसा यह ड्वालति है ❀ ताहर शीश दिखावो आय॥
सुनिकै बातैं ये प्रीतम की ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय।
बेला बोली फिरि प्रीतम ते ❀ आपन बख्त्र देउ मँगवाय॥
यामें संशय कछु नाहीं है ❀ ताहर शीश दिखाउब आय।
धीरज राखो अपने मनमाँ ❀ अब मैं जात तड़ाका धाय॥
सुनिकै बातैं ये बेला की ❀ सब सामान दीन मँगवाय।
भइ मर्दाना बेला रानी ❀ शोभा कही बूत ना जाय॥
झीलम बखतर बेला पहिरी ❀ शिरपर धरी बैंजनी पाग।
को गति बरणै तहँ बेला कै ❀ मुखमें स्वहैं तिलन के दाग॥
छुरी कटारी बेला बाँधी ❀ कम्मर कसी एक तलवार।
भाला बरछी लै हाथे मा ❀ हरनागर पर भई सवार॥

बाजे डंका अहतंका के ❀ फौजैं सबै भईं तय्यार।
घोड़ बेंदुला का चढ़वैया ❀ नाहर उदयसिंह सरदार॥
त्यही समैया त्यहि औसर मा ❀ बेला पास पहूँचा आय।
ऊदन बोले तहँ बेलाते ❀ हमको लेवो साथ लिवाय॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ❀ बेला बोली बचन उदार।
साथ न लेबे हम काहू को ❀ ठाकुर उदयसिंह सरदार॥
इतना कहिकै बेला रानी ❀ लश्कर कूच दीन करवाय।
बाजत डंका अहतंका के ❀ निर्भय चले शूरमा जाँय॥
दिल्ली केरे फिरि डाँड़े मा ❀ लश्कर सबै पहूँचा आय।
गड़िगे तम्बू तहँ बेला के ❀ सबरँग ध्वजा रहे फहराय॥
लिखीहकीकतिफिरिपिरथीको ❀ कागज कलमदान मँगवाय।
बेला पहुँची अब मोहबे का ❀ औ घर जिया चँदेलाराय॥
अधकर बाकी जो गौने की ❀ सो अब तुरत देउ पठवाय।
नहीं तो ब्रह्माहैं डाँड़े पर ❀ दिल्ली शहर देयँ फुँकवाय॥
ताहर नाहर के हाथे सों ❀ अधकर तुरत देउ पहुँचाय।
कुशल आपनी जो तुम चाहौ ❀ मानो साँच पिथौराराय॥
इतना लिखिकै बेलारानी ❀ धावन हाथ दीन पठवाय।
धावन चलिभा फिरि तम्बू ते ❀ औ दरबार पहूँचा आय॥
लागि कचहरी पृथीराज की ❀ भारी लाग राज दरबार।
बैठक बैठे सब क्षत्री हैं ❀ टिहुननधरे नांगितलवार॥
तहँ परवाना धावन दीन्ह्यो ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय।
खोलिकै चिट्ठी पिरथी पढ़िकै ❀ तुरतै गये सनाका खाय॥
उत्तर लिखिकै फिर चिट्ठीका ❀ धावन तुरत दीन लौटाय
ताहर बेटा को बुलवायो ❀ औ सब हाल कहा समुझाय॥

बेटी हमरी बैरिनि ह्वैगै ❀ ब्रह्माठाकुर दीन जियाय।
अधकर लेने को आये हैं ❀ सबियाँ फौज लेउ सजवाय॥
जायकै पहुँचो समरभूमि में ❀ अधकर तहाँ देउ चुकवाय।
मारे मारे तलवारिन के ❀ सबके देवो मूड़ गिराय॥
अधकर तबहीं ई भरि पैहैं ❀ जैहैं भागि चँदेलेराय।
इतना सुनिकै ताहर चलिभे ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय॥
हुकुम लगायो फिरि लश्करमें ❀ तुरतै सजन लागि सरदार।
झीलमबखतरपहिरिसिपाहिन ❀ हाथम लई ढाल तलवार॥
सजे बछेड़ा ताजी तुर्की ❀ मुश्की घोड़ भये तय्यार।
लक्खा गर्रा पचकल्यानी ❀ सुर्खा सिर्गा आदि अपार॥
डारि रकाबै गंगा यमुनी ❀ आननदीन लगाम लगाय।
हथी महाउत हाथी लैकै ❀ तिनका दीन भूमि बैठाय॥
धरी अँबारी तिन हाथिन पर ❀ बहुतन हौदा दीन धराय।
चुम्बक पत्थर के हौदा हैं ❀ जिनमें सेल बलौंचा खाय॥
कोउ कोउ हाथी इकदन्ता हैं ❀ कोउ दुइदन्त श्वेत गजराज।
यकमिलह्वैकै सब चिघरत हैं ❀ मानो कोपकीन सुरराज॥
सजिगै फौजैं दल बादल सों ❀ ताहर गये मातु के धाम।
हाल बतायो सब अगमा सों ❀ करिकै चलिभा दण्डप्रणाम॥
प्यारी अपनी के महलन में ❀ ताहर गये तड़ाका धाय।
बैठा ठाकुर जब शय्यापर ❀ दैया बिपति कही ना जाय॥
राह कटावै मंजारी तहँ ❀ होवै छींक तड़ातड़ आय।
झंझा बायू डोलन लागी ❀ आयू गई जनो नगच्याय॥
बादल छायो आसमान में ❀कउँधालपकिलपकिरहिजाय।
चमकै बिजुली त्यहि समयामा ❀ दमकै आसमान हहराय॥

थर थर थर थर थर थर कंपै ❀ झंपै आसमान त्यहिकाल।
दर दर दर दर दर दर दरकै ❀ फरकै दहिन अंगत्यहिकाल॥
मरणहि सूचित भो पती को ❀ ननँदी बचन गये ठहराय।
उठी तड़ाका लखि अशकुनको ❀ प्रीतम गरे गईं लपटाय॥
ताहर रोंक्यो त्यहि समया मा ❀ अपनी माया मोह भुलाय।
हुकुम सुनावा महराजा का ❀ सबियाँ हाल कहा समुझाय॥
लौटिकै मुर्चा ते आउब जब ❀ तुम्हरो करब मनोरथ आय।
ऐसे कहिकै ताहर नाहर ❀ चलिभे बहुत भांति समुझाय॥
आये फौजन में रण नाहर ❀ डंका तुरत दीन बजवाय।
बाजत डंका अहतंका के ❀ लश्कर कूच दीन करवाय॥
चढ़ि दलगंजन की पीठी मा ❀ मनमा श्रीगणेश पद ध्याय।
वन्दन कीन्ह्यो पितुचरणनका ❀ चन्दन अच्छत फूलचढ़ाय॥
प्राणनिछावरि फिरि मनतेकरि ❀ चलिभा दिल्ली राजकुमार।
गर्जत तर्जत लर्जत आवत ❀ नाहर दिल्ली का सरदार॥
आयकै पहुँचा समर भूमि मा ❀ गरुई हाँक कहा ललकार।
लेय चँदेला अब अधकर को ❀ आयो दिल्ली राजकुमार॥
सुनिकै बातैं ये ताहर की ❀ बोला मोहबे का सरदार।
अमल जनाना मर्दाना जो ❀ ठाना समर आय त्यहिबार॥
पहिले मारुइ भईं तोपन की ❀ पाछे चलन लागि तलवार।
सब हथियारन में तलवारी ❀ याही धर्मरूप अवतार॥
आरथसाही जे उतसाही ❀ गाही धर्म युद्ध के यार।
तीन सिपाही बेपरवाही ❀ छाँड़े प्राण आश त्यहिबार॥
तड़ तड़ तड़ तड़ तड़ तड़काटैं ❀ पाटैं मुण्डन भूमि अपार।
मुरि२ गिरि२ लरि२ कितन्यो ❀ जूझन लागि शूरसरदार॥

झम् झम् झम् झम् भालाबरसैं ❀ तरसैं घाव देखि जिय यार।
भम् भम् भम् भम् क्षत्री भमकैं ❀ चमकैं चमाचम्म तलवार॥
गम् गम् गम् गम् ढोलकगमकैं ❀ दमकैं शक्ति शूल बिकराल।
मारु मारु कै मौहरि बाजै ❀ बाजै हाव हाव करनाल॥
जूझे क्षत्री दुहुँतरफा के ❀ नदिया बही रक्त की धार।
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डनके लगे पहार॥
को गति बरणै वहि समया कै ❀ चहुँदिशि होय भड़ाभड़मार।
बड़ा लड़ैया ताहर नाहर ❀ यहु दलगंजन पर असवार॥
मारत मारत रजपूतन को ❀ बेला पास पहूँचा आय।
जानिचँदेला फिरि ललकारयो ❀ ठाकुर कूच जाउ करवाय॥
ब्रह्मरूप तब बेला बोली ❀ नाहर साँच देयँ बतलाय।
मोहिं भमेला ते मतलब ना ❀ अधकर यहाँ देउ पहुँचाय॥
मोहिं जियावा घर बेलाने ❀ याही हेतु दीन पठवाय।
भिक्षुक ह्वैकै समरभूमि में ❀ चाहै आप लेयँ छुड़वाय॥
ऐसे अधकर यहु छुटिहै ना ❀ दुइमा एक बंश रहिजाय।
इतना सुनिकै ताहर नाहर ❀ बोले दोऊ भुजा उठाय॥
सँभरिकै बैठे अब घोड़े पर ❀ ठाकुर खबरदार ह्वैजाय।
इतना कहिकै ताहर नाहर ❀ भालामारा तुरत चलाय॥
वार बचाई तहँ भाला की ❀ बेला खैंचिलीन तलवार।
ऐंचि सिरोही बेला मारी ❀ ताहर लीन ढालपर वार॥
यहु इकदन्ता को चढ़वैया ❀ चौंड़ा आयगयो त्यहिवार।
रूप देखिकै सो बेला का ❀ जान्यो सबै कपट व्यवहार॥
चुरिया खुलिगै इक बेला की ❀ सोऊ दृष्टिपरी त्यहिवार।
चौंड़ा बोला तब ताहर ते ❀ यहु नहिं मोहबे का सरदार॥

बहिन तुम्हारी यह बेला है ❀ तुमते साँच बतावैं यार।
इतना सुनिकै ताहर ठाकुर ❀ चकितलखनलागत्यहिबार॥
गाफिल दीख्यो जब ताहरको ❀ बेला हनी तुरत तलवार।
घायल ह्वैगा ताहर ठाकुर ❀ बेला काटि लीन शिर यार॥
बड़ा झमेला अब को गावै ❀ बेला कूच दीन करवाय।
बाजत डंका अहतंका के ❀ तम्बुन फेरि पहूँची आय॥
लश्कर पहुँच्यो सब दिल्लीमा ❀ घर घर खबर गई यह छाय।
बेला मारा है ताहर को ❀ कोऊ रँधा भात ना खाय॥
रानी अगमा के महलन मा ❀ पहुँची खबरि तड़ाका आय।
को गति बरणै त्यहिसमयाकै ❀ बिपदा गई महलमें छाय॥
चिघरै रानी रनिवासे मा ❀ गिरि गिरि परै पछाराखाय।
रूप शील गुण वर्णन करिकै ❀ मनमा बारबार पछिताय॥
नाहक बेला तू पैदा भइ ❀ डारे बंश नाश करवाय।
त्वरे बियाहे ते गौने लौं ❀ जूझे सात पुत्र रणजाय॥
दियाबरैया अब महलन में ❀ कोऊ नहीं परै दिखलाय।
सात पुत्र की मैं महतारी ❀ सो निरबंश डरे करवाय॥
केसि निर्दयी बेला ह्वैगै ❀ मारेसि समर आपनो भाय।
इतना कहिकै रानी अगमा ❀ फिरि गिरिगई मूर्च्छाखाय॥
छाय उदासी गै दिल्ली मा ❀ कहुँ नहिं मसा तलक भन्नाय।
घर घर रय्यत अपने रोवै ❀ दर दर गाथ गई यह छाय॥
बदला लीन्ह्यो चंदेले का ❀ बेला समरभूमि में आय।
यहि अलबेला अब गाथा को ❀ पूरण कीन यहाँ ते भाय॥
खेत छूटिगा दिननायक सों ❀ झंडा गड़ा निशाको आय।
चरि चरि गौवें घरका डगरीं ❀ पत्ती चले बसेरन धाय॥

बेला का अपने भाई ताहर का सिर काटना

गिरे आलसी खटिया तकि तकि ❀ सन्तन धुनी दीन परचाय।
आशिर्बाद देउँ मुंशी सुत ❀ जीवो प्रागनारायणभाय॥
रहै समुन्दर में जबलों जल ❀ जबलों रहैं चन्द औ सूर।
मालिक ललिते के तबलों तुम ❀ यशसों रहो सदा भरपूर॥
माथ नवावों पितु माता को ❀ जिन बल पूरिभई यह गाथ।
बिपति निवारण जगतारण के ❀ दूनों धरों चरणपर माथ॥
करों तरंग यहाँसों पूरण ❀ तवपद सुमिरि भवानीकन्त।
राम रमा मिलि दर्शन देवो ❀ इच्छा यही मोरि भगवन्त॥

बेला ताहर का मैदान समाप्त

आल्हखण्ड

चन्दन बगिया का युद्ध वर्णन

सवैया

ता पद पङ्कज प्रेम नितै सो इतै हम चाहत शारद रानी ।
ध्यावत तोहिं मनावत गावत पावत मोद महेश भवानी ॥
हे सुखदे वसुदे यशुदे तव भाग कहौं तौ कहाँ लों बखानी ।
गावत गीत यही ललिते फलिते पदपङ्कज जे रतिमानी ॥

सुमिरन

मैं पद बन्दों जगदम्बा के ❀ अम्बाचरण कमल धरि माथ ।
करि अवलम्बा श्रीदुर्गा का ❀ गावा चहौं यहाँ कछु गाथ ॥
मोहिं भरोसा महरानी का ❀ दानी तीनि लोक की माय ।

सब सुखखानी दुर्गा रानी ❀ पूरण कृपा करो अब आय ॥
जनकनन्दिनी के पद बन्दों ❀ जिन बल चला जाउँ भवपार ।
नैया डगमग डगमग होवै ❀ बूड़न चहै सदा मँझधार ॥
नहीं खेवैया कोउ नैया को ❀ मैया तुहीं लगावै पार ।
दैया दैया करि मरि जावै ❀ज्यहिनहिंचरणकमलआधार॥
छूटि सुमिरनी गै देवी कै ❀ शाका सुनो शूरमन क्यार ।
चन्दन बगिया को कटवाई ❀ ठाकुर उदयसिंह सरदार ॥

अथ कथाप्रसंग

ब्रह्मा ठाकुर त्यहि समया मा ❀ साँचो मरणहार दिखलाय ।
गाँसी खटकति है मस्तक में ❀ कोखिन सेल कटारी घाय ॥
बेला रानी त्यहि समया मा ❀ लै शिर तहाँ पहूँची जाय ।
जहाँ चँदेला सुख शय्या मा ❀ करहत रहै बाण के घाय ॥
धरि शिर दीन्ह्यो तहँ ताहर को ❀ बोली हाथ जोरि शिरनाय ।
कीन्ही आज्ञा पूरण स्वामी ❀ मारा समर आपनो भाय ॥
सुनिकै बातैं ये बेला की ❀ देखन लाग चँदेलाराय ।
जब शिर दीख्यो सो ताहर का ❀ तब मनमोद भयो अधिकाय ॥
ब्रह्मा बोले फिरि बेला ते ❀ प्यारी साँच देयँ बतलाय ।
मैके ससुरे सब सुख तुम्हरे ❀ चाहौ रहो तहाँ तुम जाय ॥
नहीं भरोसा अब जीवन का ❀ प्यारी प्राण रहे नगच्याय ।
इतना कहिकै ब्रह्मा ठाकुर ❀ सुरपुर गयो तड़ाका धाय ॥
बेला गिरिकै रोवन लागी ❀ कारणकरनलागिअधिकाय ।
जो मैं जनतिउँ यहगति होई ❀ काहे हनति समर में भाय ॥
हाय ! विधाताकी मर्जी यह ❀ हमरे बूत सही ना जाय ।
चटक चूनरी ना मैली भै ❀ ना हम धरा सेज पै पाँय ॥

खबरि पहुँचिगै यह महलन में ❀ रानी गिरीं भरहरा खाय।
हाहाकार परा मोहबे मा ❀ कोऊ रँधा भात ना खाय॥
ऊदन लाखनि दोऊ आये ❀ जहँपर मरा चँदेलाराय।
ते समुझावैं भल बेलाको ❀ रानी शोक देउ बिसराय॥
पारस पत्थर है मोहबे मा ❀ लोहा छुवत सोन ह्वैजाय।
राजपाट लै सब मोहबेकै ❀ तुमसुखभोगकरोअधिकाय॥
इतना सुनिकै बेला बोली ❀ मानो साँच बनाफरराय।
जल्दी जावो तुम दिल्ली को ❀ चन्दनबाग कटावो जाय॥
बिना पियारे इक प्रीतम के ❀ सबसुखनरकसरिस दिखराय।
नाश करनको हम उपजी थीं ❀ दूनों बंश डरे मरवाय॥
अब सुख सोवैं कस मोहबेमा ❀ दिल्ली जाउ बनाफरराय।
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ बेला साँच देयँ बतलाय॥
अब नहिं जावैं हम दिल्लीको ❀ कीन्हे कोप पिथौराराय।
जान आपनो सबको प्यारो ❀ जलथल जीव जन्तु जे माय॥
पगिया अरभी नहिं बगिया में ❀ सोई चन्दन देयँ मँगाय।
औरो चन्दन बहु दुनिया में ❀ सोकहुछकरनलवों लदाय॥
पै अब दिल्ली को जैहौं ना ❀ बेला साँच देउँ बतलाय।
इतना सुनिकै बेला बोली ❀ मानो कही बनाफरराय॥
शाप तड़ाका अब मैं देहौं ❀ ऊदन तुरत भस्म ह्वैजाय।
बातैं सुनिकै ये बेला की ❀ कम्पित भयो लहुरवा भाय॥
लाखनि बोले तब ऊदन ते ❀ चंदन चलो देयँ कटवाय।
आखिर देही यह रहिहै ना ❀ अब यश लेउ बनाफरराय॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ साँची कही कनौजीराय।
जल्दी चलिये अब दिल्लीको ❀ चन्दनबाग लेयँ कटवाय॥

सम्मत करिकै ऊदन लाखनि ❀ डंका तुरत दीन बजवाय।
बाजे डंका अहतंका के ❀ हाहाकार शब्दगा छाय॥
सूरी सजिकै लखराना की ❀ तुरतै गई तड़ाका आय।
फूलमती पद बन्दन करिकै ❀ त्यहिपर बैठ कनौजीराय॥
ऊदन बैठे रस बेंदुलपर ❀ मन में ध्याय शारदामाय।
सजे सिपाही सब ठाढ़े थे ❀ तुरतै कूच दीन करवाय॥
बाजत डंका अहतंका के ❀ यमुना पास पहूँचे जाय।
पार उतरिकै श्रीयमुना के ❀ दिल्लीशहर गये नगच्याय॥
चन्दन बगिया जहँ पिरथीकी ❀ तहँ पर गये बनाफरराय।
चन्दन बढ़ई को बुलवायो ❀ चन्दन सबै दीन गिरवाय॥
तब तो माली हल्ला करिकै ❀ चलिभे जहाँ पिथौराराय।
लगी कचहरी महराजा की ❀ शोभा कही बूत ना जाय॥
ठाढ़े माली तहँ बिनवत हैं ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय।
ऊदन आये हैं मोहबे ते ❀ चन्दनबाग डरी कटवाय॥
कहा न माना क्यहु मालीका ❀ ओ महराज पिथौराराय।
सुनिकै बातें ये माली की ❀ चौंड़ा धाँधू लीन बुलाय॥
कहि समुझावा तिन दूननते ❀ यहु महराज पिथौराराय।
जितने आये हैं बगिया में ❀ सबकी कटा देउ करवाय॥
इतना सुनिकै चौंड़ा धाँधू ❀ दूनों लीन फौज सजवाय।
चढ़ि इकदन्ता सौंधनि पर ❀ दूनों कूच दीन करवाय॥
ओरि लस्कर इत लाखनि का ❀ उत यहु गयो चौंड़िया आय।
चन्दन लकड़ा चौंड़ा घेरे ❀ औ यह बोला भुजा उठाय॥
कौन बहादुर है बागे मा ❀ चन्दनबाग लीन कटवाय।
हुकुम पिथौरा का नाहीं है ❀ लकड़ी एक यहाँ से जाय॥

सुनिकै बातैं ये चौंड़ा की ❀ सम्मुख गये बनाफर आय।
हमीं बहादुर हैं मोहबे के ❀ चन्दनबाग लीन कटवाय॥
मोहिं ठकुरानी बेला रानी ❀ मोहबे वाली दीन पठाय।
सत्ती ह्वैहै लै ब्रह्मा को ❀ चौंड़ा साँच दीन बतलाय॥
दुनिया जानति है ऊदन को ❀ जिनके लड़न क्यार बयपार।
दूसर धंधा कछु कीन्हे ना ❀ चौंड़ा मानु कही यहि बार॥
अटक पारलों झंडा गड़िगा ❀ बाजी सेतबन्ध लों टाप।
दतिया बूँदी जालंधर औ ❀ हमरी भई कमायूँ थाप॥
चन्दन जैहै सब मोहबे को ❀ चाहै फौज देउ कटवाय।
रुकिहै चन्दन अब चौंड़ा ना ❀ तुमते साँच दीन बतलाय॥
इतना सुनिकै जरा चौंड़िया ❀ तुरतै लीन्ह्यो गुर्ज उठाय।
ऐंचिकै मारा सो ऊदन के ❀ लैगा बेंदुल वार बचाय॥
बचा दुलरुवा द्यावलिवाला ❀ हौदा उपर पहूँचा जाय।
कलश सुबरण हौदावाले ❀ सो धरती मा दीन गिराय॥
झुके सिपाही दुहुँतरफा के ❀ लागी चलन तहाँ तलवार।
पैग पैग पै पैदल गिरिगे ❀ दुइ दुइ पैग गिरे असवार॥
मारे मारे तलवारिन के ❀ नदिया बही रक्त की धार।
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार॥
बिजयसिंह है बिकानेर को ❀ बिरसिंह गाँजर को सरदार।
दोऊ मारैं दोउ ललकारैं ❀ दोऊ समर धनी तलवार॥
कोऊ हारैं नहिं काहू सों ❀ दोउ रण परा बरोबरि आय।
दोऊ ठाकुर हैं हाथी पर ❀ दोऊ देयँ सेल के घाय॥
वार चूकिगे बिरसिंह ठाकुर ❀ मारा बिजयसिंह सरदार।
जूझिगे बिरसिंह समरभूमि में ❀ बिरसिंह आयगयो त्यहिबार॥

सँभरो ठाकुर अब हौदा पर ❀ कीन्ह्यो बिजयसिंह ललकार ।
सुनिकै बातैं बिजयसिंह की ❀ हिरसिंह खैंचिलीनितलवार ॥
ऐंचिकै मारा बिजयसिंह को ❀ सो तिन लीन ढाल पर वार ।
रिसहा ठाकुर बिकानेर को ❀ सो त्यहि मारा फेरि कटार ॥
लागि कटारी गै हिरसिंह के ❀ सोऊ जूझिगयो त्यहिबार ।
हिरसिंह बिरसिंह गाँजरवाले ❀ दोऊ जूझि गये सरदार ॥
तब महराजा कनउज वाला ❀ लाखनिराना कहा पुकार ।
गंगा मामा कुड़हरिवाले ❀ मारो बिजयसिंह यहिबार ॥
इतना सुनिकै गंगाठाकुर ❀ अपनो हाथी दीन बढ़ाय ।
बिजयसिंह कोफिरिललकारा ❀ ठाकुर कूच जाउ करवाय ॥
नहीं तो बचिहौ ना हौदा पर ❀ जो बिधि आपु बचावै आय ।
इतना सुनिकै बिजयसिंह ने ❀ अपनो हाथी दीन बढ़ाय ॥
बिजयसिंह औ फिरि गंगा का ❀ परिगा समर बरोबरि आय ।
सेल चलाई बिजयसिंह ने ❀ गंगा लेंगे वार बचाय ॥
ऐंचिकै भाला गंगा मारा ❀ त्यहि के गई प्राण पर आय ।
जूझिग राजा बिकानेर का ❀ गंगा बढ़ा तड़ाका धाय ॥
हीरामणि चरखारी वाला ❀ सोऊ गयो तहाँ पर आय ।
त्यहि ललकारा फिरि गंगा को ❀ ठाकुर खबरदार ह्वैजाय ॥
वार हमारो ते बचिहै ना ❀ जो बिधि आपु बचावै आय ।
त्यहिते तुमका समुझाइत है ❀ ठाकुर कूच जाउ करवाय ॥
इतना कहिकै हीरामणि ने ❀ मारी खैंचि तुरत तलवार ।
बचिगा ठाकुर कुड़हरि वाला ❀ लीन्हेसि आड़ि ढालपरवार ॥
बोला ठाकुर चरखारी का ❀ ठाकुर धन्य तोर अवतार ।
[illegible] भाग दुहूँ हाथ ने ❀ पै तुम लीन ढाल पर वार ॥

सुनिकै बातैं हीरामणि की ❀ गंगा लीन तुरत तलवार।
ऐंचिकै मारा हीरामणि के ❀ सो पै जूझि गयो त्यहिवार॥
स्याबसि स्याबसि गंगा माभा ❀ लाखनि कहा बचन ललकार।
तुम्हरी समता का चत्री ना ❀ अब कोउ देखि परै यहिबार॥
करि खलभल्ला औ हल्लाअति ❀ लल्ला देशराजका लाल।
लड़ै इकल्ला रजपूतन ते ❀ कल्ला काटि गिरावै हाल॥
जैसे होरी बल्ला जावै ❀ तैसे चलै खूब तलवार।
करै दुपल्ला तहँ छातिन के ❀ नाहर उदयसिंह सरदार॥
जैसे भेड़िन भेड़हा पैठै ❀ जैसे अहिर बिडारै गाय।
तैसे रणमा चौंड़ा मारै ❀ चत्री जायँ युद्ध अलगाय॥
चौंड़ा ऊदनकी मारुनमा ❀ द्वउ दल छिन्न भिन्न ह्वैजायँ।
यहु रण नाहर चौंड़ा बाँभनु ❀ वहु रणबाघु बनाफरराय॥
कोऊ काहूते कमती ना ❀ द्वउरण परा बरोबरि आय।
लाखनि धाँधूका मुर्चाभा ❀ शोभा कही बूत ना जाय॥
लड़ैं सिपाही दुहुँ तरफा ते ❀ आमाझोर चलै तलवार।
ना मुहँ फेरैं दिल्लीवाले ❀ ना ई मोहबे के सरदार॥
बड़ी लड़ाई भै बगिया में ❀ चौंड़ा ऊदन के मैदान।
कायर भागे दुहुँ तरफा ते ❀ अपने अपने लिये परान॥
लश्कर भाग्यो पृथीराज का ❀ जीत्यो कनउजका सरदार।
लादिकै छकरनमें चन्दन को ❀ चलिभाउदयसिंह त्यहिबार॥
बाजत डंका अहतंका के ❀ लाखनि कूचदीन करवाय।
पार उतरि कै श्री यमुना के ❀ तम्बुन फेरि पहूँचे आय॥
लाखनिं ऊदन दोऊ ठाकुर ❀ बेलै खबरि जनाई जाय।
यह अलबेला बेला रानी ❀ अनमन उठी तहाँ ते धाय॥

दीख्यो छकरा फिरि चन्दनका ❀ बोली सुनो बनाफरराय।
गीले चन्दन ते सरि है ना ❀ सूखो चन्दन देउ मँगाय॥
बारह खम्भा हैं दिल्ली मा ❀ जहँ दरबार पिथौरा क्यार।
ते लै आवो तुम जल्दी अब ❀ ठाकुर उदयसिंह सरदार॥
सुनिकै बातैं ये बेला की ❀ बोला फेरि बनाफरराय।
सूखो चन्दन हम कनउज ते ❀ स्वामिनिआजदेयँमँगवाय॥
पै नहिं जावैं अब दिल्ली को ❀ तुम ते साँच देयँ बतलाय।
इतना सुनिकै बेला बोली ❀ साँची कहौ बनाफरराय॥
मंशा तुम्हरी पूरण ह्वैगै ❀ जूझे समर चँदेलेराय।
हम पर मोहे तुम ऊदन थे ❀ ताते डारे कन्त मराय॥
चहौ इकन्त भोग जो करनो ❀ सो है कठिन बनाफरराय।
परपति भोगै अब बेला ना ❀ चहुतनधजीधजीउड़िजाय॥
भल चतुराई तुम सीखी थी ❀ कीन्ही खूब समय पर आय।
पूर मनोरथ तब होई ना ❀ मानो साँच बनाफरराय॥
राज पाट अरु तनु धन कारण ❀ हम नहिं सकैं धर्मको टारि।
सतयुग त्रेता अरु द्वापरके ❀ करिबे धर्म यहाँ अनुहारि॥
चन्दनखम्भा की तुम लावो ❀ की अब लेउ शाप बिकराल।
झूँठ न यामें कछु जानो तुम ❀ बेटा देशराजके लाल॥
इतना सुनिकै डरे बनाफर ❀ तब फिरि कहा कनौजीराय।
हैं तुम बेटी महराजा की ❀ काची बात रहिउ बतलाय॥
पुनि बनाफर नहिं ऊदनहैं ❀ जो रण डारैं कन्त मराय।
मौत आयगै चन्देले कै ❀ उनकै बुद्धिगयी बौराय॥
मरी कचहरी परिमालिक की ❀ बीरा लीन्ह्यनि हाथ उँड़ाय।
बीरालेनी जो अब्बा ना ❀ ऊदन बिदा लेति करवाय॥

घटिहा राजा परिमालिकहैं ❀ घटिहा बंश बीर चौहान।
घाटि न करतीं जो महाते ❀ जीतत कौन समरमैदान॥
चंदन जितनो तुम बतलावो ❀ तितनो देयँ आज मँगवाय।
पगिया अस्की नहिं दिल्लीमें ❀ अनहक प्राण गँवावैं जायँ॥
इतना सुनिकै बेला बोली ❀ मानो साँच कनौजीराय।
प्राणपियारे जो तुम्हरे हैं ❀ तौ तुम कूच देउ करवाय॥
तेहा राखौ रजपूती का ❀ चन्दन खम्भ देउ मँगवाय।
नहीं जनाना बनि मोहबे ते ❀ जावो लौटि कनौजीराय॥
शाप मैं देहौं अब ऊदन का ❀ तुमते साँच देयँ बतलाय।
मोहबा दिल्ली द्वउ शहरन में ❀ परि हैं राँड़ राँड़ दिखलाय॥
इतना सुनिकै लाखनि बोले ❀ बेला साँच देयँ बतलाय।
बहुत झमेला ते मतलब ना ❀ चन्दन देब वहीं मँगवाय॥
तौ तौ लड़िका रतीभान का ❀ नहिं ई मुच्छ डरों मुड़वाय।
सुनि कै बातैं लखराना की ❀ बेला बड़ी खुशी ह्वैजाय॥
तबै बनाफर उदयसिंहजी ❀ तहँते कूच दीन करवाय।
फिरि यह बोले लखराना ते ❀ मानो कही कनौजीराय॥
मृत्यु रूप यह बेला रानी ❀ दीन्हसि बेलि द्वऊकुल भाय।
नाश करन के हित यह बेला ❀ चन्दनखम्भ रही मँगवाय॥
नहीं तो मतलब का खम्भा ते ❀ जब हम और देयँ मँगवाय।
आपन रँड़ापा ते चाहति है ❀ सब संसार राँड़ ह्वैजाय॥
प्राण आपने हम मल्हना को ❀ दीन्हे ब्याह नेग में भाय।
सो अब तिरिया चलिआई है ❀ बेला मृत्यु बहाना आय॥
क्यहु समुझाये ते समुझै ना ❀ बेला त्रिपति बेलि हरियाय।
जियत पिथौरा के ह्वैहै ना ❀ की हम खम्भ लेयँ उखराय॥

दुखित पिथौरा अब दुनियामा ❀ मरिगे सात पूत रण आय ।
पुत्र न एको अब पृथ्वी के ❀ जो अवलम्ब परै दिखलाय ॥
बिना पुत्र के गति नहिं होवे ❀ वेद औ शास्त्र रहे बतलाय ।
अगमा मल्हना दुउ रानिनकी ❀ वेला नाशिदीन करवाय ॥
ह्वै झमेला हमपर तुमपर ❀ कैसी करैं कनौजीराय ।
ऐसी सुनिकै लाखनि बोले ❀ मानो साँच बनाफरराय ॥
होनी ह्वैहै सो ह्वैहै अब ❀ याही ठीक लेउ ठहराय ।
मृत्यु आयगै जब रावण कै ❀ तब बनवास गये रघुराय ॥
कोऊ रक्षा तब कीन्ह्यो ना ❀ जब मुनिपिया समुन्दर जाय ।
ब्रह्मा विष्णु शिव सम्बन्धी ❀ इनते और कौन अधिकाय ॥
विपति समुन्दर पर जब आई ❀ तब सब गये तुरत अलगाय ।
त्यहिते सम्मत अब याही है ❀ भुरहीं कूच देउ करवाय ॥
मर्जी होई नारायण की ❀ होई स्वई बनाफरराय ।
इतना सुनिकै ऊदन बोले ❀ साँची कही कनौजीराय ॥
सम्मत ठीको अब याही है ❀ दिल्ली चलैं तड़ाका धाय ।
मर्जी याही नारायण की ❀ अनरथ रूप परै दिखलाय ॥
इतना कहिकै लाखनि ऊदन ❀ सोये दुऊ सेज पर जाय ।
खेत छूटिगा दिननायक सों ❀ झंडा गड़ा निशा को आय ॥
तारागण सब चमकन लागे ❀ संतन धुनी दीन परचाय ।
आशिर्वाद देउँ मुंशीसुत ❀ जीवो प्रागनरायण भाय ॥
रहै समुन्दर में जबलों जल ❀ जबलों रहैं चन्द औ सूर ।
मालिक ललिते के तबलों तुम ❀ यशसों रहो सदा भरपूर ॥
पूरण कीन्ह्यो अब याहीं ते ❀ चन्दन बाग केरि सब गाथ ।

चन्दन बगिया का युद्ध समाप्त

आल्हखण्ड

चन्दनखम्भा का मैदान

सवैया

सोहत मुण्डनमाल हिये अरु भाल में चन्द्र विराजत नीके।
शूल औ शक्ति कृपाण लिये डमरू कर सोहत शम्भुवलीके॥
खातहैं भंग धरे शिरगंग सो नंग फिरैं अरधंग सतीके।
जंग जुरे न टरैं ललिते हम ध्यावत चर्ण हैं शम्भु यतीके॥

सुमिरन

बिपति बिदारणजगतारण के ❋ दूनों धरों चरण पर माथ।

पूर मनोरथ तुमहीं करिहौ ❀ स्वामी दीनबन्धु रघुनाथ ॥
वल्कल धारे जटा सँवारे ❀ मारे बली बीर दशमाथ ।
सो हैं स्वामी अवधपुरी के ❀ लीन्हे धनुषबाण प्रभु हाथ ॥
अक्षत चन्दन औ पुष्पन सों ❀ मानस पूजन परम उदार ।
सो मैं करिकै रघुनन्दन का ❀ जावा चहौं जगत के पार ॥
तुम्हीं गोसइयाँ दीनबन्धु हौ ❀ स्वामी रामचन्द्र महराज ।
सोगति देवो नित दुनिया में ❀ राखो मोरि जगत में लाज ॥
छूटि सुमिरनी गै देवन कै ❀ शाका सुनो शूरमन क्यार ।
चन्दनखम्भा ऊदन लैहैं ❀ होई महाभयङ्कर मार ॥

अथ कथाप्रसंग

उदय दिवाकर भे पूरब मा ❀ किरणन कीन जगतउजियार ।
सोय के जागे उदयसिंह जब ❀ लागे करन फौज तय्यार ॥
अंगद पंगद मकुना भौंरा ❀ सजिगे श्वेतवरण गजराज ।
धरी अँवारी तिन हाथिनपर ❀ बहुतक हौदा रहे बिराज ॥
इक इक हाथी के हौदामा ❀ दुइ दुइ भये वीर असवार ।
सजा रिसाला घोड़नवाला ❀ आला साठिसहस त्यहिवार ॥
झीलमबख्तरपहिरिसिपाहिन ❀ हाथम लई ढाल तलवार ।
चढ़े कनौजी तब भूरी पर ❀ ऊदन बेंदुल भे असवार ॥
देवा सय्यद बनरसवाले ❀ औ जगनायक भये तयार ।
ढाढ़ी करखा बोलन लागे ❀ विप्रन कीन वेद उच्चार ॥
रणकी मोहरि बाजन लागीं ❀ रणका होनलाग व्यवहार ।
पहिल नगाड़ा में जिनबन्दी ❀ दुसरे फाँदि भये असवार ॥
तिसर नगाड़ा के बाजत खन ❀ लागेनि कूचदीन करवाय ।
पार उतरिकै श्रीयमुना के ❀ दिल्ली शहर गये नगच्याय ॥

तीनि अनीकरि तहँ सेनाकी ❀ खम्भा तुरत लीन उखराय ।
बारहु खम्भा चन्दनवाले ❀ छकरन उपर लीन लदवाय ॥
भा खलभल्ला औ हल्ला अति ❀ पायो खबरि पिथौराराय ।
धावा कीन्ह्यो उदयसिंहने ❀ चन्दन खम्भ लीन उखराय ॥
सुना पिथौरा जब बातैं ई ❀ दीन्ह्यो बीरभुगन्त पठाय ।
लैकै फौजैं नरनाहर सो ❀ छकरा तुरत दीन रुकवाय ॥
भा खलभल्ला औ हल्ला तब ❀ लोगन दीन्ह्यो लागलगाय ।
मुर्चाबन्दी दुहुँ तरफा ते ❀ दूनों तरफ बीर समुहाय ॥
मारन लागे तलवारी सों ❀ दूनों तरफ बरोबरि आय ।
अपने अपने सब मुर्चन मा ❀ ज्वानन दीन्हे ज्वान गिराय ॥
औ ललकारैं फिरि फिरि मारैं ❀ अद्भुत समर कहा ना जाय ।
लिहे जँजीरैं हाथी मारैं ❀ घोड़ा मारैं टाप चलाय ॥
दाँतन काटैं फिरि फिरि डाटैं ❀ चाटैं रक्त भूत बैताल ।
मारि लहाशन के भुइँ पाटैं ❀ त्वाटैं सम्मर शूर त्यहि काल ॥
हाटैं लागीं तहँ श्वानन की ❀ ज्वानन खूब कीन तलवार ।
मारे मारे तलवारिन के ❀ नदिया बही रक्त की धार ॥
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार ।
खट खट खट खट तेगा बोलै ❀ ऊना चलै बिलाइति क्यार ॥
भाला बरछी तीर तमंचा ❀ कहुँ कहुँ कड़ाबीन की मार ।
छुरी कटारी कउ कउ मारैं ❀ कउ कउ बीर रहे ललकार ॥
कउ मुखफारैं नखन बिदारैं ❀ डारैं चीरि फारि मैदान ।
कोऊ हारैं नहिं काहू सों ❀ ज्वानन कीन घोर घमसान ॥
परशू ठाकुर लाखनिदिशिको ❀ अंगद नृपतिग्वालियरक्यार ।
मुर्चाबन्दी भै दूनन कै ❀ दूनों लड़न लागि सरदार ॥

अंगद मारै तलवारी सों ❁ परशू लेय ढाल पर वार।
परशू मारै तलवारी सों ❁ अंगद रोंकि लेय त्यहिवार॥
बड़ी लड़ाई भै दूनन मा ❁ दूनन खूब कीन तलवार।
वार चूकिगे अंगद राजा ❁ परशू मारि दीन त्यहि वार॥
गिरिगा राजा ग्वालीयर का ❁ आयो वीर भुगन्ता ज्वान।
वीर भुगन्ता के मुर्चा मा ❁ परशू खूब कीन मैदान॥
वार चूकिगे परशू ठाकुर ❁ माखो वीर भुगन्ता ज्वान।
चन्दनखम्भा के मुर्चा मा ❁ परशू जूझि गये मैदान॥
गैंड़ा बेंड़ा ऊदन मारैं ❁ सीधा हनैं कनौजीराय।
अगलबगल मेंजगनायकजी ❁ बहु रणशूर ढहावत जाँय॥
रानी अगमा के महलन के ❁ फाटक उपर कनौजीराय।
सँग जगनायक ऊदन ठाकुर ❁ येऊ गये तड़ाका धाय॥
मुर्चाबन्दी है बिसहिनि में ❁ तहँ पर गये पिथौराराय।
सुनी हकीकति लाखनिराना ❁ द्वारे जाय गये बिरझाय॥
बदला लेवे संयोगिनि का ❁ तब फिरि धरब अगारी पाँय।
लैकै डोला अब अगमा का ❁ कनउज शहर देयँ पहुँचाय॥
नों तों लड़िका रतीभान का ❁ नहिं ई मुच्छ डरों मुड़वाय।
तब जगनायक बोलन लागे ❁ मानो कही कनौजीराय॥
जैसे जानैं हम मल्हना को ❁ अगमा तैसि हमारी माय।
यह रानिनाहीं क्यहु ठाकुरकी ❁ डोला आजु लेय निकराय॥
जितनी फौजें चन्देलै की ❁ सो सब साथ हमारे भाय।
हमरो तुम्हरो मुर्चा है है ❁ साँची सुनो कनौजीराय॥
यामें संशय कछु परिहै ना ❁ तुमते ठीक दीन बतलाय।
सुनिकै बातें जगनायक की ❁ बोला तुरत बनाफरराय॥

तुम्हैं मुनासिब यह नाहीं है ❀ भैने सुनो चँदेलेकेर।
रतीभान के ये लरिका हैं ❀ नाती बेनचक्कवै केर॥
घाट बयालिस पिरथी रोंके ❀ तब तुम गये हमारे पास।
बन्दि छुड़ाई इन मोहबे की ❀ काटी तहाँ यमन की पाश॥
आजु कनौजी सब लायक हैं ❀ हमरे माननीय शिरताज।
तुमहूँ प्यारे जगनायकजी ❀ बिग्रह केर नहीं कछु काज॥
तुम्हरे लाखनि के मुर्चा मा ❀ कटिहैं पायँ आपने माय।
होय लड़ाई घर अपने मा ❀ दुशमन शेर होय अधिकाय॥
हुकुम जो पावैं लखराना का ❀ महलन जायँ तड़ाका धाय।
डोला लावैं हम अगमा का ❀ राखैं टेक कनौजीराय॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की ❀ लाखनि हुकुम दीन फरमाय।
चला बनाफर तब जल्दी सों ❀ महलन अटा तड़ाका जाय॥
रूप देखिकै बघऊदन का ❀ रानी गई सनाका खाय।
हाथ मेहरियन पर डास्यो ना ❀ मानो कही बनाफरराय॥
पूत सुपूते ध्यावलिवाले ❀ कीरति छाय रही चहुँओर।
महल हमारे जो तुम लूटै ❀ कीरति जाय सबै यहि ठोर॥
फेंट बँधैया कोउ नाहीं है ❀ ना कोउ गहन योग तलवार।
साँची बातैं हमरी मानो ❀ ठाकुर उदयसिंह सरदार॥
सुनिकै बातैं महरानी की ❀ दोऊ हाथ जोरि शिरनाय।
ब्वला बेंदुला का चढ़वैया ❀ रानी साँच देयँ बतलाय॥
जैसे माता मल्हना रानी ❀ तैसे आप हमारी माय।
यहु महराजा कनउज वाला ❀ द्वारे आय गयो बिरझाय॥
डोला लेबे हम अगमा का ❀ तब अब धरब अगारी पायँ।
बदला लेबे संयोगिनि का ❀ तब छाती का डाह बुताय॥

हनि हनि मारै रजपूतन का ❀ अद्भुत युद्ध करै त्यहिबार।
को गति बरणै तहँ धाँधू कै ❀ हाथी उपर ज्वान असवार॥
करि खलभल्ला औ हल्लाअति ❀ दूनों हाथ करै तलवार।
लड़ै इकल्ला यहु लल्ला अति ❀ ठाकुर उदयसिंह सरदार॥
बड़ी लड़ाई त्यहि समया मैं ❀ चन्दनखम्भा के मैदान।
ना मुँह फेरैं कनउज वाले ❀ ना ई दिल्ली के चौहान॥
फिरि फिरि मारैं औ ललकारैं ❀ दोऊ बड़े लड़ैता ज्वान।
ऊँचे खाले कायर भागे ❀ छोंड़िकै समरभूमि मैदान॥
शूर सिपाही ईजति वाले ❀ आली खानदान के ज्वान।
बढ़ि बढ़ि मारैं तलवारीसों ❀ अपने धरे गदोरी प्रान॥
आदिभयङ्कर को चढ़वैया ❀ यहु महराज पिथौरा राय।
चौंड़ा धाँधू को ललकारा ❀ चन्दन तुरत लेउ लदवाय॥
जान न पावैं मोहबे वाले ❀ सबकी कटा देउ करवाय।
सुनिकै बातैं महराजा की ❀ बोला तहाँ बनाफरराय॥
तुम्हैं मुनासिब यह नाहीं है ❀ ओ महराज बीर चौहान।
जैसे नौकर चन्देले के ❀ तैसे आप करो परमान॥
नहीं बराबरि कोउ तुम्हरे है ❀ ज्यहिपर आप चढ़े महराज।
बेला बेला दुहुँ तरफा ते ❀ ज्यहिते भये दुःख के साज॥
हमैं पठायो है बेला ने ❀ चन्दन लेन हेतु महराज।
पहिले बगिया को कटवायो ❀ पाछे कौन भयङ्कर काज॥
मर्जी होई चँदेले सँग ❀ राखी दुहूँ कुलन की लाज।
हम समुझावा भल बेला को ❀ की तुम करो मोहोबे राज॥
अनरथ भायो मन बेला के ❀ खम्भन हेतु दीन पठवाय।
ना चढ़ि आये जयचँद राजा ❀ ना चढ़ि अये चँदेलेराय॥

तुम्हैं मुनासिब अब याही है ❀ राजन कूच देउ करवाय।
इतना सुनिकै महराजा तहँ ❀ हाथी तुरत लीन लौटाय॥
भाग्यो लश्कर फिरि पिरथी का ❀ सबदल तितिर बितिर ह्वैजाय।
लादिकै खम्भा तहँ छकरन में ❀ लाखनि कूच दीन करवाय॥
पार उतरिकै श्री यमुना के ❀ तम्बुन फेरि पहूँचे आय।
खेत छूटिगा दिननायक सों ❀ झंडा गड़ा निशाको आय॥
तारागण सब चमकन लागे ❀ संतन धुनी दीन परचाय।
आशिर्वाद देउँ मुंशीसुत ❀ जीवो प्रागनरायणभाय॥
रहै समुन्दर में जबलों जल ❀ जबलों रहैं चन्द औ सूर।
मालिक ललितेके तबलों तुम ❀ यशसों रहौ सदा भरपूर॥
माथ नवावों पितु माता को ❀ जिन बल पूरिभई यह गाथ।
तुम्हीं गोसइयाँ दीनबन्धु हौ ❀ स्वामी रामचन्द्र रघुनाथ॥
गाथ तुम्हारो है दुनिया मा ❀ दूसर नहीं हमारो नाथ।
सत्य शपथ यह धर्म कर्म की ❀ स्वामी दीनबन्धु रघुनाथ॥
सुमिरि भवानी शिवशंकर को ❀ ह्यांते करों तरँग को अन्त।
राम रमा मिलि दर्शन देवैं ❀ इच्छा यही भवानीकन्त॥

चन्दनखम्भा का मैदान समाप्त।
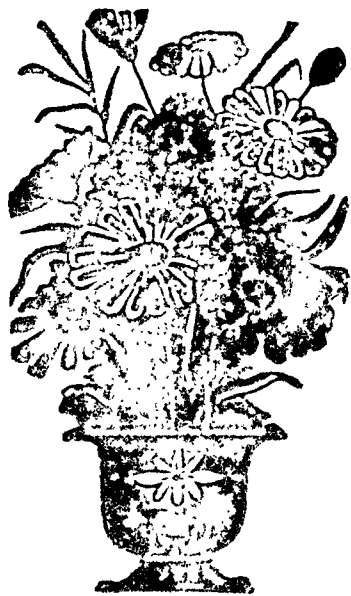
आल्हखण्ड

बेला के सती होने के समय का युद्धवर्णन

सवैया

भक्तन हेतु सवय तनुधारि सदा विपदा सुरसाधु हरी।
हिरणाकश्यप दुःख दियउ तब रूपकियो नरसिंह हरी॥
प्रह्लाद विभीषण औ हनुमान महानन में इन रेखपरी।
अँवरीष औ अंगद की समता ललिते जगमें अब कौन करी॥

सुमिरन

तुम्हें विनायक मैं सुमिरत हौं ❀ गणपति गणाध्यक्ष महराज।

विघनहरण लम्बोदर स्वामी ❀ पूरणकरो हमारे काज ॥
हे जगतारण भवभयहारण ❀ स्वामी एकदन्त महराज ।
विपतिविदारणसबसुखकारण ❀ राखनहार जगत में लाज ॥
तुमहीं ब्रह्मा औ विष्णू हौ ❀ तुमहीं शम्भु सुरासुर काल ।
तुम्हीं गोसइयाँ दीनबन्धु हौ ❀ स्वामी शिवाशम्भु के बाल ॥
तुम्हें मनावें औ ध्यावें हम ❀ गावें सदा तुम्हारी गाथ ।
यह वर पावें गणनायकजी ❀ दर्शन देयँ मोंहिं रघुनाथ ॥
छूटि सुमिरनी गणनायक कै ❀ शाका सुनो शूरमन केर ।
सत्ती होई बेला रानी ❀ ठानी युद्ध पिथौरा फेर ॥

कथाप्रसंग

खम्भ आयगे जब चन्दन के ❀ बेला करन लागि अनुमान ।
मोहबा दिल्ली के डाँड़े पर ❀ हमरो होय सती अस्थान ॥
यह विचारत मन धारत सो ❀ आरत हृदय भई अधिकाय ।
तबलों लाखनि को सँग लैकै ❀ आये तहाँ बनाफरराय ॥
बेला बोली तब ऊदन ते ❀ मानो साँच लहुरवा भाय ।
मोहबा दिल्ली के डाँड़े पर ❀ हमरो सरा देउ रचवाय ॥
इतना सुनिकै ऊदन ठाकुर ❀ चन्दन तहाँ दीन पहुँचाय ।
चारि चोहद्दी के डाँड़े पर ❀ बेला सरा दीन रचवाय ॥
चन्दन मोहबे की फौजें सब ❀ ऊदन तुरत लीन सजवाय ।
संग म्याना जहँ बेला का ❀ सबदल दीन्ह्यो तहाँ टिकाय ॥
तिनके आगे पर्मालिक के ❀ देखन हेतु गई सब आय ।
बेला रानी रूपहि आगरि सो ❀ भूषण बसन सजे अधिकाय ॥
को गति बरणै तहँ बेला के ❀ षोड़श पूरे कीन शृंगार ।
साथ संग लै चन्देले की ❀ सब पर गहि सती त्यहिवार ॥

गा हरिकारा ह्वाँ दिल्ली मा ❀ राजै खबरि जनाई जाय।
खबरि पायकै पृथीराज ने ❀ अपनी फौज लीन सजवाय॥
को गति बरणै त्यहि समया कै ❀ मानो इन्द्र अखाड़े जाय।
आदि भयङ्कर के ऊपर चढ़ि ❀ मनमें शम्भु शिवापद ध्याय॥
चौंड़ा धाँधू बीर भुगन्ता ❀ लैकै कूच दीन करवाय।
भारी लश्कर महराजा का ❀ गर्जत चला समर को जाय॥
ोड़े अरसा मा महराजा ❀ आये सरापास नगच्याय।
ाजैं बाजा ह्वाँ सत्ती के ❀ हाहाकार शब्दगा छाय॥
ब्ला पिथौरा हाथी परते ❀ ओ महराज कनौजीराय।
बंश चँदेले के जो होवै ❀ सो सर देवै आगि लगाय॥
जायँ नगीचे नहिं ऊदन अब ❀ हैं अकुलीन बनाफरराय।
कै बातैं पृथीराज की ❀ बोला तुरत लहुरवा भाय॥
आज्ञा है बेला कै ❀ की सर देवो आगि लगाय।
इतना कहिकै उदयसिंह ने ❀ दीन्ह्यो चिता तुरत दँदकाय॥
नि दीख्यो पृथीराज ने ❀ तुरतै हुकुम दीन फरमाय।
पावैं मोहबे वाले ❀ सबके देवो मूड़ गिराय॥
पायकै पृथीराज का ❀ चौंड़ा धाँधू उठे रिसाय।
भुगन्ता गर्जन लाग्यो ❀ मारन लाग तड़ाका धाय॥
द देबा ऊदन ठाकुर ❀ इनहुन खैंचि,लीन तलवार।
को गति बरणै त्यहि समया कै ❀ लागी होन खड़ाखड़ मार॥
हौदा हौदा यकमिल ह्वैगे ❀ घोड़न भिड़ी रान में रान।
पहिया रथ के रथमा भिड़िगे ❀ तीरन भिड़िगे तीरकमान॥
मर मर मर मर ढालैं ब्वालैं ❀ खन खन तूण बाण चिल्लायँ।
सन् सन् सन् सन् गोली बरसैं ❀ कायर भागैं समर पराय॥

घम् घम् घम् घम् बजैं नगारा ❀ मारा मारा परै सुनाय ।
झलझलझलझलझीलम झलकैं ❀ नीलम रंग परैं दिखराय ॥
चम् चम् चम् चम् तेगा चमकैं ❀ दमकैं छुरी कटारी भाय ।
को गति बरणैं त्यहि समया कै ❀ अद्भुत समर कहा ना जाय ॥
फिरैं भुशुण्डा बिन शुण्डा के ❀ रुण्डा करैं खूब तलवार ।
मुण्डन केरे मुड़ चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लगे पहार ॥
मारे मारे तलवारिन के ❀ नदिया बही रक्त की धार ।
कायर भागे समरभूमि ते ❀ अपने डारि डारि हथियार ॥
भूरा सय्यद का मुर्चा भा ❀ दूनों लड़न लागि सरदार ।
दूनों मारैं तलवारी सों ❀ दूनों लेयँ ढाल पर वार ॥
उमरिन उमरिन दूनों खेलैं ❀ जैसे कुवाँ भरै पनिहारि ।
वार चूकिगा भूरा जबहीं ❀ सय्यद हना तुरत तलवारि ॥
मूड़ बिलानी सो भूरा के ❀ तुरतै गिरा भरहरा खाय ।
भूरा जूझ्यो जब खेतन में ❀ आयो तुरत भुगन्ता धाय ॥
सो ललकारो फिरि सय्यद को ❀ अब रण सावधान ह्वैजाय ।
धोखे भूरा के भूल्यो ना ❀ अबहीं यमपुर देउँ दिखाय ॥
इतना कहिकै वीर भुगन्ता ❀ तुरतै लीन्ह्यो तीर चढ़ाय ।
छोड़ि कमनिया ते मारत भा ❀ सय्यद लैगे वार बचाय ॥
घोड़ बढ़ायो फिरि सय्यद ने ❀ लैकै गुर्ज पहुँच्यो जाय ।
वीर भुगन्ता को ललकारा ❀ क्षत्री खबरदार ह्वै जाय ॥
वार हमारो ते बचि है ना ❀ दोजख अबै देउँ पहुँचाय ।
इतना कहिकै क्रोधित ह्वैकै ❀ सय्यद मारो गुर्ज घुमाय ॥
वार बचाई वीर भुगन्ता ❀ खिंचि त्यहि छिनलीनतलवार ।
मारि के मारा वीर भुगन्ता ❀ जूझ्यो यवनन का सरदार ॥

सय्यद जूझ्यो जब मुर्चा में ❀ तब चढ़ि अयो कनौजीराय।
गंगा ठाकुर तिन पाछे करि ❀ आगे गयो तड़ाका धाय॥
बीर भुगन्ता औ गंगा का ❀ परिगा समर बरोबरि आय।
लखैं पिथौरा औ कनवजिया ❀ अद्भुत समर कहा ना जाय॥
आदि भयङ्कर पर पिरथी हैं ❀ लाखनि भूरी पर असवार।
तेहा राखे रजपूती का ❀ कीन्हे जंग केर शृंगार॥
भाला बरछी दूनों लीन्हे ❀ दूनों लिये ढाल तलवार।
पाग बैंजनी शिर पर धारे ❀ कनउज दिल्ली के सरदार॥
कलँगी सोहैं दोउ पगियन में ❀ दोउन हीरा करैं बहार।
रूप उजागर सब गुण आगर ❀ कनउज दिल्ली के सरदार॥
तेहे दारी की समता है ❀ समता राजकाज ब्यवहार।
समता बय में नहिं लाखनि की ❀ थोरी उमर केर सरदार॥
गंगा मामा कुड़हरि वाले ❀ तिनते कहा तहाँ ललकार।
मारो मारो अब जल्दी ते ❀ मामा काहे लगाई वार॥
इतना सुनिकै गंगा ठाकुर ❀ अपनी खैंचि लीन तलवार।
बीर भुगन्ता तब मारत भा ❀ गंगा लीन ढाल पर वार॥
ऐंचि सिरोही गंगा मारा ❀ तुरतै दीन्ह्यो मूड़ गिराय।
बीर भुगन्ता के जूझत खन ❀ धाँधू गयो तड़ाका आय॥
धाँधू गंगा का मुर्चा भा ❀ अद्भुत समर कहा ना जाय।
दूनों मारैं तलवारी से ❀ दूनों लेवैं वार बचाय॥
कोऊ काहू ते कमती ना ❀ दोउ रण परा बरोबरि आय।
वार चूकिगे गंगा ठाकुर ❀ धाँधू मारा गुर्ज घुमाय॥
परिगै मस्तक सो गंगा के ❀ तुरतै गिरा भरहरा खाय।
गिरिगे गंगा जब हाथी पर ❀ तुरतै आटा कनौजीराय॥

लाखनि धाँधू का मुर्चा भा ❀ दोऊ लड़न लागि सरदार।
दोऊ मारैं तलवारी सों ❀ दोऊ लेयँ ढाल पर वार॥
कोऊ काहू ते कमती ना ❀ दोऊ करैं भड़ाभड़ मार।
भौंरानँद पर धाँधू ठाकुर ❀ लाखनि भूरी पर असवार॥
दोऊ हौदा यकमिल ह्वैगे ❀ दोऊ करैं समर ललकार।
छूरी कटारी भाला बरछी ❀ होवैं कड़ाबीन की मार॥
तीर तमंचा गुर्ज चलावैं ❀ दोऊ समर शूर त्यहि बार।
वार चूकिगे धाँधू ठाकुर ❀ मारा कनउज के सरदार॥
धाँधू जूझ्यो जब मुर्चा में ❀ आयो तुरत पिथौरा राय।
आदि भयङ्कर ज्यहि दिशि दावै ❀ त्यहि दिशि हटत फौज सब जाय॥
को गति बरणै पृथीराज की ❀ नाहर समर धनी चौहान।
ज्यहि दिशि दावै समरभूमि में ❀ त्यहि दिशि होत जात मैदान॥
कुठना बोल्यो तौ लाखनि ते ❀ ओ महराज कनौजीराय।
आदि भयङ्कर दाबे आवै ❀ यहु महराज पिथौरा राय॥
[illegible] महायक अब तुम्हरो ना ❀ स्वामी आप एक यहि काल।
[illegible] ❀ नहिं कोउ देखिपरै महिपाल॥
[illegible] ❀ धन औ स्त्री संग बिहाय।
[illegible] ❀ यह मर्य्याद नीति की आय॥
[illegible] ❀ ओ महराज कनौजी राय।
[illegible] लाखनि बोले ❀ कुठना काह गये बौराय॥
[illegible] ❀ हटका मानु हमारो आय।
[illegible] ❀ यहु तन [illegible] उड़ि जाय॥
[illegible] ❀ [illegible] महराज।
[illegible] ❀ [illegible] समर में लाज॥

रही न देही क्यहु मानुष की ❀ सब जग नाशवान दिखलाय।
त्यहि ते हाथी जहँ पिरथी का ❀ सुफना चलौ तहाँ पर धाय॥
प्राण निछावरि रण करि देवै ❀ तौ यश रही जगत में छाय।
जो अब भागैं समरभूमि ते ❀ कायर कहैं लोक सब गाय॥
सुनिकै बातैं लखराना की ❀ सुफना हाथी दीन बढ़ाय।
आवत दीख्यो लखराना को ❀ बोल्यो तुरत पिथौरा राय॥
आवो आवो लाखनिराना ❀ हमरे संग मिलौ तुम आय।
हमरी सरबरि को तुमहीं हौ ❀ ओ महराज कनौजी राय॥
नीच बनाफर उदयसिंह है ❀ तासँग काह गयो बौराय।
सोलह रानिन के इकलौता ❀ नाहक प्राण गँवायो आय॥
अबै मामिला कछु बिगरा ना ❀ मानो कही कनौजीराय।
हमैं शोच है इक कनउज का ❀ की निरबंश राज ह्वैजाय॥
वृद्ध चँदेले जयचँद राजा ❀ मानो कही कनौजीराय।
सात पुत्र रण खेतन जूझे ❀ हमरखो बंश नाश भय आय॥
अस नहिं चाहैं जस हम ह्वैगे ❀ मानो कही कनौजीराय।
उमिरि तुम्हारी अति थोरी है ❀ कच्ची बुद्धि गयो बौराय॥
दोष हमारो सब कोउ देहैं ❀ बालक हना पिथौराराय।
त्यहिते तुमका समुझाइत है ❀ कच्ची बुद्धि कनौजी राय॥
हमरी तुम्हरी कछु अटनस ना ❀ जो रण प्राण गँवावो आय।
काह बिगारा हम जयचँद का ❀ कच्ची बुद्धि कनौजी राय॥
सुखनहिंदीख्योकछुदुनियाका ❀ नाहक प्राण गँवावो आय।
अब नहिंकैहैं कछु लाखनिहम ❀ कच्ची बुद्धि कनौजी राय॥
ताहर नाहर की समता हौ ❀ कच्ची बुद्धि गयो बौराय।
जो नहिं आवो हमरे दल में ❀ तौ अब कूच जाउ करवाय॥

पारस पैहौ जो दल ऐहौ ❀ कनउज गये प्राण रहिजायँ।
इतना सुनिकै लाखनि बोले ❀ मानो कही पिथौरा राय॥
तुम्हरी बातैं सब साँची हैं ❀ सो हम जानि दीन बिसराय।
पै अब बदला संयोगिनि का ❀ लेबे समरभूमि में आय॥
यामें संशय कछु नाहीं है ❀ मानो साँच पिथौरा राय।
घर घर दिल्ली को लुटवैबे ❀ तब छाती का डाह बुताय॥
इतना कहिकै लाखनिराना ❀ तुरतै लीन्ह्यो तीर उठाय।
खैंचि कमनियाँ ते छाँड़त भे ❀ गौरा पारबती को ध्याय॥
आवत दीख्यो शर लाखनिको ❀ राजा काटि तड़ाका दीन।
बड़े क्रोध सों पृथ्वी राजा ❀ दूसर बाण हाथ में लीन॥
शर संधान्यो बड़े बेग सों ❀ मार्‌यो तुरत पिथौराराय।
खण्डन कीन्ह्यो त्यहि लखराना ❀ आपो मार्‌यो तीर चलाय॥
ताहि पिथौरा खण्डन करिकै ❀ यकइस मारे बाण रिसाय।
तिनको खण्डन लाखनि कीन्ह्यो ❀ राजा गये मनै शर्माय॥
यहु महराजा कनउज वाला ❀ आला वंश चँदेला राय।
धेला एको ज्यहि डर नाहीं ❀ हाथिन हेला दीन गिराय॥
बड़ बड़ मेला रजपूतन के ❀ रणमा लाखनि दीन हटाय।
फूल चमेला औ बेला जस ❀ तस अलबेला कनौजी राय॥
उठैं सुगंधैं जस बेला में ❀ तस यश गयो जगत में छाय।
बाण लागि गा लखराना के ❀ हौदा उपर गये मुर्झाय॥
जूझि कनौजी गे खेतन में ❀ सुमिरिकै मित्र बनाफरराय।
कड़कैं धड़कैं औ फड़कैं अति ❀ मेघा आसमान थहराय॥
प्रलयकाल की बेला आई ❀ जब मरि गये कनौजीराय।
ऐसे अशकुन के देखत सन ❀ ऊदन गये सनाका खाय॥

चित्त न लागै कछु मुर्चा में ❀ व्याकुलसुमिरि कनौजीराय।
यहाँ चौंड़िया धरि धरि धमकै ❀ ऊदन लेवैं वार बचाय॥
हाथ चौंड़िया पर छाँड़ैं ना ❀ व्याकुल चित्त रहे अकुलाय।
तहिले धावन इक चौंड़ा ते ❀ लाखनि हाल बतावा आय॥
सुना बनाफर उदयसिंह यह ❀ की मरि गये कनौजीराय।
ऊदन बोले तब चौंड़ा ते ❀ मानो कही चौंड़ियाराय॥
मरिगे लाखनि जो मुर्चा में ❀ तौ नहिं जियैं बनाफरराय।
बिना इकेले लखराना के ❀ मरिहैकौनसाथत्यहिआय॥
मित्र कनौजीअस मरिगे जब ❀ जी है कौन समर तब भाय।
मारु चौंड़िया अब जल्दी सों ❀ हमरोशोखमोखमिटिजाय॥
इतना कहिकै उदयसिंह ने ❀ तुरतै खैंचिलीन तलवार।
एँड़ लगावा रसबेंदुल के ❀ हौदा उपर गयो त्यहिबार॥
काटि महावत औ हाथी को ❀ आपन शीश दीन पकराय।
काटि शीश तब चौंड़ा लीन्ह्यो ❀ औ धड़गिराधरणिमेंआय॥
ऊदन देबा जगनायक जी ❀ सब कोउ मरे समर में आय।
चौंड़ा पिरथी आल्हा इन्दल ❀ रहिगे शेष चारि ये भाय॥
ऊदन जूझे समरभूमि में ❀ आल्हा चले तड़ाका धाय।
देवी शारदा का बरदानी ❀ अम्मर कहै लोक सबगाय॥
सुना बनाफर जब कानन ते ❀ की मरि गये लहुरवाभाय।
पकरि बनाफर तब चौंड़ा को ❀ मर्दन कीन देह में लाय॥
मींजि माँजिकैत्यहि चौंड़ाको ❀ आगे हाथी दीन बढ़ाय।
आदिभयङ्कर जहँ ठाढ़ो थो ❀ आल्हा तहाँ पहूँचे जाय॥
पकरिकै बाहूतहँ पिरथी की ❀ आल्हाबाँधिलीन त्यहिठाँय।
नील डरायो नृप आँखिन में ❀ बंधन तुरत दीन छुड़वाय॥

खबरि मोहोबे औ दिल्ली गै ❀ की रण बचे तीन जन भाय।
आल्हा इन्दल पिरथी राजा ❀ और न चौंथकऊ दिखलाय॥
सुनवाँ फूलवा द्यावलि माता ❀ सुनतै चलीं तड़ाका धाय।
सुनवाँ बोली समरभूमि में ❀ आल्हा डास्यो बन्धु मराय॥
आल्हा मुखते सुनि सुनवाँ के ❀ मनमा ठीक लीन ठहराय।
धर्म न रैहै क्यहु कलियुगमा ❀ सब बिन धर्म जगतह्वैजाय॥
यहै सोचिकै आल्हा ठाकुर ❀ इन्दल बोले बचन सुनाय।
माता तुम्हरी नाम हमारो ❀ लीन्ह्यो सुनो बनाफरराय॥
दुर्गति होई अब कलियुग मा ❀ ताते देयँ पूत बतलाय।
करो तयारी बन कजरी की ❀ अपनो मया मोह बिसराय॥
इतना कहिकै आल्हा ठाकुर ❀ हाथी चढ़े तड़ाका धाय।
इन्दल बैठे फिरि घोड़े पर ❀ साथै कूच दीन करवाय॥
इन्दल इन्दल कै गुहरायो ❀ सुनवाँ चली पछारी धाय।
पूँछ पकरिकै पचशब्दा कै ❀ सुनवाँ गजै घसीटति जाय॥
एँचि खड्ग को आल्हा ठाकुर ❀ तुरतै दीन्ह्यो पूँछ गिराय।
बिना पूँछ का पचशब्दा फिरि ❀ कजरी बनै पहूँचा जाय॥
रही न आशाक्यहुजीवन की ❀ सबहिन दीन्ही देहजराय।
प्राण आपने नारी तजिकै ❀ सुरपुर गईं तड़ाका धाय॥
सुनवाँ फुलवा चित्तररेखा ❀ द्यावलिसहित मरींसबआय।
मोहवा दिल्ली द्वऊ शहरन में ❀ राँड़न झुंड भये अधिकाय॥
छाय उदासी गै दोऊ दिशि ❀ विपदा कही बूत ना जाय।
रानी मल्हना मोहवे वाली ❀ मनमासोचिसोचिरहिजाय॥
तुम्हैं विधाता अस चाहीना ❀ जैसी विपतिदीनअधिकाय।
दुःखित ह्वैकै महरानी फिरि ❀ पारस पत्थर लीन उठाय॥

जाय सिरायो सो सागर में ❀ चन्दन अच्छत फूल चढ़ाय।
धूप दीप औ कीन आरती ❀ मेवा मिश्री भोग लगाय॥
हवन ब्राह्मण को भोजन दै ❀ बोली हाथ जोरि शिरनाय।
जो कोउ राजा हो मोहबे में ❀ पारस रह्यो तासु घरआय॥
इतना कहिकै रानी मल्हना ❀ महलन फेरि पहूँची आय।
ग्यारह लंघन परिमालिक करि ❀ सुरपुर गये तड़ाका धाय॥
सत्ती ह्वैकै रानी मल्हना ❀ अपनो दीन्ह्यो प्राण गँवाय।
मोहवा दिल्ली औ कनउज में ❀ मानों गिरी गाज अरराय॥
बने चबुतरा बहु सत्तिन के ❀ ठौरन ठौरन परैं दिखाय।
बड़ बड़ राजन की महरानी ❀ रणमा खाक बटोरेनि आय॥
बचे बचाये महभारत के ❀ यामें बंश अस्त भे भाय।
जेठ चतुर्दशि बनइस छप्पन ❀ अबलों सुदी पच्छ दर्शाय॥
ललिते आल्हा को पूरणि करि ❀ पूरणमासी चहैं अन्हाय।
पै यह वादा है कलियुग का ❀ सोनहिं ठीकठाक ठहराय॥
आशिर्बाद देउँ मुंशीसुत ❀ जीवो प्रागनरायण भाय।
हुकुम तुम्हारो जो पावत ना ❀ ललिते कहतकथा कसगाय॥
रहै समुन्दर में जबलों जल ❀ जबलों रहैं चन्द औ सूर।
मालिक ललिते के तबलों तुम ❀ यशसों रहो सदा भरपूर॥
माथ नवावों पितु माता को ❀ जिन बल पूरिभई यह गाथ।
मालिक स्वामी अरुसरबस तुम ❀ जग में एक राम रघुनाथ॥
कृपा न करतेउ रघुनन्दन जो ❀ तौ यह पूरि करत को गाथ।
माता पितुमा सचराचर में ❀ ब्यापक तुम्ही राम रघुनाथ॥
तुम्ही रखैया हौ दुर्बल के ❀ स्वामी रामचन्द्र महराज।
कृपा तुम्हारी जब जस होती ❀ तब तस होत जगत में राज॥

अब महरानी सुखदानी जो ❁ हमरी माननीय शिरताज ।
सबगुणखानीबिक्टोरियारानी ❁ राखैं सदा जगत में लाज ॥
जिन बल छाजत बल हमरो है ❁ राजत राजनीति नितराज ।
जोनहिंअनुचितचलदुनियामें ❁ तौनहिं होय सजा यहिराज ॥
अब महरानी सब सुखदानी ❁ युग युग अटल करैं यह राज ।
जोनहिंअनुचितकरुदुनियामें ❁ तौनहिं होय सजा यहिराज ॥
इन रजधानी में रहिकै मैं ❁ कबहुँ न कष्ट सहा क्यहुकाल ।
पिता पितामह औ मोसंयुत ❁ कबहुँनपरखनबिपतिकेजाल ॥
चोर छिनारन बदमासन की ❁ पिडुरी थहर थहर थर्रायँ ।
मोछा टेवैं सज्जन बैठे ❁ नहिं कहुँ मसा तलक भन्नायँ ॥
यह सब गावत हैं सज्जन मन ❁ नित प्रति बना रहै यह राज ।
जीवैं रानी महरानी ई ❁ जिनबलसुजनसुखीसबसाज ॥
इन असिमाता अब मिलिहैं ना ❁ यह मन नित्त लीन ठहराय ।
मिलैं भबन्धी असकर्त्ता ना ❁ जसकछुआजकाल्हदिखलायँ ॥
यहौ कथा अब पूरण करिकै ❁ ललिते करत मंगलाचार ।
करों बन्दना मैं तुलसी की ❁ हुलसी जासु काब्य संसार ॥
ज्यहि अवलोकन के करतेखन ❁ मन के छूटि जात सब ताप ।
सोई प्यारी तुलसी गाथा ❁ ललितेकीन बहुत दिन जाप ॥
खेत छूटिगा दिननायक सों ❁ भण्डा गड़ा निशा को आय ।
तारागण सब चमकन लागे ❁ सन्तन धुनी दीन परचाय ॥
पूरि तरंग यहाँसों ह्वैगै ❁ तबपद सुमिरि भवानीकन्त ।
राम रमा मिलि दर्शन देवैं ❁ इच्छा यही मोरि भगवन्त ॥

बेलासती अर्थात् सर्व आल्हखण्ड समाप्त । शुभमस्तु ॥